Sample

जन्म कुण्डली

Ajit Kumar Singh

Contact - --------------------------

* While all precautions have been taken for the accuracy of the astrological calculations, the maker of these horoscopes makes no warranties, either expressed or implied.

Sample DOB: 18:12:1973 ; TOB: 01:45:00 ; POB: Ballia (INDIA)

ज्योतिष सारिणी

जन्म दिन	: 18 दिसम्बर 1973 (मंगलवार)
ज्योतिषिय वार	: सोमवार
जन्म समय	: 01:45:00
जन्म स्थान	: Ballia , INDIA
रेखांश	: 084:10:00E
अक्षांश	: 025:45:00N
समयक्षेत्र	: -05:30:00 hrs
समय संशोधन	: 00:00:00 hrs
जी. एम. टी. समय	: 20:15:00 hrs
स्थानीय समय संस्कार	: 00:06:40 hrs
स्थानीय समय	: 01:51:40 hrs
इष्टकाल	: 47: 52: 16 घटी

सांपातिक काल	: 07:36:55 hrs
सूर्योदय	: 06:36:32AM
सूर्यास्त	: 05:03:05PM
अयनांश	: N.C.Lahiri (023:29:36)
विक्रम संवत	: 2030
शक संवत	: 1895
संवत्सर	: प्रमादी
संवत्सर अधिपति	: इन्द्राग्नि
तत्कालीन दशा	: शनि : शनि : बुध
दशा भोग्यकाल	: चन्द्रमा : 5 व. 5 मा. 26
भयात	: 27: 30: 35 घटी
भभोग	: 61: 31: 25 घटी

अवकहड़ा चक्र

लग्न	: कन्या
लग्नाधिपति	: बुध
राशि (चन्द्रमा)	: कन्या
राशिपति	: बुध
नक्षत्र	: हस्ता
नक्षत्रपति	: चन्द्रमा
नक्षत्र चरण	: 2
पाया	: स्वर्ण
ऋतु	: हेमन्त
मास	: पौष
पक्ष	: कृष्ण
तिथि	: नवमी
तिथि श्रेणी	: रिक्ता
तिथि पति	: सूर्य
करण	: गरिज
करण श्रेणी	: चर
करणपति	: वासुदेव
गण	: देव
वर्ण	: वैश्य
योनि	: महिष (स्त्री)
सूर्य सिद्धान्त योग	: सौभाग्य
रज्जु	: कंठ
वश्य	: द्विपद
तत्व	: अग्नि
तत्वाधिपति	: मंगल
विहग	: वायस
नाड़ी	: आदि
नाड़ी पद	: मध्य
वेध	: शतभिषा
आद्याक्षर	: ष, षि, षु, षे, षो

जन्म दिन का ग्रह : मंगल

जन्म समय का ग्रह : शनि

घात चक्र

राशि (सूर्य)	: मिथुन
मास	: भद्रा
तिथि	: 5,10,15
वार	: शनिवार
नक्षत्र	: श्रावण
प्रहर	: 1
लग्न	: मीन
सूर्य सिद्धान्त योग	: सुकर्मन
करण	: कौलव

पाश्चात्य ज्योतिषीय सारिणी

सूर्य राशि	: धनु
देकानेट	: 3
फेस	: VI
चन्द्र राशि (पाश्चात्य)	: तुला
लग्न (पाश्चात्य)	: तुला
सूर्य का अवधिपति	: मंगल
चन्द्रमा का अवधिपति	: शुक्र
अवधि बदलाव	: (मंगल, शनि), (बुध, शुक्र) , (शुक्र, बुध) , (शनि, मंगल)

* While all precautions have been taken for the accuracy of the astrological calculations, the maker of these horoscopes makes no warranties, either expressed or implied.

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia

ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	राशि	डिग्री	नक्षत्र – चरन	न0 पति	सप्तकारक	विशेष	विशेष
लग्न	कन्या	बुध	28:15:29	चित्रा.2	मंगल	...	...	...
सूर्य	धनु	गुरू	02:15:49	मूला.1	केतु	दारा	मित्र के भाव में	ग्रसित
चन्द्रमा	कन्या	बुध	16:00:57	हस्ता.2	चन्द्रमा	भ्रात्रि	शत्रु के भाव में	--
मंगल	मेष	मंगल	04:42:18	अश्विनी.2	केतु	ज्ञाति	मूलत्रिकोन	--
बुध	वृश्चिक	मंगल	19:51:24	ज्येष्ठा.1	बुध	आत्म	शत्रु के भाव में	--
गुरू	मकर	शनि	17:56:39	श्रवण.3	चन्द्रमा	अमात्य	तटस्थ भाव में	शुभ ग्रह के साथ
शुक्र	मकर	शनि	13:00:16	श्रवण.1	चन्द्रमा	मात्रि	मित्र के भाव में	शुभ ग्रह के साथ
शनि व	मिथुन	बुध	08:12:33	अरिद्रा.1	राहु	अपत्या	तटस्थ भाव में	ग्रसित
राहु व	धनु	गुरू	05:10:35	मूला.2	केतु	...	मित्र के भाव में	दुष्ट ग्रह के साथ
केतु व	मिथुन	बुध	05:10:35	मृगशिरा.4	मंगल	...	तटस्थ भाव में	दुष्ट ग्रह के साथ
हर्षल	तुला	शुक्र	03:20:59	चित्रा.4	मंगल	...	--	--
नेपच्यून	वृश्चिक	मंगल	14:20:41	अनुराधा.4	शनि	...	--	शुभ ग्रह के साथ
प्लूटो	कन्या	बुध	13:11:14	हस्ता.1	चन्द्रमा	...	--	दुष्ट ग्रह के साथ

नवांश कुण्डली

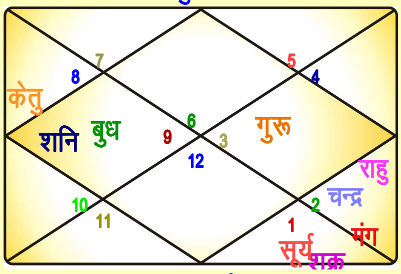

लग्न कुण्डली

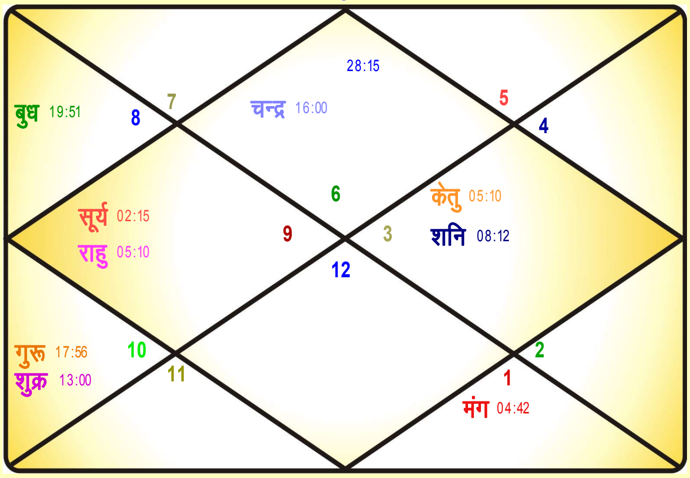

चन्द्र कुण्डली

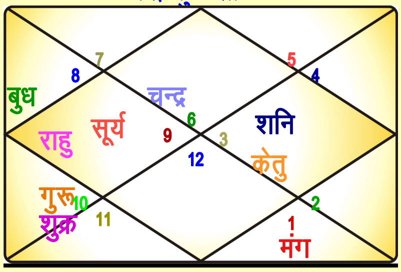

ग्रह से ग्रह और ग्रह से लग्न के बीच की दूरी

	लग्न	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	---	64	348	186	52	110	105	250	67	247	5	46	345
सूर्य	296	---	284	122	348	46	41	186	3	183	301	342	281
चन्द्रमा	12	76	---	199	64	122	117	262	79	259	17	58	357
मंगल	174	238	161	---	225	283	278	64	240	60	179	220	158
बुध	308	12	296	135	---	58	53	198	15	195	313	354	293
गुरू	250	314	238	77	302	---	355	140	317	137	255	296	235
शुक्र	255	319	243	82	307	5	---	145	322	142	260	301	240
शनि	110	174	98	296	162	220	215	---	177	357	115	156	95
राहु	293	357	281	120	345	43	38	183	---	180	298	339	278
केतु	113	177	101	300	165	223	218	3	180	---	118	159	98
हर्षल	355	59	343	181	47	105	100	245	62	242	---	41	340
नेपच्यून	314	18	302	140	6	64	59	204	21	201	319	---	299
प्लूटो	15	79	3	202	67	125	120	265	82	262	20	61	---

0,1,359	कन्जक्शॅन	59,60,61,299,300,301	सेक्सटाइल	89,90,91,269,270,271	स्कवायर
119,120,121,239,240,241	ट्राइन	149,150,151,209,210,211	क्वीनकक्सं	179,180,181	अपोजीसन

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia

भाव स्फूट और कुण्डली

भाव सख्या	भाव मध्य		भाव विस्तार (आरम्भ—अन्त)			
I	कन्या	028:15:29	कन्या	13:22:19	तुला	13:22:19
II	तुला	028:29:08	तुला	13:22:19	वृश्चिक	13:35:58
III	वृश्चिक	028:42:47	वृश्चिक	13:35:58	धनु	13:49:37
IV	धनु	028:56:27	धनु	13:49:37	मकर	13:49:37
V	मकर	028:42:47	मकर	13:49:37	कुम्भ	13:35:58
VI	कुम्भ	028:29:08	कुम्भ	13:35:58	मीन	13:22:19
VII	मीन	028:15:29	मीन	13:22:19	मेष	13:22:19
VIII	मेष	028:29:08	मेष	13:22:19	वृष	13:35:58
IX	वृष	028:42:47	वृष	13:35:58	मिथुन	13:49:37
X	मिथुन	028:56:27	मिथुन	13:49:37	कर्क	13:49:37
XI	कर्क	028:42:47	कर्क	13:49:37	सिहं	13:35:58
XII	सिहं	028:29:08	सिहं	13:35:58	कन्या	13:22:19

लग्न कुण्डली

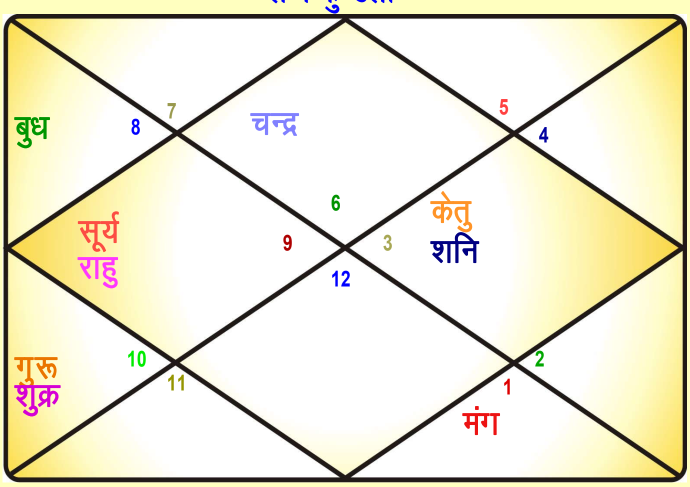

भाव कुण्डली

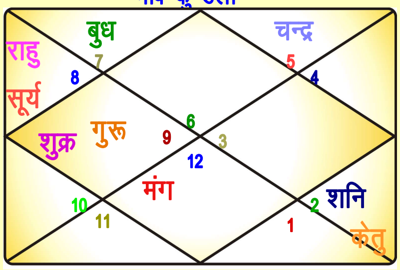

भाव चलित कुण्डली

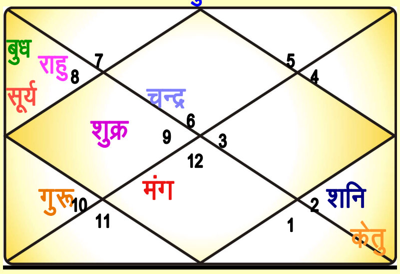

ग्रह से भाव (भाव मध्य) के बीच की दूरी

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	64	348	186	52	110	105	250	67	247	5	46	345
दूसरा भाव	34	318	156	21	79	75	220	37	217	335	16	315
तीसरा भाव	4	287	126	351	49	44	189	6	186	305	346	284
नादिर	333	257	96	321	19	14	159	336	156	274	315	254
पाँचवा भाव	304	227	66	291	349	344	129	306	126	245	286	224
छठवा भाव	274	198	36	261	319	315	100	277	97	215	256	195
सातँवा भाव	244	168	6	232	290	285	70	247	67	185	226	165
आठवा भाव	214	138	336	201	259	255	40	217	37	155	196	135
नवा भाव	184	107	306	171	229	224	9	186	6	125	166	104
एम सी	153	77	276	141	199	194	339	156	336	94	135	74
ग्यारहवा भाव	124	47	246	111	169	164	309	126	306	65	106	44
बारहवा भाव	94	18	216	81	139	135	280	97	277	35	76	15

0,1,359	०,१,३५९ कन्जक्शॅन	59,60,61,299,300,301	सेक्सटाइल	89,90,91,269,270,271	स्कवायर
119,120,121,239,240,241	ट्राइन	149,150,151,209,210,211	क्वीनकक्सं	179,180,181	अपोजीसन

For Mindsutra Software Technologies

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia

ग्रह मैत्रि चक्र

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह		सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	....	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
☽	चन्द्रमा	मित्र	....	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
♂	मंगल	मित्र	मित्र	....	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
☿	बुध	मित्र	शत्रु	सम	....	सम	मित्र	सम	सम	सम
♃	गुरू	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	....	शत्रु	सम	मित्र	सम
♀	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	....	मित्र	मित्र	मित्र
♄	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	....	मित्र	मित्र
☊	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र	....	सम
☋	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	मित्र	सम	....

तत्कालिक मैत्री

ग्रह		सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	....	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
☽	चन्द्रमा	मित्र	....	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
♂	मंगल	शत्रु	शत्रु	....	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
☿	बुध	मित्र	मित्र	शत्रु	....	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
♃	गुरू	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	....	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
♀	शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	....	शत्रु	मित्र	शत्रु
♄	शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	....	शत्रु	शत्रु
☊	राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	....	शत्रु
☋	केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	....

पचंधा मैत्री

ग्रह		सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	....	अधिमित्र	सम	मित्र	अधिमित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
☽	चन्द्रमा	अधिमित्र	....	शत्रु	अधिमित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम
♂	मंगल	सम	सम	....	अधिशत्रु	अधिमित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अधिमित्र
☿	बुध	अधिमित्र	सम	शत्रु	....	मित्र	अधिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
♃	गुरू	अधिमित्र	सम	अधिमित्र	सम	....	अधिशत्रु	शत्रु	अधिमित्र	शत्रु
♀	शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अधिमित्र	शत्रु	....	सम	अधिमित्र	सम
♄	शनि	अधिशत्रु	सम	सम	सम	शत्रु	सम	....	सम	सम
☊	राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	मित्र	अधिमित्र	अधिमित्र	सम	....	शत्रु
☋	केतु	अधिशत्रु	सम	अधिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	सम	शत्रु	....

षड वर्ग

होरा कुण्डली

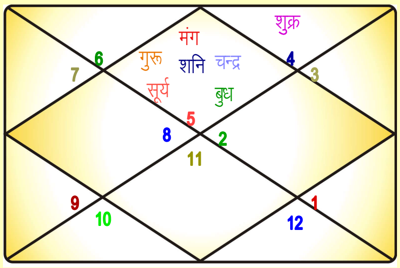

लग्न (जन्म) कुण्डली

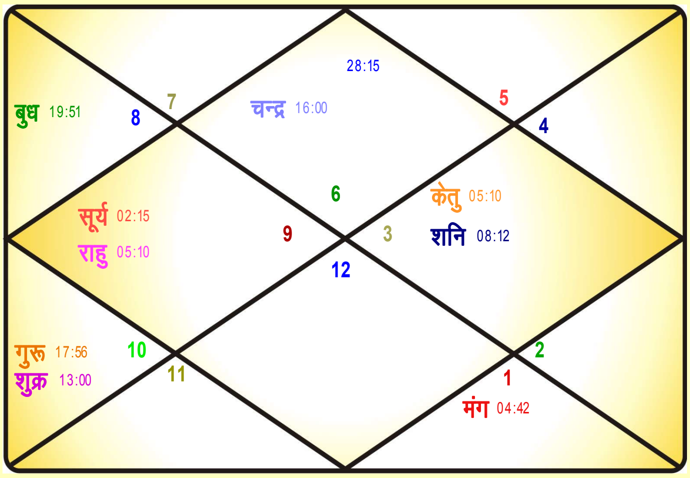

द्रेष्काण कुण्डली

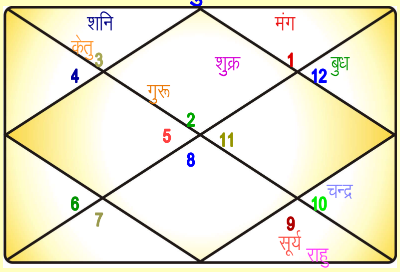

नवांश कुण्डली

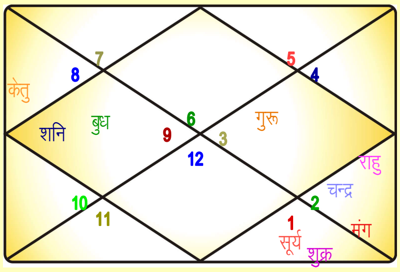

द्वादशांश कुण्डली

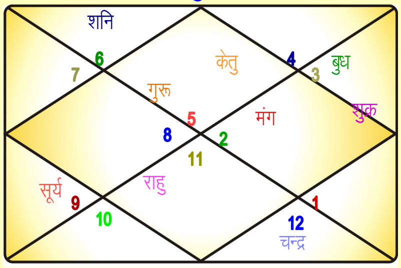

त्रिंशांश कुण्डली

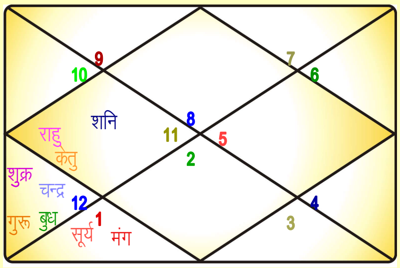

षड वर्ग सारिणी

कुण्डली	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
लग्न (जन्म) कुण्डली	**धनु**	**कन्या**	**मेष**	**वृश्चिक**	**मकर**	**मकर**	**मिथुन**	**धनु**	**मिथुन**
होरा कुण्डली	सिहं	सिहं	सिहं	सिहं	सिहं	कर्क	सिहं	सिहं	सिहं
द्रेष्काण कुण्डली	**धनु**	मकर	**मेष**	मीन	वृष	वृष	**मिथुन**	**धनु**	**मिथुन**
नवांश कुण्डली	मेष	वृष	वृष	धनु	मिथुन	मेष	धनु	वृष	वृश्चिक
द्वादशांश कुण्डली	**धनु**	मीन	वृष	मिथुन	सिहं	मिथुन	कन्या	कुम्भ	सिहं
त्रिंशांश कुण्डली	मेष	मीन	**मेष**	मीन	मीन	मीन	कुम्भ	कुम्भ	कुम्भ
निष्कर्ष	**बंजन**	—	**बंजन**	—	—	—	**किम्सुक**	**किम्सुक**	**किम्सुक**

सप्त वर्ग

होरा कुण्डली

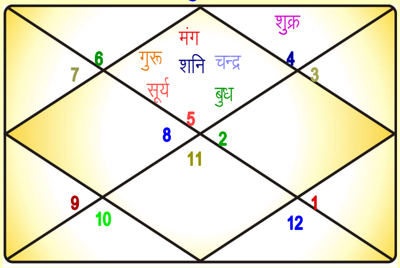

लग्न (जन्म) कुण्डली

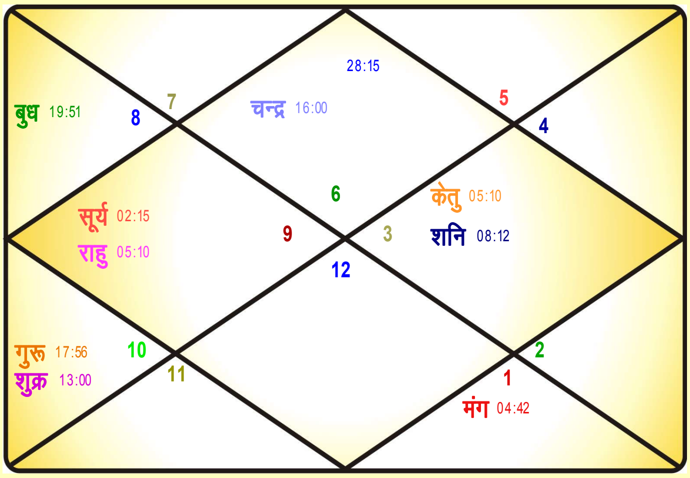

द्रेष्काण कुण्डली

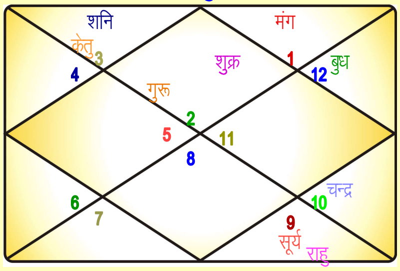

सप्तमांश कुण्डली

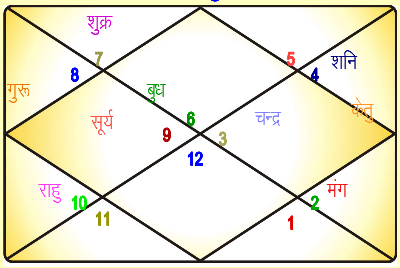

नवांश कुण्डली

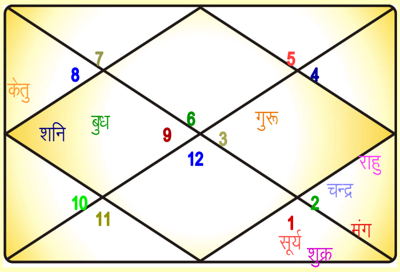

द्वादशांश कुण्डली

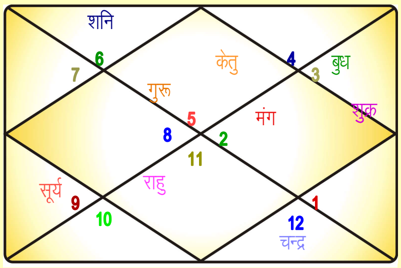

त्रिंशांश कुण्डली

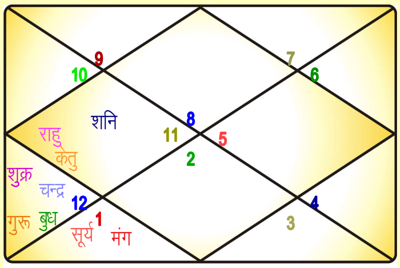

सप्तवर्ग सारिणी

कुण्डली	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
लग्न (जन्म) कुण्डली	**धनु**	**कन्या**	**मेष**	**वृश्चिक**	**मकर**	**मकर**	**मिथुन**	**धनु**	**मिथुन**
होरा कुण्डली	सिहं	सिहं	सिहं	सिहं	सिहं	कर्क	सिहं	सिहं	सिहं
द्रेष्काण कुण्डली	**धनु**	मकर	**मेष**	मीन	वृष	वृष	**मिथुन**	**धनु**	**मिथुन**
सप्तमांश कुण्डली	**धनु**	मिथुन	वृष	कन्या	वृश्चिक	तुला	कर्क	मकर	कर्क
नवांश कुण्डली	मेष	वृष	वृष	धनु	मिथुन	मेष	धनु	वृष	वृश्चिक
द्वादशांश कुण्डली	**धनु**	मीन	वृष	मिथुन	सिहं	मिथुन	कन्या	कुम्भ	सिहं
त्रिंशांश कुण्डली	मेष	मीन	**मेष**	मीन	मीन	मीन	कुम्भ	कुम्भ	कुम्भ
निष्कर्ष	**चामर**	—	**बंजन**	—	—	—	**किम्सुक**	**किम्सुक**	**किम्सुक**

दस वर्ग

लग्न (जन्म) कुण्डली

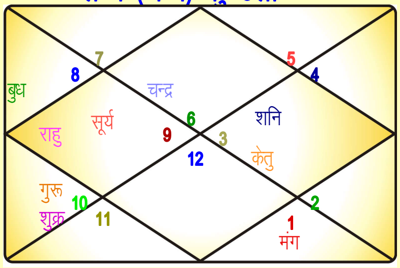

होरा कुण्डली

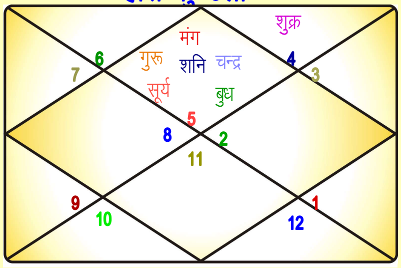

द्रेष्काण कुण्डली

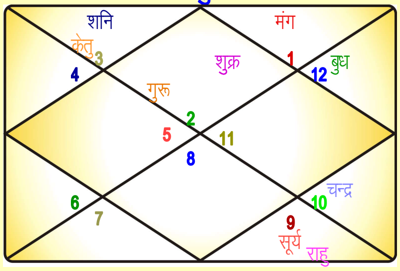

सप्तमांश कुण्डली

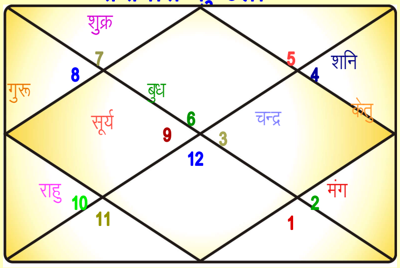

नवांश कुण्डली

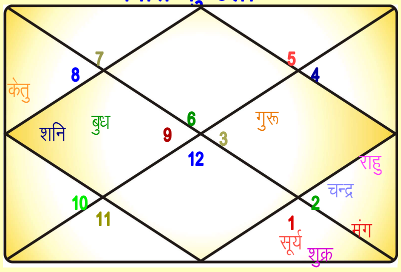

दशमांश कुण्डली

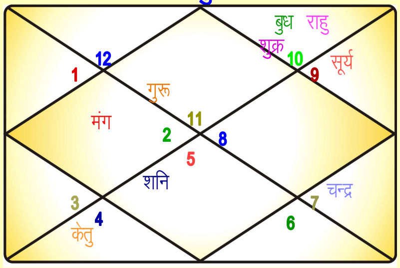

द्वादशांश कुण्डली

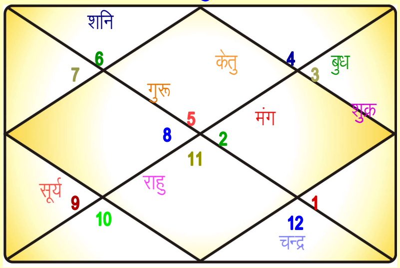

षोडशांश कुण्डली

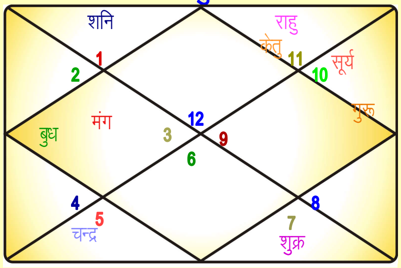

त्रिंशांश कुण्डली

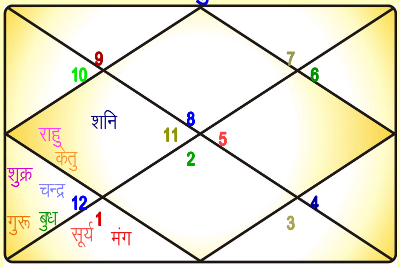

षष्ठांश कुण्डली

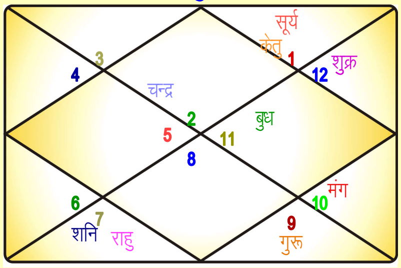

दस वर्ग सारिणी

कुण्डली	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
लग्न (जन्म) कुण्डली	**धनु**	**कन्या**	**मेष**	**वृश्चिक**	**मकर**	**मकर**	**मिथुन**	**धनु**	**मिथुन**
होरा कुण्डली	सिहं	सिहं	सिहं	सिहं	सिहं	कर्क	सिहं	सिहं	सिहं
द्रेष्काण कुण्डली	**धनु**	मकर	**मेष**	मीन	वृष	वृष	**मिथुन**	**धनु**	**मिथुन**
सप्तमांश कुण्डली	**धनु**	मिथुन	वृष	कन्या	वृश्चिक	तुला	कर्क	मकर	कर्क
नवांश कुण्डली	मेष	वृष	वृष	धनु	मिथुन	मेष	धनु	वृष	वृश्चिक
दशमांश कुण्डली	**धनु**	तुला	वृष	मकर	कुम्भ	**मकर**	सिहं	मकर	कर्क
द्वादशांश कुण्डली	**धनु**	मीन	वृष	मिथुन	सिहं	मिथुन	कन्या	कुम्भ	सिहं
षोडशांश कुण्डली	मकर	सिहं	मिथुन	मिथुन	**मकर**	तुला	मेष	कुम्भ	कुम्भ
त्रिंशांश कुण्डली	मेष	मीन	**मेष**	मीन	मीन	मीन	कुम्भ	कुम्भ	कुम्भ
षष्ठांश कुण्डली	मेष	वृष	मकर	कुम्भ	धनु	मीन	तुला	तुला	मेष
निष्कर्ष	**सिंहासन**	—	**उत्तम**	—	**पारिजात**	**पारिजात**	**पारिजात**	**पारिजात**	**पारिजात**

Printed by - MindSutra Software Technologies, New Delhi , www.mindsutra.com

षोडश वर्ग

लग्न (जन्म) कुण्डली

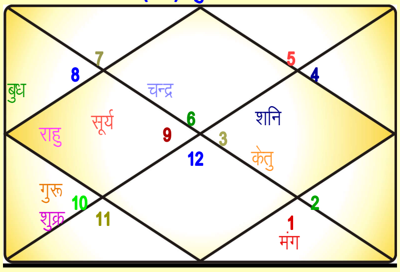

होरा कुण्डली

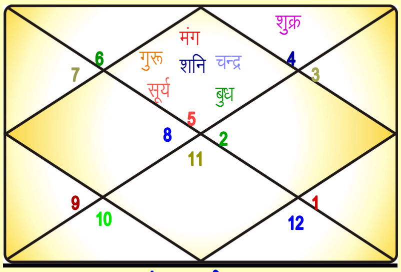

द्रेष्काण कुण्डली

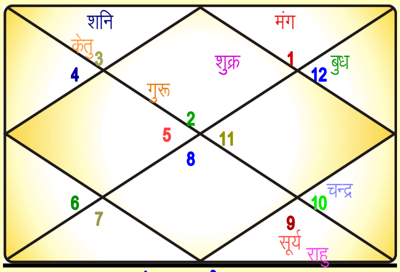

चतुर्थांश कुण्डली

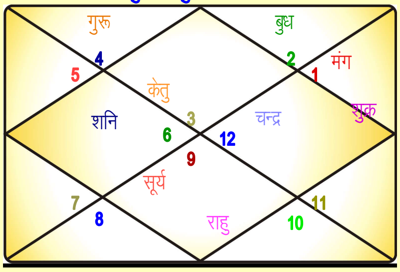

सप्तमांश कुण्डली

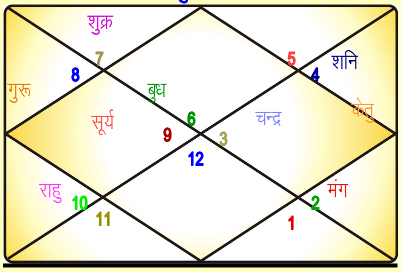

नवांश कुण्डली

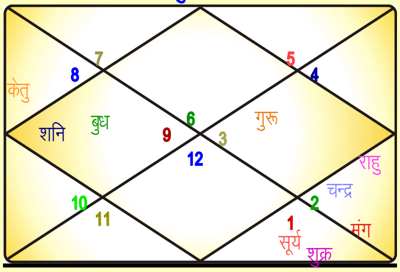

दशमांश कुण्डली

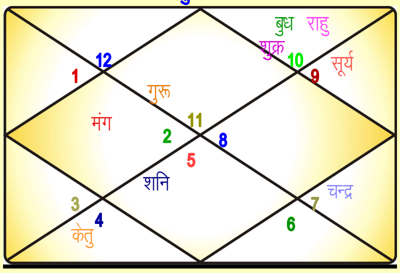

D1	मुख्य कुण्डली, सभी मुद्दों के लिए
D2	धन दौलत के लिए
D3	सहोदरों का जीवन और स्वास्थ्य
D4	भाग्य और रिहायशी मकान
D7	संतान और उनकी संतान
D9	जीवनसाथी और उनका स्वास्थ्य
D10	कारोबार और किसी भी कार्य में सफलता
D12	माता–पिता का जीवन और स्वास्थ्य
D16	वाहन से संबंधित बातें
D20	आध्यात्मिक रूझान
D24	शिक्षा, ज्ञान और समझ
D27	ताकत और दुर्बलता
D30	दरिद्रता, कठिनाईयाँ और दुर्गति
D40	शुभ–अशुभ घटनाएँ
D45	सभी मुद्दों के लिए
D60	सभी मुद्दों के लिए

द्वादशांश कुण्डली

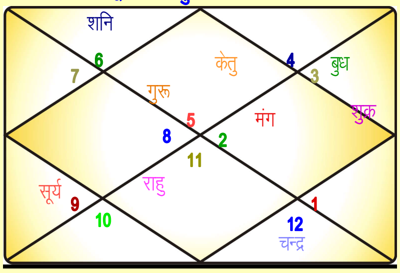

षोडशांश कुण्डली

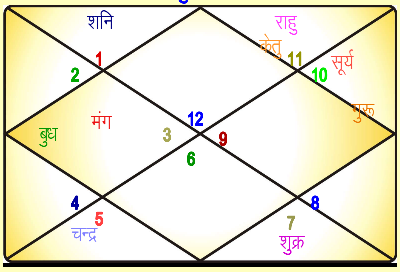

विंशांश कुण्डली

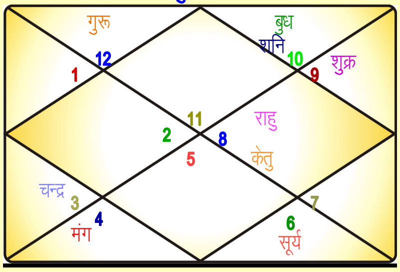

चर्तुविंशांश कुण्डली

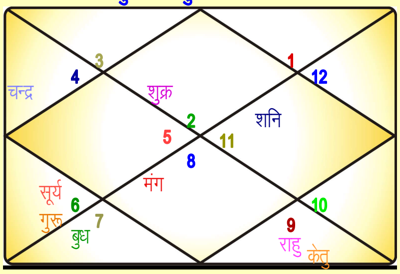

सप्तविंशांश कुण्डली

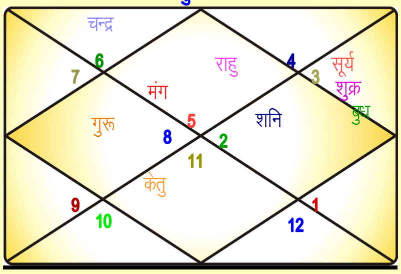

त्रिंशांश कुण्डली

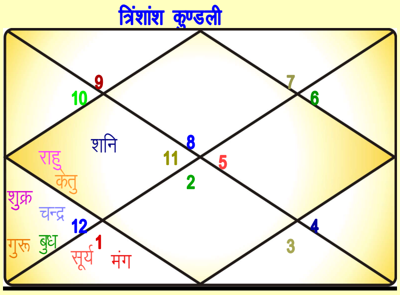

खवेदांश कुण्डली

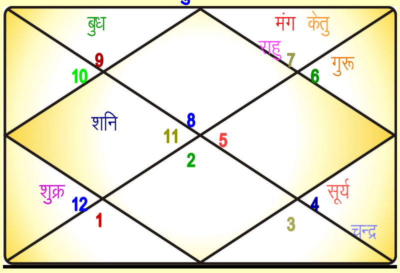

अक्षवेदांश कुण्डली

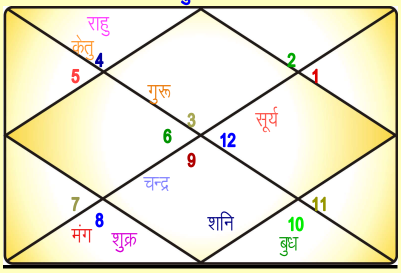

षष्ठांश कुण्डली

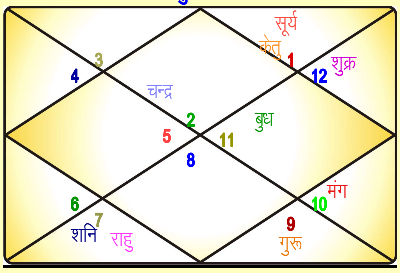

Printed by - MindSutra Software Technologies, New Delhi , www.mindsutra.com

बहुभागीय कुण्डली

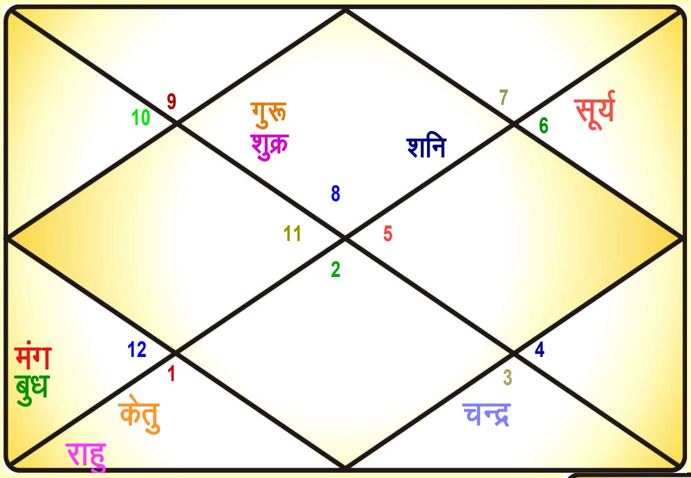

द्विसप्तती अंश कुण्डली

नवति अंश कुण्डली

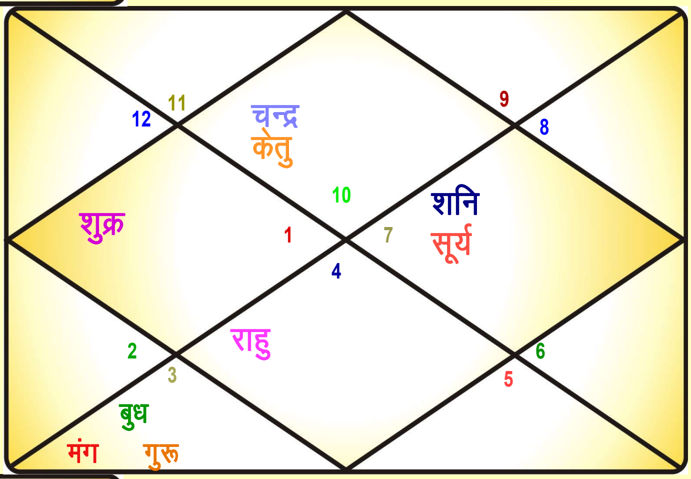

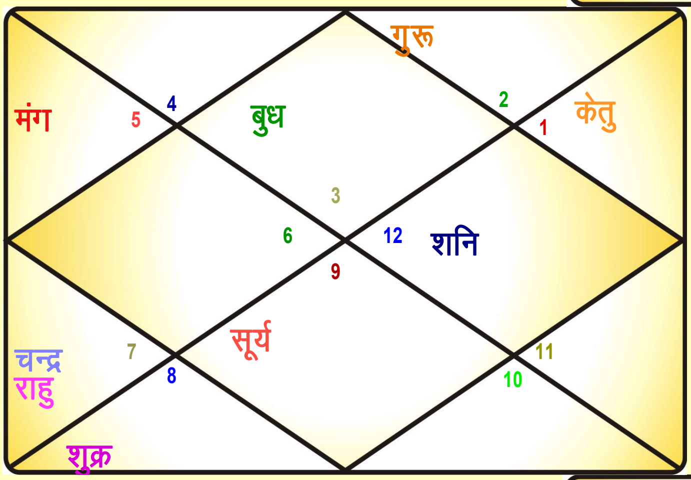

अष्टोत्तरी अंश कुण्डली

विंशोत्तरी अंश कुण्डली

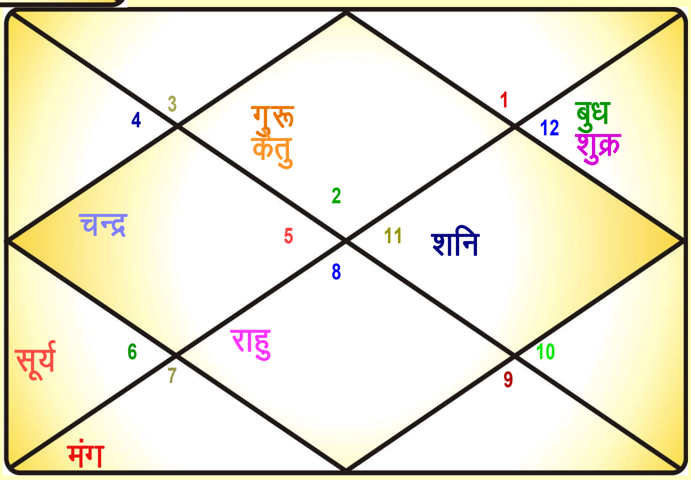

For Mindsutra Software Technologies

ग्रहों का षड्बल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उच्च बल	17.42	15.66	37.77	38.38	04.31	35.33	16.07
सप्त वर्ग बल	135.00	93.75	157.50	131.25	110.63	110.63	65.63
युग्म अयुग्म बल	30.00	30.00	15.00	15.00	15.00	15.00	30.00
केन्द्रादी बल	60.00	60.00	30.00	15.00	30.00	30.00	60.00
द्रेक्कन बल	15.00	00.00	15.00	15.00	00.00	00.00	00.00
स्थान बल	**257.42**	**199.41**	**255.27**	**214.63**	**159.94**	**190.96**	**171.69**
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	156.01	149.93	265.90	130.08	96.93	143.58	178.85
दिग बल	**08.89**	**25.69**	**31.92**	**42.80**	**23.44**	**55.31**	**36.68**
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	25.41	51.38	106.40	122.29	66.97	110.62	122.28
नतोन्नत बल	09.58	50.42	50.42	09.58	00.00	09.58	50.42
पक्ष बल	34.58	25.42	34.58	25.42	25.42	25.42	34.58
त्रिभाग बल	00.00	00.00	00.00	00.00	60.00	60.00	00.00
वर्ष बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	15.00
मास बल	00.00	00.00	00.00	30.00	00.00	00.00	00.00
दिन बल	00.00	00.00	45.00	00.00	00.00	00.00	00.00
होरा बल	60.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
अयन बल	00.30	34.23	43.09	57.64	07.83	06.24	00.12
युद्ध बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
काल बल	**104.47**	**110.06**	**173.09**	**122.64**	**93.25**	**101.24**	**100.12**
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	93.28	110.06	258.35	109.50	83.26	101.24	149.44
चेष्टा बल	**00.30**	**25.42**	**07.50**	**30.00**	**45.00**	**45.00**	**60.00**
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	00.60	84.72	18.75	60.00	90.00	150.00	150.00
नैसर्गिक बल	**60.00**	**51.43**	**17.14**	**25.71**	**34.29**	**42.86**	**08.57**
द्रिक बल	**-31.39**	**-02.62**	**-10.34**	**-23.64**	**-17.60**	**-19.69**	**00.23**
कुल षड्बल	**399.69**	**409.39**	**474.58**	**412.14**	**338.31**	**415.68**	**377.30**
षड्बल (रूप में)	**6.66**	**6.82**	**7.91**	**6.87**	**5.64**	**6.93**	**6.29**
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछनिय अंश	102.48	113.72	158.19	98.13	86.75	125.96	125.77
तुलनात्मक स्थिति	**5**	**4**	**1**	**3**	**7**	**2**	**6**
इष्ट फल	**04.96**	**19.95**	**16.83**	**33.93**	**13.93**	**39.88**	**31.05**
कष्ट फल	**55.04**	**40.05**	**43.17**	**26.07**	**46.07**	**20.12**	**28.95**
दिप्ति बल	**100.00**	**25.42**	**40.81**	**26.59**	**15.23**	**52.01**	**58.02**

भाव बल

भाव सँख्या	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
भाव राशि	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं
भावाधिपति बल	412.14	415.68	474.58	338.31	377.30	377.30	338.31	474.58	415.68	412.14	409.39	399.69
भाव दिग्बल	60.00	50.00	20.00	00.00	50.00	10.00	30.00	40.00	50.00	30.00	10.00	40.00
भाव दृिष्टिबल	-09.32	26.29	-27.68	-21.62	-14.73	-13.15	-22.75	24.81	-23.33	-07.66	-09.70	-01.82
भावबल योग	**462.82**	**491.97**	**466.91**	**316.69**	**412.57**	**374.15**	**345.57**	**539.39**	**442.35**	**434.49**	**409.69**	**437.87**
भावबल (रूप में)	**7.71**	**8.20**	**7.78**	**5.28**	**6.88**	**6.24**	**5.76**	**8.99**	**7.37**	**7.24**	**6.83**	**7.30**
तुलनात्मक स्थिति	**4**	**2**	**3**	**12**	**8**	**10**	**11**	**1**	**5**	**7**	**9**	**6**

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia

सुदर्शन चक्र

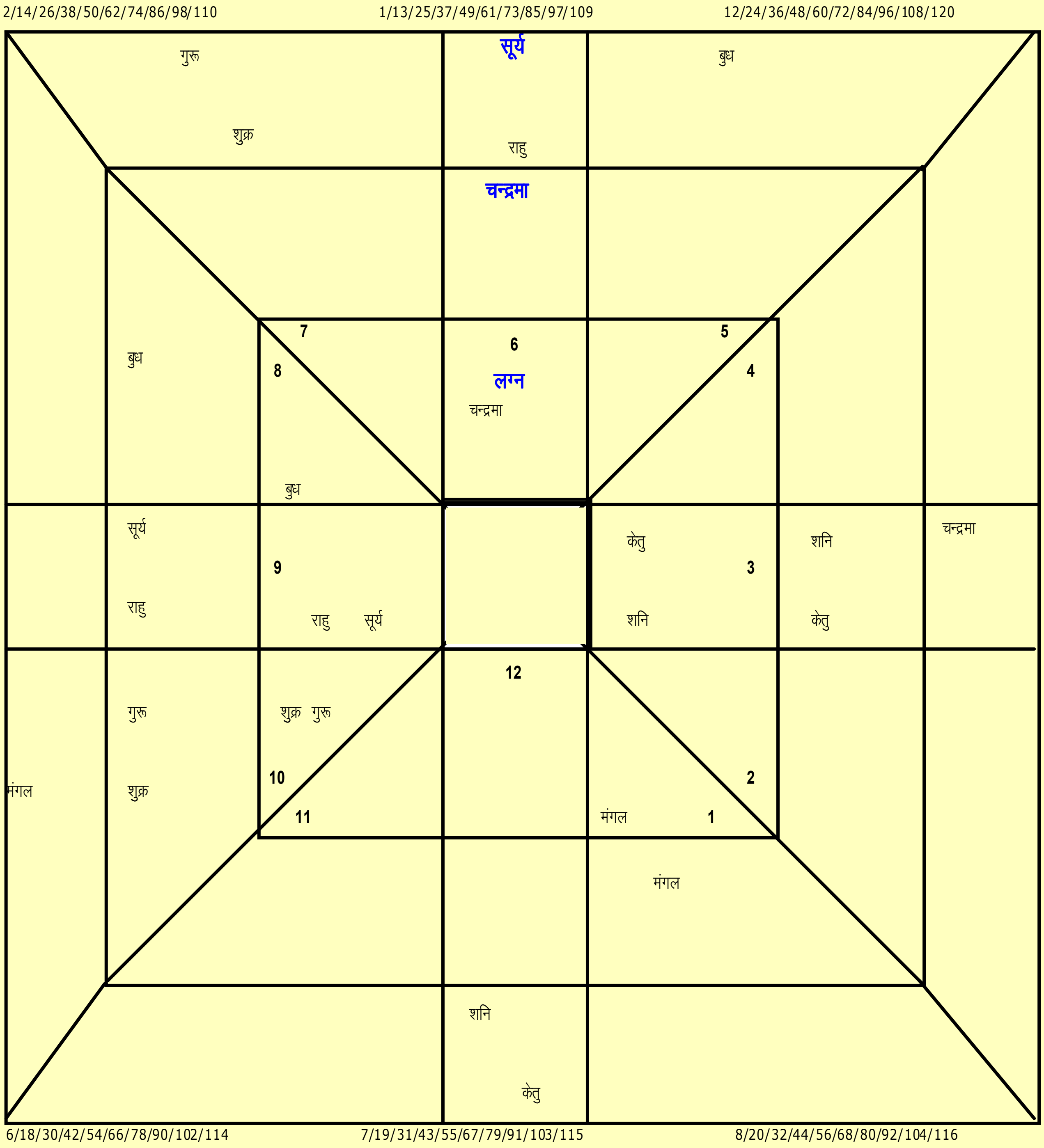

सुदर्शन चक्र शुभ और अशुभ ग्रहों के प्रभाव को दर्शाता है यह (i) लग्न (ii) चन्द्रमा और (iii)सूर्य की स्थिति से इन प्रभावों को देखता है। यह जातक की उम्र को भी दर्शाता है कि कब ये प्रभाव जातक पर पड़गें।

यदि केवल शुभ ग्रहों (वृहस्पति, शुक्र वुध, चन्द्रमा) का प्रभाव है तो पूरा साल खुशीयो से भरा होगा और मांगलिक कार्य होगें।
यदि केवल अशुभ ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतू, सुर्य) का प्रभाव है तो यह साल अमंगलकारी होगा।

ग्रह दृष्टि (पराशरी)

ग्रह	मुख्य दृष्टि	विशेष दृष्टि
सूर्य	शनि, केतु	......
चन्द्रमा	......	......
मंगल	......	बुध
बुध	......	......
गुरू	......	लग्न, चन्द्रमा
शुक्र	......	......
शनि	सूर्य, राहु	......
राहु	शनि, केतु	......
केतु	सूर्य, राहु	......

ग्रह दृष्टि (जैमिनी)

राशि (ग्रह)	सम्मुख दृष्टि	पृष्ठ दृष्टि
मेष (मं0)	वृश्चिक (बु0)	सिहं, कुम्भ
वृष	तुला	कर्क, मकर (गु0, शु0)
मिथुन (श0, के0)	कन्या (च0)	धनु (सू0, रा0), मीन
कर्क	कुम्भ	वृष, वृश्चिक (बु0)
सिहं	मकर (गु0, शु0)	मेष (मं0), तुला
कन्या (च0)	मिथुन (श0, के0)	धनु (सू0, रा0), मीन
तुला	वृष	सिहं, कुम्भ
वृश्चिक (बु0)	मेष (मं0)	कर्क, मकर (गु0, शु0)
धनु (सू0, रा0)	मीन	मिथुन (श0, के0), कन्या (च0)
मकर (गु0, शु0)	सिहं	वृष, वृश्चिक (बु0)
कुम्भ	कर्क	मेष (मं0), तुला
मीन	धनु (सू0, रा0)	मिथुन (श0, के0), कन्या (च0)

नोट – सम्मुख दृष्टि का प्रभाव पृष्ठ दृष्टि से अधिक होता है।

ग्रह दृष्टि (ताजिक)

ग्रह	लग्न	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
लग्न	---									
सूर्य	4/10 (-)	---								
चन्द्रमा	1/1 (-)	4/10 (-)	---							
मंगल	6/8 (-)	5/9 (+)	6/8 (-)	---						
बुध	3/11 (-)	2/12 (-)	3/11 (+)	6/8 (-)	---					
गुरू	5/9 (-)	2/12 (-)	5/9 (+)	4/10 (-)	3/11 (+)	---				
शुक्र	5/9 (-)	2/12 (+)	5/9 (+)	4/10 (-)	3/11 (+)	1/1 (+)	---			
शनि	4/10 (-)	7/7 (+)	4/10 (+)	3/11 (+)	6/8 (-)	6/8 (-)	6/8 (+)	---		
राहु	4/10 (-)	1/1 (+)	4/10 (-)	5/9 (+)	2/12 (-)	2/12 (-)	2/12 (-)	7/7 (+)	---	
केतु	4/10 (-)	7/7 (+)	4/10 (-)	3/11 (+)	6/8 (-)	6/8 (-)	6/8 (-)	1/1 (+)	7/7 (+)	---

लिजेण्ड –

लिजेण्ड – 1/1 युति, 2/12 अर्द्ध सेक्सटाइल, 3/11 सेक्सटाइल, 4/10 स्कवायर, 5/9 ट्राइन, 6/8 क्वीन्कशं, 7/7 से अभिप्राय यह है कि इसमें ग्रह दृष्टि की सीमा का समावेश है। (+) से अभिप्राय यह है कि इसमें ग्रह दृष्टि की सीमा का समावेश नहीं है।

नोट – ग्रह दृष्टि के लिए ताजिक सिद्धान्त के अनुसार औसत ग्रह दृष्टि की सीमा का प्रयोग किया गया है। राहु और केतू के लिए ग्रह दृष्टि की सीमा 6 अंश है, परन्तु लग्न के लिए ग्रह दृष्टि की सीमा का प्रयोग नहीं किया गया है।

ग्रह अवस्था और तारा चक्र

ग्रह	स्वप्नादि 3	बलादि 5	लज्जितादि 9	दिप्तादि 9	दिप्तादि 10
सूर्य	स्वप्न	बाल	क्षुदित	प्रमुदित	मुदित
चन्द्रमा	सुप्त	युवा	क्षुदित	दुःखित	——
मंगल	जाग्रत	बाल	गर्वित	स्वस्थ	स्वस्थ
बुध	सुप्त	कुमार	क्षुदित	दुःखित	दीन
गुरू	जाग्रत	युवा	गर्वित	दीन	दीन
शुक्र	स्वप्न	युवा	मुदित	शान्त	——
शनि	स्वप्न	कुमार	क्षुदित	दीन	वक्र
राहु	स्वप्न	मृत	क्षुदित	प्रमुदित	मुदित
केतु	स्वप्न	मृत	लज्जित	दीन	शान्त

सन्नड़ि

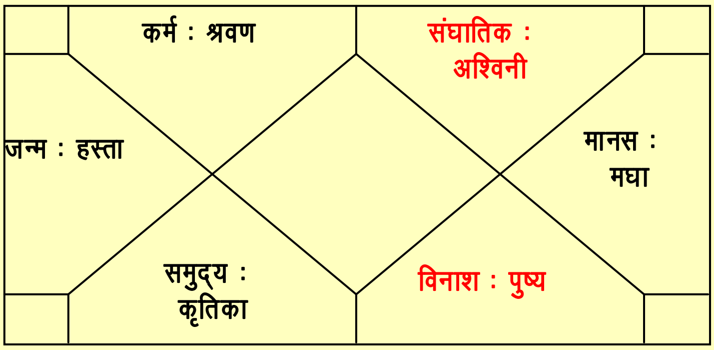

स्थुन		कंटक स्थुन–	मूला	जाति–	मघा	देश–	पुर्वफाल्गुनी
कुज स्थुन–	मघा	रक्त स्थुन–	पूर्वाषाढ	प्रतिष्ठा–	उत्तरफाल्गुनी	त्रि–नाड़ि	

नव–तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	खेष्म	प्रत्यरी	साधक	निधन	मित्र	अति मित्र
हस्ता	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूला	पूर्वाषाढ़	उत्तराषाढ़
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्र	उत्तरभाद्र	रेवति	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	अरिद्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा	मघा	पुर्वफाल्गुनी	उत्तरफाल्गुनी

आर्कचतुष्टय और नवशुभ अर्क

जन्म : हस्ता	कर्म : अभिजीत	आधान : कृतिका	नैधव : पुनर्वसु

आर्कचतुष्टय की गणना चन्द्रमा के नक्षत्र से की जाती है (28 नक्षत्रों के आधार पर)।

		दग्ध : मूला	क्षय : धनिष्ठा
	शूल : उत्तरभाद्र	सन्निपात : मृगशिरा	ध्वज : अश्लेषा
उल्का : उत्तरफाल्गुनी	भुकम्प : हस्ता	वज्रक : चित्रा	निर्घात : स्वाति

नवशुभ अर्क की गणना चन्द्रमा के नक्षत्र से की जाती है (27 नक्षत्रों के आधार पर)।

त्रि–पाप चक्र

प्रथम चक्र उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितिय चक्र उम्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतिय चक्र उम्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतू पताकी	चन्द्रमा	मंगल	बुध	शनि	गुरू	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध
केतू कुण्डली	चन्द्रमा	चन्द्रमा	चन्द्रमा	केतु	शुक्र	शुक्र	शुक्र	राहु	राहु	केतु	शनि	शनि
गुरू कुण्डली	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चन्द्रमा	बुध	गुरू	शुक्र	शनि

प्रथम चक्र उम्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितिय चक्र उम्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतिय चक्र उम्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतू पताकी	शनि	गुरू	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	शनि	गुरू	राहु
केतू कुण्डली	शनि	सूर्य	सूर्य	सूर्य	केतु	बुध	बुध	बुध	मंगल	मंगल	मंगल	केतु
गुरू कुण्डली	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चन्द्रमा	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल

प्रथम चक्र उम्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितिय चक्र उम्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतिय चक्र उम्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतू पताकी	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	शनि	गुरू	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य
केतू कुण्डली	गुरू	गुरू	गुरू	चन्द्रमा	चन्द्रमा	चन्द्रमा	केतु	शुक्र	शुक्र	शुक्र	राहु	राहु
गुरू कुण्डली	केतु	चन्द्रमा	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चन्द्रमा	बुध

त्रि–आयुध चक्र से विश्लेषण

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने पर रथ चक्र के अनुसार यह पीछे वाले भाग में नीचे की ओर स्थित है। आपकी कुण्डली में यदि कोई संशोधित प्रभाव नहीं है तो, आप एक बहुत भाग्यशाली व्यक्ति रहेंगे। स्वंय पर आश्रित होने के बजाय दूसरो का अनुसरण करने की आपकी आदत हो सकती है। इस कारण आप नौकरी में ही बने रह सकते हैं।

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने पर घूर्ण चक्र के अनुसार यह आठवें भाग में स्थित है। आप की कुण्डली में यदि कोई संशोधित प्रभाव नहीं है तो, आप खुद अपने भाग्य के निर्माता होंगे आपकी अनमोल विशेषताओ (लगन और मेहनत) को लोग आपकी किस्मत कहेंगे। आपका भाग्य हमेशा चमकता रहेगा।

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने पर चाप चक्र के अनुसार यह बॉयी ओर धनुष की डोरी के जोड़ पर स्थित है। आप की कुण्डली में यदि कोई संशोधित प्रभाव नहीं है तो, आप अपने जीवन में कुछ समय के लिये परिस्थितियों से घिर सकते हैं परन्तु आप स्ंवय अपना रास्ता बना लेंगे।

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia

अष्टकवर्ग सिद्धान्त – भिन्नाष्टक वर्ग

आधार – लग्न (जन्म) कुण्डली (परासर) अष्टकवर्ग सिद्धान्त – (परासर)

सूर्य

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
♃ वृह0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	4
♂ मगंल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
☉ सूर्य	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
♀ शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
☿ वुध	1	0	0	1	1	1	1	0	0	1	0	1	7
☽ चन्द्रमा	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
AC लग्न	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
योग	3	2	6	7	3	4	3	4	5	4	4	3	48

सूर्य

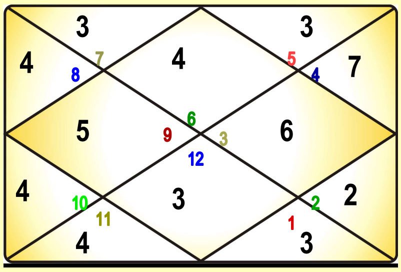

चन्द्रमा

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
♃ वृह0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
♂ मगंल	0	1	1	0	1	1	0	0	1	1	1	0	7
☉ सूर्य	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	6
♀ शुक्र	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	7
☿ वुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
☽ चन्द्रमा	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	1	6
AC लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
योग	3	4	5	5	4	5	4	6	1	3	6	3	49

चन्द्रमा

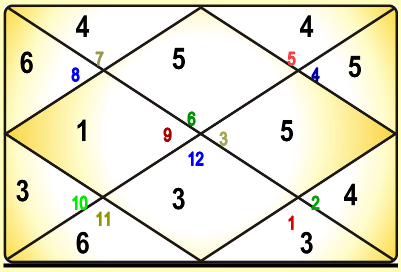

मंगल

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	7
♃ वृह0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	4
♂ मगंल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
☉ सूर्य	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	5
♀ शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
☿ वुध	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
☽ चन्द्रमा	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
AC लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
योग	4	2	4	3	1	4	3	5	3	3	5	2	39

मंगल

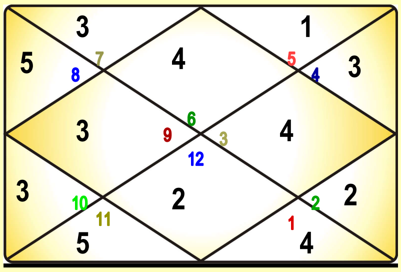

बुध

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
♃ वृह0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
♂ मगंल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
☉ सूर्य	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	5
♀ शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
☿ वुध	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	1	8
☽ चन्द्रमा	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	6
AC लग्न	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	7
योग	7	3	4	5	4	4	5	5	5	4	5	3	54

बुध

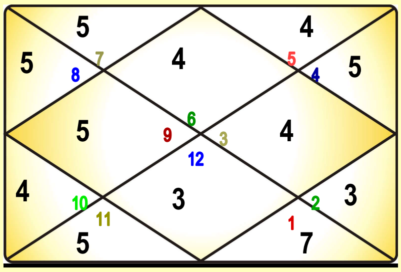

अष्टकवर्ग सिद्धान्त – भिन्नाष्टक वर्ग

आधार – लग्न (जन्म) कुण्डली (परासर) अष्टकवर्ग सिद्धान्त – (परासर)

गुरू

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
♃ वृह0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	1	8
♂ मगंल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
☉ सूर्य	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	9
♀ शुक्र	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
☿ वुध	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
☽ चंद्रमा	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	5
AC लग्न	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
योग	3	5	3	6	4	4	7	5	3	5	6	5	56

गुरू

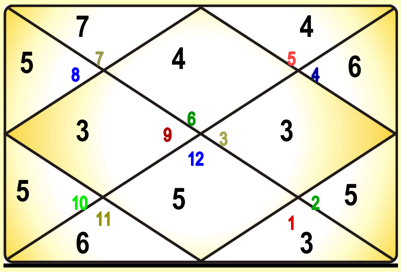

शुक्र

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	7
♃ वृह0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	5
♂ मगंल	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	6
☉ सूर्य	0	0	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	3
♀ शुक्र	1	1	0	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
☿ वुध	1	0	0	1	0	1	0	0	0	1	0	1	5
☽ चंद्रमा	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	9
AC लग्न	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	8
योग	5	4	1	5	4	7	6	5	3	5	3	4	52

शुक्र

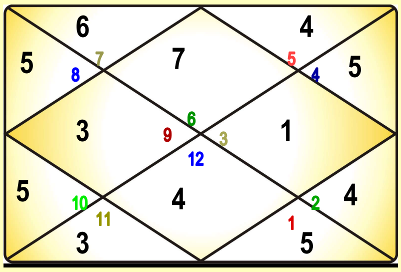

शनि

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
♃ वृह0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
♂ मगंल	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	6
☉ सूर्य	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
♀ शुक्र	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
☿ वुध	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	6
☽ चंद्रमा	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
AC लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
योग	2	1	6	4	3	4	3	5	4	2	3	2	39

शनि

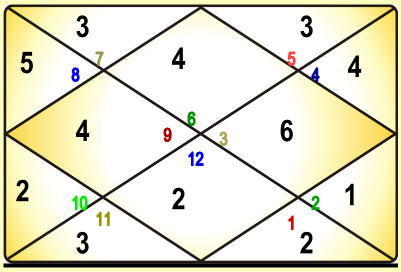

लग्न

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
♃ वृह0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
♂ मगंल	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	5
☉ सूर्य	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
♀ शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	7
☿ वुध	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
☽ चंद्रमा	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	5
AC लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
योग	5	3	6	3	4	6	2	6	1	3	7	3	49

लग्न

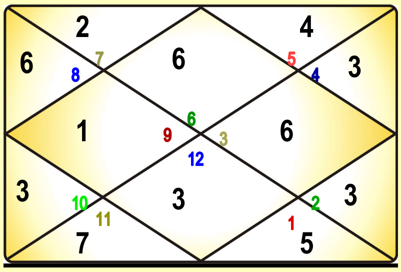

अष्टकवर्ग सिद्धान्त – भिन्नाष्टक वर्ग

आधार – लग्न (जन्म) कुण्डली (परासर) अष्टकवर्ग सिद्धान्त – (परासर)

राहु													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	0	1	6
♃ वृह0	1	0	1	0	1	0	0	0	0	1	0	1	5
♂ मगंल	0	1	1	0	1	0	0	0	0	0	0	1	4
☉ सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	0	7
♀ ुक्र	0	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	4
☿ वुध	0	1	1	0	0	0	1	0	1	0	1	0	5
☽ द्रमा	1	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	7
AC लग्न	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	0	0	5
योग	4	5	6	2	4	2	2	3	5	4	2	4	43

राहु

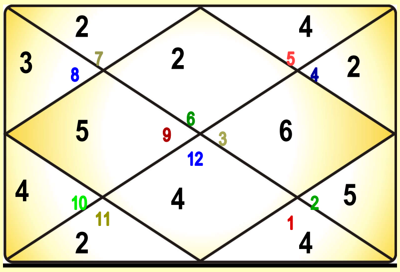

कक्ष बल													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	7	1	4	2	5	5	4	4	3	4	4	5	48
♃ वृह0	3	4	5	3	4	3	5	8	3	3	3	1	45
♂ मगंल	5	5	4	5	2	4	4	4	4	7	8	2	54
☉ सूर्य	2	4	4	5	3	6	8	3	3	3	4	4	49
♀ ुक्र	4	5	4	2	4	5	3	6	3	3	4	4	47
☿ वुध	7	1	3	5	6	8	3	4	2	5	3	6	53
☽ द्रमा	2	2	4	8	2	2	3	6	2	2	6	2	41
AC लग्न	2	2	7	8	1	5	3	6	5	2	7	1	49
योग	32	24	35	38	27	38	33	41	25	29	39	25	86

कक्ष बल

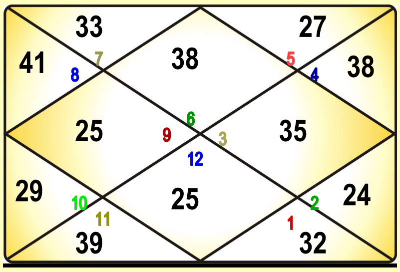

For Mindsutra Software Technologies

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia

अष्टकवर्ग सिद्धान्त – त्रिकोन एवम् एकाधिपत्य शोधन

आधार – लग्न (जन्म) कुण्डली (परासर) अष्टकवर्ग सिद्धान्त – (परासर)

सूर्य

शोधन से पूर्व

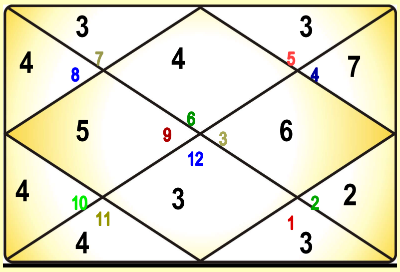

त्रिकोन शोधन

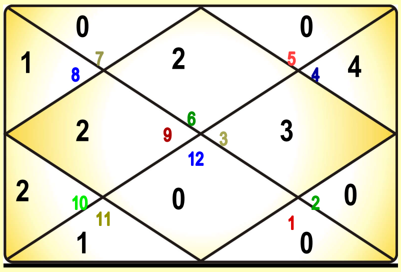

एकाधिपत्य शोधन

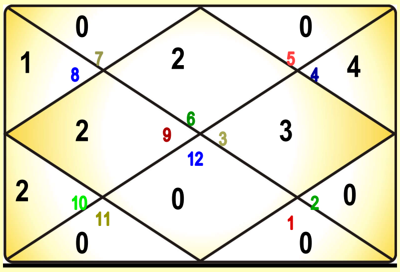

राशि पिण्ड	86	ग्रह पिण्ड	74	शुद्ध पिण्ड	160

चन्द्रमा

शोधन से पूर्व

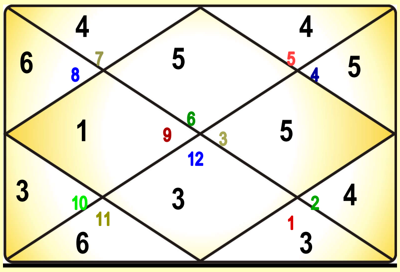

त्रिकोन शोधन

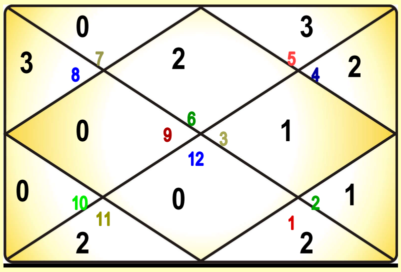

एकाधिपत्य शोधन

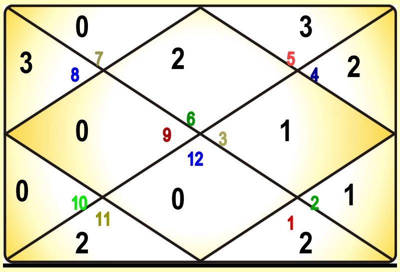

राशि पिण्ड	126	ग्रह पिण्ड	46	शुद्ध पिण्ड	172

मंगल

शोधन से पूर्व

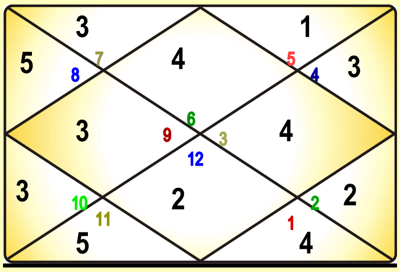

त्रिकोन शोधन

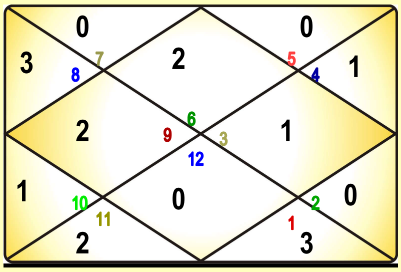

एकाधिपत्य शोधन

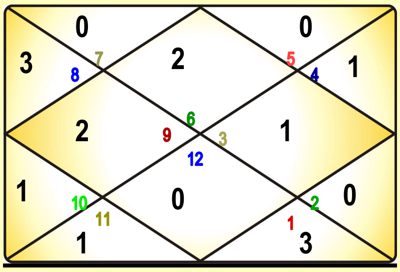

राशि पिण्ड	101	ग्रह पिण्ड	81	शुद्ध पिण्ड	182

बुध

शोधन से पूर्व

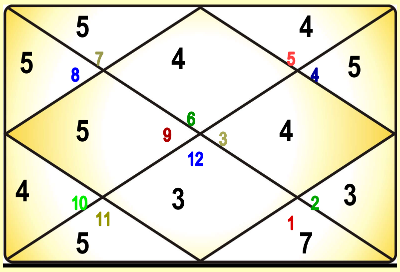

त्रिकोन शोधन

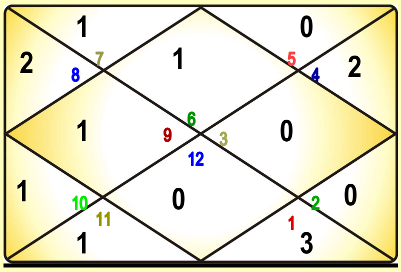

एकाधिपत्य शोधन

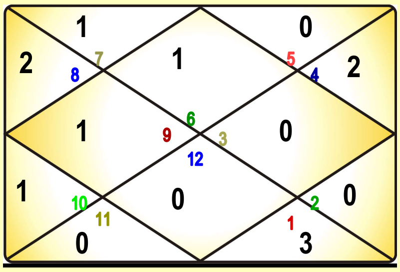

राशि पिण्ड	71	ग्रह पिण्ड	61	शुद्ध पिण्ड	132

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia

अष्टकवर्ग सिद्धान्त – त्रिकोन एवम् एकाधिपत्य शोधन

आधार – लग्न (जन्म) कुण्डली (परासर) अष्टकवर्ग सिद्धान्त – (परासर)

गुरू

शोधन से पूर्व | **त्रिकोन शोधन** | **एकाधिपत्य शोधन**

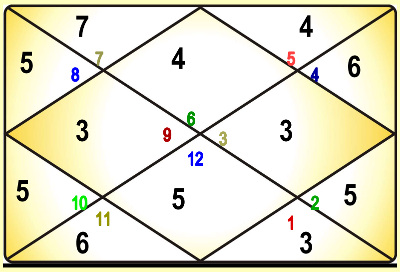

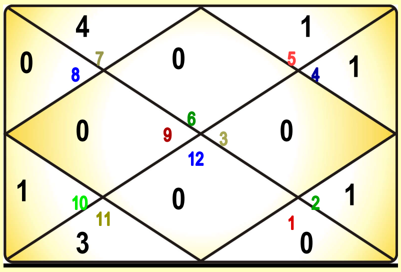

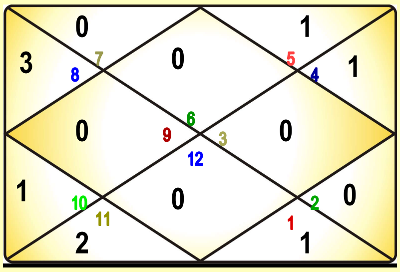

राशि पिण्ड 72 ग्रह पिण्ड 40 शुद्ध पिण्ड 112

शुक्र

शोधन से पूर्व | **त्रिकोन शोधन** | **एकाधिपत्य शोधन**

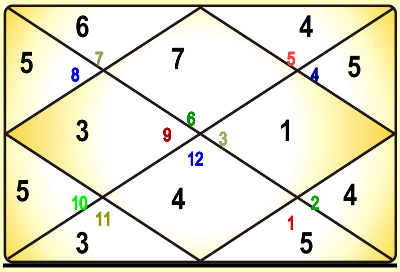

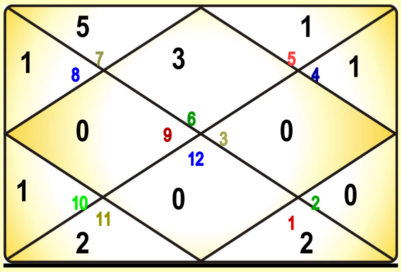

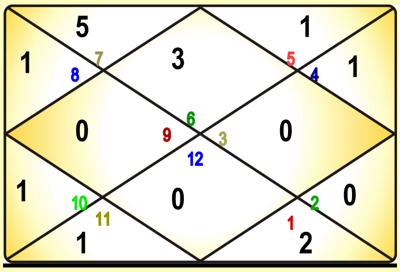

राशि पिण्ड 102 ग्रह पिण्ड 53 शुद्ध पिण्ड 155

शनि

शोधन से पूर्व | **त्रिकोन शोधन** | **एकाधिपत्य शोधन**

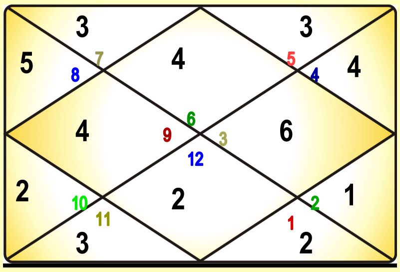

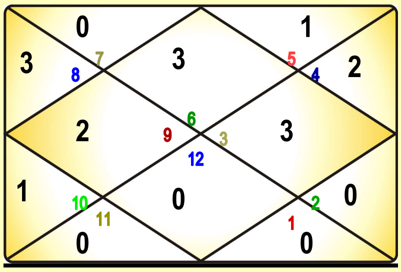

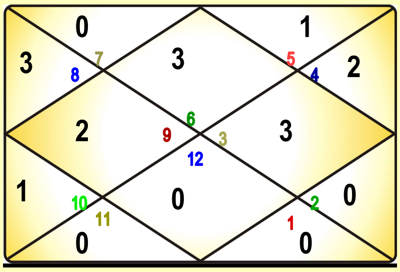

राशि पिण्ड 104 ग्रह पिण्ड 72 शुद्ध पिण्ड 176

लग्न

शोधन से पूर्व | **त्रिकोन शोधन** | **एकाधिपत्य शोधन**

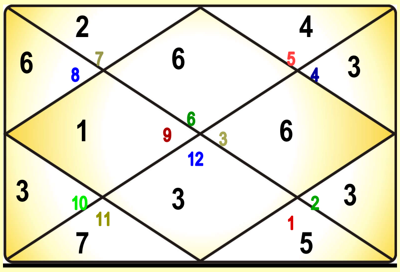

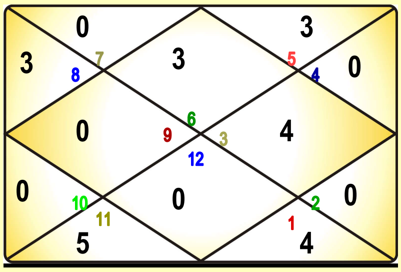

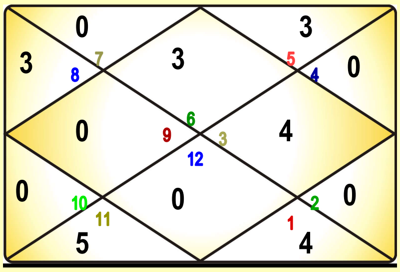

राशि पिण्ड 184 ग्रह पिण्ड 82 शुद्ध पिण्ड 266

सर्वाष्टक वर्ग से निष्कर्ष

सर्वाष्टक वर्ग

राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव		VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄	शनि	2	1	6	4	3	4	3	5	4	2	3	2	39
♃	बृहस्पति	3	5	3	6	4	4	7	5	3	5	6	5	56
♂	मगंल	4	2	4	3	1	4	3	5	3	3	5	2	39
☉	सूर्य	3	2	6	7	3	4	3	4	5	4	4	3	48
♀	शुक्र	5	4	1	5	4	7	6	5	3	5	3	4	52
☿	बुध	7	3	4	5	4	4	5	5	5	4	5	3	54
☽	चन्द्रमा	3	4	5	5	4	5	4	6	1	3	6	3	49
योग		27	21	29	35	23	32	31	35	24	26	32	22	337
AC	लग्न	5	3	6	3	4	6	2	6	1	3	7	3	49
☊	राहु	4	5	6	2	4	2	2	3	5	4	2	4	43

तत्व चक

स0 व0 बिन्दु	पूर्णाकं	प्राप्ति	शुभ दिशा
अग्नि त्रिकोन	84.25	74	पूर्व
पृथ्वी त्रिकोन	84.25	79	दक्षिण
वायु त्रिकोन	84.25	92	पश्चिम
जल त्रिकोन	84.25	92	उत्तर

(विशेष– सबसे ज्यादा बिन्दु सबसे शुभ दिशा को इंगित करता है (पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर)। अगर दोनो भागों के बिन्दुओं की संख्या बराबर या आसपास हैं तो शुभ दिशा (उपू0, दपू0, उप0 और दप0) होगी।)

भुवन चक

स0 व0 बिन्दु	पूर्णाकं	प्राप्ति	निष्कर्ष
केन्द्र भाव–राशि	112.33	107	मेहनत और लगन
पनफरा भाव–राशि	112.33	119	आर्थिक स्थिति
अपक्लिम् भाव–राशि	112.33	111	वित्त हानि

दिशा चक

भाग	स0 व0 बिन्दु	पूर्णाकं	प्राप्ति	निष्कर्ष
बन्धूक	भाग्य त्रिकोन	84.25	79	बन्धु –बान्धवो से सहायता
सेवक	कर्म त्रिकोन	84.25	92	नौकरी से अर्जन
पोषक	लाभ त्रिकोन	84.25	92	लाभ और धन
घातक	व्यय त्रिकोन	84.25	74	दुर्भाग्य और हानि

सर्वाष्टकवर्ग योग

दमरूक योग : आपकी जन्म कुण्डली के सर्वाष्टक वर्ग के मध्य भाग (पाँचवी से आठवीं भाव राशि तक) में सबसे कम शुभ बिन्दु हैं, इस कारण आपकी कुण्ड़ली में दमरूक योग है। आप अपने जीवन के दूसरे चरण (लगभग 24 से 48 वर्ष) की अपेक्षा पहले चरण (24 वर्ष तक) और तीसरे चरण (लगभग 48 से 72 वर्ष) में अधिक समृद्ध रहेंगे।

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : ०२३:२६:३६) : चन्द्रमा : 5 व. 5 मा. 26 दि.

क0 स0		ग्रह दशा	अवधि	से ---------- तक
1	☽	चन्द्रमा महादशा	5 y.5 m.26 d.	18:12:1973 --- 14:06:1979
2	♂	मंगल महादशा	7 y.0 m.0 d.	14:06:1979 --- 14:06:1986
3	☊	राहु महादशा	18 y.0 m.0 d.	14:06:1986 --- 13:06:2004
4	♃	गुरू महादशा	16 y.0 m.0 d.	13:06:2004 --- 13:06:2020
5	♄	शनि महादशा	19 y.0 m.0 d.	13:06:2020 --- 14:06:2039
6	☿	बुध महादशा	17 y.0 m.0 d.	14:06:2039 --- 13:06:2056
7	☋	केतु महादशा	7 y.0 m.0 d.	13:06:2056 --- 14:06:2063
8	♀	शुक्र महादशा	20 y.0 m.0 d.	14:06:2063 --- 14:06:2083
9	☉	सूर्य महादशा	6 y.0 m.0 d.	14:06:2083 --- 14:06:2089

विंशोत्तरी अन्तर्दशा

चन्द्रमा दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
चन्द्रमा	
मंगल	
राहु	
गुरू	
शनि	18:12:1973 - 14:04:1975
बुध	14:04:1975 - 13:09:1976
केतु	13:09:1976 - 14:04:1977
शुक्र	14:04:1977 - 13:12:1978
सूर्य	13:12:1978 - 14:06:1979

मंगल दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
मंगल	14:06:1979 - 10:11:1979
राहु	10:11:1979 - 28:11:1980
गुरू	28:11:1980 - 04:11:1981
शनि	04:11:1981 - 13:12:1982
बुध	13:12:1982 - 10:12:1983
केतु	10:12:1983 - 08:05:1984
शुक्र	08:05:1984 - 08:07:1985
सूर्य	08:07:1985 - 13:11:1985
चन्द्रमा	13:11:1985 - 14:06:1986

राहु दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
राहु	14:06:1986 - 24:02:1989
गुरू	24:02:1989 - 20:07:1991
शनि	20:07:1991 - 27:05:1994
बुध	27:05:1994 - 13:12:1996
केतु	13:12:1996 - 01:01:1998
शुक्र	01:01:1998 - 01:01:2001
सूर्य	01:01:2001 - 25:11:2001
चन्द्रमा	25:11:2001 - 27:05:2003
मंगल	27:05:2003 - 13:06:2004

गुरू दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
गुरू	13:06:2004 - 01:08:2006
शनि	01:08:2006 - 12:02:2009
बुध	12:02:2009 - 20:05:2011
केतु	20:05:2011 - 25:04:2012
शुक्र	25:04:2012 - 25:12:2014
सूर्य	25:12:2014 - 13:10:2015
चन्द्रमा	13:10:2015 - 12:02:2017
मंगल	12:02:2017 - 19:01:2018
राहु	19:01:2018 - 13:06:2020

शनि दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
शनि	13:06:2020 - 17:06:2023
बुध	17:06:2023 - 24:02:2026
केतु	24:02:2026 - 05:04:2027
शुक्र	05:04:2027 - 05:06:2030
सूर्य	05:06:2030 - 17:05:2031
चन्द्रमा	17:05:2031 - 16:12:2032
मंगल	16:12:2032 - 25:01:2034
राहु	25:01:2034 - 01:12:2036
गुरू	01:12:2036 - 14:06:2039

बुध दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
बुध	14:06:2039 - 10:11:2041
केतु	10:11:2041 - 07:11:2042
शुक्र	07:11:2042 - 07:09:2045
सूर्य	07:09:2045 - 14:07:2046
चन्द्रमा	14:07:2046 - 13:12:2047
मंगल	13:12:2047 - 10:12:2048
राहु	10:12:2048 - 29:06:2051
गुरू	29:06:2051 - 04:10:2053
शनि	04:10:2053 - 13:06:2056

केतु दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
केतु	13:06:2056 - 10:11:2056
शुक्र	10:11:2056 - 10:01:2058
सूर्य	10:01:2058 - 17:05:2058
चन्द्रमा	17:05:2058 - 16:12:2058
मंगल	16:12:2058 - 14:05:2059
राहु	14:05:2059 - 01:06:2060
गुरू	01:06:2060 - 08:05:2061
शनि	08:05:2061 - 17:06:2062
बुध	17:06:2062 - 14:06:2063

शुक्र दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
शुक्र	14:06:2063 - 13:10:2066
सूर्य	13:10:2066 - 13:10:2067
चन्द्रमा	13:10:2067 - 14:06:2069
मंगल	14:06:2069 - 14:08:2070
राहु	14:08:2070 - 14:08:2073
गुरू	14:08:2073 - 13:04:2076
शनि	13:04:2076 - 14:06:2079
बुध	14:06:2079 - 14:04:2082
केतु	14:04:2082 - 14:06:2083

सूर्य दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
सूर्य	14:06:2083 - 01:10:2083
चन्द्रमा	01:10:2083 - 01:04:2084
मंगल	01:04:2084 - 07:08:2084
राहु	07:08:2084 - 02:07:2085
गुरू	02:07:2085 - 20:04:2086
शनि	20:04:2086 - 02:04:2087
बुध	02:04:2087 - 06:02:2088
केतु	06:02:2088 - 13:06:2088
शुक्र	13:06:2088 - 14:06:2089

विंशोत्तरी दशा

चन्द्रमा महादशा (18:12:1973 से 14:06:1979)

प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –

		शनि अन्तर्दशा		बुध अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
				बुध	14:04:1975
		बुध	18:12:1973	केतु	26:06:1975
		केतु	05:03:1974	शुक्र	26:07:1975
		शुक्र	08:04:1974	सूर्य	21:10:1975
		सूर्य	13:07:1974	चन्द्रमा	15:11:1975
		चन्द्रमा	11:08:1974	मंगल	28:12:1975
		मंगल	28:09:1974	राहु	28:01:1976
		राहु	01:11:1974	गुरू	14:04:1976
		गुरू	27:01:1975	शनि	23:06:1976

केतु अन्तर्दशा		शुक्र अन्तर्दशा		सूर्य अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
केतु	13:09:1976	शुक्र	14:04:1977	सूर्य	13:12:1978
शुक्र	25:09:1976	सूर्य	24:07:1977	चन्द्रमा	22:12:1978
सूर्य	31:10:1976	चन्द्रमा	24:08:1977	मंगल	07:01:1979
चन्द्रमा	10:11:1976	मंगल	13:10:1977	राहु	17:01:1979
मंगल	28:11:1976	राहु	18:11:1977	गुरू	14:02:1979
राहु	11:12:1976	गुरू	17:02:1978	शनि	10:03:1979
गुरू	12:01:1977	शनि	09:05:1978	बुध	08:04:1979
शनि	09:02:1977	बुध	14:08:1978	केतु	04:05:1979
बुध	15:03:1977	केतु	08:11:1978	शुक्र	14:05:1979

विंशोत्तरी दशा

मंगल महादशा (14:06:1979 से 14:06:1986)

मंगल अन्तर्दशा		राहु अन्तर्दशा		गुरू अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
मंगल	14:06:1979	राहु	10:11:1979	गुरू	28:11:1980
राहु	22:06:1979	गुरू	06:01:1980	शनि	12:01:1981
गुरू	15:07:1979	शनि	27:02:1980	बुध	07:03:1981
शनि	04:08:1979	बुध	27:04:1980	केतु	25:04:1981
बुध	27:08:1979	केतु	21:06:1980	शुक्र	15:05:1981
केतु	17:09:1979	शुक्र	13:07:1980	सूर्य	10:07:1981
शुक्र	26:09:1979	सूर्य	15:09:1980	चन्द्रमा	27:07:1981
सूर्य	21:10:1979	चन्द्रमा	05:10:1980	मंगल	25:08:1981
चन्द्रमा	28:10:1979	मंगल	06:11:1980	राहु	14:09:1981

शनि अन्तर्दशा		बुध अन्तर्दशा		केतु अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
शनि	04:11:1981	बुध	13:12:1982	केतु	10:12:1983
बुध	07:01:1982	केतु	03:02:1983	शुक्र	19:12:1983
केतु	05:03:1982	शुक्र	24:02:1983	सूर्य	13:01:1984
शुक्र	29:03:1982	सूर्य	25:04:1983	चन्द्रमा	20:01:1984
सूर्य	04:06:1982	चन्द्रमा	13:05:1983	मंगल	02:02:1984
चन्द्रमा	24:06:1982	मंगल	12:06:1983	राहु	10:02:1984
मंगल	28:07:1982	राहु	03:07:1983	गुरू	04:03:1984
राहु	21:08:1982	गुरू	27:08:1983	शनि	24:03:1984
गुरू	20:10:1982	शनि	14:10:1983	बुध	16:04:1984

शुक्र अन्तर्दशा		सूर्य अन्तर्दशा		चन्द्रमा अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
शुक्र	08:05:1984	सूर्य	08:07:1985	चन्द्रमा	13:11:1985
सूर्य	18:07:1984	चन्द्रमा	14:07:1985	मंगल	01:12:1985
चन्द्रमा	08:08:1984	मंगल	25:07:1985	राहु	13:12:1985
मंगल	13:09:1984	राहु	02:08:1985	गुरू	14:01:1986
राहु	08:10:1984	गुरू	21:08:1985	शनि	11:02:1986
गुरू	11:12:1984	शनि	07:09:1985	बुध	17:03:1986
शनि	06:02:1985	बुध	27:09:1985	केतु	16:04:1986
बुध	14:04:1985	केतु	15:10:1985	शुक्र	29:04:1986
केतु	13:06:1985	शुक्र	23:10:1985	सूर्य	03:06:1986

विंशोत्तरी दशा

राहु महादशा (14:06:1986 से 13:06:2004)

राहु अन्तर्दशा		गुरू अन्तर्दशा		शनि अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
राहु	14:06:1986	गुरू	24:02:1989	शनि	20:07:1991
गुरू	09:11:1986	शनि	21:06:1989	बुध	01:01:1992
शनि	20:03:1987	बुध	07:11:1989	केतु	28:05:1992
बुध	23:08:1987	केतु	11:03:1990	शुक्र	28:07:1992
केतु	10:01:1988	शुक्र	01:05:1990	सूर्य	17:01:1993
शुक्र	07:03:1988	सूर्य	24:09:1990	चन्द्रमा	10:03:1993
सूर्य	19:08:1988	चन्द्रमा	07:11:1990	मंगल	05:06:1993
चन्द्रमा	07:10:1988	मंगल	19:01:1991	राहु	05:08:1993
मंगल	29:12:1988	राहु	11:03:1991	गुरू	08:01:1994

बुध अन्तर्दशा		केतु अन्तर्दशा		शुक्र अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
बुध	27:05:1994	केतु	13:12:1996	शुक्र	01:01:1998
केतु	05:10:1994	शुक्र	05:01:1997	सूर्य	02:07:1998
शुक्र	29:11:1994	सूर्य	10:03:1997	चन्द्रमा	26:08:1998
सूर्य	03:05:1995	चन्द्रमा	29:03:1997	मंगल	25:11:1998
चन्द्रमा	18:06:1995	मंगल	30:04:1997	राहु	28:01:1999
मंगल	04:09:1995	राहु	22:05:1997	गुरू	11:07:1999
राहु	28:10:1995	गुरू	18:07:1997	शनि	04:12:1999
गुरू	16:03:1996	शनि	08:09:1997	बुध	26:05:2000
शनि	18:07:1996	बुध	07:11:1997	केतु	28:10:2000

सूर्य अन्तर्दशा		चन्द्रमा अन्तर्दशा		मंगल अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
सूर्य	01:01:2001	चन्द्रमा	25:11:2001	मंगल	27:05:2003
चन्द्रमा	17:01:2001	मंगल	10:01:2002	राहु	18:06:2003
मंगल	13:02:2001	राहु	11:02:2002	गुरू	14:08:2003
राहु	04:03:2001	गुरू	04:05:2002	शनि	04:10:2003
गुरू	23:04:2001	शनि	16:07:2002	बुध	04:12:2003
शनि	06:06:2001	बुध	10:10:2002	केतु	28:01:2004
बुध	28:07:2001	केतु	27:12:2002	शुक्र	19:02:2004
केतु	12:09:2001	शुक्र	28:01:2003	सूर्य	23:04:2004
शुक्र	01:10:2001	सूर्य	29:04:2003	चन्द्रमा	12:05:2004

विंशोत्तरी दशा

गुरू महादशा (13:06:2004 से 13:06:2020)

गुरू अन्तर्दशा		शनि अन्तर्दशा		बुध अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
गुरू	13:06:2004	शनि	01:08:2006	बुध	12:02:2009
शनि	25:09:2004	बुध	26:12:2006	केतु	09:06:2009
बुध	27:01:2005	केतु	06:05:2007	शुक्र	28:07:2009
केतु	17:05:2005	शुक्र	29:06:2007	सूर्य	12:12:2009
शुक्र	02:07:2005	सूर्य	30:11:2007	चन्द्रमा	23:01:2010
सूर्य	08:11:2005	चन्द्रमा	15:01:2008	मंगल	02:04:2010
चन्द्रमा	17:12:2005	मंगल	01:04:2008	राहू	20:05:2010
मंगल	20:02:2006	राहू	26:05:2008	गुरू	21:09:2010
राहू	07:04:2006	गुरू	12:10:2008	शनि	09:01:2011

केतु अन्तर्दशा		शुक्र अन्तर्दशा		सूर्य अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
केतु	20:05:2011	शुक्र	25:04:2012	सूर्य	25:12:2014
शुक्र	09:06:2011	सूर्य	05:10:2012	चन्द्रमा	09:01:2015
सूर्य	05:08:2011	चन्द्रमा	23:11:2012	मंगल	02:02:2015
चन्द्रमा	22:08:2011	मंगल	12:02:2013	राहू	19:02:2015
मंगल	20:09:2011	राहू	10:04:2013	गुरू	04:04:2015
राहू	09:10:2011	गुरू	03:09:2013	शनि	13:05:2015
गुरू	29:11:2011	शनि	11:01:2014	बुध	28:06:2015
शनि	14:01:2012	बुध	14:06:2014	केतु	09:08:2015
बुध	08:03:2012	केतु	30:10:2014	शुक्र	26:08:2015

चन्द्रमा अन्तर्दशा		मंगल अन्तर्दशा		राहु अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
चन्द्रमा	13:10:2015	मंगल	12:02:2017	राहू	19:01:2018
मंगल	23:11:2015	राहू	04:03:2017	गुरू	30:05:2018
राहू	21:12:2015	गुरू	24:04:2017	शनि	24:09:2018
गुरू	04:03:2016	शनि	08:06:2017	बुध	10:02:2019
शनि	08:05:2016	बुध	01:08:2017	केतु	14:06:2019
बुध	24:07:2016	केतु	19:09:2017	शुक्र	04:08:2019
केतु	01:10:2016	शुक्र	09:10:2017	सूर्य	28:12:2019
शुक्र	29:10:2016	सूर्य	04:12:2017	चन्द्रमा	10:02:2020
सूर्य	19:01:2017	चन्द्रमा	21:12:2017	मंगल	23:04:2020

विंशोत्तरी दशा

शनि महादशा (13:06:2020 से 14:06:2039)

शनि अन्तर्दशा		बुध अन्तर्दशा		केतु अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	**से –**	**प्रत्यन्तर्दशा**	**से –**	**प्रत्यन्तर्दशा**	**से –**
शनि	13:06:2020	बुध	17:06:2023	केतु	24:02:2026
बुध	05:12:2020	केतु	03:11:2023	शुक्र	20:03:2026
केतु	09:05:2021	शुक्र	30:12:2023	सूर्य	26:05:2026
शुक्र	12:07:2021	सूर्य	11:06:2024	चन्द्रमा	16:06:2026
सूर्य	11:01:2022	चन्द्रमा	31:07:2024	मंगल	19:07:2026
चन्द्रमा	07:03:2022	मंगल	21:10:2024	राहु	12:08:2026
मंगल	07:06:2022	राहु	17:12:2024	गुरू	12:10:2026
राहु	10:08:2022	गुरू	14:05:2025	शनि	04:12:2026
गुरू	21:01:2023	शनि	22:09:2025	बुध	07:02:2027

शुक्र अन्तर्दशा		सूर्य अन्तर्दशा		चन्द्रमा अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	**से –**	**प्रत्यन्तर्दशा**	**से –**	**प्रत्यन्तर्दशा**	**से –**
शुक्र	05:04:2027	सूर्य	05:06:2030	चन्द्रमा	17:05:2031
सूर्य	14:10:2027	चन्द्रमा	22:06:2030	मंगल	05:07:2031
चन्द्रमा	11:12:2027	मंगल	21:07:2030	राहु	07:08:2031
मंगल	17:03:2028	राहु	10:08:2030	गुरू	02:11:2031
राहु	23:05:2028	गुरू	01:10:2030	शनि	18:01:2032
गुरू	13:11:2028	शनि	16:11:2030	बुध	19:04:2032
शनि	16:04:2029	बुध	10:01:2031	केतु	10:07:2032
बुध	16:10:2029	केतु	28:02:2031	शुक्र	13:08:2032
केतु	29:03:2030	शुक्र	21:03:2031	सूर्य	17:11:2032

मंगल अन्तर्दशा		राहु अन्तर्दशा		गुरू अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	**से –**	**प्रत्यन्तर्दशा**	**से –**	**प्रत्यन्तर्दशा**	**से –**
मंगल	16:12:2032	राहु	25:01:2034	गुरू	01:12:2036
राहु	09:01:2033	गुरू	30:06:2034	शनि	03:04:2037
गुरू	11:03:2033	शनि	16:11:2034	बुध	28:08:2037
शनि	04:05:2033	बुध	29:04:2035	केतु	06:01:2038
बुध	07:07:2033	केतु	24:09:2035	शुक्र	01:03:2038
केतु	02:09:2033	शुक्र	23:11:2035	सूर्य	02:08:2038
शुक्र	25:09:2033	सूर्य	15:05:2036	चन्द्रमा	17:09:2038
सूर्य	02:12:2033	चन्द्रमा	06:07:2036	मंगल	03:12:2038
चन्द्रमा	22:12:2033	मंगल	01:10:2036	राहु	26:01:2039

विंशोत्तरी दशा

बुध महादशा (14:06:2039 से 13:06:2056)

बुध अन्तर्दशा		केतु अन्तर्दशा		शुक्र अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
बुध	14:06:2039	केतु	10:11:2041	शुक्र	07:11:2042
केतु	16:10:2039	शुक्र	01:12:2041	सूर्य	28:04:2043
शुक्र	07:12:2039	सूर्य	30:01:2042	चन्द्रमा	19:06:2043
सूर्य	01:05:2040	चन्द्रमा	17:02:2042	मंगल	13:09:2043
चन्द्रमा	14:06:2040	मंगल	20:03:2042	राहु	12:11:2043
मंगल	27:08:2040	राहु	10:04:2042	गुरू	16:04:2044
राहु	17:10:2040	गुरू	03:06:2042	शनि	01:09:2044
गुरू	26:02:2041	शनि	21:07:2042	बुध	12:02:2045
शनि	24:06:2041	बुध	16:09:2042	केतु	09:07:2045

सूर्य अन्तर्दशा		चन्द्रमा अन्तर्दशा		मंगल अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
सूर्य	07:09:2045	चन्द्रमा	14:07:2046	मंगल	13:12:2047
चन्द्रमा	22:09:2045	मंगल	26:08:2046	राहु	03:01:2048
मंगल	18:10:2045	राहु	25:09:2046	गुरू	27:02:2048
राहु	05:11:2045	गुरू	12:12:2046	शनि	15:04:2048
गुरू	22:12:2045	शनि	19:02:2047	बुध	12:06:2048
शनि	01:02:2046	बुध	12:05:2047	केतु	02:08:2048
बुध	22:03:2046	केतु	24:07:2047	शुक्र	23:08:2048
केतु	05:05:2046	शुक्र	23:08:2047	सूर्य	23:10:2048
शुक्र	23:05:2046	सूर्य	17:11:2047	चन्द्रमा	10:11:2048

राहु अन्तर्दशा		गुरू अन्तर्दशा		शनि अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
राहु	10:12:2048	गुरू	29:06:2051	शनि	04:10:2053
गुरू	29:04:2049	शनि	17:10:2051	बुध	09:03:2054
शनि	31:08:2049	बुध	25:02:2052	केतु	26:07:2054
बुध	25:01:2050	केतु	22:06:2052	शुक्र	21:09:2054
केतु	06:06:2050	शुक्र	09:08:2052	सूर्य	04:03:2055
शुक्र	30:07:2050	सूर्य	26:12:2052	चन्द्रमा	22:04:2055
सूर्य	02:01:2051	चन्द्रमा	05:02:2053	मंगल	13:07:2055
चन्द्रमा	17:02:2051	मंगल	15:04:2053	राहु	08:09:2055
मंगल	06:05:2051	राहु	02:06:2053	गुरू	03:02:2056

विंशोत्तरी दशा

केतु महादशा (13:06:2056 से 14:06:2063)

केतु अन्तर्दशा		शुक्र अन्तर्दशा		सूर्य अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
केतु	13:06:2056	शुक्र	10:11:2056	सूर्य	10:01:2058
शुक्र	22:06:2056	सूर्य	20:01:2057	चन्द्रमा	16:01:2058
सूर्य	17:07:2056	चन्द्रमा	10:02:2057	मंगल	27:01:2058
चन्द्रमा	24:07:2056	मंगल	18:03:2057	राहु	03:02:2058
मंगल	06:08:2056	राहु	11:04:2057	गुरू	22:02:2058
राहु	14:08:2056	गुरू	14:06:2057	शनि	11:03:2058
गुरू	06:09:2056	शनि	10:08:2057	बुध	01:04:2058
शनि	26:09:2056	बुध	16:10:2057	केतु	19:04:2058
बुध	20:10:2056	केतु	16:12:2057	शुक्र	26:04:2058

चन्द्रमा अन्तर्दशा		मंगल अन्तर्दशा		राहु अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
चन्द्रमा	17:05:2058	मंगल	16:12:2058	राहु	14:05:2059
मंगल	04:06:2058	राहु	25:12:2058	गुरू	11:07:2059
राहु	17:06:2058	गुरू	16:01:2059	शनि	31:08:2059
गुरू	18:07:2058	शनि	05:02:2059	बुध	31:10:2059
शनि	16:08:2058	बुध	01:03:2059	केतु	24:12:2059
बुध	19:09:2058	केतु	22:03:2059	शुक्र	15:01:2060
केतु	19:10:2058	शुक्र	31:03:2059	सूर्य	19:03:2060
शुक्र	31:10:2058	सूर्य	24:04:2059	चन्द्रमा	08:04:2060
सूर्य	06:12:2058	चन्द्रमा	02:05:2059	मंगल	10:05:2060

गुरू अन्तर्दशा		शनि अन्तर्दशा		बुध अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
गुरू	01:06:2060	शनि	08:05:2061	बुध	17:06:2062
शनि	17:07:2060	बुध	11:07:2061	केतु	07:08:2062
बुध	09:09:2060	केतु	07:09:2061	शुक्र	28:08:2062
केतु	27:10:2060	शुक्र	30:09:2061	सूर्य	28:10:2062
शुक्र	16:11:2060	सूर्य	07:12:2061	चन्द्रमा	15:11:2062
सूर्य	12:01:2061	चन्द्रमा	27:12:2061	मंगल	15:12:2062
चन्द्रमा	29:01:2061	मंगल	30:01:2062	राहु	05:01:2063
मंगल	26:02:2061	राहु	22:02:2062	गुरू	28:02:2063
राहु	18:03:2061	गुरू	24:04:2062	शनि	17:04:2063

विंशोत्तरी दशा

शुक्र महादशा (14:06:2063 से 14:06:2083)

शुक्र अन्तर्दशा		सूर्य अन्तर्दशा		चन्द्रमा अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
शुक्र	14:06:2063	सूर्य	13:10:2066	चन्द्रमा	13:10:2067
सूर्य	03:01:2064	चन्द्रमा	01:11:2066	मंगल	03:12:2067
चन्द्रमा	04:03:2064	मंगल	01:12:2066	राहु	08:01:2068
मंगल	13:06:2064	राहु	22:12:2066	गुरू	08:04:2068
राहु	23:08:2064	गुरू	15:02:2067	शनि	28:06:2068
गुरू	22:02:2065	शनि	05:04:2067	बुध	03:10:2068
शनि	03:08:2065	बुध	02:06:2067	केतु	28:12:2068
बुध	12:02:2066	केतु	23:07:2067	शुक्र	02:02:2069
केतु	03:08:2066	शुक्र	14:08:2067	सूर्य	14:05:2069

मंगल अन्तर्दशा		राहु अन्तर्दशा		गुरू अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
मंगल	14:06:2069	राहु	14:08:2070	गुरू	14:08:2073
राहु	09:07:2069	गुरू	25:01:2071	शनि	21:12:2073
गुरू	10:09:2069	शनि	20:06:2071	बुध	24:05:2074
शनि	06:11:2069	बुध	10:12:2071	केतु	09:10:2074
बुध	13:01:2070	केतु	14:05:2072	शुक्र	05:12:2074
केतु	14:03:2070	शुक्र	17:07:2072	सूर्य	16:05:2075
शुक्र	08:04:2070	सूर्य	16:01:2073	चन्द्रमा	04:07:2075
सूर्य	18:06:2070	चन्द्रमा	11:03:2073	मंगल	23:09:2075
चन्द्रमा	09:07:2070	मंगल	11:06:2073	राहु	19:11:2075

शनि अन्तर्दशा		बुध अन्तर्दशा		केतु अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
शनि	13:04:2076	बुध	14:06:2079	केतु	14:04:2082
बुध	14:10:2076	केतु	07:11:2079	शुक्र	09:05:2082
केतु	27:03:2077	शुक्र	07:01:2080	सूर्य	19:07:2082
शुक्र	02:06:2077	सूर्य	27:06:2080	चन्द्रमा	09:08:2082
सूर्य	12:12:2077	चन्द्रमा	18:08:2080	मंगल	14:09:2082
चन्द्रमा	08:02:2078	मंगल	13:11:2080	राहु	08:10:2082
मंगल	15:05:2078	राहु	12:01:2081	गुरू	11:12:2082
राहु	21:07:2078	गुरू	16:06:2081	शनि	06:02:2083
गुरू	11:01:2079	शनि	01:11:2081	बुध	14:04:2083

विंशोत्तरी दशा

सूर्य महादशा (14:06:2083 से 14:06:2089)

सूर्य अन्तर्दशा		चन्द्रमा अन्तर्दशा		मंगल अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
सूर्य	14:06:2083	चन्द्रमा	01:10:2083	मंगल	01:04:2084
चन्द्रमा	19:06:2083	मंगल	16:10:2083	राहु	08:04:2084
मंगल	28:06:2083	राहु	27:10:2083	गुरू	28:04:2084
राहु	05:07:2083	गुरू	24:11:2083	शनि	15:05:2084
गुरू	21:07:2083	शनि	18:12:2083	बुध	04:06:2084
शनि	05:08:2083	बुध	16:01:2084	केतु	22:06:2084
बुध	22:08:2083	केतु	11:02:2084	शुक्र	30:06:2084
केतु	07:09:2083	शुक्र	21:02:2084	सूर्य	21:07:2084
शुक्र	13:09:2083	सूर्य	23:03:2084	चन्द्रमा	27:07:2084

राहु अन्तर्दशा		गुरू अन्तर्दशा		शनि अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
राहु	07:08:2084	गुरू	02:07:2085	शनि	20:04:2086
गुरू	26:09:2084	शनि	10:08:2085	बुध	14:06:2086
शनि	08:11:2084	बुध	25:09:2085	केतु	02:08:2086
बुध	31:12:2084	केतु	06:11:2085	शुक्र	22:08:2086
केतु	15:02:2085	शुक्र	23:11:2085	सूर्य	19:10:2086
शुक्र	06:03:2085	सूर्य	10:01:2086	चन्द्रमा	05:11:2086
सूर्य	30:04:2085	चन्द्रमा	25:01:2086	मंगल	04:12:2086
चन्द्रमा	16:05:2085	मंगल	18:02:2086	राहु	25:12:2086
मंगल	13:06:2085	राहु	07:03:2086	गुरू	15:02:2087

बुध अन्तर्दशा		केतु अन्तर्दशा		शुक्र अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
बुध	02:04:2087	केतु	06:02:2088	शुक्र	13:06:2088
केतु	16:05:2087	शुक्र	14:02:2088	सूर्य	13:08:2088
शुक्र	03:06:2087	सूर्य	06:03:2088	चन्द्रमा	01:09:2088
सूर्य	25:07:2087	चन्द्रमा	12:03:2088	मंगल	01:10:2088
चन्द्रमा	09:08:2087	मंगल	23:03:2088	राहु	22:10:2088
मंगल	04:09:2087	राहु	30:03:2088	गुरू	16:12:2088
राहु	22:09:2087	गुरू	19:04:2088	शनि	03:02:2089
गुरू	08:11:2087	शनि	06:05:2088	बुध	02:04:2089
शनि	19:12:2087	बुध	26:05:2088	केतु	23:05:2089

विंशोत्तरी दशा

शनि अन्तर्दशा (13:06:2020 से 17:06:2023)

शनि प्रत्यन्तर्दशा		बुध प्रत्यन्तर्दशा		केतु प्रत्यन्तर्दशा	
सूक्ष्म दशा	से –	सूक्ष्म दशा	से –	सूक्ष्म दशा	से –
शनि	13:06:2020	बुध	05:12:2020	केतु	09:05:2021
बुध	11:07:2020	केतु	27:12:2020	शुक्र	13:05:2021
केतु	05:08:2020	शुक्र	05:01:2021	सूर्य	24:05:2021
शुक्र	15:08:2020	सूर्य	31:01:2021	चन्द्रमा	27:05:2021
सूर्य	13:09:2020	चन्द्रमा	07:02:2021	मंगल	01:06:2021
चन्द्रमा	21:09:2020	मंगल	20:02:2021	राहु	05:06:2021
मंगल	06:10:2020	राहु	01:03:2021	गुरू	14:06:2021
राहु	16:10:2020	गुरू	25:03:2021	शनि	23:06:2021
गुरू	11:11:2020	शनि	15:04:2021	बुध	03:07:2021

शुक्र प्रत्यन्तर्दशा		सूर्य प्रत्यन्तर्दशा		चन्द्रमा प्रत्यन्तर्दशा	
सूक्ष्म दशा	से –	सूक्ष्म दशा	से –	सूक्ष्म दशा	से –
शुक्र	12:07:2021	सूर्य	11:01:2022	चन्द्रमा	07:03:2022
सूर्य	12:08:2021	चन्द्रमा	14:01:2022	मंगल	15:03:2022
चन्द्रमा	21:08:2021	मंगल	19:01:2022	राहु	20:03:2022
मंगल	05:09:2021	राहु	22:01:2022	गुरू	03:04:2022
राहु	16:09:2021	गुरू	30:01:2022	शनि	15:04:2022
गुरू	13:10:2021	शनि	06:02:2022	बुध	30:04:2022
शनि	07:11:2021	बुध	15:02:2022	केतु	12:05:2022
बुध	06:12:2021	केतु	23:02:2022	शुक्र	18:05:2022
केतु	01:01:2022	शुक्र	26:02:2022	सूर्य	02:06:2022

मंगल प्रत्यन्तर्दशा		राहु प्रत्यन्तर्दशा		गुरू प्रत्यन्तर्दशा	
सूक्ष्म दशा	से –	सूक्ष्म दशा	से –	सूक्ष्म दशा	से –
मंगल	07:06:2022	राहु	10:08:2022	गुरू	21:01:2023
राहु	10:06:2022	गुरू	03:09:2022	शनि	10:02:2023
गुरू	20:06:2022	शनि	25:09:2022	बुध	05:03:2023
शनि	29:06:2022	बुध	21:10:2022	केतु	26:03:2023
बुध	09:07:2022	केतु	14:11:2022	शुक्र	03:04:2023
केतु	18:07:2022	शुक्र	23:11:2022	सूर्य	28:04:2023
शुक्र	21:07:2022	सूर्य	21:12:2022	चन्द्रमा	05:05:2023
सूर्य	01:08:2022	चन्द्रमा	29:12:2022	मंगल	17:05:2023
चन्द्रमा	04:08:2022	मंगल	12:01:2023	राहु	26:05:2023

विंशोत्तरी दशा

बुध प्रत्यन्तर्दशा (05:12:2020 से 09:05:2021)

बुध सुक्ष्म दशा		केतु सुक्ष्म दशा		शुक्र सुक्ष्म दशा	
प्राण दशा	से –	प्राण दशा	से –	प्राण दशा	से –
बुध	05:12:2020 : 00:22:19AM	केतु	27:12:2020 : 02:42:40AM	शुक्र	05:01:2021 : 04:44:39AM
केतु	08:12:2020 : 03:30:12AM	शुक्र	27:12:2020 : 03:26:58PM	सूर्य	09:01:2021 : 00:26:53PM
शुक्र	09:12:2020 : 10:26:23AM	सूर्य	29:12:2020 : 03:50:43AM	चन्द्रमा	10:01:2021 : 07:33:33PM
सूर्य	13:12:2020 : 02:49:47AM	चन्द्रमा	29:12:2020 : 02:45:51PM	मंगल	12:01:2021 : 11:24:40PM
चन्द्रमा	14:12:2020 : 05:20:48AM	मंगल	30:12:2020 : 08:57:43AM	राहु	14:01:2021 : 11:42:27AM
मंगल	16:12:2020 : 01:32:29AM	राहु	30:12:2020 : 09:42:02PM	गुरू	18:01:2021 : 09:02:28AM
राहु	17:12:2020 : 08:28:40AM	गुरू	01:01:2021 : 06:22:25AM	शनि	21:01:2021 : 08:00:16PM
गुरू	20:12:2020 : 04:01:44PM	शनि	02:01:2021 : 11:24:38AM	बुध	25:01:2021 : 10:31:23PM
शनि	23:12:2020 : 02:44:26PM	बुध	03:01:2021 : 09:53:32PM	केतु	29:01:2021 : 02:40:17PM

सूर्य सुक्ष्म दशा		चन्द्रमा सुक्ष्म दशा		मंगल सुक्ष्म दशा	
प्राण दशा	से –	प्राण दशा	से –	प्राण दशा	से –
सूर्य	31:01:2021 : 02:58:04AM	चन्द्रमा	07:02:2021 : 09:38:05PM	मंगल	20:02:2021 : 08:44:48PM
चन्द्रमा	31:01:2021 : 00:18:04PM	मंगल	08:02:2021 : 11:33:39PM	राहु	21:02:2021 : 09:27:01AM
मंगल	01:02:2021 : 03:51:24AM	राहु	09:02:2021 : 05:42:32PM	गुरू	22:02:2021 : 06:07:02PM
राहु	01:02:2021 : 02:44:44PM	गुरू	11:02:2021 : 04:22:33PM	शनि	23:02:2021 : 11:09:15PM
गुरू	02:02:2021 : 06:44:44PM	शनि	13:02:2021 : 09:51:27AM	बुध	25:02:2021 : 09:38:09AM
शनि	03:02:2021 : 07:38:05PM	बुध	15:02:2021 : 11:07:00AM	केतु	26:02:2021 : 04:29:16PM
बुध	05:02:2021 : 01:11:25AM	केतु	17:02:2021 : 07:11:27AM	शुक्र	27:02:2021 : 05:11:29AM
केतु	06:02:2021 : 03:38:05AM	शुक्र	18:02:2021 : 01:20:21AM	सूर्य	28:02:2021 : 05:29:16PM
शुक्र	06:02:2021 : 02:31:25PM	सूर्य	20:02:2021 : 05:11:28AM	चन्द्रमा	01:03:2021 : 04:22:36AM

राहु सुक्ष्म दशा		गुरू सुक्ष्म दशा		शनि सुक्ष्म दशा	
प्राण दशा	से –	प्राण दशा	से –	प्राण दशा	से –
राहु	01:03:2021 : 10:31:30PM	गुरू	25:03:2021 : 06:31:34AM	शनि	15:04:2021 : 00:18:18AM
गुरू	05:03:2021 : 10:31:30AM	शनि	28:03:2021 : 00:53:48AM	बुध	18:04:2021 : 09:53:52PM
शनि	08:03:2021 : 01:11:31PM	बुध	31:03:2021 : 07:42:42AM	केतु	22:04:2021 : 09:38:20AM
बुध	12:03:2021 : 05:51:32AM	केतु	03:04:2021 : 06:13:49AM	शुक्र	23:04:2021 : 08:07:13PM
केतु	15:03:2021 : 01:11:32PM	शुक्र	04:04:2021 : 11:16:03AM	सूर्य	27:04:2021 : 10:38:21PM
शुक्र	16:03:2021 : 09:51:33PM	सूर्य	07:04:2021 : 10:13:50PM	चन्द्रमा	29:04:2021 : 04:11:41AM
सूर्य	20:03:2021 : 07:11:33PM	चन्द्रमा	08:04:2021 : 11:07:10PM	मंगल	01:05:2021 : 05:27:15AM
चन्द्रमा	21:03:2021 : 11:11:34PM	मंगल	10:04:2021 : 04:36:04PM	राहु	02:05:2021 : 03:56:08PM
मंगल	23:03:2021 : 09:51:34PM	राहु	11:04:2021 : 09:38:18PM	गुरू	06:05:2021 : 08:36:09AM

विंशोत्तरी दशा

(अन्य विभाजन विधि)

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : चन्द्रमा : 5 व. 5 मा. 26 दि.

क्र0 स0		ग्रह दशा	अवधि	से ---------- तक
1	☽	चन्द्रमा महादशा	5 y.5 m.26 d.	18:12:1973 -- 14:06:1979
2	♂	मंगल महादशा	7 y.0 m.0 d.	14:06:1979 -- 14:06:1986
3	☊	राहु महादशा	18 y.0 m.0 d.	14:06:1986 -- 13:06:2004
4	♃	गुरू महादशा	16 y.0 m.0 d.	13:06:2004 -- 13:06:2020
5	♄	शनि महादशा	19 y.0 m.0 d.	13:06:2020 -- 14:06:2039
6	☿	बुध महादशा	17 y.0 m.0 d.	14:06:2039 -- 13:06:2056
7	☋	केतु महादशा	7 y.0 m.0 d.	13:06:2056 -- 14:06:2063
8	♀	शुक्र महादशा	20 y.0 m.0 d.	14:06:2063 -- 14:06:2083
9	☉	सूर्य महादशा	6 y.0 m.0 d.	14:06:2083 -- 14:06:2089

विंशोत्तरी अन्तर्दशा

चन्द्रमा दशा
18:12:1973 — 14:06:1979

अन्तर्दशा	से
कन्या	18:12:1973
तुला	18:12:1973
वृश्चिक	18:12:1973
धनु	18:12:1973
मकर	18:12:1973
कुम्भ	18:12:1973
मीन	14:06:1974
मेष	14:04:1975
वृष	12:02:1976
मिथुन	13:12:1976
कर्क	13:10:1977
सिहं	14:08:1978

मंगल दशा
14:06:1979 — 14:06:1986

अन्तर्दशा	से
मेष	14:06:1979
वृष	13:01:1980
मिथुन	13:08:1980
कर्क	15:03:1981
सिहं	13:10:1981
कन्या	14:05:1982
तुला	13:12:1982
वृश्चिक	14:07:1983
धनु	12:02:1984
मकर	13:09:1984
कुम्भ	14:04:1985
मीन	13:11:1985

राहु दशा
14:06:1986 — 13:06:2004

अन्तर्दशा	से
धनु	14:06:1986
मकर	13:12:1987
कुम्भ	14:06:1989
मीन	13:12:1990
मेष	13:06:1992
वृष	13:12:1993
मिथुन	14:06:1995
कर्क	13:12:1996
सिहं	14:06:1998
कन्या	13:12:1999
तुला	14:06:2001
वृश्चिक	13:12:2002

गुरू दशा
13:06:2004 — 13:06:2020

अन्तर्दशा	से
मकर	13:06:2004
कुम्भ	13:10:2005
मीन	12:02:2007
मेष	13:06:2008
वृष	13:10:2009
मिथुन	12:02:2011
कर्क	13:06:2012
सिहं	13:10:2013
कन्या	12:02:2015
तुला	13:06:2016
वृश्चिक	13:10:2017
धनु	12:02:2019

शनि दशा
13:06:2020 — 14:06:2039

अन्तर्दशा	से
मिथुन	13:06:2020
कर्क	13:01:2022
सिहं	14:08:2023
कन्या	15:03:2025
तुला	13:10:2026
वृश्चिक	14:05:2028
धनु	13:12:2029
मकर	14:07:2031
कुम्भ	12:02:2033
मीन	13:09:2034
मेष	13:04:2036
वृष	13:11:2037

बुध दशा
14:06:2039 — 13:06:2056

अन्तर्दशा	से
वृश्चिक	14:06:2039
धनु	13:11:2040
मकर	14:04:2042
कुम्भ	13:09:2043
मीन	12:02:2045
मेष	14:07:2046
वृष	13:12:2047
मिथुन	14:05:2049
कर्क	13:10:2050
सिहं	14:03:2052
कन्या	14:08:2053
तुला	13:01:2055

केतु दशा
13:06:2056 — 14:06:2063

अन्तर्दशा	से
मिथुन	13:06:2056
कर्क	13:01:2057
सिहं	14:08:2057
कन्या	15:03:2058
तुला	13:10:2058
वृश्चिक	14:05:2059
धनु	13:12:2059
मकर	14:07:2060
कुम्भ	12:02:2061
मीन	13:09:2061
मेष	14:04:2062
वृष	13:11:2062

शुक्र दशा
14:06:2063 — 14:06:2083

अन्तर्दशा	से
मकर	14:06:2063
कुम्भ	12:02:2065
मीन	13:10:2066
मेष	13:06:2068
वृष	12:02:2070
मिथुन	13:10:2071
कर्क	14:06:2073
सिहं	12:02:2075
कन्या	13:10:2076
तुला	14:06:2078
वृश्चिक	12:02:2080
धनु	13:10:2081

सूर्य दशा
14:06:2083 — 14:06:2089

अन्तर्दशा	से
धनु	14:06:2083
मकर	13:12:2083
कुम्भ	13:06:2084
मीन	13:12:2084
मेष	14:06:2085
वृष	13:12:2085
मिथुन	14:06:2086
कर्क	13:12:2086
सिहं	14:06:2087
कन्या	13:12:2087
तुला	13:06:2088
वृश्चिक	13:12:2088

विंशोत्तरी दशा

(अन्य विभाजन विधि)

चन्द्रमा दशा (18:12:1973 –– 14:06:1979)

प्रत्यंतर	से ––
शनि	
गुरू	
मंगल	
सूर्य	
शुक्र	
बुध	
चन्द्रमा	
लग्न	

प्रत्यंतर	से ––
शनि	
गुरू	
मंगल	
सूर्य	
शुक्र	
बुध	
चन्द्रमा	
लग्न	

प्रत्यंतर	से ––
शनि	
गुरू	
मंगल	
सूर्य	
शुक्र	
बुध	
चन्द्रमा	
लग्न	

प्रत्यंतर	से ––
शनि	
गुरू	
मंगल	
सूर्य	
शुक्र	
बुध	
चन्द्रमा	
लग्न	

प्रत्यंतर	से ––
शनि	
गुरू	
मंगल	
सूर्य	
शुक्र	
बुध	
चन्द्रमा	
लग्न	

कुम्भ अन्तर
18:12:1973 –– 14:06:1974

प्रत्यंतर	से ––
शनि	
गुरू	
मंगल	
सूर्य	18:12:1973
शुक्र	13:01:1974
बुध	20:02:1974
चन्द्रमा	30:03:1974
लग्न	07:05:1974

मीन अन्तर
14:06:1974 –– 14:04:1975

प्रत्यंतर	से ––
शनि	14:06:1974
गुरू	22:07:1974
मंगल	29:08:1974
सूर्य	06:10:1974
शुक्र	13:11:1974
बुध	21:12:1974
चन्द्रमा	28:01:1975
लग्न	07:03:1975

मेष अन्तर
14:04:1975 –– 12:02:1976

प्रत्यंतर	से ––
शनि	14:04:1975
गुरू	22:05:1975
मंगल	29:06:1975
सूर्य	06:08:1975
शुक्र	13:09:1975
बुध	21:10:1975
चन्द्रमा	28:11:1975
लग्न	05:01:1976

वृष अन्तर
12:02:1976 –– 13:12:1976

प्रत्यंतर	से ––
शनि	12:02:1976
गुरू	21:03:1976
मंगल	28:04:1976
सूर्य	06:06:1976
शुक्र	14:07:1976
बुध	21:08:1976
चन्द्रमा	28:09:1976
लग्न	05:11:1976

मिथुन अन्तर
13:12:1976 –– 13:10:1977

प्रत्यंतर	से ––
शनि	13:12:1976
गुरू	20:01:1977
मंगल	27:02:1977
सूर्य	06:04:1977
शुक्र	14:05:1977
बुध	21:06:1977
चन्द्रमा	29:07:1977
लग्न	05:09:1977

कर्क अन्तर
13:10:1977 –– 14:08:1978

प्रत्यंतर	से ––
शनि	13:10:1977
गुरू	20:11:1977
मंगल	28:12:1977
सूर्य	05:02:1978
शुक्र	15:03:1978
बुध	22:04:1978
चन्द्रमा	30:05:1978
लग्न	07:07:1978

सिहं अन्तर
14:08:1978 –– 14:06:1979

प्रत्यंतर	से ––
शनि	14:08:1978
गुरू	21:09:1978
मंगल	29:10:1978
सूर्य	06:12:1978
शुक्र	13:01:1979
बुध	20:02:1979
चन्द्रमा	30:03:1979
लग्न	07:05:1979

For Mindsutra Software Technologies

विंशोत्तरी दशा

(अन्य विभाजन विधि)

मंगल दशा (14:06:1979 –– 14:06:1986)

मेष अन्तर
14:06:1979 –– 13:01:1980

प्रत्यंतर	से ––
शनि	14:06:1979
गुरू	10:07:1979
मंगल	06:08:1979
सूर्य	02:09:1979
शुक्र	28:09:1979
बुध	25:10:1979
चन्द्रमा	20:11:1979
लग्न	17:12:1979

वृष अन्तर
13:01:1980 –– 13:08:1980

प्रत्यंतर	से ––
शनि	13:01:1980
गुरू	08:02:1980
मंगल	06:03:1980
सूर्य	02:04:1980
शुक्र	28:04:1980
बुध	25:05:1980
चन्द्रमा	21:06:1980
लग्न	18:07:1980

मिथुन अन्तर
13:08:1980 –– 15:03:1981

प्रत्यंतर	से ––
शनि	13:08:1980
गुरू	09:09:1980
मंगल	06:10:1980
सूर्य	01:11:1980
शुक्र	28:11:1980
बुध	25:12:1980
चन्द्रमा	20:01:1981
लग्न	16:02:1981

कर्क अन्तर
15:03:1981 –– 13:10:1981

प्रत्यंतर	से ––
शनि	15:03:1981
गुरू	10:04:1981
मंगल	07:05:1981
सूर्य	02:06:1981
शुक्र	29:06:1981
बुध	26:07:1981
चन्द्रमा	21:08:1981
लग्न	17:09:1981

सिहं अन्तर
13:10:1981 –– 14:05:1982

प्रत्यंतर	से ––
शनि	13:10:1981
गुरू	09:11:1981
मंगल	06:12:1981
सूर्य	01:01:1982
शुक्र	28:01:1982
बुध	24:02:1982
चन्द्रमा	22:03:1982
लग्न	18:04:1982

कन्या अन्तर
14:05:1982 –– 13:12:1982

प्रत्यंतर	से ––
शनि	14:05:1982
गुरू	10:06:1982
मंगल	07:07:1982
सूर्य	02:08:1982
शुक्र	29:08:1982
बुध	24:09:1982
चन्द्रमा	21:10:1982
लग्न	17:11:1982

तुला अन्तर
13:12:1982 –– 14:07:1983

प्रत्यंतर	से ––
शनि	13:12:1982
गुरू	09:01:1983
मंगल	05:02:1983
सूर्य	03:03:1983
शुक्र	30:03:1983
बुध	25:04:1983
चन्द्रमा	22:05:1983
लग्न	18:06:1983

वृश्चिक अन्तर
14:07:1983 –– 12:02:1984

प्रत्यंतर	से ––
शनि	14:07:1983
गुरू	10:08:1983
मंगल	05:09:1983
सूर्य	02:10:1983
शुक्र	29:10:1983
बुध	24:11:1983
चन्द्रमा	21:12:1983
लग्न	17:01:1984

धनु अन्तर
12:02:1984 –– 13:09:1984

प्रत्यंतर	से ––
शनि	12:02:1984
गुरू	10:03:1984
मंगल	06:04:1984
सूर्य	02:05:1984
शुक्र	29:05:1984
बुध	25:06:1984
चन्द्रमा	21:07:1984
लग्न	17:08:1984

मकर अन्तर
13:09:1984 –– 14:04:1985

प्रत्यंतर	से ––
शनि	13:09:1984
गुरू	09:10:1984
मंगल	05:11:1984
सूर्य	02:12:1984
शुक्र	28:12:1984
बुध	24:01:1985
चन्द्रमा	20:02:1985
लग्न	18:03:1985

कुम्भ अन्तर
14:04:1985 –– 13:11:1985

प्रत्यंतर	से ––
शनि	14:04:1985
गुरू	11:05:1985
मंगल	06:06:1985
सूर्य	03:07:1985
शुक्र	29:07:1985
बुध	25:08:1985
चन्द्रमा	21:09:1985
लग्न	17:10:1985

मीन अन्तर
13:11:1985 –– 14:06:1986

प्रत्यंतर	से ––
शनि	13:11:1985
गुरू	09:12:1985
मंगल	05:01:1986
सूर्य	01:02:1986
शुक्र	27:02:1986
बुध	26:03:1986
चन्द्रमा	22:04:1986
लग्न	18:05:1986

विंशोत्तरी दशा

(अन्य विभाजन विधि)

राहु दशा (14:06:1986 —— 13:06:2004)

धनु अन्तर
14:06:1986 —— 13:12:1987

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:06:1986
गुरू	21:08:1986
मंगल	29:10:1986
सूर्य	05:01:1987
शुक्र	15:03:1987
बुध	22:05:1987
चन्द्रमा	29:07:1987
लग्न	06:10:1987

मकर अन्तर
13:12:1987 —— 14:06:1989

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:12:1987
गुरू	20:02:1988
मंगल	28:04:1988
सूर्य	06:07:1988
शुक्र	13:09:1988
बुध	20:11:1988
चन्द्रमा	28:01:1989
लग्न	06:04:1989

कुम्भ अन्तर
14:06:1989 —— 13:12:1990

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:06:1989
गुरू	21:08:1989
मंगल	29:10:1989
सूर्य	05:01:1990
शुक्र	15:03:1990
बुध	22:05:1990
चन्द्रमा	29:07:1990
लग्न	06:10:1990

मीन अन्तर
13:12:1990 —— 13:06:1992

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:12:1990
गुरू	20:02:1991
मंगल	29:04:1991
सूर्य	07:07:1991
शुक्र	13:09:1991
बुध	20:11:1991
चन्द्रमा	28:01:1992
लग्न	06:04:1992

मेष अन्तर
13:06:1992 —— 13:12:1993

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:06:1992
गुरू	21:08:1992
मंगल	28:10:1992
सूर्य	05:01:1993
शुक्र	15:03:1993
बुध	22:05:1993
चन्द्रमा	29:07:1993
लग्न	06:10:1993

वृष अन्तर
13:12:1993 —— 14:06:1995

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:12:1993
गुरू	20:02:1994
मंगल	29:04:1994
सूर्य	07:07:1994
शुक्र	13:09:1994
बुध	20:11:1994
चन्द्रमा	28:01:1995
लग्न	06:04:1995

मिथुन अन्तर
14:06:1995 —— 13:12:1996

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:06:1995
गुरू	21:08:1995
मंगल	29:10:1995
सूर्य	05:01:1996
शुक्र	14:03:1996
बुध	21:05:1996
चन्द्रमा	29:07:1996
लग्न	06:10:1996

कर्क अन्तर
13:12:1996 —— 14:06:1998

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:12:1996
गुरू	20:02:1997
मंगल	29:04:1997
सूर्य	07:07:1997
शुक्र	13:09:1997
बुध	20:11:1997
चन्द्रमा	28:01:1998
लग्न	06:04:1998

सिहं अन्तर
14:06:1998 —— 13:12:1999

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:06:1998
गुरू	21:08:1998
मंगल	29:10:1998
सूर्य	05:01:1999
शुक्र	15:03:1999
बुध	22:05:1999
चन्द्रमा	29:07:1999
लग्न	06:10:1999

कन्या अन्तर
13:12:1999 —— 14:06:2001

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:12:1999
गुरू	20:02:2000
मंगल	28:04:2000
सूर्य	06:07:2000
शुक्र	13:09:2000
बुध	20:11:2000
चन्द्रमा	28:01:2001
लग्न	06:04:2001

तुला अन्तर
14:06:2001 —— 13:12:2002

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:06:2001
गुरू	21:08:2001
मंगल	29:10:2001
सूर्य	05:01:2002
शुक्र	15:03:2002
बुध	22:05:2002
चन्द्रमा	29:07:2002
लग्न	06:10:2002

वृश्चिक अन्तर
13:12:2002 —— 13:06:2004

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:12:2002
गुरू	20:02:2003
मंगल	29:04:2003
सूर्य	07:07:2003
शुक्र	13:09:2003
बुध	20:11:2003
चन्द्रमा	28:01:2004
लग्न	06:04:2004

For Mindsutra Software Technologies

विंशोत्तरी दशा

(अन्य विभाजन विधि)

गुरू दशा (13:06:2004 —— 13:06:2020)

मकर अन्तर
13:06:2004 —— 13:10:2005

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:06:2004
गुरू	13:08:2004
मंगल	13:10:2004
सूर्य	13:12:2004
शुक्र	12:02:2005
बुध	14:04:2005
चन्द्रमा	14:06:2005
लग्न	14:08:2005

कुम्भ अन्तर
13:10:2005 —— 12:02:2007

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:10:2005
गुरू	13:12:2005
मंगल	12:02:2006
सूर्य	14:04:2006
शुक्र	14:06:2006
बुध	14:08:2006
चन्द्रमा	13:10:2006
लग्न	13:12:2006

मीन अन्तर
12:02:2007 —— 13:06:2008

प्रत्यंतर	से ——
शनि	12:02:2007
गुरू	14:04:2007
मंगल	14:06:2007
सूर्य	14:08:2007
शुक्र	13:10:2007
बुध	13:12:2007
चन्द्रमा	12:02:2008
लग्न	13:04:2008

मेष अन्तर
13:06:2008 —— 13:10:2009

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:06:2008
गुरू	13:08:2008
मंगल	13:10:2008
सूर्य	13:12:2008
शुक्र	12:02:2009
बुध	14:04:2009
चन्द्रमा	14:06:2009
लग्न	14:08:2009

वृष अन्तर
13:10:2009 —— 12:02:2011

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:10:2009
गुरू	13:12:2009
मंगल	12:02:2010
सूर्य	14:04:2010
शुक्र	14:06:2010
बुध	14:08:2010
चन्द्रमा	13:10:2010
लग्न	13:12:2010

मिथुन अन्तर
12:02:2011 —— 13:06:2012

प्रत्यंतर	से ——
शनि	12:02:2011
गुरू	14:04:2011
मंगल	14:06:2011
सूर्य	14:08:2011
शुक्र	13:10:2011
बुध	13:12:2011
चन्द्रमा	12:02:2012
लग्न	13:04:2012

कर्क अन्तर
13:06:2012 —— 13:10:2013

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:06:2012
गुरू	13:08:2012
मंगल	13:10:2012
सूर्य	13:12:2012
शुक्र	12:02:2013
बुध	14:04:2013
चन्द्रमा	14:06:2013
लग्न	14:08:2013

सिहं अन्तर
13:10:2013 —— 12:02:2015

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:10:2013
गुरू	13:12:2013
मंगल	12:02:2014
सूर्य	14:04:2014
शुक्र	14:06:2014
बुध	14:08:2014
चन्द्रमा	13:10:2014
लग्न	13:12:2014

कन्या अन्तर
12:02:2015 —— 13:06:2016

प्रत्यंतर	से ——
शनि	12:02:2015
गुरू	14:04:2015
मंगल	14:06:2015
सूर्य	14:08:2015
शुक्र	13:10:2015
बुध	13:12:2015
चन्द्रमा	12:02:2016
लग्न	13:04:2016

तुला अन्तर
13:06:2016 —— 13:10:2017

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:06:2016
गुरू	13:08:2016
मंगल	13:10:2016
सूर्य	13:12:2016
शुक्र	12:02:2017
बुध	14:04:2017
चन्द्रमा	14:06:2017
लग्न	14:08:2017

वृश्चिक अन्तर
13:10:2017 —— 12:02:2019

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:10:2017
गुरू	13:12:2017
मंगल	12:02:2018
सूर्य	14:04:2018
शुक्र	14:06:2018
बुध	14:08:2018
चन्द्रमा	13:10:2018
लग्न	13:12:2018

धनु अन्तर
12:02:2019 —— 13:06:2020

प्रत्यंतर	से ——
शनि	12:02:2019
गुरू	14:04:2019
मंगल	14:06:2019
सूर्य	14:08:2019
शुक्र	13:10:2019
बुध	13:12:2019
चन्द्रमा	12:02:2020
लग्न	13:04:2020

विंशोत्तरी दशा

(अन्य विभाजन विधि)

शनि दशा (13:06:2020 — 14:06:2039)

मिथुन अन्तर 13:06:2020 –– 13:01:2022	
प्रत्यंतर	से ––
शनि	13:06:2020
गुरू	25:08:2020
मंगल	05:11:2020
सूर्य	16:01:2021
शुक्र	30:03:2021
बुध	10:06:2021
चन्द्रमा	21:08:2021
लग्न	01:11:2021

कर्क अन्तर 13:01:2022 –– 14:08:2023	
प्रत्यंतर	से ––
शनि	13:01:2022
गुरू	26:03:2022
मंगल	06:06:2022
सूर्य	17:08:2022
शुक्र	29:10:2022
बुध	09:01:2023
चन्द्रमा	22:03:2023
लग्न	02:06:2023

सिहं अन्तर 14:08:2023 –– 15:03:2025	
प्रत्यंतर	से ––
शनि	14:08:2023
गुरू	25:10:2023
मंगल	05:01:2024
सूर्य	18:03:2024
शुक्र	29:05:2024
बुध	09:08:2024
चन्द्रमा	21:10:2024
लग्न	01:01:2025

कन्या अन्तर 15:03:2025 –– 13:10:2026	
प्रत्यंतर	से ––
शनि	15:03:2025
गुरू	26:05:2025
मंगल	06:08:2025
सूर्य	17:10:2025
शुक्र	28:12:2025
बुध	11:03:2026
चन्द्रमा	22:05:2026
लग्न	02:08:2026

तुला अन्तर 13:10:2026 –– 14:05:2028	
प्रत्यंतर	से ––
शनि	13:10:2026
गुरू	25:12:2026
मंगल	07:03:2027
सूर्य	18:05:2027
शुक्र	29:07:2027
बुध	10:10:2027
चन्द्रमा	21:12:2027
लग्न	02:03:2028

वृश्चिक अन्तर 14:05:2028 –– 13:12:2029	
प्रत्यंतर	से ––
शनि	14:05:2028
गुरू	25:07:2028
मंगल	06:10:2028
सूर्य	17:12:2028
शुक्र	27:02:2029
बुध	11:05:2029
चन्द्रमा	22:07:2029
लग्न	02:10:2029

धनु अन्तर 13:12:2029 –– 14:07:2031	
प्रत्यंतर	से ––
शनि	13:12:2029
गुरू	24:02:2030
मंगल	07:05:2030
सूर्य	18:07:2030
शुक्र	28:09:2030
बुध	09:12:2030
चन्द्रमा	20:02:2031
लग्न	03:05:2031

मकर अन्तर 14:07:2031 –– 12:02:2033	
प्रत्यंतर	से ––
शनि	14:07:2031
गुरू	24:09:2031
मंगल	06:12:2031
सूर्य	16:02:2032
शुक्र	28:04:2032
बुध	10:07:2032
चन्द्रमा	20:09:2032
लग्न	02:12:2032

कुम्भ अन्तर 12:02:2033 –– 13:09:2034	
प्रत्यंतर	से ––
शनि	12:02:2033
गुरू	25:04:2033
मंगल	07:07:2033
सूर्य	17:09:2033
शुक्र	28:11:2033
बुध	08:02:2034
चन्द्रमा	22:04:2034
लग्न	03:07:2034

मीन अन्तर 13:09:2034 –– 13:04:2036	
प्रत्यंतर	से ––
शनि	13:09:2034
गुरू	24:11:2034
मंगल	05:02:2035
सूर्य	18:04:2035
शुक्र	29:06:2035
बुध	09:09:2035
चन्द्रमा	20:11:2035
लग्न	01:02:2036

मेष अन्तर 13:04:2036 –– 13:11:2037	
प्रत्यंतर	से ––
शनि	13:04:2036
गुरू	25:06:2036
मंगल	05:09:2036
सूर्य	17:11:2036
शुक्र	28:01:2037
बुध	10:04:2037
चन्द्रमा	21:06:2037
लग्न	02:09:2037

वृष अन्तर 13:11:2037 –– 14:06:2039	
प्रत्यंतर	से ––
शनि	13:11:2037
गुरू	24:01:2038
मंगल	06:04:2038
सूर्य	18:06:2038
शुक्र	29:08:2038
बुध	09:11:2038
चन्द्रमा	20:01:2039
लग्न	03:04:2039

विंशोत्तरी दशा

(अन्य विभाजन विधि)

बुध दशा (14:06:2039 —— 13:06:2056)

वृश्चिक अन्तर
14:06:2039 —— 13:11:2040

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:06:2039
गुरू	17:08:2039
मंगल	21:10:2039
सूर्य	25:12:2039
शुक्र	27:02:2040
बुध	02:05:2040
चन्द्रमा	06:07:2040
लग्न	09:09:2040

धनु अन्तर
13:11:2040 —— 14:04:2042

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:11:2040
गुरू	16:01:2041
मंगल	22:03:2041
सूर्य	26:05:2041
शुक्र	29:07:2041
बुध	02:10:2041
चन्द्रमा	06:12:2041
लग्न	08:02:2042

मकर अन्तर
14:04:2042 —— 13:09:2043

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:04:2042
गुरू	18:06:2042
मंगल	21:08:2042
सूर्य	25:10:2042
शुक्र	28:12:2042
बुध	03:03:2043
चन्द्रमा	07:05:2043
लग्न	10:07:2043

कुम्भ अन्तर
13:09:2043 —— 12:02:2045

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:09:2043
गुरू	17:11:2043
मंगल	20:01:2044
सूर्य	25:03:2044
शुक्र	29:05:2044
बुध	02:08:2044
चन्द्रमा	06:10:2044
लग्न	09:12:2044

मीन अन्तर
12:02:2045 —— 14:07:2046

प्रत्यंतर	से ——
शनि	12:02:2045
गुरू	18:04:2045
मंगल	21:06:2045
सूर्य	25:08:2045
शुक्र	29:10:2045
बुध	01:01:2046
चन्द्रमा	07:03:2046
लग्न	11:05:2046

मेष अन्तर
14:07:2046 —— 13:12:2047

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:07:2046
गुरू	17:09:2046
मंगल	20:11:2046
सूर्य	24:01:2047
शुक्र	30:03:2047
बुध	02:06:2047
चन्द्रमा	06:08:2047
लग्न	10:10:2047

वृष अन्तर
13:12:2047 —— 14:05:2049

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:12:2047
गुरू	16:02:2048
मंगल	21:04:2048
सूर्य	25:06:2048
शुक्र	28:08:2048
बुध	01:11:2048
चन्द्रमा	05:01:2049
लग्न	11:03:2049

मिथुन अन्तर
14:05:2049 —— 13:10:2050

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:05:2049
गुरू	18:07:2049
मंगल	21:09:2049
सूर्य	24:11:2049
शुक्र	28:01:2050
बुध	03:04:2050
चन्द्रमा	06:06:2050
लग्न	10:08:2050

कर्क अन्तर
13:10:2050 —— 14:03:2052

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:10:2050
गुरू	17:12:2050
मंगल	20:02:2051
सूर्य	25:04:2051
शुक्र	29:06:2051
बुध	02:09:2051
चन्द्रमा	05:11:2051
लग्न	09:01:2052

सिहं अन्तर
14:03:2052 —— 14:08:2053

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:03:2052
गुरू	18:05:2052
मंगल	21:07:2052
सूर्य	24:09:2052
शुक्र	28:11:2052
बुध	01:02:2053
चन्द्रमा	06:04:2053
लग्न	10:06:2053

कन्या अन्तर
14:08:2053 —— 13:01:2055

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:08:2053
गुरू	17:10:2053
मंगल	21:12:2053
सूर्य	24:02:2054
शुक्र	29:04:2054
बुध	03:07:2054
चन्द्रमा	05:09:2054
लग्न	09:11:2054

तुला अन्तर
13:01:2055 —— 13:06:2056

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:01:2055
गुरू	18:03:2055
मंगल	22:05:2055
सूर्य	26:07:2055
शुक्र	28:09:2055
बुध	02:12:2055
चन्द्रमा	05:02:2056
लग्न	09:04:2056

विंशोत्तरी दशा

(अन्य विभाजन विधि)

केतु दशा (13:06:2056 —— 14:06:2063)

मिथुन अन्तर
13:06:2056 —— 13:01:2057

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:06:2056
गुरू	10:07:2056
मंगल	06:08:2056
सूर्य	01:09:2056
शुक्र	28:09:2056
बुध	25:10:2056
चन्द्रमा	20:11:2056
लग्न	17:12:2056

कर्क अन्तर
13:01:2057 —— 14:08:2057

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:01:2057
गुरू	08:02:2057
मंगल	07:03:2057
सूर्य	03:04:2057
शुक्र	29:04:2057
बुध	26:05:2057
चन्द्रमा	21:06:2057
लग्न	18:07:2057

सिहं अन्तर
14:08:2057 —— 15:03:2058

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:08:2057
गुरू	09:09:2057
मंगल	06:10:2057
सूर्य	01:11:2057
शुक्र	28:11:2057
बुध	25:12:2057
चन्द्रमा	20:01:2058
लग्न	16:02:2058

कन्या अन्तर
15:03:2058 —— 13:10:2058

प्रत्यंतर	से ——
शनि	15:03:2058
गुरू	10:04:2058
मंगल	07:05:2058
सूर्य	02:06:2058
शुक्र	29:06:2058
बुध	26:07:2058
चन्द्रमा	21:08:2058
लग्न	17:09:2058

तुला अन्तर
13:10:2058 —— 14:05:2059

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:10:2058
गुरू	09:11:2058
मंगल	06:12:2058
सूर्य	01:01:2059
शुक्र	28:01:2059
बुध	24:02:2059
चन्द्रमा	22:03:2059
लग्न	18:04:2059

वृश्चिक अन्तर
14:05:2059 —— 13:12:2059

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:05:2059
गुरू	10:06:2059
मंगल	07:07:2059
सूर्य	02:08:2059
शुक्र	29:08:2059
बुध	24:09:2059
चन्द्रमा	21:10:2059
लग्न	17:11:2059

धनु अन्तर
13:12:2059 —— 14:07:2060

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:12:2059
गुरू	09:01:2060
मंगल	05:02:2060
सूर्य	02:03:2060
शुक्र	29:03:2060
बुध	25:04:2060
चन्द्रमा	21:05:2060
लग्न	17:06:2060

मकर अन्तर
14:07:2060 —— 12:02:2061

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:07:2060
गुरू	09:08:2060
मंगल	05:09:2060
सूर्य	02:10:2060
शुक्र	28:10:2060
बुध	24:11:2060
चन्द्रमा	21:12:2060
लग्न	16:01:2061

कुम्भ अन्तर
12:02:2061 —— 13:09:2061

प्रत्यंतर	से ——
शनि	12:02:2061
गुरू	11:03:2061
मंगल	06:04:2061
सूर्य	03:05:2061
शुक्र	30:05:2061
बुध	25:06:2061
चन्द्रमा	22:07:2061
लग्न	17:08:2061

मीन अन्तर
13:09:2061 —— 14:04:2062

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:09:2061
गुरू	10:10:2061
मंगल	05:11:2061
सूर्य	02:12:2061
शुक्र	28:12:2061
बुध	24:01:2062
चन्द्रमा	20:02:2062
लग्न	18:03:2062

मेष अन्तर
14:04:2062 —— 13:11:2062

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:04:2062
गुरू	11:05:2062
मंगल	06:06:2062
सूर्य	03:07:2062
शुक्र	29:07:2062
बुध	25:08:2062
चन्द्रमा	21:09:2062
लग्न	17:10:2062

वृष अन्तर
13:11:2062 —— 14:06:2063

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:11:2062
गुरू	09:12:2062
मंगल	05:01:2063
सूर्य	01:02:2063
शुक्र	27:02:2063
बुध	26:03:2063
चन्द्रमा	22:04:2063
लग्न	18:05:2063

विंशोत्तरी दशा

(अन्य विभाजन विधि)

शुक्र दशा (14:06:2063 —— 14:06:2083)

मकर अन्तर
14:06:2063 —— 12:02:2065

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:06:2063
गुरू	29:08:2063
मंगल	13:11:2063
सूर्य	28:01:2064
शुक्र	13:04:2064
बुध	28:06:2064
चन्द्रमा	13:09:2064
लग्न	28:11:2064

कुम्भ अन्तर
12:02:2065 —— 13:10:2066

प्रत्यंतर	से ——
शनि	12:02:2065
गुरू	29:04:2065
मंगल	14:07:2065
सूर्य	28:09:2065
शुक्र	13:12:2065
बुध	27:02:2066
चन्द्रमा	14:05:2066
लग्न	29:07:2066

मीन अन्तर
13:10:2066 —— 13:06:2068

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:10:2066
गुरू	28:12:2066
मंगल	15:03:2067
सूर्य	30:05:2067
शुक्र	14:08:2067
बुध	29:10:2067
चन्द्रमा	13:01:2068
लग्न	29:03:2068

मेष अन्तर
13:06:2068 —— 12:02:2070

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:06:2068
गुरू	28:08:2068
मंगल	13:11:2068
सूर्य	28:01:2069
शुक्र	14:04:2069
बुध	29:06:2069
चन्द्रमा	13:09:2069
लग्न	28:11:2069

वृष अन्तर
12:02:2070 —— 13:10:2071

प्रत्यंतर	से ——
शनि	12:02:2070
गुरू	29:04:2070
मंगल	14:07:2070
सूर्य	28:09:2070
शुक्र	13:12:2070
बुध	27:02:2071
चन्द्रमा	14:05:2071
लग्न	29:07:2071

मिथुन अन्तर
13:10:2071 —— 14:06:2073

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:10:2071
गुरू	28:12:2071
मंगल	14:03:2072
सूर्य	29:05:2072
शुक्र	13:08:2072
बुध	28:10:2072
चन्द्रमा	13:01:2073
लग्न	30:03:2073

कर्क अन्तर
14:06:2073 —— 12:02:2075

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:06:2073
गुरू	29:08:2073
मंगल	13:11:2073
सूर्य	28:01:2074
शुक्र	14:04:2074
बुध	29:06:2074
चन्द्रमा	13:09:2074
लग्न	28:11:2074

सिहं अन्तर
12:02:2075 —— 13:10:2076

प्रत्यंतर	से ——
शनि	12:02:2075
गुरू	29:04:2075
मंगल	14:07:2075
सूर्य	28:09:2075
शुक्र	13:12:2075
बुध	27:02:2076
चन्द्रमा	14:05:2076
लग्न	29:07:2076

कन्या अन्तर
13:10:2076 —— 14:06:2078

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:10:2076
गुरू	28:12:2076
मंगल	15:03:2077
सूर्य	30:05:2077
शुक्र	14:08:2077
बुध	29:10:2077
चन्द्रमा	13:01:2078
लग्न	30:03:2078

तुला अन्तर
14:06:2078 —— 12:02:2080

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:06:2078
गुरू	29:08:2078
मंगल	13:11:2078
सूर्य	28:01:2079
शुक्र	14:04:2079
बुध	29:06:2079
चन्द्रमा	13:09:2079
लग्न	28:11:2079

वृश्चिक अन्तर
12:02:2080 —— 13:10:2081

प्रत्यंतर	से ——
शनि	12:02:2080
गुरू	28:04:2080
मंगल	14:07:2080
सूर्य	28:09:2080
शुक्र	13:12:2080
बुध	27:02:2081
चन्द्रमा	14:05:2081
लग्न	29:07:2081

धनु अन्तर
13:10:2081 —— 14:06:2083

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:10:2081
गुरू	28:12:2081
मंगल	15:03:2082
सूर्य	30:05:2082
शुक्र	14:08:2082
बुध	29:10:2082
चन्द्रमा	13:01:2083
लग्न	30:03:2083

For Mindsutra Software Technologies

विंशोत्तरी दशा

(अन्य विभाजन विधि)

सूर्य दशा (14:06:2083 —— 14:06:2089)

धनु अन्तर
14:06:2083 —— 13:12:2083

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:06:2083
गुरू	07:07:2083
मंगल	29:07:2083
सूर्य	21:08:2083
शुक्र	13:09:2083
बुध	06:10:2083
चन्द्रमा	29:10:2083
लग्न	20:11:2083

मकर अन्तर
13:12:2083 —— 13:06:2084

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:12:2083
गुरू	05:01:2084
मंगल	28:01:2084
सूर्य	20:02:2084
शुक्र	14:03:2084
बुध	06:04:2084
चन्द्रमा	28:04:2084
लग्न	21:05:2084

कुम्भ अन्तर
13:06:2084 —— 13:12:2084

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:06:2084
गुरू	06:07:2084
मंगल	29:07:2084
सूर्य	21:08:2084
शुक्र	13:09:2084
बुध	06:10:2084
चन्द्रमा	28:10:2084
लग्न	20:11:2084

मीन अन्तर
13:12:2084 —— 14:06:2085

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:12:2084
गुरू	05:01:2085
मंगल	28:01:2085
सूर्य	20:02:2085
शुक्र	15:03:2085
बुध	06:04:2085
चन्द्रमा	29:04:2085
लग्न	22:05:2085

मेष अन्तर
14:06:2085 —— 13:12:2085

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:06:2085
गुरू	07:07:2085
मंगल	29:07:2085
सूर्य	21:08:2085
शुक्र	13:09:2085
बुध	06:10:2085
चन्द्रमा	29:10:2085
लग्न	20:11:2085

वृष अन्तर
13:12:2085 —— 14:06:2086

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:12:2085
गुरू	05:01:2086
मंगल	28:01:2086
सूर्य	20:02:2086
शुक्र	15:03:2086
बुध	06:04:2086
चन्द्रमा	29:04:2086
लग्न	22:05:2086

मिथुन अन्तर
14:06:2086 —— 13:12:2086

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:06:2086
गुरू	07:07:2086
मंगल	29:07:2086
सूर्य	21:08:2086
शुक्र	13:09:2086
बुध	06:10:2086
चन्द्रमा	29:10:2086
लग्न	20:11:2086

कर्क अन्तर
13:12:2086 —— 14:06:2087

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:12:2086
गुरू	05:01:2087
मंगल	28:01:2087
सूर्य	20:02:2087
शुक्र	15:03:2087
बुध	06:04:2087
चन्द्रमा	29:04:2087
लग्न	22:05:2087

सिहं अन्तर
14:06:2087 —— 13:12:2087

प्रत्यंतर	से ——
शनि	14:06:2087
गुरू	07:07:2087
मंगल	29:07:2087
सूर्य	21:08:2087
शुक्र	13:09:2087
बुध	06:10:2087
चन्द्रमा	29:10:2087
लग्न	20:11:2087

कन्या अन्तर
13:12:2087 —— 13:06:2088

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:12:2087
गुरू	05:01:2088
मंगल	28:01:2088
सूर्य	20:02:2088
शुक्र	14:03:2088
बुध	06:04:2088
चन्द्रमा	28:04:2088
लग्न	21:05:2088

तुला अन्तर
13:06:2088 —— 13:12:2088

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:06:2088
गुरू	06:07:2088
मंगल	29:07:2088
सूर्य	21:08:2088
शुक्र	13:09:2088
बुध	06:10:2088
चन्द्रमा	28:10:2088
लग्न	20:11:2088

वृश्चिक अन्तर
13:12:2088 —— 14:06:2089

प्रत्यंतर	से ——
शनि	13:12:2088
गुरू	05:01:2089
मंगल	28:01:2089
सूर्य	20:02:2089
शुक्र	15:03:2089
बुध	06:04:2089
चन्द्रमा	29:04:2089
लग्न	22:05:2089

अष्टोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

ीजवजजंतप ठंसंदबम व र्की ज इपतजी ; चमत छण्ब्सीपतप ।तंदउीं रू 023रू29रू36 द्ब रू डंते रू 7 लण1

आपकी कुण्डली में अष्टोत्तरी दशा का अरिद्रादी सिद्धान्त प्रभावी हो रहा है।
राहु लग्न में स्थित नहीं है, और लग्नाधिपति से केन्द्र या त्रिकोन में स्थित है। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में अनुपस्थित है।
कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में अनुपस्थित है।

क0 स0	ग्रह दशा		अवधि	से ---------- तक
1	♂	मंगल दशा	7 y.1 m.5 d.	18:12:1973--22:01:1981
2	☿	बुध दशा	17 y.0 m.0 d.	22:01:1981--22:01:1998
3	♄	शनि दशा	10 y.0 m.0 d.	22:01:1998--22:01:2008
4	♃	गुरू दशा	19 y.0 m.0 d.	22:01:2008--22:01:2027
5	☊	राहु दशा	12 y.0 m.0 d.	22:01:2027--22:01:2039
6	♀	शुक्र दशा	21 y.0 m.0 d.	22:01:2039--22:01:2060
7	☉	सूर्य दशा	6 y.0 m.0 d.	22:01:2060--22:01:2066
8	☽	चन्द्रमा दशा	15 y.0 m.0 d.	22:01:2066--22:01:2081

अष्टोत्तरी दशा की अर्न्तदशाएं

मंगल दशा

अन्तर्दशा	से
मंगल	
बुध	18:12:1973
शनि	29:11:1974
गुरू	27:08:1975
राहु	22:01:1977
शुक्र	13:12:1977
सूर्य	03:07:1979
चन्द्रमा	13:12:1979

बुध दशा

अन्तर्दशा	से
बुध	22:01:1981
शनि	26:09:1983
गुरू	23:04:1985
राहु	19:04:1988
शुक्र	11:03:1990
सूर्य	30:06:1993
चन्द्रमा	10:06:1994
मंगल	19:10:1996

शनि दशा

अन्तर्दशा	से
शनि	22:01:1998
गुरू	26:12:1998
राहु	29:09:2000
शुक्र	09:11:2001
सूर्य	20:10:2003
चन्द्रमा	10:05:2004
मंगल	29:09:2005
बुध	27:06:2006

गुरू दशा

अन्तर्दशा	से
गुरू	22:01:2008
राहु	27:05:2011
शुक्र	07:07:2013
सूर्य	17:03:2017
चन्द्रमा	07:04:2018
मंगल	26:11:2020
बुध	23:04:2022
शनि	20:04:2025

राहु दशा

अन्तर्दशा	से
राहु	22:01:2027
शुक्र	23:05:2028
सूर्य	23:09:2030
चन्द्रमा	24:05:2031
मंगल	22:01:2033
बुध	13:12:2033
शनि	02:11:2035
गुरू	13:12:2036

शुक्र दशा

अन्तर्दशा	से
शुक्र	22:01:2039
सूर्य	22:02:2043
चन्द्रमा	23:04:2044
मंगल	24:03:2047
बुध	13:10:2048
शनि	01:02:2052
गुरू	12:01:2054
राहु	23:09:2057

सूर्य दशा

अन्तर्दशा	से
सूर्य	22:01:2060
चन्द्रमा	23:05:2060
मंगल	24:03:2061
बुध	02:09:2061
शनि	13:08:2062
गुरू	04:03:2063
राहु	23:03:2064
शुक्र	22:01:2064

चन्द्रमा दशा

अन्तर्दशा	से
चन्द्रमा	22:01:2066
मंगल	22:02:2068
बुध	03:04:2069
शनि	13:08:2071
गुरू	02:01:2073
राहु	23:08:2075
शुक्र	23:04:2077
सूर्य	23:03:2080

अष्टोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : मंगल : 7 व. 1 मा. 5 दि.

मंगल दशा (18:12:1973 —— 22:01:1981)

प्रत्यंतर	से

बुध अन्तर

प्रत्यंतर	से
शनि	18:12:1973
गुरू	19:12:1973
राहु	10:03:1974
शुक्र	30:04:1974
सूर्य	29:07:1974
चन्द्रमा	23:08:1974
मंगल	26:10:1974

शनि अन्तर

प्रत्यंतर	से
शनि	29:11:1974
गुरू	24:12:1974
राहु	10:02:1975
शुक्र	12:03:1975
सूर्य	03:05:1975
चन्द्रमा	18:05:1975
मंगल	25:06:1975
बुध	15:07:1975

गुरू अन्तर

प्रत्यंतर	से
गुरू	27:08:1975
राहु	25:11:1975
शुक्र	21:01:1976
सूर्य	30:04:1976
चन्द्रमा	29:05:1976
मंगल	08:08:1976
बुध	16:09:1976
शनि	06:12:1976

राहु अन्तर

प्रत्यंतर	से
राहु	22:01:1977
शुक्र	27:02:1977
सूर्य	01:05:1977
चन्द्रमा	19:05:1977
मंगल	03:07:1977
बुध	28:07:1977
शनि	17:09:1977
गुरू	17:10:1977

शुक्र अन्तर

प्रत्यंतर	से
शुक्र	13:12:1977
सूर्य	02:04:1978
चन्द्रमा	04:05:1978
मंगल	21:07:1978
बुध	02:09:1978
शनि	30:11:1978
गुरू	21:01:1979
राहु	01:05:1979

सूर्य अन्तर

प्रत्यंतर	से
सूर्य	03:07:1979
चन्द्रमा	12:07:1979
मंगल	04:08:1979
बुध	16:08:1979
शनि	11:09:1979
गुरू	26:09:1979
राहु	24:10:1979
शुक्र	11:11:1979

चन्द्रमा अन्तर

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	13:12:1979
मंगल	07:02:1980
बुध	08:03:1980
शनि	11:05:1980
गुरू	18:06:1980
राहु	28:08:1980
शुक्र	13:10:1980
सूर्य	31:12:1980

अष्टोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : मंगल : 7 व. 1 मा. 5 दि.

बुध दशा (22:01:1981 –– 22:01:1998)

बुध अन्तर

प्रत्यंतर	से
बुध	22:01:1981
शनि	25:06:1981
गुरू	23:09:1981
राहु	14:03:1982
शुक्र	01:07:1982
सूर्य	07:01:1983
चन्द्रमा	02:03:1983
मंगल	16:07:1983

शनि अन्तर

प्रत्यंतर	से
शनि	26:09:1983
गुरू	18:11:1983
राहु	27:02:1984
शुक्र	01:05:1984
सूर्य	21:08:1984
चन्द्रमा	22:09:1984
मंगल	11:12:1984
बुध	23:01:1985

गुरू अन्तर

प्रत्यंतर	से
गुरू	23:04:1985
राहु	02:11:1985
शुक्र	03:03:1986
सूर्य	01:10:1986
चन्द्रमा	01:12:1986
मंगल	01:05:1987
बुध	21:07:1987
शनि	09:01:1988

राहु अन्तर

प्रत्यंतर	से
राहु	19:04:1988
शुक्र	05:07:1988
सूर्य	17:11:1988
चन्द्रमा	25:12:1988
मंगल	31:03:1989
बुध	21:05:1989
शनि	06:09:1989
गुरू	09:11:1989

शुक्र अन्तर

प्रत्यंतर	से
शुक्र	11:03:1990
सूर्य	31:10:1990
चन्द्रमा	06:01:1991
मंगल	23:06:1991
बुध	20:09:1991
शनि	28:03:1992
गुरू	18:07:1992
राहु	16:02:1993

सूर्य अन्तर

प्रत्यंतर	से
सूर्य	30:06:1993
चन्द्रमा	19:07:1993
मंगल	05:09:1993
बुध	01:10:1993
शनि	24:11:1993
गुरू	26:12:1993
राहु	24:02:1994
शुक्र	04:04:1994

चन्द्रमा अन्तर

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	10:06:1994
मंगल	08:10:1994
बुध	10:12:1994
शनि	25:04:1995
गुरू	14:07:1995
राहु	12:12:1995
शुक्र	17:03:1996
सूर्य	01:09:1996

मंगल अन्तर

प्रत्यंतर	से
मंगल	19:10:1996
बुध	23:11:1996
शनि	03:02:1997
गुरू	18:03:1997
राहु	06:06:1997
शुक्र	28:07:1997
सूर्य	25:10:1997
चन्द्रमा	19:11:1997

अष्टोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : मंगल : 7 व. 1 मा. 5 दि.

शनि दशा (22:01:1998 —— 22:01:2008)

शनि अन्तर

प्रत्यंतर	से
शनि	22:01:1998
गुरू	23:02:1998
राहु	23:04:1998
शुक्र	31:05:1998
सूर्य	04:08:1998
चन्द्रमा	23:08:1998
मंगल	09:10:1998
बुध	03:11:1998

गुरू अन्तर

प्रत्यंतर	से
गुरू	26:12:1998
राहु	18:04:1999
शुक्र	29:06:1999
सूर्य	31:10:1999
चन्द्रमा	06:12:1999
मंगल	04:03:2000
बुध	21:04:2000
शनि	31:07:2000

राहु अन्तर

प्रत्यंतर	से
राहु	29:09:2000
शुक्र	13:11:2000
सूर्य	31:01:2001
चन्द्रमा	23:02:2001
मंगल	20:04:2001
बुध	20:05:2001
शनि	23:07:2001
गुरू	30:08:2001

शुक्र अन्तर

प्रत्यंतर	से
शुक्र	09:11:2001
सूर्य	27:03:2002
चन्द्रमा	05:05:2002
मंगल	12:08:2002
बुध	03:10:2002
शनि	23:01:2003
गुरू	30:03:2003
राहु	02:08:2003

सूर्य अन्तर

प्रत्यंतर	से
सूर्य	20:10:2003
चन्द्रमा	31:10:2003
मंगल	28:11:2003
बुध	13:12:2003
शनि	14:01:2004
गुरू	02:02:2004
राहु	09:03:2004
शुक्र	31:03:2004

चन्द्रमा अन्तर

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	10:05:2004
मंगल	19:07:2004
बुध	26:08:2004
शनि	14:11:2004
गुरू	31:12:2004
राहु	30:03:2005
शुक्र	26:05:2005
सूर्य	01:09:2005

मंगल अन्तर

प्रत्यंतर	से
मंगल	29:09:2005
बुध	19:10:2005
शनि	01:12:2005
गुरू	26:12:2005
राहु	12:02:2006
शुक्र	14:03:2006
सूर्य	05:05:2006
चन्द्रमा	20:05:2006

बुध अन्तर

प्रत्यंतर	से
बुध	27:06:2006
शनि	25:09:2006
गुरू	17:11:2006
राहु	26:02:2007
शुक्र	01:05:2007
सूर्य	21:08:2007
चन्द्रमा	22:09:2007
मंगल	11:12:2007

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00AM POB-Ballia

अष्टोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : मंगल : 7 व. 1 मा. 5 दि.

गुरू दशा (22:01:2008 —— 22:01:2027)

गुरू अन्तर

प्रत्यंतर	से
गुरू	22:01:2008
राहु	25:08:2008
शुक्र	07:01:2009
सूर्य	02:09:2009
चन्द्रमा	08:11:2009
मंगल	27:04:2010
बुध	26:07:2010
शनि	03:02:2011

राहु अन्तर

प्रत्यंतर	से
राहु	27:05:2011
शुक्र	21:08:2011
सूर्य	18:01:2012
चन्द्रमा	01:03:2012
मंगल	16:06:2012
बुध	12:08:2012
शनि	12:12:2012
गुरू	21:02:2013

शुक्र अन्तर

प्रत्यंतर	से
शुक्र	07:07:2013
सूर्य	26:03:2014
चन्द्रमा	09:06:2014
मंगल	13:12:2014
बुध	23:03:2015
शनि	21:10:2015
गुरू	23:02:2016
राहु	18:10:2016

सूर्य अन्तर

प्रत्यंतर	से
सूर्य	17:03:2017
चन्द्रमा	08:04:2017
मंगल	31:05:2017
बुध	29:06:2017
शनि	28:08:2017
गुरू	03:10:2017
राहु	10:12:2017
शुक्र	22:01:2018

चन्द्रमा अन्तर

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	07:04:2018
मंगल	18:08:2018
बुध	29:10:2018
शनि	29:03:2019
गुरू	27:06:2019
राहु	13:12:2019
शुक्र	29:03:2020
सूर्य	03:10:2020

मंगल अन्तर

प्रत्यंतर	से
मंगल	26:11:2020
बुध	03:01:2021
शनि	25:03:2021
गुरू	11:05:2021
राहु	10:08:2021
शुक्र	06:10:2021
सूर्य	14:01:2022
चन्द्रमा	11:02:2022

बुध अन्तर

प्रत्यंतर	से
बुध	23:04:2022
शनि	12:10:2022
गुरू	21:01:2023
राहु	01:08:2023
शुक्र	01:12:2023
सूर्य	30:06:2024
चन्द्रमा	30:08:2024
मंगल	29:01:2025

शनि अन्तर

प्रत्यंतर	से
शनि	20:04:2025
गुरू	19:06:2025
राहु	10:10:2025
शुक्र	20:12:2025
सूर्य	24:04:2026
चन्द्रमा	29:05:2026
मंगल	27:08:2026
बुध	13:10:2026

अष्टोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : मंगल : 7 व. 1 मा. 5 दि.

राहु दशा (22:01:2027 –– 22:01:2039)

राहु अन्तर

प्रत्यंतर	से
राहु	22:01:2027
शुक्र	17:03:2027
सूर्य	20:06:2027
चन्द्रमा	17:07:2027
मंगल	23:09:2027
बुध	29:10:2027
शनि	13:01:2028
गुरू	27:02:2028

शुक्र अन्तर

प्रत्यंतर	से
शुक्र	23:05:2028
सूर्य	05:11:2028
चन्द्रमा	23:12:2028
मंगल	20:04:2029
बुध	22:06:2029
शनि	03:11:2029
गुरू	21:01:2030
राहु	20:06:2030

सूर्य अन्तर

प्रत्यंतर	से
सूर्य	23:09:2030
चन्द्रमा	06:10:2030
मंगल	09:11:2030
बुध	27:11:2030
शनि	04:01:2031
गुरू	27:01:2031
राहु	11:03:2031
शुक्र	07:04:2031

चन्द्रमा अन्तर

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	24:05:2031
मंगल	16:08:2031
बुध	30:09:2031
शनि	04:01:2032
गुरू	01:03:2032
राहु	16:06:2032
शुक्र	23:08:2032
सूर्य	19:12:2032

मंगल अन्तर

प्रत्यंतर	से
मंगल	22:01:2033
बुध	15:02:2033
शनि	07:04:2033
गुरू	07:05:2033
राहु	03:07:2033
शुक्र	09:08:2033
सूर्य	11:10:2033
चन्द्रमा	29:10:2033

बुध अन्तर

प्रत्यंतर	से
बुध	13:12:2033
शनि	31:03:2034
गुरू	03:06:2034
राहु	02:10:2034
शुक्र	18:12:2034
सूर्य	01:05:2035
चन्द्रमा	08:06:2035
मंगल	12:09:2035

शनि अन्तर

प्रत्यंतर	से
शनि	02:11:2035
गुरू	10:12:2035
राहु	19:02:2036
शुक्र	04:04:2036
सूर्य	22:06:2036
चन्द्रमा	15:07:2036
मंगल	10:09:2036
बुध	10:10:2036

गुरू अन्तर

प्रत्यंतर	से
गुरू	13:12:2036
राहु	27:04:2037
शुक्र	22:07:2037
सूर्य	19:12:2037
चन्द्रमा	31:01:2038
मंगल	18:05:2038
बुध	14:07:2038
शनि	12:11:2038

अष्टोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : मंगल : 7 व. 1 मा. 5 दि.

शुक्र दशा (22:01:2039 —— 22:01:2060)

शुक्र अन्तर

प्रत्यंतर	से
शुक्र	22:01:2039
सूर्य	08:11:2039
चन्द्रमा	30:01:2040
मंगल	25:08:2040
बुध	13:12:2040
शनि	05:08:2041
गुरू	21:12:2041
राहु	09:09:2042

सूर्य अन्तर

प्रत्यंतर	से
सूर्य	22:02:2043
चन्द्रमा	17:03:2043
मंगल	15:05:2043
बुध	16:06:2043
शनि	22:08:2043
गुरू	30:09:2043
राहु	14:12:2043
शुक्र	31:01:2044

चन्द्रमा अन्तर

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	23:04:2044
मंगल	18:09:2044
बुध	06:12:2044
शनि	23:05:2045
गुरू	29:08:2045
राहु	05:03:2046
शुक्र	01:07:2046
सूर्य	24:01:2047

मंगल अन्तर

प्रत्यंतर	से
मंगल	24:03:2047
बुध	05:05:2047
शनि	03:08:2047
गुरू	24:09:2047
राहु	02:01:2048
शुक्र	05:03:2048
सूर्य	24:06:2048
चन्द्रमा	26:07:2048

बुध अन्तर

प्रत्यंतर	से
बुध	13:10:2048
शनि	21:04:2049
गुरू	10:08:2049
राहु	11:03:2050
शुक्र	23:07:2050
सूर्य	14:03:2051
चन्द्रमा	20:05:2051
मंगल	04:11:2051

शनि अन्तर

प्रत्यंतर	से
शनि	01:02:2052
गुरू	07:04:2052
राहु	11:08:2052
शुक्र	29:10:2052
सूर्य	16:03:2053
चन्द्रमा	24:04:2053
मंगल	01:08:2053
बुध	22:09:2053

गुरू अन्तर

प्रत्यंतर	से
गुरू	12:01:2054
राहु	06:09:2054
शुक्र	03:02:2055
सूर्य	23:10:2055
चन्द्रमा	06:01:2056
मंगल	12:07:2056
बुध	20:10:2056
शनि	21:05:2057

राहु अन्तर

प्रत्यंतर	से
राहु	23:09:2057
शुक्र	26:12:2057
सूर्य	10:06:2058
चन्द्रमा	27:07:2058
मंगल	22:11:2058
बुध	24:01:2059
शनि	08:06:2059
गुरू	25:08:2059

अष्टोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : मंगल : 7 व. 1 मा. 5 दि.

सूर्य दशा (22:01:2060 —— 22:01:2066)

सूर्य अन्तर

प्रत्यंतर	से
सूर्य	22:01:2060
चन्द्रमा	29:01:2060
मंगल	15:02:2060
बुध	24:02:2060
शनि	14:03:2060
गुरू	26:03:2060
राहु	16:04:2060
शुक्र	30:04:2060

चन्द्रमा अन्तर

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	23:05:2060
मंगल	05:07:2060
बुध	27:07:2060
शनि	13:09:2060
गुरू	12:10:2060
राहु	04:12:2060
शुक्र	07:01:2061
सूर्य	07:03:2061

मंगल अन्तर

प्रत्यंतर	से
मंगल	24:03:2061
बुध	05:04:2061
शनि	01:05:2061
गुरू	16:05:2061
राहु	13:06:2061
शुक्र	01:07:2061
सूर्य	02:08:2061
चन्द्रमा	11:08:2061

बुध अन्तर

प्रत्यंतर	से
बुध	02:09:2061
शनि	27:10:2061
गुरू	27:11:2061
राहु	27:01:2062
शुक्र	06:03:2062
सूर्य	12:05:2062
चन्द्रमा	01:06:2062
मंगल	18:07:2062

शनि अन्तर

प्रत्यंतर	से
शनि	13:08:2062
गुरू	01:09:2062
राहु	06:10:2062
शुक्र	29:10:2062
सूर्य	07:12:2062
चन्द्रमा	19:12:2062
मंगल	16:01:2063
बुध	31:01:2063

गुरू अन्तर

प्रत्यंतर	से
गुरू	04:03:2063
राहु	11:05:2063
शुक्र	22:06:2063
सूर्य	05:09:2063
चन्द्रमा	27:09:2063
मंगल	19:11:2063
बुध	18:12:2063
शनि	17:02:2064

राहु अन्तर

प्रत्यंतर	से
राहु	23:03:2064
शुक्र	19:04:2064
सूर्य	06:06:2064
चन्द्रमा	19:06:2064
मंगल	23:07:2064
बुध	10:08:2064
शनि	18:09:2064
गुरू	10:10:2064

शुक्र अन्तर

प्रत्यंतर	से
शुक्र	22:11:2064
सूर्य	13:02:2065
चन्द्रमा	09:03:2065
मंगल	07:05:2065
बुध	08:06:2065
शनि	14:08:2065
गुरू	22:09:2065
राहु	06:12:2065

अष्टोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : मंगल : 7 व. 1 मा. 5 दि.

चन्द्रमा दशा (22:01:2066 –– 22:01:2081)

चन्द्रमा अन्तर

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	22:01:2066
मंगल	08:05:2066
बुध	03:07:2066
शनि	31:10:2066
गुरू	09:01:2067
राहु	23:05:2067
शुक्र	16:08:2067
सूर्य	10:01:2068

मंगल अन्तर

प्रत्यंतर	से
मंगल	22:02:2068
बुध	23:03:2068
शनि	26:05:2068
गुरू	03:07:2068
राहु	12:09:2068
शुक्र	27:10:2068
सूर्य	14:01:2069
चन्द्रमा	06:02:2069

बुध अन्तर

प्रत्यंतर	से
बुध	03:04:2069
शनि	17:08:2069
गुरू	05:11:2069
राहु	05:04:2070
शुक्र	10:07:2070
सूर्य	25:12:2070
चन्द्रमा	10:02:2071
मंगल	10:06:2071

शनि अन्तर

प्रत्यंतर	से
शनि	13:08:2071
गुरू	29:09:2071
राहु	27:12:2071
शुक्र	22:02:2072
सूर्य	30:05:2072
चन्द्रमा	28:06:2072
मंगल	06:09:2072
बुध	14:10:2072

गुरू अन्तर

प्रत्यंतर	से
गुरू	02:01:2073
राहु	20:06:2073
शुक्र	05:10:2073
सूर्य	11:04:2074
चन्द्रमा	03:06:2074
मंगल	15:10:2074
बुध	25:12:2074
शनि	26:05:2075

राहु अन्तर

प्रत्यंतर	से
राहु	23:08:2075
शुक्र	30:10:2075
सूर्य	25:02:2076
चन्द्रमा	30:03:2076
मंगल	23:06:2076
बुध	07:08:2076
शनि	11:11:2076
गुरू	06:01:2077

शुक्र अन्तर

प्रत्यंतर	से
शुक्र	23:04:2077
सूर्य	16:11:2077
चन्द्रमा	15:01:2078
मंगल	12:06:2078
बुध	29:08:2078
शनि	13:02:2079
गुरू	23:05:2079
राहु	26:11:2079

सूर्य अन्तर

प्रत्यंतर	से
सूर्य	23:03:2080
चन्द्रमा	09:04:2080
मंगल	22:05:2080
बुध	13:06:2080
शनि	31:07:2080
गुरू	28:08:2080
राहु	21:10:2080
शुक्र	24:11:2080

अष्टोत्तरी दशा

आपकी कुण्डली में अष्टोत्तरी दशा का अरिद्रादी सिद्धान्त प्रभावी हो रहा है।

क्र.स.	ग्रह (नक्षत्र)	दशा अवधि	से —— तक	पूर्णता (सिद्धी बिन्दु)
1	मंगल (हस्ता)	1 y.1 m.5 d.	18:12:1973 -- 22:01:1975	170:43:15
2	मंगल (चित्रा)	2 y.0 m.0 d.	22:01:1975 -- 22:01:1977	009:24:36
3	मंगल (स्वाति)	2 y.0 m.0 d.	22:01:1977 -- 22:01:1979	249:52:53
4	मंगल (विशाखा)	2 y.0 m.0 d.	22:01:1979 -- 22:01:1981	292:38:57
5	बुध (अनुराधा)	5 y.8 m.0 d.	22:01:1981 -- 23:09:1986	298:03:58
6	बुध (ज्येष्ठा)	5 y.8 m.0 d.	23:09:1986 -- 23:05:1992	099:42:48
7	बुध (मूला)	5 y.8 m.0 d.	23:05:1992 -- 22:01:1998	295:01:59
8	शनि (पूर्वाषाढ़)	2 y.6 m.0 d.	22:01:1998 -- 23:07:2000	351:12:50
9	शनि (उत्तराषाढ़)	2 y.6 m.0 d.	23:07:2000 -- 22:01:2003	310:28:22
10	शनि (अभिजीत)	2 y.6 m.0 d.	22:01:2003 -- 24:07:2005	310:28:22
11	शनि (श्रवण)	2 y.6 m.0 d.	24:07:2005 -- 22:01:2008	234:13:31
12	गुरू (धनिष्ठा)	6 y.4 m.0 d.	22:01:2008 -- 24:05:2014	292:38:57
13	गुरू (शतभिषा)	6 y.4 m.0 d.	24:05:2014 -- 22:09:2020	173:07:14
14	गुरू (पूर्वाभाद्र)	6 y.4 m.0 d.	22:09:2020 -- 22:01:2027	215:53:18
15	राहु (उत्तरभाद्र)	3 y.0 m.0 d.	22:01:2027 -- 22:01:2030	313:23:08
16	राहु (रेवाति)	3 y.0 m.0 d.	22:01:2030 -- 22:01:2033	115:01:59
17	राहु (अश्विनी)	3 y.0 m.0 d.	22:01:2033 -- 22:01:2036	310:21:10
18	राहु (भरणी)	3 y.0 m.0 d.	22:01:2036 -- 22:01:2039	168:10:51
19	शुक्र (कृतिका)	7 y.0 m.0 d.	22:01:2039 -- 22:01:2046	165:16:05
20	शुक्र (रोहिणी)	7 y.0 m.0 d.	22:01:2046 -- 22:01:2053	089:01:14
21	शुक्र (मृगशिरा)	7 y.0 m.0 d.	22:01:2053 -- 22:01:2060	287:42:34
22	सूर्य (अरिद्रा)	1 y.6 m.0 d.	22:01:2060 -- 24:07:2061	127:26:24
23	सूर्य (पुनर्वसु)	1 y.6 m.0 d.	24:07:2061 -- 22:01:2063	170:12:28
24	सूर्य (पुष्य)	1 y.6 m.0 d.	22:01:2063 -- 23:07:2064	310:28:22
25	सूर्य (अश्लेषा)	1 y.6 m.0 d.	23:07:2064 -- 22:01:2066	112:07:13
26	चन्द्रमा (मघा)	5 y.0 m.0 d.	22:01:2066 -- 22:01:2071	231:11:32
27	चन्द्रमा (पुर्वफाल्गुनी)	5 y.0 m.0 d.	22:01:2071 -- 22:01:2076	089:01:14

(विशेष नोट – घटनाओं के समय की सटीक जानकारी और स्पष्ट परिणाम के लिए इस दशा के लिए केवल एन. सी. लाहिरी अयनांश का प्रयोग करना चाहिए।)

योगिनी दशा

क्र.स.	ग्रह (नक्षत्र)	दशा अवधि	से——तक	पूर्णता (सिद्धी बिन्दु)
1	संकटा (राहु)(हस्ता)	4 y.4 m.21 d.	18:12:1973 - 09:05:1978	051:11:32
2	मंगला (चन्द्रमा)(चित्रा)	1 y.0 m.0 d.	09:05:1978 - 09:05:1979	170:43:15
3	पिंगला (सूर्य)(स्वाति)	2 y.0 m.0 d.	09:05:1979 - 09:05:1981	127:26:24
4	धन्या (गुरू)(विशाखा)	3 y.0 m.0 d.	09:05:1981 - 08:05:1984	215:53:18
5	भ्रमरी (मंगल)(अनुराधा)	4 y.0 m.0 d.	08:05:1984 - 08:05:1988	072:54:51
6	भद्रीका (बुध)(ज्येष्ठा)	5 y.0 m.0 d.	08:05:1988 - 09:05:1993	099:42:48
7	उल्का (शनि)(मूला)	6 y.0 m.0 d.	09:05:1993 - 09:05:1999	133:23:08
8	सिद्धा (शुक्र)(पूर्वाषाढ़)	7 y.0 m.0 d.	09:05:1999 - 09:05:2006	206:00:33
9	संकटा (राहु)(उत्तराषाढ़)	8 y.0 m.0 d.	09:05:2006 - 09:05:2014	127:26:24
10	मंगला (चन्द्रमा)(श्रवण)	1 y.0 m.0 d.	09:05:2014 - 09:05:2015	332:01:54
11	पिंगला (सूर्य)(धनिष्ठा)	2 y.0 m.0 d.	09:05:2015 - 09:05:2017	246:58:07
12	धन्या (गुरू)(शतभिषा)	3 y.0 m.0 d.	09:05:2017 - 08:05:2020	173:07:14
13	भ्रमरी (मंगल)(पूर्वाभाद्र)	4 y.0 m.0 d.	08:05:2020 - 08:05:2024	292:38:57
14	भद्रीका (बुध)(उत्तरभाद्र)	5 y.0 m.0 d.	08:05:2024 - 09:05:2029	298:03:58
15	उल्का (शनि)(रेवति)	6 y.0 m.0 d.	09:05:2029 - 09:05:2035	298:03:58
16	सिद्धा (शुक्र)(अश्विनी)	7 y.0 m.0 d.	09:05:2035 - 09:05:2042	348:10:51
17	संकटा (राहु)(भरणी)	8 y.0 m.0 d.	09:05:2042 - 09:05:2050	168:10:51
18	मंगला (चन्द्रमा)(कृतिका)	1 y.0 m.0 d.	09:05:2050 - 09:05:2051	048:16:46
19	पिंगला (सूर्य)(रोहिणी)	2 y.0 m.0 d.	09:05:2051 - 09:05:2053	048:16:46
20	धन्या (गुरू)(मृगशिरा)	3 y.0 m.0 d.	09:05:2053 - 08:05:2056	292:38:57
21	भ्रमरी (मंगल)(अरिद्रा)	4 y.0 m.0 d.	08:05:2056 - 08:05:2060	249:52:53
22	भद्रीका (बुध)(पुनर्वसु)	5 y.0 m.0 d.	08:05:2060 - 09:05:2065	157:48:03
23	उल्का (शनि)(पुष्य)	6 y.0 m.0 d.	09:05:2065 - 09:05:2071	136:25:07
24	सिद्धा (शुक्र)(अश्लेषा)	7 y.0 m.0 d.	09:05:2071 - 09:05:2078	152:51:40

त्रिभागी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय त्रिभागी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : ०२३:२६:३६) : चन्द्रमा : 3 व. 10 मा. 3 दि.

क0 स0		ग्रह दशा	अवधि	से ———————— तक
1	☽	चन्द्रमा दशा	3 y.10 m.3 d.	18:12:1973 -- 21:10:1977
2	♂	मंगल दशा	5 y.0 m.0 d.	21:10:1977 -- 21:06:1982
3	☊	राहु दशा	12 y.0 m.0 d.	21:06:1982 -- 21:06:1994
4	♃	गुरू दशा	11 y.0 m.0 d.	21:06:1994 -- 19:02:2005
5	♄	शनि दशा	13 y.0 m.0 d.	19:02:2005 -- 21:10:2017
6	☿	बुध दशा	11 y.0 m.0 d.	21:10:2017 -- 19:02:2029
7	☋	केतु दशा	5 y.0 m.0 d.	19:02:2029 -- 21:10:2033
8	♀	शुक्र दशा	13 y.0 m.0 d.	21:10:2033 -- 19:02:2047
9	☉	सूर्य दशा	4 y.0 m.0 d.	19:02:2047 -- 19:02:2051

त्रिभागी दशा/ अन्तर्दशा

चन्द्रमा दशा
18:12:1973 —— 21:10:1977

अन्तर्दशा	से
चन्द्रमा	
मंगल	
राहु	
गुरू	18:12:1973
शनि	21:12:1973
बुध	10:01:1975
केतु	21:12:1975
शुक्र	11:05:1976
सूर्य	21:06:1977

मंगल दशा
21:10:1977 —— 21:06:1982

अन्तर्दशा	से
मंगल	21:10:1977
राहु	28:01:1978
गुरू	11:10:1978
शनि	26:05:1979
बुध	20:02:1980
केतु	19:10:1980
शुक्र	26:01:1981
सूर्य	06:11:1981
चन्द्रमा	30:01:1982

राहु दशा
21:06:1982 —— 21:06:1994

अन्तर्दशा	से
राहु	21:06:1982
गुरू	08:04:1984
शनि	14:11:1985
बुध	09:10:1987
केतु	21:06:1989
शुक्र	04:03:1990
सूर्य	03:03:1992
चन्द्रमा	08:10:1992
मंगल	09:10:1993

गुरू दशा
21:06:1994 —— 19:02:2005

अन्तर्दशा	से
गुरू	21:06:1994
शनि	22:11:1995
बुध	01:08:1997
केतु	03:02:1999
शुक्र	18:09:1999
सूर्य	29:06:2001
चन्द्रमा	10:01:2002
मंगल	30:11:2002
राहु	15:07:2003

शनि दशा
19:02:2005 —— 21:10:2017

अन्तर्दशा	से
शनि	19:02:2005
बुध	22:02:2007
केतु	08:12:2008
शुक्र	04:09:2009
सूर्य	15:10:2011
चन्द्रमा	02:06:2012
मंगल	23:06:2013
राहु	20:03:2014
गुरू	11:02:2016

बुध दशा
21:10:2017 —— 19:02:2029

अन्तर्दशा	से
बुध	21:10:2017
केतु	30:05:2019
शुक्र	26:01:2020
सूर्य	17:12:2021
चन्द्रमा	11:07:2022
मंगल	21:06:2023
राहु	18:02:2024
गुरू	31:10:2025
शनि	06:05:2027

केतु दशा
19:02:2029 —— 21:10:2033

अन्तर्दशा	से
केतु	19:02:2029
शुक्र	30:05:2029
सूर्य	10:03:2030
चन्द्रमा	03:06:2030
मंगल	23:10:2030
राहु	30:01:2031
गुरू	13:10:2031
शनि	27:05:2032
बुध	22:02:2033

शुक्र दशा
21:10:2033 —— 19:02:2047

अन्तर्दशा	से
शुक्र	21:10:2033
सूर्य	10:01:2036
चन्द्रमा	10:09:2036
मंगल	21:10:2037
राहु	01:08:2038
गुरू	31:07:2040
शनि	12:05:2042
बुध	21:06:2044
केतु	12:05:2046

सूर्य दशा
19:02:2047 —— 19:02:2051

अन्तर्दशा	से
सूर्य	19:02:2047
चन्द्रमा	03:05:2047
मंगल	02:09:2047
राहु	26:11:2047
गुरू	03:07:2048
शनि	14:01:2049
बुध	02:09:2049
केतु	28:03:2050
शुक्र	21:06:2050

त्रिभागी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

चन्द्रमा दशा (18:12:1973 —— 21:10:1977)

प्रत्यंतर	से

प्रत्यंतर	से

प्रत्यंतर	से

गुरू अन्तर
18:12:1973 —— 21:12:1973

प्रत्यंतर	से
राहु	18:12:1973

शनि अन्तर
21:12:1973 —— 10:01:1975

प्रत्यंतर	से
शनि	21:12:1973
बुध	20:02:1974
केतु	15:04:1974
शुक्र	08:05:1974
सूर्य	11:07:1974
चन्द्रमा	30:07:1974
मंगल	31:08:1974
राहु	23:09:1974
गुरू	20:11:1974

बुध अन्तर
10:01:1975 —— 21:12:1975

प्रत्यंतर	से
बुध	10:01:1975
केतु	28:02:1975
शुक्र	20:03:1975
सूर्य	16:05:1975
चन्द्रमा	03:06:1975
मंगल	01:07:1975
राहु	21:07:1975
गुरू	11:09:1975
शनि	27:10:1975

केतु अन्तर
21:12:1975 —— 11:05:1976

प्रत्यंतर	से
केतु	21:12:1975
शुक्र	29:12:1975
सूर्य	22:01:1976
चन्द्रमा	29:01:1976
मंगल	10:02:1976
राहु	18:02:1976
गुरू	10:03:1976
शनि	29:03:1976
बुध	21:04:1976

शुक्र अन्तर
11:05:1976 —— 21:06:1977

प्रत्यंतर	से
शुक्र	11:05:1976
सूर्य	18:07:1976
चन्द्रमा	07:08:1976
मंगल	10:09:1976
राहु	04:10:1976
गुरू	04:12:1976
शनि	27:01:1977
बुध	01:04:1977
केतु	29:05:1977

सूर्य अन्तर
21:06:1977 —— 21:10:1977

प्रत्यंतर	से
सूर्य	21:06:1977
चन्द्रमा	27:06:1977
मंगल	07:07:1977
राहु	14:07:1977
गुरू	02:08:1977
शनि	18:08:1977
बुध	06:09:1977
केतु	23:09:1977
शुक्र	01:10:1977

त्रिभागी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

मंगल दशा (21:10:1977 —— 21:06:1982)

मंगल अन्तर
21:10:1977 —— 28:01:1978

प्रत्यंतर	से
मंगल	21:10:1977
राहु	27:10:1977
गुरू	11:11:1977
शनि	24:11:1977
बुध	10:12:1977
केतु	24:12:1977
शुक्र	29:12:1977
सूर्य	15:01:1978
चन्द्रमा	20:01:1978

राहु अन्तर
28:01:1978 —— 11:10:1978

प्रत्यंतर	से
राहु	28:01:1978
गुरू	08:03:1978
शनि	11:04:1978
बुध	21:05:1978
केतु	26:06:1978
शुक्र	11:07:1978
सूर्य	23:08:1978
चन्द्रमा	04:09:1978
मंगल	26:09:1978

गुरू अन्तर
11:10:1978 —— 26:05:1979

प्रत्यंतर	से
गुरू	11:10:1978
शनि	10:11:1978
बुध	16:12:1978
केतु	17:01:1979
शुक्र	30:01:1979
सूर्य	09:03:1979
चन्द्रमा	21:03:1979
मंगल	08:04:1979
राहु	22:04:1979

शनि अन्तर
26:05:1979 —— 20:02:1980

प्रत्यंतर	से
शनि	26:05:1979
बुध	07:07:1979
केतु	15:08:1979
शुक्र	30:08:1979
सूर्य	14:10:1979
चन्द्रमा	28:10:1979
मंगल	19:11:1979
राहु	05:12:1979
गुरू	15:01:1980

बुध अन्तर
20:02:1980 —— 19:10:1980

प्रत्यंतर	से
बुध	20:02:1980
केतु	25:03:1980
शुक्र	08:04:1980
सूर्य	18:05:1980
चन्द्रमा	30:05:1980
मंगल	20:06:1980
राहु	04:07:1980
गुरू	09:08:1980
शनि	10:09:1980

केतु अन्तर
19:10:1980 —— 26:01:1981

प्रत्यंतर	से
केतु	19:10:1980
शुक्र	24:10:1980
सूर्य	10:11:1980
चन्द्रमा	15:11:1980
मंगल	23:11:1980
राहु	29:11:1980
गुरू	14:12:1980
शनि	27:12:1980
बुध	12:01:1981

शुक्र अन्तर
26:01:1981 —— 06:11:1981

प्रत्यंतर	से
शुक्र	26:01:1981
सूर्य	14:03:1981
चन्द्रमा	29:03:1981
मंगल	21:04:1981
राहु	08:05:1981
गुरू	19:06:1981
शनि	27:07:1981
बुध	10:09:1981
केतु	20:10:1981

सूर्य अन्तर
06:11:1981 —— 30:01:1982

प्रत्यंतर	से
सूर्य	06:11:1981
चन्द्रमा	10:11:1981
मंगल	17:11:1981
राहु	22:11:1981
गुरू	05:12:1981
शनि	17:12:1981
बुध	30:12:1981
केतु	11:01:1982
शुक्र	16:01:1982

चन्द्रमा अन्तर
30:01:1982 —— 21:06:1982

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	30:01:1982
मंगल	11:02:1982
राहु	19:02:1982
गुरू	13:03:1982
शनि	01:04:1982
बुध	23:04:1982
केतु	13:05:1982
शुक्र	21:05:1982
सूर्य	14:06:1982

त्रिभागी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

राहु दशा (21:06:1982 —— 21:06:1994)

राहु अन्तर
21:06:1982 —— 08:04:1984

प्रत्यंतर	से
राहु	21:06:1982
गुरू	28:09:1982
शनि	24:12:1982
बुध	07:04:1983
केतु	09:07:1983
शुक्र	17:08:1983
सूर्य	04:12:1983
चन्द्रमा	06:01:1984
मंगल	01:03:1984

गुरू अन्तर
08:04:1984 —— 14:11:1985

प्रत्यंतर	से
गुरू	08:04:1984
शनि	26:06:1984
बुध	26:09:1984
केतु	18:12:1984
शुक्र	21:01:1985
सूर्य	29:04:1985
चन्द्रमा	28:05:1985
मंगल	15:07:1985
राहु	19:08:1985

शनि अन्तर
14:11:1985 —— 09:10:1987

प्रत्यंतर	से
शनि	14:11:1985
बुध	04:03:1986
केतु	10:06:1986
शुक्र	21:07:1986
सूर्य	13:11:1986
चन्द्रमा	18:12:1986
मंगल	14:02:1987
राहु	26:03:1987
गुरू	08:07:1987

बुध अन्तर
09:10:1987 —— 21:06:1989

प्रत्यंतर	से
बुध	09:10:1987
केतु	05:01:1988
शुक्र	10:02:1988
सूर्य	24:05:1988
चन्द्रमा	24:06:1988
मंगल	15:08:1988
राहु	20:09:1988
गुरू	22:12:1988
शनि	15:03:1989

केतु अन्तर
21:06:1989 —— 04:03:1990

प्रत्यंतर	से
केतु	21:06:1989
शुक्र	06:07:1989
सूर्य	18:08:1989
चन्द्रमा	30:08:1989
मंगल	21:09:1989
राहु	06:10:1989
गुरू	13:11:1989
शनि	17:12:1989
बुध	26:01:1990

शुक्र अन्तर
04:03:1990 —— 03:03:1992

प्रत्यंतर	से
शुक्र	04:03:1990
सूर्य	03:07:1990
चन्द्रमा	09:08:1990
मंगल	09:10:1990
राहु	20:11:1990
गुरू	10:03:1991
शनि	15:06:1991
बुध	09:10:1991
केतु	20:01:1992

सूर्य अन्तर
03:03:1992 —— 08:10:1992

प्रत्यंतर	से
सूर्य	03:03:1992
चन्द्रमा	14:03:1992
मंगल	01:04:1992
राहु	14:04:1992
गुरू	17:05:1992
शनि	15:06:1992
बुध	20:07:1992
केतु	20:08:1992
शुक्र	02:09:1992

चन्द्रमा अन्तर
08:10:1992 —— 09:10:1993

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	08:10:1992
मंगल	08:11:1992
राहु	29:11:1992
गुरू	23:01:1993
शनि	13:03:1993
बुध	10:05:1993
केतु	30:06:1993
शुक्र	22:07:1993
सूर्य	20:09:1993

मंगल अन्तर
09:10:1993 —— 21:06:1994

प्रत्यंतर	से
मंगल	09:10:1993
राहु	24:10:1993
गुरू	01:12:1993
शनि	04:01:1994
बुध	13:02:1994
केतु	22:03:1994
शुक्र	06:04:1994
सूर्य	18:05:1994
चन्द्रमा	31:05:1994

त्रिभागी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

गुरू दशा (21:06:1994 —— 19:02:2005)

गुरू अन्तर
21:06:1994 —— 22:11:1995

प्रत्यंतर	से
गुरू	21:06:1994
शनि	29:08:1994
बुध	20:11:1994
केतु	01:02:1995
शुक्र	03:03:1995
सूर्य	29:05:1995
चन्द्रमा	24:06:1995
मंगल	06:08:1995
राहु	05:09:1995

शनि अन्तर
22:11:1995 —— 01:08:1997

प्रत्यंतर	से
शनि	22:11:1995
बुध	28:02:1996
केतु	26:05:1996
शुक्र	01:07:1996
सूर्य	12:10:1996
चन्द्रमा	12:11:1996
मंगल	02:01:1997
राहु	07:02:1997
गुरू	11:05:1997

बुध अन्तर
01:08:1997 —— 03:02:1999

प्रत्यंतर	से
बुध	01:08:1997
केतु	18:10:1997
शुक्र	19:11:1997
सूर्य	19:02:1998
चन्द्रमा	19:03:1998
मंगल	03:05:1998
राहु	05:06:1998
गुरू	26:08:1998
शनि	08:11:1998

केतु अन्तर
03:02:1999 —— 18:09:1999

प्रत्यंतर	से
केतु	03:02:1999
शुक्र	17:02:1999
सूर्य	26:03:1999
चन्द्रमा	07:04:1999
मंगल	26:04:1999
राहु	09:05:1999
गुरू	12:06:1999
शनि	12:07:1999
बुध	17:08:1999

शुक्र अन्तर
18:09:1999 —— 29:06:2001

प्रत्यंतर	से
शुक्र	18:09:1999
सूर्य	05:01:2000
चन्द्रमा	06:02:2000
मंगल	31:03:2000
राहु	08:05:2000
गुरू	14:08:2000
शनि	09:11:2000
बुध	19:02:2001
केतु	22:05:2001

सूर्य अन्तर
29:06:2001 —— 10:01:2002

प्रत्यंतर	से
सूर्य	29:06:2001
चन्द्रमा	09:07:2001
मंगल	25:07:2001
राहु	06:08:2001
गुरू	04:09:2001
शनि	30:09:2001
बुध	31:10:2001
केतु	27:11:2001
शुक्र	08:12:2001

चन्द्रमा अन्तर
10:01:2002 —— 30:11:2002

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	10:01:2002
मंगल	06:02:2002
राहु	25:02:2002
गुरू	15:04:2002
शनि	28:05:2002
बुध	18:07:2002
केतु	02:09:2002
शुक्र	21:09:2002
सूर्य	14:11:2002

मंगल अन्तर
30:11:2002 —— 15:07:2003

प्रत्यंतर	से
मंगल	30:11:2002
राहु	14:12:2002
गुरू	17:01:2003
शनि	16:02:2003
बुध	24:03:2003
केतु	25:04:2003
शुक्र	08:05:2003
सूर्य	15:06:2003
चन्द्रमा	27:06:2003

राहु अन्तर
15:07:2003 —— 19:02:2005

प्रत्यंतर	से
राहु	15:07:2003
गुरू	11:10:2003
शनि	28:12:2003
बुध	30:03:2004
केतु	21:06:2004
शुक्र	25:07:2004
सूर्य	30:10:2004
चन्द्रमा	29:11:2004
मंगल	16:01:2005

त्रिभागी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

शनि दशा (19:02:2005 —— 21:10:2017)

शनि अन्तर
19:02:2005 —— 22:02:2007

प्रत्यंतर	से
शनि	19:02:2005
बुध	15:06:2005
केतु	27:09:2005
शुक्र	09:11:2005
सूर्य	11:03:2006
चन्द्रमा	16:04:2006
मंगल	16:06:2006
राहु	29:07:2006
गुरू	16:11:2006

बुध अन्तर
22:02:2007 —— 08:12:2008

प्रत्यंतर	से
बुध	22:02:2007
केतु	25:05:2007
शुक्र	03:07:2007
सूर्य	20:10:2007
चन्द्रमा	21:11:2007
मंगल	15:01:2008
राहु	22:02:2008
गुरू	31:05:2008
शनि	26:08:2008

केतु अन्तर
08:12:2008 —— 04:09:2009

प्रत्यंतर	से
केतु	08:12:2008
शुक्र	24:12:2008
सूर्य	07:02:2009
चन्द्रमा	21:02:2009
मंगल	15:03:2009
राहु	31:03:2009
गुरू	10:05:2009
शनि	15:06:2009
बुध	28:07:2009

शुक्र अन्तर
04:09:2009 —— 15:10:2011

प्रत्यंतर	से
शुक्र	04:09:2009
सूर्य	11:01:2010
चन्द्रमा	18:02:2010
मंगल	23:04:2010
राहु	07:06:2010
गुरू	01:10:2010
शनि	12:01:2011
बुध	14:05:2011
केतु	31:08:2011

सूर्य अन्तर
15:10:2011 —— 02:06:2012

प्रत्यंतर	से
सूर्य	15:10:2011
चन्द्रमा	26:10:2011
मंगल	15:11:2011
राहु	28:11:2011
गुरू	02:01:2012
शनि	02:02:2012
बुध	09:03:2012
केतु	11:04:2012
शुक्र	25:04:2012

चन्द्रमा अन्तर
02:06:2012 —— 23:06:2013

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	02:06:2012
मंगल	05:07:2012
राहु	27:07:2012
गुरू	23:09:2012
शनि	14:11:2012
बुध	14:01:2013
केतु	09:03:2013
शुक्र	01:04:2013
सूर्य	04:06:2013

मंगल अन्तर
23:06:2013 —— 20:03:2014

प्रत्यंतर	से
मंगल	23:06:2013
राहु	09:07:2013
गुरू	18:08:2013
शनि	23:09:2013
बुध	05:11:2013
केतु	13:12:2013
शुक्र	29:12:2013
सूर्य	12:02:2014
चन्द्रमा	25:02:2014

राहु अन्तर
20:03:2014 —— 11:02:2016

प्रत्यंतर	से
राहु	20:03:2014
गुरू	02:07:2014
शनि	02:10:2014
बुध	20:01:2015
केतु	28:04:2015
शुक्र	08:06:2015
सूर्य	01:10:2015
चन्द्रमा	05:11:2015
मंगल	02:01:2016

गुरू अन्तर
11:02:2016 —— 21:10:2017

प्रत्यंतर	से
गुरू	11:02:2016
शनि	04:05:2016
बुध	10:08:2016
केतु	05:11:2016
शुक्र	11:12:2016
सूर्य	24:03:2017
चन्द्रमा	24:04:2017
मंगल	14:06:2017
राहु	20:07:2017

त्रिभागी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

केतु दशा (19:02:2029 —— 21:10:2033)

केतु अन्तर
19:02:2029 —— 30:05:2029

प्रत्यंतर	से
केतु	19:02:2029
शुक्र	25:02:2029
सूर्य	14:03:2029
चन्द्रमा	19:03:2029
मंगल	27:03:2029
राहु	02:04:2029
गुरू	17:04:2029
शनि	30:04:2029
बुध	16:05:2029

शुक्र अन्तर
30:05:2029 —— 10:03:2030

प्रत्यंतर	से
शुक्र	30:05:2029
सूर्य	16:07:2029
चन्द्रमा	30:07:2029
मंगल	23:08:2029
राहु	09:09:2029
गुरू	21:10:2029
शनि	28:11:2029
बुध	12:01:2030
केतु	21:02:2030

सूर्य अन्तर
10:03:2030 —— 03:06:2030

प्रत्यंतर	से
सूर्य	10:03:2030
चन्द्रमा	14:03:2030
मंगल	21:03:2030
राहु	26:03:2030
गुरू	08:04:2030
शनि	19:04:2030
बुध	03:05:2030
केतु	15:05:2030
शुक्र	20:05:2030

चन्द्रमा अन्तर
03:06:2030 —— 23:10:2030

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	03:06:2030
मंगल	15:06:2030
राहु	23:06:2030
गुरू	14:07:2030
शनि	02:08:2030
बुध	25:08:2030
केतु	14:09:2030
शुक्र	22:09:2030
सूर्य	16:10:2030

मंगल अन्तर
23:10:2030 —— 30:01:2031

प्रत्यंतर	से
मंगल	23:10:2030
राहु	29:10:2030
गुरू	13:11:2030
शनि	26:11:2030
बुध	12:12:2030
केतु	26:12:2030
शुक्र	31:12:2030
सूर्य	17:01:2031
चन्द्रमा	22:01:2031

राहु अन्तर
30:01:2031 —— 13:10:2031

प्रत्यंतर	से
राहु	30:01:2031
गुरू	10:03:2031
शनि	13:04:2031
बुध	23:05:2031
केतु	28:06:2031
शुक्र	13:07:2031
सूर्य	25:08:2031
चन्द्रमा	07:09:2031
मंगल	28:09:2031

गुरू अन्तर
13:10:2031 —— 27:05:2032

प्रत्यंतर	से
गुरू	13:10:2031
शनि	12:11:2031
बुध	18:12:2031
केतु	19:01:2032
शुक्र	01:02:2032
सूर्य	10:03:2032
चन्द्रमा	22:03:2032
मंगल	10:04:2032
राहु	23:04:2032

शनि अन्तर
27:05:2032 —— 22:02:2033

प्रत्यंतर	से
शनि	27:05:2032
बुध	09:07:2032
केतु	16:08:2032
शुक्र	01:09:2032
सूर्य	16:10:2032
चन्द्रमा	30:10:2032
मंगल	21:11:2032
राहु	07:12:2032
गुरू	17:01:2033

बुध अन्तर
22:02:2033 —— 21:10:2033

प्रत्यंतर	से
बुध	22:02:2033
केतु	28:03:2033
शुक्र	11:04:2033
सूर्य	21:05:2033
चन्द्रमा	02:06:2033
मंगल	22:06:2033
राहु	06:07:2033
गुरू	11:08:2033
शनि	13:09:2033

For Mindsutra Software Technologies

त्रिभागी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

बुध दशा (21:10:2017 —— 19:02:2029)

बुध अन्तर
21:10:2017 —— 30:05:2019

प्रत्यंतर	से
बुध	21:10:2017
केतु	12:01:2018
शुक्र	15:02:2018
सूर्य	24:05:2018
चन्द्रमा	22:06:2018
मंगल	10:08:2018
राहु	13:09:2018
गुरू	10:12:2018
शनि	26:02:2019

केतु अन्तर
30:05:2019 —— 26:01:2020

प्रत्यंतर	से
केतु	30:05:2019
शुक्र	13:06:2019
सूर्य	23:07:2019
चन्द्रमा	04:08:2019
मंगल	24:08:2019
राहु	07:09:2019
गुरू	14:10:2019
शनि	15:11:2019
बुध	23:12:2019

शुक्र अन्तर
26:01:2020 —— 17:12:2021

प्रत्यंतर	से
शुक्र	26:01:2020
सूर्य	20:05:2020
चन्द्रमा	24:06:2020
मंगल	21:08:2020
राहु	30:09:2020
गुरू	12:01:2021
शनि	14:04:2021
बुध	01:08:2021
केतु	06:11:2021

सूर्य अन्तर
17:12:2021 —— 11:07:2022

प्रत्यंतर	से
सूर्य	17:12:2021
चन्द्रमा	27:12:2021
मंगल	13:01:2022
राहु	25:01:2022
गुरू	25:02:2022
शनि	25:03:2022
बुध	27:04:2022
केतु	26:05:2022
शुक्र	07:06:2022

चन्द्रमा अन्तर
11:07:2022 —— 21:06:2023

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	11:07:2022
मंगल	09:08:2022
राहु	29:08:2022
गुरू	20:10:2022
शनि	05:12:2022
बुध	29:01:2023
केतु	18:03:2023
शुक्र	07:04:2023
सूर्य	04:06:2023

मंगल अन्तर
21:06:2023 —— 18:02:2024

प्रत्यंतर	से
मंगल	21:06:2023
राहु	05:07:2023
गुरू	10:08:2023
शनि	12:09:2023
बुध	20:10:2023
केतु	23:11:2023
शुक्र	07:12:2023
सूर्य	16:01:2024
चन्द्रमा	28:01:2024

राहु अन्तर
18:02:2024 —— 31:10:2025

प्रत्यंतर	से
राहु	18:02:2024
गुरू	21:05:2024
शनि	12:08:2024
बुध	18:11:2024
केतु	14:02:2025
शुक्र	23:03:2025
सूर्य	04:07:2025
चन्द्रमा	04:08:2025
मंगल	25:09:2025

गुरू अन्तर
31:10:2025 —— 06:05:2027

प्रत्यंतर	से
गुरू	31:10:2025
शनि	13:01:2026
बुध	10:04:2026
केतु	27:06:2026
शुक्र	29:07:2026
सूर्य	29:10:2026
चन्द्रमा	26:11:2026
मंगल	11:01:2027
राहु	12:02:2027

शनि अन्तर
06:05:2027 —— 19:02:2029

प्रत्यंतर	से
शनि	06:05:2027
बुध	17:08:2027
केतु	18:11:2027
शुक्र	26:12:2027
सूर्य	14:04:2028
चन्द्रमा	17:05:2028
मंगल	10:07:2028
राहु	18:08:2028
गुरू	24:11:2028

त्रिभागी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

शुक्र दशा (21:10:2033 —— 19:02:2047)

शुक्र अन्तर
21:10:2033 —— 10:01:2036

प्रत्यंतर	से
शुक्र	21:10:2033
सूर्य	05:03:2034
चन्द्रमा	15:04:2034
मंगल	21:06:2034
राहु	07:08:2034
गुरू	07:12:2034
शनि	25:03:2035
बुध	01:08:2035
केतु	24:11:2035

सूर्य अन्तर
10:01:2036 —— 10:09:2036

प्रत्यंतर	से
सूर्य	10:01:2036
चन्द्रमा	22:01:2036
मंगल	11:02:2036
राहु	26:02:2036
गुरू	02:04:2036
शनि	05:05:2036
बुध	12:06:2036
केतु	17:07:2036
शुक्र	31:07:2036

चन्द्रमा अन्तर
10:09:2036 —— 21:10:2037

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	10:09:2036
मंगल	14:10:2036
राहु	07:11:2036
गुरू	07:01:2037
शनि	02:03:2037
बुध	05:05:2037
केतु	01:07:2037
शुक्र	25:07:2037
सूर्य	01:10:2037

मंगल अन्तर
21:10:2037 —— 01:08:2038

प्रत्यंतर	से
मंगल	21:10:2037
राहु	06:11:2037
गुरू	19:12:2037
शनि	26:01:2038
बुध	12:03:2038
केतु	21:04:2038
शुक्र	08:05:2038
सूर्य	24:06:2038
चन्द्रमा	08:07:2038

राहु अन्तर
01:08:2038 —— 31:07:2040

प्रत्यंतर	से
राहु	01:08:2038
गुरू	18:11:2038
शनि	24:02:2039
बुध	19:06:2039
केतु	01:10:2039
शुक्र	12:11:2039
सूर्य	13:03:2040
चन्द्रमा	19:04:2040
मंगल	19:06:2040

गुरू अन्तर
31:07:2040 —— 12:05:2042

प्रत्यंतर	से
गुरू	31:07:2040
शनि	26:10:2040
बुध	06:02:2041
केतु	09:05:2041
शुक्र	16:06:2041
सूर्य	02:10:2041
चन्द्रमा	03:11:2041
मंगल	27:12:2041
राहु	03:02:2042

शनि अन्तर
12:05:2042 —— 21:06:2044

प्रत्यंतर	से
शनि	12:05:2042
बुध	11:09:2042
केतु	29:12:2042
शुक्र	12:02:2043
सूर्य	20:06:2043
चन्द्रमा	29:07:2043
मंगल	01:10:2043
राहु	15:11:2043
गुरू	10:03:2044

बुध अन्तर
21:06:2044 —— 12:05:2046

प्रत्यंतर	से
बुध	21:06:2044
केतु	27:09:2044
शुक्र	06:11:2044
सूर्य	01:03:2045
चन्द्रमा	04:04:2045
मंगल	01:06:2045
राहु	11:07:2045
गुरू	23:10:2045
शनि	22:01:2046

केतु अन्तर
12:05:2046 —— 19:02:2047

प्रत्यंतर	से
केतु	12:05:2046
शुक्र	28:05:2046
सूर्य	14:07:2046
चन्द्रमा	29:07:2046
मंगल	21:08:2046
राहु	07:09:2046
गुरू	19:10:2046
शनि	26:11:2046
बुध	10:01:2047

त्रिभागी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

सूर्य दशा (19:02:2047 –– 19:02:2051)

सूर्य अन्तर
19:02:2047 –– 03:05:2047

प्रत्यंतर	से
सूर्य	19:02:2047
चन्द्रमा	23:02:2047
मंगल	01:03:2047
राहु	05:03:2047
गुरू	16:03:2047
शनि	26:03:2047
बुध	07:04:2047
केतु	17:04:2047
शुक्र	21:04:2047

चन्द्रमा अन्तर
03:05:2047 –– 02:09:2047

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	03:05:2047
मंगल	14:05:2047
राहु	21:05:2047
गुरू	08:06:2047
शनि	24:06:2047
बुध	13:07:2047
केतु	31:07:2047
शुक्र	07:08:2047
सूर्य	27:08:2047

मंगल अन्तर
02:09:2047 –– 26:11:2047

प्रत्यंतर	से
मंगल	02:09:2047
राहु	07:09:2047
गुरू	20:09:2047
शनि	01:10:2047
बुध	15:10:2047
केतु	27:10:2047
शुक्र	01:11:2047
सूर्य	15:11:2047
चन्द्रमा	19:11:2047

राहु अन्तर
26:11:2047 –– 03:07:2048

प्रत्यंतर	से
राहु	26:11:2047
गुरू	29:12:2047
शनि	27:01:2048
बुध	02:03:2048
केतु	02:04:2048
शुक्र	15:04:2048
सूर्य	22:05:2048
चन्द्रमा	02:06:2048
मंगल	20:06:2048

गुरू अन्तर
03:07:2048 –– 14:01:2049

प्रत्यंतर	से
गुरू	03:07:2048
शनि	29:07:2048
बुध	29:08:2048
केतु	25:09:2048
शुक्र	07:10:2048
सूर्य	08:11:2048
चन्द्रमा	18:11:2048
मंगल	04:12:2048
राहु	16:12:2048

शनि अन्तर
14:01:2049 –– 02:09:2049

प्रत्यंतर	से
शनि	14:01:2049
बुध	20:02:2049
केतु	24:03:2049
शुक्र	07:04:2049
सूर्य	15:05:2049
चन्द्रमा	27:05:2049
मंगल	15:06:2049
राहु	29:06:2049
गुरू	02:08:2049

बुध अन्तर
02:09:2049 –– 28:03:2050

प्रत्यंतर	से
बुध	02:09:2049
केतु	01:10:2049
शुक्र	14:10:2049
सूर्य	17:11:2049
चन्द्रमा	27:11:2049
मंगल	15:12:2049
राहु	27:12:2049
गुरू	27:01:2050
शनि	23:02:2050

केतु अन्तर
28:03:2050 –– 21:06:2050

प्रत्यंतर	से
केतु	28:03:2050
शुक्र	02:04:2050
सूर्य	16:04:2050
चन्द्रमा	20:04:2050
मंगल	28:04:2050
राहु	02:05:2050
गुरू	15:05:2050
शनि	27:05:2050
बुध	09:06:2050

शुक्र अन्तर
21:06:2050 –– 19:02:2051

प्रत्यंतर	से
शुक्र	21:06:2050
सूर्य	01:08:2050
चन्द्रमा	13:08:2050
मंगल	02:09:2050
राहु	16:09:2050
गुरू	23:10:2050
शनि	24:11:2050
बुध	02:01:2051
केतु	05:02:2051

षोडशोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय षोडशोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : चन्द्रमा : 8 व. 9 मा. 11 दि.

आपका जन्म कृष्ण–पक्ष (अवरोही चन्द्र) में हुआ है, और आपकी होरा कुण्डली में लग्न सूर्य के होरा में पड़ रहा है। आपकी कुण्डली में षोडशोत्तरी दशा पद्धति (116 साल का चक्र) लागू नहीं हो रहा है। आपके जीवन में सभी मुख्य एवं महत्वपूर्ण घटनाओं के समय और स्वभाव की जानकारी के लिए विंशोत्तरी दशा पद्धति षोडशोत्तरी दशा पद्धति की तुलना में उत्तम फल प्रदान करेगी।

क0 स0		ग्रह दशा	अवधि	से ---------- तक
1	☽	चन्द्रमा दशा	8 y.9 m.11 d.	18:12:1973 -- 29:09:1982
2	☿	बुध दशा	17 y.0 m.0 d.	29:09:1982 -- 29:09:1999
3	♀	शुक्र दशा	18 y.0 m.0 d.	29:09:1999 -- 29:09:2017
4	☉	सूर्य दशा	11 y.0 m.0 d.	29:09:2017 -- 28:09:2028
5	♂	मंगल दशा	12 y.0 m.0 d.	28:09:2028 -- 28:09:2040
6	♃	गुरू दशा	13 y.0 m.0 d.	28:09:2040 -- 29:09:2053
7	♄	शनि दशा	14 y.0 m.0 d.	29:09:2053 -- 29:09:2067
8	☋	केतु दशा	15 y.0 m.0 d.	29:09:2067 -- 29:09:2082

षोडशोत्तरी दशा की अन्तर्दशाएं

चन्द्रमा दशा
18:12:1973 –– 29:09:1982

अन्तर्दशा	से
चन्द्रमा	
बुध	
शुक्र	
सूर्य	18:12:1973
मंगल	18:04:1975
गुरू	13:12:1976
शनि	29:09:1978
केतु	03:09:1980

बुध दशा
29:09:1982 –– 29:09:1999

अन्तर्दशा	से
बुध	29:09:1982
शुक्र	27:03:1985
सूर्य	15:11:1987
मंगल	26:06:1989
गुरू	30:03:1991
शनि	24:02:1993
केतु	14:03:1995
चन्द्रमा	26:05:1997

शुक्र दशा
29:09:1999 –– 29:09:2017

अन्तर्दशा	से
शुक्र	29:09:1999
सूर्य	15:07:2002
मंगल	29:03:2004
गुरू	08:02:2006
शनि	14:02:2008
केतु	18:04:2010
चन्द्रमा	15:08:2012
बुध	08:02:2015

सूर्य दशा
29:09:2017 –– 28:09:2028

अन्तर्दशा	से
सूर्य	29:09:2017
मंगल	14:10:2018
गुरू	04:12:2019
शनि	27:02:2021
केतु	26:06:2022
चन्द्रमा	27:11:2023
बुध	04:06:2025
शुक्र	14:01:2027

मंगल दशा
28:09:2028 –– 28:09:2040

अन्तर्दशा	से
मंगल	28:09:2028
गुरू	26:12:2029
शनि	01:05:2031
केतु	11:10:2032
चन्द्रमा	01:05:2034
बुध	26:12:2035
शुक्र	29:09:2037
सूर्य	09:08:2039

गुरू दशा
28:09:2040 –– 29:09:2053

अन्तर्दशा	से
गुरू	28:09:2040
शनि	14:03:2042
केतु	08:10:2043
चन्द्रमा	14:06:2045
बुध	30:03:2047
शुक्र	24:02:2049
सूर्य	02:03:2051
मंगल	25:05:2052

शनि दशा
29:09:2053 –– 29:09:2067

अन्तर्दशा	से
शनि	29:09:2053
केतु	07:06:2055
चन्द्रमा	30:03:2057
बुध	05:03:2059
शुक्र	24:03:2061
सूर्य	26:05:2063
मंगल	22:09:2064
गुरू	05:03:2066

केतु दशा
29:09:2067 –– 29:09:2082

अन्तर्दशा	से
केतु	29:09:2067
चन्द्रमा	07:09:2069
बुध	02:10:2071
शुक्र	13:12:2073
सूर्य	11:04:2076
मंगल	13:09:2077
गुरू	02:04:2079
शनि	07:12:2080

षोडशोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

चन्द्रमा दशा (18:12:1973 –– 29:09:1982)

आपका जन्म कृष्ण–पक्ष (अवरोही चन्द्र) में हुआ है, और आपकी होरा कुण्डली में लग्न सूर्य के होरा में पड़ रहा है। आपकी कुण्डली में षोडशोत्तरी दशा पद्धति (116 साल का चक्र) लागू नहीं हो रहा है। आपके जीवन में सभी मुख्य एवं महत्वपूर्ण घटनाओं के समय और स्वभाव की जानकारी के लिए विंशोत्तरी दशा पद्धति षोडशोत्तरी दशा पद्धति की तुलना में उत्तम फल प्रदान करेगी।

प्रत्यंतर	से

प्रत्यंतर	से

प्रत्यंतर	से

सूर्य अन्तर
18:12:1973 –– 18:04:1975

प्रत्यंतर	से
मंगल	18:12:1973
गुरू	29:01:1974
शनि	01:04:1974
केतु	07:06:1974
चन्द्रमा	18:08:1974
बुध	02:11:1974
शुक्र	22:01:1975

मंगल अन्तर
18:04:1975 –– 13:12:1976

प्रत्यंतर	से
मंगल	18:04:1975
गुरू	20:06:1975
शनि	26:08:1975
केतु	07:11:1975
चन्द्रमा	24:01:1976
बुध	17:04:1976
शुक्र	15:07:1976
सूर्य	17:10:1976

गुरू अन्तर
13:12:1976 –– 29:09:1978

प्रत्यंतर	से
गुरू	13:12:1976
शनि	25:02:1977
केतु	15:05:1977
चन्द्रमा	07:08:1977
बुध	05:11:1977
शुक्र	09:02:1978
सूर्य	22:05:1978
मंगल	23:07:1978

शनि अन्तर
29:09:1978 –– 03:09:1980

प्रत्यंतर	से
शनि	29:09:1978
केतु	23:12:1978
चन्द्रमा	24:03:1979
बुध	29:06:1979
शुक्र	10:10:1979
सूर्य	28:01:1980
मंगल	04:04:1980
गुरू	16:06:1980

केतु अन्तर
03:09:1980 –– 29:09:1982

प्रत्यंतर	से
केतु	03:09:1980
चन्द्रमा	10:12:1980
बुध	24:03:1981
शुक्र	13:07:1981
सूर्य	07:11:1981
मंगल	18:01:1982
गुरू	06:04:1982
शनि	30:06:1982

षोडशोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

बुध दशा (29:09:1982 —— 29:09:1999)

आपका जन्म कृष्ण–पक्ष (अवरोही चन्द्र) में हुआ है, और आपकी होरा कुण्डली में लग्न सूर्य के होरा में पड़ रहा है। आपकी कुण्डली में षोडशोत्तरी दशा पद्धति (116 साल का चक्र) लागू नहीं हो रहा है। आपके जीवन में सभी मुख्य एवं महत्वपूर्ण घटनाओं के समय और स्वभाव की जानकारी के लिए विंशोत्तरी दशा पद्धति षोडशोत्तरी दशा पद्धति की तुलना में उत्तम फल प्रदान करेगी।

बुध अन्तर
29:09:1982 —— 27:03:1985

प्रत्यंतर	से
बुध	29:09:1982
शुक्र	09:02:1983
सूर्य	30:06:1983
मंगल	24:09:1983
गुरू	27:12:1983
शनि	08:04:1984
केतु	27:07:1984
चन्द्रमा	21:11:1984

शुक्र अन्तर
27:03:1985 —— 15:11:1987

प्रत्यंतर	से
शुक्र	27:03:1985
सूर्य	23:08:1985
मंगल	23:11:1985
गुरू	02:03:1986
शनि	18:06:1986
केतु	12:10:1986
चन्द्रमा	14:02:1987
बुध	27:06:1987

सूर्य अन्तर
15:11:1987 —— 26:06:1989

प्रत्यंतर	से
सूर्य	15:11:1987
मंगल	10:01:1988
गुरू	11:03:1988
शनि	16:05:1988
केतु	26:07:1988
चन्द्रमा	10:10:1988
बुध	31:12:1988
शुक्र	27:03:1989

मंगल अन्तर
26:06:1989 —— 30:03:1991

प्रत्यंतर	से
मंगल	26:06:1989
गुरू	01:09:1989
शनि	12:11:1989
केतु	28:01:1990
चन्द्रमा	21:04:1990
बुध	19:07:1990
शुक्र	21:10:1990
सूर्य	28:01:1991

गुरू अन्तर
30:03:1991 —— 24:02:1993

प्रत्यंतर	से
गुरू	30:03:1991
शनि	16:06:1991
केतु	08:09:1991
चन्द्रमा	07:12:1991
बुध	12:03:1992
शुक्र	22:06:1992
सूर्य	08:10:1992
मंगल	14:12:1992

शनि अन्तर
24:02:1993 —— 14:03:1995

प्रत्यंतर	से
शनि	24:02:1993
केतु	25:05:1993
चन्द्रमा	30:08:1993
बुध	11:12:1993
शुक्र	31:03:1994
सूर्य	25:07:1994
मंगल	04:10:1994
गुरू	21:12:1994

केतु अन्तर
14:03:1995 —— 26:05:1997

प्रत्यंतर	से
केतु	14:03:1995
चन्द्रमा	26:06:1995
बुध	15:10:1995
शुक्र	10:02:1996
सूर्य	13:06:1996
मंगल	29:08:1996
गुरू	20:11:1996
शनि	18:02:1997

चन्द्रमा अन्तर
26:05:1997 —— 29:09:1999

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	26:05:1997
बुध	21:09:1997
शुक्र	24:01:1998
सूर्य	06:06:1998
मंगल	26:08:1998
गुरू	23:11:1998
शनि	27:02:1999
केतु	10:06:1999

षोडशोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

शुक्र दशा (29:09:1999 –– 29:09:2017)

आपका जन्म कृष्ण–पक्ष (अवरोही चन्द्र) में हुआ है, और आपकी होरा कुण्डली में लग्न सूर्य के होरा में पड़ रहा है। आपकी कुण्डली में षोडशोत्तरी दशा पद्धति (116 साल का चक्र) लागू नहीं हो रहा है। आपके जीवन में सभी मुख्य एवं महत्वपूर्ण घटनाओं के समय और स्वभाव की जानकारी के लिए विंशोत्तरी दशा पद्धति षोडशोत्तरी दशा पद्धति की तुलना में उत्तम फल प्रदान करेगी।

शुक्र अन्तर
29:09:1999 –– 15:07:2002

प्रत्यंतर	से
शुक्र	29:09:1999
सूर्य	05:03:2000
मंगल	10:06:2000
गुरू	24:09:2000
शनि	16:01:2001
केतु	19:05:2001
चन्द्रमा	28:09:2001
बुध	16:02:2002

सूर्य अन्तर
15:07:2002 –– 29:03:2004

प्रत्यंतर	से
सूर्य	15:07:2002
मंगल	12:09:2002
गुरू	16:11:2002
शनि	24:01:2003
केतु	10:04:2003
चन्द्रमा	29:06:2003
बुध	23:09:2003
शुक्र	23:12:2003

मंगल अन्तर
29:03:2004 –– 08:02:2006

प्रत्यंतर	से
मंगल	29:03:2004
गुरू	08:06:2004
शनि	23:08:2004
केतु	14:11:2004
चन्द्रमा	10:02:2005
बुध	14:05:2005
शुक्र	22:08:2005
सूर्य	05:12:2005

गुरू अन्तर
08:02:2006 –– 14:02:2008

प्रत्यंतर	से
गुरू	08:02:2006
शनि	01:05:2006
केतु	29:07:2006
चन्द्रमा	01:11:2006
बुध	11:02:2007
शुक्र	30:05:2007
सूर्य	21:09:2007
मंगल	30:11:2007

शनि अन्तर
14:02:2008 –– 18:04:2010

प्रत्यंतर	से
शनि	14:02:2008
केतु	20:05:2008
चन्द्रमा	31:08:2008
बुध	19:12:2008
शुक्र	14:04:2009
सूर्य	15:08:2009
मंगल	29:10:2009
गुरू	19:01:2010

केतु अन्तर
18:04:2010 –– 15:08:2012

प्रत्यंतर	से
केतु	18:04:2010
चन्द्रमा	06:08:2010
बुध	01:12:2010
शुक्र	05:04:2011
सूर्य	14:08:2011
मंगल	03:11:2011
गुरू	30:01:2012
शनि	04:05:2012

चन्द्रमा अन्तर
15:08:2012 –– 08:02:2015

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	15:08:2012
बुध	19:12:2012
शुक्र	30:04:2013
सूर्य	18:09:2013
मंगल	13:12:2013
गुरू	17:03:2014
शनि	26:06:2014
केतु	14:10:2014

बुध अन्तर
08:02:2015 –– 29:09:2017

प्रत्यंतर	से
बुध	08:02:2015
शुक्र	29:06:2015
सूर्य	25:11:2015
मंगल	25:02:2016
गुरू	04:06:2016
शनि	20:09:2016
केतु	14:01:2017
चन्द्रमा	19:05:2017

षोडशोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

सूर्य दशा (29:09:2017 -- 28:09:2028)

आपका जन्म कृष्ण–पक्ष (अवरोही चन्द्र) में हुआ है, और आपकी होरा कुण्डली में लग्न सूर्य के होरा में पड़ रहा है। आपकी कुण्डली में षोडशोत्तरी दशा पद्धति (116 साल का चक्र) लागू नहीं हो रहा है। आपके जीवन में सभी मुख्य एवं महत्वपूर्ण घटनाओं के समय और स्वभाव की जानकारी के लिए विंशोत्तरी दशा पद्धति षोडशोत्तरी दशा पद्धति की तुलना में उत्तम फल प्रदान करेगी।

सूर्य अन्तर
29:09:2017 -- 14:10:2018

प्रत्यंतर	से
सूर्य	29:09:2017
मंगल	04:11:2017
गुरू	13:12:2017
शनि	25:01:2018
केतु	12:03:2018
चन्द्रमा	30:04:2018
बुध	22:06:2018
शुक्र	16:08:2018

मंगल अन्तर
14:10:2018 -- 04:12:2019

प्रत्यंतर	से
मंगल	14:10:2018
गुरू	26:11:2018
शनि	12:01:2019
केतु	03:03:2019
चन्द्रमा	26:04:2019
बुध	22:06:2019
शुक्र	22:08:2019
सूर्य	25:10:2019

गुरू अन्तर
04:12:2019 -- 27:02:2021

प्रत्यंतर	से
गुरू	04:12:2019
शनि	23:01:2020
केतु	18:03:2020
चन्द्रमा	15:05:2020
बुध	16:07:2020
शुक्र	20:09:2020
सूर्य	29:11:2020
मंगल	11:01:2021

शनि अन्तर
27:02:2021 -- 26:06:2022

प्रत्यंतर	से
शनि	27:02:2021
केतु	26:04:2021
चन्द्रमा	28:06:2021
बुध	03:09:2021
शुक्र	13:11:2021
सूर्य	27:01:2022
मंगल	14:03:2022
गुरू	03:05:2022

केतु अन्तर
26:06:2022 -- 27:11:2023

प्रत्यंतर	से
केतु	26:06:2022
चन्द्रमा	01:09:2022
बुध	12:11:2022
शुक्र	27:01:2023
सूर्य	18:04:2023
मंगल	06:06:2023
गुरू	30:07:2023
शनि	26:09:2023

चन्द्रमा अन्तर
27:11:2023 -- 04:06:2025

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	27:11:2023
बुध	12:02:2024
शुक्र	03:05:2024
सूर्य	29:07:2024
मंगल	19:09:2024
गुरू	16:11:2024
शनि	17:01:2025
केतु	25:03:2025

बुध अन्तर
04:06:2025 -- 14:01:2027

प्रत्यंतर	से
बुध	04:06:2025
शुक्र	29:08:2025
सूर्य	29:11:2025
मंगल	24:01:2026
गुरू	25:03:2026
शनि	30:05:2026
केतु	09:08:2026
चन्द्रमा	24:10:2026

शुक्र अन्तर
14:01:2027 -- 28:09:2028

प्रत्यंतर	से
शुक्र	14:01:2027
सूर्य	20:04:2027
मंगल	18:06:2027
गुरू	22:08:2027
शनि	31:10:2027
केतु	14:01:2028
चन्द्रमा	04:04:2028
बुध	29:06:2028

षोडशोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

मंगल दशा (28:09:2028 —— 28:09:2040)

आपका जन्म कृष्ण–पक्ष (अवरोही चन्द्र) में हुआ है, और आपकी होरा कुण्डली में लग्न सूर्य के होरा में पड़ रहा है। आपकी कुण्डली में षोडशोत्तरी दशा पद्धति (116 साल का चक्र) लागू नहीं हो रहा है। आपके जीवन में सभी मुख्य एवं महत्वपूर्ण घटनाओं के समय और स्वभाव की जानकारी के लिए विंशोत्तरी दशा पद्धति षोडशोत्तरी दशा पद्धति की तुलना में उत्तम फल प्रदान करेगी।

मंगल अन्तर
28:09:2028 —— 26:12:2029

प्रत्यंतर	से
मंगल	28:09:2028
गुरू	14:11:2028
शनि	04:01:2029
केतु	28:02:2029
चन्द्रमा	28:04:2029
बुध	29:06:2029
शुक्र	03:09:2029
सूर्य	13:11:2029

गुरू अन्तर
26:12:2029 —— 01:05:2031

प्रत्यंतर	से
गुरू	26:12:2029
शनि	19:02:2030
केतु	19:04:2030
चन्द्रमा	21:06:2030
बुध	28:08:2030
शुक्र	08:11:2030
सूर्य	23:01:2031
मंगल	11:03:2031

शनि अन्तर
01:05:2031 —— 11:10:2032

प्रत्यंतर	से
शनि	01:05:2031
केतु	03:07:2031
चन्द्रमा	10:09:2031
बुध	22:11:2031
शुक्र	07:02:2032
सूर्य	30:04:2032
मंगल	19:06:2032
गुरू	13:08:2032

केतु अन्तर
11:10:2032 —— 01:05:2034

प्रत्यंतर	से
केतु	11:10:2032
चन्द्रमा	23:12:2032
बुध	12:03:2033
शुक्र	03:06:2033
सूर्य	30:08:2033
मंगल	22:10:2033
गुरू	20:12:2033
शनि	21:02:2034

चन्द्रमा अन्तर
01:05:2034 —— 26:12:2035

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	01:05:2034
बुध	23:07:2034
शुक्र	19:10:2034
सूर्य	21:01:2035
मंगल	20:03:2035
गुरू	21:05:2035
शनि	28:07:2035
केतु	09:10:2035

बुध अन्तर
26:12:2035 —— 29:09:2037

प्रत्यंतर	से
बुध	26:12:2035
शुक्र	29:03:2036
सूर्य	07:07:2036
मंगल	06:09:2036
गुरू	12:11:2036
शनि	23:01:2037
केतु	10:04:2037
चन्द्रमा	02:07:2037

शुक्र अन्तर
29:09:2037 —— 09:08:2039

प्रत्यंतर	से
शुक्र	29:09:2037
सूर्य	12:01:2038
मंगल	18:03:2038
गुरू	27:05:2038
शनि	11:08:2038
केतु	01:11:2038
चन्द्रमा	28:01:2039
बुध	02:05:2039

सूर्य अन्तर
09:08:2039 —— 28:09:2040

प्रत्यंतर	से
सूर्य	09:08:2039
मंगल	18:09:2039
गुरू	31:10:2039
शनि	16:12:2039
केतु	04:02:2040
चन्द्रमा	29:03:2040
बुध	26:05:2040
शुक्र	26:07:2040

षोडशोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

गुरू दशा (28:09:2040 –– 29:09:2053)

आपका जन्म कृष्ण–पक्ष (अवरोही चन्द्र) में हुआ है, और आपकी होरा कुण्डली में लग्न सूर्य के होरा में पड़ रहा है। आपकी कुण्डली में षोडशोत्तरी दशा पद्धति (116 साल का चक्र) लागू नहीं हो रहा है। आपके जीवन में सभी मुख्य एवं महत्वपूर्ण घटनाओं के समय और स्वभाव की जानकारी के लिए विंशोत्तरी दशा पद्धति षोडशोत्तरी दशा पद्धति की तुलना में उत्तम फल प्रदान करेगी।

गुरू अन्तर
28:09:2040 –– 14:03:2042

प्रत्यंतर	से
गुरू	28:09:2040
शनि	27:11:2040
केतु	30:01:2041
चन्द्रमा	09:04:2041
बुध	22:06:2041
शुक्र	07:09:2041
सूर्य	29:11:2041
मंगल	18:01:2042

शनि अन्तर
14:03:2042 –– 08:10:2043

प्रत्यंतर	से
शनि	14:03:2042
केतु	23:05:2042
चन्द्रमा	05:08:2042
बुध	23:10:2042
शुक्र	15:01:2043
सूर्य	13:04:2043
मंगल	07:06:2043
गुरू	05:08:2043

केतु अन्तर
08:10:2043 –– 14:06:2045

प्रत्यंतर	से
केतु	08:10:2043
चन्द्रमा	26:12:2043
बुध	20:03:2044
शुक्र	18:06:2044
सूर्य	22:09:2044
मंगल	19:11:2044
गुरू	22:01:2045
शनि	01:04:2045

चन्द्रमा अन्तर
14:06:2045 –– 30:03:2047

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	14:06:2045
बुध	12:09:2045
शुक्र	17:12:2045
सूर्य	28:03:2046
मंगल	29:05:2046
गुरू	05:08:2046
शनि	18:10:2046
केतु	05:01:2047

बुध अन्तर
30:03:2047 –– 24:02:2049

प्रत्यंतर	से
बुध	30:03:2047
शुक्र	10:07:2047
सूर्य	26:10:2047
मंगल	31:12:2047
गुरू	12:03:2048
शनि	29:05:2048
केतु	21:08:2048
चन्द्रमा	20:11:2048

शुक्र अन्तर
24:02:2049 –– 02:03:2051

प्रत्यंतर	से
शुक्र	24:02:2049
सूर्य	18:06:2049
मंगल	27:08:2049
गुरू	11:11:2049
शनि	01:02:2050
केतु	01:05:2050
चन्द्रमा	04:08:2050
बुध	14:11:2050

सूर्य अन्तर
02:03:2051 –– 25:05:2052

प्रत्यंतर	से
सूर्य	02:03:2051
मंगल	14:04:2051
गुरू	30:05:2051
शनि	19:07:2051
केतु	12:09:2051
चन्द्रमा	09:11:2051
बुध	10:01:2052
शुक्र	16:03:2052

मंगल अन्तर
25:05:2052 –– 29:09:2053

प्रत्यंतर	से
मंगल	25:05:2052
गुरू	15:07:2052
शनि	08:09:2052
केतु	07:11:2052
चन्द्रमा	09:01:2053
बुध	18:03:2053
शुक्र	29:05:2053
सूर्य	13:08:2053

षोडशोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

शनि दशा (29:09:2053 –– 29:09:2067)

आपका जन्म कृष्ण–पक्ष (अवरोही चन्द्र) में हुआ है, और आपकी होरा कुण्डली में लग्न सूर्य के होरा में पड़ रहा है। आपकी कुण्डली में षोडशोत्तरी दशा पद्धति (116 साल का चक्र) लागू नहीं हो रहा है। आपके जीवन में सभी मुख्य एवं महत्वपूर्ण घटनाओं के समय और स्वभाव की जानकारी के लिए विंशोत्तरी दशा पद्धति षोडशोत्तरी दशा पद्धति की तुलना में उत्तम फल प्रदान करेगी।

शनि अन्तर
29:09:2053 –– 07:06:2055

प्रत्यंतर	से
शनि	29:09:2053
केतु	12:12:2053
चन्द्रमा	02:03:2054
बुध	26:05:2054
शुक्र	24:08:2054
सूर्य	28:11:2054
मंगल	25:01:2055
गुरू	30:03:2055

केतु अन्तर
07:06:2055 –– 30:03:2057

प्रत्यंतर	से
केतु	07:06:2055
चन्द्रमा	01:09:2055
बुध	01:12:2055
शुक्र	07:03:2056
सूर्य	18:06:2056
मंगल	20:08:2056
गुरू	27:10:2056
शनि	09:01:2057

चन्द्रमा अन्तर
30:03:2057 –– 05:03:2059

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	30:03:2057
बुध	05:07:2057
शुक्र	17:10:2057
सूर्य	03:02:2058
मंगल	11:04:2058
गुरू	23:06:2058
शनि	10:09:2058
केतु	04:12:2058

बुध अन्तर
05:03:2059 –– 24:03:2061

प्रत्यंतर	से
बुध	05:03:2059
शुक्र	23:06:2059
सूर्य	17:10:2059
मंगल	27:12:2059
गुरू	14:03:2060
शनि	06:06:2060
केतु	04:09:2060
चन्द्रमा	11:12:2060

शुक्र अन्तर
24:03:2061 –– 26:05:2063

प्रत्यंतर	से
शुक्र	24:03:2061
सूर्य	25:07:2061
मंगल	08:10:2061
गुरू	29:12:2061
शनि	28:03:2062
केतु	02:07:2062
चन्द्रमा	12:10:2062
बुध	30:01:2063

सूर्य अन्तर
26:05:2063 –– 22:09:2064

प्रत्यंतर	से
सूर्य	26:05:2063
मंगल	11:07:2063
गुरू	30:08:2063
शनि	23:10:2063
केतु	21:12:2063
चन्द्रमा	21:02:2064
बुध	28:04:2064
शुक्र	09:07:2064

मंगल अन्तर
22:09:2064 –– 05:03:2066

प्रत्यंतर	से
मंगल	22:09:2064
गुरू	16:11:2064
शनि	14:01:2065
केतु	19:03:2065
चन्द्रमा	26:05:2065
बुध	07:08:2065
शुक्र	24:10:2065
सूर्य	14:01:2066

गुरू अन्तर
05:03:2066 –– 29:09:2067

प्रत्यंतर	से
गुरू	05:03:2066
शनि	08:05:2066
केतु	16:07:2066
चन्द्रमा	28:09:2066
बुध	16:12:2066
शुक्र	10:03:2067
सूर्य	07:06:2067
मंगल	31:07:2067

षोडशोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

केतु दशा (29:09:2067 —— 29:09:2082)

आपका जन्म कृष्ण–पक्ष (अवरोही चन्द्र) में हुआ है, और आपकी होरा कुण्डली में लग्न सूर्य के होरा में पड़ रहा है। आपकी कुण्डली में षोडशोत्तरी दशा पद्धति (116 साल का चक्र) लागू नहीं हो रहा है। आपके जीवन में सभी मुख्य एवं महत्वपूर्ण घटनाओं के समय और स्वभाव की जानकारी के लिए विंशोत्तरी दशा पद्धति षोडशोत्तरी दशा पद्धति की तुलना में उत्तम फल प्रदान करेगी।

केतु अन्तर
29:09:2067 —— 07:09:2069

प्रत्यंतर	से
केतु	29:09:2067
चन्द्रमा	29:12:2067
बुध	05:04:2068
शुक्र	18:07:2068
सूर्य	05:11:2068
मंगल	12:01:2069
गुरू	26:03:2069
शनि	13:06:2069

चन्द्रमा अन्तर
07:09:2069 —— 02:10:2071

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	07:09:2069
बुध	20:12:2069
शुक्र	09:04:2070
सूर्य	05:08:2070
मंगल	15:10:2070
गुरू	01:01:2071
शनि	27:03:2071
केतु	26:06:2071

बुध अन्तर
02:10:2071 —— 13:12:2073

प्रत्यंतर	से
बुध	02:10:2071
शुक्र	27:01:2072
सूर्य	31:05:2072
मंगल	16:08:2072
गुरू	07:11:2072
शनि	05:02:2073
केतु	13:05:2073
चन्द्रमा	25:08:2073

शुक्र अन्तर
13:12:2073 —— 11:04:2076

प्रत्यंतर	से
शुक्र	13:12:2073
सूर्य	24:04:2074
मंगल	14:07:2074
गुरू	09:10:2074
शनि	13:01:2075
केतु	25:04:2075
चन्द्रमा	13:08:2075
बुध	08:12:2075

सूर्य अन्तर
11:04:2076 —— 13:09:2077

प्रत्यंतर	से
सूर्य	11:04:2076
मंगल	30:05:2076
गुरू	23:07:2076
शनि	20:09:2076
केतु	21:11:2076
चन्द्रमा	28:01:2077
बुध	09:04:2077
शुक्र	24:06:2077

मंगल अन्तर
13:09:2077 —— 02:04:2079

प्रत्यंतर	से
मंगल	13:09:2077
गुरू	11:11:2077
शनि	13:01:2078
केतु	22:03:2078
चन्द्रमा	04:06:2078
बुध	21:08:2078
शुक्र	12:11:2078
सूर्य	08:02:2079

गुरू अन्तर
02:04:2079 —— 07:12:2080

प्रत्यंतर	से
गुरू	02:04:2079
शनि	10:06:2079
केतु	23:08:2079
चन्द्रमा	10:11:2079
बुध	03:02:2080
शुक्र	03:05:2080
सूर्य	07:08:2080
मंगल	04:10:2080

शनि अन्तर
07:12:2080 —— 29:09:2082

प्रत्यंतर	से
शनि	07:12:2080
केतु	25:02:2081
चन्द्रमा	21:05:2081
बुध	20:08:2081
शुक्र	25:11:2081
सूर्य	08:03:2082
मंगल	09:05:2082
गुरू	17:07:2082

द्वादशोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय द्वादशोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : शनि : 10 व. 5 मा. 4 दि.

आपकी कुण्डली में लग्न, शुक्र द्वारा शासित नवांश राशि (वृष अथवा तुला) में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्वादशोत्तरी दशा पद्धति (112 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

क0 स0	ग्रह दशा	अवधि	से ---------- तक
1	शनि दशा	10 y.5 m.4 d.	18:12:1973 -- 22:05:1984
2	चन्द्रमा दशा	21 y.0 m.0 d.	22:05:1984 && 23:05:2005
3	सूर्य दशा	7 y.0 m.0 d.	23:05:2005 && 22:05:2012
4	गुरू दशा	9 y.0 m.0 d.	22:05:2012 && 23:05:2021
5	केतु दशा	11 y.0 m.0 d.	23:05:2021 && 22:05:2032
6	बुध दशा	13 y.0 m.0 d.	22:05:2032 && 23:05:2045
7	राहु दशा	15 y.0 m.0 d.	23:05:2045 && 22:05:2060
8	मंगल दशा	17 y.0 m.0 d.	22:05:2060 && 23:05:2077

द्वादशोत्तरी दशा की अन्तर्दशाएं

शनि दशा
18:12:1973 -- 22:05:1984

अन्तर्दशा	से
शनि	
चन्द्रमा	
सूर्य	
गुरू	18:12:1973
केतु	21:11:1974
बुध	03:10:1976
राहु	17:12:1978
मंगल	04:07:1981

चन्द्रमा दशा
22:05:1984 -- 23:05:2005

अन्तर्दशा	से
चन्द्रमा	22:05:1984
सूर्य	29:04:1988
गुरू	22:08:1989
केतु	30:04:1991
बुध	23:05:1993
राहु	29:10:1995
मंगल	22:08:1998
शनि	29:10:2001

सूर्य दशा
23:05:2005 -- 22:05:2012

अन्तर्दशा	से
सूर्य	23:05:2005
गुरू	29:10:2005
केतु	23:05:2006
बुध	29:01:2007
राहु	21:11:2007
मंगल	29:10:2008
शनि	21:11:2009
चन्द्रमा	29:01:2011

गुरू दशा
22:05:2012 -- 23:05:2021

अन्तर्दशा	से
गुरू	22:05:2012
केतु	11:02:2013
बुध	30:12:2013
राहु	16:01:2015
मंगल	31:03:2016
शनि	12:08:2017
चन्द्रमा	20:02:2019
सूर्य	29:10:2020

केतु दशा
23:05:2021 -- 22:05:2032

अन्तर्दशा	से
केतु	23:05:2021
बुध	21:06:2022
राहु	30:09:2023
मंगल	22:03:2025
शनि	21:11:2026
चन्द्रमा	03:10:2028
सूर्य	26:10:2030
गुरू	04:07:2031

बुध दशा
22:05:2032 -- 23:05:2045

अन्तर्दशा	से
बुध	22:05:2032
राहु	24:11:2033
मंगल	22:08:2035
शनि	12:08:2037
चन्द्रमा	26:10:2039
सूर्य	04:04:2042
गुरू	25:01:2043
केतु	11:02:2044

राहु दशा
23:05:2045 -- 22:05:2060

अन्तर्दशा	से
राहु	23:05:2045
मंगल	26:05:2047
शनि	04:09:2049
चन्द्रमा	21:03:2052
सूर्य	12:01:2055
गुरू	20:12:2055
केतु	05:03:2057
बुध	25:08:2058

मंगल दशा
22:05:2060 -- 23:05:2077

अन्तर्दशा	से
मंगल	22:05:2060
शनि	20:12:2062
चन्द्रमा	08:11:2065
सूर्य	16:01:2069
गुरू	07:02:2070
केतु	21:06:2071
बुध	20:02:2073
राहु	11:02:2075

द्वादशोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

शनि दशा (18:12:1973 —— 22:05:1984)

आपकी कुण्डली में लग्न, शुक्र द्वारा शासित नवांश राशि (वृष अथवा तुला) में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्वादशोत्तरी दशा पद्धति (112 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

प्रत्यंतर	से

प्रत्यंतर	से

प्रत्यंतर	से

गुरू अन्तर
18:12:1973 —— 21:11:1974

प्रत्यंतर	से
राहु	18:12:1973
मंगल	07:01:1974
शनि	01:04:1974
चन्द्रमा	05:07:1974
सूर्य	17:10:1974

केतु अन्तर
21:11:1974 —— 03:10:1976

प्रत्यंतर	से
केतु	21:11:1974
बुध	27:01:1975
राहु	16:04:1975
मंगल	16:07:1975
शनि	28:10:1975
चन्द्रमा	20:02:1976
सूर्य	27:06:1976
गुरू	09:08:1976

बुध अन्तर
03:10:1976 —— 17:12:1978

प्रत्यंतर	से
बुध	03:10:1976
राहु	05:01:1977
मंगल	22:04:1977
शनि	23:08:1977
चन्द्रमा	06:01:1978
सूर्य	06:06:1978
गुरू	26:07:1978
केतु	29:09:1978

राहु अन्तर
17:12:1978 —— 04:07:1981

प्रत्यंतर	से
राहु	17:12:1978
मंगल	21:04:1979
शनि	09:09:1979
चन्द्रमा	13:02:1980
सूर्य	06:08:1980
गुरू	03:10:1980
केतु	17:12:1980
बुध	18:03:1981

मंगल अन्तर
04:07:1981 —— 22:05:1984

प्रत्यंतर	से
मंगल	04:07:1981
शनि	11:12:1981
चन्द्रमा	07:06:1982
सूर्य	22:12:1982
गुरू	25:02:1983
केतु	21:05:1983
बुध	01:09:1983
राहु	02:01:1984

द्वादशोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

चन्द्रमा दशा (22:05:1984 —— 23:05:2005)

आपकी कुण्डली में लग्न, शुक्र द्वारा शासित नवांश राशि (वृष अथवा तुला) में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्वादशोत्तरी दशा पद्धति (112 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

चन्द्रमा अन्तर
22:05:1984 —— 29:04:1988

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	22:05:1984
सूर्य	16:02:1985
गुरू	17:05:1985
केतु	09:09:1985
बुध	29:01:1986
राहु	14:07:1986
मंगल	23:01:1987
शनि	29:08:1987

सूर्य अन्तर
29:04:1988 —— 22:08:1989

प्रत्यंतर	से
सूर्य	29:04:1988
गुरू	29:05:1988
केतु	07:07:1988
बुध	23:08:1988
राहु	18:10:1988
मंगल	21:12:1988
शनि	04:03:1989
चन्द्रमा	24:05:1989

गुरू अन्तर
22:08:1989 —— 30:04:1991

प्रत्यंतर	से
गुरू	22:08:1989
केतु	10:10:1989
बुध	10:12:1989
राहु	19:02:1990
मंगल	13:05:1990
शनि	14:08:1990
चन्द्रमा	27:11:1990
सूर्य	22:03:1991

केतु अन्तर
30:04:1991 —— 23:05:1993

प्रत्यंतर	से
केतु	30:04:1991
बुध	13:07:1991
राहु	08:10:1991
मंगल	17:01:1992
शनि	11:05:1992
चन्द्रमा	16:09:1992
सूर्य	04:02:1993
गुरू	23:03:1993

बुध अन्तर
23:05:1993 —— 29:10:1995

प्रत्यंतर	से
बुध	23:05:1993
राहु	03:09:1993
मंगल	31:12:1993
शनि	15:05:1994
चन्द्रमा	13:10:1994
सूर्य	29:03:1995
गुरू	23:05:1995
केतु	03:08:1995

राहु अन्तर
29:10:1995 —— 22:08:1998

प्रत्यंतर	से
राहु	29:10:1995
मंगल	15:03:1996
शनि	18:08:1996
चन्द्रमा	09:02:1997
सूर्य	20:08:1997
गुरू	23:10:1997
केतु	14:01:1998
बुध	25:04:1998

मंगल अन्तर
22:08:1998 —— 29:10:2001

प्रत्यंतर	से
मंगल	22:08:1998
शनि	14:02:1999
चन्द्रमा	31:08:1999
सूर्य	05:04:2000
गुरू	17:06:2000
केतु	19:09:2000
बुध	11:01:2001
राहु	26:05:2001

शनि अन्तर
29:10:2001 —— 23:05:2005

प्रत्यंतर	से
शनि	29:10:2001
चन्द्रमा	07:06:2002
सूर्य	06:02:2003
गुरू	28:04:2003
केतु	10:08:2003
बुध	16:12:2003
राहु	15:05:2004
मंगल	06:11:2004

द्वादशोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

सूर्य दशा (23:05:2005 —— 22:05:2012)

आपकी कुण्डली में लग्न, शुक्र द्वारा शासित नवांश राशि (वृष अथवा तुला) में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्वादशोत्तरी दशा पद्धति (112 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

सूर्य अन्तर
23:05:2005 —— 29:10:2005

प्रत्यंतर	से
सूर्य	23:05:2005
गुरू	02:06:2005
केतु	14:06:2005
बुध	30:06:2005
राहु	19:07:2005
मंगल	09:08:2005
शनि	02:09:2005
चन्द्रमा	29:09:2005

गुरू अन्तर
29:10:2005 —— 23:05:2006

प्रत्यंतर	से
गुरू	29:10:2005
केतु	15:11:2005
बुध	05:12:2005
राहु	29:12:2005
मंगल	25:01:2006
शनि	25:02:2006
चन्द्रमा	01:04:2006
सूर्य	10:05:2006

केतु अन्तर
23:05:2006 —— 29:01:2007

प्रत्यंतर	से
केतु	23:05:2006
बुध	16:06:2006
राहु	15:07:2006
मंगल	18:08:2006
शनि	25:09:2006
चन्द्रमा	07:11:2006
सूर्य	24:12:2006
गुरू	08:01:2007

बुध अन्तर
29:01:2007 —— 21:11:2007

प्रत्यंतर	से
बुध	29:01:2007
राहु	04:03:2007
मंगल	13:04:2007
शनि	28:05:2007
चन्द्रमा	17:07:2007
सूर्य	11:09:2007
गुरू	29:09:2007
केतु	23:10:2007

राहु अन्तर
21:11:2007 —— 29:10:2008

प्रत्यंतर	से
राहु	21:11:2007
मंगल	06:01:2008
शनि	27:02:2008
चन्द्रमा	25:04:2008
सूर्य	29:06:2008
गुरू	20:07:2008
केतु	17:08:2008
बुध	19:09:2008

मंगल अन्तर
29:10:2008 —— 21:11:2009

प्रत्यंतर	से
मंगल	29:10:2008
शनि	27:12:2008
चन्द्रमा	03:03:2009
सूर्य	15:05:2009
गुरू	08:06:2009
केतु	09:07:2009
बुध	16:08:2009
राहु	30:09:2009

शनि अन्तर
21:11:2009 —— 29:01:2011

प्रत्यंतर	से
शनि	21:11:2009
चन्द्रमा	03:02:2010
सूर्य	25:04:2010
गुरू	22:05:2010
केतु	26:06:2010
बुध	07:08:2010
राहु	27:09:2010
मंगल	24:11:2010

चन्द्रमा अन्तर
29:01:2011 —— 22:05:2012

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	29:01:2011
सूर्य	28:04:2011
गुरू	28:05:2011
केतु	06:07:2011
बुध	22:08:2011
राहु	16:10:2011
मंगल	20:12:2011
शनि	02:03:2012

द्वादशोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

गुरू दशा (22:05:2012 —— 23:05:2021)

आपकी कुण्डली में लग्न, शुक्र द्वारा शासित नवांश राशि (वृष अथवा तुला) में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्वादशोत्तरी दशा पद्धति (112 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

गुरू अन्तर 22:05:2012 —— 11:02:2013	
प्रत्यंतर	से
गुरू	22:05:2012
केतु	12:06:2012
बुध	08:07:2012
राहु	08:08:2012
मंगल	12:09:2012
शनि	23:10:2012
चन्द्रमा	07:12:2012
सूर्य	25:01:2013

केतु अन्तर 11:02:2013 —— 30:12:2013	
प्रत्यंतर	से
केतु	11:02:2013
बुध	14:03:2013
राहु	21:04:2013
मंगल	03:06:2013
शनि	22:07:2013
चन्द्रमा	15:09:2013
सूर्य	14:11:2013
गुरू	04:12:2013

बुध अन्तर 30:12:2013 —— 16:01:2015	
प्रत्यंतर	से
बुध	30:12:2013
राहु	12:02:2014
मंगल	05:04:2014
शनि	01:06:2014
चन्द्रमा	05:08:2014
सूर्य	16:10:2014
गुरू	08:11:2014
केतु	09:12:2014

राहु अन्तर 16:01:2015 —— 31:03:2016	
प्रत्यंतर	से
राहु	16:01:2015
मंगल	15:03:2015
शनि	21:05:2015
चन्द्रमा	04:08:2015
सूर्य	25:10:2015
गुरू	22:11:2015
केतु	27:12:2015
बुध	09:02:2016

मंगल अन्तर 31:03:2016 —— 12:08:2017	
प्रत्यंतर	से
मंगल	31:03:2016
शनि	15:06:2016
चन्द्रमा	07:09:2016
सूर्य	10:12:2016
गुरू	10:01:2017
केतु	19:02:2017
बुध	09:04:2017
राहु	06:06:2017

शनि अन्तर 12:08:2017 —— 20:02:2019	
प्रत्यंतर	से
शनि	12:08:2017
चन्द्रमा	15:11:2017
सूर्य	27:02:2018
गुरू	03:04:2018
केतु	18:05:2018
बुध	11:07:2018
राहु	14:09:2018
मंगल	28:11:2018

चन्द्रमा अन्तर 20:02:2019 —— 29:10:2020	
प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	20:02:2019
सूर्य	16:06:2019
गुरू	24:07:2019
केतु	12:09:2019
बुध	11:11:2019
राहु	22:01:2020
मंगल	14:04:2020
शनि	16:07:2020

सूर्य अन्तर 29:10:2020 —— 23:05:2021	
प्रत्यंतर	से
सूर्य	29:10:2020
गुरू	11:11:2020
केतु	28:11:2020
बुध	18:12:2020
राहु	11:01:2021
मंगल	07:02:2021
शनि	10:03:2021
चन्द्रमा	14:04:2021

द्वादशोत्तरी दशा
(प्रचलित विभाजन विधि)

केतु दशा (23:05:2021 -- 22:05:2032)

आपकी कुण्डली में लग्न, शुक्र द्वारा शासित नवांश राशि (वृष अथवा तुला) में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्वादशोत्तरी दशा पद्धति (112 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

केतु अन्तर
23:05:2021 -- 21:06:2022

प्रत्यंतर	से
केतु	23:05:2021
बुध	30:06:2021
राहु	15:08:2021
मंगल	07:10:2021
शनि	06:12:2021
चन्द्रमा	11:02:2022
सूर्य	26:04:2022
गुरू	20:05:2022

बुध अन्तर
21:06:2022 -- 30:09:2023

प्रत्यंतर	से
बुध	21:06:2022
राहु	14:08:2022
मंगल	15:10:2022
शनि	25:12:2022
चन्द्रमा	14:03:2023
सूर्य	10:06:2023
गुरू	09:07:2023
केतु	15:08:2023

राहु अन्तर
30:09:2023 -- 22:03:2025

प्रत्यंतर	से
राहु	30:09:2023
मंगल	11:12:2023
शनि	02:03:2024
चन्द्रमा	01:06:2024
सूर्य	10:09:2024
गुरू	14:10:2024
केतु	26:11:2024
बुध	18:01:2025

मंगल अन्तर
22:03:2025 -- 21:11:2026

प्रत्यंतर	से
मंगल	22:03:2025
शनि	22:06:2025
चन्द्रमा	04:10:2025
सूर्य	26:01:2026
गुरू	05:03:2026
केतु	23:04:2026
बुध	22:06:2026
राहु	31:08:2026

शनि अन्तर
21:11:2026 -- 03:10:2028

प्रत्यंतर	से
शनि	21:11:2026
चन्द्रमा	17:03:2027
सूर्य	22:07:2027
गुरू	03:09:2027
केतु	28:10:2027
बुध	03:01:2028
राहु	22:03:2028
मंगल	21:06:2028

चन्द्रमा अन्तर
03:10:2028 -- 26:10:2030

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	03:10:2028
सूर्य	21:02:2029
गुरू	09:04:2029
केतु	09:06:2029
बुध	22:08:2029
राहु	17:11:2029
मंगल	26:02:2030
शनि	20:06:2030

सूर्य अन्तर
26:10:2030 -- 04:07:2031

प्रत्यंतर	से
सूर्य	26:10:2030
गुरू	11:11:2030
केतु	01:12:2030
बुध	26:12:2030
राहु	24:01:2031
मंगल	26:02:2031
शनि	05:04:2031
चन्द्रमा	18:05:2031

गुरू अन्तर
04:07:2031 -- 22:05:2032

प्रत्यंतर	से
गुरू	04:07:2031
केतु	30:07:2031
बुध	31:08:2031
राहु	07:10:2031
मंगल	19:11:2031
शनि	07:01:2032
चन्द्रमा	02:03:2032
सूर्य	02:05:2032

द्वादशोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

बुध दशा (22:05:2032 —— 23:05:2045)

आपकी कुण्डली में लग्न, शुक्र द्वारा शासित नवांश राशि (वृष अथवा तुला) में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्वादशोत्तरी दशा पद्धति (112 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

बुध अन्तर
22:05:2032 —— 24:11:2033

प्रत्यंतर	से
बुध	22:05:2032
राहु	25:07:2032
मंगल	07:10:2032
शनि	30:12:2032
चन्द्रमा	02:04:2033
सूर्य	15:07:2033
गुरू	18:08:2033
केतु	01:10:2033

राहु अन्तर
24:11:2033 —— 22:08:2035

प्रत्यंतर	से
राहु	24:11:2033
मंगल	17:02:2034
शनि	25:05:2034
चन्द्रमा	10:09:2034
सूर्य	07:01:2035
गुरू	16:02:2035
केतु	08:04:2035
बुध	09:06:2035

मंगल अन्तर
22:08:2035 —— 12:08:2037

प्रत्यंतर	से
मंगल	22:08:2035
शनि	09:12:2035
चन्द्रमा	10:04:2036
सूर्य	23:08:2036
गुरू	07:10:2036
केतु	04:12:2036
बुध	13:02:2037
राहु	08:05:2037

शनि अन्तर
12:08:2037 —— 26:10:2039

प्रत्यंतर	से
शनि	12:08:2037
चन्द्रमा	27:12:2037
सूर्य	27:05:2038
गुरू	16:07:2038
केतु	19:09:2038
बुध	07:12:2038
राहु	10:03:2039
मंगल	26:06:2039

चन्द्रमा अन्तर
26:10:2039 —— 04:04:2042

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	26:10:2039
सूर्य	10:04:2040
गुरू	05:06:2040
केतु	16:08:2040
बुध	11:11:2040
राहु	23:02:2041
मंगल	22:06:2041
शनि	04:11:2041

सूर्य अन्तर
04:04:2042 —— 25:01:2043

प्रत्यंतर	से
सूर्य	04:04:2042
गुरू	22:04:2042
केतु	16:05:2042
बुध	14:06:2042
राहु	19:07:2042
मंगल	27:08:2042
शनि	11:10:2042
चन्द्रमा	01:12:2042

गुरू अन्तर
25:01:2043 —— 11:02:2044

प्रत्यंतर	से
गुरू	25:01:2043
केतु	25:02:2043
बुध	03:04:2043
राहु	18:05:2043
मंगल	08:07:2043
शनि	04:09:2043
चन्द्रमा	07:11:2043
सूर्य	18:01:2044

केतु अन्तर
11:02:2044 —— 23:05:2045

प्रत्यंतर	से
केतु	11:02:2044
बुध	28:03:2044
राहु	21:05:2044
मंगल	22:07:2044
शनि	01:10:2044
चन्द्रमा	20:12:2044
सूर्य	17:03:2045
गुरू	15:04:2045

For Mindsutra Software Technologies

द्वादशोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

राहु दशा (23:05:2045 —— 22:05:2060)

आपकी कुण्डली में लग्न, शुक्र द्वारा शासित नवांश राशि (वृष अथवा तुला) में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्वादशोत्तरी दशा पद्धति (112 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

राहु अन्तर
23:05:2045 —— 26:05:2047

प्रत्यंतर	से
राहु	23:05:2045
मंगल	29:08:2045
शनि	18:12:2045
चन्द्रमा	22:04:2046
सूर्य	06:09:2046
गुरू	22:10:2046
केतु	20:12:2046
बुध	02:03:2047

मंगल अन्तर
26:05:2047 —— 04:09:2049

प्रत्यंतर	से
मंगल	26:05:2047
शनि	29:09:2047
चन्द्रमा	17:02:2048
सूर्य	22:07:2048
गुरू	12:09:2048
केतु	18:11:2048
बुध	08:02:2049
राहु	16:05:2049

शनि अन्तर
04:09:2049 —— 21:03:2052

प्रत्यंतर	से
शनि	04:09:2049
चन्द्रमा	08:02:2050
सूर्य	02:08:2050
गुरू	29:09:2050
केतु	12:12:2050
बुध	14:03:2051
राहु	29:06:2051
मंगल	01:11:2051

चन्द्रमा अन्तर
21:03:2052 —— 12:01:2055

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	21:03:2052
सूर्य	30:09:2052
गुरू	03:12:2052
केतु	24:02:2053
बुध	05:06:2053
राहु	02:10:2053
मंगल	16:02:2054
शनि	22:07:2054

सूर्य अन्तर
12:01:2055 —— 20:12:2055

प्रत्यंतर	से
सूर्य	12:01:2055
गुरू	03:02:2055
केतु	02:03:2055
बुध	05:04:2055
राहु	14:05:2055
मंगल	29:06:2055
शनि	20:08:2055
चन्द्रमा	17:10:2055

गुरू अन्तर
20:12:2055 —— 05:03:2057

प्रत्यंतर	से
गुरू	20:12:2055
केतु	25:01:2056
बुध	08:03:2056
राहु	28:04:2056
मंगल	26:06:2056
शनि	01:09:2056
चन्द्रमा	15:11:2056
सूर्य	06:02:2057

केतु अन्तर
05:03:2057 —— 25:08:2058

प्रत्यंतर	से
केतु	05:03:2057
बुध	27:04:2057
राहु	29:06:2057
मंगल	09:09:2057
शनि	29:11:2057
चन्द्रमा	28:02:2058
सूर्य	09:06:2058
गुरू	13:07:2058

बुध अन्तर
25:08:2058 —— 22:05:2060

प्रत्यंतर	से
बुध	25:08:2058
राहु	07:11:2058
मंगल	31:01:2059
शनि	07:05:2059
चन्द्रमा	23:08:2059
सूर्य	20:12:2059
गुरू	29:01:2060
केतु	20:03:2060

द्वादशोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

मंगल दशा (22:05:2060 —— 23:05:2077)

आपकी कुण्डली में लग्न, शुक्र द्वारा शासित नवांश राशि (वृष अथवा तुला) में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्वादशोत्तरी दशा पद्धति (112 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

मंगल अन्तर
22:05:2060 —— 20:12:2062

प्रत्यंतर	से
मंगल	22:05:2060
शनि	12:10:2060
चन्द्रमा	21:03:2061
सूर्य	14:09:2061
गुरू	12:11:2061
केतु	26:01:2062
बुध	29:04:2062
राहु	16:08:2062

शनि अन्तर
20:12:2062 —— 08:11:2065

प्रत्यंतर	से
शनि	20:12:2062
चन्द्रमा	17:06:2063
सूर्य	31:12:2063
गुरू	06:03:2064
केतु	30:05:2064
बुध	11:09:2064
राहु	11:01:2065
मंगल	01:06:2065

चन्द्रमा अन्तर
08:11:2065 —— 16:01:2069

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	08:11:2065
सूर्य	14:06:2066
गुरू	26:08:2066
केतु	27:11:2066
बुध	22:03:2067
राहु	04:08:2067
मंगल	07:01:2068
शनि	02:07:2068

सूर्य अन्तर
16:01:2069 —— 07:02:2070

प्रत्यंतर	से
सूर्य	16:01:2069
गुरू	09:02:2069
केतु	12:03:2069
बुध	19:04:2069
राहु	03:06:2069
मंगल	25:07:2069
शनि	22:09:2069
चन्द्रमा	27:11:2069

गुरू अन्तर
07:02:2070 —— 21:06:2071

प्रत्यंतर	से
गुरू	07:02:2070
केतु	19:03:2070
बुध	07:05:2070
राहु	04:07:2070
मंगल	09:09:2070
शनि	24:11:2070
चन्द्रमा	16:02:2071
सूर्य	21:05:2071

केतु अन्तर
21:06:2071 —— 20:02:2073

प्रत्यंतर	से
केतु	21:06:2071
बुध	20:08:2071
राहु	30:10:2071
मंगल	19:01:2072
शनि	21:04:2072
चन्द्रमा	03:08:2072
सूर्य	25:11:2072
गुरू	02:01:2073

बुध अन्तर
20:02:2073 —— 11:02:2075

प्रत्यंतर	से
बुध	20:02:2073
राहु	15:05:2073
मंगल	19:08:2073
शनि	07:12:2073
चन्द्रमा	08:04:2074
सूर्य	21:08:2074
गुरू	05:10:2074
केतु	02:12:2074

राहु अन्तर
11:02:2075 —— 23:05:2077

प्रत्यंतर	से
राहु	11:02:2075
मंगल	02:06:2075
शनि	06:10:2075
चन्द्रमा	24:02:2076
सूर्य	29:07:2076
गुरू	19:09:2076
केतु	25:11:2076
बुध	15:02:2077

षट्त्रिंश दशा

आपकी कुण्डली में षट्त्रिंश दशा लागू नहीं है।

क्र.स.	ग्रह (नक्षत्र)	दशा अवधि	से——तक	पूर्णता (सिद्धी बिन्दु)
1	गुरू (हस्ता)	1 y.7 m.23 d.	18:12:1973 To 11:08:1975	093:57:36
2	मंगल (चित्रा)	4 y.0 m.0 d.	11:08:1975 To 11:08:1979	009:24:36
3	बुध (स्वाति)	5 y.0 m.0 d.	11:08:1979 To 10:08:1984	115:01:59
4	शनि (विशाखा)	6 y.0 m.0 d.	10:08:1984 To 11:08:1990	356:09:13
5	शुक्र (अनुराधा)	7 y.0 m.0 d.	11:08:1990 To 11:08:1997	351:12:50
6	राहु (ज्येष्ठा)	8 y.0 m.0 d.	11:08:1997 To 11:08:2005	115:01:59
7	चन्द्रमा (मूला)	1 y.0 m.0 d.	11:08:2005 To 11:08:2006	231:11:32
8	सूर्य (पूर्वाषाढ़)	2 y.0 m.0 d.	11:08:2006 To 10:08:2008	165:16:05
9	गुरू (उत्तराषाढ़)	3 y.0 m.0 d.	10:08:2008 To 11:08:2011	170:12:28
10	चन्द्रमा (श्रवण)	1 y.0 m.0 d.	11:08:2011 To 10:08:2012	332:01:54
11	सूर्य (धनिष्ठा)	2 y.0 m.0 d.	10:08:2012 To 11:08:2014	246:58:07
12	गुरू (शतभिषा)	3 y.0 m.0 d.	11:08:2014 To 11:08:2017	173:07:14
13	मंगल (पूर्वाभाद्र)	4 y.0 m.0 d.	11:08:2017 To 11:08:2021	292:38:57
14	बुध (उत्तरभाद्र)	5 y.0 m.0 d.	11:08:2021 To 11:08:2026	298:03:58
15	शनि (रेवति)	6 y.0 m.0 d.	11:08:2026 To 10:08:2032	298:03:58
16	शुक्र (अश्विनी)	7 y.0 m.0 d.	10:08:2032 To 11:08:2039	348:10:51
17	राहु (भरणी)	8 y.0 m.0 d.	11:08:2039 To 11:08:2047	168:10:51
18	चन्द्रमा (कृतिका)	1 y.0 m.0 d.	11:08:2047 To 10:08:2048	048:16:46
19	सूर्य (रोहिणी)	2 y.0 m.0 d.	10:08:2048 To 11:08:2050	048:16:46
20	गुरू (मृगशिरा)	3 y.0 m.0 d.	11:08:2050 To 11:08:2053	292:38:57
21	मंगल (अरिद्रा)	4 y.0 m.0 d.	11:08:2053 To 11:08:2057	249:52:53
22	बुध (पुनर्वसु)	5 y.0 m.0 d.	11:08:2057 To 11:08:2062	157:48:03
23	शनि (पुष्य)	6 y.0 m.0 d.	11:08:2062 To 10:08:2068	136:25:07
24	शुक्र (अश्लेषा)	7 y.0 m.0 d.	10:08:2068 To 11:08:2075	152:51:40
25	राहु (मघा)	8 y.0 m.0 d.	11:08:2075 To 11:08:2083	310:21:10
26	चन्द्रमा (पुर्वफाल्गुनी)	1 y.0 m.0 d.	11:08:2083 To 10:08:2084	089:01:14
27	सूर्य (उत्तरफाल्गुनी)	2 y.0 m.0 d.	10:08:2084 To 11:08:2086	124:31:38

षष्टिहायनी दशा

क्र.स.	ग्रह (नक्षत्र)	दशा अवधि	से——तक	पूर्णता (सिद्धी बिन्दु)
1	चन्द्रमा (हस्ता)	0 y.9 m.26 d.	18:12:1973 To 14:10:1974	332:01:54
2	चन्द्रमा (चित्रा)	1 y.6 m.0 d.	14:10:1974 To 14:04:1976	170:43:15
3	बुध (स्वाति)	2 y.0 m.0 d.	14:04:1976 To 15:04:1978	115:01:59
4	बुध (विशाखा)	2 y.0 m.0 d.	15:04:1978 To 14:04:1980	157:48:03
5	बुध (अनुराधा)	2 y.0 m.0 d.	14:04:1980 To 15:04:1982	298:03:58
6	शुक्र (ज्येष्ठा)	1 y.6 m.0 d.	15:04:1982 To 14:10:1983	152:51:40
7	शुक्र (मूला)	1 y.6 m.0 d.	14:10:1983 To 15:04:1985	348:10:51
8	शुक्र (पूर्वाषाढ़)	1 y.6 m.0 d.	15:04:1985 To 14:10:1986	206:00:33
9	शुक्र (उत्तराषाढ़)	1 y.6 m.0 d.	14:10:1986 To 14:04:1988	165:16:05
10	शनि (अभिजीत)	2 y.0 m.0 d.	14:04:1988 To 15:04:1990	234:13:31
11	शनि (श्रवण)	2 y.0 m.0 d.	15:04:1990 To 14:04:1992	234:13:31
12	शनि (धनिष्ठा)	2 y.0 m.0 d.	14:04:1992 To 15:04:1994	072:54:51
13	राहु (शतभिषा)	1 y.6 m.0 d.	15:04:1994 To 14:10:1995	130:21:10
14	राहु (पूर्वाभाद्र)	1 y.6 m.0 d.	14:10:1995 To 15:04:1997	173:07:14
15	राहु (उत्तरभाद्र)	1 y.6 m.0 d.	15:04:1997 To 14:10:1998	313:23:08
16	राहु (रेवाति)	1 y.6 m.0 d.	14:10:1998 To 14:04:2000	115:01:59
17	गुरू (अश्विनी)	3 y.4 m.0 d.	14:04:2000 To 14:08:2003	353:07:14
18	गुरू (भरणी)	3 y.4 m.0 d.	14:08:2003 To 14:12:2006	210:56:55
19	गुरू (कृतिका)	3 y.4 m.0 d.	14:12:2006 To 15:04:2010	170:12:28
20	सूर्य (रोहिणी)	2 y.6 m.0 d.	15:04:2010 To 14:10:2012	048:16:46
21	सूर्य (मृगशिरा)	2 y.6 m.0 d.	14:10:2012 To 15:04:2015	246:58:07
22	सूर्य (अरिद्रा)	2 y.6 m.0 d.	15:04:2015 To 14:10:2017	127:26:24
23	सूर्य (पुनर्वसु)	2 y.6 m.0 d.	14:10:2017 To 14:04:2020	170:12:28
24	मंगल (पुष्य)	3 y.4 m.0 d.	14:04:2020 To 14:08:2023	072:54:51
25	मंगल (अश्लेषा)	3 y.4 m.0 d.	14:08:2023 To 14:12:2026	234:33:42
26	मंगल (मघा)	3 y.4 m.0 d.	14:12:2026 To 15:04:2030	069:52:53
27	चन्द्रमा (पुर्वफाल्गुनी)	1 y.6 m.0 d.	15:04:2030 To 14:10:2031	089:01:14
28	चन्द्रमा (उत्तरफाल्गुनी)	1 y.6 m.0 d.	14:10:2031 To 15:04:2033	048:16:46

द्विसप्ततिसमा दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय द्विसप्ततिसमा भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : शुक्र : 4 व. 11 मा. 8 दि.

आपकी कुण्डली में लग्नाधिपति सातवें भाव में और सप्तमेश लग्न में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्विसप्ततिसमा दशा पद्धति (72 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

क0 स0		ग्रह दशा	अवधि	से ---------- तक
1	♀	शुक्र दशा	4 y.11 m.8 d.	18:12:1973 -- 25:11:1978
2	♄	शनि दशा	9 y.0 m.0 d.	25:11:1978 -- 25:11:1987
3	☊	राहु दशा	9 y.0 m.0 d.	25:11:1987 -- 25:11:1996
4	☉	सूर्य दशा	9 y.0 m.0 d.	25:11:1996 -- 25:11:2005
5	☽	चन्द्रमा दशा	9 y.0 m.0 d.	25:11:2005 -- 25:11:2014
6	♂	मंगल दशा	9 y.0 m.0 d.	25:11:2014 -- 25:11:2023
7	☿	बुध दशा	9 y.0 m.0 d.	25:11:2023 -- 25:11:2032
8	♃	गुरू दशा	9 y.0 m.0 d.	25:11:2032 -- 25:11:2041

द्विसप्ततिसमा दशा की अन्तर्दशाए

शुक्र दशा
18:12:1973 -- 25:11:1978

अन्तर्दशा	से
शुक्र	
शनि	
राहु	
सूर्य	11:04:1973
चन्द्रमा	27:05:1974
मंगल	12:07:1975
बुध	26:08:1976
गुरू	11:10:1977

शनि दशा
25:11:1978 -- 25:11:1987

अन्तर्दशा	से
शनि	25:11:1978
राहु	10:01:1980
सूर्य	25:02:1981
चन्द्रमा	11:04:1982
मंगल	27:05:1983
बुध	11:07:1984
गुरू	26:08:1985
शुक्र	11:10:1986

राहु दशा
25:11:1987 -- 25:11:1996

अन्तर्दशा	से
राहु	25:11:1987
सूर्य	10:01:1989
चन्द्रमा	25:02:1990
मंगल	11:04:1991
बुध	26:05:1992
गुरू	12:07:1993
शुक्र	26:08:1994
शनि	11:10:1995

सूर्य दशा
25:11:1996 -- 25:11:2005

अन्तर्दशा	से
सूर्य	25:11:1996
चन्द्रमा	10:01:1998
मंगल	25:02:1999
बुध	11:04:2000
गुरू	27:05:2001
शुक्र	12:07:2002
शनि	26:08:2003
राहु	11:10:2004

चन्द्रमा दशा
25:11:2005 -- 25:11:2014

अन्तर्दशा	से
चन्द्रमा	25:11:2005
मंगल	10:01:2007
बुध	25:02:2008
गुरू	11:04:2009
शुक्र	27:05:2010
शनि	12:07:2011
राहु	26:08:2012
सूर्य	11:10:2013

मंगल दशा
25:11:2014 -- 25:11:2023

अन्तर्दशा	से
मंगल	25:11:2014
बुध	10:01:2016
गुरू	25:02:2017
शुक्र	11:04:2018
शनि	27:05:2019
राहु	11:07:2020
सूर्य	26:08:2021
चन्द्रमा	11:10:2022

बुध दशा
25:11:2023 -- 25:11:2032

अन्तर्दशा	से
बुध	25:11:2023
गुरू	10:01:2025
शुक्र	25:02:2026
शनि	11:04:2027
राहु	26:05:2028
सूर्य	12:07:2029
चन्द्रमा	26:08:2030
मंगल	11:10:2031

गुरू दशा
25:11:2032 -- 25:11:2041

अन्तर्दशा	से
गुरू	25:11:2032
शुक्र	10:01:2034
शनि	25:02:2035
राहु	11:04:2036
सूर्य	27:05:2037
चन्द्रमा	12:07:2038
मंगल	26:08:2039
बुध	11:10:2040

द्विसप्ततिसमा दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

शुक्र दशा (18:12:1973 –– 25:11:1978)

आपकी कुण्डली में लग्नाधिपति सातवें भाव में और सप्तमेश लग्न में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्विसप्ततिसमा दशा पद्धति (72 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

प्रत्यंतर	से

प्रत्यंतर	से

प्रत्यंतर	से

सूर्य अन्तर
18:12:1973 –– 27:05:1974

प्रत्यंतर	से
गुरू	18:12:1973
शुक्र	24:12:1973
शनि	13:02:1974
राहु	06:04:1974

चन्द्रमा अन्तर
27:05:1974 –– 12:07:1975

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	27:05:1974
मंगल	17:07:1974
बुध	07:09:1974
गुरू	28:10:1974
शुक्र	18:12:1974
शनि	08:02:1975
राहु	31:03:1975
सूर्य	21:05:1975

मंगल अन्तर
12:07:1975 –– 26:08:1976

प्रत्यंतर	से
मंगल	12:07:1975
बुध	01:09:1975
गुरू	22:10:1975
शुक्र	13:12:1975
शनि	02:02:1976
राहु	24:03:1976
सूर्य	15:05:1976
चन्द्रमा	05:07:1976

बुध अन्तर
26:08:1976 –– 11:10:1977

प्रत्यंतर	से
बुध	26:08:1976
गुरू	16:10:1976
शुक्र	07:12:1976
शनि	27:01:1977
राहु	20:03:1977
सूर्य	10:05:1977
चन्द्रमा	30:06:1977
मंगल	21:08:1977

गुरू अन्तर
11:10:1977 –– 25:11:1978

प्रत्यंतर	से
गुरू	11:10:1977
शुक्र	01:12:1977
शनि	21:01:1978
राहु	14:03:1978
सूर्य	04:05:1978
चन्द्रमा	24:06:1978
मंगल	15:08:1978
बुध	05:10:1978

द्विसप्ततिसमा दशा
(प्रचलित विभाजन विधि)

शनि दशा (25:11:1978 —— 25:11:1987)

आपकी कुण्डली में लग्नाधिपति सातवें भाव में और सप्तमेश लग्न में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्विसप्ततिसमा दशा पद्धति (72 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

शनि अन्तर
25:11:1978 —— 10:01:1980

प्रत्यंतर	से
शनि	25:11:1978
राहु	16:01:1979
सूर्य	08:03:1979
चन्द्रमा	28:04:1979
मंगल	19:06:1979
बुध	09:08:1979
गुरू	29:09:1979
शुक्र	20:11:1979

राहु अन्तर
10:01:1980 —— 25:02:1981

प्रत्यंतर	से
राहु	10:01:1980
सूर्य	02:03:1980
चन्द्रमा	22:04:1980
मंगल	13:06:1980
बुध	03:08:1980
गुरू	23:09:1980
शुक्र	14:11:1980
शनि	04:01:1981

सूर्य अन्तर
25:02:1981 —— 11:04:1982

प्रत्यंतर	से
सूर्य	25:02:1981
चन्द्रमा	17:04:1981
मंगल	07:06:1981
बुध	29:07:1981
गुरू	18:09:1981
शुक्र	08:11:1981
शनि	30:12:1981
राहु	19:02:1982

चन्द्रमा अन्तर
11:04:1982 —— 27:05:1983

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	11:04:1982
मंगल	02:06:1982
बुध	23:07:1982
गुरू	12:09:1982
शुक्र	03:11:1982
शनि	24:12:1982
राहु	13:02:1983
सूर्य	06:04:1983

मंगल अन्तर
27:05:1983 —— 11:07:1984

प्रत्यंतर	से
मंगल	27:05:1983
बुध	17:07:1983
गुरू	07:09:1983
शुक्र	28:10:1983
शनि	18:12:1983
राहु	08:02:1984
सूर्य	30:03:1984
चन्द्रमा	21:05:1984

बुध अन्तर
11:07:1984 —— 26:08:1985

प्रत्यंतर	से
बुध	11:07:1984
गुरू	01:09:1984
शुक्र	22:10:1984
शनि	13:12:1984
राहु	02:02:1985
सूर्य	25:03:1985
चन्द्रमा	16:05:1985
मंगल	06:07:1985

गुरू अन्तर
26:08:1985 —— 11:10:1986

प्रत्यंतर	से
गुरू	26:08:1985
शुक्र	17:10:1985
शनि	07:12:1985
राहु	27:01:1986
सूर्य	20:03:1986
चन्द्रमा	10:05:1986
मंगल	30:06:1986
बुध	21:08:1986

शुक्र अन्तर
11:10:1986 —— 25:11:1987

प्रत्यंतर	से
शुक्र	11:10:1986
शनि	01:12:1986
राहु	21:01:1987
सूर्य	14:03:1987
चन्द्रमा	04:05:1987
मंगल	24:06:1987
बुध	15:08:1987
गुरू	05:10:1987

द्विसप्ततिसमा दशा
(प्रचलित विभाजन विधि)

राहु दशा (25:11:1987 —— 25:11:1996)

आपकी कुण्डली में लग्नाधिपति सातवें भाव में और सप्तमेश लग्न में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्विसप्ततिसमा दशा पद्धति (72 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

राहु अन्तर
25:11:1987 —— 10:01:1989

प्रत्यंतर	से
राहु	25:11:1987
सूर्य	16:01:1988
चन्द्रमा	07:03:1988
मंगल	28:04:1988
बुध	18:06:1988
गुरू	09:08:1988
शुक्र	29:09:1988
शनि	20:11:1988

सूर्य अन्तर
10:01:1989 —— 25:02:1990

प्रत्यंतर	से
सूर्य	10:01:1989
चन्द्रमा	02:03:1989
मंगल	23:04:1989
बुध	13:06:1989
गुरू	03:08:1989
शुक्र	24:09:1989
शनि	14:11:1989
राहु	04:01:1990

चन्द्रमा अन्तर
25:02:1990 —— 11:04:1991

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	25:02:1990
मंगल	17:04:1990
बुध	07:06:1990
गुरू	29:07:1990
शुक्र	18:09:1990
शनि	08:11:1990
राहु	30:12:1990
सूर्य	19:02:1991

मंगल अन्तर
11:04:1991 —— 26:05:1992

प्रत्यंतर	से
मंगल	11:04:1991
बुध	02:06:1991
गुरू	23:07:1991
शुक्र	12:09:1991
शनि	03:11:1991
राहु	24:12:1991
सूर्य	13:02:1992
चन्द्रमा	05:04:1992

बुध अन्तर
26:05:1992 —— 12:07:1993

प्रत्यंतर	से
बुध	26:05:1992
गुरू	17:07:1992
शुक्र	06:09:1992
शनि	28:10:1992
राहु	18:12:1992
सूर्य	08:02:1993
चन्द्रमा	31:03:1993
मंगल	21:05:1993

गुरू अन्तर
12:07:1993 —— 26:08:1994

प्रत्यंतर	से
गुरू	12:07:1993
शुक्र	01:09:1993
शनि	22:10:1993
राहु	13:12:1993
सूर्य	02:02:1994
चन्द्रमा	25:03:1994
मंगल	16:05:1994
बुध	06:07:1994

शुक्र अन्तर
26:08:1994 —— 11:10:1995

प्रत्यंतर	से
शुक्र	26:08:1994
शनि	17:10:1994
राहु	07:12:1994
सूर्य	27:01:1995
चन्द्रमा	20:03:1995
मंगल	10:05:1995
बुध	30:06:1995
गुरू	21:08:1995

शनि अन्तर
11:10:1995 —— 25:11:1996

प्रत्यंतर	से
शनि	11:10:1995
राहु	01:12:1995
सूर्य	22:01:1996
चन्द्रमा	13:03:1996
मंगल	03:05:1996
बुध	24:06:1996
गुरू	14:08:1996
शुक्र	05:10:1996

द्विसप्ततिसमा दशा
(प्रचलित विभाजन विधि)

सूर्य दशा (25:11:1996 —— 25:11:2005)

आपकी कुण्डली में लग्नाधिपति सातवें भाव में और सप्तमेश लग्न में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्विसप्ततिसमा दशा पद्धति (72 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

सूर्य अन्तर
25:11:1996 —— 10:01:1998

प्रत्यंतर	से
सूर्य	25:11:1996
चन्द्रमा	16:01:1997
मंगल	08:03:1997
बुध	28:04:1997
गुरू	19:06:1997
शुक्र	09:08:1997
शनि	29:09:1997
राहु	20:11:1997

चन्द्रमा अन्तर
10:01:1998 —— 25:02:1999

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	10:01:1998
मंगल	02:03:1998
बुध	23:04:1998
गुरू	13:06:1998
शुक्र	03:08:1998
शनि	24:09:1998
राहु	14:11:1998
सूर्य	04:01:1999

मंगल अन्तर
25:02:1999 —— 11:04:2000

प्रत्यंतर	से
मंगल	25:02:1999
बुध	17:04:1999
गुरू	07:06:1999
शुक्र	29:07:1999
शनि	18:09:1999
राहु	08:11:1999
सूर्य	30:12:1999
चन्द्रमा	19:02:2000

बुध अन्तर
11:04:2000 —— 27:05:2001

प्रत्यंतर	से
बुध	11:04:2000
गुरू	01:06:2000
शुक्र	23:07:2000
शनि	12:09:2000
राहु	02:11:2000
सूर्य	24:12:2000
चन्द्रमा	13:02:2001
मंगल	06:04:2001

गुरू अन्तर
27:05:2001 —— 12:07:2002

प्रत्यंतर	से
गुरू	27:05:2001
शुक्र	17:07:2001
शनि	07:09:2001
राहु	28:10:2001
सूर्य	18:12:2001
चन्द्रमा	08:02:2002
मंगल	31:03:2002
बुध	21:05:2002

शुक्र अन्तर
12:07:2002 —— 26:08:2003

प्रत्यंतर	से
शुक्र	12:07:2002
शनि	01:09:2002
राहु	22:10:2002
सूर्य	13:12:2002
चन्द्रमा	02:02:2003
मंगल	25:03:2003
बुध	16:05:2003
गुरू	06:07:2003

शनि अन्तर
26:08:2003 —— 11:10:2004

प्रत्यंतर	से
शनि	26:08:2003
राहु	17:10:2003
सूर्य	07:12:2003
चन्द्रमा	27:01:2004
मंगल	19:03:2004
बुध	09:05:2004
गुरू	30:06:2004
शुक्र	20:08:2004

राहु अन्तर
11:10:2004 —— 25:11:2005

प्रत्यंतर	से
राहु	11:10:2004
सूर्य	01:12:2004
चन्द्रमा	21:01:2005
मंगल	14:03:2005
बुध	04:05:2005
गुरू	24:06:2005
शुक्र	15:08:2005
शनि	05:10:2005

द्विसप्ततिसमा दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

चन्द्रमा दशा (25:11:2005 —— 25:11:2014)

आपकी कुण्डली में लग्नाधिपति सातवें भाव में और सप्तमेश लग्न में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्विसप्ततिसमा दशा पद्धति (72 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

चन्द्रमा अन्तर
25:11:2005 —— 10:01:2007

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	25:11:2005
मंगल	16:01:2006
बुध	08:03:2006
गुरू	28:04:2006
शुक्र	19:06:2006
शनि	09:08:2006
राहु	29:09:2006
सूर्य	20:11:2006

मंगल अन्तर
10:01:2007 —— 25:02:2008

प्रत्यंतर	से
मंगल	10:01:2007
बुध	02:03:2007
गुरू	23:04:2007
शुक्र	13:06:2007
शनि	03:08:2007
राहु	24:09:2007
सूर्य	14:11:2007
चन्द्रमा	04:01:2008

बुध अन्तर
25:02:2008 —— 11:04:2009

प्रत्यंतर	से
बुध	25:02:2008
गुरू	16:04:2008
शुक्र	07:06:2008
शनि	28:07:2008
राहु	18:09:2008
सूर्य	08:11:2008
चन्द्रमा	30:12:2008
मंगल	19:02:2009

गुरू अन्तर
11:04:2009 —— 27:05:2010

प्रत्यंतर	से
गुरू	11:04:2009
शुक्र	02:06:2009
शनि	23:07:2009
राहु	12:09:2009
सूर्य	03:11:2009
चन्द्रमा	24:12:2009
मंगल	13:02:2010
बुध	06:04:2010

शुक्र अन्तर
27:05:2010 —— 12:07:2011

प्रत्यंतर	से
शुक्र	27:05:2010
शनि	17:07:2010
राहु	07:09:2010
सूर्य	28:10:2010
चन्द्रमा	18:12:2010
मंगल	08:02:2011
बुध	31:03:2011
गुरू	21:05:2011

शनि अन्तर
12:07:2011 —— 26:08:2012

प्रत्यंतर	से
शनि	12:07:2011
राहु	01:09:2011
सूर्य	22:10:2011
चन्द्रमा	13:12:2011
मंगल	02:02:2012
बुध	24:03:2012
गुरू	15:05:2012
शुक्र	05:07:2012

राहु अन्तर
26:08:2012 —— 11:10:2013

प्रत्यंतर	से
राहु	26:08:2012
सूर्य	16:10:2012
चन्द्रमा	07:12:2012
मंगल	27:01:2013
बुध	20:03:2013
गुरू	10:05:2013
शुक्र	30:06:2013
शनि	21:08:2013

सूर्य अन्तर
11:10:2013 —— 25:11:2014

प्रत्यंतर	से
सूर्य	11:10:2013
चन्द्रमा	01:12:2013
मंगल	21:01:2014
बुध	14:03:2014
गुरू	04:05:2014
शुक्र	24:06:2014
शनि	15:08:2014
राहु	05:10:2014

द्विसप्ततिसमा दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

मंगल दशा (25:11:2014 —— 25:11:2023)

आपकी कुण्डली में लग्नाधिपति सातवें भाव में और सप्तमेश लग्न में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्विसप्ततिसमा दशा पद्धति (72 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

मंगल अन्तर
25:11:2014 —— 10:01:2016

प्रत्यंतर	से
मंगल	25:11:2014
बुध	16:01:2015
गुरू	08:03:2015
शुक्र	28:04:2015
शनि	19:06:2015
राहु	09:08:2015
सूर्य	29:09:2015
चन्द्रमा	20:11:2015

बुध अन्तर
10:01:2016 —— 25:02:2017

प्रत्यंतर	से
बुध	10:01:2016
गुरू	02:03:2016
शुक्र	22:04:2016
शनि	13:06:2016
राहु	03:08:2016
सूर्य	23:09:2016
चन्द्रमा	14:11:2016
मंगल	04:01:2017

गुरू अन्तर
25:02:2017 —— 11:04:2018

प्रत्यंतर	से
गुरू	25:02:2017
शुक्र	17:04:2017
शनि	07:06:2017
राहु	29:07:2017
सूर्य	18:09:2017
चन्द्रमा	08:11:2017
मंगल	30:12:2017
बुध	19:02:2018

शुक्र अन्तर
11:04:2018 —— 27:05:2019

प्रत्यंतर	से
शुक्र	11:04:2018
शनि	02:06:2018
राहु	23:07:2018
सूर्य	12:09:2018
चन्द्रमा	03:11:2018
मंगल	24:12:2018
बुध	13:02:2019
गुरू	06:04:2019

शनि अन्तर
27:05:2019 —— 11:07:2020

प्रत्यंतर	से
शनि	27:05:2019
राहु	17:07:2019
सूर्य	07:09:2019
चन्द्रमा	28:10:2019
मंगल	18:12:2019
बुध	08:02:2020
गुरू	30:03:2020
शुक्र	21:05:2020

राहु अन्तर
11:07:2020 —— 26:08:2021

प्रत्यंतर	से
राहु	11:07:2020
सूर्य	01:09:2020
चन्द्रमा	22:10:2020
मंगल	13:12:2020
बुध	02:02:2021
गुरू	25:03:2021
शुक्र	16:05:2021
शनि	06:07:2021

सूर्य अन्तर
26:08:2021 —— 11:10:2022

प्रत्यंतर	से
सूर्य	26:08:2021
चन्द्रमा	17:10:2021
मंगल	07:12:2021
बुध	27:01:2022
गुरू	20:03:2022
शुक्र	10:05:2022
शनि	30:06:2022
राहु	21:08:2022

चन्द्रमा अन्तर
11:10:2022 —— 25:11:2023

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	11:10:2022
मंगल	01:12:2022
बुध	21:01:2023
गुरू	14:03:2023
शुक्र	04:05:2023
शनि	24:06:2023
राहु	15:08:2023
सूर्य	05:10:2023

द्विसप्ततिसमा दशा
(प्रचलित विभाजन विधि)

बुध दशा (25:11:2023 —— 25:11:2032)

आपकी कुण्डली में लग्नाधिपति सातवें भाव में और सप्तमेश लग्न में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्विसप्ततिसमा दशा पद्धति (72 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

बुध अन्तर
25:11:2023 —— 10:01:2025

प्रत्यंतर	से
बुध	25:11:2023
गुरू	16:01:2024
शुक्र	07:03:2024
शनि	28:04:2024
राहु	18:06:2024
सूर्य	09:08:2024
चन्द्रमा	29:09:2024
मंगल	20:11:2024

गुरू अन्तर
10:01:2025 —— 25:02:2026

प्रत्यंतर	से
गुरू	10:01:2025
शुक्र	02:03:2025
शनि	23:04:2025
राहु	13:06:2025
सूर्य	03:08:2025
चन्द्रमा	24:09:2025
मंगल	14:11:2025
बुध	04:01:2026

शुक्र अन्तर
25:02:2026 —— 11:04:2027

प्रत्यंतर	से
शुक्र	25:02:2026
शनि	17:04:2026
राहु	07:06:2026
सूर्य	29:07:2026
चन्द्रमा	18:09:2026
मंगल	08:11:2026
बुध	30:12:2026
गुरू	19:02:2027

शनि अन्तर
11:04:2027 —— 26:05:2028

प्रत्यंतर	से
शनि	11:04:2027
राहु	02:06:2027
सूर्य	23:07:2027
चन्द्रमा	12:09:2027
मंगल	03:11:2027
बुध	24:12:2027
गुरू	13:02:2028
शुक्र	05:04:2028

राहु अन्तर
26:05:2028 —— 12:07:2029

प्रत्यंतर	से
राहु	26:05:2028
सूर्य	17:07:2028
चन्द्रमा	06:09:2028
मंगल	28:10:2028
बुध	18:12:2028
गुरू	08:02:2029
शुक्र	31:03:2029
शनि	21:05:2029

सूर्य अन्तर
12:07:2029 —— 26:08:2030

प्रत्यंतर	से
सूर्य	12:07:2029
चन्द्रमा	01:09:2029
मंगल	22:10:2029
बुध	13:12:2029
गुरू	02:02:2030
शुक्र	25:03:2030
शनि	16:05:2030
राहु	06:07:2030

चन्द्रमा अन्तर
26:08:2030 —— 11:10:2031

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	26:08:2030
मंगल	17:10:2030
बुध	07:12:2030
गुरू	27:01:2031
शुक्र	20:03:2031
शनि	10:05:2031
राहु	30:06:2031
सूर्य	21:08:2031

मंगल अन्तर
11:10:2031 —— 25:11:2032

प्रत्यंतर	से
मंगल	11:10:2031
बुध	01:12:2031
गुरू	22:01:2032
शुक्र	13:03:2032
शनि	03:05:2032
राहु	24:06:2032
सूर्य	14:08:2032
चन्द्रमा	05:10:2032

द्विसप्ततिसमा दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

गुरू दशा (25:11:2032 –– 25:11:2041)

आपकी कुण्डली में लग्नाधिपति सातवें भाव में और सप्तमेश लग्न में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्विसप्ततिसमा दशा पद्धति (72 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

गुरू अन्तर 25:11:2032 –– 10:01:2034	
प्रत्यंतर	से
गुरू	25:11:2032
शुक्र	16:01:2033
शनि	08:03:2033
राहु	28:04:2033
सूर्य	19:06:2033
चन्द्रमा	09:08:2033
मंगल	29:09:2033
बुध	20:11:2033

शुक्र अन्तर 10:01:2034 –– 25:02:2035	
प्रत्यंतर	से
शुक्र	10:01:2034
शनि	02:03:2034
राहु	23:04:2034
सूर्य	13:06:2034
चन्द्रमा	03:08:2034
मंगल	24:09:2034
बुध	14:11:2034
गुरू	04:01:2035

शनि अन्तर 25:02:2035 –– 11:04:2036	
प्रत्यंतर	से
शनि	25:02:2035
राहु	17:04:2035
सूर्य	07:06:2035
चन्द्रमा	29:07:2035
मंगल	18:09:2035
बुध	08:11:2035
गुरू	30:12:2035
शुक्र	19:02:2036

राहु अन्तर 11:04:2036 –– 27:05:2037	
प्रत्यंतर	से
राहु	11:04:2036
सूर्य	01:06:2036
चन्द्रमा	23:07:2036
मंगल	12:09:2036
बुध	02:11:2036
गुरू	24:12:2036
शुक्र	13:02:2037
शनि	06:04:2037

सूर्य अन्तर 27:05:2037 –– 12:07:2038	
प्रत्यंतर	से
सूर्य	27:05:2037
चन्द्रमा	17:07:2037
मंगल	07:09:2037
बुध	28:10:2037
गुरू	18:12:2037
शुक्र	08:02:2038
शनि	31:03:2038
राहु	21:05:2038

चन्द्रमा अन्तर 12:07:2038 –– 26:08:2039	
प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	12:07:2038
मंगल	01:09:2038
बुध	22:10:2038
गुरू	13:12:2038
शुक्र	02:02:2039
शनि	25:03:2039
राहु	16:05:2039
सूर्य	06:07:2039

मंगल अन्तर 26:08:2039 –– 11:10:2040	
प्रत्यंतर	से
मंगल	26:08:2039
बुध	17:10:2039
गुरू	07:12:2039
शुक्र	27:01:2040
शनि	19:03:2040
राहु	09:05:2040
सूर्य	30:06:2040
चन्द्रमा	20:08:2040

बुध अन्तर 11:10:2040 –– 25:11:2041	
प्रत्यंतर	से
बुध	11:10:2040
गुरू	01:12:2040
शुक्र	21:01:2041
शनि	14:03:2041
राहु	04:05:2041
सूर्य	24:06:2041
चन्द्रमा	15:08:2041
मंगल	05:10:2041

द्विसप्ततिसमा दशा

(अन्य विभाजन विधि)

जन्म के समय द्विसप्ततिसमा भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : शुक्र : 4 व. 11 मा. 8 दि.

आपकी कुण्डली में लग्नाधिपति सातवें भाव में और सप्तमेश लग्न में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्विसप्ततिसमा दशा पद्धति (72 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

क0 स0		ग्रह दशा	अवधि	से ---------- तक
1	♀	शुक्र दशा	4 y.11 m.8 d.	18:12:1973 -- 25:11:1978
2	♄	शनि दशा	9 y.0 m.0 d.	25:11:1978 -- 25:11:1987
3	☊	राहु दशा	9 y.0 m.0 d.	25:11:1987 -- 25:11:1996
4	☉	सूर्य दशा	9 y.0 m.0 d.	25:11:1996 -- 25:11:2005
5	☽	चन्द्रमा दशा	9 y.0 m.0 d.	25:11:2005 -- 25:11:2014
6	♂	मंगल दशा	9 y.0 m.0 d.	25:11:2014 -- 25:11:2023
7	☿	बुध दशा	9 y.0 m.0 d.	25:11:2023 -- 25:11:2032
8	♃	गुरू दशा	9 y.0 m.0 d.	25:11:2032 -- 25:11:2041

द्विसप्ततिसमा दशा की अन्तर्दशाए

शुक्र दशा 18:12:1973–25:11:1978

अन्तर्दशा	से
मकर	
कुम्भ	
मीन	
मेष	
वृष	
मिथुन	26:08:1973
कर्क	27:05:1974
सिहं	25:02:1975
कन्या	25:11:1975
तुला	26:08:1976
वृश्चिक	27:05:1977
धनु	25:02:1978

शनि दशा 25:11:1978–25:11:1987

अन्तर्दशा	से
मिथुन	25:11:1978
कर्क	26:08:1979
सिहं	26:05:1980
कन्या	25:02:1981
तुला	25:11:1981
वृश्चिक	26:08:1982
धनु	27:05:1983
मकर	25:02:1984
कुम्भ	25:11:1984
मीन	26:08:1985
मेष	27:05:1986
वृष	25:02:1987

राहु दशा 25:11:1987–25:11:1996

अन्तर्दशा	से
धनु	25:11:1987
मकर	26:08:1988
कुम्भ	27:05:1989
मीन	25:02:1990
मेष	25:11:1990
वृष	26:08:1991
मिथुन	26:05:1992
कर्क	25:02:1993
सिहं	25:11:1993
कन्या	26:08:1994
तुला	27:05:1995
वृश्चिक	25:02:1996

सूर्य दशा 25:11:1996–25:11:2005

अन्तर्दशा	से
धनु	25:11:1996
मकर	26:08:1997
कुम्भ	27:05:1998
मीन	25:02:1999
मेष	25:11:1999
वृष	26:08:2000
मिथुन	27:05:2001
कर्क	25:02:2002
सिहं	25:11:2002
कन्या	26:08:2003
तुला	26:05:2004
वृश्चिक	25:02:2005

चन्द्रमा दशा 25:11:2005–25:11:2014

अन्तर्दशा	से
कन्या	25:11:2005
तुला	26:08:2006
वृश्चिक	27:05:2007
धनु	25:02:2008
मकर	25:11:2008
कुम्भ	26:08:2009
मीन	27:05:2010
मेष	25:02:2011
वृष	25:11:2011
मिथुन	26:08:2012
कर्क	27:05:2013
सिहं	25:02:2014

मंगल दशा 25:11:2014–25:11:2023

अन्तर्दशा	से
मेष	25:11:2014
वृष	26:08:2015
मिथुन	26:05:2016
कर्क	25:02:2017
सिहं	25:11:2017
कन्या	26:08:2018
तुला	27:05:2019
वृश्चिक	25:02:2020
धनु	25:11:2020
मकर	26:08:2021
कुम्भ	27:05:2022
मीन	25:02:2023

बुध दशा 25:11:2023–25:11:2032

अन्तर्दशा	से
वृश्चिक	25:11:2023
धनु	26:08:2024
मकर	27:05:2025
कुम्भ	25:02:2026
मीन	25:11:2026
मेष	26:08:2027
वृष	26:05:2028
मिथुन	25:02:2029
कर्क	25:11:2029
सिहं	26:08:2030
कन्या	27:05:2031
तुला	25:02:2032

गुरू दशा 25:11:2032–25:11:2041

अन्तर्दशा	से
मकर	25:11:2032
कुम्भ	26:08:2033
मीन	27:05:2034
मेष	25:02:2035
वृष	25:11:2035
मिथुन	26:08:2036
कर्क	27:05:2037
सिहं	25:02:2038
कन्या	25:11:2038
तुला	26:08:2039
वृश्चिक	26:05:2040
धनु	25:02:2041

For Mindsutra Software Technologies

द्विसप्ततिसमा दशा

(अन्य विभाजन विधि)

शुक्र दशा (18:12:1973 —— 25:11:1978)

आपकी कुण्डली में लग्नाधिपति सातवें भाव में और सप्तमेश लग्न में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्विसप्ततिसमा दशा पद्धति (72 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

प्रत्यंतर	से

प्रत्यंतर	से

प्रत्यंतर	से

प्रत्यंतर	से

प्रत्यंतर	से

मिथुन अन्तर
18:12:1973—27:05:1974

प्रत्यंतर	से
तुला	18:12:1973
वृश्चिक	18:12:1973
धनु	10:01:1974
मकर	02:02:1974
कुम्भ	25:02:1974
मीन	20:03:1974
मेष	11:04:1974
वृष	04:05:1974

कर्क अन्तर
27:05:1974—25:02:1975

प्रत्यंतर	से
कर्क	27:05:1974
सिहं	19:06:1974
कन्या	12:07:1974
तुला	03:08:1974
वृश्चिक	26:08:1974
धनु	18:09:1974
मकर	11:10:1974
कुम्भ	03:11:1974
मीन	25:11:1974
मेष	18:12:1974
वृष	10:01:1975
मिथुन	02:02:1975

सिहं अन्तर
25:02:1975—25:11:1975

प्रत्यंतर	से
सिहं	25:02:1975
कन्या	20:03:1975
तुला	11:04:1975
वृश्चिक	04:05:1975
धनु	27:05:1975
मकर	19:06:1975
कुम्भ	12:07:1975
मीन	03:08:1975
मेष	26:08:1975
वृष	18:09:1975
मिथुन	11:10:1975
कर्क	03:11:1975

कन्या अन्तर
25:11:1975—26:08:1976

प्रत्यंतर	से
कन्या	25:11:1975
तुला	18:12:1975
वृश्चिक	10:01:1976
धनु	02:02:1976
मकर	25:02:1976
कुम्भ	19:03:1976
मीन	11:04:1976
मेष	03:05:1976
वृष	26:05:1976
मिथुन	18:06:1976
कर्क	11:07:1976
सिहं	03:08:1976

तुला अन्तर
26:08:1976—27:05:1977

प्रत्यंतर	से
तुला	26:08:1976
वृश्चिक	18:09:1976
धनु	11:10:1976
मकर	02:11:1976
कुम्भ	25:11:1976
मीन	18:12:1976
मेष	10:01:1977
वृष	02:02:1977
मिथुन	25:02:1977
कर्क	20:03:1977
सिहं	11:04:1977
कन्या	04:05:1977

वृश्चिक अन्तर
27:05:1977—25:02:1978

प्रत्यंतर	से
वृश्चिक	27:05:1977
धनु	19:06:1977
मकर	12:07:1977
कुम्भ	03:08:1977
मीन	26:08:1977
मेष	18:09:1977
वृष	11:10:1977
मिथुन	03:11:1977
कर्क	25:11:1977
सिहं	18:12:1977
कन्या	10:01:1978
तुला	02:02:1978

धनु अन्तर
25:02:1978—25:11:1978

प्रत्यंतर	से
धनु	25:02:1978
मकर	20:03:1978
कुम्भ	11:04:1978
मीन	04:05:1978
मेष	27:05:1978
वृष	19:06:1978
मिथुन	12:07:1978
कर्क	03:08:1978
सिहं	26:08:1978
कन्या	18:09:1978
तुला	11:10:1978
वृश्चिक	03:11:1978

द्विसप्ततिसमा दशा

(अन्य विभाजन विधि)

शनि दशा (25:11:1978 –– 25:11:1987)

आपकी कुण्डली में लग्नाधिपति सातवें भाव में और सप्तमेश लग्न में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्विसप्ततिसमा दशा पद्धति (72 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

मिथुन अन्तर 25:11:1978–26:08:1979

प्रत्यंतर	से
मिथुन	25:11:1978
कर्क	18:12:1978
सिहं	10:01:1979
कन्या	02:02:1979
तुला	25:02:1979
वृश्चिक	20:03:1979
धनु	11:04:1979
मकर	04:05:1979
कुम्भ	27:05:1979
मीन	19:06:1979
मेष	12:07:1979
वृष	03:08:1979

कर्क अन्तर 26:08:1979–26:05:1980

प्रत्यंतर	से
कर्क	26:08:1979
सिहं	18:09:1979
कन्या	11:10:1979
तुला	03:11:1979
वृश्चिक	25:11:1979
धनु	18:12:1979
मकर	10:01:1980
कुम्भ	02:02:1980
मीन	25:02:1980
मेष	19:03:1980
वृष	11:04:1980
मिथुन	03:05:1980

सिहं अन्तर 26:05:1980–25:02:1981

प्रत्यंतर	से
सिहं	26:05:1980
कन्या	18:06:1980
तुला	11:07:1980
वृश्चिक	03:08:1980
धनु	26:08:1980
मकर	18:09:1980
कुम्भ	11:10:1980
मीन	02:11:1980
मेष	25:11:1980
वृष	18:12:1980
मिथुन	10:01:1981
कर्क	02:02:1981

कन्या अन्तर 25:02:1981–25:11:1981

प्रत्यंतर	से
कन्या	25:02:1981
तुला	20:03:1981
वृश्चिक	11:04:1981
धनु	04:05:1981
मकर	27:05:1981
कुम्भ	19:06:1981
मीन	12:07:1981
मेष	03:08:1981
वृष	26:08:1981
मिथुन	18:09:1981
कर्क	11:10:1981
सिहं	03:11:1981

तुला अन्तर 25:11:1981–26:08:1982

प्रत्यंतर	से
तुला	25:11:1981
वृश्चिक	18:12:1981
धनु	10:01:1982
मकर	02:02:1982
कुम्भ	25:02:1982
मीन	20:03:1982
मेष	11:04:1982
वृष	04:05:1982
मिथुन	27:05:1982
कर्क	19:06:1982
सिहं	12:07:1982
कन्या	03:08:1982

वृश्चिक अन्तर 26:08:1982–27:05:1983

प्रत्यंतर	से
वृश्चिक	26:08:1982
धनु	18:09:1982
मकर	11:10:1982
कुम्भ	03:11:1982
मीन	25:11:1982
मेष	18:12:1982
वृष	10:01:1983
मिथुन	02:02:1983
कर्क	25:02:1983
सिहं	20:03:1983
कन्या	11:04:1983
तुला	04:05:1983

धनु अन्तर 27:05:1983–25:02:1984

प्रत्यंतर	से
धनु	27:05:1983
मकर	19:06:1983
कुम्भ	12:07:1983
मीन	03:08:1983
मेष	26:08:1983
वृष	18:09:1983
मिथुन	11:10:1983
कर्क	03:11:1983
सिहं	25:11:1983
कन्या	18:12:1983
तुला	10:01:1984
वृश्चिक	02:02:1984

मकर अन्तर 25:02:1984–25:11:1984

प्रत्यंतर	से
मकर	25:02:1984
कुम्भ	19:03:1984
मीन	11:04:1984
मेष	03:05:1984
वृष	26:05:1984
मिथुन	18:06:1984
कर्क	11:07:1984
सिहं	03:08:1984
कन्या	26:08:1984
तुला	18:09:1984
वृश्चिक	11:10:1984
धनु	02:11:1984

कुम्भ अन्तर 25:11:1984–26:08:1985

प्रत्यंतर	से
कुम्भ	25:11:1984
मीन	18:12:1984
मेष	10:01:1985
वृष	02:02:1985
मिथुन	25:02:1985
कर्क	20:03:1985
सिहं	11:04:1985
कन्या	04:05:1985
तुला	27:05:1985
वृश्चिक	19:06:1985
धनु	12:07:1985
मकर	03:08:1985

मीन अन्तर 26:08:1985–27:05:1986

प्रत्यंतर	से
मीन	26:08:1985
मेष	18:09:1985
वृष	11:10:1985
मिथुन	03:11:1985
कर्क	25:11:1985
सिहं	18:12:1985
कन्या	10:01:1986
तुला	02:02:1986
वृश्चिक	25:02:1986
धनु	20:03:1986
मकर	11:04:1986
कुम्भ	04:05:1986

मेष अन्तर 27:05:1986–25:02:1987

प्रत्यंतर	से
मेष	27:05:1986
वृष	19:06:1986
मिथुन	12:07:1986
कर्क	03:08:1986
सिहं	26:08:1986
कन्या	18:09:1986
तुला	11:10:1986
वृश्चिक	03:11:1986
धनु	25:11:1986
मकर	18:12:1986
कुम्भ	10:01:1987
मीन	02:02:1987

वृष अन्तर 25:02:1987–25:11:1987

प्रत्यंतर	से
वृष	25:02:1987
मिथुन	20:03:1987
कर्क	11:04:1987
सिहं	04:05:1987
कन्या	27:05:1987
तुला	19:06:1987
वृश्चिक	12:07:1987
धनु	03:08:1987
मकर	26:08:1987
कुम्भ	18:09:1987
मीन	11:10:1987
मेष	03:11:1987

द्विसप्ततिसमा दशा

(अन्य विभाजन विधि)

राहु दशा (25:11:1987 —— 25:11:1996)

आपकी कुण्डली में लग्नाधिपति सातवें भाव में और सप्तमेश लग्न में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्विसप्ततिसमा दशा पद्धति (72 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

धनु अन्तर 25:11:1987—26:08:1988

प्रत्यंतर	से
धनु	25:11:1987
मकर	18:12:1987
कुम्भ	10:01:1988
मीन	02:02:1988
मेष	25:02:1988
वृष	19:03:1988
मिथुन	11:04:1988
कर्क	03:05:1988
सिहं	26:05:1988
कन्या	18:06:1988
तुला	11:07:1988
वृश्चिक	03:08:1988

मकर अन्तर 26:08:1988—27:05:1989

प्रत्यंतर	से
मकर	26:08:1988
कुम्भ	18:09:1988
मीन	11:10:1988
मेष	02:11:1988
वृष	25:11:1988
मिथुन	18:12:1988
कर्क	10:01:1989
सिहं	02:02:1989
कन्या	25:02:1989
तुला	20:03:1989
वृश्चिक	11:04:1989
धनु	04:05:1989

कुम्भ अन्तर 27:05:1989—25:02:1990

प्रत्यंतर	से
कुम्भ	27:05:1989
मीन	19:06:1989
मेष	12:07:1989
वृष	03:08:1989
मिथुन	26:08:1989
कर्क	18:09:1989
सिहं	11:10:1989
कन्या	03:11:1989
तुला	25:11:1989
वृश्चिक	18:12:1989
धनु	10:01:1990
मकर	02:02:1990

मीन अन्तर 25:02:1990—25:11:1990

प्रत्यंतर	से
मीन	25:02:1990
मेष	20:03:1990
वृष	11:04:1990
मिथुन	04:05:1990
कर्क	27:05:1990
सिहं	19:06:1990
कन्या	12:07:1990
तुला	03:08:1990
वृश्चिक	26:08:1990
धनु	18:09:1990
मकर	11:10:1990
कुम्भ	03:11:1990

मेष अन्तर 25:11:1990—26:08:1991

प्रत्यंतर	से
मेष	25:11:1990
वृष	18:12:1990
मिथुन	10:01:1991
कर्क	02:02:1991
सिहं	25:02:1991
कन्या	20:03:1991
तुला	11:04:1991
वृश्चिक	04:05:1991
धनु	27:05:1991
मकर	19:06:1991
कुम्भ	12:07:1991
मीन	03:08:1991

वृष अन्तर 26:08:1991—26:05:1992

प्रत्यंतर	से
वृष	26:08:1991
मिथुन	18:09:1991
कर्क	11:10:1991
सिहं	03:11:1991
कन्या	25:11:1991
तुला	18:12:1991
वृश्चिक	10:01:1992
धनु	02:02:1992
मकर	25:02:1992
कुम्भ	19:03:1992
मीन	11:04:1992
मेष	03:05:1992

मिथुन अन्तर 26:05:1992—25:02:1993

प्रत्यंतर	से
मिथुन	26:05:1992
कर्क	18:06:1992
सिहं	11:07:1992
कन्या	03:08:1992
तुला	26:08:1992
वृश्चिक	18:09:1992
धनु	11:10:1992
मकर	02:11:1992
कुम्भ	25:11:1992
मीन	18:12:1992
मेष	10:01:1993
वृष	02:02:1993

कर्क अन्तर 25:02:1993—25:11:1993

प्रत्यंतर	से
कर्क	25:02:1993
सिहं	20:03:1993
कन्या	11:04:1993
तुला	04:05:1993
वृश्चिक	27:05:1993
धनु	19:06:1993
मकर	12:07:1993
कुम्भ	03:08:1993
मीन	26:08:1993
मेष	18:09:1993
वृष	11:10:1993
मिथुन	03:11:1993

सिहं अन्तर 25:11:1993—26:08:1994

प्रत्यंतर	से
सिहं	25:11:1993
कन्या	18:12:1993
तुला	10:01:1994
वृश्चिक	02:02:1994
धनु	25:02:1994
मकर	20:03:1994
कुम्भ	11:04:1994
मीन	04:05:1994
मेष	27:05:1994
वृष	19:06:1994
मिथुन	12:07:1994
कर्क	03:08:1994

कन्या अन्तर 26:08:1994—27:05:1995

प्रत्यंतर	से
कन्या	26:08:1994
तुला	18:09:1994
वृश्चिक	11:10:1994
धनु	03:11:1994
मकर	25:11:1994
कुम्भ	18:12:1994
मीन	10:01:1995
मेष	02:02:1995
वृष	25:02:1995
मिथुन	20:03:1995
कर्क	11:04:1995
सिहं	04:05:1995

तुला अन्तर 27:05:1995—25:02:1996

प्रत्यंतर	से
तुला	27:05:1995
वृश्चिक	19:06:1995
धनु	12:07:1995
मकर	03:08:1995
कुम्भ	26:08:1995
मीन	18:09:1995
मेष	11:10:1995
वृष	03:11:1995
मिथुन	25:11:1995
कर्क	18:12:1995
सिहं	10:01:1996
कन्या	02:02:1996

वृश्चिक अन्तर 25:02:1996—25:11:1996

प्रत्यंतर	से
वृश्चिक	25:02:1996
धनु	19:03:1996
मकर	11:04:1996
कुम्भ	03:05:1996
मीन	26:05:1996
मेष	18:06:1996
वृष	11:07:1996
मिथुन	03:08:1996
कर्क	26:08:1996
सिहं	18:09:1996
कन्या	11:10:1996
तुला	02:11:1996

द्विसप्ततिसमा दशा

(अन्य विभाजन विधि)

सूर्य दशा (25:11:1996 –– 25:11:2005)

आपकी कुण्डली में लग्नाधिपति सातवें भाव में और सप्तमेश लग्न में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्विसप्ततिसमा दशा पद्धति (72 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

धनु अन्तर 25:11:1996–26:08:1997

प्रत्यंतर	से
धनु	25:11:1996
मकर	18:12:1996
कुम्भ	10:01:1997
मीन	02:02:1997
मेष	25:02:1997
वृष	20:03:1997
मिथुन	11:04:1997
कर्क	04:05:1997
सिहं	27:05:1997
कन्या	19:06:1997
तुला	12:07:1997
वृश्चिक	03:08:1997

मकर अन्तर 26:08:1997–27:05:1998

प्रत्यंतर	से
मकर	26:08:1997
कुम्भ	18:09:1997
मीन	11:10:1997
मेष	03:11:1997
वृष	25:11:1997
मिथुन	18:12:1997
कर्क	10:01:1998
सिहं	02:02:1998
कन्या	25:02:1998
तुला	20:03:1998
वृश्चिक	11:04:1998
धनु	04:05:1998

कुम्भ अन्तर 27:05:1998–25:02:1999

प्रत्यंतर	से
कुम्भ	27:05:1998
मीन	19:06:1998
मेष	12:07:1998
वृष	03:08:1998
मिथुन	26:08:1998
कर्क	18:09:1998
सिहं	11:10:1998
कन्या	03:11:1998
तुला	25:11:1998
वृश्चिक	18:12:1998
धनु	10:01:1999
मकर	02:02:1999

मीन अन्तर 25:02:1999–25:11:1999

प्रत्यंतर	से
मीन	25:02:1999
मेष	20:03:1999
वृष	11:04:1999
मिथुन	04:05:1999
कर्क	27:05:1999
सिहं	19:06:1999
कन्या	12:07:1999
तुला	03:08:1999
वृश्चिक	26:08:1999
धनु	18:09:1999
मकर	11:10:1999
कुम्भ	03:11:1999

मेष अन्तर 25:11:1999–26:08:2000

प्रत्यंतर	से
मेष	25:11:1999
वृष	18:12:1999
मिथुन	10:01:2000
कर्क	02:02:2000
सिहं	25:02:2000
कन्या	19:03:2000
तुला	11:04:2000
वृश्चिक	03:05:2000
धनु	26:05:2000
मकर	18:06:2000
कुम्भ	11:07:2000
मीन	03:08:2000

वृष अन्तर 26:08:2000–27:05:2001

प्रत्यंतर	से
वृष	26:08:2000
मिथुन	18:09:2000
कर्क	11:10:2000
सिहं	02:11:2000
कन्या	25:11:2000
तुला	18:12:2000
वृश्चिक	10:01:2001
धनु	02:02:2001
मकर	25:02:2001
कुम्भ	20:03:2001
मीन	11:04:2001
मेष	04:05:2001

मिथुन अन्तर 27:05:2001–25:02:2002

प्रत्यंतर	से
मिथुन	27:05:2001
कर्क	19:06:2001
सिहं	12:07:2001
कन्या	03:08:2001
तुला	26:08:2001
वृश्चिक	18:09:2001
धनु	11:10:2001
मकर	03:11:2001
कुम्भ	25:11:2001
मीन	18:12:2001
मेष	10:01:2002
वृष	02:02:2002

कर्क अन्तर 25:02:2002–25:11:2002

प्रत्यंतर	से
कर्क	25:02:2002
सिहं	20:03:2002
कन्या	11:04:2002
तुला	04:05:2002
वृश्चिक	27:05:2002
धनु	19:06:2002
मकर	12:07:2002
कुम्भ	03:08:2002
मीन	26:08:2002
मेष	18:09:2002
वृष	11:10:2002
मिथुन	03:11:2002

सिहं अन्तर 25:11:2002–26:08:2003

प्रत्यंतर	से
सिहं	25:11:2002
कन्या	18:12:2002
तुला	10:01:2003
वृश्चिक	02:02:2003
धनु	25:02:2003
मकर	20:03:2003
कुम्भ	11:04:2003
मीन	04:05:2003
मेष	27:05:2003
वृष	19:06:2003
मिथुन	12:07:2003
कर्क	03:08:2003

कन्या अन्तर 26:08:2003–26:05:2004

प्रत्यंतर	से
कन्या	26:08:2003
तुला	18:09:2003
वृश्चिक	11:10:2003
धनु	03:11:2003
मकर	25:11:2003
कुम्भ	18:12:2003
मीन	10:01:2004
मेष	02:02:2004
वृष	25:02:2004
मिथुन	19:03:2004
कर्क	11:04:2004
सिहं	03:05:2004

तुला अन्तर 26:05:2004–25:02:2005

प्रत्यंतर	से
तुला	26:05:2004
वृश्चिक	18:06:2004
धनु	11:07:2004
मकर	03:08:2004
कुम्भ	26:08:2004
मीन	18:09:2004
मेष	11:10:2004
वृष	02:11:2004
मिथुन	25:11:2004
कर्क	18:12:2004
सिहं	10:01:2005
कन्या	02:02:2005

वृश्चिक अन्तर 25:02:2005–25:11:2005

प्रत्यंतर	से
वृश्चिक	25:02:2005
धनु	20:03:2005
मकर	11:04:2005
कुम्भ	04:05:2005
मीन	27:05:2005
मेष	19:06:2005
वृष	12:07:2005
मिथुन	03:08:2005
कर्क	26:08:2005
सिहं	18:09:2005
कन्या	11:10:2005
तुला	03:11:2005

द्विसप्ततिसमा दशा

(अन्य विभाजन विधि)

चन्द्रमा दशा (25:11:2005 —— 25:11:2014)

आपकी कुण्डली में लग्नाधिपति सातवें भाव में और सप्तमेश लग्न में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्विसप्ततिसमा दशा पद्धति (72 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

कन्या अन्तर 25:11:2005–26:08:2006

प्रत्यंतर	से
कन्या	25:11:2005
तुला	18:12:2005
वृश्चिक	10:01:2006
धनु	02:02:2006
मकर	25:02:2006
कुम्भ	20:03:2006
मीन	11:04:2006
मेष	04:05:2006
वृष	27:05:2006
मिथुन	19:06:2006
कर्क	12:07:2006
सिहं	03:08:2006

तुला अन्तर 26:08:2006–27:05:2007

प्रत्यंतर	से
तुला	26:08:2006
वृश्चिक	18:09:2006
धनु	11:10:2006
मकर	03:11:2006
कुम्भ	25:11:2006
मीन	18:12:2006
मेष	10:01:2007
वृष	02:02:2007
मिथुन	25:02:2007
कर्क	20:03:2007
सिहं	11:04:2007
कन्या	04:05:2007

वृश्चिक अन्तर 27:05:2007–25:02:2008

प्रत्यंतर	से
वृश्चिक	27:05:2007
धनु	19:06:2007
मकर	12:07:2007
कुम्भ	03:08:2007
मीन	26:08:2007
मेष	18:09:2007
वृष	11:10:2007
मिथुन	03:11:2007
कर्क	25:11:2007
सिहं	18:12:2007
कन्या	10:01:2008
तुला	02:02:2008

धनु अन्तर 25:02:2008–25:11:2008

प्रत्यंतर	से
धनु	25:02:2008
मकर	19:03:2008
कुम्भ	11:04:2008
मीन	03:05:2008
मेष	26:05:2008
वृष	18:06:2008
मिथुन	11:07:2008
कर्क	03:08:2008
सिहं	26:08:2008
कन्या	18:09:2008
तुला	11:10:2008
वृश्चिक	02:11:2008

मकर अन्तर 25:11:2008–26:08:2009

प्रत्यंतर	से
मकर	25:11:2008
कुम्भ	18:12:2008
मीन	10:01:2009
मेष	02:02:2009
वृष	25:02:2009
मिथुन	20:03:2009
कर्क	11:04:2009
सिहं	04:05:2009
कन्या	27:05:2009
तुला	19:06:2009
वृश्चिक	12:07:2009
धनु	03:08:2009

कुम्भ अन्तर 26:08:2009–27:05:2010

प्रत्यंतर	से
कुम्भ	26:08:2009
मीन	18:09:2009
मेष	11:10:2009
वृष	03:11:2009
मिथुन	25:11:2009
कर्क	18:12:2009
सिहं	10:01:2010
कन्या	02:02:2010
तुला	25:02:2010
वृश्चिक	20:03:2010
धनु	11:04:2010
मकर	04:05:2010

मीन अन्तर 27:05:2010–25:02:2011

प्रत्यंतर	से
मीन	27:05:2010
मेष	19:06:2010
वृष	12:07:2010
मिथुन	03:08:2010
कर्क	26:08:2010
सिहं	18:09:2010
कन्या	11:10:2010
तुला	03:11:2010
वृश्चिक	25:11:2010
धनु	18:12:2010
मकर	10:01:2011
कुम्भ	02:02:2011

मेष अन्तर 25:02:2011–25:11:2011

प्रत्यंतर	से
मेष	25:02:2011
वृष	20:03:2011
मिथुन	11:04:2011
कर्क	04:05:2011
सिहं	27:05:2011
कन्या	19:06:2011
तुला	12:07:2011
वृश्चिक	03:08:2011
धनु	26:08:2011
मकर	18:09:2011
कुम्भ	11:10:2011
मीन	03:11:2011

वृष अन्तर 25:11:2011–26:08:2012

प्रत्यंतर	से
वृष	25:11:2011
मिथुन	18:12:2011
कर्क	10:01:2012
सिहं	02:02:2012
कन्या	25:02:2012
तुला	19:03:2012
वृश्चिक	11:04:2012
धनु	03:05:2012
मकर	26:05:2012
कुम्भ	18:06:2012
मीन	11:07:2012
मेष	03:08:2012

मिथुन अन्तर 26:08:2012–27:05:2013

प्रत्यंतर	से
मिथुन	26:08:2012
कर्क	18:09:2012
सिहं	11:10:2012
कन्या	02:11:2012
तुला	25:11:2012
वृश्चिक	18:12:2012
धनु	10:01:2013
मकर	02:02:2013
कुम्भ	25:02:2013
मीन	20:03:2013
मेष	11:04:2013
वृष	04:05:2013

कर्क अन्तर 27:05:2013–25:02:2014

प्रत्यंतर	से
कर्क	27:05:2013
सिहं	19:06:2013
कन्या	12:07:2013
तुला	03:08:2013
वृश्चिक	26:08:2013
धनु	18:09:2013
मकर	11:10:2013
कुम्भ	03:11:2013
मीन	25:11:2013
मेष	18:12:2013
वृष	10:01:2014
मिथुन	02:02:2014

सिहं अन्तर 25:02:2014–25:11:2014

प्रत्यंतर	से
सिहं	25:02:2014
कन्या	20:03:2014
तुला	11:04:2014
वृश्चिक	04:05:2014
धनु	27:05:2014
मकर	19:06:2014
कुम्भ	12:07:2014
मीन	03:08:2014
मेष	26:08:2014
वृष	18:09:2014
मिथुन	11:10:2014
कर्क	03:11:2014

द्विसप्ततिसमा दशा

(अन्य विभाजन विधि)

मंगल दशा (25:11:2014 -- 25:11:2023)

आपकी कुण्डली में लग्नाधिपति सातवें भाव में और सप्तमेश लग्न में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्विसप्ततिसमा दशा पद्धति (72 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

मेष अन्तर 25:11:2014–26:08:2015	
प्रत्यंतर	से
मेष	25:11:2014
वृष	18:12:2014
मिथुन	10:01:2015
कर्क	02:02:2015
सिहं	25:02:2015
कन्या	20:03:2015
तुला	11:04:2015
वृश्चिक	04:05:2015
धनु	27:05:2015
मकर	19:06:2015
कुम्भ	12:07:2015
मीन	03:08:2015

वृष अन्तर 26:08:2015–26:05:2016	
प्रत्यंतर	से
वृष	26:08:2015
मिथुन	18:09:2015
कर्क	11:10:2015
सिहं	03:11:2015
कन्या	25:11:2015
तुला	18:12:2015
वृश्चिक	10:01:2016
धनु	02:02:2016
मकर	25:02:2016
कुम्भ	19:03:2016
मीन	11:04:2016
मेष	03:05:2016

मिथुन अन्तर 26:05:2016–25:02:2017	
प्रत्यंतर	से
मिथुन	26:05:2016
कर्क	18:06:2016
सिहं	11:07:2016
कन्या	03:08:2016
तुला	26:08:2016
वृश्चिक	18:09:2016
धनु	11:10:2016
मकर	02:11:2016
कुम्भ	25:11:2016
मीन	18:12:2016
मेष	10:01:2017
वृष	02:02:2017

कर्क अन्तर 25:02:2017–25:11:2017	
प्रत्यंतर	से
कर्क	25:02:2017
सिहं	20:03:2017
कन्या	11:04:2017
तुला	04:05:2017
वृश्चिक	27:05:2017
धनु	19:06:2017
मकर	12:07:2017
कुम्भ	03:08:2017
मीन	26:08:2017
मेष	18:09:2017
वृष	11:10:2017
मिथुन	03:11:2017

सिहं अन्तर 25:11:2017–26:08:2018	
प्रत्यंतर	से
सिहं	25:11:2017
कन्या	18:12:2017
तुला	10:01:2018
वृश्चिक	02:02:2018
धनु	25:02:2018
मकर	20:03:2018
कुम्भ	11:04:2018
मीन	04:05:2018
मेष	27:05:2018
वृष	19:06:2018
मिथुन	12:07:2018
कर्क	03:08:2018

कन्या अन्तर 26:08:2018–27:05:2019	
प्रत्यंतर	से
कन्या	26:08:2018
तुला	18:09:2018
वृश्चिक	11:10:2018
धनु	03:11:2018
मकर	25:11:2018
कुम्भ	18:12:2018
मीन	10:01:2019
मेष	02:02:2019
वृष	25:02:2019
मिथुन	20:03:2019
कर्क	11:04:2019
सिहं	04:05:2019

तुला अन्तर 27:05:2019–25:02:2020	
प्रत्यंतर	से
तुला	27:05:2019
वृश्चिक	19:06:2019
धनु	12:07:2019
मकर	03:08:2019
कुम्भ	26:08:2019
मीन	18:09:2019
मेष	11:10:2019
वृष	03:11:2019
मिथुन	25:11:2019
कर्क	18:12:2019
सिहं	10:01:2020
कन्या	02:02:2020

वृश्चिक अन्तर 25:02:2020–25:11:2020	
प्रत्यंतर	से
वृश्चिक	25:02:2020
धनु	19:03:2020
मकर	11:04:2020
कुम्भ	03:05:2020
मीन	26:05:2020
मेष	18:06:2020
वृष	11:07:2020
मिथुन	03:08:2020
कर्क	26:08:2020
सिहं	18:09:2020
कन्या	11:10:2020
तुला	02:11:2020

धनु अन्तर 25:11:2020–26:08:2021	
प्रत्यंतर	से
धनु	25:11:2020
मकर	18:12:2020
कुम्भ	10:01:2021
मीन	02:02:2021
मेष	25:02:2021
वृष	20:03:2021
मिथुन	11:04:2021
कर्क	04:05:2021
सिहं	27:05:2021
कन्या	19:06:2021
तुला	12:07:2021
वृश्चिक	03:08:2021

मकर अन्तर 26:08:2021–27:05:2022	
प्रत्यंतर	से
मकर	26:08:2021
कुम्भ	18:09:2021
मीन	11:10:2021
मेष	03:11:2021
वृष	25:11:2021
मिथुन	18:12:2021
कर्क	10:01:2022
सिहं	02:02:2022
कन्या	25:02:2022
तुला	20:03:2022
वृश्चिक	11:04:2022
धनु	04:05:2022

कुम्भ अन्तर 27:05:2022–25:02:2023	
प्रत्यंतर	से
कुम्भ	27:05:2022
मीन	19:06:2022
मेष	12:07:2022
वृष	03:08:2022
मिथुन	26:08:2022
कर्क	18:09:2022
सिहं	11:10:2022
कन्या	03:11:2022
तुला	25:11:2022
वृश्चिक	18:12:2022
धनु	10:01:2023
मकर	02:02:2023

मीन अन्तर 25:02:2023–25:11:2023	
प्रत्यंतर	से
मीन	25:02:2023
मेष	20:03:2023
वृष	11:04:2023
मिथुन	04:05:2023
कर्क	27:05:2023
सिहं	19:06:2023
कन्या	12:07:2023
तुला	03:08:2023
वृश्चिक	26:08:2023
धनु	18:09:2023
मकर	11:10:2023
कुम्भ	03:11:2023

द्विसप्ततिसमा दशा

(अन्य विभाजन विधि)

बुध दशा (25:11:2023 –– 25:11:2032)

आपकी कुण्डली में लग्नाधिपति सातवें भाव में और सप्तमेश लग्न में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्विसप्ततिसमा दशा पद्धति (72 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

वृश्चिक अन्तर 25:11:2023–26:08:2024

प्रत्यंतर	से
वृश्चिक	25:11:2023
धनु	18:12:2023
मकर	10:01:2024
कुम्भ	02:02:2024
मीन	25:02:2024
मेष	19:03:2024
वृष	11:04:2024
मिथुन	03:05:2024
कर्क	26:05:2024
सिहं	18:06:2024
कन्या	11:07:2024
तुला	03:08:2024

धनु अन्तर 26:08:2024–27:05:2025

प्रत्यंतर	से
धनु	26:08:2024
मकर	18:09:2024
कुम्भ	11:10:2024
मीन	02:11:2024
मेष	25:11:2024
वृष	18:12:2024
मिथुन	10:01:2025
कर्क	02:02:2025
सिहं	25:02:2025
कन्या	20:03:2025
तुला	11:04:2025
वृश्चिक	04:05:2025

मकर अन्तर 27:05:2025–25:02:2026

प्रत्यंतर	से
मकर	27:05:2025
कुम्भ	19:06:2025
मीन	12:07:2025
मेष	03:08:2025
वृष	26:08:2025
मिथुन	18:09:2025
कर्क	11:10:2025
सिहं	03:11:2025
कन्या	25:11:2025
तुला	18:12:2025
वृश्चिक	10:01:2026
धनु	02:02:2026

कुम्भ अन्तर 25:02:2026–25:11:2026

प्रत्यंतर	से
कुम्भ	25:02:2026
मीन	20:03:2026
मेष	11:04:2026
वृष	04:05:2026
मिथुन	27:05:2026
कर्क	19:06:2026
सिहं	12:07:2026
कन्या	03:08:2026
तुला	26:08:2026
वृश्चिक	18:09:2026
धनु	11:10:2026
मकर	03:11:2026

मीन अन्तर 25:11:2026–26:08:2027

प्रत्यंतर	से
मीन	25:11:2026
मेष	18:12:2026
वृष	10:01:2027
मिथुन	02:02:2027
कर्क	25:02:2027
सिहं	20:03:2027
कन्या	11:04:2027
तुला	04:05:2027
वृश्चिक	27:05:2027
धनु	19:06:2027
मकर	12:07:2027
कुम्भ	03:08:2027

मेष अन्तर 26:08:2027–26:05:2028

प्रत्यंतर	से
मेष	26:08:2027
वृष	18:09:2027
मिथुन	11:10:2027
कर्क	03:11:2027
सिहं	25:11:2027
कन्या	18:12:2027
तुला	10:01:2028
वृश्चिक	02:02:2028
धनु	25:02:2028
मकर	19:03:2028
कुम्भ	11:04:2028
मीन	03:05:2028

वृष अन्तर 26:05:2028–25:02:2029

प्रत्यंतर	से
वृष	26:05:2028
मिथुन	18:06:2028
कर्क	11:07:2028
सिहं	03:08:2028
कन्या	26:08:2028
तुला	18:09:2028
वृश्चिक	11:10:2028
धनु	02:11:2028
मकर	25:11:2028
कुम्भ	18:12:2028
मीन	10:01:2029
मेष	02:02:2029

मिथुन अन्तर 25:02:2029–25:11:2029

प्रत्यंतर	से
मिथुन	25:02:2029
कर्क	20:03:2029
सिहं	11:04:2029
कन्या	04:05:2029
तुला	27:05:2029
वृश्चिक	19:06:2029
धनु	12:07:2029
मकर	03:08:2029
कुम्भ	26:08:2029
मीन	18:09:2029
मेष	11:10:2029
वृष	03:11:2029

कर्क अन्तर 25:11:2029–26:08:2030

प्रत्यंतर	से
कर्क	25:11:2029
सिहं	18:12:2029
कन्या	10:01:2030
तुला	02:02:2030
वृश्चिक	25:02:2030
धनु	20:03:2030
मकर	11:04:2030
कुम्भ	04:05:2030
मीन	27:05:2030
मेष	19:06:2030
वृष	12:07:2030
मिथुन	03:08:2030

सिहं अन्तर 26:08:2030–27:05:2031

प्रत्यंतर	से
सिहं	26:08:2030
कन्या	18:09:2030
तुला	11:10:2030
वृश्चिक	03:11:2030
धनु	25:11:2030
मकर	18:12:2030
कुम्भ	10:01:2031
मीन	02:02:2031
मेष	25:02:2031
वृष	20:03:2031
मिथुन	11:04:2031
कर्क	04:05:2031

कन्या अन्तर 27:05:2031–25:02:2032

प्रत्यंतर	से
कन्या	27:05:2031
तुला	19:06:2031
वृश्चिक	12:07:2031
धनु	03:08:2031
मकर	26:08:2031
कुम्भ	18:09:2031
मीन	11:10:2031
मेष	03:11:2031
वृष	25:11:2031
मिथुन	18:12:2031
कर्क	10:01:2032
सिहं	02:02:2032

तुला अन्तर 25:02:2032–25:11:2032

प्रत्यंतर	से
तुला	25:02:2032
वृश्चिक	19:03:2032
धनु	11:04:2032
मकर	03:05:2032
कुम्भ	26:05:2032
मीन	18:06:2032
मेष	11:07:2032
वृष	03:08:2032
मिथुन	26:08:2032
कर्क	18:09:2032
सिहं	11:10:2032
कन्या	02:11:2032

द्विसप्ततिसमा दशा

(अन्य विभाजन विधि)

गुरू दशा (25:11:2032 —— 25:11:2041)

आपकी कुण्डली में लग्नाधिपति सातवें भाव में और सप्तमेश लग्न में स्थित नहीं है। आपकी कुण्डली में द्विसप्ततिसमा दशा पद्धति (72 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

मकर अन्तर 25:11:2032–26:08:2033

प्रत्यंतर	से
मकर	25:11:2032
कुम्भ	18:12:2032
मीन	10:01:2033
मेष	02:02:2033
वृष	25:02:2033
मिथुन	20:03:2033
कर्क	11:04:2033
सिहं	04:05:2033
कन्या	27:05:2033
तुला	19:06:2033
वृश्चिक	12:07:2033
धनु	03:08:2033

कुम्भ अन्तर 26:08:2033–27:05:2034

प्रत्यंतर	से
कुम्भ	26:08:2033
मीन	18:09:2033
मेष	11:10:2033
वृष	03:11:2033
मिथुन	25:11:2033
कर्क	18:12:2033
सिहं	10:01:2034
कन्या	02:02:2034
तुला	25:02:2034
वृश्चिक	20:03:2034
धनु	11:04:2034
मकर	04:05:2034

मीन अन्तर 27:05:2034–25:02:2035

प्रत्यंतर	से
मीन	27:05:2034
मेष	19:06:2034
वृष	12:07:2034
मिथुन	03:08:2034
कर्क	26:08:2034
सिहं	18:09:2034
कन्या	11:10:2034
तुला	03:11:2034
वृश्चिक	25:11:2034
धनु	18:12:2034
मकर	10:01:2035
कुम्भ	02:02:2035

मेष अन्तर 25:02:2035–25:11:2035

प्रत्यंतर	से
मेष	25:02:2035
वृष	20:03:2035
मिथुन	11:04:2035
कर्क	04:05:2035
सिहं	27:05:2035
कन्या	19:06:2035
तुला	12:07:2035
वृश्चिक	03:08:2035
धनु	26:08:2035
मकर	18:09:2035
कुम्भ	11:10:2035
मीन	03:11:2035

वृष अन्तर 25:11:2035–26:08:2036

प्रत्यंतर	से
वृष	25:11:2035
मिथुन	18:12:2035
कर्क	10:01:2036
सिहं	02:02:2036
कन्या	25:02:2036
तुला	19:03:2036
वृश्चिक	11:04:2036
धनु	03:05:2036
मकर	26:05:2036
कुम्भ	18:06:2036
मीन	11:07:2036
मेष	03:08:2036

मिथुन अन्तर 26:08:2036–27:05:2037

प्रत्यंतर	से
मिथुन	26:08:2036
कर्क	18:09:2036
सिहं	11:10:2036
कन्या	02:11:2036
तुला	25:11:2036
वृश्चिक	18:12:2036
धनु	10:01:2037
मकर	02:02:2037
कुम्भ	25:02:2037
मीन	20:03:2037
मेष	11:04:2037
वृष	04:05:2037

कर्क अन्तर 27:05:2037–25:02:2038

प्रत्यंतर	से
कर्क	27:05:2037
सिहं	19:06:2037
कन्या	12:07:2037
तुला	03:08:2037
वृश्चिक	26:08:2037
धनु	18:09:2037
मकर	11:10:2037
कुम्भ	03:11:2037
मीन	25:11:2037
मेष	18:12:2037
वृष	10:01:2038
मिथुन	02:02:2038

सिहं अन्तर 25:02:2038–25:11:2038

प्रत्यंतर	से
सिहं	25:02:2038
कन्या	20:03:2038
तुला	11:04:2038
वृश्चिक	04:05:2038
धनु	27:05:2038
मकर	19:06:2038
कुम्भ	12:07:2038
मीन	03:08:2038
मेष	26:08:2038
वृष	18:09:2038
मिथुन	11:10:2038
कर्क	03:11:2038

कन्या अन्तर 25:11:2038–26:08:2039

प्रत्यंतर	से
कन्या	25:11:2038
तुला	18:12:2038
वृश्चिक	10:01:2039
धनु	02:02:2039
मकर	25:02:2039
कुम्भ	20:03:2039
मीन	11:04:2039
मेष	04:05:2039
वृष	27:05:2039
मिथुन	19:06:2039
कर्क	12:07:2039
सिहं	03:08:2039

तुला अन्तर 26:08:2039–26:05:2040

प्रत्यंतर	से
तुला	26:08:2039
वृश्चिक	18:09:2039
धनु	11:10:2039
मकर	03:11:2039
कुम्भ	25:11:2039
मीन	18:12:2039
मेष	10:01:2040
वृष	02:02:2040
मिथुन	25:02:2040
कर्क	19:03:2040
सिहं	11:04:2040
कन्या	03:05:2040

वृश्चिक अन्तर 26:05:2040–25:02:2041

प्रत्यंतर	से
वृश्चिक	26:05:2040
धनु	18:06:2040
मकर	11:07:2040
कुम्भ	03:08:2040
मीन	26:08:2040
मेष	18:09:2040
वृष	11:10:2040
मिथुन	02:11:2040
कर्क	25:11:2040
सिहं	18:12:2040
कन्या	10:01:2041
तुला	02:02:2041

धनु अन्तर 25:02:2041–25:11:2041

प्रत्यंतर	से
धनु	25:02:2041
मकर	20:03:2041
कुम्भ	11:04:2041
मीन	04:05:2041
मेष	27:05:2041
वृष	19:06:2041
मिथुन	12:07:2041
कर्क	03:08:2041
सिहं	26:08:2041
कन्या	18:09:2041
तुला	11:10:2041
वृश्चिक	03:11:2041

चतुर्शीतिसमा दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय चतुर्शीतिसमा भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : गुरू : 6 व. 7 मा. 1 दि.

आपकी कुण्डली में चतुर्शीतिसमा दशा पद्धति (84 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

क0 स0		ग्रह दशा	अवधि	से ---------- तक
1	♃	गुरू दशा	6 y.7 m.1 d.	18:12:1973 -- 19:07:1980
2	♀	शुक्र दशा	12 y.0 m.0 d.	19:07:1980 -- 19:07:1992
3	♄	शनि दशा	12 y.0 m.0 d.	19:07:1992 -- 19:07:2004
4	☉	सूर्य दशा	12 y.0 m.0 d.	19:07:2004 -- 19:07:2016
5	☽	चन्द्रमा दशा	12 y.0 m.0 d.	19:07:2016 -- 19:07:2028
6	♂	मंगल दशा	12 y.0 m.0 d.	19:07:2028 -- 19:07:2040
7	☿	बुध दशा	12 y.0 m.0 d.	19:07:2040 -- 19:07:2052

चतुर्शीतिसमा दशा की अन्तर्दशाए

गुरू दशा
18:12:1973 -- 19:07:1980

अन्तर्दशा	से
गुरू	
शुक्र	
शनि	
सूर्य	10:09:1973
चन्द्रमा	28:05:1975
मंगल	13:02:1977
बुध	01:11:1978

शुक्र दशा
19:07:1980 -- 19:07:1992

अन्तर्दशा	से
शुक्र	19:07:1980
शनि	06:04:1982
सूर्य	23:12:1983
चन्द्रमा	10:09:1985
मंगल	28:05:1987
बुध	13:02:1989
गुरू	01:11:1990

शनि दशा
19:07:1992 -- 19:07:2004

अन्तर्दशा	से
शनि	19:07:1992
सूर्य	06:04:1994
चन्द्रमा	23:12:1995
मंगल	10:09:1997
बुध	28:05:1999
गुरू	13:02:2001
शुक्र	01:11:2002

सूर्य दशा
19:07:2004 -- 19:07:2016

अन्तर्दशा	से
सूर्य	19:07:2004
चन्द्रमा	06:04:2006
मंगल	23:12:2007
बुध	10:09:2009
गुरू	28:05:2011
शुक्र	13:02:2013
शनि	01:11:2014

चन्द्रमा दशा
19:07:2016 -- 19:07:2028

अन्तर्दशा	से
चन्द्रमा	19:07:2016
मंगल	06:04:2018
बुध	23:12:2019
गुरू	10:09:2021
शुक्र	28:05:2023
शनि	13:02:2025
सूर्य	01:11:2026

मंगल दशा
19:07:2028 -- 19:07:2040

अन्तर्दशा	से
मंगल	19:07:2028
बुध	06:04:2030
गुरू	23:12:2031
शुक्र	10:09:2033
शनि	28:05:2035
सूर्य	13:02:2037
चन्द्रमा	01:11:2038

बुध दशा
19:07:2040 -- 19:07:2052

अन्तर्दशा	से
बुध	19:07:2040
गुरू	06:04:2042
शुक्र	23:12:2043
शनि	10:09:2045
सूर्य	28:05:2047
चन्द्रमा	13:02:2049
मंगल	01:11:2050

चतुर्शीतिसमा दशा
(प्रचलित विभाजन विधि)

गुरू दशा (18:12:1973 —— 19:07:1980)

आपकी कुण्डली में चतुर्शीतिसमा दशा पद्धति (84 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

प्रत्यंतर	से

प्रत्यंतर	से

प्रत्यंतर	से

सूर्य अन्तर
18:12:1973 —— 28:05:1975

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	18:12:1973
मंगल	07:03:1974
बुध	05:06:1974
गुरू	02:09:1974
शुक्र	30:11:1974
शनि	28:02:1975

चन्द्रमा अन्तर
28:05:1975 —— 13:02:1977

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	28:05:1975
मंगल	26:08:1975
बुध	23:11:1975
गुरू	21:02:1976
शुक्र	20:05:1976
शनि	18:08:1976
सूर्य	15:11:1976

मंगल अन्तर
13:02:1977 —— 01:11:1978

प्रत्यंतर	से
मंगल	13:02:1977
बुध	13:05:1977
गुरू	11:08:1977
शुक्र	08:11:1977
शनि	06:02:1978
सूर्य	06:05:1978
चन्द्रमा	03:08:1978

बुध अन्तर
01:11:1978 —— 19:07:1980

प्रत्यंतर	से
बुध	01:11:1978
गुरू	29:01:1979
शुक्र	28:04:1979
शनि	27:07:1979
सूर्य	24:10:1979
चन्द्रमा	22:01:1980
मंगल	20:04:1980

For Mindsutra Software Technologies

चतुर्शीतिसमा दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

शुक्र दशा (19:07:1980 –– 19:07:1992)

आपकी कुण्डली में चतुर्शीतिसमा दशा पद्धति (84 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

शुक्र अन्तर
19:07:1980 –– 06:04:1982

प्रत्यंतर	से
शुक्र	19:07:1980
शनि	17:10:1980
सूर्य	14:01:1981
चन्द्रमा	14:04:1981
मंगल	12:07:1981
बुध	09:10:1981
गुरू	07:01:1982

शनि अन्तर
06:04:1982 –– 23:12:1983

प्रत्यंतर	से
शनि	06:04:1982
सूर्य	05:07:1982
चन्द्रमा	02:10:1982
मंगल	30:12:1982
बुध	30:03:1983
गुरू	27:06:1983
शुक्र	24:09:1983

सूर्य अन्तर
23:12:1983 –– 10:09:1985

प्रत्यंतर	से
सूर्य	23:12:1983
चन्द्रमा	21:03:1984
मंगल	19:06:1984
बुध	17:09:1984
गुरू	15:12:1984
शुक्र	15:03:1985
शनि	12:06:1985

चन्द्रमा अन्तर
10:09:1985 –– 28:05:1987

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	10:09:1985
मंगल	08:12:1985
बुध	07:03:1986
गुरू	05:06:1986
शुक्र	02:09:1986
शनि	30:11:1986
सूर्य	28:02:1987

मंगल अन्तर
28:05:1987 –– 13:02:1989

प्रत्यंतर	से
मंगल	28:05:1987
बुध	26:08:1987
गुरू	23:11:1987
शुक्र	21:02:1988
शनि	20:05:1988
सूर्य	18:08:1988
चन्द्रमा	15:11:1988

बुध अन्तर
13:02:1989 –– 01:11:1990

प्रत्यंतर	से
बुध	13:02:1989
गुरू	13:05:1989
शुक्र	11:08:1989
शनि	08:11:1989
सूर्य	06:02:1990
चन्द्रमा	06:05:1990
मंगल	03:08:1990

गुरू अन्तर
01:11:1990 –– 19:07:1992

प्रत्यंतर	से
गुरू	01:11:1990
शुक्र	29:01:1991
शनि	28:04:1991
सूर्य	27:07:1991
चन्द्रमा	24:10:1991
मंगल	22:01:1992
बुध	20:04:1992

चतुर्शीतिसमा दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

शनि दशा (19:07:1992 –– 19:07:2004)

आपकी कुण्डली में चतुर्शीतिसमा दशा पद्धति (84 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

शनि अन्तर
19:07:1992 –– 06:04:1994

प्रत्यंतर	से
शनि	19:07:1992
सूर्य	17:10:1992
चन्द्रमा	14:01:1993
मंगल	14:04:1993
बुध	12:07:1993
गुरू	09:10:1993
शुक्र	07:01:1994

सूर्य अन्तर
06:04:1994 –– 23:12:1995

प्रत्यंतर	से
सूर्य	06:04:1994
चन्द्रमा	05:07:1994
मंगल	02:10:1994
बुध	30:12:1994
गुरू	30:03:1995
शुक्र	27:06:1995
शनि	24:09:1995

चन्द्रमा अन्तर
23:12:1995 –– 10:09:1997

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	23:12:1995
मंगल	21:03:1996
बुध	19:06:1996
गुरू	17:09:1996
शुक्र	15:12:1996
शनि	15:03:1997
सूर्य	12:06:1997

मंगल अन्तर
10:09:1997 –– 28:05:1999

प्रत्यंतर	से
मंगल	10:09:1997
बुध	08:12:1997
गुरू	07:03:1998
शुक्र	05:06:1998
शनि	02:09:1998
सूर्य	30:11:1998
चन्द्रमा	28:02:1999

बुध अन्तर
28:05:1999 –– 13:02:2001

प्रत्यंतर	से
बुध	28:05:1999
गुरू	26:08:1999
शुक्र	23:11:1999
शनि	21:02:2000
सूर्य	20:05:2000
चन्द्रमा	18:08:2000
मंगल	15:11:2000

गुरू अन्तर
13:02:2001 –– 01:11:2002

प्रत्यंतर	से
गुरू	13:02:2001
शुक्र	13:05:2001
शनि	11:08:2001
सूर्य	08:11:2001
चन्द्रमा	06:02:2002
मंगल	06:05:2002
बुध	03:08:2002

शुक्र अन्तर
01:11:2002 –– 19:07:2004

प्रत्यंतर	से
शुक्र	01:11:2002
शनि	29:01:2003
सूर्य	28:04:2003
चन्द्रमा	27:07:2003
मंगल	24:10:2003
बुध	22:01:2004
गुरू	20:04:2004

चतुर्शीतिसमा दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

सूर्य दशा (19:07:2004 –– 19:07:2016)

आपकी कुण्डली में चतुर्शीतिसमा दशा पद्धति (84 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

सूर्य अन्तर
19:07:2004 –– 06:04:2006

प्रत्यंतर	से
सूर्य	19:07:2004
चन्द्रमा	17:10:2004
मंगल	14:01:2005
बुध	14:04:2005
गुरू	12:07:2005
शुक्र	09:10:2005
शनि	07:01:2006

चन्द्रमा अन्तर
06:04:2006 –– 23:12:2007

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	06:04:2006
मंगल	05:07:2006
बुध	02:10:2006
गुरू	30:12:2006
शुक्र	30:03:2007
शनि	27:06:2007
सूर्य	24:09:2007

मंगल अन्तर
23:12:2007 –– 10:09:2009

प्रत्यंतर	से
मंगल	23:12:2007
बुध	21:03:2008
गुरू	19:06:2008
शुक्र	17:09:2008
शनि	15:12:2008
सूर्य	15:03:2009
चन्द्रमा	12:06:2009

बुध अन्तर
10:09:2009 –– 28:05:2011

प्रत्यंतर	से
बुध	10:09:2009
गुरू	08:12:2009
शुक्र	07:03:2010
शनि	05:06:2010
सूर्य	02:09:2010
चन्द्रमा	30:11:2010
मंगल	28:02:2011

गुरू अन्तर
28:05:2011 –– 13:02:2013

प्रत्यंतर	से
गुरू	28:05:2011
शुक्र	26:08:2011
शनि	23:11:2011
सूर्य	21:02:2012
चन्द्रमा	20:05:2012
मंगल	18:08:2012
बुध	15:11:2012

शुक्र अन्तर
13:02:2013 –– 01:11:2014

प्रत्यंतर	से
शुक्र	13:02:2013
शनि	13:05:2013
सूर्य	11:08:2013
चन्द्रमा	08:11:2013
मंगल	06:02:2014
बुध	06:05:2014
गुरू	03:08:2014

शनि अन्तर
01:11:2014 –– 19:07:2016

प्रत्यंतर	से
शनि	01:11:2014
सूर्य	29:01:2015
चन्द्रमा	28:04:2015
मंगल	27:07:2015
बुध	24:10:2015
गुरू	22:01:2016
शुक्र	20:04:2016

चतुर्शीतिसमा दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

चन्द्रमा दशा (19:07:2016 —— 19:07:2028)

आपकी कुण्डली में चतुर्शीतिसमा दशा पद्धति (84 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

चन्द्रमा अन्तर
19:07:2016 —— 06:04:2018

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	19:07:2016
मंगल	17:10:2016
बुध	14:01:2017
गुरू	14:04:2017
शुक्र	12:07:2017
शनि	09:10:2017
सूर्य	07:01:2018

मंगल अन्तर
06:04:2018 —— 23:12:2019

प्रत्यंतर	से
मंगल	06:04:2018
बुध	05:07:2018
गुरू	02:10:2018
शुक्र	30:12:2018
शनि	30:03:2019
सूर्य	27:06:2019
चन्द्रमा	24:09:2019

बुध अन्तर
23:12:2019 —— 10:09:2021

प्रत्यंतर	से
बुध	23:12:2019
गुरू	21:03:2020
शुक्र	19:06:2020
शनि	17:09:2020
सूर्य	15:12:2020
चन्द्रमा	15:03:2021
मंगल	12:06:2021

गुरू अन्तर
10:09:2021 —— 28:05:2023

प्रत्यंतर	से
गुरू	10:09:2021
शुक्र	08:12:2021
शनि	07:03:2022
सूर्य	05:06:2022
चन्द्रमा	02:09:2022
मंगल	30:11:2022
बुध	28:02:2023

शुक्र अन्तर
28:05:2023 —— 13:02:2025

प्रत्यंतर	से
शुक्र	28:05:2023
शनि	26:08:2023
सूर्य	23:11:2023
चन्द्रमा	21:02:2024
मंगल	20:05:2024
बुध	18:08:2024
गुरू	15:11:2024

शनि अन्तर
13:02:2025 —— 01:11:2026

प्रत्यंतर	से
शनि	13:02:2025
सूर्य	13:05:2025
चन्द्रमा	11:08:2025
मंगल	08:11:2025
बुध	06:02:2026
गुरू	06:05:2026
शुक्र	03:08:2026

सूर्य अन्तर
01:11:2026 —— 19:07:2028

प्रत्यंतर	से
सूर्य	01:11:2026
चन्द्रमा	29:01:2027
मंगल	28:04:2027
बुध	27:07:2027
गुरू	24:10:2027
शुक्र	22:01:2028
शनि	20:04:2028

चतुर्शीतिसमा दशा
(प्रचलित विभाजन विधि)

मंगल दशा (19:07:2028 –– 19:07:2040)

आपकी कुण्डली में चतुर्शीतिसमा दशा पद्धति (84 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

मंगल अन्तर
19:07:2028 –– 06:04:2030

प्रत्यंतर	से
मंगल	19:07:2028
बुध	17:10:2028
गुरू	14:01:2029
शुक्र	14:04:2029
शनि	12:07:2029
सूर्य	09:10:2029
चन्द्रमा	07:01:2030

बुध अन्तर
06:04:2030 –– 23:12:2031

प्रत्यंतर	से
बुध	06:04:2030
गुरू	05:07:2030
शुक्र	02:10:2030
शनि	30:12:2030
सूर्य	30:03:2031
चन्द्रमा	27:06:2031
मंगल	24:09:2031

गुरू अन्तर
23:12:2031 –– 10:09:2033

प्रत्यंतर	से
गुरू	23:12:2031
शुक्र	21:03:2032
शनि	19:06:2032
सूर्य	17:09:2032
चन्द्रमा	15:12:2032
मंगल	15:03:2033
बुध	12:06:2033

शुक्र अन्तर
10:09:2033 –– 28:05:2035

प्रत्यंतर	से
शुक्र	10:09:2033
शनि	08:12:2033
सूर्य	07:03:2034
चन्द्रमा	05:06:2034
मंगल	02:09:2034
बुध	30:11:2034
गुरू	28:02:2035

शनि अन्तर
28:05:2035 –– 13:02:2037

प्रत्यंतर	से
शनि	28:05:2035
सूर्य	26:08:2035
चन्द्रमा	23:11:2035
मंगल	21:02:2036
बुध	20:05:2036
गुरू	18:08:2036
शुक्र	15:11:2036

सूर्य अन्तर
13:02:2037 –– 01:11:2038

प्रत्यंतर	से
सूर्य	13:02:2037
चन्द्रमा	13:05:2037
मंगल	11:08:2037
बुध	08:11:2037
गुरू	06:02:2038
शुक्र	06:05:2038
शनि	03:08:2038

चन्द्रमा अन्तर
01:11:2038 –– 19:07:2040

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	01:11:2038
मंगल	29:01:2039
बुध	28:04:2039
गुरू	27:07:2039
शुक्र	24:10:2039
शनि	22:01:2040
सूर्य	20:04:2040

चतुर्शीतिसमा दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

बुध दशा (19:07:2040 —— 19:07:2052)

आपकी कुण्डली में चतुर्शीतिसमा दशा पद्धति (84 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

बुध अन्तर
19:07:2040 —— 06:04:2042

प्रत्यंतर	से
बुध	19:07:2040
गुरू	17:10:2040
शुक्र	14:01:2041
शनि	14:04:2041
सूर्य	12:07:2041
चन्द्रमा	09:10:2041
मंगल	07:01:2042

गुरू अन्तर
06:04:2042 —— 23:12:2043

प्रत्यंतर	से
गुरू	06:04:2042
शुक्र	05:07:2042
शनि	02:10:2042
सूर्य	30:12:2042
चन्द्रमा	30:03:2043
मंगल	27:06:2043
बुध	24:09:2043

शुक्र अन्तर
23:12:2043 —— 10:09:2045

प्रत्यंतर	से
शुक्र	23:12:2043
शनि	21:03:2044
सूर्य	19:06:2044
चन्द्रमा	17:09:2044
मंगल	15:12:2044
बुध	15:03:2045
गुरू	12:06:2045

शनि अन्तर
10:09:2045 —— 28:05:2047

प्रत्यंतर	से
शनि	10:09:2045
सूर्य	08:12:2045
चन्द्रमा	07:03:2046
मंगल	05:06:2046
बुध	02:09:2046
गुरू	30:11:2046
शुक्र	28:02:2047

सूर्य अन्तर
28:05:2047 —— 13:02:2049

प्रत्यंतर	से
सूर्य	28:05:2047
चन्द्रमा	26:08:2047
मंगल	23:11:2047
बुध	21:02:2048
गुरू	20:05:2048
शुक्र	18:08:2048
शनि	15:11:2048

चन्द्रमा अन्तर
13:02:2049 —— 01:11:2050

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	13:02:2049
मंगल	13:05:2049
बुध	11:08:2049
गुरू	08:11:2049
शुक्र	06:02:2050
शनि	06:05:2050
सूर्य	03:08:2050

मंगल अन्तर
01:11:2050 —— 19:07:2052

प्रत्यंतर	से
मंगल	01:11:2050
बुध	29:01:2051
गुरू	28:04:2051
शुक्र	27:07:2051
शनि	24:10:2051
सूर्य	22:01:2052
चन्द्रमा	20:04:2052

For Mindsutra Software Technologies

चतुर्शीतिसमा दशा

(अन्य विभाजन विधि)

जन्म के समय चतुर्शीतिसमा भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : गुरू : 6 व. 7 मा. 1 दि.

आपकी कुण्डली में चतुर्शीतिसमा दशा पद्धति (84 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

क0 स0		ग्रह दशा	अवधि	से ---------- तक
1	♃	गुरू दशा	6 y.7 m.1 d.	18:12:1973 -- 19:07:1980
2	♀	शुक्र दशा	12 y.0 m.0 d.	19:07:1980 -- 19:07:1992
3	♄	शनि दशा	12 y.0 m.0 d.	19:07:1992 -- 19:07:2004
4	☉	सूर्य दशा	12 y.0 m.0 d.	19:07:2004 -- 19:07:2016
5	☽	चन्द्रमा दशा	12 y.0 m.0 d.	19:07:2016 -- 19:07:2028
6	♂	मंगल दशा	12 y.0 m.0 d.	19:07:2028 -- 19:07:2040
7	☿	बुध दशा	12 y.0 m.0 d.	19:07:2040 -- 19:07:2052

चतुर्शीतिसमा दशा की अन्तर्दशाए

गुरू दशा
18:12:1973–19:07:1980

अन्तर्दशा	से
मकर	
कुम्भ	
मीन	
मेष	
वृष	
मिथुन	19:07:1973
कर्क	19:07:1974
सिहं	19:07:1975
कन्या	19:07:1976
तुला	19:07:1977
वृश्चिक	19:07:1978
धनु	19:07:1979

शुक्र दशा
19:07:1980–19:07:1992

अन्तर्दशा	से
मकर	19:07:1980
कुम्भ	19:07:1981
मीन	19:07:1982
मेष	19:07:1983
वृष	19:07:1984
मिथुन	19:07:1985
कर्क	19:07:1986
सिहं	19:07:1987
कन्या	19:07:1988
तुला	19:07:1989
वृश्चिक	19:07:1990
धनु	19:07:1991

शनि दशा
19:07:1992–19:07:2004

अन्तर्दशा	से
मिथुन	19:07:1992
कर्क	19:07:1993
सिहं	19:07:1994
कन्या	19:07:1995
तुला	19:07:1996
वृश्चिक	19:07:1997
धनु	19:07:1998
मकर	19:07:1999
कुम्भ	19:07:2000
मीन	19:07:2001
मेष	19:07:2002
वृष	19:07:2003

सूर्य दशा
19:07:2004–19:07:2016

अन्तर्दशा	से
धनु	19:07:2004
मकर	19:07:2005
कुम्भ	19:07:2006
मीन	19:07:2007
मेष	19:07:2008
वृष	19:07:2009
मिथुन	19:07:2010
कर्क	19:07:2011
सिहं	19:07:2012
कन्या	19:07:2013
तुला	19:07:2014
वृश्चिक	19:07:2015

चन्द्रमा दशा
19:07:2016–19:07:2028

अन्तर्दशा	से
कन्या	19:07:2016
तुला	19:07:2017
वृश्चिक	19:07:2018
धनु	19:07:2019
मकर	19:07:2020
कुम्भ	19:07:2021
मीन	19:07:2022
मेष	19:07:2023
वृष	19:07:2024
मिथुन	19:07:2025
कर्क	19:07:2026
सिहं	19:07:2027

मंगल दशा
19:07:2028–19:07:2040

अन्तर्दशा	से
मेष	19:07:2028
वृष	19:07:2029
मिथुन	19:07:2030
कर्क	19:07:2031
सिहं	19:07:2032
कन्या	19:07:2033
तुला	19:07:2034
वृश्चिक	19:07:2035
धनु	19:07:2036
मकर	19:07:2037
कुम्भ	19:07:2038
मीन	19:07:2039

बुध दशा
19:07:2040–19:07:2052

अन्तर्दशा	से
वृश्चिक	19:07:2040
धनु	19:07:2041
मकर	19:07:2042
कुम्भ	19:07:2043
मीन	19:07:2044
मेष	19:07:2045
वृष	19:07:2046
मिथुन	19:07:2047
कर्क	19:07:2048
सिहं	19:07:2049
कन्या	19:07:2050
तुला	19:07:2051

चतुर्शीतिसमा दशा

(अन्य विभाजन विधि)

गुरू दशा (18:12:1973 –– 19:07:1980)

आपकी कुण्डली में चतुर्शीतिसमा दशा पद्धति (84 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

प्रत्यंतर	से

प्रत्यंतर	से

प्रत्यंतर	से

प्रत्यंतर	से

प्रत्यंतर	से

मिथुन अन्तर
18:12:1973–19:07:1974

प्रत्यंतर	से
तुला	18:12:1973
वृश्चिक	18:12:1973
धनु	18:01:1974
मकर	17:02:1974
कुम्भ	20:03:1974
मीन	19:04:1974
मेष	20:05:1974
वृष	19:06:1974

कर्क अन्तर
19:07:1974–19:07:1975

प्रत्यंतर	से
कर्क	19:07:1974
सिहं	19:08:1974
कन्या	18:09:1974
तुला	19:10:1974
वृश्चिक	18:11:1974
धनु	18:12:1974
मकर	18:01:1975
कुम्भ	17:02:1975
मीन	20:03:1975
मेष	19:04:1975
वृष	20:05:1975
मिथुन	19:06:1975

सिहं अन्तर
19:07:1975–19:07:1976

प्रत्यंतर	से
सिहं	19:07:1975
कन्या	19:08:1975
तुला	18:09:1975
वृश्चिक	19:10:1975
धनु	18:11:1975
मकर	18:12:1975
कुम्भ	18:01:1976
मीन	17:02:1976
मेष	19:03:1976
वृष	18:04:1976
मिथुन	19:05:1976
कर्क	18:06:1976

कन्या अन्तर
19:07:1976–19:07:1977

प्रत्यंतर	से
कन्या	19:07:1976
तुला	18:08:1976
वृश्चिक	18:09:1976
धनु	18:10:1976
मकर	18:11:1976
कुम्भ	18:12:1976
मीन	18:01:1977
मेष	17:02:1977
वृष	20:03:1977
मिथुन	19:04:1977
कर्क	20:05:1977
सिहं	19:06:1977

तुला अन्तर
19:07:1977–19:07:1978

प्रत्यंतर	से
तुला	19:07:1977
वृश्चिक	19:08:1977
धनु	18:09:1977
मकर	19:10:1977
कुम्भ	18:11:1977
मीन	18:12:1977
मेष	18:01:1978
वृष	17:02:1978
मिथुन	20:03:1978
कर्क	19:04:1978
सिहं	20:05:1978
कन्या	19:06:1978

वृश्चिक अन्तर
19:07:1978–19:07:1979

प्रत्यंतर	से
वृश्चिक	19:07:1978
धनु	19:08:1978
मकर	18:09:1978
कुम्भ	19:10:1978
मीन	18:11:1978
मेष	18:12:1978
वृष	18:01:1979
मिथुन	17:02:1979
कर्क	20:03:1979
सिहं	19:04:1979
कन्या	20:05:1979
तुला	19:06:1979

धनु अन्तर
19:07:1979–19:07:1980

प्रत्यंतर	से
धनु	19:07:1979
मकर	19:08:1979
कुम्भ	18:09:1979
मीन	19:10:1979
मेष	18:11:1979
वृष	18:12:1979
मिथुन	18:01:1980
कर्क	17:02:1980
सिहं	19:03:1980
कन्या	18:04:1980
तुला	19:05:1980
वृश्चिक	18:06:1980

चतुर्शीतिसमा दशा

(अन्य विभाजन विधि)

शुक्र दशा (19:07:1980 —— 19:07:1992)

आपकी कुण्डली में चतुर्शीतिसमा दशा पद्धति (84 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

मकर अन्तर
19:07:1980—19:07:1981

प्रत्यंतर	से
मकर	19:07:1980
कुम्भ	18:08:1980
मीन	18:09:1980
मेष	18:10:1980
वृष	18:11:1980
मिथुन	18:12:1980
कर्क	18:01:1981
सिहं	17:02:1981
कन्या	20:03:1981
तुला	19:04:1981
वृश्चिक	20:05:1981
धनु	19:06:1981

कुम्भ अन्तर
19:07:1981—19:07:1982

प्रत्यंतर	से
कुम्भ	19:07:1981
मीन	19:08:1981
मेष	18:09:1981
वृष	19:10:1981
मिथुन	18:11:1981
कर्क	18:12:1981
सिहं	18:01:1982
कन्या	17:02:1982
तुला	20:03:1982
वृश्चिक	19:04:1982
धनु	20:05:1982
मकर	19:06:1982

मीन अन्तर
19:07:1982—19:07:1983

प्रत्यंतर	से
मीन	19:07:1982
मेष	19:08:1982
वृष	18:09:1982
मिथुन	19:10:1982
कर्क	18:11:1982
सिहं	18:12:1982
कन्या	18:01:1983
तुला	17:02:1983
वृश्चिक	20:03:1983
धनु	19:04:1983
मकर	20:05:1983
कुम्भ	19:06:1983

मेष अन्तर
19:07:1983—19:07:1984

प्रत्यंतर	से
मेष	19:07:1983
वृष	19:08:1983
मिथुन	18:09:1983
कर्क	19:10:1983
सिहं	18:11:1983
कन्या	18:12:1983
तुला	18:01:1984
वृश्चिक	17:02:1984
धनु	19:03:1984
मकर	18:04:1984
कुम्भ	19:05:1984
मीन	18:06:1984

वृष अन्तर
19:07:1984—19:07:1985

प्रत्यंतर	से
वृष	19:07:1984
मिथुन	18:08:1984
कर्क	18:09:1984
सिहं	18:10:1984
कन्या	18:11:1984
तुला	18:12:1984
वृश्चिक	18:01:1985
धनु	17:02:1985
मकर	20:03:1985
कुम्भ	19:04:1985
मीन	20:05:1985
मेष	19:06:1985

मिथुन अन्तर
19:07:1985—19:07:1986

प्रत्यंतर	से
मिथुन	19:07:1985
कर्क	19:08:1985
सिहं	18:09:1985
कन्या	19:10:1985
तुला	18:11:1985
वृश्चिक	18:12:1985
धनु	18:01:1986
मकर	17:02:1986
कुम्भ	20:03:1986
मीन	19:04:1986
मेष	20:05:1986
वृष	19:06:1986

कर्क अन्तर
19:07:1986—19:07:1987

प्रत्यंतर	से
कर्क	19:07:1986
सिहं	19:08:1986
कन्या	18:09:1986
तुला	19:10:1986
वृश्चिक	18:11:1986
धनु	18:12:1986
मकर	18:01:1987
कुम्भ	17:02:1987
मीन	20:03:1987
मेष	19:04:1987
वृष	20:05:1987
मिथुन	19:06:1987

सिहं अन्तर
19:07:1987—19:07:1988

प्रत्यंतर	से
सिहं	19:07:1987
कन्या	19:08:1987
तुला	18:09:1987
वृश्चिक	19:10:1987
धनु	18:11:1987
मकर	18:12:1987
कुम्भ	18:01:1988
मीन	17:02:1988
मेष	19:03:1988
वृष	18:04:1988
मिथुन	19:05:1988
कर्क	18:06:1988

कन्या अन्तर
19:07:1988—19:07:1989

प्रत्यंतर	से
कन्या	19:07:1988
तुला	18:08:1988
वृश्चिक	18:09:1988
धनु	18:10:1988
मकर	18:11:1988
कुम्भ	18:12:1988
मीन	18:01:1989
मेष	17:02:1989
वृष	20:03:1989
मिथुन	19:04:1989
कर्क	20:05:1989
सिहं	19:06:1989

तुला अन्तर
19:07:1989—19:07:1990

प्रत्यंतर	से
तुला	19:07:1989
वृश्चिक	19:08:1989
धनु	18:09:1989
मकर	19:10:1989
कुम्भ	18:11:1989
मीन	18:12:1989
मेष	18:01:1990
वृष	17:02:1990
मिथुन	20:03:1990
कर्क	19:04:1990
सिहं	20:05:1990
कन्या	19:06:1990

वृश्चिक अन्तर
19:07:1990—19:07:1991

प्रत्यंतर	से
वृश्चिक	19:07:1990
धनु	19:08:1990
मकर	18:09:1990
कुम्भ	19:10:1990
मीन	18:11:1990
मेष	18:12:1990
वृष	18:01:1991
मिथुन	17:02:1991
कर्क	20:03:1991
सिहं	19:04:1991
कन्या	20:05:1991
तुला	19:06:1991

धनु अन्तर
19:07:1991—19:07:1992

प्रत्यंतर	से
धनु	19:07:1991
मकर	19:08:1991
कुम्भ	18:09:1991
मीन	19:10:1991
मेष	18:11:1991
वृष	18:12:1991
मिथुन	18:01:1992
कर्क	17:02:1992
सिहं	19:03:1992
कन्या	18:04:1992
तुला	19:05:1992
वृश्चिक	18:06:1992

चतुर्शीतिसमा दशा

(अन्य विभाजन विधि)

शनि दशा (19:07:1992 —— 19:07:2004)

आपकी कुण्डली में चतुर्शीतिसमा दशा पद्धति (84 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

मिथुन अन्तर 19:07:1992—19:07:1993

प्रत्यंतर	से
मिथुन	19:07:1992
कर्क	18:08:1992
सिहं	18:09:1992
कन्या	18:10:1992
तुला	18:11:1992
वृश्चिक	18:12:1992
धनु	18:01:1993
मकर	17:02:1993
कुम्भ	20:03:1993
मीन	19:04:1993
मेष	20:05:1993
वृष	19:06:1993

कर्क अन्तर 19:07:1993—19:07:1994

प्रत्यंतर	से
कर्क	19:07:1993
सिहं	19:08:1993
कन्या	18:09:1993
तुला	19:10:1993
वृश्चिक	18:11:1993
धनु	18:12:1993
मकर	18:01:1994
कुम्भ	17:02:1994
मीन	20:03:1994
मेष	19:04:1994
वृष	20:05:1994
मिथुन	19:06:1994

सिहं अन्तर 19:07:1994—19:07:1995

प्रत्यंतर	से
सिहं	19:07:1994
कन्या	19:08:1994
तुला	18:09:1994
वृश्चिक	19:10:1994
धनु	18:11:1994
मकर	18:12:1994
कुम्भ	18:01:1995
मीन	17:02:1995
मेष	20:03:1995
वृष	19:04:1995
मिथुन	20:05:1995
कर्क	19:06:1995

कन्या अन्तर 19:07:1995—19:07:1996

प्रत्यंतर	से
कन्या	19:07:1995
तुला	19:08:1995
वृश्चिक	18:09:1995
धनु	19:10:1995
मकर	18:11:1995
कुम्भ	18:12:1995
मीन	18:01:1996
मेष	17:02:1996
वृष	19:03:1996
मिथुन	18:04:1996
कर्क	19:05:1996
सिहं	18:06:1996

तुला अन्तर 19:07:1996—19:07:1997

प्रत्यंतर	से
तुला	19:07:1996
वृश्चिक	18:08:1996
धनु	18:09:1996
मकर	18:10:1996
कुम्भ	18:11:1996
मीन	18:12:1996
मेष	18:01:1997
वृष	17:02:1997
मिथुन	20:03:1997
कर्क	19:04:1997
सिहं	20:05:1997
कन्या	19:06:1997

वृश्चिक अन्तर 19:07:1997—19:07:1998

प्रत्यंतर	से
वृश्चिक	19:07:1997
धनु	19:08:1997
मकर	18:09:1997
कुम्भ	19:10:1997
मीन	18:11:1997
मेष	18:12:1997
वृष	18:01:1998
मिथुन	17:02:1998
कर्क	20:03:1998
सिहं	19:04:1998
कन्या	20:05:1998
तुला	19:06:1998

धनु अन्तर 19:07:1998—19:07:1999

प्रत्यंतर	से
धनु	19:07:1998
मकर	19:08:1998
कुम्भ	18:09:1998
मीन	19:10:1998
मेष	18:11:1998
वृष	18:12:1998
मिथुन	18:01:1999
कर्क	17:02:1999
सिहं	20:03:1999
कन्या	19:04:1999
तुला	20:05:1999
वृश्चिक	19:06:1999

मकर अन्तर 19:07:1999—19:07:2000

प्रत्यंतर	से
मकर	19:07:1999
कुम्भ	19:08:1999
मीन	18:09:1999
मेष	19:10:1999
वृष	18:11:1999
मिथुन	18:12:1999
कर्क	18:01:2000
सिहं	17:02:2000
कन्या	19:03:2000
तुला	18:04:2000
वृश्चिक	19:05:2000
धनु	18:06:2000

कुम्भ अन्तर 19:07:2000—19:07:2001

प्रत्यंतर	से
कुम्भ	19:07:2000
मीन	18:08:2000
मेष	18:09:2000
वृष	18:10:2000
मिथुन	18:11:2000
कर्क	18:12:2000
सिहं	18:01:2001
कन्या	17:02:2001
तुला	20:03:2001
वृश्चिक	19:04:2001
धनु	20:05:2001
मकर	19:06:2001

मीन अन्तर 19:07:2001—19:07:2002

प्रत्यंतर	से
मीन	19:07:2001
मेष	19:08:2001
वृष	18:09:2001
मिथुन	19:10:2001
कर्क	18:11:2001
सिहं	18:12:2001
कन्या	18:01:2002
तुला	17:02:2002
वृश्चिक	20:03:2002
धनु	19:04:2002
मकर	20:05:2002
कुम्भ	19:06:2002

मेष अन्तर 19:07:2002—19:07:2003

प्रत्यंतर	से
मेष	19:07:2002
वृष	19:08:2002
मिथुन	18:09:2002
कर्क	19:10:2002
सिहं	18:11:2002
कन्या	18:12:2002
तुला	18:01:2003
वृश्चिक	17:02:2003
धनु	20:03:2003
मकर	19:04:2003
कुम्भ	20:05:2003
मीन	19:06:2003

वृष अन्तर 19:07:2003—19:07:2004

प्रत्यंतर	से
वृष	19:07:2003
मिथुन	19:08:2003
कर्क	18:09:2003
सिहं	19:10:2003
कन्या	18:11:2003
तुला	18:12:2003
वृश्चिक	18:01:2004
धनु	17:02:2004
मकर	19:03:2004
कुम्भ	18:04:2004
मीन	19:05:2004
मेष	18:06:2004

चतुर्शीतिसमा दशा

(अन्य विभाजन विधि)

सूर्य दशा (19:07:2004 –– 19:07:2016)

आपकी कुण्डली में चतुर्शीतिसमा दशा पद्धति (84 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

धनु अन्तर 19:07:2004–19:07:2005	
प्रत्यंतर	से
धनु	19:07:2004
मकर	18:08:2004
कुम्भ	18:09:2004
मीन	18:10:2004
मेष	18:11:2004
वृष	18:12:2004
मिथुन	18:01:2005
कर्क	17:02:2005
सिहं	20:03:2005
कन्या	19:04:2005
तुला	20:05:2005
वृश्चिक	19:06:2005

मकर अन्तर 19:07:2005–19:07:2006	
प्रत्यंतर	से
मकर	19:07:2005
कुम्भ	19:08:2005
मीन	18:09:2005
मेष	19:10:2005
वृष	18:11:2005
मिथुन	18:12:2005
कर्क	18:01:2006
सिहं	17:02:2006
कन्या	20:03:2006
तुला	19:04:2006
वृश्चिक	20:05:2006
धनु	19:06:2006

कुम्भ अन्तर 19:07:2006–19:07:2007	
प्रत्यंतर	से
कुम्भ	19:07:2006
मीन	19:08:2006
मेष	18:09:2006
वृष	19:10:2006
मिथुन	18:11:2006
कर्क	18:12:2006
सिहं	18:01:2007
कन्या	17:02:2007
तुला	20:03:2007
वृश्चिक	19:04:2007
धनु	20:05:2007
मकर	19:06:2007

मीन अन्तर 19:07:2007–19:07:2008	
प्रत्यंतर	से
मीन	19:07:2007
मेष	19:08:2007
वृष	18:09:2007
मिथुन	19:10:2007
कर्क	18:11:2007
सिहं	18:12:2007
कन्या	18:01:2008
तुला	17:02:2008
वृश्चिक	19:03:2008
धनु	18:04:2008
मकर	19:05:2008
कुम्भ	18:06:2008

मेष अन्तर 19:07:2008–19:07:2009	
प्रत्यंतर	से
मेष	19:07:2008
वृष	18:08:2008
मिथुन	18:09:2008
कर्क	18:10:2008
सिहं	18:11:2008
कन्या	18:12:2008
तुला	18:01:2009
वृश्चिक	17:02:2009
धनु	20:03:2009
मकर	19:04:2009
कुम्भ	20:05:2009
मीन	19:06:2009

वृष अन्तर 19:07:2009–19:07:2010	
प्रत्यंतर	से
वृष	19:07:2009
मिथुन	19:08:2009
कर्क	18:09:2009
सिहं	19:10:2009
कन्या	18:11:2009
तुला	18:12:2009
वृश्चिक	18:01:2010
धनु	17:02:2010
मकर	20:03:2010
कुम्भ	19:04:2010
मीन	20:05:2010
मेष	19:06:2010

मिथुन अन्तर 19:07:2010–19:07:2011	
प्रत्यंतर	से
मिथुन	19:07:2010
कर्क	19:08:2010
सिहं	18:09:2010
कन्या	19:10:2010
तुला	18:11:2010
वृश्चिक	18:12:2010
धनु	18:01:2011
मकर	17:02:2011
कुम्भ	20:03:2011
मीन	19:04:2011
मेष	20:05:2011
वृष	19:06:2011

कर्क अन्तर 19:07:2011–19:07:2012	
प्रत्यंतर	से
कर्क	19:07:2011
सिहं	19:08:2011
कन्या	18:09:2011
तुला	19:10:2011
वृश्चिक	18:11:2011
धनु	18:12:2011
मकर	18:01:2012
कुम्भ	17:02:2012
मीन	19:03:2012
मेष	18:04:2012
वृष	19:05:2012
मिथुन	18:06:2012

सिहं अन्तर 19:07:2012–19:07:2013	
प्रत्यंतर	से
सिहं	19:07:2012
कन्या	18:08:2012
तुला	18:09:2012
वृश्चिक	18:10:2012
धनु	18:11:2012
मकर	18:12:2012
कुम्भ	18:01:2013
मीन	17:02:2013
मेष	20:03:2013
वृष	19:04:2013
मिथुन	20:05:2013
कर्क	19:06:2013

कन्या अन्तर 19:07:2013–19:07:2014	
प्रत्यंतर	से
कन्या	19:07:2013
तुला	19:08:2013
वृश्चिक	18:09:2013
धनु	19:10:2013
मकर	18:11:2013
कुम्भ	18:12:2013
मीन	18:01:2014
मेष	17:02:2014
वृष	20:03:2014
मिथुन	19:04:2014
कर्क	20:05:2014
सिहं	19:06:2014

तुला अन्तर 19:07:2014–19:07:2015	
प्रत्यंतर	से
तुला	19:07:2014
वृश्चिक	19:08:2014
धनु	18:09:2014
मकर	19:10:2014
कुम्भ	18:11:2014
मीन	18:12:2014
मेष	18:01:2015
वृष	17:02:2015
मिथुन	20:03:2015
कर्क	19:04:2015
सिहं	20:05:2015
कन्या	19:06:2015

वृश्चिक अन्तर 19:07:2015–19:07:2016	
प्रत्यंतर	से
वृश्चिक	19:07:2015
धनु	19:08:2015
मकर	18:09:2015
कुम्भ	19:10:2015
मीन	18:11:2015
मेष	18:12:2015
वृष	18:01:2016
मिथुन	17:02:2016
कर्क	19:03:2016
सिहं	18:04:2016
कन्या	19:05:2016
तुला	18:06:2016

चतुर्शीतिसमा दशा

(अन्य विभाजन विधि)

चन्द्रमा दशा (19:07:2016 —— 19:07:2028)

आपकी कुण्डली में चतुर्शीतिसमा दशा पद्धति (84 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

कन्या अन्तर
19:07:2016–19:07:2017

प्रत्यंतर	से
कन्या	19:07:2016
तुला	18:08:2016
वृश्चिक	18:09:2016
धनु	18:10:2016
मकर	18:11:2016
कुम्भ	18:12:2016
मीन	18:01:2017
मेष	17:02:2017
वृष	20:03:2017
मिथुन	19:04:2017
कर्क	20:05:2017
सिहं	19:06:2017

तुला अन्तर
19:07:2017–19:07:2018

प्रत्यंतर	से
तुला	19:07:2017
वृश्चिक	19:08:2017
धनु	18:09:2017
मकर	19:10:2017
कुम्भ	18:11:2017
मीन	18:12:2017
मेष	18:01:2018
वृष	17:02:2018
मिथुन	20:03:2018
कर्क	19:04:2018
सिहं	20:05:2018
कन्या	19:06:2018

वृश्चिक अन्तर
19:07:2018–19:07:2019

प्रत्यंतर	से
वृश्चिक	19:07:2018
धनु	19:08:2018
मकर	18:09:2018
कुम्भ	19:10:2018
मीन	18:11:2018
मेष	18:12:2018
वृष	18:01:2019
मिथुन	17:02:2019
कर्क	20:03:2019
सिहं	19:04:2019
कन्या	20:05:2019
तुला	19:06:2019

धनु अन्तर
19:07:2019–19:07:2020

प्रत्यंतर	से
धनु	19:07:2019
मकर	19:08:2019
कुम्भ	18:09:2019
मीन	19:10:2019
मेष	18:11:2019
वृष	18:12:2019
मिथुन	18:01:2020
कर्क	17:02:2020
सिहं	19:03:2020
कन्या	18:04:2020
तुला	19:05:2020
वृश्चिक	18:06:2020

मकर अन्तर
19:07:2020–19:07:2021

प्रत्यंतर	से
मकर	19:07:2020
कुम्भ	18:08:2020
मीन	18:09:2020
मेष	18:10:2020
वृष	18:11:2020
मिथुन	18:12:2020
कर्क	18:01:2021
सिहं	17:02:2021
कन्या	20:03:2021
तुला	19:04:2021
वृश्चिक	20:05:2021
धनु	19:06:2021

कुम्भ अन्तर
19:07:2021–19:07:2022

प्रत्यंतर	से
कुम्भ	19:07:2021
मीन	19:08:2021
मेष	18:09:2021
वृष	19:10:2021
मिथुन	18:11:2021
कर्क	18:12:2021
सिहं	18:01:2022
कन्या	17:02:2022
तुला	20:03:2022
वृश्चिक	19:04:2022
धनु	20:05:2022
मकर	19:06:2022

मीन अन्तर
19:07:2022–19:07:2023

प्रत्यंतर	से
मीन	19:07:2022
मेष	19:08:2022
वृष	18:09:2022
मिथुन	19:10:2022
कर्क	18:11:2022
सिहं	18:12:2022
कन्या	18:01:2023
तुला	17:02:2023
वृश्चिक	20:03:2023
धनु	19:04:2023
मकर	20:05:2023
कुम्भ	19:06:2023

मेष अन्तर
19:07:2023–19:07:2024

प्रत्यंतर	से
मेष	19:07:2023
वृष	19:08:2023
मिथुन	18:09:2023
कर्क	19:10:2023
सिहं	18:11:2023
कन्या	18:12:2023
तुला	18:01:2024
वृश्चिक	17:02:2024
धनु	19:03:2024
मकर	18:04:2024
कुम्भ	19:05:2024
मीन	18:06:2024

वृष अन्तर
19:07:2024–19:07:2025

प्रत्यंतर	से
वृष	19:07:2024
मिथुन	18:08:2024
कर्क	18:09:2024
सिहं	18:10:2024
कन्या	18:11:2024
तुला	18:12:2024
वृश्चिक	18:01:2025
धनु	17:02:2025
मकर	20:03:2025
कुम्भ	19:04:2025
मीन	20:05:2025
मेष	19:06:2025

मिथुन अन्तर
19:07:2025–19:07:2026

प्रत्यंतर	से
मिथुन	19:07:2025
कर्क	19:08:2025
सिहं	18:09:2025
कन्या	19:10:2025
तुला	18:11:2025
वृश्चिक	18:12:2025
धनु	18:01:2026
मकर	17:02:2026
कुम्भ	20:03:2026
मीन	19:04:2026
मेष	20:05:2026
वृष	19:06:2026

कर्क अन्तर
19:07:2026–19:07:2027

प्रत्यंतर	से
कर्क	19:07:2026
सिहं	19:08:2026
कन्या	18:09:2026
तुला	19:10:2026
वृश्चिक	18:11:2026
धनु	18:12:2026
मकर	18:01:2027
कुम्भ	17:02:2027
मीन	20:03:2027
मेष	19:04:2027
वृष	20:05:2027
मिथुन	19:06:2027

सिहं अन्तर
19:07:2027–19:07:2028

प्रत्यंतर	से
सिहं	19:07:2027
कन्या	19:08:2027
तुला	18:09:2027
वृश्चिक	19:10:2027
धनु	18:11:2027
मकर	18:12:2027
कुम्भ	18:01:2028
मीन	17:02:2028
मेष	19:03:2028
वृष	18:04:2028
मिथुन	19:05:2028
कर्क	18:06:2028

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00AM POB-Ballia

चतुर्शीतिसमा दशा

(अन्य विभाजन विधि)

मंगल दशा (19:07:2028 –– 19:07:2040)

आपकी कुण्डली में चतुर्शीतिसमा दशा पद्धति (84 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

मेष अन्तर 19:07:2028–19:07:2029

प्रत्यंतर	से
मेष	19:07:2028
वृष	18:08:2028
मिथुन	18:09:2028
कर्क	18:10:2028
सिहं	18:11:2028
कन्या	18:12:2028
तुला	18:01:2029
वृश्चिक	17:02:2029
धनु	20:03:2029
मकर	19:04:2029
कुम्भ	20:05:2029
मीन	19:06:2029

वृष अन्तर 19:07:2029–19:07:2030

प्रत्यंतर	से
वृष	19:07:2029
मिथुन	19:08:2029
कर्क	18:09:2029
सिहं	19:10:2029
कन्या	18:11:2029
तुला	18:12:2029
वृश्चिक	18:01:2030
धनु	17:02:2030
मकर	20:03:2030
कुम्भ	19:04:2030
मीन	20:05:2030
मेष	19:06:2030

मिथुन अन्तर 19:07:2030–19:07:2031

प्रत्यंतर	से
मिथुन	19:07:2030
कर्क	19:08:2030
सिहं	18:09:2030
कन्या	19:10:2030
तुला	18:11:2030
वृश्चिक	18:12:2030
धनु	18:01:2031
मकर	17:02:2031
कुम्भ	20:03:2031
मीन	19:04:2031
मेष	20:05:2031
वृष	19:06:2031

कर्क अन्तर 19:07:2031–19:07:2032

प्रत्यंतर	से
कर्क	19:07:2031
सिहं	19:08:2031
कन्या	18:09:2031
तुला	19:10:2031
वृश्चिक	18:11:2031
धनु	18:12:2031
मकर	18:01:2032
कुम्भ	17:02:2032
मीन	19:03:2032
मेष	18:04:2032
वृष	19:05:2032
मिथुन	18:06:2032

सिहं अन्तर 19:07:2032–19:07:2033

प्रत्यंतर	से
सिहं	19:07:2032
कन्या	18:08:2032
तुला	18:09:2032
वृश्चिक	18:10:2032
धनु	18:11:2032
मकर	18:12:2032
कुम्भ	18:01:2033
मीन	17:02:2033
मेष	20:03:2033
वृष	19:04:2033
मिथुन	20:05:2033
कर्क	19:06:2033

कन्या अन्तर 19:07:2033–19:07:2034

प्रत्यंतर	से
कन्या	19:07:2033
तुला	19:08:2033
वृश्चिक	18:09:2033
धनु	19:10:2033
मकर	18:11:2033
कुम्भ	18:12:2033
मीन	18:01:2034
मेष	17:02:2034
वृष	20:03:2034
मिथुन	19:04:2034
कर्क	20:05:2034
सिहं	19:06:2034

तुला अन्तर 19:07:2034–19:07:2035

प्रत्यंतर	से
तुला	19:07:2034
वृश्चिक	19:08:2034
धनु	18:09:2034
मकर	19:10:2034
कुम्भ	18:11:2034
मीन	18:12:2034
मेष	18:01:2035
वृष	17:02:2035
मिथुन	20:03:2035
कर्क	19:04:2035
सिहं	20:05:2035
कन्या	19:06:2035

वृश्चिक अन्तर 19:07:2035–19:07:2036

प्रत्यंतर	से
वृश्चिक	19:07:2035
धनु	19:08:2035
मकर	18:09:2035
कुम्भ	19:10:2035
मीन	18:11:2035
मेष	18:12:2035
वृष	18:01:2036
मिथुन	17:02:2036
कर्क	19:03:2036
सिहं	18:04:2036
कन्या	19:05:2036
तुला	18:06:2036

धनु अन्तर 19:07:2036–19:07:2037

प्रत्यंतर	से
धनु	19:07:2036
मकर	18:08:2036
कुम्भ	18:09:2036
मीन	18:10:2036
मेष	18:11:2036
वृष	18:12:2036
मिथुन	18:01:2037
कर्क	17:02:2037
सिहं	20:03:2037
कन्या	19:04:2037
तुला	20:05:2037
वृश्चिक	19:06:2037

मकर अन्तर 19:07:2037–19:07:2038

प्रत्यंतर	से
मकर	19:07:2037
कुम्भ	19:08:2037
मीन	18:09:2037
मेष	19:10:2037
वृष	18:11:2037
मिथुन	18:12:2037
कर्क	18:01:2038
सिहं	17:02:2038
कन्या	20:03:2038
तुला	19:04:2038
वृश्चिक	20:05:2038
धनु	19:06:2038

कुम्भ अन्तर 19:07:2038–19:07:2039

प्रत्यंतर	से
कुम्भ	19:07:2038
मीन	19:08:2038
मेष	18:09:2038
वृष	19:10:2038
मिथुन	18:11:2038
कर्क	18:12:2038
सिहं	18:01:2039
कन्या	17:02:2039
तुला	20:03:2039
वृश्चिक	19:04:2039
धनु	20:05:2039
मकर	19:06:2039

मीन अन्तर 19:07:2039–19:07:2040

प्रत्यंतर	से
मीन	19:07:2039
मेष	19:08:2039
वृष	18:09:2039
मिथुन	19:10:2039
कर्क	18:11:2039
सिहं	18:12:2039
कन्या	18:01:2040
तुला	17:02:2040
वृश्चिक	19:03:2040
धनु	18:04:2040
मकर	19:05:2040
कुम्भ	18:06:2040

चतुर्शीतिसमा दशा

(अन्य विभाजन विधि)

बुध दशा (19:07:2040 —— 19:07:2052)

आपकी कुण्डली में चतुर्शीतिसमा दशा पद्धति (84 साल का चक्र) लागू नही हो रही है।

वृश्चिक अन्तर 19:07:2040—19:07:2041

प्रत्यंतर	से
वृश्चिक	19:07:2040
धनु	18:08:2040
मकर	18:09:2040
कुम्भ	18:10:2040
मीन	18:11:2040
मेष	18:12:2040
वृष	18:01:2041
मिथुन	17:02:2041
कर्क	20:03:2041
सिहं	19:04:2041
कन्या	20:05:2041
तुला	19:06:2041

धनु अन्तर 19:07:2041—19:07:2042

प्रत्यंतर	से
धनु	19:07:2041
मकर	19:08:2041
कुम्भ	18:09:2041
मीन	19:10:2041
मेष	18:11:2041
वृष	18:12:2041
मिथुन	18:01:2042
कर्क	17:02:2042
सिहं	20:03:2042
कन्या	19:04:2042
तुला	20:05:2042
वृश्चिक	19:06:2042

मकर अन्तर 19:07:2042—19:07:2043

प्रत्यंतर	से
मकर	19:07:2042
कुम्भ	19:08:2042
मीन	18:09:2042
मेष	19:10:2042
वृष	18:11:2042
मिथुन	18:12:2042
कर्क	18:01:2043
सिहं	17:02:2043
कन्या	20:03:2043
तुला	19:04:2043
वृश्चिक	20:05:2043
धनु	19:06:2043

कुम्भ अन्तर 19:07:2043—19:07:2044

प्रत्यंतर	से
कुम्भ	19:07:2043
मीन	19:08:2043
मेष	18:09:2043
वृष	19:10:2043
मिथुन	18:11:2043
कर्क	18:12:2043
सिहं	18:01:2044
कन्या	17:02:2044
तुला	19:03:2044
वृश्चिक	18:04:2044
धनु	19:05:2044
मकर	18:06:2044

मीन अन्तर 19:07:2044—19:07:2045

प्रत्यंतर	से
मीन	19:07:2044
मेष	18:08:2044
वृष	18:09:2044
मिथुन	18:10:2044
कर्क	18:11:2044
सिहं	18:12:2044
कन्या	18:01:2045
तुला	17:02:2045
वृश्चिक	20:03:2045
धनु	19:04:2045
मकर	20:05:2045
कुम्भ	19:06:2045

मेष अन्तर 19:07:2045—19:07:2046

प्रत्यंतर	से
मेष	19:07:2045
वृष	19:08:2045
मिथुन	18:09:2045
कर्क	19:10:2045
सिहं	18:11:2045
कन्या	18:12:2045
तुला	18:01:2046
वृश्चिक	17:02:2046
धनु	20:03:2046
मकर	19:04:2046
कुम्भ	20:05:2046
मीन	19:06:2046

वृष अन्तर 19:07:2046—19:07:2047

प्रत्यंतर	से
वृष	19:07:2046
मिथुन	19:08:2046
कर्क	18:09:2046
सिहं	19:10:2046
कन्या	18:11:2046
तुला	18:12:2046
वृश्चिक	18:01:2047
धनु	17:02:2047
मकर	20:03:2047
कुम्भ	19:04:2047
मीन	20:05:2047
मेष	19:06:2047

मिथुन अन्तर 19:07:2047—19:07:2048

प्रत्यंतर	से
मिथुन	19:07:2047
कर्क	19:08:2047
सिहं	18:09:2047
कन्या	19:10:2047
तुला	18:11:2047
वृश्चिक	18:12:2047
धनु	18:01:2048
मकर	17:02:2048
कुम्भ	19:03:2048
मीन	18:04:2048
मेष	19:05:2048
वृष	18:06:2048

कर्क अन्तर 19:07:2048—19:07:2049

प्रत्यंतर	से
कर्क	19:07:2048
सिहं	18:08:2048
कन्या	18:09:2048
तुला	18:10:2048
वृश्चिक	18:11:2048
धनु	18:12:2048
मकर	18:01:2049
कुम्भ	17:02:2049
मीन	20:03:2049
मेष	19:04:2049
वृष	20:05:2049
मिथुन	19:06:2049

सिहं अन्तर 19:07:2049—19:07:2050

प्रत्यंतर	से
सिहं	19:07:2049
कन्या	19:08:2049
तुला	18:09:2049
वृश्चिक	19:10:2049
धनु	18:11:2049
मकर	18:12:2049
कुम्भ	18:01:2050
मीन	17:02:2050
मेष	20:03:2050
वृष	19:04:2050
मिथुन	20:05:2050
कर्क	19:06:2050

कन्या अन्तर 19:07:2050—19:07:2051

प्रत्यंतर	से
कन्या	19:07:2050
तुला	19:08:2050
वृश्चिक	18:09:2050
धनु	19:10:2050
मकर	18:11:2050
कुम्भ	18:12:2050
मीन	18:01:2051
मेष	17:02:2051
वृष	20:03:2051
मिथुन	19:04:2051
कर्क	20:05:2051
सिहं	19:06:2051

तुला अन्तर 19:07:2051—19:07:2052

प्रत्यंतर	से
तुला	19:07:2051
वृश्चिक	19:08:2051
धनु	18:09:2051
मकर	19:10:2051
कुम्भ	18:11:2051
मीन	18:12:2051
मेष	18:01:2052
वृष	17:02:2052
मिथुन	19:03:2052
कर्क	18:04:2052
सिहं	19:05:2052
कन्या	18:06:2052

For Mindsutra Software Technologies

शताब्दिका दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय शताब्दिका भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : शनि : 16 व. 5 मा. 17 दि.

आपकी कुण्डली में लग्न वर्गोत्तम है (लग्न और नवांश लग्न एक है। आपकी कुण्डली में शताब्दिका दशा पद्धति (100 साल का चक्र) लागू हो रही है।

क0 स0		ग्रह दशा	अवधि	से ---------- तक
1	♄	शनि दशा	16 y.5 m.17 d.	18:12:1973 -- 05:06:1990
2	☉	सूर्य दशा	5 y.0 m.0 d.	05:06:1990 -- 05:06:1995
3	☽	चन्द्रमा दशा	5 y.0 m.0 d.	05:06:1995 -- 05:06:2000
4	♀	शुक्र दशा	10 y.0 m.0 d.	05:06:2000 -- 05:06:2010
5	☿	बुध दशा	10 y.0 m.0 d.	05:06:2010 -- 05:06:2020
6	♃	गुरू दशा	20 y.0 m.0 d.	05:06:2020 -- 05:06:2040
7	♂	मंगल दशा	20 y.0 m.0 d.	05:06:2040 -- 05:06:2060

शताब्दिका दशा की अन्तर्दशाए

शनि दशा
18:12:1973 --- 05:06:1990

अन्तर्दशा	से
शनि	
सूर्य	
चन्द्रमा	
शुक्र	05:06:1972
बुध	05:06:1975
गुरू	05:06:1978
मंगल	05:06:1984

सूर्य दशा
05:06:1990 --- 05:06:1995

अन्तर्दशा	से
सूर्य	05:06:1990
चन्द्रमा	04:09:1990
शुक्र	05:12:1990
बुध	05:06:1991
गुरू	05:12:1991
मंगल	05:12:1992
शनि	05:12:1993

चन्द्रमा दशा
05:06:1995 --- 05:06:2000

अन्तर्दशा	से
चन्द्रमा	05:06:1995
शुक्र	04:09:1995
बुध	05:03:1996
गुरू	04:09:1996
मंगल	04:09:1997
शनि	04:09:1998
सूर्य	05:03:2000

शुक्र दशा
05:06:2000 --- 05:06:2010

अन्तर्दशा	से
शुक्र	05:06:2000
बुध	05:06:2001
गुरू	05:06:2002
मंगल	05:06:2004
शनि	05:06:2006
सूर्य	05:06:2009
चन्द्रमा	05:12:2009

बुध दशा
05:06:2010 --- 05:06:2020

अन्तर्दशा	से
बुध	05:06:2010
गुरू	05:06:2011
मंगल	05:06:2013
शनि	05:06:2015
सूर्य	05:06:2018
चन्द्रमा	05:12:2018
शुक्र	05:06:2019

गुरू दशा
05:06:2020 --- 05:06:2040

अन्तर्दशा	से
गुरू	05:06:2020
मंगल	05:06:2024
शनि	05:06:2028
सूर्य	05:06:2034
चन्द्रमा	05:06:2035
शुक्र	05:06:2036
बुध	05:06:2038

मंगल दशा
05:06:2040 --- 05:06:2060

अन्तर्दशा	से
मंगल	05:06:2040
शनि	05:06:2044
सूर्य	05:06:2050
चन्द्रमा	05:06:2051
शुक्र	05:06:2052
बुध	05:06:2054
गुरू	05:06:2056

शताब्दिका दशा
(प्रचलित विभाजन विधि)

शनि दशा (18:12:1973 –– 05:06:1990)

आपकी कुण्डली में लग्न वर्गोत्तम है (लग्न और नवांश लग्न एक है। आपकी कुण्डली में शताब्दिका दशा पद्धति (100 साल का चक्र) लागू हो रही है।

प्रत्यंतर	से

प्रत्यंतर	से

प्रत्यंतर	से

शुक्र अन्तर
18:12:1973 –– 05:06:1975

प्रत्यंतर	से
मंगल	18:12:1973
शनि	24:03:1974
सूर्य	16:02:1975
चन्द्रमा	11:04:1975

बुध अन्तर
05:06:1975 –– 05:06:1978

प्रत्यंतर	से
बुध	05:06:1975
गुरू	23:09:1975
मंगल	29:04:1976
शनि	05:12:1976
सूर्य	29:10:1977
चन्द्रमा	23:12:1977
शुक्र	16:02:1978

गुरू अन्तर
05:06:1978 –– 05:06:1984

प्रत्यंतर	से
गुरू	05:06:1978
मंगल	17:08:1979
शनि	29:10:1980
सूर्य	17:08:1982
चन्द्रमा	05:12:1982
शुक्र	24:03:1983
बुध	29:10:1983

मंगल अन्तर
05:06:1984 –– 05:06:1990

प्रत्यंतर	से
मंगल	05:06:1984
शनि	17:08:1985
सूर्य	05:06:1987
चन्द्रमा	23:09:1987
शुक्र	10:01:1988
बुध	17:08:1988
गुरू	24:03:1989

शताब्दिका दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

सूर्य दशा (05:06:1990 —— 05:06:1995)

आपकी कुण्डली में लग्न वर्गोत्तम है (लग्न और नवांश लग्न एक है। आपकी कुण्डली में शताब्दिका दशा पद्धति (100 साल का चक्र) लागू हो रही है।

सूर्य अन्तर
05:06:1990 —— 04:09:1990

प्रत्यंतर	से
सूर्य	05:06:1990
चन्द्रमा	10:06:1990
शुक्र	14:06:1990
बुध	23:06:1990
गुरू	02:07:1990
मंगल	21:07:1990
शनि	08:08:1990

चन्द्रमा अन्तर
04:09:1990 —— 05:12:1990

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	04:09:1990
शुक्र	09:09:1990
बुध	18:09:1990
गुरू	27:09:1990
मंगल	15:10:1990
शनि	03:11:1990
सूर्य	30:11:1990

शुक्र अन्तर
05:12:1990 —— 05:06:1991

प्रत्यंतर	से
शुक्र	05:12:1990
बुध	23:12:1990
गुरू	10:01:1991
मंगल	16:02:1991
शनि	24:03:1991
सूर्य	18:05:1991
चन्द्रमा	27:05:1991

बुध अन्तर
05:06:1991 —— 05:12:1991

प्रत्यंतर	से
बुध	05:06:1991
गुरू	23:06:1991
मंगल	30:07:1991
शनि	04:09:1991
सूर्य	29:10:1991
चन्द्रमा	07:11:1991
शुक्र	16:11:1991

गुरू अन्तर
05:12:1991 —— 05:12:1992

प्रत्यंतर	से
गुरू	05:12:1991
मंगल	16:02:1992
शनि	29:04:1992
सूर्य	17:08:1992
चन्द्रमा	04:09:1992
शुक्र	22:09:1992
बुध	29:10:1992

मंगल अन्तर
05:12:1992 —— 05:12:1993

प्रत्यंतर	से
मंगल	05:12:1992
शनि	16:02:1993
सूर्य	05:06:1993
चन्द्रमा	23:06:1993
शुक्र	12:07:1993
बुध	17:08:1993
गुरू	23:09:1993

शनि अन्तर
05:12:1993 —— 05:06:1995

प्रत्यंतर	से
शनि	05:12:1993
सूर्य	18:05:1994
चन्द्रमा	14:06:1994
शुक्र	12:07:1994
बुध	04:09:1994
गुरू	29:10:1994
मंगल	16:02:1995

शताब्दिका दशा
(प्रचलित विभाजन विधि)

चन्द्रमा दशा (05:06:1995 —— 05:06:2000)

आपकी कुण्डली में लग्न वर्गोत्तम है (लग्न और नवांश लग्न एक है। आपकी कुण्डली में शताब्दिका दशा पद्धति (100 साल का चक्र) लागू हो रही है।

चन्द्रमा अन्तर 05:06:1995 —— 04:09:1995

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	05:06:1995
शुक्र	10:06:1995
बुध	19:06:1995
गुरू	28:06:1995
मंगल	16:07:1995
शनि	03:08:1995
सूर्य	31:08:1995

शुक्र अन्तर 04:09:1995 —— 05:03:1996

प्रत्यंतर	से
शुक्र	04:09:1995
बुध	23:09:1995
गुरू	11:10:1995
मंगल	16:11:1995
शनि	23:12:1995
सूर्य	16:02:1996
चन्द्रमा	25:02:1996

बुध अन्तर 05:03:1996 —— 04:09:1996

प्रत्यंतर	से
बुध	05:03:1996
गुरू	23:03:1996
मंगल	29:04:1996
शनि	05:06:1996
सूर्य	29:07:1996
चन्द्रमा	08:08:1996
शुक्र	17:08:1996

गुरू अन्तर 04:09:1996 —— 04:09:1997

प्रत्यंतर	से
गुरू	04:09:1996
मंगल	16:11:1996
शनि	28:01:1997
सूर्य	18:05:1997
चन्द्रमा	05:06:1997
शुक्र	23:06:1997
बुध	30:07:1997

मंगल अन्तर 04:09:1997 —— 04:09:1998

प्रत्यंतर	से
मंगल	04:09:1997
शनि	16:11:1997
सूर्य	06:03:1998
चन्द्रमा	24:03:1998
शुक्र	11:04:1998
बुध	18:05:1998
गुरू	23:06:1998

शनि अन्तर 04:09:1998 —— 05:03:2000

प्रत्यंतर	से
शनि	04:09:1998
सूर्य	16:02:1999
चन्द्रमा	15:03:1999
शुक्र	11:04:1999
बुध	05:06:1999
गुरू	30:07:1999
मंगल	16:11:1999

सूर्य अन्तर 05:03:2000 —— 05:06:2000

प्रत्यंतर	से
सूर्य	05:03:2000
चन्द्रमा	10:03:2000
शुक्र	14:03:2000
बुध	23:03:2000
गुरू	01:04:2000
मंगल	20:04:2000
शनि	08:05:2000

शताब्दिका दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

शुक्र दशा (05:06:2000 —— 05:06:2010)

आपकी कुण्डली में लग्न वर्गोत्तम है (लग्न और नवांश लग्न एक है। आपकी कुण्डली में शताब्दिका दशा पद्धति (100 साल का चक्र) लागू हो रही है।

शुक्र अन्तर
05:06:2000 —— 05:06:2001

प्रत्यंतर	से
शुक्र	05:06:2000
बुध	11:07:2000
गुरू	17:08:2000
मंगल	29:10:2000
शनि	10:01:2001
सूर्य	30:04:2001
चन्द्रमा	18:05:2001

बुध अन्तर
05:06:2001 —— 05:06:2002

प्रत्यंतर	से
बुध	05:06:2001
गुरू	12:07:2001
मंगल	23:09:2001
शनि	05:12:2001
सूर्य	24:03:2002
चन्द्रमा	11:04:2002
शुक्र	30:04:2002

गुरू अन्तर
05:06:2002 —— 05:06:2004

प्रत्यंतर	से
गुरू	05:06:2002
मंगल	29:10:2002
शनि	24:03:2003
सूर्य	29:10:2003
चन्द्रमा	05:12:2003
शुक्र	10:01:2004
बुध	23:03:2004

मंगल अन्तर
05:06:2004 —— 05:06:2006

प्रत्यंतर	से
मंगल	05:06:2004
शनि	29:10:2004
सूर्य	05:06:2005
चन्द्रमा	12:07:2005
शुक्र	17:08:2005
बुध	29:10:2005
गुरू	10:01:2006

शनि अन्तर
05:06:2006 —— 05:06:2009

प्रत्यंतर	से
शनि	05:06:2006
सूर्य	30:04:2007
चन्द्रमा	23:06:2007
शुक्र	17:08:2007
बुध	05:12:2007
गुरू	23:03:2008
मंगल	29:10:2008

सूर्य अन्तर
05:06:2009 —— 05:12:2009

प्रत्यंतर	से
सूर्य	05:06:2009
चन्द्रमा	14:06:2009
शुक्र	23:06:2009
बुध	12:07:2009
गुरू	30:07:2009
मंगल	04:09:2009
शनि	11:10:2009

चन्द्रमा अन्तर
05:12:2009 —— 05:06:2010

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	05:12:2009
शुक्र	14:12:2009
बुध	01:01:2010
गुरू	19:01:2010
मंगल	25:02:2010
शनि	02:04:2010
सूर्य	27:05:2010

शताब्दिका दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

बुध दशा (05:06:2010 —— 05:06:2020)

आपकी कुण्डली में लग्न वर्गोत्तम है (लग्न और नवांश लग्न एक है। आपकी कुण्डली में शताब्दिका दशा पद्धति (100 साल का चक्र) लागू हो रही है।

बुध अन्तर 05:06:2010 —— 05:06:2011

प्रत्यंतर	से
बुध	05:06:2010
गुरू	12:07:2010
मंगल	23:09:2010
शनि	05:12:2010
सूर्य	24:03:2011
चन्द्रमा	11:04:2011
शुक्र	30:04:2011

गुरू अन्तर 05:06:2011 —— 05:06:2013

प्रत्यंतर	से
गुरू	05:06:2011
मंगल	29:10:2011
शनि	23:03:2012
सूर्य	29:10:2012
चन्द्रमा	05:12:2012
शुक्र	10:01:2013
बुध	24:03:2013

मंगल अन्तर 05:06:2013 —— 05:06:2015

प्रत्यंतर	से
मंगल	05:06:2013
शनि	29:10:2013
सूर्य	05:06:2014
चन्द्रमा	12:07:2014
शुक्र	17:08:2014
बुध	29:10:2014
गुरू	10:01:2015

शनि अन्तर 05:06:2015 —— 05:06:2018

प्रत्यंतर	से
शनि	05:06:2015
सूर्य	29:04:2016
चन्द्रमा	23:06:2016
शुक्र	17:08:2016
बुध	05:12:2016
गुरू	24:03:2017
मंगल	29:10:2017

सूर्य अन्तर 05:06:2018 —— 05:12:2018

प्रत्यंतर	से
सूर्य	05:06:2018
चन्द्रमा	14:06:2018
शुक्र	23:06:2018
बुध	12:07:2018
गुरू	30:07:2018
मंगल	04:09:2018
शनि	11:10:2018

चन्द्रमा अन्तर 05:12:2018 —— 05:06:2019

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	05:12:2018
शुक्र	14:12:2018
बुध	01:01:2019
गुरू	19:01:2019
मंगल	25:02:2019
शनि	02:04:2019
सूर्य	27:05:2019

शुक्र अन्तर 05:06:2019 —— 05:06:2020

प्रत्यंतर	से
शुक्र	05:06:2019
बुध	12:07:2019
गुरू	17:08:2019
मंगल	29:10:2019
शनि	10:01:2020
सूर्य	29:04:2020
चन्द्रमा	17:05:2020

शताब्दिका दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

गुरू दशा (05:06:2020 –– 05:06:2040)

आपकी कुण्डली में लग्न वर्गोत्तम है (लग्न और नवांश लग्न एक है। आपकी कुण्डली में शताब्दिका दशा पद्धति (100 साल का चक्र) लागू हो रही है।

गुरू अन्तर 05:06:2020 –– 05:06:2024	
प्रत्यंतर	से
गुरू	05:06:2020
मंगल	24:03:2021
शनि	10:01:2022
सूर्य	24:03:2023
चन्द्रमा	05:06:2023
शुक्र	17:08:2023
बुध	10:01:2024

मंगल अन्तर 05:06:2024 –– 05:06:2028	
प्रत्यंतर	से
मंगल	05:06:2024
शनि	24:03:2025
सूर्य	05:06:2026
चन्द्रमा	17:08:2026
शुक्र	29:10:2026
बुध	24:03:2027
गुरू	17:08:2027

शनि अन्तर 05:06:2028 –– 05:06:2034	
प्रत्यंतर	से
शनि	05:06:2028
सूर्य	24:03:2030
चन्द्रमा	12:07:2030
शुक्र	29:10:2030
बुध	05:06:2031
गुरू	10:01:2032
मंगल	24:03:2033

सूर्य अन्तर 05:06:2034 –– 05:06:2035	
प्रत्यंतर	से
सूर्य	05:06:2034
चन्द्रमा	23:06:2034
शुक्र	12:07:2034
बुध	17:08:2034
गुरू	23:09:2034
मंगल	05:12:2034
शनि	16:02:2035

चन्द्रमा अन्तर 05:06:2035 –– 05:06:2036	
प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	05:06:2035
शुक्र	23:06:2035
बुध	30:07:2035
गुरू	04:09:2035
मंगल	16:11:2035
शनि	28:01:2036
सूर्य	17:05:2036

शुक्र अन्तर 05:06:2036 –– 05:06:2038	
प्रत्यंतर	से
शुक्र	05:06:2036
बुध	17:08:2036
गुरू	29:10:2036
मंगल	24:03:2037
शनि	17:08:2037
सूर्य	24:03:2038
चन्द्रमा	30:04:2038

बुध अन्तर 05:06:2038 –– 05:06:2040	
प्रत्यंतर	से
बुध	05:06:2038
गुरू	17:08:2038
मंगल	10:01:2039
शनि	05:06:2039
सूर्य	10:01:2040
चन्द्रमा	16:02:2040
शुक्र	23:03:2040

For Mindsutra Software Technologies

शताब्दिका दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

मंगल दशा (05:06:2040 —— 05:06:2060)

आपकी कुण्डली में लग्न वर्गोत्तम है (लग्न और नवांश लग्न एक है। आपकी कुण्डली में शताब्दिका दशा पद्धति (100 साल का चक्र) लागू हो रही है।

मंगल अन्तर
05:06:2040 —— 05:06:2044

प्रत्यंतर	से
मंगल	05:06:2040
शनि	24:03:2041
सूर्य	05:06:2042
चन्द्रमा	17:08:2042
शुक्र	29:10:2042
बुध	24:03:2043
गुरू	17:08:2043

शनि अन्तर
05:06:2044 —— 05:06:2050

प्रत्यंतर	से
शनि	05:06:2044
सूर्य	24:03:2046
चन्द्रमा	12:07:2046
शुक्र	29:10:2046
बुध	05:06:2047
गुरू	10:01:2048
मंगल	24:03:2049

सूर्य अन्तर
05:06:2050 —— 05:06:2051

प्रत्यंतर	से
सूर्य	05:06:2050
चन्द्रमा	23:06:2050
शुक्र	12:07:2050
बुध	17:08:2050
गुरू	23:09:2050
मंगल	05:12:2050
शनि	16:02:2051

चन्द्रमा अन्तर
05:06:2051 —— 05:06:2052

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	05:06:2051
शुक्र	23:06:2051
बुध	30:07:2051
गुरू	04:09:2051
मंगल	16:11:2051
शनि	28:01:2052
सूर्य	17:05:2052

शुक्र अन्तर
05:06:2052 —— 05:06:2054

प्रत्यंतर	से
शुक्र	05:06:2052
बुध	17:08:2052
गुरू	29:10:2052
मंगल	24:03:2053
शनि	17:08:2053
सूर्य	24:03:2054
चन्द्रमा	30:04:2054

बुध अन्तर
05:06:2054 —— 05:06:2056

प्रत्यंतर	से
बुध	05:06:2054
गुरू	17:08:2054
मंगल	10:01:2055
शनि	05:06:2055
सूर्य	10:01:2056
चन्द्रमा	16:02:2056
शुक्र	23:03:2056

गुरू अन्तर
05:06:2056 —— 05:06:2060

प्रत्यंतर	से
गुरू	05:06:2056
मंगल	24:03:2057
शनि	10:01:2058
सूर्य	24:03:2059
चन्द्रमा	05:06:2059
शुक्र	17:08:2059
बुध	10:01:2060

For Mindsutra Software Technologies

काल चक्र दशा

अयनांश :	N.C.Lahiri	चन्द्र नक्षत्र :	हस्ता (13)
अयनांश मान :	023:29:36	नक्षत्र पद :	2

जन्म समय काल चक्र दशा बैलेंस 16 y.7 m.4 d.

नक्षत्र श्रेणी :	सब्य	देह राशि :	मकर
नक्षत्र समूह :	अश्विनी	जीव राशि :	मिथुन
नक्षत्र स्पर :	प्रथम स्पर	अंश राशि :	वृष

विशेष काल चक्र दशा, गति (यदि है तो) – सिहांवलोकन गति

आपके जीवन में महत्वपूर्ण घटनाओं के समय और स्वभाव की जानकारी के लिए कालचक्र दशा अयनांश का प्रयोग किया जा सकता है।

क्र.स.	काल चक्र दशा	दशा अवधि	से——तक
1	.....	-----	-----
2	.....	-----	-----
3	.....	-----	-----
4	.....	-----	-----
5	.....	-----	-----
6	.....	-----	-----
7	कर्क (चन्द्रमा) दशा	2 y.7 m.4 d.	18:12:1973 To 22:07:1976
8	सिहं (सूर्य) दशा	5 y.0 m.0 d.	22:07:1976 To 23:07:1981
9	मिथुन (बुध) दशा	9 y.0 m.0 d.	23:07:1981 To 23:07:1990
10	मकर (शनि) दशा	4 y.0 m.0 d.	23:07:1990 To 23:07:1994
11	कुम्भ (शनि) दशा	4 y.0 m.0 d.	23:07:1994 To 23:07:1998
12	मीन (गुरू) दशा	10 y.0 m.0 d.	23:07:1998 To 22:07:2008
13	वृश्चिक (मंगल) दशा	7 y.0 m.0 d.	22:07:2008 To 23:07:2015
14	तुला (शुक्र) दशा	16 y.0 m.0 d.	23:07:2015 To 23:07:2031
15	कन्या (बुध) दशा	9 y.0 m.0 d.	23:07:2031 To 22:07:2040
16	कर्क (चन्द्रमा) दशा	21 y.0 m.0 d.	22:07:2040 To 23:07:2061
17	सिहं (सूर्य) दशा	5 y.0 m.0 d.	23:07:2061 To 23:07:2066
18	मिथुन (बुध) दशा	9 y.0 m.0 d.	23:07:2066 To 23:07:2075

कालचक्र दशा और भुक्ति

कर्क (चन्द्रमा) दशा 18:12:1973 से 23:07:1976	
भुक्ति	से.........
———	----
———	----
———	----
———	----
———	----
———	----
———	----
कुम्भ	18:12:1973
मीन	23:03:1974

सिहं (सूर्य) दशा 23:07:1976 से 23:07:1981	
भुक्ति	से.........
मेष	23:07:1976
वृष	11:02:1977
मिथुन	02:09:1977
कर्क	23:03:1978
सिहं	12:10:1978
कन्या	03:05:1979
तुला	22:11:1979
वृश्चिक	12:06:1980
धनु	01:01:1981

मिथुन (बुध) दशा 23:07:1981 से 23:07:1990	
भुक्ति	से.........
तुला	23:07:1981
वृश्चिक	23:07:1982
धनु	23:07:1983
मकर	23:07:1984
कुम्भ	23:07:1985
मीन	23:07:1986
मेष	23:07:1987
वृष	23:07:1988
मिथुन	23:07:1989

मकर (शनि) दशा 23:07:1990 से 23:07:1994	
भुक्ति	से.........
मकर	23:07:1990
कुम्भ	01:01:1991
मीन	12:06:1991
मेष	22:11:1991
वृष	02:05:1992
मिथुन	12:10:1992
कर्क	23:03:1993
सिहं	02:09:1993
कन्या	11:02:1994

कुम्भ (शनि) दशा 23:07:1994 से 23:07:1998	
भुक्ति	से.........
तुला	23:07:1994
वृश्चिक	01:01:1995
धनु	12:06:1995
मकर	22:11:1995
कुम्भ	02:05:1996
मीन	12:10:1996
मेष	23:03:1997
वृष	02:09:1997
मिथुन	11:02:1998

मीन (गुरू) दशा 23:07:1998 से 23:07:2008	
भुक्ति	से.........
कर्क	23:07:1998
सिहं	02:09:1999
कन्या	12:10:2000
तुला	22:11:2001
वृश्चिक	01:01:2003
धनु	11:02:2004
मकर	23:03:2005
कुम्भ	03:05:2006
मीन	12:06:2007

वृश्चिक (मंगल) दशा 23:07:2008 से 23:07:2015	
भुक्ति	से.........
कर्क	23:07:2008
सिहं	03:05:2009
कन्या	11:02:2010
तुला	22:11:2010
वृश्चिक	02:09:2011
धनु	12:06:2012
मकर	23:03:2013
कुम्भ	01:01:2014
मीन	12:10:2014

तुला (शुक्र) दशा 23:07:2015 से 23:07:2031	
भुक्ति	से.........
तुला	23:07:2015
वृश्चिक	03:05:2017
धनु	11:02:2019
मकर	22:11:2020
कुम्भ	02:09:2022
मीन	12:06:2024
मेष	23:03:2026
वृष	01:01:2028
मिथुन	12:10:2029

कन्या (बुध) दशा 23:07:2031 से 23:07:2040	
भुक्ति	से.........
मकर	23:07:2031
कुम्भ	23:07:2032
मीन	23:07:2033
मेष	23:07:2034
वृष	23:07:2035
मिथुन	23:07:2036
कर्क	23:07:2037
सिहं	23:07:2038
कन्या	23:07:2039

कर्क (चन्द्रमा) दशा 23:07:2040 से 23:07:2061	
भुक्ति	से.........
कर्क	23:07:2040
सिहं	22:11:2042
कन्या	23:03:2045
तुला	23:07:2047
वृश्चिक	22:11:2049
धनु	23:03:2052
मकर	23:07:2054
कुम्भ	22:11:2056
मीन	23:03:2059

सिहं (सूर्य) दशा 23:07:2061 से 23:07:2066	
भुक्ति	से.........
मेष	23:07:2061
वृष	11:02:2062
मिथुन	02:09:2062
कर्क	23:03:2063
सिहं	12:10:2063
कन्या	02:05:2064
तुला	22:11:2064
वृश्चिक	12:06:2065
धनु	01:01:2066

मिथुन (बुध) दशा 23:07:2066 से 23:07:2075	
भुक्ति	से.........
तुला	23:07:2066
वृश्चिक	23:07:2067
धनु	23:07:2068
मकर	23:07:2069
कुम्भ	23:07:2070
मीन	23:07:2071
मेष	23:07:2072
वृष	23:07:2073
मिथुन	23:07:2074

कालचक्र दशा, भुक्ति और अन्तर

कर्क दशा 18:12:1973 —— 23:07:1976

अन्तर	से........

अन्तर	से........

अन्तर	से........

अन्तर	से........

अन्तर	से........

अन्तर	से........

अन्तर	से........

कुम्भ भुक्ति 18:12:1973 —— 23:03:1974	
अन्तर	से........
——	---
——	---
——	---
——	---
——	---
——	---
——	---
——	---
——	---
——	---
मेष	01:11:1973
वृष	11:01:1974

मीन भुक्ति 23:03:1974 —— 23:07:1976	
अन्तर	से........
मकर	23:03:1974
कुम्भ	02:06:1974
मीन	12:08:1974
मेष	22:10:1974
वृष	01:01:1975
मिथुन	13:03:1975
कर्क	23:05:1975
सिहं	02:08:1975
कन्या	12:10:1975
तुला	22:12:1975
वृश्चिक	02:03:1976
धनु	12:05:1976

कालचक्र दशा, भुक्ति और अन्तर

सिहं दशा 23:07:1976 —— 23:07:1981

मेष भुक्ति
23:07:1976 —— 11:02:1977

अन्तर	से.........
मेष	23:07:1976
वृष	08:08:1976
मिथुन	25:08:1976
कर्क	11:09:1976
सिहं	28:09:1976
कन्या	15:10:1976
तुला	01:11:1976
वृश्चिक	18:11:1976
धनु	05:12:1976
मकर	22:12:1976
कुम्भ	08:01:1977
मीन	25:01:1977

वृष भुक्ति
11:02:1977 —— 02:09:1977

अन्तर	से.........
मकर	11:02:1977
कुम्भ	28:02:1977
मीन	17:03:1977
मेष	02:04:1977
वृष	19:04:1977
मिथुन	06:05:1977
कर्क	23:05:1977
सिहं	09:06:1977
कन्या	26:06:1977
तुला	13:07:1977
वृश्चिक	30:07:1977
धनु	16:08:1977

मिथुन भुक्ति
02:09:1977 —— 23:03:1978

अन्तर	से.........
वृश्चिक	02:09:1977
धनु	18:09:1977
मकर	05:10:1977
कुम्भ	22:10:1977
मीन	08:11:1977
मेष	25:11:1977
वृष	12:12:1977
मिथुन	29:12:1977
कर्क	15:01:1978
सिहं	01:02:1978
कन्या	17:02:1978
तुला	06:03:1978

कर्क भुक्ति
23:03:1978 —— 12:10:1978

अन्तर	से.........
कन्या	23:03:1978
तुला	09:04:1978
वृश्चिक	26:04:1978
धनु	13:05:1978
मकर	30:05:1978
कुम्भ	16:06:1978
मीन	03:07:1978
मेष	20:07:1978
वृष	05:08:1978
मिथुन	22:08:1978
कर्क	08:09:1978
सिहं	25:09:1978

सिहं भुक्ति
12:10:1978 —— 03:05:1979

अन्तर	से.........
धनु	12:10:1978
मकर	29:10:1978
कुम्भ	15:11:1978
मीन	02:12:1978
मेष	19:12:1978
वृष	05:01:1979
मिथुन	21:01:1979
कर्क	07:02:1979
सिहं	24:02:1979
कन्या	13:03:1979
तुला	30:03:1979
वृश्चिक	16:04:1979

कन्या भुक्ति
03:05:1979 —— 22:11:1979

अन्तर	से.........
वृश्चिक	03:05:1979
धनु	20:05:1979
मकर	06:06:1979
कुम्भ	23:06:1979
मीन	09:07:1979
मेष	26:07:1979
वृष	12:08:1979
मिथुन	29:08:1979
कर्क	15:09:1979
सिहं	02:10:1979
कन्या	19:10:1979
तुला	05:11:1979

तुला भुक्ति
22:11:1979 —— 12:06:1980

अन्तर	से.........
मकर	22:11:1979
कुम्भ	09:12:1979
मीन	25:12:1979
मेष	11:01:1980
वृष	28:01:1980
मिथुन	14:02:1980
कर्क	02:03:1980
सिहं	19:03:1980
कन्या	05:04:1980
तुला	22:04:1980
वृश्चिक	09:05:1980
धनु	26:05:1980

वृश्चिक भुक्ति
12:06:1980 —— 01:01:1981

अन्तर	से.........
मेष	12:06:1980
वृष	29:06:1980
मिथुन	16:07:1980
कर्क	02:08:1980
सिहं	19:08:1980
कन्या	05:09:1980
तुला	22:09:1980
वृश्चिक	08:10:1980
धनु	25:10:1980
मकर	11:11:1980
कुम्भ	28:11:1980
मीन	15:12:1980

धनु भुक्ति
01:01:1981 —— 23:07:1981

अन्तर	से.........
मकर	01:01:1981
कुम्भ	18:01:1981
मीन	04:02:1981
मेष	21:02:1981
वृष	10:03:1981
मिथुन	27:03:1981
कर्क	13:04:1981
सिहं	29:04:1981
कन्या	16:05:1981
तुला	02:06:1981
वृश्चिक	19:06:1981
धनु	06:07:1981

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia

कालचक्र दशा, भुक्ति और अन्तर

मिथुन दशा 23:07:1981 —— 23:07:1990

तुला भुक्ति
23:07:1981 —— 23:07:1982

अन्तर	से.........
मकर	23:07:1981
कुम्भ	22:08:1981
मीन	22:09:1981
मेष	22:10:1981
वृष	22:11:1981
मिथुन	22:12:1981
कर्क	21:01:1982
सिहं	21:02:1982
कन्या	23:03:1982
तुला	23:04:1982
वृश्चिक	23:05:1982
धनु	23:06:1982

वृश्चिक भुक्ति
23:07:1982 —— 23:07:1983

अन्तर	से.........
मेष	23:07:1982
वृष	22:08:1982
मिथुन	22:09:1982
कर्क	22:10:1982
सिहं	22:11:1982
कन्या	22:12:1982
तुला	21:01:1983
वृश्चिक	21:02:1983
धनु	23:03:1983
मकर	23:04:1983
कुम्भ	23:05:1983
मीन	23:06:1983

धनु भुक्ति
23:07:1983 —— 23:07:1984

अन्तर	से.........
मकर	23:07:1983
कुम्भ	22:08:1983
मीन	22:09:1983
मेष	22:10:1983
वृष	22:11:1983
मिथुन	22:12:1983
कर्क	22:01:1984
सिहं	21:02:1984
कन्या	23:03:1984
तुला	22:04:1984
वृश्चिक	23:05:1984
धनु	22:06:1984

मकर भुक्ति
23:07:1984 —— 23:07:1985

अन्तर	से.........
मिथुन	23:07:1984
कर्क	22:08:1984
सिहं	22:09:1984
कन्या	22:10:1984
तुला	22:11:1984
वृश्चिक	22:12:1984
धनु	21:01:1985
मकर	21:02:1985
कुम्भ	23:03:1985
मीन	23:04:1985
मेष	23:05:1985
वृष	23:06:1985

कुम्भ भुक्ति
23:07:1985 —— 23:07:1986

अन्तर	से.........
मिथुन	23:07:1985
कर्क	22:08:1985
सिहं	22:09:1985
कन्या	22:10:1985
तुला	22:11:1985
वृश्चिक	22:12:1985
धनु	21:01:1986
मकर	21:02:1986
कुम्भ	23:03:1986
मीन	23:04:1986
मेष	23:05:1986
वृष	23:06:1986

मीन भुक्ति
23:07:1986 —— 23:07:1987

अन्तर	से.........
मकर	23:07:1986
कुम्भ	22:08:1986
मीन	22:09:1986
मेष	22:10:1986
वृष	22:11:1986
मिथुन	22:12:1986
कर्क	21:01:1987
सिहं	21:02:1987
कन्या	23:03:1987
तुला	23:04:1987
वृश्चिक	23:05:1987
धनु	23:06:1987

मेष भुक्ति
23:07:1987 —— 23:07:1988

अन्तर	से.........
मेष	23:07:1987
वृष	22:08:1987
मिथुन	22:09:1987
कर्क	22:10:1987
सिहं	22:11:1987
कन्या	22:12:1987
तुला	22:01:1988
वृश्चिक	21:02:1988
धनु	23:03:1988
मकर	22:04:1988
कुम्भ	23:05:1988
मीन	22:06:1988

वृष भुक्ति
23:07:1988 —— 23:07:1989

अन्तर	से.........
मकर	23:07:1988
कुम्भ	22:08:1988
मीन	22:09:1988
मेष	22:10:1988
वृष	22:11:1988
मिथुन	22:12:1988
कर्क	21:01:1989
सिहं	21:02:1989
कन्या	23:03:1989
तुला	23:04:1989
वृश्चिक	23:05:1989
धनु	23:06:1989

मिथुन भुक्ति
23:07:1989 —— 23:07:1990

अन्तर	से.........
वृश्चिक	23:07:1989
धनु	22:08:1989
मकर	22:09:1989
कुम्भ	22:10:1989
मीन	22:11:1989
मेष	22:12:1989
वृष	21:01:1990
मिथुन	21:02:1990
कर्क	23:03:1990
सिहं	23:04:1990
कन्या	23:05:1990
तुला	23:06:1990

कालचक्र दशा, भुक्ति और अन्तर

मकर दशा 23:07:1990 —— 23:07:1994

मकर भुक्ति
23:07:1990 —— 01:01:1991

अन्तर	से.........
मिथुन	23:07:1990
कर्क	05:08:1990
सिहं	19:08:1990
कन्या	02:09:1990
तुला	15:09:1990
वृश्चिक	29:09:1990
धनु	12:10:1990
मकर	26:10:1990
कुम्भ	08:11:1990
मीन	22:11:1990
मेष	05:12:1990
वृष	19:12:1990

कुम्भ भुक्ति
01:01:1991 —— 12:06:1991

अन्तर	से.........
मिथुन	01:01:1991
कर्क	15:01:1991
सिहं	28:01:1991
कन्या	11:02:1991
तुला	24:02:1991
वृश्चिक	10:03:1991
धनु	23:03:1991
मकर	06:04:1991
कुम्भ	19:04:1991
मीन	03:05:1991
मेष	16:05:1991
वृष	30:05:1991

मीन भुक्ति
12:06:1991 —— 22:11:1991

अन्तर	से.........
मकर	12:06:1991
कुम्भ	26:06:1991
मीन	09:07:1991
मेष	23:07:1991
वृष	05:08:1991
मिथुन	19:08:1991
कर्क	02:09:1991
सिहं	15:09:1991
कन्या	29:09:1991
तुला	12:10:1991
वृश्चिक	26:10:1991
धनु	08:11:1991

मेष भुक्ति
22:11:1991 —— 02:05:1992

अन्तर	से.........
मेष	22:11:1991
वृष	05:12:1991
मिथुन	19:12:1991
कर्क	01:01:1992
सिहं	15:01:1992
कन्या	28:01:1992
तुला	11:02:1992
वृश्चिक	24:02:1992
धनु	09:03:1992
मकर	23:03:1992
कुम्भ	05:04:1992
मीन	19:04:1992

वृष भुक्ति
02:05:1992 —— 12:10:1992

अन्तर	से.........
मकर	02:05:1992
कुम्भ	16:05:1992
मीन	29:05:1992
मेष	12:06:1992
वृष	25:06:1992
मिथुन	09:07:1992
कर्क	23:07:1992
सिहं	05:08:1992
कन्या	19:08:1992
तुला	01:09:1992
वृश्चिक	15:09:1992
धनु	28:09:1992

मिथुन भुक्ति
12:10:1992 —— 23:03:1993

अन्तर	से.........
वृश्चिक	12:10:1992
धनु	25:10:1992
मकर	08:11:1992
कुम्भ	22:11:1992
मीन	05:12:1992
मेष	19:12:1992
वृष	01:01:1993
मिथुन	15:01:1993
कर्क	28:01:1993
सिहं	11:02:1993
कन्या	24:02:1993
तुला	10:03:1993

कर्क भुक्ति
23:03:1993 —— 02:09:1993

अन्तर	से.........
कन्या	23:03:1993
तुला	06:04:1993
वृश्चिक	19:04:1993
धनु	03:05:1993
मकर	16:05:1993
कुम्भ	30:05:1993
मीन	12:06:1993
मेष	26:06:1993
वृष	09:07:1993
मिथुन	23:07:1993
कर्क	05:08:1993
सिहं	19:08:1993

सिहं भुक्ति
02:09:1993 —— 11:02:1994

अन्तर	से.........
धनु	02:09:1993
मकर	15:09:1993
कुम्भ	29:09:1993
मीन	12:10:1993
मेष	26:10:1993
वृष	08:11:1993
मिथुन	22:11:1993
कर्क	05:12:1993
सिहं	19:12:1993
कन्या	01:01:1994
तुला	15:01:1994
वृश्चिक	28:01:1994

कन्या भुक्ति
11:02:1994 —— 23:07:1994

अन्तर	से.........
वृश्चिक	11:02:1994
धनु	24:02:1994
मकर	10:03:1994
कुम्भ	23:03:1994
मीन	06:04:1994
मेष	19:04:1994
वृष	03:05:1994
मिथुन	16:05:1994
कर्क	30:05:1994
सिहं	12:06:1994
कन्या	26:06:1994
तुला	09:07:1994

कालचक्र दशा, भुक्ति और अन्तर

कुम्भ दशा 23:07:1994 —— 23:07:1998

तुला भुक्ति 23:07:1994 —— 01:01:1995

अन्तर	से.........
मकर	23:07:1994
कुम्भ	05:08:1994
मीन	19:08:1994
मेष	02:09:1994
वृष	15:09:1994
मिथुन	29:09:1994
कर्क	12:10:1994
सिहं	26:10:1994
कन्या	08:11:1994
तुला	22:11:1994
वृश्चिक	05:12:1994
धनु	19:12:1994

वृश्चिक भुक्ति 01:01:1995 —— 12:06:1995

अन्तर	से.........
मेष	01:01:1995
वृष	15:01:1995
मिथुन	28:01:1995
कर्क	11:02:1995
सिहं	24:02:1995
कन्या	10:03:1995
तुला	23:03:1995
वृश्चिक	06:04:1995
धनु	19:04:1995
मकर	03:05:1995
कुम्भ	16:05:1995
मीन	30:05:1995

धनु भुक्ति 12:06:1995 —— 22:11:1995

अन्तर	से.........
मकर	12:06:1995
कुम्भ	26:06:1995
मीन	09:07:1995
मेष	23:07:1995
वृष	05:08:1995
मिथुन	19:08:1995
कर्क	02:09:1995
सिहं	15:09:1995
कन्या	29:09:1995
तुला	12:10:1995
वृश्चिक	26:10:1995
धनु	08:11:1995

मकर भुक्ति 22:11:1995 —— 02:05:1996

अन्तर	से.........
मिथुन	22:11:1995
कर्क	05:12:1995
सिहं	19:12:1995
कन्या	01:01:1996
तुला	15:01:1996
वृश्चिक	28:01:1996
धनु	11:02:1996
मकर	24:02:1996
कुम्भ	09:03:1996
मीन	23:03:1996
मेष	05:04:1996
वृष	19:04:1996

कुम्भ भुक्ति 02:05:1996 —— 12:10:1996

अन्तर	से.........
मिथुन	02:05:1996
कर्क	16:05:1996
सिहं	29:05:1996
कन्या	12:06:1996
तुला	25:06:1996
वृश्चिक	09:07:1996
धनु	23:07:1996
मकर	05:08:1996
कुम्भ	19:08:1996
मीन	01:09:1996
मेष	15:09:1996
वृष	28:09:1996

मीन भुक्ति 12:10:1996 —— 23:03:1997

अन्तर	से.........
मकर	12:10:1996
कुम्भ	25:10:1996
मीन	08:11:1996
मेष	22:11:1996
वृष	05:12:1996
मिथुन	19:12:1996
कर्क	01:01:1997
सिहं	15:01:1997
कन्या	28:01:1997
तुला	11:02:1997
वृश्चिक	24:02:1997
धनु	10:03:1997

मेष भुक्ति 23:03:1997 —— 02:09:1997

अन्तर	से.........
मेष	23:03:1997
वृष	06:04:1997
मिथुन	19:04:1997
कर्क	03:05:1997
सिहं	16:05:1997
कन्या	30:05:1997
तुला	12:06:1997
वृश्चिक	26:06:1997
धनु	09:07:1997
मकर	23:07:1997
कुम्भ	05:08:1997
मीन	19:08:1997

वृष भुक्ति 02:09:1997 —— 11:02:1998

अन्तर	से.........
मकर	02:09:1997
कुम्भ	15:09:1997
मीन	29:09:1997
मेष	12:10:1997
वृष	26:10:1997
मिथुन	08:11:1997
कर्क	22:11:1997
सिहं	05:12:1997
कन्या	19:12:1997
तुला	01:01:1998
वृश्चिक	15:01:1998
धनु	28:01:1998

मिथुन भुक्ति 11:02:1998 —— 23:07:1998

अन्तर	से.........
वृश्चिक	11:02:1998
धनु	24:02:1998
मकर	10:03:1998
कुम्भ	23:03:1998
मीन	06:04:1998
मेष	19:04:1998
वृष	03:05:1998
मिथुन	16:05:1998
कर्क	30:05:1998
सिहं	12:06:1998
कन्या	26:06:1998
तुला	09:07:1998

कालचक्र दशा, भुक्ति और अन्तर

मीन दशा 23:07:1998 —— 23:07:2008

कर्क भुक्ति
23:07:1998 —— 02:09:1999

अन्तर	से.........
कन्या	23:07:1998
तुला	26:08:1998
वृश्चिक	29:09:1998
धनु	01:11:1998
मकर	05:12:1998
कुम्भ	08:01:1999
मीन	11:02:1999
मेष	17:03:1999
वृष	19:04:1999
मिथुन	23:05:1999
कर्क	26:06:1999
सिहं	30:07:1999

सिहं भुक्ति
02:09:1999 —— 12:10:2000

अन्तर	से.........
धनु	02:09:1999
मकर	05:10:1999
कुम्भ	08:11:1999
मीन	12:12:1999
मेष	15:01:2000
वृष	18:02:2000
मिथुन	23:03:2000
कर्क	25:04:2000
सिहं	29:05:2000
कन्या	02:07:2000
तुला	05:08:2000
वृश्चिक	08:09:2000

कन्या भुक्ति
12:10:2000 —— 22:11:2001

अन्तर	से.........
वृश्चिक	12:10:2000
धनु	15:11:2000
मकर	19:12:2000
कुम्भ	21:01:2001
मीन	24:02:2001
मेष	30:03:2001
वृष	03:05:2001
मिथुन	06:06:2001
कर्क	09:07:2001
सिहं	12:08:2001
कन्या	15:09:2001
तुला	19:10:2001

तुला भुक्ति
22:11:2001 —— 01:01:2003

अन्तर	से.........
मकर	22:11:2001
कुम्भ	25:12:2001
मीन	28:01:2002
मेष	03:03:2002
वृष	06:04:2002
मिथुन	10:05:2002
कर्क	12:06:2002
सिहं	16:07:2002
कन्या	19:08:2002
तुला	22:09:2002
वृश्चिक	26:10:2002
धनु	28:11:2002

वृश्चिक भुक्ति
01:01:2003 —— 11:02:2004

अन्तर	से.........
मेष	01:01:2003
वृष	04:02:2003
मिथुन	10:03:2003
कर्क	13:04:2003
सिहं	16:05:2003
कन्या	19:06:2003
तुला	23:07:2003
वृश्चिक	26:08:2003
धनु	29:09:2003
मकर	01:11:2003
कुम्भ	05:12:2003
मीन	08:01:2004

धनु भुक्ति
11:02:2004 —— 23:03:2005

अन्तर	से.........
मकर	11:02:2004
कुम्भ	16:03:2004
मीन	19:04:2004
मेष	23:05:2004
वृष	25:06:2004
मिथुन	29:07:2004
कर्क	01:09:2004
सिहं	05:10:2004
कन्या	08:11:2004
तुला	12:12:2004
वृश्चिक	15:01:2005
धनु	17:02:2005

मकर भुक्ति
23:03:2005 —— 03:05:2006

अन्तर	से.........
मिथुन	23:03:2005
कर्क	26:04:2005
सिहं	30:05:2005
कन्या	03:07:2005
तुला	05:08:2005
वृश्चिक	08:09:2005
धनु	12:10:2005
मकर	15:11:2005
कुम्भ	19:12:2005
मीन	21:01:2006
मेष	24:02:2006
वृष	30:03:2006

कुम्भ भुक्ति
03:05:2006 —— 12:06:2007

अन्तर	से.........
मिथुन	03:05:2006
कर्क	06:06:2006
सिहं	09:07:2006
कन्या	12:08:2006
तुला	15:09:2006
वृश्चिक	19:10:2006
धनु	22:11:2006
मकर	25:12:2006
कुम्भ	28:01:2007
मीन	03:03:2007
मेष	06:04:2007
वृष	10:05:2007

मीन भुक्ति
12:06:2007 —— 23:07:2008

अन्तर	से.........
मकर	12:06:2007
कुम्भ	16:07:2007
मीन	19:08:2007
मेष	22:09:2007
वृष	26:10:2007
मिथुन	28:11:2007
कर्क	01:01:2008
सिहं	04:02:2008
कन्या	09:03:2008
तुला	12:04:2008
वृश्चिक	16:05:2008
धनु	19:06:2008

कालचक्र दशा, भुक्ति और अन्तर

वृश्चिक दशा 23:07:2008 —— 23:07:2015

कर्क भुक्ति 23:07:2008 —— 03:05:2009	
अन्तर	से.........
कन्या	23:07:2008
तुला	15:08:2008
वृश्चिक	08:09:2008
धनु	02:10:2008
मकर	25:10:2008
कुम्भ	18:11:2008
मीन	12:12:2008
मेष	05:01:2009
वृष	28:01:2009
मिथुन	21:02:2009
कर्क	17:03:2009
सिहं	09:04:2009

सिहं भुक्ति 03:05:2009 —— 11:02:2010	
अन्तर	से.........
धनु	03:05:2009
मकर	26:05:2009
कुम्भ	19:06:2009
मीन	13:07:2009
मेष	05:08:2009
वृष	29:08:2009
मिथुन	22:09:2009
कर्क	15:10:2009
सिहं	08:11:2009
कन्या	02:12:2009
तुला	25:12:2009
वृश्चिक	18:01:2010

कन्या भुक्ति 11:02:2010 —— 22:11:2010	
अन्तर	से.........
वृश्चिक	11:02:2010
धनु	06:03:2010
मकर	30:03:2010
कुम्भ	23:04:2010
मीन	16:05:2010
मेष	09:06:2010
वृष	03:07:2010
मिथुन	26:07:2010
कर्क	19:08:2010
सिहं	12:09:2010
कन्या	05:10:2010
तुला	29:10:2010

तुला भुक्ति 22:11:2010 —— 02:09:2011	
अन्तर	से.........
मकर	22:11:2010
कुम्भ	15:12:2010
मीन	08:01:2011
मेष	01:02:2011
वृष	24:02:2011
मिथुन	20:03:2011
कर्क	13:04:2011
सिहं	06:05:2011
कन्या	30:05:2011
तुला	23:06:2011
वृश्चिक	16:07:2011
धनु	09:08:2011

वृश्चिक भुक्ति 02:09:2011 —— 12:06:2012	
अन्तर	से.........
मेष	02:09:2011
वृष	25:09:2011
मिथुन	19:10:2011
कर्क	11:11:2011
सिहं	05:12:2011
कन्या	29:12:2011
तुला	22:01:2012
वृश्चिक	14:02:2012
धनु	09:03:2012
मकर	02:04:2012
कुम्भ	25:04:2012
मीन	19:05:2012

धनु भुक्ति 12:06:2012 —— 23:03:2013	
अन्तर	से.........
मकर	12:06:2012
कुम्भ	06:07:2012
मीन	29:07:2012
मेष	22:08:2012
वृष	15:09:2012
मिथुन	08:10:2012
कर्क	01:11:2012
सिहं	25:11:2012
कन्या	19:12:2012
तुला	11:01:2013
वृश्चिक	04:02:2013
धनु	28:02:2013

मकर भुक्ति 23:03:2013 —— 01:01:2014	
अन्तर	से.........
मिथुन	23:03:2013
कर्क	16:04:2013
सिहं	10:05:2013
कन्या	02:06:2013
तुला	26:06:2013
वृश्चिक	20:07:2013
धनु	12:08:2013
मकर	05:09:2013
कुम्भ	29:09:2013
मीन	22:10:2013
मेष	15:11:2013
वृष	09:12:2013

कुम्भ भुक्ति 01:01:2014 —— 12:10:2014	
अन्तर	से.........
मिथुन	01:01:2014
कर्क	25:01:2014
सिहं	17:02:2014
कन्या	13:03:2014
तुला	06:04:2014
वृश्चिक	29:04:2014
धनु	23:05:2014
मकर	16:06:2014
कुम्भ	09:07:2014
मीन	02:08:2014
मेष	26:08:2014
वृष	18:09:2014

मीन भुक्ति 12:10:2014 —— 23:07:2015	
अन्तर	से.........
मकर	12:10:2014
कुम्भ	05:11:2014
मीन	28:11:2014
मेष	22:12:2014
वृष	15:01:2015
मिथुन	07:02:2015
कर्क	03:03:2015
सिहं	27:03:2015
कन्या	19:04:2015
तुला	13:05:2015
वृश्चिक	06:06:2015
धनु	29:06:2015

कालचक्र दशा, भुक्ति और अन्तर

तुला दशा 23:07:2015 —— 23:07:2031

तुला भुक्ति
23:07:2015 —— 03:05:2017

अन्तर	से........
मकर	23:07:2015
कुम्भ	15:09:2015
मीन	08:11:2015
मेष	01:01:2016
वृष	24:02:2016
मिथुन	19:04:2016
कर्क	12:06:2016
सिहं	05:08:2016
कन्या	28:09:2016
तुला	22:11:2016
वृश्चिक	15:01:2017
धनु	10:03:2017

वृश्चिक भुक्ति
03:05:2017 —— 11:02:2019

अन्तर	से........
मेष	03:05:2017
वृष	26:06:2017
मिथुन	19:08:2017
कर्क	12:10:2017
सिहं	05:12:2017
कन्या	28:01:2018
तुला	23:03:2018
वृश्चिक	16:05:2018
धनु	09:07:2018
मकर	02:09:2018
कुम्भ	26:10:2018
मीन	19:12:2018

धनु भुक्ति
11:02:2019 —— 22:11:2020

अन्तर	से........
मकर	11:02:2019
कुम्भ	06:04:2019
मीन	30:05:2019
मेष	23:07:2019
वृष	15:09:2019
मिथुन	08:11:2019
कर्क	01:01:2020
सिहं	24:02:2020
कन्या	19:04:2020
तुला	12:06:2020
वृश्चिक	05:08:2020
धनु	28:09:2020

मकर भुक्ति
22:11:2020 —— 02:09:2022

अन्तर	से........
मिथुन	22:11:2020
कर्क	15:01:2021
सिहं	10:03:2021
कन्या	03:05:2021
तुला	26:06:2021
वृश्चिक	19:08:2021
धनु	12:10:2021
मकर	05:12:2021
कुम्भ	28:01:2022
मीन	23:03:2022
मेष	16:05:2022
वृष	09:07:2022

कुम्भ भुक्ति
02:09:2022 —— 12:06:2024

अन्तर	से........
मिथुन	02:09:2022
कर्क	26:10:2022
सिहं	19:12:2022
कन्या	11:02:2023
तुला	06:04:2023
वृश्चिक	30:05:2023
धनु	23:07:2023
मकर	15:09:2023
कुम्भ	08:11:2023
मीन	01:01:2024
मेष	24:02:2024
वृष	19:04:2024

मीन भुक्ति
12:06:2024 —— 23:03:2026

अन्तर	से........
मकर	12:06:2024
कुम्भ	05:08:2024
मीन	28:09:2024
मेष	22:11:2024
वृष	15:01:2025
मिथुन	10:03:2025
कर्क	03:05:2025
सिहं	26:06:2025
कन्या	19:08:2025
तुला	12:10:2025
वृश्चिक	05:12:2025
धनु	28:01:2026

मेष भुक्ति
23:03:2026 —— 01:01:2028

अन्तर	से........
मेष	23:03:2026
वृष	16:05:2026
मिथुन	09:07:2026
कर्क	02:09:2026
सिहं	26:10:2026
कन्या	19:12:2026
तुला	11:02:2027
वृश्चिक	06:04:2027
धनु	30:05:2027
मकर	23:07:2027
कुम्भ	15:09:2027
मीन	08:11:2027

वृष भुक्ति
01:01:2028 —— 12:10:2029

अन्तर	से........
मकर	01:01:2028
कुम्भ	24:02:2028
मीन	19:04:2028
मेष	12:06:2028
वृष	05:08:2028
मिथुन	28:09:2028
कर्क	22:11:2028
सिहं	15:01:2029
कन्या	10:03:2029
तुला	03:05:2029
वृश्चिक	26:06:2029
धनु	19:08:2029

मिथुन भुक्ति
12:10:2029 —— 23:07:2031

अन्तर	से........
वृश्चिक	12:10:2029
धनु	05:12:2029
मकर	28:01:2030
कुम्भ	23:03:2030
मीन	16:05:2030
मेष	09:07:2030
वृष	02:09:2030
मिथुन	26:10:2030
कर्क	19:12:2030
सिहं	11:02:2031
कन्या	06:04:2031
तुला	30:05:2031

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia

कालचक्र दशा, भुक्ति और अन्तर

कन्या दशा 23:07:2031 —— 23:07:2040

मकर भुक्ति
23:07:2031 —— 23:07:2032

अन्तर	से.........
मिथुन	23:07:2031
कर्क	22:08:2031
सिहं	22:09:2031
कन्या	22:10:2031
तुला	22:11:2031
वृश्चिक	22:12:2031
धनु	22:01:2032
मकर	21:02:2032
कुम्भ	23:03:2032
मीन	22:04:2032
मेष	23:05:2032
वृष	22:06:2032

कुम्भ भुक्ति
23:07:2032 —— 23:07:2033

अन्तर	से.........
मिथुन	23:07:2032
कर्क	22:08:2032
सिहं	22:09:2032
कन्या	22:10:2032
तुला	22:11:2032
वृश्चिक	22:12:2032
धनु	21:01:2033
मकर	21:02:2033
कुम्भ	23:03:2033
मीन	23:04:2033
मेष	23:05:2033
वृष	23:06:2033

मीन भुक्ति
23:07:2033 —— 23:07:2034

अन्तर	से.........
मकर	23:07:2033
कुम्भ	22:08:2033
मीन	22:09:2033
मेष	22:10:2033
वृष	22:11:2033
मिथुन	22:12:2033
कर्क	21:01:2034
सिहं	21:02:2034
कन्या	23:03:2034
तुला	23:04:2034
वृश्चिक	23:05:2034
धनु	23:06:2034

मेष भुक्ति
23:07:2034 —— 23:07:2035

अन्तर	से.........
मेष	23:07:2034
वृष	22:08:2034
मिथुन	22:09:2034
कर्क	22:10:2034
सिहं	22:11:2034
कन्या	22:12:2034
तुला	21:01:2035
वृश्चिक	21:02:2035
धनु	23:03:2035
मकर	23:04:2035
कुम्भ	23:05:2035
मीन	23:06:2035

वृष भुक्ति
23:07:2035 —— 23:07:2036

अन्तर	से.........
मकर	23:07:2035
कुम्भ	22:08:2035
मीन	22:09:2035
मेष	22:10:2035
वृष	22:11:2035
मिथुन	22:12:2035
कर्क	22:01:2036
सिहं	21:02:2036
कन्या	23:03:2036
तुला	22:04:2036
वृश्चिक	23:05:2036
धनु	22:06:2036

मिथुन भुक्ति
23:07:2036 —— 23:07:2037

अन्तर	से.........
वृश्चिक	23:07:2036
धनु	22:08:2036
मकर	22:09:2036
कुम्भ	22:10:2036
मीन	22:11:2036
मेष	22:12:2036
वृष	21:01:2037
मिथुन	21:02:2037
कर्क	23:03:2037
सिहं	23:04:2037
कन्या	23:05:2037
तुला	23:06:2037

कर्क भुक्ति
23:07:2037 —— 23:07:2038

अन्तर	से.........
कन्या	23:07:2037
तुला	22:08:2037
वृश्चिक	22:09:2037
धनु	22:10:2037
मकर	22:11:2037
कुम्भ	22:12:2037
मीन	21:01:2038
मेष	21:02:2038
वृष	23:03:2038
मिथुन	23:04:2038
कर्क	23:05:2038
सिहं	23:06:2038

सिहं भुक्ति
23:07:2038 —— 23:07:2039

अन्तर	से.........
धनु	23:07:2038
मकर	22:08:2038
कुम्भ	22:09:2038
मीन	22:10:2038
मेष	22:11:2038
वृष	22:12:2038
मिथुन	21:01:2039
कर्क	21:02:2039
सिहं	23:03:2039
कन्या	23:04:2039
तुला	23:05:2039
वृश्चिक	23:06:2039

कन्या भुक्ति
23:07:2039 —— 23:07:2040

अन्तर	से.........
वृश्चिक	23:07:2039
धनु	22:08:2039
मकर	22:09:2039
कुम्भ	22:10:2039
मीन	22:11:2039
मेष	22:12:2039
वृष	22:01:2040
मिथुन	21:02:2040
कर्क	23:03:2040
सिहं	22:04:2040
कन्या	23:05:2040
तुला	22:06:2040

कालचक्र दशा, भुक्ति और अन्तर

कर्क दशा 23:07:2040 —— 23:07:2061

कर्क भुक्ति 23:07:2040 —— 22:11:2042	
अन्तर	से.........
कन्या	23:07:2040
तुला	02:10:2040
वृश्चिक	12:12:2040
धनु	21:02:2041
मकर	03:05:2041
कुम्भ	13:07:2041
मीन	22:09:2041
मेष	02:12:2041
वृष	11:02:2042
मिथुन	23:04:2042
कर्क	03:07:2042
सिहं	12:09:2042

सिहं भुक्ति 22:11:2042 —— 23:03:2045	
अन्तर	से.........
धनु	22:11:2042
मकर	01:02:2043
कुम्भ	13:04:2043
मीन	23:06:2043
मेष	02:09:2043
वृष	11:11:2043
मिथुन	22:01:2044
कर्क	02:04:2044
सिहं	12:06:2044
कन्या	22:08:2044
तुला	01:11:2044
वृश्चिक	11:01:2045

कन्या भुक्ति 23:03:2045 —— 23:07:2047	
अन्तर	से.........
वृश्चिक	23:03:2045
धनु	02:06:2045
मकर	12:08:2045
कुम्भ	22:10:2045
मीन	01:01:2046
मेष	13:03:2046
वृष	23:05:2046
मिथुन	02:08:2046
कर्क	12:10:2046
सिहं	22:12:2046
कन्या	03:03:2047
तुला	13:05:2047

तुला भुक्ति 23:07:2047 —— 22:11:2049	
अन्तर	से.........
मकर	23:07:2047
कुम्भ	02:10:2047
मीन	12:12:2047
मेष	21:02:2048
वृष	02:05:2048
मिथुन	12:07:2048
कर्क	22:09:2048
सिहं	02:12:2048
कन्या	11:02:2049
तुला	23:04:2049
वृश्चिक	03:07:2049
धनु	12:09:2049

वृश्चिक भुक्ति 22:11:2049 —— 23:03:2052	
अन्तर	से.........
मेष	22:11:2049
वृष	01:02:2050
मिथुन	13:04:2050
कर्क	23:06:2050
सिहं	02:09:2050
कन्या	11:11:2050
तुला	21:01:2051
वृश्चिक	02:04:2051
धनु	12:06:2051
मकर	22:08:2051
कुम्भ	01:11:2051
मीन	11:01:2052

धनु भुक्ति 23:03:2052 —— 23:07:2054	
अन्तर	से.........
मकर	23:03:2052
कुम्भ	02:06:2052
मीन	12:08:2052
मेष	22:10:2052
वृष	01:01:2053
मिथुन	13:03:2053
कर्क	23:05:2053
सिहं	02:08:2053
कन्या	12:10:2053
तुला	22:12:2053
वृश्चिक	03:03:2054
धनु	13:05:2054

मकर भुक्ति 23:07:2054 —— 22:11:2056	
अन्तर	से.........
मिथुन	23:07:2054
कर्क	02:10:2054
सिहं	12:12:2054
कन्या	21:02:2055
तुला	03:05:2055
वृश्चिक	13:07:2055
धनु	22:09:2055
मकर	02:12:2055
कुम्भ	11:02:2056
मीन	22:04:2056
मेष	02:07:2056
वृष	11:09:2056

कुम्भ भुक्ति 22:11:2056 —— 23:03:2059	
अन्तर	से.........
मिथुन	22:11:2056
कर्क	01:02:2057
सिहं	13:04:2057
कन्या	23:06:2057
तुला	02:09:2057
वृश्चिक	11:11:2057
धनु	21:01:2058
मकर	02:04:2058
कुम्भ	12:06:2058
मीन	22:08:2058
मेष	01:11:2058
वृष	11:01:2059

मीन भुक्ति 23:03:2059 —— 23:07:2061	
अन्तर	से.........
मकर	23:03:2059
कुम्भ	02:06:2059
मीन	12:08:2059
मेष	22:10:2059
वृष	01:01:2060
मिथुन	12:03:2060
कर्क	23:05:2060
सिहं	02:08:2060
कन्या	12:10:2060
तुला	22:12:2060
वृश्चिक	03:03:2061
धनु	13:05:2061

कालचक्र दशा, भुक्ति और अन्तर

सिहं दशा 23:07:2061 —— 23:07:2066

मेष भुक्ति
23:07:2061 —— 11:02:2062

अन्तर	से.........
मेष	23:07:2061
वृष	09:08:2061
मिथुन	26:08:2061
कर्क	12:09:2061
सिहं	29:09:2061
कन्या	15:10:2061
तुला	01:11:2061
वृश्चिक	18:11:2061
धनु	05:12:2061
मकर	22:12:2061
कुम्भ	08:01:2062
मीन	25:01:2062

वृष भुक्ति
11:02:2062 —— 02:09:2062

अन्तर	से.........
मकर	11:02:2062
कुम्भ	28:02:2062
मीन	17:03:2062
मेष	02:04:2062
वृष	19:04:2062
मिथुन	06:05:2062
कर्क	23:05:2062
सिहं	09:06:2062
कन्या	26:06:2062
तुला	13:07:2062
वृश्चिक	30:07:2062
धनु	16:08:2062

मिथुन भुक्ति
02:09:2062 —— 23:03:2063

अन्तर	से.........
वृश्चिक	02:09:2062
धनु	18:09:2062
मकर	05:10:2062
कुम्भ	22:10:2062
मीन	08:11:2062
मेष	25:11:2062
वृष	12:12:2062
मिथुन	29:12:2062
कर्क	15:01:2063
सिहं	01:02:2063
कन्या	17:02:2063
तुला	06:03:2063

कर्क भुक्ति
23:03:2063 —— 12:10:2063

अन्तर	से.........
कन्या	23:03:2063
तुला	09:04:2063
वृश्चिक	26:04:2063
धनु	13:05:2063
मकर	30:05:2063
कुम्भ	16:06:2063
मीन	03:07:2063
मेष	20:07:2063
वृष	05:08:2063
मिथुन	22:08:2063
कर्क	08:09:2063
सिहं	25:09:2063

सिहं भुक्ति
12:10:2063 —— 02:05:2064

अन्तर	से.........
धनु	12:10:2063
मकर	29:10:2063
कुम्भ	15:11:2063
मीन	02:12:2063
मेष	19:12:2063
वृष	05:01:2064
मिथुन	22:01:2064
कर्क	07:02:2064
सिहं	24:02:2064
कन्या	12:03:2064
तुला	29:03:2064
वृश्चिक	15:04:2064

कन्या भुक्ति
02:05:2064 —— 22:11:2064

अन्तर	से.........
वृश्चिक	02:05:2064
धनु	19:05:2064
मकर	05:06:2064
कुम्भ	22:06:2064
मीन	09:07:2064
मेष	26:07:2064
वृष	12:08:2064
मिथुन	29:08:2064
कर्क	15:09:2064
सिहं	02:10:2064
कन्या	19:10:2064
तुला	05:11:2064

तुला भुक्ति
22:11:2064 —— 12:06:2065

अन्तर	से.........
मकर	22:11:2064
कुम्भ	08:12:2064
मीन	25:12:2064
मेष	11:01:2065
वृष	28:01:2065
मिथुन	14:02:2065
कर्क	03:03:2065
सिहं	20:03:2065
कन्या	06:04:2065
तुला	23:04:2065
वृश्चिक	10:05:2065
धनु	26:05:2065

वृश्चिक भुक्ति
12:06:2065 —— 01:01:2066

अन्तर	से.........
मेष	12:06:2065
वृष	29:06:2065
मिथुन	16:07:2065
कर्क	02:08:2065
सिहं	19:08:2065
कन्या	05:09:2065
तुला	22:09:2065
वृश्चिक	09:10:2065
धनु	26:10:2065
मकर	11:11:2065
कुम्भ	28:11:2065
मीन	15:12:2065

धनु भुक्ति
01:01:2066 —— 23:07:2066

अन्तर	से.........
मकर	01:01:2066
कुम्भ	18:01:2066
मीन	04:02:2066
मेष	21:02:2066
वृष	10:03:2066
मिथुन	27:03:2066
कर्क	13:04:2066
सिहं	29:04:2066
कन्या	16:05:2066
तुला	02:06:2066
वृश्चिक	19:06:2066
धनु	06:07:2066

कालचक्र दशा, भुक्ति और अन्तर

मिथुन दशा 23:07:2066 —— 23:07:2075

तुला भुक्ति 23:07:2066 —— 23:07:2067

अन्तर	से.........
मकर	23:07:2066
कुम्भ	22:08:2066
मीन	22:09:2066
मेष	22:10:2066
वृष	22:11:2066
मिथुन	22:12:2066
कर्क	21:01:2067
सिहं	21:02:2067
कन्या	23:03:2067
तुला	23:04:2067
वृश्चिक	23:05:2067
धनु	23:06:2067

वृश्चिक भुक्ति 23:07:2067 —— 23:07:2068

अन्तर	से.........
मेष	23:07:2067
वृष	22:08:2067
मिथुन	22:09:2067
कर्क	22:10:2067
सिहं	22:11:2067
कन्या	22:12:2067
तुला	22:01:2068
वृश्चिक	21:02:2068
धनु	23:03:2068
मकर	22:04:2068
कुम्भ	23:05:2068
मीन	22:06:2068

धनु भुक्ति 23:07:2068 —— 23:07:2069

अन्तर	से.........
मकर	23:07:2068
कुम्भ	22:08:2068
मीन	22:09:2068
मेष	22:10:2068
वृष	22:11:2068
मिथुन	22:12:2068
कर्क	21:01:2069
सिहं	21:02:2069
कन्या	23:03:2069
तुला	23:04:2069
वृश्चिक	23:05:2069
धनु	23:06:2069

मकर भुक्ति 23:07:2069 —— 23:07:2070

अन्तर	से.........
मिथुन	23:07:2069
कर्क	22:08:2069
सिहं	22:09:2069
कन्या	22:10:2069
तुला	22:11:2069
वृश्चिक	22:12:2069
धनु	21:01:2070
मकर	21:02:2070
कुम्भ	23:03:2070
मीन	23:04:2070
मेष	23:05:2070
वृष	23:06:2070

कुम्भ भुक्ति 23:07:2070 —— 23:07:2071

अन्तर	से.........
मिथुन	23:07:2070
कर्क	22:08:2070
सिहं	22:09:2070
कन्या	22:10:2070
तुला	22:11:2070
वृश्चिक	22:12:2070
धनु	21:01:2071
मकर	21:02:2071
कुम्भ	23:03:2071
मीन	23:04:2071
मेष	23:05:2071
वृष	23:06:2071

मीन भुक्ति 23:07:2071 —— 23:07:2072

अन्तर	से.........
मकर	23:07:2071
कुम्भ	22:08:2071
मीन	22:09:2071
मेष	22:10:2071
वृष	22:11:2071
मिथुन	22:12:2071
कर्क	22:01:2072
सिहं	21:02:2072
कन्या	23:03:2072
तुला	22:04:2072
वृश्चिक	23:05:2072
धनु	22:06:2072

मेष भुक्ति 23:07:2072 —— 23:07:2073

अन्तर	से.........
मेष	23:07:2072
वृष	22:08:2072
मिथुन	22:09:2072
कर्क	22:10:2072
सिहं	22:11:2072
कन्या	22:12:2072
तुला	21:01:2073
वृश्चिक	21:02:2073
धनु	23:03:2073
मकर	23:04:2073
कुम्भ	23:05:2073
मीन	23:06:2073

वृष भुक्ति 23:07:2073 —— 23:07:2074

अन्तर	से.........
मकर	23:07:2073
कुम्भ	22:08:2073
मीन	22:09:2073
मेष	22:10:2073
वृष	22:11:2073
मिथुन	22:12:2073
कर्क	21:01:2074
सिहं	21:02:2074
कन्या	23:03:2074
तुला	23:04:2074
वृश्चिक	23:05:2074
धनु	23:06:2074

मिथुन भुक्ति 23:07:2074 —— 23:07:2075

अन्तर	से.........
वृश्चिक	23:07:2074
धनु	22:08:2074
मकर	22:09:2074
कुम्भ	22:10:2074
मीन	22:11:2074
मेष	22:12:2074
वृष	21:01:2075
मिथुन	21:02:2075
कर्क	23:03:2075
सिहं	23:04:2075
कन्या	23:05:2075
तुला	23:06:2075

जातक से संबंधित सामान्य भविष्यफल

सामान्य विशेषताएं :

आपकी लग्न राशि कन्या है। इस राशि को भौतिक, सामान्य या लचीली राशि के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। अन्य कई नैसर्गिक गुणात्मक विशेषताएं भी इसमें विद्यमान हैं। यह नीरस और मानवीय प्रकृति की राशि है।

इस लग्न में जन्म लेने के कारण, आप मेधावी, अध्ययनशील और विनोदपूर्ण प्रकृति के होंगे। आपके कार्य करने के तरीके बहुत नियमबद्ध और सुव्यवस्थित होंगे, आप बहुत ज्ञानी व्यक्ति होंगे– निपुणता प्राप्त करने के उद्देश्य से आप सदैव ज्ञान की खोज में लगे रहेंगे। आपका झुकाव निरन्तर अनौपचारिक अध्ययन अथवा अनुसंधान की ओर बना रहेगा, तंत्र–मंत्र और इससे संबंधित विषयों में भी आपकी रूचि हो सकती है। आपमें धैर्य व दृढ़ता का भण्डार हो सकता है।

आपको कला और साहित्य में भी काफी रूचि हो सकती है। सामान्यतः अपने सभी मामलों में आप आदतनआलोचक और सख्त होंगे, तो भी आप कोमल वाणी, व्यावहारिक, परोपकारी और विवेकपूर्ण प्रकृति के होंगे। आप सादा जीवन और उच्च विचार में विश्वास रखेंगे और बहुत विवेकपूर्ण ढंग से अपने मौद्रिक मामलों का प्रबन्ध करेंगे। आप विचित्र वस्तुओं के उत्साही संग्रहकर्ता हो सकते हैं– संभवतः जिसने आपके जीवन के किसी समय के दौरान आपकी कल्पना को आकर्षित किया हो, लेकिन किसी भी संग्रहित वस्तु सेअलग ना होने की आपकी एक विचित्र आदत हो सकती है।

शारीरिक संरचना :

आप गौर वर्ण के हो सकते हैं। आप मध्यम कद और गोल चेहरे व सुगठित छरहरी शारीरिक संरचना वालेहो सकते हैं। आपकी आँखें सुन्दर होंगी। आपकी आवाज कुछ–कुछ तेज हो सकती है। साथ ही आपकुछ हद तक अस्थिर मस्तिष्क वाले हो सकते हैं और बढ़ती उम्र के साथ उदास प्रवृत्ति अपना सकते हैं।

मानसिक स्थिति :

आपकी कुण्डली में चंद्रमा कन्या राशि में स्थित है– जो कि बुध द्वारा संचालित है। यह एक साधारण, नकारात्मक और भौतिक राशि है। आप शांत, मनमौजी और कुछ–कुछ ढुलमुल प्रकृति के होंगे, किन्तु आप बहुत ज्यादा महात्वाकांक्षी नहीं हो सकते हैं, आपमें डींग हाकने वाली आदतें बिल्कुल नहीं होंगी और आप मिथ्याभिमान से सदैव घृणा करेंगे। यद्यपि आपकी बौद्धिक क्षमता काफी ऊँची होगी और आप बौद्धिक कार्योमें संलग्न रहेंगे, तो भी आप उत्तरदायित्वपूर्ण एवं किसी के अधीन तक भी रहकर काम करना पसन्द कर सकते हैं। ऐसा आप अपने जीवन में शांति की कीमत व महत्ता को बढाने के लिए करेंगे और अनावश्यक तनावों से सदैव दूर रहना चाहेंगे।

आपको अपने घर से काफी लगाव होगा और आपके प्रिय पारिवारिक जन आपके जीवन को बहुत आनन्दमय व खुशहाल बनाएंगे। कृषि, कृषि संबंधी उत्पाद, दवाएं, औषधि, भोज्य–पदार्थ, बेकरी, मिष्ठान–भंडार, घरेलू उपभोग की वस्तुएं और अन्य घरेलू उपकरण आपको अपेक्षाकृत अधिक आकर्षित करेंगे। आपका अपने सहकर्मियों, वरिष्ठों व अधीनस्थों के साथ समान रूप से सौहार्दपूर्ण संबंध होगा और यदि आपका कोई घरेलू नौकर है, तो उसका व्यवहार भी आपके प्रति बहुत अच्छा होगा एवं आपको बहुत सम्मान देगा। फुर्तीला व चौकन्ना रहना आपका सहज स्वभाव होगा, साथ ही आप कुछ हद तक

रहस्यात्मक भी हो सकते हैं– जो कि आपको असाधारण रूप से सहनशील बनाएगा। पारिवारिक भाग्य का अत्यधिक पतन, या जटिल घरेलू विवाद, अथवा अन्य प्रकार का थोपा हुआ अवरोध या प्रारम्भिक जीवन के अभाव आपको कुछ हद तक अन्तर्मुखी या एकान्तप्रिय बना सकते हैं।

आप विश्लेषण–विज्ञान का औपचारिक अध्ययन कर सकते हैं, किन्तु कला–कौशल में भी आपकी उतनी ही रूचि होगी– आपको ना केवल सैद्धान्तिक विषय–सामग्री के अध्ययन की तीव्र इच्छा होगी, बल्कि आप प्रयोगात्मक पक्ष या व्यावहारिक दृष्टिकोण में भी रूचि रखेंगे– जिसको आप अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण समझेंगे। आप अपने खुद के कुछ मौलिक निष्कर्ष निकाल सकते हैं अथवा कुछ तथ्यों की खोज कर सकतेहैं या कुछ उपकरणों का अविष्कार कर सकते हैं– जो कि सांसारिक गतिविधियों में उपयोगी साबित होगी। जैसे–जैसे समय व्यतीत होगा, आपकी परिपक्वता व योगदान की क्षमता में वृद्धि होगी, आपमें जोशपूर्ण व हंसमुख प्रकृति का विकास होगा, बातचीत करने में कुशल और रमणीय संकेत करने में माहिर होंगे। संभवतः कुछ अन्तर्देशीय दूरस्थ स्थानों या विदेशों की भी यात्रा कर सकते हैं– शैक्षणिक या सांस्कृतिक उद्देश्य से।

सकारात्मक गुण :

आपमें विश्लेषण करने की अनोखी क्षमता विद्यमान होगी। आप बुद्धिमान और धारणशील स्मृति वाले होंगे। आप लड़ाई–झगड़ों से दूर रहने का प्रयास करेंगे और शांति व एकता आपको पसन्द होगी। आप बहुत नियमबद्ध ढंग से कार्य करेंगे। आपको कई क्षेत्रों का ज्ञान होगा। आप विवेकशील होंगे और व्यर्थ में धन खर्च नहीं करेंगे। आपको कला और संगीत में रूचि होगी।

नकारात्मक गुण :

आप भ्रमित और अस्थिर दिमाग वाले हो सकते हैं। आपमें आत्म–विश्वास की कमी हो सकती है। आप यथार्थवादी नहीं हो सकते हैं और अज्ञात सपनों के पीछे भाग सकते हैं।

विशिष्ट गुण :

1– आप बुद्धिजीवी और अत्यंत ग्रहणशील व्यक्ति होंगे।
2– आप कर्तव्यनिष्ठ और अपने कार्यों में बहुत व्यवस्थित होंगे। आप प्रत्येक क्षण के बारे में विचार करेंगे।
3– आप विनम्र, धार्मिक और मधुर वाणी वाले व्यक्ति होंगे।

ब्यवसाय :

आप एक सफल परामर्शदाता, वकील, चिकित्सक, शिक्षक, प्राध्यापक, सांख्यिकीविद, कम्प्यूटर प्रोग्रामर, गणितज्ञ, लेखाकार, गायक, लेखक, प्रबन्धक हो सकते हैं। आप परिवहन, यात्रा, टेलिफोन, आभूषण के व्यवसाय से लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

शुभ और अशुभ ग्रह :

1– दूसरे व नौवें भाव का स्वामी शुक्र, शुभ है।
2– लग्नेश बुध, सर्वाधिक शुभ

है।
3– सातवें भाव का स्वामी बृहस्पति, मारकेश है।
4– चंद्रमा अशुभ है।
5– तीसरे व आठवें भाव का स्वामी मंगल, सर्वाधिक अशुभ है।
6– सूर्य और शनि तटस्थ हैं।

कन्या लग्न से संबंधित महत्वपूर्ण व्यक्ति :

क्रिकेटर– अजहरूद्दीन, सचिन तेंदुलकर, वेंकटेश प्रसाद, उद्योगपति– लाला चैतराम, वैल्स की राजकुमारी–प्रिंसेज़ डायना, यू. एस. ए. के पूर्व राष्ट्रपति– जॉन एफ. केनेडी, बिल क्लींटन, भारत के पूर्व राष्ट्रपति– डॉ. राधाकृष्णन, पूर्व प्रधानमंत्री– राजीव गांधी, पी. वी. नरसिंह राव, टेनिस खिलाड़ी– लिएन्डर पेस।

विभिन्न ज्योतिष कारकों का फल

जन्म कालिक ब्राहस्पत्य (संवत्सर) का फल :

आपका जन्म प्रमादी संवत्सर में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ अनुकूल योग मौजूद नहीं हैं, और/या यदि कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो आपको कुछ प्रतिकूल परिणाम प्राप्त होने की संभावना है। आप बहुत बुद्धिमान या ज्ञानी नहीं हो सकते हैं, और उत्तम आजीविका कमाने के लिए पर्याप्त कुशल नहीं हो सकते हैं। तो भी आप वृथा अभिमानी प्रकृति और अत्यधिक घमंडी स्वभाव के हो सकते हैं, एवं विद्वेषी व लालची व्यक्ति हो सकते हैं। आप विचारहीन और झगड़ालु हो सकते हैं, कई लोगोंका विरोध कर सकते हैं, तथा निन्दनीय व बुरे कामों को करने में आपको विशेष सुख मिल सकता है।

जन्म कालिक सौर अयन का फल :

आपका जन्म सूर्य के दक्षिणायन (यमयायन) में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो संकेत अनुकूल नहीं हैं। आप कुछ हद तक दम्भी और हठी प्रकृति या असहिष्णु स्वभाव वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आप कठोर हृदय वाले या कपटी हो सकते हैं। आप कृषि कार्यों और/या मवेशियों के पालन से अपनी जीविकोपार्जन कर सकते हैं। साथ ही, आप कुछ ऐसे कार्यों को करने में संलग्न हो सकते हैं, जहां आपके द्वारा किए गए कार्यों की अपेक्षा आपको प्राप्त होने वाला पारिश्रमिक बिल्कुल भी सामंजस्यपूर्ण नहीं हो सकता है।

जन्म कालिक ऋतु का फल :

आपका जन्म हेमन्त ऋतु में हुआ है। यदि कुछ प्रतिकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं, तो ये संकेत अनुकूल हैं। आप अत्यंत बुद्धिमान, विचारवान, ज्ञानी और विवेकशील व्यक्ति होंगे। आप स्वतन्त्र विचारों के साथ–साथ उदार प्रवृत्ति वाले व्यक्ति होंगे और सदैव न्यायसंगत कार्य करने में संलग्न रहेंगे। आपकी धार्मिक रूचि उत्कृष्ट होगी और आप अपनी आजीविका एक वरिष्ठ सलाहकार या एक परामर्शदाता बनकर अर्जित कर सकते हैं। आप सुन्दर आचरण और विनम्र प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे– जिसके लिए लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे।

जन्म कालिक मास का फल :

आपका जन्म पौष मास (दिसम्बर/जनवरी) में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली मे कुछ संशोधनकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो संकेत बहुत अनुकूल नहीं हैं। यद्यपि आप आकर्षक व्यक्तित्व और सुन्दर स्वरूप वाले होंगे, फिर भी, आपकी शारीरिक संरचना कमजोर हो सकती है, आपको अपने माता–पिता से आर्थिक सहयोग प्राप्त नहीं हो सकता है।, तो भी आप लापरवाही से खर्च कर सकते हैं। साथ ही, आप गोपनीय प्रकृति के हो सकते हैं और अपने विचार व निर्णय अपने तक ही सीमित रख सकते हैं– जिससे आप अपनेविरोधियों को आघात पहुंचाने में सक्षम हो सकते हैं। सुखद पहलु यह है, कि आप धार्मिक विचारों वाले, पवित्र ग्रन्थों का अध्ययन करने के शौकीन और विद्वानों व धर्मपरायण लोगों का उचित सम्मान करने वाले होंगे।

जन्म कालिक पक्ष का फल :

आपका जन्म कृष्ण पक्ष में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो

ये संकेत अनुकूल नहीं हैं। आपकी शारीरिक संरचना कुछ–कुछ कमजोर हो सकती है और आप आसानी से रोगादि से ग्रसित हो सकते हैं। आप चंचल प्रकृति और अस्थिर स्वभाव वाले हो सकते हैं। आप पर शरारती और/या झगड़ालु होने की छाप लग सकती है। आप बहुत भावुक प्रकृति के हो सकते हैं, चीजों को उनके उचित परिपेक्ष्य में देखे बिना ही आप राई को पहाड़ बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त, आप कामुक हो सकते हैं और अपने जीवनसाथी की खुशामद कर सकते हैं।

जैसाकि आपकी कुण्डली में अति शुभ ग्रह बृहस्पति की चंद्रमा के साथ युति है (या इस पर उसकी दृष्टि पड़ रही है), आपमें मानसिक शांति और मिजाज की समानता विद्यमान होगी। आप खुले विचारों के साथ–साथ स्पष्टवादी प्रकृति, आशावादी दृष्टिकोण और परोपकारी स्वभाव के व्यक्ति होंगे। आर्थिक रूप से आप काफी सम्पन्न होंगे और आपके मित्रों व परिचितों का दायरा विस्तृत होगा। आप सदैव स्वयं निर्णय करने की स्थिति में होंगे और आपके दायरे के लोग कुछ महत्वपूर्ण मामलों में आपकी कीमती राय या सलाह ले सकते हैं।

जन्म कालिक वार का फल :

आपका जन्म सोमवार को हुआ है। दिवसपति चंद्रमा की स्थिति आपकी कुण्डली में काफी महत्वपूर्ण है। इसका फल– भाव में इसकी स्थिति के अनुसार– और भी अधिक महत्वपूर्ण होगा। सामान्यतः अन्य सारे संकेत अनुकूल हैं। आप शांत स्वभाव के ज्ञानी व्यक्ति होंगे– इसके अतिरिक्त मृदुभाषी व स्थिर चित्त वाले होंगे। बाहरी स्थिति में परिवर्तन के बाद भी आप सुव्यवस्थित/अनुद्विग्न रहेंगे एवं अपने उद्देश्यों की पूर्ति का मार्ग आपको ज्ञात होगा। आप बहुत लोकप्रिय होंगे एवं अधिकारियों से अनेक प्रत्यक्ष समर्थन और अप्रत्यक्ष लाभ का आनन्द लेंगे।

दिन या रात के जन्म का फल :

आपका जन्म रात्रि के समय में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आप कुछ हद तक आलसी हो सकते हैं और आपको दिन में सोने का शौक हो सकता है। आप कुछ–कुछ गोपनीय प्रकृति के हो सकते हैं और आप अपनी कुछ इच्छायें या उद्देश्य गुप्त रखना चाहेंगे। इसके अतिरिक्त आप थोड़े कामुक भी हो सकते हैं– जिसकी वजह से आप अपने जीवनसाथी से दबे हो सकते हैं। आप सक्रिय, उर्जावान, आशावादी और उत्साह से परिपूर्ण होंगे।

जन्म कालिक सूर्य सिद्धान्त योग का फल :

सूर्य–सिद्धान्त के अनुसार आपका जन्म सौभाग्य योग में हुआ है। यह योग अनुकूल श्रेणी से संबंध रखता है। इस योग में जन्म होने के कारण, आप कई मामलों में अत्यंत भाग्यशाली होंगे। आप सदाचारी प्रवृत्ति वाले विद्वान और बुद्धिमान व्यक्ति होंगे और सदैव न्यायसंगत मार्ग का चयन करेंगे। आपके व्यवहार, ईमानदारी, विवेकशीलता और दूरदर्शिता के लिए लोग आपको अधिक सम्मान देंगे और उनसे संबंधित महत्वपूर्ण मामलों में आपसे विशिष्ट सलाह ले सकते हैं।

जन्म कालिक तिथि का फल :

आपका जन्म नवमी तिथि को हुआ है। आपका अपने पिता से नजदीकी लगाव होगा और शिक्षकों व उपदेशकों के प्रति सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे, लेकिन स्वभाव से आप कुछ हद तक भिन्न हो सकते हैं– जिसकी वजह से आपके कुछ अपने लोग ही आपका विरोध कर सकते हैं या आपसे फायदा उठाने का प्रयास कर सकते हैं। आपका धार्मिक रूझान उत्कृष्ट होगा और आपमें न्याय व शिष्टाचार की समझ

अत्यंत सराहनीय होगी। आप कर्कश व कड़क बोली तथा भ्रष्ट प्रकृति के हो सकते हैं, यहां तक कि आपकेअपने लोग भी आपके बुरे बर्ताव के कारण आपकी निन्दा कर सकते हैं।

जन्म कालिक करन का फल :

आपका जन्म गरिजा करन में हुआ है। यह चर श्रेणी का पांचवां करन है। आप उत्तम स्वास्थ्य, सुगठित शारीरिक संरचना, सुन्दर स्वरूप और मनोहारी बर्ताव से सुसम्पन्न होंगे। आप बुद्धिमान और ज्ञानी होंगे, उदार वादी विचारों वाले, सम्माननीय और दूसरों के प्रति हितकारी भाव रखने वाले होंगे। आप चतुर होंगे, किन्तु विवेकपूर्ण भी होंगे, आप अपने सभी शत्रुओं को पूर्णतः परास्त करने में सक्षम होंगे– किन्तु आप ऐसा बिना किसी गुट, सामाजिक संघ या कपटपूर्ण कार्यों का सहारा लिए ही करेंगे। आपकी सफलता की कुंजी आपकी सहनशीलता, दृढ़ता, समझदारी और समय पर कार्य करने की आदत होगी। आप अपना मार्ग स्वयं बनाने में सक्षम होंगे और दीर्घकाल में अपने समकालीनों से आगे निकल जाएंगे।

जन्म कालिक नक्षत्र का फल :

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा हस्त नक्षत्र में स्थित है। इस नक्षत्र में जन्म लेने के कारण, आप अनेक मामलों में बहुत भाग्यशाली होंगे। आप सक्रिय आदतों, संवेदनशील प्रकृति और विचारशील प्रवृत्ति के व्यक्तिहोंगे। आप अत्यंत बुद्धिमान और सुशिक्षित होंगे। इसके अतिरिक्त, आपको पवित्र प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन करने में गहन रूचि होगी, या फिर, आप ललित कलाओं की किसी विधा में प्रवीणता अर्जित कर सकते हैं। आप रचनात्मक कल्पना और उत्कृष्ट विचारों से सम्पन्न होंगे। आप एक लेखक, सम्पादक, अंशदाता, आलोचक आदि के रूप में विख्यात हो सकते हैं। आपके व्यवसाय का कुछ संबंध नगर निगम, जल–कार्य, व्यापारी जलयान (मर्चेन्ट–नेवी), आयात–निर्यात आदि से हो सकता है, आपकी आय उत्कृष्ट होगी।

जन्म कालिक लग्न का फल :

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। यह राशिचक्र की छठवीं राशि है। संरचनात्मक रूप से यह एक पृथ्वीतत्व की उभय राशि है– शासित ग्रह बुध की नकारात्मक राशि। आप उदीयमान राशि कन्या और इसके स्वामी ग्रह बुध की नैसर्गिक विशेषताओं और विशिष्ट गुणों से सम्पन्न होंगे। इस राशि की लाक्षणिक विशेषताएं फसल और पालन–पोषण है। इस राशि का स्वामित्व शरीर के आंतों और सौर तंतुजाल (अमाशयके पीछे का तंत्रिका–जाल) के भाग पर है। आपको आंतों की धीमी गतिविधि के कारण समस्याएं हो सकती हैं। आपको जैतून का रंग पसन्द होगा, आपका भाग्यशाली रत्न गोमेद है और आपका पसन्दीदा फूल एस्टर (गेंदे के प्रकार का कई रंगों वाला) है।

आप अपनी स्वयं की दुनिया में रहने में विश्वास कर सकते हैं, तथा या फिर, किसी समय आप काफी शर्मीले और किसी दूसरे समय में बहुत स्पष्टवादी हो सकते हैं। बहुत शीघ्र ही बड़े हो जाने और भारी जिम्मेदारियों का बोझ उठाने का भय आपके मन में उत्पन्न असुरक्षा की भावना का प्रमुख कारण हो सकताहै। किन्तु एक ऐसा समय आएगा, जब आप अचानक ही जीवन के गंभीर उद्देश्यों को समझेंगे।

आपका सकारात्मक पक्ष यह है कि, आप मेहनती प्रकृति और गैरसमझौतावादी प्रवृत्ति के एक चैतन्य व्यक्ति होंगे। हालांकि, आप कुछ हद तक अल्पभाषी और एकान्तप्रिय हो सकते हैं। आप अविष्कारक दिमाग, रचनात्मक कल्पनाशीलता, स्पष्ट समझ, तार्किक सोच और पक्षपातरहित दृष्टिकोण से सम्पन्न होंगे। आप सहनशीलता और दृढ़ता की प्रतिमूर्ति होंगे एवं अत्यंत उत्तम कार्य करने के उद्देश्य से समर्पित

होंगे।

इसका दूसरा पक्ष यह है, कि आप स्वकेन्द्रित, छिद्रान्वेषी और घमण्डी प्रवृत्ति के हो सकते हैं– व्यर्थ में बालकी खाल निकालने की आदत हो सकती है। आप जिम्मेदारी से दूर भागने और सुविधाजनक तरीकों सेलाभ प्राप्त करने की कलात्मक दक्षता प्राप्त कर सकते हैं। आपका दिमाग विकृत विचारों से पूर्ण हो सकता है और धूर्तता एवं कपटपूर्ण तरीकों से अपने हितों को पूरा करने की अनुचित भावना आपके अन्दर जन्म ले सकती है।

आपकी कुण्डली में संचालित ग्रहीय प्रभावों का एकत्रित प्रभाव और आपके द्वारा अपनी इच्छा–शक्ति के प्रयोग का तरीका यह निर्धारित करेगा, कि आप कौन सा रास्ता चुनना पसन्द करेंगे और आपको उस पर चलने से वास्तव में किस प्रकार का परिणाम प्राप्त होगा।

जन्म कालिक होरा का फल :

आपकी कुण्डली में लग्न मेष राशि के प्रथम होरा में स्थित है– जो कि सिंह होरा के समकक्ष है। इस युतिके कारण आपका कद लम्बा और व्यक्तित्व ओजपूर्ण होगा। लेकिन आपका मिजाज गर्म हो सकता है और आपको बदमाश किस्म के लोगों की संगति पसन्द हो सकती है। आपमें अनावश्यक रूप से इधर–उधर देखने की विशेष आदत हो सकती है, और आप यह मान सकते हैं कि आप दूसरों से अधिक चालाक हैं।

जन्म कालिक द्रेष्काण का फल :

आपकी कुण्डली में, लग्न कन्या राशि के तीसरे द्रेष्काण में स्थित है– जो वृषभ द्रेष्काण के समकक्ष है। इसयोग के कारण, आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपकी शारीरिक संरचना औसत होगी, लेकिन काया स्थूल और आकृतियां स्पष्ट होंगी। आपको आडम्बर से घृणा होगी, अतः आप समस्याओं से मुक्त रहेंगे, आपमें चीजों का हल खोजने और कुछ लोगों को नियुक्त करने की विलक्षण क्षमता होगी– जो उनको हल कर सकें तथा आप उनको अपने मित्रों व परिचितों के दायरे में पाएंगे। वित्तिय मामलों में भी आप चिन्ता मुक्त रहेंगे। आपकी अपनी आय बहुत उत्तम होगी और आवश्यकता पड़ने पर दूसरों से भी आपमदद प्राप्त करेंगे। ईश्वर आपको एक शांतिपूर्ण और खुशहाल जीवन के आनन्द का वरदान देंगे।

जन्म कालिक प्राणपद का फल :

आपकी कुण्डली में, प्राणपद सातवें भाव (डर–भाव) में स्थित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो संकेत अनेक मामलों में बहुत अनुकूल नहीं हैं। आपके विचार विकृत हो सकते हैं और आप कारण व तर्क सुनना पसन्द नहीं कर सकते हैं। आपदूषित दिमाग और कामुक प्रकृति के होने के साथ–साथ क्रोधी मिजाज के हो सकते हैं, जिसे शांत करना कठिन हो सकता है। आपके व्यवहार के कारण आपके कुछ मित्र शत्रु भी बन सकते हैं।

जन्म कालिक गुलिक का फल :

आपकी कुण्डली में, गुलिक ग्यारहवें भाव (आय–भाव) में स्थित है। यह एक अत्यंत शुभ योग है। आप असाधारण रूप से भाग्यशाली होंगे और अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे। आप गौर वर्ण, आकर्षक स्वरूप,प्रभावशाली व्यक्तित्व और राजसी व्यवहार वाले व्यक्ति होंगे। आप धनवान, शक्तिसम्पन्न और प्रभावशाली होंगे। लोग आपको बहुत अधिक पसन्द करेंगे एवं आप अपने मित्रों व परिचितों के बहुत बड़े

दायरे में आकर्षण का केन्द्र होंगे।

जन्म कालिक गण का फल :

देव गण नक्षत्र में जन्म लेने के कारण आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप आकर्षक व्यक्तित्व, सुन्दर स्वरूप, मनोहारी बर्ताव और उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे। आप ईश्वर के प्रति समर्पित, बड़ों, शिक्षकोंव उपदेशकों के प्रति श्रद्धापूर्ण होंगे। आपकी आवाज सुरीली और वचन मधुर होंगे। आपकी भूख कमहोगी और आप सात्विक भोजन करना पसन्द करेंगे। आप धनी और सद्गुणी होंगे। आप दूसरों की योग्यताओं की प्रशंसा करने और सद्गुणों को सुनने में भी सक्षम होंगे।

जन्म कालिक वर्ण का फल :

वैश्य वर्ण नक्षत्र में जन्म लेने के कारण आप कुछ मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप आध्यात्मिक विकास कीतीसरी श्रेणी से संबद्ध होंगे, आर्थिक लाभ एवं धन संग्रह आपका मुख्य उद्देश्य हो सकता है। शैक्षिणिकउपलब्धियों एवं आध्यात्मिक उन्नति का आपके लिए बहुत अधिक महत्व नहीं हो सकता है, आप आय के मानक और भौतिक अधिग्रहणों के स्तर से अधिक प्रभावित होंगे। आप बहुत युक्तिपूर्ण और चतुर होंगे– हमेशा अपने हितों को ही पूरा करने में लगे रहेंगे। आपका मनोबल बहुत ऊँचा नहीं हो सकता है, और सिद्धान्त लचीले हो सकते हैं। आप बहुत धनी होंगे एवं अपने जीवनसाथी व संतानों से बहुत प्रेम करेंगे, फिर भी आप बहुत खुश नहीं हो सकते हैं– जैसाकि कहीं पर किसी चीज के अभाव के कारण खालीपन महसूस कर सकते हैं। आपकी धन और अधिग्रहणों के प्रति दीवानगी के कारण आपके अपने लोग आपको एक मशीनी यंत्र के समान समझ सकते हैं।

ग्रहों की भावगत और राशिगत स्थिति का फल

सूर्य की स्थिति का फल :

आपकी कुण्डली में सूर्य धनु राशि में स्थित है। जैसाकि सूर्य मित्र राशि में सुव्यवस्थित है, आप कई मामलोंमें भाग्यशाली होंगे। आप चौड़े गठन की भव्य और प्रभावी शारीरिक संरचना से पूर्ण होंगे। आप बहुतउत्साही, उर्जावान और सदा आशावादी होंगे। आप एक विद्वान, बुद्धिमान और विवेकी व्यक्ति होंगे, लोगआपके विचारों और मतों को मान तथा महत्व देंगे और आपको बहुत सम्मान देंगे। आप बड़ों एवं सदाचारी लोगों का आदर करेंगे तथा धर्म व ईश्वर में आस्था रखेंगे। यद्यपि आप अन्दर से शांतिप्रिय होंगे, फिर भी सुरक्षा के उद्देश्य से आपकी मार्शल आर्ट में महारत हासिल करने में बहुत रूचि हो सकती है, आप अपनी विद्वता की कुशलता से उपयोग ईमानदार योग्य लोगों को उचित प्रशिक्षण देने में कर सकते हैं।आपको अपने कार्य क्षेत्र में विशिष्टता प्राप्त होगी और आप कई अनुयायियों की प्रेरणा का स्रोत होंगे।

आपकी कुण्डली में सूर्य चौथे भाव में स्थित है। जैसाकि आपका लग्न कन्या है, द्वादशेश सूर्य की चौथे भावमें स्थिति कुछ मामलों में एक अनुकूल योग नहीं है। आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता हैऔर आपका घरेलू जीवन शांतिपूर्ण या खुशहाल नहीं हो सकता है। इसके अलावा परिवार के सदस्यों में विशेष मतभेद के कारण सम्पत्ति का बंटवारा या नुकसान हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव नहीं हैं, तो आपका परिवार अपना सम्मान खो सकता है– संभवतः आपके कुछ अविवेकपूर्ण कार्यों के कारण। आपकी शिक्षा बाधित हो सकती है और आपको अपना घर तथा पैतृक स्थान अचानक पारिस्थितिक बाधाओं के कारण छोड़ना पड़ सकता है।

चन्द्रमा की स्थिति का फल :

आपकी कुण्डली में चंद्रमा कन्या राशि में स्थित है। इस कारण से आप कई संबंधों में भाग्यशाली होंगे। आप सुन्दर रूप, आकर्षक व्यक्तित्व, ओजपूर्ण व्यवहार, मनोहारी स्वभाव और उदार प्रकृति वाले व्यक्ति होंगे। आप मृदुभाषी और दूसरों के प्रति वास्तविक करूणा रखने वाले होंगे। जीवन में आप बहुत विख्यात होंगे और आपके मित्रों व परिचितों का दायरा बहुत बड़ा होगा। आप विपरीत लिंग के अनुकूल लोगों की संगति के बहुत शौकीन होंगे। आपका विवाह फलदायी होगा, आपकी पुत्रियां अधिक हो सकती हैं, आपका घरेलू जीवन बहुत खुशहाल और आनन्दमय होगा। आपका धार्मिक रूझान बहुत उत्कृष्ट होगा, आप परम्पराओं का नियमित रूप से निर्वाहन करेंगे, अपेक्षाकृत कम आयु से प्रवचन सुनेंगे और पवित्र तीर्थों की यात्रा करेंगे।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा लग्न में स्थित है। इस कारण से आप एक सकारात्मक कल्पना और संवेदी प्रकृति वाले व्यक्ति होंगे। आपको अन्तर्ज्ञान का उपहार प्राप्त होगा। आपकी प्रकृति शर्मीली हो सकती है, लेकिन आप कुछ हद तक अशांत और अस्थिर होंगे और आप कुछ बार अपना रोजगार तथा निवास स्थान बदल सकते हैं। यदि चंद्रमा कर्क राशि में स्थित है, तो आप अवश्य ही बहुत धनी होंगे, यदि चंद्रमा वृश्चिक राशि में है, तो आपको स्वास्थ्य की समस्यायें हो सकती हैं और आप बहुत सुस्त हो सकते हैं। हांलाकि, यदि चंद्रमा वृषभ राशि में स्थित है, तो आपके परिवार के धन में बढ़ोत्तरी होगी, लेकिन आपको कुछ एक बार वाहन दुर्घटना का भय हो सकता है।

मंगल की स्थिति का फल :

आपकी कुण्डली में मंगल मेष राशि में स्थित है। इस कारण से आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप सत्यवादी, उर्जावान, उत्साही, आशावादी, साहसी, वीर और ओजपूर्ण होंगे। आपकी बाहरी खेलों और

साहसिक क्रियाकलापों में रूचि होगी और युद्ध एवं लड़ाई में आपको विशेष आनन्द मिलेगा। आपको पर्याप्तभौतिक सम्पत्तियां प्राप्त होंगी तथा आपका भविष्य काफी सुरक्षित होगा। आपको शक्तिशाली और प्रभावशाली लोगों से लाभ एवं सहयोग मिलेंगे एवं आप व्यवसाय के एक सम्मानित क्षेत्र से आय प्राप्त करेंगे– जैसे किसी भाग के प्रमुख, विभाग के प्रधान, प्रबंधक, नियंत्रक या निदेशक बनकर। सामाजिक रूप से आप बहुत विख्यात होंगे।

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। यदि मंगल मेष या वृश्चिक राशि में स्थित है, तो आप दीर्घजीवी और कई मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर विरासत के मामले में। यदि मंगल मकर राशि मेंस्थित है, तो आप आर्थिक रूप से सम्पन्न होंगे, लेकिन शत्रुओं के कारण आपको परेशानियां हो सकती हैं,आप किसी दुर्घटना या अशुभ घटना का सामना करने से बाल–बाल बच सकते हैं। यदि यह कर्क राशि मे स्थित है, तो आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं और आपको शल्य चिकित्सा करवानी पड़ सकती है। यदि मंगल किसी अन्य राशि में स्थित है, तो यह आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य और सुख के लिए अनुकूल नहीं है तथा आपको शारीरिक हिंसा का शिकार होने का भय हो सकता है।

बुध की स्थिति का फल :

आपकी कुण्डली में बुध वृश्चिक राशि में स्थित है। इस कारण से आप कुछ मामलों में भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। हांलांकि, यदि बुध अपने नक्षत्र में स्थित है, और/या यदि मंगल उच्चस्थ या अपनी राशि में स्थित है, तो आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे और अपेक्षाकृत कम आयु में अपनी शिक्षा, बुद्धिमत्ता और विवेक का प्रभावी रूप से प्रयोग करके जीवन में प्रगति करेंगे। लेकिन, यदि कुछ संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं है, तो आप बहुत बुद्धिमान नहीं हो सकते हैं– जिससे आपकी शिक्षा उत्तम नहीं हो सकती है। अपनी मध्य किशोरावस्था में आप बुरी संगति में पड़ सकते हैं और गलत रास्तों को अपनाकर अपने भविष्य को बर्बाद कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। इस कारण से आप अपने छोटे भाई–बहनों के मामले में भाग्यशाली होंगे। आप अशांत, सक्रिय और व्यस्त होंगे, आपको विषयों के बारे में व्यापक जानकारी और ज्ञान को प्राप्त करने में रूचि होगी और कई सालों तक आप अनौपचारिक अध्ययन जारी रखेंगे। अधिक लेखन और संवादों का आदान–प्रदान आपके पेशे का हिस्सा हो सकते हैं, आप कई यात्रायें कर सकते हैं।आपकी संगीत में विशेष रूचि हो सकती है या समय व्यतीत करने के लिए आप संगीत का आनन्द ले सकते हैं। यदि नैसर्गिक अशुभ ग्रह बुध के साथ है या उसकी दृष्टि इस पर है, तो आप मानसिक भ्रम का सामना कर सकते हैं और कुछ गलत काम कर सकते हैं।

गुरू की स्थिति का फल :

आपकी कुण्डली में बृहस्पति मकर राशि में स्थित है। बृहस्पति यहां नीचस्थ है, इस कारण से आप अपने जीवन के प्रारम्भ में कुछ परेशानियों का सामना कर सकते हैं। यदि बृहस्पति सूर्य को छोड़कर अन्य 7 ग्रहोंमें से किसी के साथ है, तो बृहस्पति की भुक्ति या दशा के दौरान आप जीवन में शानदार प्रगति करेंगे।बृहस्पति के नीचस्थ होने के कारण से आपको व्याकरण का पर्याप्त ज्ञान नहीं होगा और भाषाओं पर बहुत उत्तम नियंत्रण नहीं हो सकता है। साथ ही आप अपनी संतानों के जन्म के समय पर कुछ परेशानियोंका सामना कर सकते हैं, गर्भपात का भय है। यदि आपका लग्न धनु या मीन है, तो आपका जन्म अवश्य एक धनी परिवार में हुआ होगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति पांचवें भाव में स्थित है। इस कारण से आप कई मामलों में बहुत भाग्यशाली होंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और आपके पिता एक आदरणीय और जिम्मेदार व्यक्ति होंगे, आपका

जीवनसाथी अपने परिवार में भाई–बहनों में सबसे बड़ा हो सकता है और आपकी संतानें योग्य एवं कर्तव्यपरायण होंगी। आप बहुत बुद्धिमान, सुशिक्षित, मर्यादित और विवेकी व्यक्ति होंगे, आपके मित्रों और परिचितों का दायरा बहुत बड़ा होगा और पेशे से आपकी आय बहुत सारभूत होगी। आप एक शांतिपूर्ण औरआरामदायक जीवन व्यतीत करेंगे। आप अपने प्रशंसनीय कामों के कारण विख्यात होंगे और सामान्यतः लोग आपको उचित आदर देंगे। आपके सम्मान और विश्वसनीयता में हमेशा वृद्धि होगी।

शुक्र की स्थिति का फल :

आपकी कुण्डली में शुक्र मकर राशि में स्थित है। जैसाकि शुक्र इस राशि में सुव्यवस्थित नहीं है, आप कुछमामलों में भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। आप किसी रोग से ग्रसित हो सकते हैं, आपका शरीर कमजोरहो सकता है और कंजूस हो सकते हैं। जैसाकि वादों को पूरा करना आपकी आदत नहीं हो सकतीहै, अतः लोग आप पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपको दूसरों के मामलों में अधिक रूचि हो सकती है, कुछ अन्य के पास होने वाली चीज का स्वयं के पास अभाव होने की सोच आपको अप्रसन्न कर सकती है। आपका वैवाहिक जीवन ना ही खुशहाल हो सकता है, और ना ही लम्बे समय तक रहने वाला हो सकता है। हालांकि, बाद की आयु में आपकी संभावनायें उत्तम हैं एवं आप जीवन के उस भाग में काफीसुखी होंगे।

आपकी कुण्डली में शुक्र पांचवें भाव में स्थित है। इस कारण से आप मृदुभाषी, परिष्कृत स्वभाव वाले सभ्य व्यक्ति, मनोहारी ढंगों और आकर्षक व्यवहार वाले होंगे। आप नम्रता, ज्ञान और मेधा की प्रतिमूर्ति होंगे और ललित कलाओं के किसी क्षेत्र में निपुणता प्राप्त कर सकते हैं और अपनी रचनात्मक योग्यताओं के कारण विख्यात होंगे। आप पवित्र मंत्रों के जाप से कुछ वांछित प्रभाव प्राप्त कर सकते हैं और जादुई उपचार के द्वारा पीड़ित लोगों के दुखों को दूर करने का गुण भी प्राप्त कर सकते हैं। आप और आपका जीवनसाथी दोनों एक दूसरे को अपने जीवन से अधिक चाहेंगे, आपकी पुत्रियों की संख्या अधिक हो सकती है– जो सुन्दर और कर्तव्यपरायण होंगी। आपका घरेलू जीवन वास्तव में बहुत खुशहाल और आनन्दमय होगा। यदिशुक्र वृषभ या मीन या तुला राशि में स्थित है, तो लाभकारी परिणामों की संख्या और भी बढ़ सकती है।

शनि की स्थिति का फल :

आपकी कुण्डली में शनि मिथुन राशि में स्थित है। इस कारण से आप युवा विचारों वाले, काफी बुद्धिमान, बहुत उर्जावान और उत्साही व्यक्ति होंगे। आपमें जल्दबाजी में निर्णय लेने की आदत नहीं होगी और विभिन्न संभावनाओं का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करके और उपयोगी पहलूओं का उचित ध्यान रखते हुए हीआप अपनी सुविचारित योजनाओं को आकार देंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र, कर्तव्यों और जिम्मेदारियों तथा उपलब्धियों की संभावनाओं के मामले में बहुत अधिक चैतन्य होंगे। अपने निवास स्थान से बहुत दूर किसी स्थान पर आप प्रगति करेंगे और रचनात्मक कामों में प्रयास करके अपने भाग्य को संवारेंगे। पवित्र प्राचीन शास्त्रों में आपकी गहरी रूचि हो सकती है और मंत्रों के जाप तथा प्रार्थनाओं में दृढ़ आस्था हो सकती है।

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। यह स्थिति बहुत युक्तिपूर्ण और संभवतः खतरनाक है, आपको बहुत सावधान और सजग रहना होगा और आपको एक नियमित तथा अनुशासित जीवनशैली अपनानी चाहिए एवं सद्मार्ग से कभी विचलित नहीं होना चाहिए। आपमें लोगों के ध्यान को मोड़ने की विलक्षण प्रतिभा होगी और आप वास्तव में जो सोचेंगे, लोग उस पर विश्वास कर सकते हैं। यदि आप किसी सामाजिक उद्देश्य के लिए काम कर रहे हैं या राजनीति में शामिल हैं, तो आप बहुमत के सक्रिय सहयोग से अपने समकालीनों से बहुत आगे निकलने में सक्षम होंगे, लेकिन जैसाकि आप बड़ी अभिलाषाओंको पूरा कर पाने में सक्षम नहीं हो सकते हैं, आप अचानक किसी आकस्मिक पतन का सामना

कर सकते हैं– विशेषकर यदि शनि वक्री है। यदि मंगल शनि के साथ में स्थित है, तो आपके किसी सगे छोटे भाई या बहन की मानसिक स्थिति का क्षय आपकी वास्तविक भारी चिन्ता का कारण हो सकता है। यदि शनि कुम्भ या मकर या तुला राशि में स्थित है, तो आप बहुत भाग्यशाली होंगे– जैसाकि आपको शशयोग (एक पंचमहापुरुष युति) का सुख प्राप्त होगा। आप एक महत्वपूर्ण और सम्माननीय व्यक्ति की तरह समाज में जाने जायेंगे, लेकिन आपको अपने सगे–संबंधियों से दूर रहना पड़ सकता है।

राहु की स्थिति का फल :

आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में स्थित है। इस कारण से आप उत्तम शिक्षा प्राप्त करने और बौद्धिक कामों में सफलता प्राप्त करने के मामले में भाग्यशाली होंगे, लेकिन आपको वायु विकार हो सकता है और आपकी माता को लकड़ी या पत्थर से चोट लग सकती है। कुछ छोटी समस्याओं के कभी–कभी उभरने केकारण आपको अपने घर या निवास स्थान पर बहुत आराम महसूस नहीं हो सकता है। यदि बृहस्पति भीराहु के साथ है, तो आपकी किसी एक संतान के विचार कुछ हद तक संशयपूर्ण हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में राहु लग्न से या तो केन्द्र भाव में या त्रिकोण भाव में स्थित है। यह एक अनुकूल युति है, इस स्थिति में होने के कारण राहु इस कुण्डली में एक तात्कालिक लाभप्रदाता का काम करता है। आप शैक्षिणिक और/या बौद्धिक कार्यों को उत्तम प्रकार से करेंगे और अपने व्यवसाय के क्षेत्र में आपका सुधार होगा। आप बहुत भाग्यशाली होंगे तथा राहु की भुक्ति या दशा के दौरान आपको अपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। हालांकि आप इसके अन्तिम चरण के दौरान कुछ छोटी खीज पैदा करने वाली समस्याओंका सामना कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में राहु प्रतिकूल आठवें भाव में उपस्थित नहीं है और यह सूर्य के निकट (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) स्थित है। आपको अपनी आंखों से संबंधी कुछ परेशानियां हो सकती हैं। फिर भी कई संदर्भों में यह एक अनुकूल योग है। गुरू ग्रह की दशा एवं भुक्ति अवधि के दौरान, आपके जीवन में किसी समय, ऐसे व्यक्ति से मिलने की संभावना है जिसका लग्न सिंह है– जिससे कि आप लाभ अर्जित करेंगे।

केतु की स्थिति का फल :

आपकी कुण्डली में केतु दसवें भाव में स्थित है। इस कारण आपको अपने व्यवसाय के कारण अपना घर यानिवास स्थान छोड़ना पड़ सकता है। लेकिन यह आपको और प्रसन्न बना सकता है– चूंकि आप अपने घर या निवास स्थान पर रहते हुए बहुत प्रसन्न नहीं हो सकते हैं। यदि मंगल भी केतु के साथ स्थित है, तो आपके सगे छोटे भाई–बहनों को कुछ गंभीर प्रकार की समस्यायें हो सकती हैं, लेकिन यदि कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह केतु के साथ है या उसकी दृष्टि इस पर है, तो आप मनोरम वातावरण के बीच में एक उत्तम समय गुजारेंगे।

हर्षल की स्थिति का फल :

आपकी कुण्डली में, यूरेनस तुला राशि में स्थित है। इस कारण से आपकी शारीरिक संरचना उचित अनुपातमें, कद लम्बा, मस्तक ढलाउं, बाल लम्बे हो सकते हैं। आपके कार्यों और विचारों के बीच अति उत्तमसंतुलन हो सकता है– जिससे आप अपने सभी कार्यों में सफल होंगे। हालांकि, रोमांस के मामले में आप कुछ हद तक उतावले हो सकते हैं, नये संबंध शीघ्र बन और टूट सकते हैं। लेकिन आपमें चुम्बकीय आकर्षण होगा एवं आपकें मित्रों व परिचितों का दायरा बड़ा होगा। आप गुर्दे की सूजन, मूत्र में रूकावट, मधुमेह, मूत्राशय में संकुचन, स्कर्वी आदि रोगों से पीड़ित हो सकते

हैं।

आपकी कुण्डली में, यूरेनस दूसरे भाव में स्थित है। इस कारण से, आपको बहुत सावधान और सजग रहनाचाहिए– विशेषकर अपने कथनों, घरेलू और आर्थिक मामलों में। कुछ आकस्मिक एवं अप्रत्याशित घटनाओं के कारण आपको भारी उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है तथा गंभीर आघात भी लग सकता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो आप जीवन के उतार–चढ़ावों के बीच झूला झूलते रह सकते हैं।

नेपच्यून की स्थिति का फल :

आपकी कुण्डली में, नेप्च्यून वृश्चिक राशि में स्थित है। इस कारण से, आप कुछ हद तक भद्दी शारीरिक संरचना और बंजारे जैसे स्वरूप वाले हो सकते हैं– हालांकि आपमें लोगों को मंत्र–मुग्ध करने की आलौकिक क्षमता विद्यमान होगी। यदि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह नेप्च्यून को प्रभावित करता है, तो आपकी दार्शनिक क्षमता बली होगी और आपमें भविष्यवाणी करने की क्षमता होगी। लेकिन यदि किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह का इस पर प्रभाव पड़ता है, तो आप इर्ष्यालु प्रकृति व शीघ्र क्रोधित होने वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आप जननांगों और प्रजनन तंत्र– आंतों के नीचे का क्षेत्र, उरूसन्धि, पौरुष ग्रन्थि, पित्ताशय की थैली, मलाशय, अंडकोष आदि से संबंधित रोगों से पीड़ित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में, नेप्च्यून तीसरे भाव में स्थित है। इस कारण से, आप रचनात्मक कल्पनाशक्ति, खोजी दिमाग, जिज्ञासु मान्यताओं और मनोवैज्ञानिक दक्षताओं से पूर्ण होंगे। आपमें गूढ़ विषयों के प्रति रूचि और गहन अन्तर्ज्ञान की परख हो सकती है। आपमें तारों से संबंधित चित्रण की क्षमता या आध्यात्मिक दृष्टिकोण भी हो सकता है। आपको बहुत सावधान रहना चाहिए– जैसाकि आपके संबंधी आप पर भार लाद सकते हैं, या आपको धोखा दे सकते हैं, इसके अतिरिक्त आपको यात्राओं के दौरान कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

प्लूटो की स्थिति का फल :

आपकी कुण्डली में, प्लूटो कन्या राशि में स्थित है। इस कारण से, आपकी शारीरिक संरचना अपेक्षाकृत पतली, वर्गाकार, कद औसत और बाल काले हो सकते हैं। आपमें स्वयं को बहुत महत्वपूर्ण समझने की प्रवृत्ति हो सकती है और दूसरों को बिना झिझक ठेस पहुंचाने की आदत हो सकती है– जो आपके विचारों और मतों से सहमत नहीं हों। यदि किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह से प्लूटो पीड़ित है, तो आपका यश धीरे–धीरे मंद पड़ सकता है, और आप गुमनामी के अंधेरों में खो सकते हैं। आप कलाई और अंगुलियों में मांसपेशियों के खिंचाव, भोजन विषाक्तता, डायरिया, दस्त, पेचिश, काला ज्वर आदि रोगों से पीड़ित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में, प्लूटो लग्न में स्थित है। इस कारण से, आपमें एक अनोखा दृष्टिकोण विकसित हो सकता है कि आप स्वयं में ही एक कानून हैं– जिससे आप अपने कई मित्रों को अपना शत्रु बना सकते हैं।किन्तु यदि आप अपने भ्रम जाल से बाहर निकलने की कोशिश करते हैं, तो कुछ कठोर उपायों को अपना कर जीवन में प्रगति करने की आप में उल्लेखनीय क्षमता है– जैसाकि आपके आधिपत्य की भावना को सही समय पर उचित कार्य करने की क्षमताओं का सहारा मिलेगा और आप इस कहावत को चरितार्थ करने में सक्षम होंगे, कि भगवान भी उन्हीं की मदद करता है, जो अपनी मदद स्वयं करते हैं।

कुण्डली में लागू होने वाले ग्रह योग (ग्रहयुति)

कुण्डली में लागू होने वाले महत्वपूर्ण योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश नीच का है या एक शत्रु की राशि में स्थित है अथवा एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ संबद्ध है या एक बुरे षष्ठीआंश में स्थित है। यह योग काफी प्रतिकूल है, इसे बन्धुभिसत्याक्त योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुंछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस योगके होने के कारण आपके संबंधियों और मित्रों द्वारा जीवन में कभी आपका परित्याग किया जा सकता है– भले ही आपकी कोई छोटी गलती हो या वास्तव में कोई गलती ना हो।

आपकी जन्मकुण्डली में, पंचमेश बलशाली नहीं है– उच्चस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में नहीं होने केकारण। इसके अतिरिक्त, यह एक केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित है। इस विशिष्ट योग को एक–पुत्र योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो आपको केवल एक संतान की प्राप्ति हो सकती है– जिसके पुत्र होने की संभावना अत्यधिक है।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश की चतुर्थेश के साथ युति है या उसपर इसकी दृष्टि है, जबकि इन दोनोंग्रहों में से कोई भी ग्रह अस्त या ग्रसित नहीं है। यह एक अनुकूल योग है, इसे मातृ मूलत धन योग कहा जाता है। इस योग के होने के कारण, आपको अपनी माता से आर्थिक लाभ प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति और शुक्र की पांचवें भाव में युति है। पांचवें भाव में कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह ना तो स्थित है और ना ही दृष्टि डाल रहा है। यह एक अनुकूल योग है, इसे अपत्य सुख योग कहा जाता है। इस योग के होने के कारण, आप योग्य संतानों की प्राप्ति के संदर्भ में विशेष रूप से भाग्यशाली होंगे– जो आपके परिवार के लिए सदैव गर्व व आनन्द का स्रोत बनेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, विवाह का नैसर्गिक कारक (शुक्र) वक्री या अस्त या ग्रसित नहीं है। इसके अतिरिक्त, इसकी सर्वोत्तम नैसर्गिक शुभ ग्रह (बृहस्पति) के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि है। यह एक अनुकूल योग है, इसे सत कलत्र योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के होने के कारण,आप जीवनसाथी प्राप्त करने के मामले में वास्तव में बहुत भाग्यशाली होंगे– जो एक कुलीन परिवार से होंगी और सदगुणों व विशेषताओं की प्रतिमूर्ति होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश की एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ युति है तथा यह एक केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित है। यह समग्र योग बहुत अनुकूल है, इसे युक्ति समन्वित वाग्मि योग कहा जाता है।आप वाक्पटुता की प्रतिभा से सम्पन्न होंगे तथा अपनी अकाट्य तर्कशक्ति और भाषण दक्षता के कारण सुविख्यात होंगे। अत्यधिक संभावना है कि आप सभाओं में अपनी चमक बिखेर सकते हैं और ख्याति अर्जितकर सकते हैं।

कुण्डली में लागू होने वाले धन योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, आठवें भाव का स्वामी मजबूत स्थिति में है, आप आर्थिक रूप से सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त, आपको एक लाभप्रद पद प्राप्त होने की बहुत अधिक संभावना है एवं नौकरी में उत्तम स्थान प्राप्त करेंगे– आपके कार्य का कोई संबंध बीमा, प्रॉविडेन्ट फंड, कर संग्रह आदि से हो सकता है। याफिर, आपको अपने जीवनसाथी या व्यावसायिक साझेदार से आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। या फिर, आप अपना स्वयं का उपक्रम प्रारम्भ करने के लिए कुछ प्रमुख वित्तीय संस्थानों से ऋण के रूप में बड़ी मात्रा में धन प्राप्त कर सकते

हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक अत्यंत शुभ योग मौजूद है। अपने स्वयं के प्रयत्नों को निर्देशित करके तथा अपनी इच्छाशक्ति के वास्तविक शक्ति के आधार पर आप अपने समकालीनों से बहुत आगे निकल जाएंगे। आपकी सभी महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी और आपकी अभिलाषित इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपके आस–पास के लोग आपको एक अनुकरणीय व्यक्ति तथा एक प्रेरणादायक स्रोत के रूप में मानेंगे। आप अपने जीवनसाथी, संतानों, संबंधियों और मित्रों के साथ समृद्धिपूर्ण और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश की बृहस्पति के साथ युति है– जो कि एक अनुकूल स्थिति में है।एक शुभ योग का निर्माण हो रहा है। आप धन संबंधी मामलों में भाग्यशाली होंगे, अत्युत्तम आय होगी तथा निश्चित रूप से बहुत धनवान होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश द्वितीयेश के साथ संबद्ध है (या इस पर उसकी दृष्टि है)– जबकि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह किसी प्रकार से पीड़ित नहीं है। आप अपनी माता के संबंध में भाग्यशाली होंगे तथा उनसे आपको धन–सम्पदा की प्राप्ति होगी। आपको अपने संबंधियों तथा कृषि से भी लाभ मिलेगा।

जैसाकि आपके ग्यारहवें भाव में एक जल तत्व की राशि स्थित है। आपको अपने पैतृक/जन्म स्थान से उत्तर दिशा में स्थित स्थानों पर/से उत्तम लाभ प्राप्त हो सकता है।

कुण्डली में लागू होने वाले वित्तहानि योग –

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में, एक घोर अशुभ ग्रह आपके आठवें भाव में स्थित है– जो कि किसी शुभ ग्रह से प्रभावित नहीं है। यद्यपि आप काफी सम्पन्न होंगे, तो भी आपको बहुत सावधान और सतर्क रहना चाहिए एवं अनावश्यक रूप से अत्यधिक जोखिम नहीं उठाना चाहिए। आपको गम्भीर प्रकार की अशुभ घटना का सामना करना पड़ सकता है। इस बात की भी संभावना है, कि आप किसी अन्य व्यक्ति/व्यक्तियों को गंभीर चोट पहुंचा सकते हैं– जिसके लिए आपकी पेशी हो सकती है या दंडित तक किया जा सकता है।

कुण्डली में लागू होने वाले नभष योग –

आपकी कुण्डली में दामिनी योग नामक एक नभश योग मौजूद है। यह एक प्रशंसनीय ग्रह स्थिति है। आपबहुत समृद्ध होंगे, पूर्णतः सभ्य प्रकृति, धैर्यवान और बहुत विद्वान होंगे। आप उदार प्रवृति वाले होंगे तथासदैव दूसरों के प्रति करूणा का भाव रखेंगे। आप जानवरों के प्रति दयालु होंगे एवं उनकी किसी प्रकारसे सेवा भी करेंगे। आप पारम्परिक धार्मिक रीतियों का निर्वाहन करेंगे, सुखमय व शांतिपूर्ण वैवाहिक जीवन का आनन्द लेंगे तथा आपकी संतानें योग्य और कर्तव्यनिष्ठ होंगी। आपका नाम व यश दूर–दूर तकफैलेगा।

कुण्डली में लागू होने वाले अरिष्ट योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य और राहु आपके चौथे भाव में स्थित हैं– जबकि इनमें से कोई भी उच्चस्थ याअपने भाव में स्थित नहीं है। यह एक प्रतिकूल योग है– इसे अरिष्ट योग कहते हैं। आपके पिता को आपके जन्म के आस–पास किसी समय कष्ट सहन करना पड़ा होगा तथा उनका स्वास्थ्य व सुख आपके पारिवारिक सदस्यों की गंभीर चिन्ता का कारण बना होगा। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल

संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपके पिता की सोच उनके जीवनकाल में किसी समय कुछ–कुछभ्रमित हो सकती है।

कुण्डली में लागू होने वाले रवि योग –

जैसाकि एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से दूसरे भाव में उपस्थित है तथा ऐसा ही एक ग्रह सूर्य से बारहवें भाव में भी स्थित है। इससे उभयचारी योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त, जैसाकि ये दोनों ही ग्रह नैसर्गिक शुभ ग्रह हैं, अतः यह योग बहुत शुभ होगा, क्योंकि सूर्य आपकी कुण्डलीमें शुभ–करतरी योग में है। इस समग्र योग को उभयचारी शुभ करतरी योग कहा जाता है। जैसाकि यह योग अनेक अनुकूल परिणामों और शुभ घटनाओं का सूचक है, आपका जन्म एक धनी परिवारमें हुआ है, और आप निश्चित रूप से अपने जीवन में काफी कम आयु में ही एक विशिष्ट स्थान तकपहुंचेंगे। आप सरकारी स्रोतों से लाभ प्राप्त करेंगे, जीवन की सभी प्रकार की सुख–सुविधाओं का आनन्दलेंगे तथा आपका नाम व यश दूर–दूर तक फैलेगा।

ग्रहों के डिग्री में स्थिति का फल

आपकी कुण्डली में लग्न की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप अत्यंत महात्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे, आप निर्भिक प्रकृति एवं नेतृत्व के गुणों से सम्पन्न होंगे। आप जल्दी समझने वाले, मेधावी एवं भाषण कला में निपुण होंगे,जिसकी वजह से आप लोगों के दिमाग में अमिट छाप छोड़कर उन्हें प्रभावित कर सकते हैं। आप अपने दायरे में बहुत सारे लोगों का भरोसा और हार्दिक समर्थन प्राप्त करेंगे।

आपकी कुण्डली में सूर्य की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप व्यावहारिक दृष्टिकोण और ईमानदार प्रकृति केहोंगे। बेकार बहाना बनाकर बैठने की बजाय आपको काफी सोच–विचार करना चाहिए, आपमें जल्दीबाजीकी प्रवृत्ति होगी और आप सभी जगह चक्कर लगाने वाले होंगे। आप ऐसी जगह पर पहुंचेंगे जहां लोग उत्पादक कार्य करने में व्यस्त रहेंगे, आप सदैव रचनात्मक कार्यों में सक्रियता से भाग लेना चाहेंगे।

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप अपनी विचारशीलता और दूरदर्शिता के लिए जाने जाएंगे तथा सदैव ईमानदारी से सही चीज करने की इच्छा आपमें होगी। आपका धार्मिक रूझान उत्कृष्ट होगा और आपमें अपने सहकर्मियों के प्रति सच्चा लगाव होगा। आप किसी उद्देश्य के लिए कार्य कर सकते हैं और लोकोपकारी व मानवतावादी गतिविधियों में भाग ले सकते हैं।

आपकी कुण्डली में मंगल की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप आवेगी प्रकृति के हो सकते हैं, किन्तु आप अत्यंत महात्वाकांक्षी होंगे। अपने जीवन के प्रारम्भिक भाग में, आप कुछ हद तक लापरवाह प्रकृति के हो सकते हैं, किन्तु जैसे–जैसे आप परिपक्व होंगे, स्थिति में बेहतर सुधार होगा। आप निश्चित रूप से अपने समकालिनों से आगे निकल जाएंगे एवं काफी स्पृहणीय स्तर का पद प्राप्त करेंगे।

आपकी कुण्डली में बुध की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप आशावादी और उदार भावनाओं से परिपूर्ण एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा शारीरिक पक्ष को अत्यधिक महत्व दे सकते हैं, तो भी आप उच्च नैतिकता वाले होंगे और शिष्टाचार की विकसित भावना होगी। आप जोश और उत्साह से परिपूर्ण होंगे।

आपकी कुण्डली में गुरू की स्थिति यह दर्शाती है कि, जब तक आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी योग उपस्थित नहीं हैं, तो आपके प्रारम्भिक आयु में कुछ दर्द भरे अनुभव आपको कुछ हद तक निराशावादी और दूसरों के प्रति अविश्वासी बना सकता है। हालांकि, आप अत्यधिक सावधान होंगे– जो कि आपके लिए उत्तम होगा। किन्तु जैसाकि आप बहुत आशावादी नहीं हो सकते हैं, तो आप प्रगति के कुछ अवसर गवां सकते हैं।

आपकी कुण्डली में शुक्र की स्थिति यह दर्शाती है कि, यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी योग उपस्थित नहीं हैं, तो आपमें कुछ अवांछित विशेषताएं हो सकती हैं, जिसकी वजह से आप धीरे–धीरे अपनी लोकप्रियता खो सकते हैं। आप कट्टर प्रवृत्ति एवं संदिग्ध स्वभाव के हो सकते हैं। यदि विरोध होता है, तोआप आक्रामक रुख अपना सकते हैं– जिसकी कोई अपेक्षा नहीं कर सकता है।

आपकी कुण्डली में शनि की स्थिति यह दर्शाती है कि, अपने प्रारम्भिक जीवन में आपको कुछ दुखद अनुभवहुए होंगे– जिसकी वजह से आपमें एक अविश्वासपूर्ण या संदेहात्मक प्रकृति का विकास हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा सुव्यवस्थित नहीं है, तो आप क्रोध, विद्वेष या घृणा से भरे हुए हो सकतेहैं– जिसे आप व्यक्त तो नहीं कर सकते हैं, किन्तु यह आपके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता

है।

आपकी कुण्डली में राहु की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप व्यावहारिक दृष्टिकोण और ईमानदार प्रकृति के होंगे। बेकार बहाना बनाकर बैठने की बजाय आपको काफी सोच–विचार करना चाहिए, आपमें जल्दीबाजी की प्रवृत्ति होगी और आप सभी जगह चक्कर लगाने वाले होंगे। आप ऐसी जगह पर पहुंचेंगे जहां लोग उत्पादक कार्य करने में व्यस्त रहेंगे, आप सदैव रचनात्मक कार्यों में सक्रियता से भाग लेना चाहेंगे।

आपकी कुण्डली में केतु की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप बहुत समझदार, चतुर एवं कर्मठ व्यक्ति होंगे। यदि आपकी कुण्डली में बुध सुव्यवस्थित है, तो आपमें साहित्यिक योग्यताएं हो सकती हैं। आप वैज्ञानिक या प्राद्योगिकी के क्षेत्र में अनुसंधान में अच्छा कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में शुक्र सुव्यवस्थित है, तो आप ललित कलाओं की किसी विधा में निपुणता प्राप्त कर सकते हैं।

ग्रहों के लिए रत्न का सुझाव

लग्नेश के लिए रत्न

आपका लग्नेश बुध है। चूंकि यह ना तो नीचस्थ है और ना ही त्रिक भाव या मारक भाव में स्थित है। इसलिए आप बुध के लिए रत्न धारण कर सकते हैं।

सोने की अंगुठी में 5 या 7 रत्ती का पन्ना जड़वाकर, इसे बुधवार के दिन, अपने दाहिने हाथ की छोटी या मध्यमा उंगली में धारण करें। यदि आपके लिए पन्ना धारण कर पाना संभव ना हो तो इसके स्थान पर एक्वामरीन, पैरिडोट रत्न, हरितमणि या हरा तुरमली भी धारण कर सकते हैं।

रत्न धारण करते समय निम्न में से किसी एक मंत्र का जाप करना चाहिए :

व्यासदेव का वैदिक मंत्र :

प्रियगु कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधम् प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह मंत्र :

ओऽम् ब्रम् ब्रीम् ब्रोम् सह बुधवे नम्ः।

बीज मंत्र :

ऊँ ब्रूम ब्रीम बुधवे नमः।

नौवें भाव के स्वामी के लिए रत्न

चूंकि आपका नवमेश आपकी कुण्डली में किसी मारक भाव का स्वामी है, इसलिए नवमेश के लिए कोई रत्नधारण करना आपके लिए उपयुक्त नहीं होगा।

योग कारक ग्रह के लिए रत्न

आपकी जन्मकुण्डली में कोई प्राकृतिक योग––कारक ग्रह नहीं है।

तात्कालिक योग कारक ग्रह के लिए रत्न

शनि ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में तात्कालिक योग––कारक ग्रह है।चूंकि तात्कालिक योग–कारक ग्रह ना तो उच्चस्थ है, ना ही नीचस्थ है और ना ही अपने भाव में उपस्थित है। अतः आप शनि ग्रह के लिए रत्न धारण कर सकते

हैं।

सोने की अंगुठी में 5 या 7 रत्ती का नीलम जड़वाकर इसे शनिवार के दिन, दाहिने हाथ की मध्य उंगली मेंधारण करें। यदि आपके लिए नीलम धारण करना संभव नहीं है तो आप इसके स्थान पर नीलमणि या वैदुर्य भी धारण कर सकते हैं।

रत्न धारण करते समय निम्न में से किसी एक मंत्र का जाप करना चाहिए :

व्यासदेव का वैदिक मंत्र :

नीलण्जनसंभूतम् रविमुत्रम यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

ग्रह मंत्र :

ओऽम् प्रम् प्रीम् प्रोम् सह शनिश्चराय नम्ः।

बीज मंत्र :

सम् शनिश्चरा नमः।

रूद्राक्ष के लिए सुझाव

आपका जन्म नवमी तिथि को हुआ है। इसलिए आपके लिए नौमुखी रूद्राक्ष उपयुक्त है।

इस रूद्राक्ष के इष्टदेव शक्ति हैं। हालांकि ये नवरात्र (दशहरा या दुर्गापूजा) के दौरान दुर्बल होते हैं। ये उर्जा और शक्ति प्रदान करते हैं, जिसकी सहायता से हमें धन की प्राप्ति होती है तथा सभी कार्यों में हम सफलता प्राप्त करते हैं।

रूद्राक्ष को धारण करते समय आपको निम्न में से किसी एक मंत्र का जाप करना चाहिए –
रूद्राक्ष के लिए मंत्र :

ऊँ ह्रिम् हम् नमः।

रूद्राक्ष के लिए पंचाक्षरी मंत्र :

ऊँ ह्रिम् व्यम् रम् लम्।

रूद्राक्ष के लिए दूसरे अन्य सुझाव :

चूंकि आपके चंद्रमा का नक्षत्र स्वामी चंद्रमा है, इसलिए आपके लिए द्विमुखी रूद्राक्ष उपयुक्त है।

रूद्राक्ष की सत्यता प्रमाणित करने के लिए जांच

(अ)तैरान जांचः– पानी की उपरी सतह पर रूद्राक्ष रखने से यदि यह डूब जाता है तो रूद्राक्ष असली है, किन्तु यदि यह तैरता रहता है तो रूद्राक्ष नकली है।

(ब) तांबा जांचः– असली रूद्राक्ष बहुत उष्म होता है एवं यह विद्युत चुम्बकीय गुण के कारण तांबे को अपनीओर आकर्षित करता है। यदि रूद्राक्ष के मोतियों को धागे में लटका कर तांबे के चादर के छोटे से टुकड़े के उपर लटका दिया जाय तो ये मोती लगातार गोल–गोल घुमने लगेंगे। यदि इनकी घूमने की दिशा घड़ी की सूईयों की घूमने की दिशा के समान है तो ये असली हैं।

(स) दूध जांचः– एक कप दूध के अन्दर रूद्राक्ष के मोती डाल दें और इसे पूरे दिन तक रखें। यदि दूध खराब नहीं होता है तो मोती असली है और यदि दूध खराब हो जाता है तो यह नकली है।

असली रूद्राक्ष गर्म होता है। इसलिए यदि आप वृद्ध या शारीरिक रूप से कमजोर हैं, तो आपको रूद्राक्ष केस्थान पर भद्राक्ष धारण करना चाहिए।

भद्राक्ष भी रूद्राक्ष जैसा ही होता है, लेकिन यह मृदुल रंग एवं कम ताप देने वाला होता है। ये गौरी शंकर का आर्शीवाद प्रदान करते हैं। यह उत्तम स्वास्थ्य के लिए और परिवार तथा मित्रों के साथ आरामदायक जीवन व्यतीत करने में लाभदायक है।

भद्राक्ष के लिए मंत्र :

ऊँ गौरी शंकराय

नमः

भद्राक्ष के लिए शुभ मंत्र :

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते।।

क्या है कालसर्प योग ?

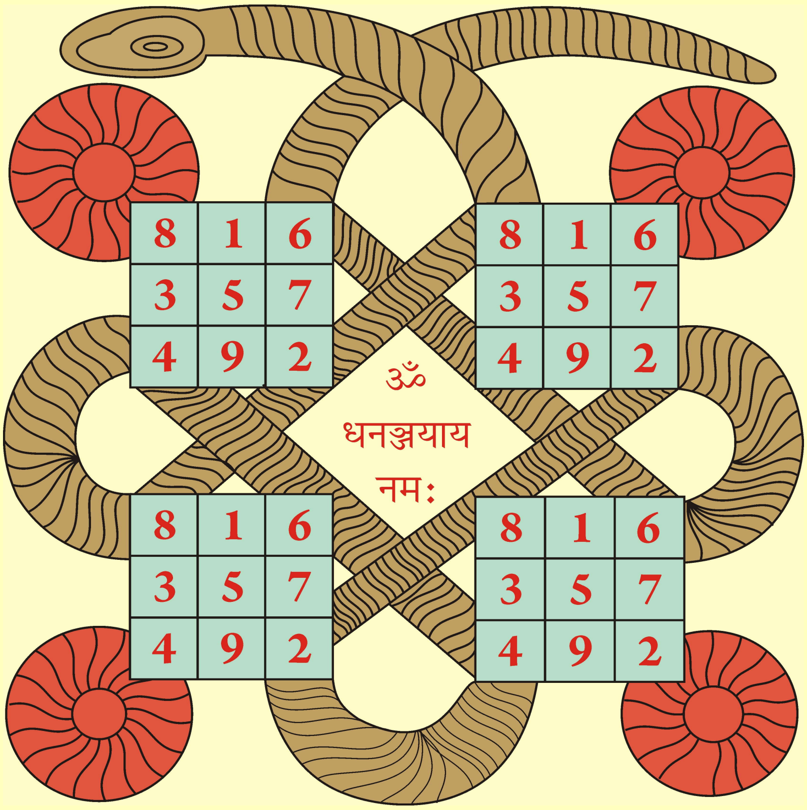

जब कुण्डली में सारे ग्रह राहु और केतु के अंशो के बीच में आ जाते हैं, तो कुण्डली को कालसर्प योग से ग्रसित माना जाता है। यदि एक भी ग्रह राहु और केतु के अंशो के बाहर रह जाता है, तो पूर्ण कालसर्प योग नहीं माना जाएगा। हालांकि, सारे ग्रह केतू और राहु के अंशों के बीच में आ जायें, तो भी आंशिक कालसर्प योग माना जाएगा।

कालसर्प योग का सामान्य प्रभाव–

1– किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य को करते समय परेशानियों का सामना करना।
2– मानसिक तनाव।
3– आत्मविश्वास में कमी।
4– स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां।
5– गरीबी और धन की कमी।
6– व्यापार में घाटा और नौकरी में परेशानी।
7– उत्तेजना और बेकार की चिंताएं।
8– मित्रों और शुभचिन्तकों से मनमुटाव।
9– मित्रों और शुभचिन्तकों की तरफ से विश्वासघात।
10– मित्रों, शुभचिन्तकों और रिश्तेदारों की ओर से किसी भी तरह का सहयोग नहीं प्राप्त होना।

आपकी कुण्डली में कालसर्प योग मौजूद नहीं है।

शरीर के विभिन्न अंगो का ज्योतिषीय विश्लेषण

बाहरी व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, कद–काठी व त्वचा का रंग

इनमें से प्रत्येक तत्व अनेक कारकों पर निर्भर हैं, जहां प्रत्येक कारक अनेक संशोधनकारी प्रभाव उत्पन्न कर सकता है, जैसे– लग्न–राशि, लग्न में उपस्थित ग्रह (यदि कोई है तो), लग्न पर दृष्टिडालने वाले ग्रह (यदि कोई है तो), चंद्र–राशि में उपस्थित ग्रह(यदि कोई है तो), चंद्र–राशि परदृष्टि डालने वाले ग्रह, लग्न का क्रिशांश, ग्रहों की राशिगत स्थिति, लग्नेश की भावगत स्थिति इत्यादि।

संभावित कद (लंम्बाई) का अनुमान (वयस्क होने पर)

आपकी लग्न राशि कन्या है तथा लग्न में बहुत अधिक ग्रह उपस्थित नहीं है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपकी शारीरिक संरचना सामान्य होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न का स्वामी लग्न से अपोक्लिम भाव में स्थित है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपकी शारीरिक संरचना अपेक्षाकृत छोटी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न की शायन डिग्री राशि के दूसरे या तीसरे चतुर्थांश में है। यदि आपकीजन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपकी शारीरिक संरचना सामान्य होगी।

संभावित त्वचा के रंग का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति और शुक्र की युति है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आप गौरवर्ण के होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा लग्न में स्थित है, लेकिन आपका लग्न कर्क नहीं है। यदि कुछ संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आप थोड़े गौर वर्ण के होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली धनु अथवा मीन लग्न की नहीं है, किन्तु बृहस्पति आपके लग्न पर दृष्टि डालरहा है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आप गौर वर्ण के होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य की राहु के साथ युति है। यदि कुछ संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः इसके प्रभाव के कारण आप गौर वर्ण के हो सकते हैं।

त्वचा के रंग पर ग्रहों का संयुक्त प्रभाव

सूर्य से लेकर शनि तक के सभी ग्रहों के संचित प्रभाव को ध्यान में रखते हुए ऐसा प्रतीत होता है

कि आप मध्यम वर्ण के हो सकते हैं अर्थात ना ही गहरे और ना ही गौर वर्ण के।

शरीर के स्थूलकाय (मोटे) होने का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति व शुक्र की युति है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इस ग्रह स्थिति के प्रभाव के कारण संभवतः किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध सेया बाद के आयु–काल से आपके शरीर का वजन बढ़ना शुरु हो सकता है। जिससे आपका शरीरबहुत जल्दी ही स्थूल व वजनी हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न तथा चंद्रमा दोनों या तो बृहस्पति के साथ स्थित हैं या बृहस्पति की इन पर दृष्टि पड़ रही है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो ऐसे ग्रह योग के प्रभाव के कारण किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध से अथवा उसके बाद के आयु से आपका शरीर बलिष्ठ होना शुरू हो सकता है तथा बाद में आप मांसल, स्थूल व भारी शरीर के होतेजाएंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में आपकी देह राशि, बृहस्पति एवं शुक्र के युति अथवा दृष्टि के संयुक्त प्रभावमें स्थित है। ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए बहुत अनुकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो ऐसे ग्रह योग के प्रभाव के कारण किशोरावस्था के उत्तरार्द्धसे अथवा उसके बाद के आयु से आपका शरीर बलिष्ठ होना शुरू हो सकता है तथा संभवतः बाद में आप स्थूल व भारी शरीर के होते जाएंगे।

आँखे और आँखो की रोशनी का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य नीचस्थ और/या ग्रसित है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपनी दाईं आँख में कुछ परेशानी हो सकती है तथा आपको चश्मा पहनना पड़ सकता है। आपको अपनी आँख के प्रति अधिक सावधानी रखनी चाहिए एवं कभी किसी प्रकार की असुविधा महसूस होने पर किसी अनुभवी नेत्र–विशेषज्ञ से आपकोजांच व परामर्श लेना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में बारहवें भाव का स्वामी नीचस्थ और/या अस्त और/या ग्रसित है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपनी बाईं आँख में कुछ परेशानी हो सकती है तथा आपको चश्मा पहनना पड़ सकता है। आपको अपनी आँख के प्रति अधिक सावधानी रखनी चाहिए एवं यदि आपको कभी किसी प्रकार की असुविधा महसूस होती है तोकिसी अनुभवी नेत्र–विशेषज्ञ से जांच करवानी चाहिए।

जीभ, दांत और बोलने की क्षमता का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह चंद्रमा से त्रिक में स्थित है एवं इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि शुक्र का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांत एक दूसरे से आंशिक रूप से ढके हो सकते हैं–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में तथा संभवतःसिर्फ एक

तरफ।

जैसा कि बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में, दूसरे भाव की राशि में पांच बिन्दु है। यह योग कुछ अनुकूल तथ्यों की ओर इंगित करता है। इसके प्रभाव के कारण आप एक अनुकूल/ आनन्ददायक वक्ता होंगे। आप दूसरे लोगों से अपनी बात मनवाने में सक्षम होंगे एवं अपने विचारों व मतों के लिए समर्थन प्राप्त कर लेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में, दूसरे भाव की राशि में चार (या अधिक) बिन्दु हैं।बुध अपनी कक्षा में एक बिन्दु का योगदान कर रहा है, जबकि इस भाव राशि में एक (या अधिक)शुभ ग्रह भी बिन्दु का योगदान कर रहा है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डलीमें कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपमें मनोहारी शिष्टाचार होगा। बातचीत के दौरान आप ताक्रिक व हाजिर जवाबी होंगे।

कान और सुनने की शक्ति

आपकी जन्मकुण्डली में तीसरे भाव में एक नैसर्गिक शुभ ग्रह उपस्थित है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप एक पुरुष हैं इसलिए आपके दाएं कान/श्रवण शक्ति से संबंधित किसी प्रकार की समस्या होने की संभावना अत्यंत कम है।

आपकी जन्मकुण्डली में एक नैसर्गिक शुभ ग्रह ग्यारहवें भाव की राशि पर दृष्टि डाल रहा है। यह आंशिक रूप से अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप एक पुरुष है इसलिए आपके बाएं कान/श्रवण शक्ति से संबंधित किसी प्रकार की समस्या होने की संभावना अत्यंत कम है।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र का ग्रहाकांत राशीश अस्त या ग्रसित या नीचस्थ है। इस ग्रह का आधिपत्य कंठ–कर्ण नली एवं श्रवण संबंधी नलिकाओं पर होता है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आपको अपने कानों से संबंधित कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और जीवन के उत्तरार्द्ध में आपकी श्रवण शक्ति क्षीण होसकती है।

बाँह, हाथ और कन्धे की संरचना का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में तीसरे भाव में एक या एक से अधिक शुभ ग्रह उपस्थित हैं, जिसका आधिपत्य बांह एवं कंधे पर होता है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के ये अंग भली–भांति विकसित होंगे। जैसा कि तीसरा भाव आहार–नली, हवा–नली, तंत्रिका प्रणाली व श्वसन प्रणाली को भी संचालित करता है, अतः आपके शरीर के ये अंग भी बिल्कुल सही स्थिति में रहेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में तीसरे भाव का स्वामी शक्तिशाली स्थिति में है, क्योंकि यह या तो उच्चस्थ है या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। तीसरे भाव का स्वामी बांह एवं कंधे का सूचक है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो

आपके शरीर के ये अंग भली–भांति विकसित होंगे। जैसा कि तीसरा भाव/तीसरे भाव का स्वामी आहार–नली, हवा–नली, तंत्रिका प्रणाली व श्वसन प्रणाली को भी संचालित करता है, अतः आपके शरीर के ये अंग भी बिल्कुल सही स्थिति में रहेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में दो या दो से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह मिथुन राशि में स्थित हैं, जबकि इसमें कोई भी नैसर्गिक शुभ ग्रह उपस्थित नहीं है। राशि चक्र की तीसरी राशि बांह एवं कंधे को सूचित करता है। अतः यह अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभावउपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आपके शरीर के ये अंग भली–भांति विकसित नहीं होंगे। या फिरआपको अपने शरीर के इन हिस्सों में कुछ जन्मजात पेरशानी महसूस हो सकती है। जैसा कि मिथुन राशि आहार–नली, हवा–नली, तंत्रिका प्रणाली व श्वसन प्रणाली को भी संचालित करता है, अतः आपके शरीर के इन हिस्सों में भी कुछ परेशानी हो सकती है क्योंकि संभवतः आपके जीवनकाल में कभी आपके शरीर के इन हिस्सों में से एक या एक से अधिक भाग सही ढंग से काम नहीं कर पांएगे।

हृदय और पीठ की स्थिति का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में एक अथवा एक से अधिक शुभ ग्रह पांचवें भाव में उपस्थित हैं, जो कि हृदय एवं पीठ को शासित करता है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के ये भाग सही ढंग से काम करेंगे।

सूर्य जो कि प्राकृतिक राशि–चक्र के पांचवी राशि का स्वामी है, आपकी जन्मकुण्डली में एक या एकसे अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ युत है तथा इसके साथ कोई भी नैसर्गिक शुभ ग्रह ना तो उपस्थित है और ना ही ऐसे किसी ग्रह कि इस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपका हृदय एवं पीठ मजबूत नहीं होगा। साथ ही आपको अपने शरीर के इस भाग में कुछ जन्मजात परेशानी महसूस हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव के स्वामी की केतु के साथ नजदीकी (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) युति है, जबकि केतु ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है।अतः यह योग आपके लिए अनुकूल नहीं है। जैसा कि पांचवें भाव के स्वामी का आधिपत्य हृदय एवं पीठ वाले भाग पर होता है। अतः आपके शरीर के ये भाग संभवतः स्वस्थ्य या मजबूत नहीं रहेंगे।

उदर (पेट) और पाचन क्रिया का अनुमान

कर्क राशि एवं इसके स्वामी चंद्रमा का आधिपत्य शरीर के महत्वपूर्ण आंतरिक अंग 'पेट' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में कर्क राशि का स्वामी चंद्रमा शक्तिशाली स्थिति में है, क्योंकि यह उच्चस्थ है अथवा अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके पेट की कार्य–प्रणाली समस्यारहित होगी और आपकी पाचन शक्ति अच्छी रहेगी।

चौथे भाव का आधिपत्य शरीर के महत्वपूर्ण आंतरिक अंग 'पेट' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली

में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इस भाव में स्थित हैं, जबकि इसमें कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह उपस्थित नहीं है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके पेट की कार्य–प्रणाली छोटी–मोटी समस्याओं से मुक्त नहीं रह सकती है और आपकी पाचन शक्ति भी अच्छी रहने की संभावना कम है।

चौथे भाव का आधिपत्य शरीर के महत्वपूर्ण आंतरिक अंग 'पेट' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली मेंएक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की इस भाव पर दृष्टि पड़ रही है, जबकि इस पर किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके पेट की कार्य–प्रणाली छोटी–मोटी समस्याओं से मुक्त नहीं रह सकती है और आपकी पाचन शक्ति भी अच्छी नहीं रहेगी।

चौथे भाव के स्वामी का आधिपत्य शरीर के महत्वपूर्ण आंतरिक अंग 'पेट' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह की इसके साथ युति है, जबकि इसके साथ कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह स्थित नहीं है। अतः यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके पेट की कार्य–प्रणाली समस्यारहितहोगी और आपकी पाचन शक्ति अच्छी रहेगी।

कन्या राशि एवं इसके स्वामी बुध का आधिपत्य शरीर के बहुत महत्वपूर्ण आंतरिक क्रिया 'पाचन तंत्र'पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में कन्या राशि का स्वामी ग्रह बुध शक्तिशाली स्थिति में है, क्योंकि यह उच्चस्थ है या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह ग्रह स्थिति अनुकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर की पाचन–प्रणाली समस्यारहित होगी, जिससे कि आप स्वस्थ्य रहेंगे।

कन्या राशि का आधिपत्य शरीर के बहुत महत्वपूर्ण आंतरिक क्रिया 'पाचन तंत्र' पर होता है। आपकीजन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इस राशि में स्थित हैं, जबकि कोई भी नैसर्गिक शुभ ग्रह इस राशि में स्थित नहीं है। अतः यह ग्रह स्थिति अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर की पाचन–प्रणाली समस्यारहित नहीं हो सकती है, जिससे कि आप स्वस्थ्य नहीं रह पाएंगे।

कन्या राशि का आधिपत्य शरीर के बहुत महत्वपूर्ण आंतरिक क्रिया 'पाचन तंत्र' पर होता है। आपकीजन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह की इस राशि पर दृष्टि पड़ रही है,जबकि किसी भी नैसर्गिक अशुभ ग्रह की इस राशि पर दृष्टि नहीं है। अतः यह ग्रह स्थिति अनुकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर कीपाचन–प्रणाली समस्यारहित होगी, जिससे कि आप स्वस्थ्य रहेंगे।

छठवें भाव के स्वामी का आधिपत्य शरीर के बहुत महत्वपूर्ण आंतरिक क्रिया 'पाचन तंत्र' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की छठवें भाव के स्वामी केसाथ युति है, जबकि कोई भी नैसर्गिक शुभ ग्रह इसके साथ स्थित नहीं है। अतः यह ग्रह स्थितिअनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपने पाचन–प्रणाली को प्रभावित करने वाली कुछ समस्याओं से गुजरना पड़ सकता है, जिसका प्रभाव आपके स्वास्थ्य पर भी पड़ सकता है।

शरीर के ग्राही, अवशोषी और उत्सर्जी अंगो का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा शक्तिशाली स्थिति में है, जैसा कि वह उच्चराशि या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह एक अनुकूल संकेत है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर की तरल प्रसारण प्रणाली एवं ग्रंथि प्रणाली समस्या रहित होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों के साथ संबंधित है या उनकी इस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल संकेत है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर की तरल प्रसारण प्रणाली एवं ग्रंथि प्रणाली बिना किसी समस्या के काम करती रहेगी।

आपकी जन्मकुण्डली में एक नैसर्गिक शुभ ग्रह की शुक्र के साथ युति है अथवा उसकी इस पर दृष्टि पड़ रही है, जबकि शुक्र की किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ ना तो युति है और ना ही ऐसे किसी ग्रह की इस पद दृष्टि पड़ रही है। अतः ये अनुकूल संकेत हैं। यदि आपकी कुण्डली मेंकुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आपको अपने आंतरिक जननेन्द्रिय से संबंधित किसी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल शक्तिशाली स्थिति में है, जैसा की यह उच्च राशि या अपनी राशि याअपने नक्षत्र में स्थित है। अतः ये अनुकूल संकेत हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आपको अपने बाहरी जननेन्द्रिय तथा उत्सर्जन प्रणाली से संबंधित किसी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा।

जाँघ, घुटना, टांगो और पंजो का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में दो या दो से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह धनु राशि में उपस्थित हैं, जबकि कोई भी शुभ ग्रह इस राशि में उपस्थित नहीं है। राशि–चक्र की नौवीं राशि नितंब वाले भाग एवं जांघों को संचालित करता है। अतः यह एक अनुकूल संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछसंशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के ये भाग अधिक विकसित नहीं होंगे। या फिर आप अपने शरीर के इन भागों के आस–पास जन्मजात कष्ट महसूस कर सकते हैं।

प्राकृतिक राशि–चक्र की नौवीं राशि का स्वामी गुरु है, जो कि आपकी कुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों के साथ युत है, जबकि किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह की ना तो इसके साथयुति है और ना ही दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल योग है एवं इसके संकेत अनुकूलहै। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के नितंब वाले भाग एवं जांघ काफी विकसित होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवें भाव का स्वामी शक्तिशाली है, क्योंकि यह उच्च राशि या अपनी राशिया अपने नक्षत्र में स्थित है। दसवें भाव का स्वामी शरीर के घुटनों के आस–पास वाले भाग कोसंचालित करता है। अतः यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के ये भाग उचित रूप से विकसित होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में दो या दो से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह मकर राशि में उपस्थित हैं, जबकि

इस राशि में कोई भी अशुभ ग्रह उपस्थित नहीं है। राशि–चक्र की दसवीं राशि शरीर के घुटने के आस–पास वाले भाग को संचालित करती है। अतः यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के ये भाग उचित रूप से विकसित होंगे।

प्राकृतिक राशि–चक्र की दसवीं राशि का स्वामी शनि है, जो कि एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ युत है, जबकि किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह की ना तो इसके साथ युति है और नाही इस पर ऐसे किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के घुटनों के आस–पास वाले भाग उचित रूप से विकसित नहीं होंगे। या फिर आपको अपने शरीर के इस भागके आस–पास जन्मजात कष्ट महसूस हो सकता है।

प्राकृतिक राशि–चक्र की दसवीं राशि का स्वामी शनि है, जो कि एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है तथा आपकी कुण्डली में यह एक कार्यात्मक अशुभ ग्रह भी है। इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में इसकी एक या एक से अधिक कार्यात्मक अशुभ ग्रह के साथ युति है अथवा इस पर ऐसे किसी ग्रहकी दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के घुटनों के आस–पास वाले भाग उचित रूप से विकसित नहीं होंगे। या फिर आपको अपने शरीर के इस भाग के आस–पास जन्मजात कष्ट महसूस हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी शक्तिशाली है, क्योंकि यह उच्च राशि या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। ग्यारहवें भाव का स्वामी आपके शरीर के टांग के आस–पास के भाग 'घुटने से नीचे एवं टखने से ऊपर वाले भाग', को संचालित करता है। अतः यह एक अनुकूलसंकेत है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर का यह भाग काफी विकसित होगा।

प्राकृतिक राशि–चक्र की ग्यारहवीं राशि का स्वामी शनि है, जो कि आपकी कुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ युत है, जबकि कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह ना तो इसके साथ स्थित है और ना ही इस पर ऐसे किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के टांग के आस–पास के भाग, 'घुटने से नीचे एवं टखने से ऊपर वाले भाग', उचित रूप से विकसितनहीं होंगे। या फिर आपको अपने शरीर के इस भाग के आस–पास जन्मजात कष्ट महसूसहो सकता है।

प्राकृतिक राशि–चक्र की ग्यारहवीं राशि का स्वामी शनि है, जो कि एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है तथाआपकी कुण्डली में यह एक कार्यात्मक अशुभ ग्रह भी है। इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में इसकी एक या एक से अधिक कार्यात्मक अशुभ ग्रह के साथ युति है अथवा इस पर ऐसे किसी ग्रहकी दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के टांग के आस–पास के भाग, 'घुटने से नीचे एवं टखने से ऊपर वाले भाग', उचित रूप से विकसित नहीं होंगे। या फिर आपको अपने शरीर के इस भाग के आस–पास जन्मजात कष्ट महसूस हो सकता

है।

प्राकृतिक राशि–चक्र की बारहवीं राशि का स्वामी बृहस्पति है, जो कि आपकी कुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों के साथ युत है, जबकि कोई भी नैसर्गिक अशुभ ग्रह ना तो इसके साथ स्थित है और ना ही ऐसे किसी ग्रह की इस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के पैर व पैर की उंगलियां मजबूत स्थिति एवं अच्छे आकार में होंगे।

शिक्षा की संभावना और संबंधित तथ्यों की जाँच

शिक्षा के दौरान आने वाली बाधाओं का आकलन –

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य, राहु/केतु के 3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर होने के कारण ग्रसित है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है तथा राहु/केतु के साथ नजदीकी संबंध एक हानिप्रद कारक साबित हो सकता है। कुछ गंभीर समस्याओं के कारण आपकी शिक्षा में बाधा उत्पन्न हो सकती है, जिसका प्रभाव धीरे–धीरे तेज हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से भी ग्रसित होने की काफी संभावना है तथा आपकी दृष्टि भी किसी प्रकार प्रभावित हो सकती है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिरोधी प्रभाव उपस्थितनहीं हैं तो आपके पिता को भी कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है, जिसके कारण आप भी अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में प्रमुख शिक्षा संबंधी भाव (दूसरे या चौथे या पांचवें) का स्वामी वक्री है। फिर भी यहएक लाभदायक कारक है। चूंकि आप बहुत नियमित या अत्यधिक अध्ययनशील नहीं हो सकते हैं। तब भी आप में एकाग्रता की विशिष्ट क्षमता विद्यमान होगी तथा आप अत्यंत कम समय में अविश्वसनीय रूप सेबहुत कुछ प्राप्त करेंगे। आपका उत्साह अवधि/वर्ष/पाठ्यक्रम के प्रारम्भ होने पर और पुनः अन्तिम परीक्षा के दौरान अपने चरम पर होगा, जिसमें की आप निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि वक्री है। यह शिक्षा के लिए कदापि बाधक कारक नहीं है, अपितु यह काफी लाभदायक है। आप निश्चित रूप से उच्च महात्वाकांक्षा वाले तथा गर्व की भावना से पूर्ण होंगे, जो कि अप्रत्यक्ष रूप से आपको उत्तम शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करेगा। आपमें एकाग्रता का गुण विद्यमान होगा तथा मातृ–भाषा के अतिरिक्त विदेशी भाषाओं (जैसे अंग्रजी आदि) सहित अन्य भाषाओं को बोलने व लिखने की काफी अच्छी पकड़ हो सकती है। हालांकि आपको बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है, क्योंकि वक्री शनि आपकी शिक्षा में स्थाई या अस्थाई रूप से बाधा डाल सकता है। जैसाकि शनि आपकी कुण्डली में शक्तिशाली स्थिति में नहीं है, क्योंकि यह उच्चस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित नहीं है। इसलिए शिक्षा में आने वाली बाधा स्थाई होगी और/या यह बाधा प्रवीणता के अभाव के कारण अथवा 'स्क्रीनिंग परीक्षा' (यह प्रवेश–परीक्षा या प्रारम्भिक स्क्रीनिंग परीक्षा भी हो सकती है) में असफलता के कारण हो सकती है।

अनौपचारिक शिक्षा (तीसरे भाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, तीसरे भाव का स्वामी शक्तिशाली स्थिति में है क्योंकि यह या तो उच्चस्थ है या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में उपस्थित है। ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए शैक्षिणिक दृष्टिकोण से अनुकूल है। आपका शिक्षा के प्रति अधिक रूझान होगा तथा आप में शैक्षिणिक योग्यता विद्यमान होगी– विशेषकर आपकी प्रारम्भिक आयु के दौरान।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों की तीसरे भाव पर दृष्टि पड़ रही है। यह दर्शाता है कि आप अत्यंत धैर्यवान होंगे तथा आप अपनी रूचि के विभिन्न विषयों का कई वर्षों तक अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, पहले भाव का स्वामी तीसरे भाव में उपस्थित है। अतः यह शैक्षिणिक दृष्टि से लाभदायक योग है। यह दर्शाता है कि आप अत्यंत धैर्यवान होंगे तथा आप अपनी रूचि के विभिन्न विषयों का कई वर्षों तक अनौपचारिक शिक्षा जारी रखेंगे।

लिखावट (तीसरे भाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, तीसरे भाव का स्वामी शक्तिशाली स्थिति में है क्योंकि यह उच्चस्थ है अथवा अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। यह दर्शाता है कि आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा तथा आपमें असाधारण लेखन क्षमता विद्यमान होगी। आपकी लिखावट अत्यंत आकर्षक होगी, जिसे भी सुन्दर कहा जा सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, पहले भाव का स्वामी तीसरे भाव में उपस्थित है। उत्तम शिक्षा प्राप्त करने के दृष्टिकोण से यह एक लाभदायक योग है। यह दर्शाता है कि आप प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले व्यक्ति होंगे एवं आपमें असाधारण लेखन क्षमता विद्यमान होगी। आपकी लिखावट अत्यंत आकर्षक होगी, जिसे भी सुन्दरकहा जा सकता है।

सामान्य शिक्षा (चौथे भाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे भाव के स्वामी की लग्न पर दृष्टि पड़ रही है। अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के लिए यह एक लाभदायक योग है। आप ना केवल अपनी स्नातक की शिक्षा सफलतापूर्वक पूरा करेंगे, बल्किआगे की शिक्षा भी जारी रख सकते हैं। आप अपनी योग्यता में वृद्धि करने के लिए किसी प्रतिष्ठित संस्था से कोई व्यावसायिक शिक्षा या बाद की शिक्षा भी प्राप्त कर सकते हैं।

बुद्धि, मेधा और योग्यता (पाँचवे भाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों की पांचवें भाव पर दृष्टि पड़ रही है। उत्तम शिक्षा प्राप्त करने हेतु यह अनुकूल संकेत दे रहा है। आप कुशाग्र बुद्धि तथा अवधारक स्मरणशक्ति वाले होंगे। आप असाधारण प्रतिभा से सम्पन्न भी हो सकते हैं। आप ना केवल सुगमतापूर्वक अपनी स्नातककी शिक्षा ग्रहण करेंगे, बल्कि आगे की भी शिक्षा जारी रखेंगे। आप सामान्य क्षेत्रों में उच्च शिक्षा जारी रख सकते हैं अथवा अपनी प्रतिष्ठा में वृद्धि करने के लिए अथवा अपने व्यावसायिक स्तर में सुधार लाने के लिए किसी प्रतिष्ठित संस्था से कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

वस्तुपरक शिक्षा (चतुर्थेश और पंचमेश के बीच का सह संबंध) –

आपकी जन्मकुण्डली में, चौथे भाव का स्वामी पांचवें भाव में उपस्थित है। व्यवहारपरक शिक्षा प्राप्त करने केलिए यह एक लाभदायक योग है। आप कुशाग्र बुद्धि वाले होंगे तथा आपमें अवधारक स्मरण शक्ति होगी। आप अपनी रूचि के अनुसार कोई भी व्यावसायिक कोर्स/पाठ्यक्रम निर्धारित समय से कम से कम अवधि में ही पूर्ण कर लेंगे। आप ऐसा विश्वास कर सकते हैं कि जिस किसी परीक्षा में आप सम्मिलित होंगे,उसमें पहले प्रयास में ही आपको सफलता प्राप्त होगी।

वस्तुपरक शिक्षा (केन्द्र और त्रिकोन के अधिपतियों के बीच का सह संबंध) –

आपकी जन्मकुण्डली में, सातवें भाव का स्वामी पांचवें भाव में उपस्थित है। ऐसा योग किसी व्यवहारपरक क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु अत्यंत अनुकूल है। आप कुशाग्र बुद्धि वाले होंगे तथा आपमें अवधारक स्मरण शक्ति होंगी। आप अपनी रूचि के अनुसार कोई भी व्यावसायिक कोर्स अत्यंत कम प्रयासों में ही आसानी से प्राप्त करने में सक्षम होंगे। आपको भाषा, साहित्य, दर्शन आदि जैसे मानवतावादी विषय तथा विधि का अध्ययन अत्यधिक आकर्षित कर सकता हैं। इसके अतिरिक्त आपको ललित कला की किसी विधामें अथवा मनोरंजन के क्षेत्रों में काफी रूचि हो सकती

है।

आपकी जन्मकुण्डली में, सातवें एवं नौवें भाव के स्वामी की एक साथ युति है। तकनीकि या इंजीनीयरिंग जैसे व्यवहारपरक क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु यह एक अनुकूल योग है। आप कुशाग्र बुद्धि तथा अवधारक स्मरण शक्ति से परिपूर्ण होंगे। आप अपनी रूचि के अनुसार कोई भी व्यावसायिक कोर्स अत्यंत कम प्रयासों में ही आसानी से प्राप्त करने में सक्षम होंगे। आपको व्यापार प्रबंधन तथा विधि जैसे विषय अत्यधिक आकर्षित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपको आयात–निर्यात अथवा विदेशी मामलों में भी काफी रूचि हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में, पांचवें भाव का स्वामी दसवें भाव में उपस्थित है। किसी व्यवहारपरक क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु यह अत्यंत अनुकूल योग है। आप बहुत बुद्धिमान तथा अवधारक स्मरण शक्ति से परिपूर्ण होंगे। आप अपनी रूचि के अनुसार कोई भी व्यावसायिक कोर्स अत्यंत कम प्रयासों में ही आसानी से प्राप्त करने में सक्षम होंगे। आप आधुनिक तकनीकियों को सीखने के लिए काफी उत्सुक हो सकते हैं, जो कि बहुत बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन में उपयोगी हो सकता है। अतः आप तकनीकि या इंजीनियरिंग की शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त व्यापार प्रबंधन और विधि–अध्ययन जैसे विषयभी आपको आकर्षित कर सकते हैं।

उच्च/ब्यावहारिक शिक्षा और शोध (नौवें भाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, नौवें भाव का स्वामी पांचवें भाव में उपस्थित है। उत्तम शिक्षा प्राप्ति के लिए यह अत्यंत भाग्यशाली योग है, जैसाकि पांचवा भाव गुण को एवं नौवां भाव उच्च शिक्षा को दर्शाता है। आपमें बहुत अच्छी प्रवीणता विद्यमान होगी तथा आप उच्च शिक्षा ग्रहण करेंगे। आप अपनी रूचि के अनुसार किसीशोध कार्य में भी लगे हो सकते हैं। उच्च शिक्षा अथवा व्यावसायिक शिक्षा प्राप्ति के लिए (और/या अपने व्यवासाय के संदर्भ में) आपका प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से विदेश से कुछ संबंध हो सकता है।

गुप्त और रहस्यमय विद्याओं का अध्ययन और शोध (बारहवें भाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि बारहवें भाव में स्थित है अथवा इस पर अपनी दृष्टि डाल रहा है। पांचवें भावका स्वामी भी बारहवें भाव में स्थित है अथवा इस पर अपनी दृष्टि डाल रहा है। ऐसी ग्रह स्थिति लम्बे समय तक अनौपचारिक शिक्षा जारी रखने के लिए अनुकूल है। संभवतः आप स्वयं की कुछ नई खोज या विशेष निष्कर्षों का पता लगा सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, बारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव में उपस्थित है। जैसाकि बारहवां भाव चौथे भाव से नौवां भाव है (या नौवें भाव से चौथा भाव है)। अतः आप अपनी सामान्य अथवा उच्च शिक्षा के लिए किसी दूरस्थ स्थान पर अथवा विदेश भी जा सकते हैं तथा वहां काफी लम्बे समय तक रह सकते हैं। यद्यपि आप किसी दूरस्थ स्थान पर नहीं जाते हैं तो ऐसी संभावना है कि आपको स्कूल या कॉलेज या विश्वविद्यालय के छात्रावास में रहना पड़ सकता है।

गहन अध्ययन और शोध तथा असमान्य विद्याओं का अध्ययन (आठवें भाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल उच्चस्थ राशि में या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। यह अपनी स्थिति या दृष्टि से आठवें भाव को प्रभावित कर रहा है। इसके अतिरिक्त, गुरु प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी शिक्षा संबंधी भाव में स्थित है। ऐसी विशेष ग्रह स्थिति आपको अपराध व दंड के बारे में बहुत जिज्ञासु बनाएगी और संभवतः आप विभिन्न प्रकार के अपराधों एवं आपराधिक मनोविज्ञान, व्यवहार, नियम,

कानून, क्रियाकलाप, परिभाषा आदि के बारे में उत्कृष्ट ज्ञान व जानकारी एकत्रित करने के लिए औपचारिक या अनौपचारिक शिक्षा जारी रख सकते हैं। आप खुफिया जांच–पड़ताल, अदालती कार्यवाही आदि के बारे में भी जानने में रूचि ले सकते हैं।

शिक्षा की संभावना और रूझान के क्षेत्र (बुध के भिन्नाष्टक वर्ग से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध के भिन्नाष्टक–वर्ग में, आठवें भाव में शुभ बिन्दु काफी संख्या (7 या 8) में हैं। यह एक अनुकूल योग है। आपको ज्योतिषशास्त्र, हस्तरेखाशास्त्र, अंक विज्ञान आदि जैसे गूढ़ विषयों में अधिक रूचि हो सकती है।

शिक्षा में रूझान और अन्य क्षेत्रों की ओर झुकाव (ग्रहों के अवधि बदलाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध उच्चस्थ होने या अपने भाव या अपने नक्षत्र में स्थित होने के कारण शक्तिशाली स्थिति में है। इसके अतिरिक्त मंगल व शनि के बीच अवधि–परिवर्तन हो रहा है। यह दर्शाता है कि आपकी तकनीकि या इंजीनियरिंग जैसे व्यवहारपरक विषयों में बहुत रूचि होगी। आप विभिन्न प्रकारके आधुनिक स्तर के कम्प्यूटरों के प्रयोग में आसानी से निपुणता प्राप्त कर लेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध उच्चस्थ होने या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित होने के कारण शक्तिशाली स्थिति में है। इसके अतिरिक्त बुध व शुक्र अवधि–परिवर्तन कर रहे हैं। यह संकेत करता है किसंभवतः आपका गहन रूझान कलात्मक या कारीगरी की ओर हो सकता है अथवा फोटोग्राफी की ओर भी आपकी रूचि अत्यधिक हो सकती है। आपके व्यवसाय अथवा शौक का कुछ संबंध ललित कलाओं की किसी विधा या फोटोग्राफी से हो सकता है।

शिक्षा की गुणवत्ता और विस्तार (चर्तुविशांश वर्ग कुण्डली से) –

आपके चतुर्विशांश कुण्डली (जिसका उपयोग विशेष रूप से शिक्षा को विचारने के लिए किया जाता है) में, बुध चर राशि में स्थित है। यह दर्शाता है कि आपमें बहुत शीघ्रता से सोचने की क्षमता विद्यमान होगी और तत्काल निर्णय पर पहुंचेंगे।

आपके चतुर्विशांश कुण्डली (जिसका उपयोग विशेष रूप से शिक्षा को विचारने के लिए किया जाता है) में, एक केन्द्र भाव का स्वामी एक त्रिकोण भाव में स्थित है। यह दर्शाता है कि आप व्यवहारपरक क्षेत्र में शिक्षाजारी रख सकते हैं, जिसका संबंध तकनीकि या इंजीनियरिंग से हो सकता है।

आपके चतुर्विशांश कुण्डली (जिसका उपयोग विशेष रूप से शिक्षा को विचारने के लिए किया जाता है) में, एक त्रिकोण भाव का स्वामी एक केन्द्र भाव में स्थित है। यह दर्शाता है कि आप व्यवहारपरक क्षेत्र में शिक्षाजारी रख सकते हैं, जिसका संबंध तकनीकि या इंजीनियरिंग से हो सकता है।

भिन्नाष्टक वर्ग में बिन्दुओं की कुल संख्या से शिक्षा की संभावना का आकलन –

आपकी जन्मकुण्डली में, दूसरे भाव में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदानसे प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। आपका शिक्षा के प्रति रूझान अधिक होगा तथा आपमें शैक्षिणिक दक्षता विद्यमान होगी। आपको वाक्पटुता का वरदान प्राप्त होगातथा आप आर्थिक सौदों के मामले में बहुत ही विश्वसनीय

होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीसरे भाव में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदानसे प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। आपमें असाधारण लेखन क्षमता विद्यमान होगी। आप पत्र व्यवहार/संवाद तथा नवीन विकासों के बारे में होने वाले सभी परिवर्तनों आदि की जानकारी का आदान-प्रदान करने के मामले में बहुत निपुण होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, ग्यारहवें भाव में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदान से प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। आपका विभिन्न विषयों मेंगहन रूझान होगा, जिसके बारे में आप ज्ञान व जानकारी एकत्र करेंगे। जो कि आपको अपने मित्रों व परिचितों के मध्य आकर्षण का केन्द्र बनाने में मदद करेगा। वे लोग आपके विचारों को महत्व देंगे तथा आवश्यकता पड़ने पर कुछ मसलों पर आपसे सूझाव भी लेंगे।

ब्यवसाय (रोजगार) की संभावनाओं का ज्यातिषिय विश्लेषण

आपकी जन्मकुण्डली में शनि लग्न से दसवें भाव में उपस्थित है। अतः आप धैर्य एवं उद्यमशीलता के प्रतिरूप होंगे। आप अनुशासन का सख्ती से पालन करने वाले, कठोरता से काम लेने वाले तथा उद्देश्यों के प्रति दृढ़ता आपके जीवन का प्रतीक होगा। यदि शनि उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित है तो आप निश्चित रूप से जीवन में उच्च पद की प्राप्ति करेंगे। किन्तु यदि शनि वक्री या नीचस्थ या किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ जुड़ा हुआ है या किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह की शनि पर दृष्टि पड़ रही है तो आपको असफलता और अपमान का सामना करना पड़ेगा तथा अचानक नीचे गिरने का भी खतरा हो सकता है। आपके सार्वजनिक कार्य असफल हो सकते हैं और भारी नुकसान के साथ–साथ आपका मान भी घट सकता है। अतः आपको अत्यंत सावधान व सचेत रहना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य लग्न से दसवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है। अतः आप अत्यंत कर्मठ होंगे एवं अपने सभी प्रयत्नों में सफल होंगे। आपको सरकारी विभागों, दूतावासों आदि से संरक्षण प्राप्त होगा तथा अपनी मध्य आयु में आपको सम्मान भी प्राप्त होगा। आपकी ख्याति सुरक्षित रहेगी। आपमें नेतृत्व करने का गुण विद्यमान होगा तथा आप दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत होंगे। आपका उठना–बैठना उच्च स्तरीय लोगों के साथ होगा तथा आप अपने विभिन्न उपायों व प्रयासों से धन अर्जित करेंगे। आपको सराहना प्राप्तहोगी तथा आपका नाम व यश चारों तरफ फैलेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में दशमेश पर अष्टमेश दृष्टि डाल रहा है। अतः आपको कई बार अपनी नौकरी में परिवर्तन अथवा स्थान में परिवर्तन करना पड़ सकता है। परिस्थितियों में बदलाव के कारण ऐसा आकस्मिकएवं अप्रत्याशित रूप से हो सकता है। चूंकि आपको तैयारी के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल सकता है इसलिए आप निराशा महसूस कर सकते हैं अथवा आप परेशान हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र–राशि से दशमेश पर चंद्र–राशि से अष्टमेश की दृष्टि पड़ रही है। अतः आपको कई बार अपनी नौकरी में परिवर्तन अथवा स्थान में परिवर्तन करना पड़ सकता है। परिस्थितियों में बदलाव के कारण ऐसा आकस्मिक एवं अप्रत्याशित रूप से हो सकता है। चूंकि आपको तैयारी के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल सकता है इसलिए आप निराशा महसूस कर सकते हैं अथवा आप परेशान हो सकतेहैं।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न–स्वामी (स्वयं) और दशमेश (पेशा) बुध पर मंगलकी दृष्टि पड़ रही है। मंगल आठवें और तीसरे भाव का स्वामी भी है, जो कि दोनों ही भाव अशुभ माने जाते हैं। साहस का ग्रह होने केकारण, मंगल अपनी खतरनाक प्रवृति सामान्य से दुगुना छोड़ रहा है। आप रक्षा विभाग, पुलिस, अग्निशामक दल आदि सक्रिय सेवाओं में अच्छा कार्य कर सकते हैं। या फिर, आप ऐसे व्यक्ति होंगे, जिसे बाह्य क्रिया–कलापों में अत्यधिक आनन्द की प्राप्ति होगी। आप भ्रमण व अभियानों के शौकीन होंगे। आपको मार्शल आट्र, बाक्सिंग या कुश्ती सिखने में रूचि हो सकती है तथा आप एक प्रसिद्ध खिलाड़ी हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में सूर्य आजीविका का गौण कारक है। अतः आप सरकारी नौकरी में कार्यरत हो सकते हैंया सरकार के साथ संबंधित कार्यों में सफल हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित है तो आप राजनीति से जुड़ सकते हैं या यहां तक कि राजदूत भी बन सकते हैं। आपआधुनिक या पारम्परिक दवाओं या हड्डी के रोगों का उत्कृष्ट ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं अथवा नेत्र संबंधी विषयों में आपकी विशेष रूचि हो सकती है। सोना, तांबा, गहनें, घड़ियां व दसरे चमकीले/सुनहरे धातुओं आदि का व्यापार आपके लिए अनुकूल होगा। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य अच्छी स्थिति में नहीं हैतो आप चावल, गेंहू, उनी वस्तुओं, जूट उत्पाद, लकड़ियों के फर्नीचर आदि जैसे उपभोग योग्य वस्तुओं का कारोबार कर सकते

हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि आजीविका का प्राथमिक कारक है, इसलिए आपके पेशे का कुछ संबंध परिश्रमव मजदूर वर्ग के लोगों के साथ हो सकता है। आप उद्योग, खान, खनिज पदार्थ, रोजगार एजेन्सी, वायु–मार्ग या अंतरिक्ष से संबंधित कार्य, लोकतंत्रात्मक कार्य आदि से जुड़े हो सकते हैं। या फिर, आप दंतचिकित्सक या विकलांग/हड्डियों के सर्जन हो सकते हैं। यदि शनि उच्चस्थ है या अपने भाव में स्थितहै तो आप कोई वरिष्ठ पद प्राप्त करेंगे तथा आपका पारिश्रमिक उत्तम होगा। किन्तु यदि शनि नीचस्थ, अस्त/ज्वलित या ग्रसित है तो आप नीचले स्तर का अधिक परिश्रम वाला कार्य कर सकते हैं। लौह व इस्पात, ईंट का भट्ठा, कुम्भकारी, धोबीखाना, सैलून, सफाई व आरोग्य से संबंधित वस्तुएं, पाइपलाईन जोड़ना, बर्फ, खाद्य तेल आदि जैसे क्षेत्र आपके लिए अनुकूल होंगे।

कालचक्र दशा अंश और जीव राशि से ब्यवसाय (रोजगार) का विश्लेषण

आपकी कालचक्र दशा अंश राशि – मिथुन

आपकी कालचक्र दशा जीव राशि – वृष

आपकी जन्मकुण्डली में शनि जीव–राशि (जीवन) में स्थित है, अतः आप गम्भीर प्रकृति के व्यक्ति होंगे। संभवतः आप उदासीन और विचारमग्न स्वभाव के हो सकते हैं। यदि शनि के साथ कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह स्थित है या उसकी शनि पर दृष्टि पड़ रही है तो आप अनुशासित प्रकृति के बहुत उद्यमी व्यक्ति होंगे। किन्तु यदि शनि के साथ कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह स्थित है अथवा उसकी शनि पर दृष्टि पड़ रही है तो आपका दिमाग कुछ शोक व दर्द के कारण प्रभावित हो सकता है। आप निराशावादी भाव विकसित कर सकते हैं तथा आम लोगों के प्रति बहुत अविश्वासी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य की आपके जीव–राशि (जीवन) पर दृष्टि पड़ रही है, अतः आप बहुत प्रसन्नचित्त स्वभाव एवं आशावादी दृष्टिकोण वाले होंगे। एक बेफिक्र व्यक्ति होने के कारण आप दूसरों के लिए प्रेरणा के स्रोत होंगे। आपके मित्र उच्च पदों/स्थानों वाले होंगे तथा आप वरिष्ठ अधिकारियों से लाभ प्राप्त करेंगे। संभवतः आप सरकारी नौकरी में सेवारत होंगे तथा किसी उच्च पद पर आसीन हो सकते हैं। या फिर अपने पेशे के संदर्भ में आपका विभिन्न सरकारी संगठनों के वरिष्ठ व्यक्तियों से कारोबार होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु आपकी जीव–राशि (जीवन) में स्थित है, अतः आप कुछ गहरे शोक से ग्रसित हो सकते हैं जो आपके मन–मस्तिष्क पर रिक्तता का गहरा भाव छोड़ सकता है। आपमें किसी चीज के चरम बिन्दु तक जाने की आदत हो सकती है, जो कि कभी आपके लिए बहुत लाभदायक हो सकता है, किन्तु कभी–कभी बहुत निराशा भी हो सकती है। यदि केतु के साथ कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह उपस्थित है अथवा उसकी केतु पर दृष्टि पड़ रही है तो आपका मानसिक रूझान धर्म के प्रति होगा तथा कर्तव्यनिष्ठ स्वभाव भी होगा। किन्तु केतु के साथ यदि कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह स्थित है या उसकी केतु पर दृष्टि पड़रही है तो आपमें अस्वाभाविक उत्साह एवं अवास्तविक अपेक्षाएं हो सकती हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में आपका काल चक्र दशा अंश वृषभ राशि में है। अंश राशि के स्वामी (शुक्र) से प्रभावित होने के कारण आप अनेक मामलों में काफी भाग्यशाली होंगे। आपका जन्म किसी सम्पन्न परिवार में हुआ होगा और आप अपने स्वयं के प्रयासों को सही दिशा देकर और अधिक धनवान बनेंगे। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे और अधिकारियों से प्रत्यक्ष सहयोग व अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त करेंगे– विशेषकर

कुलीन लोगों से अधिक प्राप्त करेंगे। संभवतः आप कुलीन पृष्ठभूमि की कुछ उम्रदराज महिलाओं से भी लाभप्राप्त कर सकते हैं।

विवाह/प्रेम संबंधों से संबंधित संभावनाओं का आकलन

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति के भिन्नाष्टक वर्ग में, शुक्र से सातवें भाव में शुभ बिन्दुओं की संख्या 5 (याअधिक) है। यह अत्यंत भाग्यशाली योग है। आप अपने जीवनसाथी के संदर्भ में अत्यंत भाग्यशाली होंगे। वह बहुत ही दयालु, उदार, विवेकपूर्ण, सुसभ्य व कर्तव्यनिष्ठ होंगी तथा प्रतिष्ठित परिवार से संबंधित होंगी। आपका दाम्पत्य जीवन बहुत फलदायी व सुखमय व्यतीत होगा, क्योंकि आप पूर्ण रूप से सम्पन्न होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र के भिन्नाष्टक वर्ग में, शुक्र से सातवें भाव में शुभ बिन्दुओं की संख्या 4 (या 5)है। यह एक अनुकूल योग है। आपकी पत्नी बहुत विचारवान होंगी। वह आपकी पसन्द और नापसन्द कोउचित महत्व देंगी तथा आपके विचारों का सम्मान करेंगी। आपका दाम्पत्य जीवन खुशहाल व आनन्दपूर्णव्यतीत होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, सातवें भाव का स्वामी नैसर्गिक शुभ ग्रह बृहस्पति के साथ स्थित है। जबकि बृहस्पति किसी त्रिक भाव (छठें या आठवें या बारहवें) का स्वामी नहीं है। अतः यह अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप अपने जीवनसाथी के संदर्भ में बहुत भाग्यशाली होंगे। वह आपके प्रति बहुत विश्वसनीय तथा वफादार होंगी और सामान्यतः सभी मामलों में आपका उनसे बहुत घनिष्ठ लगाव होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, विवाह का नैसर्गिक कारक ग्रह शुक्र नैसर्गिक शुभ ग्रह बृहस्पति के साथ स्थित है।जबकि बृहस्पति किसी त्रिक भाव (छठें या आठवें या बारहवें) का स्वामी नहीं है। अतः यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप अपने जीवनसाथी केसंदर्भ में बहुत भाग्यशाली होंगे। वह आपके प्रति बहुत विश्वसनीय तथा वफादार होंगी और सामान्यतः सभी मामलों में आपका उनसे बहुत घनिष्ठ प्रेम होगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र जिस राशि में स्थित है उसका स्वामी वक्री है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपका अपने जीवनसाथी के साथ घनिष्ठ व आत्मीय संबंध होगा, जैसाकि आप अपने जीवनसाथी के साथ एकांत में व्यवधानरहित समय बिताकर आनन्द प्राप्त करने के बहुत शौकीन होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र से गणना करने पर तीन महत्वपूर्ण राशियों (चौथे, आठवें व बारहवें) में से दो राशियां केवल दो नैसर्गिक अशुभ ग्रहों से अधिग्रहित हैं, जबकि इन दोनों राशियों में से किसी में कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह एक अत्यंत प्रतिकूल योग है जिसे अरिष्ट–योग कहा जाता है। यदिआपकी कुण्डली में कुछ प्रबल सौम्य प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो किन्हीं विषम परिस्थितियों के कारण आपकी रूचि विवाह में नहीं हो सकती है। किन्तु यदि आप विवाह करते भी हैं तो विभिन्न कारणों व विस्तारों के कारण आपका दाम्पत्य जीवन संभवतः खुशहाल नहीं हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह सातवें भाव में स्थित है या उस पर दृष्टि डाल रहा है, जबकि कोई भी नैसर्गिक शुभ ग्रह ना तो इसके साथ स्थित है और ना ही उसकी इस पर दृष्टि है तथा दूसरा भाव भी इसी तरह व्यवस्थित है। अतः समग्र रूप से यह प्रतिकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इसकी बहुत संभावना है कि आपके दाम्पत्य जीवन में खुशियों की कमी हो सकती है। यहां तक कि आपको अपनी पत्नी की तरफ से या उनके कारण किसी अशुभ घटना जैसे शारीरिक प्रहार, प्रत्यक्ष लडाई, मुकद्मा या झगड़े का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, ''दूसरे, सातवें और ग्यारहवें'' इन तीनों महत्वपूर्ण भावों के स्वामी या तो बृहस्पति

के साथ स्थित हैं या इन पर उसकी दृष्टि पड़ रही है, जबकि इनमें से प्रत्येक ग्रह त्रिकोण–भाव या केंद्र भाव में स्थित हैं। अतः यह एक अनुकूल ग्रह स्थिति है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभावउपस्थित नहीं हैं तो आप अपने विवाह के संदर्भ में बहुत भाग्यशाली होंगे। आपकी पत्नी किसी कुलीनपरिवार से होंगी तथा वह वास्तव में सद्गुणों की प्रतिमा होंगी। आपको दाम्पत्य जीवन का सुख प्राप्तहोगा तथा आपको होनहार व कर्तव्यपरायण संतान की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य और स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य पीड़ित है, अतः आप किसी प्रकार के जैविक विकार से ग्रसित हो सकते हैं। आपकी मौलिक संरचना अधिक उत्तम नहीं हो सकती है एवं आपमें आनुवांशिक रूप से कोई रोग प्रवेश कर सकता है– संभवतः अपने पिता से।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा पीड़ित है, अतः आपको कुछ क्रियात्मक अनियमितता से पीड़ित होना पड़ सकता है। आपका स्वास्थ्य अधिक समय तक अच्छा नहीं रह सकता है तथा आपको बाह्य कारणों जैसे जलवायु व वातावरणीय स्थितियों में परिवर्तन के कारण रोग हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में लग्न पीड़ित नहीं है। अतः आपमें रोगों के प्रति एक मजबूत प्रतिरोधक क्षमता विद्यमान होगी। आप किसी भी रोग से अधिक लम्बे समय तक पीड़ित नहीं रहेंगे।

आपकी कुण्डली में छठवें भाव का स्वामी (छठा भाव – रोग) सूर्य पर दृष्टि डाल रहा है। अतः आप बहुत स्वस्थ्य नहीं हो सकते हैं तथा अपने जीवन में कभी किसी गंभीर रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में अष्टमेश अपने भाव आठवें में स्थित है। अतः आपको अपने जीवन में किसी गंभीर दुर्घटना का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपको कोई बड़ी शल्य चिकित्सा भी नहीं करवानी पड़ेगी।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल उच्चस्थ है अथवा अपने भाव में उपस्थित है और यह वक्री नहीं है। अतः आपको किसी गंभीर दुर्घटना का सामना नहीं करना पड़ेगा अथवा आपको कोई बड़ी शल्य चिकित्सा नहीं करवानी पड़ेगी। आपको किसी मारकाट या रक्तहीनता का भी सामना नहीं करना पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि उच्चस्थ नहीं है और ना ही अपने भाव में स्थित है और यह वक्री है। अतः आपको बहुत सावधान व सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि आपको अपने जीवनकाल में कभी उंचाई से गिरने के कारण चोट लग सकती है अथवा कोई वस्तु आपके शरीर के किसी भाग पर गिरने के कारण भी चोट लगसकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में दो घोर अशुभ ग्रह मंगल व शनि एक ही राशि को प्रभावित कर रहे हैं तथा वह राशि मेष है। अतः इससे संबंधित शरीर का भाग किसी दुर्घटना के कारण अथवा किसी अन्य प्रकार से प्रभावित हो सकता है, जिसके कारण आपको अत्यधिक सावधान रहना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में मेष राशि पर मंगल व शनि का संयुक्त प्रभाव है। अतः किन्ही बाहरी अथवा आन्तरिक कारणों से आपका सिर व चेहरे का भाग प्रभावित हो सकता है।

आप पुरुष हैं और पीड़ित राशि एक विषम राशि है। अतः आपके शरीर के बाएं हिस्से जो कि पीड़ित राशि दर्शाती है, उसमें चोट लगने या किसी अन्य प्रकार से प्रभावित होने की संभावना है।

आपकी कुण्डली में प्लूटो कन्या राशि में उपस्थित है और चंद्रमा उससे पीड़ित है। अतः पेट दर्द, दस्त, पेचिश, आंतों में गड़बड़ी, किसी अन्जाने स्थान पर विचित्र किस्म का खाना खाने के कारण भोजन विषाक्तता, कलाइयों, हथेली व अंगुलियों में सूक्ष्म जीवों/फफूंदी के संक्रमण के कारण खिंचाव आदि जैसे रोगों से ग्रसित हो सकते हैं।

यात्रा, भ्रमण और विदेश यात्रा

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध तीसरे भाव में उपस्थित है। आपके भाग्य में समीपस्थ स्थानों की अनेकयात्राएं करने का योग है। या फिर आपको अपने व्यवसाय के कारण नियमित रूप से समीपस्थ स्थानों की यात्राएं करनी पड़ सकती हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्र–राशि से गणना करने पर बुध तीसरे भाव में उपस्थित है। आपके भाग्यमें समीपस्थ स्थानों की अनेक यात्राएं करने का योग है। या फिर आपको अपने व्यवसाय के कारण नियमित रूप से समीपस्थ स्थानों की यात्राएं करनी पड़ सकती हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, बहुत सारे ग्रह (पांच या अधिक) चर–राशि और उभय–राशि में स्थित हैं। अतः यह दर्शाता है कि आप अत्यधिक यात्राएं करेंगे, जिनमे अनेक कम दूरी वाली व अनेक लम्बी दूरी वाली यात्राएं होंगी। यदि कई सारे ग्रह चरार्द्ध या चर राशियों के आधे समीप में स्थित हैं तो यह प्रवृति और भी अधिक निश्चित हो जाएगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, तृतीयेश चर–राशि में स्थित है। यह दर्शाता है कि आप अनेक परिवर्तन करेंगे एवं प्रायः समीपस्थ स्थानों की यात्राएं करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, नवमेश चर–राशि में स्थित है। यह दर्शाता है कि आप अनेक परिवर्तन करेंगे एवं प्रायः समीपस्थ स्थानों की यात्राएं करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीव्र गति से चलने वाला ग्रह (जो वक्री नहीं है) एक दूसरे मंद चलने वालेग्रह के साथ, जिस पर दृष्टि निर्माण के लिए आवश्यक स्थिति की यथार्थ डिग्री को इसने अभीप्राप्त नहीं किया है, 120 डिग्री की दृष्टि में शामिल है। यह आपके किसी दूरस्थ स्थान (आपकेजन्म स्थान या मूल–निवास स्थान से) पर स्थानान्तरित होने की संभावना को व्यक्त करता है, जहां आप समृद्ध होंगे एवं काफी लम्बे समय तक रहेंगे।

शुभ दिशा का चुनाव ? यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी योग उपस्थित नहीं हैं तो आपके लिए अनुकूल दिशा पूर्व होगी।

विंशोत्तरी दशाफल

चन्द्रमा दशा (18:12:1973 से 14:06:1979)

वर्तमान समय में आपकी चंद्रमा की महादशा चल रही है और चंद्रमा आपकी कुण्डली में लग्न में स्थित है।आपकी कुण्डली में कृष्ण पक्ष का चंद्रमा लग्न में है, आपको भारी मानसिक पीड़ा हो सकती है, संबंधियों से झगड़ा हो सकता है, आपको जल संबंधी रोग हो सकते हैं, विशेषकर आपके फेफड़े में पानी जमा हो सकता है।

वर्तमान समय में आपकी चंद्रमा की महादशा चल रही है और चंद्रमा आपकी कुण्डली में कन्या राशि में स्थित है। चंद्रमा की अपनी दशा के दौरान, आप यदि नौकरी में हैं, तो नगद धन के नियोजन का काम करेंगे। दूसरे कारकों के आधार पर आपका जीवनसाथी से अलगाव या उनको मृत्यु तुल्य कष्ट हो सकता है। आप धार्मिक कार्यों में रूचि लेंगे।

शनि अर्न्तदशा (18:12:1973 से 14:04:1975)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए बहुत उत्तम नहीं हो सकती है। आपको अकथित परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आप संबंधियों के कारण दुख और खतरों का सामना कर सकते हैं। आप, आपका जीवनसाथी, संतानें, माता–पिता एक साथ कई रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आपका चिकित्सकीय खर्चा बढ़ सकता है।आप उपचार के विभिन्न तरीके अपना सकते हैं और धन बर्बाद कर सकते हैं। हालांकि, अन्तर्दशा के अन्त में आपको कोई ऐसा व्यक्ति मिल सकता है जो कुछ उपचार के तरीके बतायेगा और आप उनका प्रयोग आखिरी उपाय के रूप में करके परिणाम प्राप्त करेंगे।

बिना उपायों के प्रयोग के अगली बुध की अन्तर्दशा में सुधार होना तय है– जो कि सबसे उत्तम दशा होगी। परिस्थितियों के कारण आपको खुशियां प्राप्त होने में कठिनाई आ सकती है। आपको अपनी माता केस्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए– जैसाकि यह अन्तर्दशा माता के लिए संकटकरी हो सकती है। आपकोअपने परिवार के बड़ों या पारिवारिक देवता का शाप लग सकता है। आपका शरीर कमजोर हो सकता है और आपको अपने स्वास्थ्य में सुधार करने में बहुत परेशानी हो सकती है। डॉक्टर रोग का पता लगाने में असफल हो सकते हैं। अन्ततः आपको पता चल सकता है कि कोई अदृश्य ताकत आपके शरीर के अन्दर है। आपको सरकारी अधिकारी के क्रोध का सामना करना पड़ सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (18:12:1973 से 05:03:1974)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में जीवन के अति कटु अनुभवों का अहसास इस दशा में धीरे–धीरे बदल जायेगा। आपमें एक ऐसा अहसास विकसित होगा, कि आपके आस–पास की हर चीज वास्तविक रूप से आपके अनुकूल हो रही है। हालाँकि आपको पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष के दौरान बहुत सावधान रहना चाहिए। आपको इन दिनों में लम्बी यात्रायें नहीं करना चाहिए– जैसाकि कुछ दुर्घटनायें हो सकती हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (05:03:1974 से 08:04:1974)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान अनिश्चितता की स्थिति बनी रहेगी। एक के बाद एक समस्यायें पैदा हो सकती हैं। परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। परिवार में

वैवाहिक संबंध टूट सकते हैं। सम्पत्ति के बंटवारे में विवाद हो सकता है, आप तीर्थयात्रा पर जायेंगे और बाहरी लोगों से आपका झगड़ा हो सकता है। जीवनसाथी और संतान आपके लिए समस्यायें पैदा कर सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (08:04:1974 से 13:07:1974)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके प्रेमपूर्ण जीवन में उतार–चढ़ाव आ सकते हैं। आप और आपके जीवनसाथी के बीच परस्पर प्रेम एक समय पर शिखर पर होगा और थोड़े ही समय में वह धरातल पर आ सकता है। आप दोनों को अतिरिक्त वैवाहिक संबंध बनाने के अवसर मिलेंगे, जिससे आप दोनों के बीच प्रायः कटुता आसकती है। इस दशा के दौरान संतानों को कष्ट हो सकता है। रक्त संबंधी रोग हो सकते हैं। आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (13:07:1974 से 11:08:1974)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत खराब दशा हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य गंभीर हो सकता है। आपके अपने पिता के इलाज में भारी धन व्यय करना पड़ सकता है। साथ ही आपकी माता कोलकवा हो सकता है। आपको अपने रोजगार या व्यापार से दूर होने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (11:08:1974 से 28:09:1974)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक सामान्य दशा होगी। बहुत अधिक गतिविधियां नहीं होंगी। हालाँकि, आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। आपकी आय भी कुछ हद तक बेहतर होगी। आप समय–समय पर मौज मस्ती करेंगे और तीर्थयात्रा पर जायेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (28:09:1974 से 01:11:1974)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको अपने शरीर के सुरक्षा की अधिक देखभाल करनी चाहिए। प्रायः आपको छोटी दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है। ये दुर्घटनायें सिर्फ वाहन से ही नहीं, बल्कि स्नानागार में फिसलने, सब्जी आदि काटते समय चाकू से कटने से भी हो सकती है। आपका अपने जीवनसाथी से प्रायः विवाद हो सकता है। आप मंगल से संबंधित वस्तुओं से उत्तम लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (01:11:1974 से 27:01:1975)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपने पिछली दशा में कामों की शुरूआत कर दी थी, लेकिन आपका उद्देश्य पूरानहीं हो सकता है और आपने जो कुछ निवेश किया था, उसका आपको नुकसान हो सकता है। अतः आपके लिए यह बेहतर होगा, कि आप अपनी पूंजी तैयार रखें, जिसकी किसी भी समय आवयकता पड़ सकती है। आपके जीवनसाथी से आपके प्रायः झगड़े हो सकते हैं। आप समय पर भोजन नहीं कर पायेंगे।यदि मंगल बली है, तो आप मंगल से संबंधित वस्तुओं से उत्तम लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (27:01:1975 से 14:04:1975)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपने पिछली कुछ दशाओं में जो खोया है, वह इस दशा में वापस मिल जायेगा। आपकी प्रगति धीरे–धीरे शुरू हो जायेगी। इस प्रत्यंतर्दशा के मध्य में आपको सारभूत आय होगी। आपके अपनी संतान और जीवनसाथी से आत्मीय संबंध होंगे।

बुध अर्न्तदशा (14:04:1975 से 13:09:1976)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः धन प्राप्त करने के लिए यह सबसे उत्तम दशा है। आपको निरन्तर धन प्राप्त होगा। हालांकि, मात्रा आपके परिवार की पृष्ठभूमि और आपको प्राप्त पद के स्तर के अनुसार होगी। आपको सुन्दर परिधान, आभूषण तथानये मवेशी प्राप्त होंगे। आप अपने सभी उपक्रमों में सफलता और विभिन्न तरीकों से लाभ की आशा करसकते हैं। आपके नाम और यश में वृद्धि होगी तथा आपको समाज में उचित स्थान प्राप्त होगा। नये प्राप्त ज्ञान और शिक्षा से आप संपन्नता प्राप्त करेंगे। यदि आपकी कुण्डली में बुध कमजोर भी है, तो भी इस अन्तर्दशा के दौरान आपको बहुत परेशानी नहीं होगी।

बुध प्रत्यंतर्दशा (14:04:1975 से 26:06:1975)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आप अपनी अधिकतर चिन्ताओं से मुक्त रहेंगे। धन का सहज आगमन होगा। आप भूमि, सम्पत्ति और आभूषण खरीदेंगे। आपको जीवनसाथी और संतान को सुख प्राप्त होगा। व्यापार में सम्पन्नता आएगी। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी। यदि अब तक कोई सम्पत्ति विवाद अनसुलझा है, तो इस दशा के दौरान उसका निर्णय आपके पक्ष में हो जायेगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (26:06:1975 से 26:07:1975)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आर्थिक मामलों के लिए यह दशा उत्तम होगी। लेकिन आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। आप बुखार, पीलिया और चर्म रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपकी संतानें शैक्षिणिक और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में अपनी दक्षता प्रदर्शित करेंगी। आपको पदोन्नति मिल सकती है। हालाँकि, शत्रु आपसे ईर्ष्या करेंगे और आपके लिए परेशानियां पैदा करने की कोशिश करेंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (26:07:1975 से 20:10:1975)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपना अधिकतर समय धार्मिक कार्यों में लगायेंगे। आप सरकारी अधिकारियों की मदद से अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करेंगे। आपको कृषि उत्पादों से लाभ हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (20:10:1975 से 15:11:1975)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप सरकार की मदद से धन अर्जित करेंगे। यदि सूर्य पर मंगल की दृष्टि है, तो आपको भूमि, भोजन और वस्त्र प्राप्त होंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (15:11:1975 से 28:12:1975)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि चंद्रमा केन्द्र या त्रिकोण या अपने भाव या उच्चस्थ भाव में स्थित है, तो आप एक राजा की तरह अति उत्तम परिणामों का आनन्द प्राप्त करेंगे। यदि चंद्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि है, तो आपका विवाह हो सकता है, आपको एक पुत्र और नये वस्त्रों तथा आभूषणों की प्राप्ति हो सकती है। आप अपने घर का निर्माण कर सकते हैं। आप शास्त्रों का अध्ययन करेंगे और अपने देश के दक्षिणी स्थानों की यात्रा करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (28:12:1975 से 28:01:1976)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपको मवेशियों और कृषि योग्य भूमि की प्राप्ति होगी। आपको अपनी खोई हुई स्थिति पुनः प्राप्त होगी। संबंधी आपसे स्नेह करेंगे और आपको धन का लाभ होगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (28:01:1976 से 14:04:1976)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको धन का लाभ होगा। आप धार्मिक स्थानों की यात्रा और धार्मिक कार्यों का निर्वहन करेंगे, आपको सरकार से समर्थन प्राप्त होगा। आपको इस दशा के आरम्भ में कुछ समस्यायें हो सकती हैं, जो बाद में समाप्त हो जायेंगी और आपको लाभ प्राप्त होंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (14:04:1976 से 23:06:1976)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी। आप धन संग्रह करेंगे, भूमि खरीदेंगे और घर पर शुभ समारोहों का आयोजन करेंगे। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको व्यापार में लाभ मिलेगा। अपने वर्तमान व्यापार का विस्तार करने के लिए यह एक अति उत्तम दशा है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (23:06:1976 से 13:09:1976)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में प्राप्त लाभों से आप इस दशा के दौरान और फायदा उठायेंगे। आपकी सारी गतिविधियों का आगे और विस्तार होगा और आपके धन कोष में बढ़ोत्तरी होगी। इस समय आप अपनी आर्थिक स्थिति को और सुदृढ़ बना सकते हैं। आय में वृद्धि को देखकर आपमें अधिक से अधिक आनन्द प्राप्त करने की प्रवृत्ति आयेगी। लेकिन आपने जो इस और पिछली दशा के दौरान अर्जित किया है, उसे आपको बचाकर रखना चाहिए– जैसाकि आगे आपको अति अशुभ दशा का सामना करना पड़ सकता है।

केतु अन्तर्दशा (13:09:1976 से 14:04:1977)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। आप मानसिक तनाव से गुजर सकते हैं। आपके प्रियजनों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आपको धन हानिहो सकती है। प्रतिकूल परिस्थितियों और वातावरण के साथ आपमें दूसरों को धोखा देने की प्रवृत्ति हो सकती है। पानी और जलीय चीजों से आपको खतरा हो सकता है। अतः आपको पानी से संबंधित गतिविधियों जैसे तैराकी, नदी, सागर या तालाब में स्नान आदि से दूर रहना चाहिए। द्रव रसायनों से

संबंधित किसी व्यापार में आपको संलग्न नहीं होना चाहिए। हालांकि, आपको इसमें लाभ हो सकता है, लेकिन विस्फोट होने या जहर फैलने का इसमें खतरा हो सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (13:09:1976 से 25:09:1976)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको जीवनसाथी और संतान से खुशियां प्राप्त होगी। आप भूमि खरीदेंगे। आप अपना समय धार्मिक कार्यों में लगायेंगे। आपकी मंत्र जाप और भगवान शिव की आराधना में रूचि होगी। आप अपने निवास स्थान से दक्षिण की दिशा में यात्रा करेंगे। आपके नाना को खतरा हो सकता है। आप बुखार, नेत्र विकार, लिवर की शिकायतों, खांसी, सर्दी और आंतों में दर्द से पीड़ित हो सकते हैं। आपका विवाह हो सकता है। आपको दवाओं और ज्योतिषशास्त्र से आय प्राप्त होगी।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (25:09:1976 से 31:10:1976)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका भाग्य उत्तम होगा। आपको खोई हुई सम्पत्ति प्राप्त होगी। आपको वाहन सुख प्राप्त होगा और आप पवित्र स्थानों की यात्रा करेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (31:10:1976 से 10:11:1976)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपमें भगवान शिव के प्रति आस्था विकसित होगी। राजनीति में आपको सफलता मिलेगी। सरकार से आपको समर्थन प्राप्त होगा। आप तीर्थयात्रा पर जायेंगे। पिता के साथ आपका झगड़ा हो सकता है। आपको जलीय उत्पादों से आय प्राप्त होगी। आप उदर और आंत के रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपकी माता को लकवा हो सकता है। आप ईर्ष्यालु लोगों की संगति कर सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (10:11:1976 से 28:11:1976)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप बेहतर पारिवारिक जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप जलीय उत्पादों से आय प्राप्त करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (28:11:1976 से 11:12:1976)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप परिवहन से आय प्राप्त करेंगे। आपकी माता और जीवनसाथी को विभिन्न रोगहो सकते हैं। आपकी रूचि रोजगार या व्यापार में परिवर्तन करने में हो सकती है। आपको मानसिक हताशा हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (11:12:1976 से 12:01:1977)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। भवन निर्माण, सीमेंट, संगमरमर और अन्य पत्थर की चीजों के व्यापार के लिए यहअति उत्तम दशा है। यदि आप पहले से इस क्षेत्र में व्यापार कर रहे हैं, तो आपको भारी लाभ होगा।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (12:01:1977 से 09:02:1977)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने गुरु को अप्रसन्न कर सकते हैं, जिससे आपको उनके शाप का भाजन बनना पड़ सकता है। अध्यापन के द्वारा आप अतिरिक्त आय प्राप्त करेंगे। आपको सर्दी, खांसी, दमा, हार्निया की शिकायत हो सकती है। आपके दार्शनिक और धार्मिक ज्ञान में बढ़ोत्तरी होगी। यद्यपि आपकी संतान का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, लेकिन उनके शैक्षिणिक कामों में विशिष्टता आपको खुशी प्रदान करेगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (09:02:1977 से 15:03:1977)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक विरोधपूर्ण दशा होगी। नौकर आपके लिए एक समस्या बन सकते हैं। आपके घर में चोरी हो सकती है। संबंधी समस्यायें पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। मित्र शत्रु बन सकते हैं। आपको व्यवसाय से अवसरीय लाभ मिलेंगे। आप सिरदर्द, जोड़ों में दर्द, पेचिश और भारी हताशाका सामना कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (15:03:1977 से 14:04:1977)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पूर्ण रूप से संशयग्रस्त और विभ्रमित दिमाग के कारण आप अशांत हो सकते हैं। आपको एक दास की तरह जीवन यापन करना पड़ सकता है। आप मिर्गी और पागलपन का शिकार हो सकते हैं। आप जुए में रत रह सकते हैं और धन गवाँ सकते हैं। आपको अपनी भूमि और अन्य सम्पत्ति बेचने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आपके प्रायः सभी से विवाद और बहस हो सकती है। आपको ग्रहों के क्रोध को शांत करने के लिए भगवान शिव और देवी पार्वती की आराधना करनी चाहिए।

शुक्र अन्तर्दशा (14:04:1977 से 13:12:1978)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। आप नावों या जहाजों से यात्रायें करेंगे और सोना, पानी, रत्नों, महिलाओं और कृषि से संबंधित सामानों के व्यापार में संलग्न रहेंगे। आप महिलाओं के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने में गहरी रूचि लेंगे। संतान, मित्र और मवेशी प्राप्त करने के लिए यह अनुकूल दशा है। यदि आपकी कुण्डली में शुक्र बहुत बली नहीं है, तो भी विषम परिणाम नहीं मिलेंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (14:04:1977 से 24:07:1977)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको प्रचुर धन प्राप्त होगा, लेकिन वह खर्च हो जायेगा और आप कर्जदार हो सकते हैं। आपके विवाहेत्तर संबंध हो सकते हैं और उसमें आप धन बर्बाद कर सकते हैं। आपमें ईश्वर के प्रति तीव्र आस्था होगी। आपको पीलिया और नाखूनों में समस्यायें हो सकती है। आपको किसी जानवर केकाटने का भय है। यदि आप दवा के व्यापारी या एक कलाकार हैं, तो आपको लाभ प्राप्त होंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (24:07:1977 से 24:08:1977)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के पहले अर्धभाग में आपको अति उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। आपको धन,भूमि और सम्पत्ति का अप्रत्याशित लाभ प्राप्त होगा। दशा के दूसरे अर्धभाग में आप उदर विकार, गले, नाक, आँख के रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं। धोखा धड़ी के द्वारा आपको धन हानि हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (24:08:1977 से 13:10:1977)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपकी आय व्यय से अधिक होगी। आपको महिलाओं से मदद मिलेगी। आपका विवाह तय हो जायेगा। वैवाहिक समारोहों में कुछ समस्यायें आ सकतीहैं। अतः आपको विवाह स्थगित कर देना चाहिए। यदि आप विवाहित हैं, तो आपको एक पुत्री प्राप्त हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (13:10:1977 से 18:11:1977)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप दवाओं, सोने, तांबे और आभूषणों का व्यापार करेंगे। हालाँकि, बेहतर परिणाम के लिए आपको अगली प्रत्यंतर्दशा तक प्रतीक्षा करनी होगी। आपको भूमि प्राप्त हो सकती है या आप उसको बेच कर उत्तम मात्रा में लाभ कमा सकते हैं। जिन स्त्रियों के साथ आपको अतिरिक्त लगाव होगा, उनके साथ आपको कुछ गलतफहमी हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (18:11:1977 से 17:02:1978)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपनी खोई हुई सम्पत्ति वापस पाने का अवसर मिलेगा। आपकी संतानों की पढ़ाई में सफलता आपको प्रसन्नता प्रदान करेगी। अब तक अनसुलझे सम्पत्ति विवाद इस दशा के दौरान सुलझ जायेंगे। आपके शरीर में चोट लग सकती है, आग से आपको भय हो सकता है। चोर भी आपको नुकसान पहुंचा सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (17:02:1978 से 09:05:1978)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपका विवाह हो सकता है या आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपको भूमि और संपत्ति की प्राप्ति होगी। आप अन्य भौतिक सम्पत्तियों में निवेश करेंगे। सरकार से आपको सम्मान मिलेगा। आप विभिन्न प्रकार के धार्मिक कार्य करेंगे। आप तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं और सन्तों का आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (09:05:1978 से 14:08:1978)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप समाज के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में रहेंगे। उनकी मदद से आप बहुतअधिक धन कमाने में सक्षम होंगे। हालाँकि, आप धन की प्राप्ति के लिए सभी दूसरे दर्जे के तरीके अपनायेंगे, जैसे घूस देना आदि। दशा के मध्य में आप अपने सभी कामों में सफल होंगे। दशा के अन्त में आपको भारी नुकसान और विभिन्न रोग हो सके हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (14:08:1978 से 08:11:1978)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी। आप सौन्दर्य प्रसाधनों, पेड़ों, फलों, जानवरों और परिवहन से आय प्राप्त कर सकते हैं। आपके शत्रु परास्त होंगे। भूमि के विक्रय से आपको धन प्राप्त होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (08:11:1978 से 13:12:1978)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक सामान्य दशा होगी। आपकी दैनिक गतिविधियों में प्रायः बदलाव होंगे। सुबह में आपको लगेगा कि समय आपके अनुकूल हो रहा है, और आप कई योजनायें बनायेंगे, लेकिन शामहोने तक आपके सारे सपने और योजनायें ध्वस्त हो सकती हैं। रोग आपसे आँख मिचौली खेल सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (13:12:1978 से 14:06:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। आप सरकारी अधिकारियों से समर्थन प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। आप अत्यधिक साहस और वीरता का प्रदर्शन करेंगे। समाज में आपको सम्मान मिलेगा। रोगों से मुक्ति मिलेगी। हालांकि, कभी–कभी आपको पित्त रस और वायु विकार हो सकते हैं। आपको दुर्घटना के कारण चोट लग सकती है। एक तरफ आपको उत्तम मात्रा में धन मिलेगा, लेकिन आप चोरी आदि के कारण उसको खो भी सकते हैं। आपकी कुण्डली में सूर्य अनुकूल नहीं है, आपको उष्ण रोग हो सकते हैं, शत्रुओं से परेशानी हो सकती है और आपको भारी दुख का सामना करना पड़ सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (13:12:1978 से 22:12:1978)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अधिकार और शक्ति प्राप्त लोगों से लाभ मिलेगा। हालाँकि, आपको भूमि की हानि हो सकती है और आपके खर्चे बहुत बढ़ सकते हैं। आपका सहोदरों के साथ सम्पत्ति मामलों में विवाद हो सकते हैं। आप निराशा के कारण घर छोड़ सकते हैं। आप बुखार से पीड़ित हो सकते हैं। दशाके अन्त में आपको कुछ हद तक उत्तम परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (22:12:1978 से 07:01:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका विवाह हो सकता है। आपके धन में बढ़ोत्तरी होगी, आप भूमि और भवन खरीदेंगे, ससुराल से आपको विरासत में भूमि मिल सकती है और आपकी पैतृक सम्पत्ति नष्ट हो सकती है।आप नेत्र या जलीय रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपके सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि व्यापार कर रहे हैं, तो आपको उसमें भारी लाभ होगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (07:01:1979 से 17:01:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। धन और संपत्ति के मामले में यह एक उत्तम दशा होगी। आपके सगे भाई–बहन आपका सहयोग करेंगे। आपको अपने जीवनसाथी और संतान से आराम एवं खुशियां प्राप्त होंगी। आपके पिता के साथ आपके संबंध आत्मीय नहीं हो सकते हैं। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आप तीर्थयात्राओं पर जायेंगे।

राहु प्रत्यंतर्दशा (17:01:1979 से 14:02:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशाओं में आपको जो लाभ प्राप्त हुए थे, वे इस दशा में लुप्त हो सकते हैं।आप अनैतिक कार्यों से धन कमा सकते हैं। आपका सरकारी अधिकारियों से विवाद हो सकता है। आपके कई शत्रु पैदा हो सकते हैं, जो आपको किसी भी समय फंसा सकते हैं। आपका विवाह हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (14:02:1979 से 10:03:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी, संतान की प्राप्ति होगी, सरकार और संतानों से आपको धन मिलेगा। आपको कान और फेफड़ों के रोग हो सकते हैं। आप अपने पद को खो सकते हैं। आप ईश्वर की आराधना और धार्मिक कार्य करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (10:03:1979 से 08:04:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। आप विभिन्न सौदों में भारी लाभ की आशा कर सकते हैं। आप भूमि और संपत्ति खरीद सकते हैं और विभिन्न तरीकों से आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। आप बाहर घूमने जा सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (08:04:1979 से 04:05:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा अति शुभ और अति अशुभ परिणामों का मिश्रण होगी। यदि प्रथम अर्द्धावस्था बहुत शुभ है, तो बाद की दूसरी अवस्था अशुभ हो सकती है या इसका उलटा हो सकता है। यदि अन्य अनुकूल युतियां भी विद्यमान हैं, तो आप एक राजा या उसके समान बन सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (04:05:1979 से 14:05:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा नहीं हो सकती है। विभिन्न कारणों से आपको भारी दुखों कासामना करना पड़ सकता है। आपको अपने पद और धन की हानि हो सकती है। आपमें आत्महत्या करने की प्रवृत्ति आ सकती है। आप विदेश यात्रा पर जा सकते हैं, जहाँ आपको दुखों का सामना करना पड़ सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (14:05:1979 से 14:06:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। दशा के प्रथम 10 दिनों के दौरान आप वाहन खरीद सकते हैं या वाहनों की मुफ्तमें सवारी करेंगे। अगले 10 दिनों के दौरान आप अपने परिवार के साथ आनन्द प्राप्त करेंगे, आपके पास अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन होगा। आखिरी 10 दिनों के दौरान आपको दुर्भाग्य का सामना करना पड़ सकता है। आप परिश्रम से अर्जित किया हुआ धन, नाम और सम्मान गवाँ सकते हैं। आपको गले के रोग, लकवा और शरीर में दर्द की शिकायत हो सकती है।

मंगल दशा (14:06:1979 से 14:06:1986)

वर्तमान समय में आपकी मंगल की महादशा चल रही है और मंगल आपकी कुण्डली में आठवें भाव में स्थित है। मंगल की दशा के दौरान, अनिश्चिततायें बनी रह सकती हैं। असंतोष और सम्पूर्ण तंत्र के नष्ट होने की भावना आपमें आ सकती है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। एक उत्तम बृहस्पति या शुक्र भी आपको मंगल के बुरे प्रभाव से उसकी दशा के दौरान राहत नहीं दिला सकता है। आपके आन्तरिक शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो सकती है। आपके घनिष्ठ मित्र भी आपके शत्रु बन सकते हैं। आपके साथ जन्में लोग भी आपके खिलाफ हो सकते हैं। आपको व्यापार में हानि हो सकती है। आपको रतिजन्य और दूसरे दीर्घकालिक रोग हो सकते हैं, जिनका उपचार मुश्किल हो सकता है।

वर्तमान समय में आपकी मंगल की महादशा चल रही है और मंगल आपकी कुण्डली में मेष राशि में स्थित है। मंगल की अपनी दशा के दौरान, मेष राशि में स्थित होने पर, जो कि उसकी अपनी राशि है, आपके घरपर कई मांगलिक समारोह आयोजित होंगे और आप दूसरों के द्वारा आयोजित ऐसे समारोहों में शामिल होंगे। आपको संतानों का सुख मिलेगा। आप बहुत आक्रामक होंगे। शत्रु आप पर हमला करने की ताक मेंरह सकते हैं। आग और बिजली से आपको सावधान रहना चाहिए। आपके गम्भीर रू॰ से दुर्घटनाग्रस्त होने की संभावना हो सकती है, जिससे आपके सिर में चोट लग सकती है। आप अपने प्रयासों और कठिनपरिश्रम से व्यापार या पेशे में सफलता प्राप्त करेंगे और जिम्मेदारी व अधिकार का एक पद प्राप्त करेंगे।

मंगल अन्तर्दशा (14:06:1979 से 10:11:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपकी कुण्डली में मंगल बली नहीं है, आप विभिन्न रोगों और रक्त की अशुद्धि से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको किसी हथियार से चोट लग सकती है। बहुधा आपका अपने सगे भाई–बहनों और संबंधियों के साथ विवाद हो सकता है। आप पराई स्त्रियों में रूचि ले सकते हैं। इस दशा के दौरान, आपका अपने भाइयों से अलगाव हो सकता है। आपका शत्रुओं के साथ झगड़ा हो सकता है। आप आपराधिक गतिविधियों में पड़ सकते हैं और भूमि एवं सम्पत्ति की हानि हो सकती है। आप प्रायः चोरों औरसरकारी अधिकारियों के कारण मुश्किलों का सामना कर सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (14:06:1979 से 22:06:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि मंगल किसी शुभ ग्रह के साथ उत्तम स्थिति में है, तो आपको सरकार में एकऊँचा प्रशासनिक या राजनीतिक पद प्राप्त होगा। आपको भूमि और विदेशी स्रोतों से धन का लाभ, सरकार से पहचान आदि की प्राप्ति होगी। इस दशा के अन्त के कुछ दिन खराब हो सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (22:06:1979 से 15:07:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका धर्म की तरफ अधिक झुकाव होगा। आपको विदेशी स्रोतों से धन प्राप्त हो सकता है। आपको संतानों, संभवतः एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपको धन का लाभ होगा।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (15:07:1979 से 04:08:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपके धन में वृद्धि होगी और सभी सौदों

से लाभ होगा। आपको सम्पत्ति की प्राप्ति, सरकार से उत्तम सम्मान और समर्थन तथा जीवनसाथी और संतान से खुशियां प्राप्त होंगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (04:08:1979 से 27:08:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सम्मान, धन, संतान की प्राप्ति और सरकार का समर्थन मिलेगा। यदि आपनौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति प्राप्त होगी।

बुध प्रत्यंतर्दशा (27:08:1979 से 17:09:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक औसत दशा होगी। आप भूमि खरीदेंगे, भवनों का निर्माण करेंगे और औद्योगिक प्रतिष्ठानों की स्थापना करेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो अचानक आप भारी आय वाले किसी अति उत्तम क्षेत्र के एक ऊँचे पद को प्राप्त करेंगे। दूसरे मामलों में आप एक सामान्य और शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। आपको वाहनों से यात्रा करते समय सावधान रहना चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (17:09:1979 से 26:09:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपने पिछली दशा में जो कुछ भी अर्जित किया था, इस दशा में वह व्यय हो सकता है। आप गले के रोगों, बुखार, वृषणों में सूजन से ग्रसित हो सकते हैं। आपके अपने जीवनसाथी और संतान के साथ प्रायः झगड़े हो सकते हैं। इतनी कलह पर भी संतुष्ट ना होकर आप अपने माता–पिताऔर मित्रों से भी झगड़ा कर सकते हैं और उन्हें अपना शत्रु बना सकते हैं। अतः आपको इस प्रत्यंतर्दशा के दौरान ऐसी गतिविधियों और कामों से दूर रहना चाहिए, जिनसे आपका गुस्सा बढ़ता हो या आपको क्रोध आता होगा।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (26:09:1979 से 21:10:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। धन संबंधी मामलों के लिए यह दशा उत्तम होगी। अपने जीवनसाथी के साथ आपके संबंध आत्मीय नहीं हो सकते हैं। संतान से आपको खुशी प्राप्त होगी। चूंकि, आप किसी प्रकार की सामाजिक सेवा में या किसी ऐसे शौक में संलग्न होंगे, जो सामान्यतः आपके जीवनसाथी से संबंधित नहीं हो सकते हैं, अतः आपके जीवनसाथी के साथ आपका झगड़ा हो सकता है। आप रतिजन्य और जलीय रोगों से ग्रसित हो सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (21:10:1979 से 28:10:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। शत्रु आपको हानि पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं। यदि आप राजनीति से जुड़े हैं और चुनाव लड़ना चाहते हैं, तो समय उत्तम ना होने के कारण आपके लिए ऐसा ना करना बेहतर होगा– यदि चुनाव इस दशा के दौरान होते हैं। यदि केवल औपचारिकता निभानी है, तो आप ऐसा कर सकते हैं। इसके पीछे कारण यह है कि मंगल और सूर्य दोनों सरकार का प्रतिनिधित्व करते हैं और दोनों नैसर्गिक अशुभ ग्रह हैं। यदि आप जीत भी जाते हैं, तो हो सकता है कि आपको वांछित पद ना मिले। आप मिर्गी, पीलिया और तेज बुखार से पीड़ित हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (28:10:1979 से 10:11:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपको सभी आर्थिक निवेश के मामलों को अपनाना चाहिए। यदि आप लोहे और तांबे से बनी वस्तुओं का व्यापार करेंगे, तो उसमें बहुत सफल होंगे। आपको जलीय पदार्थों का व्यापार नहीं करना चाहिए। आपका अपने जीवनसाथी के साथ प्रायः झगड़ा हो सकता है और मंगल–मंगल–बृहस्पति की दशा शुरू होने तक किसी प्रकार का समझौता नहीं हो सकता है।

राहु अर्न्तदशा (10:11:1979 से 28:11:1980)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा केदौरान, आपको हथियारों, शत्रुओं, चोरों और सरकारी अधिकारियों से खतरा हो सकता है। आपका अपने शत्रुओं के साथ अप्रत्याशित झगड़ा हो सकता है, जो आपको जीवन के हर क्षेत्र में नुकसान पहुँचाने की कोशिश कर सकते हैं। वे आपको विभिन्न आपराधिक गतिविधियों में फँसा सकते हैं। साथ ही पेट, नेत्र औरसिर के रोग भी हो सकते हैं। इस अन्तर्दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य बहुत अधिक खराब हो सकता है। यदि जन्मकुण्डली में राहु अनुकूल भी है, तो भी दशा के दौरान बहुत शुभ परिणाम नहीं मिल सकते हैं।आर्थिक क्षेत्र में सुधार होगा, लेकिन आपको अन्य विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके सगे भाई–बहन आपके कट्टर शत्रु बन सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (10:11:1979 से 06:01:1980)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस प्रत्यंतर्दशा की ये विशेषता है, कि यदि आपको इस प्रत्यंतर्दशा के आरम्भ में अनुकूल परिणाम प्राप्त होते हैं, तो आपके लिए अनुमान लगाना आसान हो जायेगा कि सुनहरा समय शुरू हो चुका है और आप अपनी गतिविधियों के क्षेत्र को स्थिर करने के लिए सारे भरसक प्रयास कर सकते हैं। हालाँकि, अन्तिम कुछ दिनों में आपको बहुत खराब परिणाम जैसे धन हानि, अपमान आदि मिल सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (06:01:1980 से 27:02:1980)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा मिली–जुली होगी। आपके नुकसान की भरपाई होगी, हालाँकि यह बहुतसार्थक नहीं होगी। आपको एक ऊँचा पद और अचानक गुप्त धन प्राप्त होगा। लेकिन आपको गतिविधियों की परवाह किये बिना विभिन्न क्षेत्रों का आनन्द प्राप्त होगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (27:02:1980 से 27:04:1980)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा आपके लिए बहुत खराब हो सकती है। आपने जो भी कमाया होगा, उसेआप जुए, सम्पत्ति के सौदों और मनोरंजन में व्यय कर सकते हैं। आपको धन का भारी अभाव हो सकता है और आप हर व्यक्ति से कुछ ऋण मांग सकते हैं, लेकिन आपको खाली हाथ लौटना पड़ सकताहै। अतः इस दशा के दौरान खर्च करते समय आपको बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। आपके घर परचोरी भी हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (27:04:1980 से 21:06:1980)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। मंगल और राहु अशुभ परिणाम नहीं दे सकते हैं, जैसाकि बुध उनकी देखभाल के लिए है। हालाँकि, आप पर अभियोग लग सकता है। आपमें आत्महत्या की प्रवृत्ति पैदा हो सकती है, आपको पद की हानि हो सकती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (21:06:1980 से 13:07:1980)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अवनति से उपर उठने में असक्षम हो सकते हैं और एकांत में जीवन बिता सकते हैं। आप आध्यात्म की तरफ झुक सकते हैं। मित्र आपसे घृणा कर सकते हैं। संबंधी आपका अपमानकर सकते हैं। आपके जीवनसाथी और संतान भी आपको आपकी अन्यायपूर्ण गतिविधियों के कारण कोस सकते हैं। हालाँकि, इस दशा के अन्त में आपको कुछ अनुकूल परिणाम मिल सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (13:07:1980 से 15:09:1980)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप महिलाओं के साथ बहुत मौज मस्ती करेंगे। आपके विवाह की संभावना है। आपको एक पुत्र प्राप्त हो सकता है। यदि शुक्र कमजोर है, तो आपका अपने जीवनसाथी से वियोग हो सकता है। आपके शत्रु आपको परेशान कर सकते हैं। आपको धन की हानि हो सकती है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (15:09:1980 से 04:10:1980)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको टायफाइड, आंतों में अल्सर और नेत्र विकार होने की संभावना है। इन रोगों पर आपका भारी धन व्यय हो सकता है। आपको अधिकार प्राप्त लोग धमका सकते हैं। आपको हथियारों से चोट लग सकती है। आपका विवाह हो सकता है। आपको सूर्य नमस्कार और सूर्य मंत्र का जाप करना चाहिए।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (04:10:1980 से 06:11:1980)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी गतिविधियों में प्रायः बदलाव हो सकते हैं। आपको सुख और दुख का अनुभव एक के बाद एक हो सकता है। माता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित कर सकता है। आपको मवेशियोंऔर कृषि की हानि हो सकती है। सरकारी अधिकारियों और चोरों के कारण आपको मानसिक तनाव हो सकता है। हथियारों और आग से आपको चोट लग सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (06:11:1980 से 28:11:1980)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत खराब दशा हो सकती है। यदि मंगल शुभ स्थिति में है, तो आप मंत्री बन सकते हैं या उसके समान ही कोई पद प्राप्त कर सकते हैं। हालाँकि आपके शत्रु पैदा हो सकते हैं और आपको हानि पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं। इस दशा के दौरान आपको खुली गाड़ी में यात्रा करने या घोड़े अथवा ऊँट की सवारी करने से बचना चाहिए।

गुरू अर्न्तदशा (28:11:1980 से 04:11:1981)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा मंगल की महादशा में सबसे उत्तम होगी। आपमें स्वयं बलिष्ठ होने का अहसास होगा। आपका दिमाग शांत होगा। सभी प्रक्रियाएं सहज होंगी, कहीं किसी तरह की कोई बाधा या परेशानी नहीं होगी। आप हमेशा व्यस्त रहेंगे। आपको ज्ञानी और साधुजनों के साथ जुड़ने के अवसर मिलेंगे। आप तीर्थयात्रायें करेंगे और उत्तम कार्यों को करेंगे। विभिन्न स्रोतों से आपको आय प्राप्त होगी। सरकारी अधिकारियों के साथ आपके उत्तम संबंध बनेंगे और आप उनसे लाभ प्राप्त करेंगे। आपको जीवनसाथी, संतानों और मित्रों की संगति का आनन्द प्राप्त होगा। आपको कान और कफ की समस्यायें हो सकती हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (28:11:1980 से 12:01:1981)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि आपकी कुण्डली में बृहस्पति नीचस्थ या किसी अशुभ भाव में नहीं है, तो यह दशा बहुत उत्तम होगी। आपको भूमि और भवन या कुछ सारभूत सम्पत्ति प्राप्त होंगी। आपको अपनी आँखोंका उचित ध्यान रखना चाहिए। आपको तीव्र सिर दर्द और सारे शरीर में खुजली की शिकायत हो सकती है। आपका रूझान आध्यात्मिक ज्ञान की तरफ होगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (12:01:1981 से 07:03:1981)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके जीवनसाथी और संतान आपको नापसन्द कर सकते हैं। आप जुए में धन व्यय कर सकते हैं। आप कई गलत काम करने के लिए प्रेरित हो सकते हैं, चाहे आप भले ही ऐसा ना करना चाहें। यदि बृहस्पति और शनि आपकी कुण्डली में प्रतिकूल रूप से स्थित हैं, तो आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। यदि आप लोहे और भूमि का व्यापार कर रहें हैं, तो आपको उचित लाभ प्राप्त हो सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (07:03:1981 से 25:04:1981)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आय काफी अधिक हो सकती है, जिसे आप भिक्षा वितरित करने में व्यय कर देंगे। आप गरीबों की देखभाल करेंगे। आपको विदेशियों या वहाँ रहने वाले मित्रों से उपहार प्राप्त होंगे। लम्बी यात्रायें आपके लिए लाभकारी होंगी।

केतु प्रत्यंतर्दशा (25:04:1981 से 15:05:1981)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा का अधिकतर समय आप धार्मिक कार्यों को करने और तीर्थस्थानों की यात्रायें करने में व्यतीत करेंगे। घर पर शांति प्राप्त ना हो पाने के कारण आप उसकी तलाश में सुदूर स्थानों की यात्रा कर सकते हैं। आपके परिवार के लोगों को सबसे अधिक कष्ट हो सकता है। इस दशा के अन्तिम दिनों में आपको धन का लाभ हो सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (15:05:1981 से 10:07:1981)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपको पूर्ण आनन्द मिलेगा। अधिकतर मामलों मेंइस दशा को अन्य दशाओं से बहुत बेहतर पाया गया है, चाहे व्यक्ति का जन्म भले ही एक साधारण परिवार में हुआ हो। आपको अप्रत्याशित स्रोतों से धन प्राप्त होगा। हालाँकि, वह धन पूरी तरह से आपका

नहीं हो सकता है, फिर भी आप उसका उपयाग अपने उद्देश्यों के लिए फिलहाल करने में सक्षम होंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (10:07:1981 से 27:07:1981)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि आप राजनीति से जुड़े हैं, तो यह दशा आपके लिए सबसे उत्तम है। यदि इसदशा के दौरान कोई चुनाव होता है, तो आपको अवश्य ही सफलता मिलेगी, आपको छिपे और अदृश्य स्रोतों से धन प्राप्त होने की संभावना है। हालाँकि, आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। आप बुखार, सिर दर्द और उदर विकार से ग्रस्त हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (27:07:1981 से 25:08:1981)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने मित्रों और संबंधियों से ही नहीं, बल्कि शत्रुओं से भी धन की प्राप्ति होगी। आप भूमि और भवन या कुछ अन्य कीमती सम्पत्तियों को प्राप्त करेंगे। आपका वैवाहिक जीवन सुखद नहीं हो सकता है और आप प्रायः दूसरी औरतों की संगति कर सकते हैं। आपको अपने स्वास्थ्य काउचित ध्यान रखना चाहिए। आपको सिरदर्द, गुदा के आस–पास खुजली आदि की समस्या हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (25:08:1981 से 14:09:1981)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपके जीवन में प्रायः बदलाव हो सकते हैं। एक समय आपको चरम आनन्द प्राप्त होगा, लेकिन दूसरे समय आप दुख और संशय से ग्रस्त हो सकते हैं। यह कुछइस तरह की दशा होगी, जैसे आप किसी ऊँचे पहाड़ के शिखर पर पहुंच कर वापस वहाँ से नीचे गिरपड़े हों, लेकिन नीचे बिछे जाल पर गिरने के कारण बच गयें हों। यदि आप सोने या तांबें के बर्तनों याआभूषणों का व्यापार करेंगे तो आपको उत्तम लाभ होगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (14:09:1981 से 04:11:1981)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है। दो नैसर्गिक अशुभ ग्रह आपके भाग्य की देखभाल कर रहे हैं, जबकि बृहस्पति उनको नियंत्रित करने के लिए है। आपका झुकाव जुए और मदिरापानकी तरफ हो सकता है और आप अपना सारा धन इसमें खर्च कर सकते हैं। आपका दिमाग अशांत हो सकता है।

शनि अन्तर्दशा (04:11:1981 से 13:12:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपकी जीवनसाथी और संतानें आपको पसन्द नहीं कर सकती हैं। आपका अपने मित्रों और संबंधियों के साथ झगड़ा हो सकता है। आपकी जीवनसाथी और संतानें पीड़ित हो सकती हैं। आप जुए में धन बर्बाद कर सकते हैं, जिससे आप दुख और निर्धनता की कगार पर पहुँच सकते हैं। आप कई गलत काम करने के लिए प्रेरित हो सकते हैं, यदि आप ऐसा नहीं करना चाहेंगे, तो भी। आपको भयंकर रोग हो सकते हैं। अपने वर्तमान निवास स्थान को छोड़ने के लिए आपको बाध्य होना पड़ सकता है। यदि जन्मकुण्डली में शनि बली भी है, तो भी इस दशा के दौरान बहुत शुभ परिणाम नहीं मिल सकते हैं।

शनि प्रत्यंतर्दशा (04:11:1981 से 07:01:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी विदेश यात्रा पर जाने में रूचि होगी, जहाँ पर आपको विभिन्न बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। उस संबंध में आप जो धन खर्च करेंगे, उसकी भरपाई नहीं हो सकती है। अतः आपको विदेश में तैनाती या रोजगार या व्यापार का कोई प्रस्ताव स्वीकार नहीं करना चाहिए। आपको बुखार, हार्निया और नेत्र विकार हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (07:01:1982 से 05:03:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। शनि इस दशा के दौरान प्रथम श्रेणी का लाभकारी ग्रह है। यदि शनि उत्तम स्थितिमें है, तो आप सारी बाधाओं पर विजय प्राप्त करते हुए अपने क्षेत्र में शिखर पर पहुंचेंगे। आप भारी मात्रा में धन संग्रह करेंगे। आप अपनी आय का एक हिस्सा गरीबों और जरूरतमंदों को तथा धार्मिक स्थानोंपर दान करेंगे। आप अपने जीवनसाथी और संतान को खुश करने की कोशिश करेंगे, लेकिन आप उसमें असफल हो सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (05:03:1982 से 29:03:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपने पिछली दशा के दौरान जो सुख प्राप्त किये थे, वे इस दशा में छिन सकते हैं। समय आपके लिए इतना खराब हो सकता है कि आप मुस्कुराना भूल सकते हैं। आपके मित्र आपके शत्रु बन सकते हैं। आपके संबंधी आपके लिए परेशानी पैदा करने की भूरपूर कोशिश कर सकते हैं। आप सम्पत्ति विवाद में फंस सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (29:03:1982 से 04:06:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। आप कृत्रिम आभूषणों और फैशन के परिधानों से आय प्राप्त कर सकते हैं। भूमि और संपत्ति में निवेश करने के लिए यह उत्तम दशा है। आपको रतिजन्य रोग होसकते हैं। चूंकि आप पराई स्त्रियों के साथ मौज–मस्ती और आनन्द प्राप्त कर सकते हैं, अतः आपका जीवनसाथी आपसे घृणा कर सकता है। संतानें भी आपके खिलाफ हो सकती हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (04:06:1982 से 24:06:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि मंगल बहुत बली नहीं है, तो आपको बहुत खराब दशा का सामना करना पड़ सकता है। आपके पिता आपके खिलाफ हो सकते हैं और आप अपने पिता के खिलाफ काम कर सकते हैं।एक नजदीकी संबंधी आपके और आपके पिता के बीच में दूरी पैदा करने की कोशिश कर सकता है। आपकी घरेलू वस्तुयें चोरी हो सकती हैं। यदि आपके पास वाहन है, तो दुर्घटना या आगजनी के कारण उसको भारी क्षति पहुंच सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (24:06:1982 से 28:07:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप तनाव ग्रस्त हो सकते हैं। आप दुखों से छुटकारा पाने की कोशिश करेंगे, लेकिन भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है। दुख सहन कर पाने में असक्षम होने पर आप नशे के आदी

हो सकते हैं। दुर्घटना में आपको चोट लग सकती है। आपको कोई भी खुला वाहन नहीं चलाना चाहिए और यदि संभव हो तो बन्द वाहन भी नहीं चलाना चाहिए।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (28:07:1982 से 21:08:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। चूंकि मंगल में शनि को इस दशा के दौरान पछाड़ने की क्षमता है, अतः आप पर्याप्त धन कमायेंगे और अपने पुराने ऋणों का भुगतान करेंगे। हालाँकि, इस दशा के दौरान मंगल वक्री होने पर शनि कुछ समस्यायें पैदा करने की कोशिश करेगा। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि आप व्यापारी हैं, तो आपको व्यापार में लाभ होगा। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (21:08:1982 से 20:10:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह प्रत्यंतर्दशा एक मास 29 दिन 20 घंटे और 24 मिनट की होती है। पिछले कुछदिनों से आप जो थोड़ी राहत महसूस कर रहे थे, वह समाप्त हो सकती है, आप फिर परेशानियों में घिर सकते हैं। आप ल्यूकोडर्मा, सोरायसिस और विषाक्तता से ग्रसित हो सकते हैं। आपके दिमाग में द्वन्द हो सकता है। आपके काम ठीक तरीके से पूर्ण नहीं हो सकते हैं। आपको धन की हानि हो सकती है, आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (20:10:1982 से 13:12:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। एक लम्बे अन्तराल के बाद आपको थोड़ी राहत महसूस होगी। आप विभिन्न अप्रत्याशित स्रोतों से धन प्राप्त कर सकते हैं और कई धार्मिक कार्य करेंगे। आपको दूसरों के साथ किये गये अपने गलत कार्यों का पछतावा होगा और आप उनसे क्षमा मांगने की कोशिश करेंगे। इस दशा के दौरान आपका विवाह संभव है या आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है।

बुध अर्न्तदशा (13:12:1982 से 10:12:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा केदौरान, आप शत्रुओं के कारण मुश्किलों का सामना कर सकते हैं। परिस्थितियां आपको अपने अधीनस्थों के साथ झगड़ा करने को बाध्य कर सकती है। गलत बातें बोलने के कारण आपको अशुभ घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको चोट लग सकती है या आप आग से जल सकते हैं। आपको अपने जीवनसाथी और संतानों से अलग होना पड़ सकता है। आप खुशियों से वंचित हो सकते हैं। आपको मवेशियों और धन की हानि हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (13:12:1982 से 03:02:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा कुछ हद तक उत्तम हो सकती है। ज्योतिषियों, लेखाकारों और व्यापारियोंके लिए यह समय उत्तम होगा। यदि आपका संबंध इनमें से किसी से है, तो आप जो भी कार्य करेंगे, उसमें सफलता मिलेगी। हालाँकि आप ईश्वर को भूल सकते हैं– जैसाकि आप कुछ हद तक अपने पैरों पर खड़े होने में सक्षम होंगे। आपकी किसी एक बहन का विवाह होगा और एक पुत्र का जन्म हो सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (03:02:1983 से 24:02:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको एक वेदनापूर्ण और दुखी जीवन जीना पड़ सकता है। आपके प्रेम प्रसंग और शादी में कुछ बाधायें आ सकती हैं। आपके किसी एक सगे भाई या बहन को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आप दुष्ट प्रकृति और गैर मैत्रीपूर्ण लोगों से घिरे हो सकते हैं। आप जुए में संलग्न हो सकते हैं,जिससे आपको धन हानि हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (24:02:1983 से 25:04:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। मित्र और संबंधी आपकी सहायता करेंगे। आपको स्वादिष्ट भोजन का आनन्द प्राप्तहोगा और आप आभूषण प्राप्त करेंगे। आप दैवीय मार्ग और एक वास्तविक उपदेशक की खोज करेंगे। यदि ये तीनों ग्रह बली नहीं हैं, या कमजोर हैं, तो भी इस प्रत्यंतर दशा के दौरान आपको अधिक विषम परिणाम प्राप्त नहीं हो सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (25:04:1983 से 13:05:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप ज्ञान और धन प्राप्त करेंगे। ज्ञानी लोगों के साथ आपका मेल–मिलाप होगा। शांति की खोज में आप विभिन्न तीर्थस्थानों की यात्रा करेंगे। आपको सोना, उत्तम घर, स्वादिष्ट भोजन औरसरकार से आर्थिक लाभ प्राप्त होंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (13:05:1983 से 12:06:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। आप लेखन, प्रकाशन, और बौद्धिक व्याख्यान देकर आय प्राप्त करेंगे। आपकी आय में थोड़ी वृद्धि होगी। आप दूसरों के मनोरंजन में अधिक व्यय करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (12:06:1983 से 03:07:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। बौद्धिक कार्यों में आपको गंभीर आघात लग सकता है। चूंकि दशा अनुकूल नहीं हैं,अतः जनता आपके बौद्धिक तर्कों और लेखों की वैधता को चुनौती दे सकती है। आपको अपने बिना किसी दोष के ही कलंकित और पदावनत होना पड़ सकता है। आग और बिजली से काम करते समय आपको सावधान रहना चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (03:07:1983 से 27:08:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको अपने संचित धन की हानि हो सकती है। आपका पद और सम्मान दांव पर लग सकता है। जहर और गैस के कारण आपको रोग हो सकते हैं। आप सिर दर्द, गुर्दे या मूत्र संबंधी रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आपको विस्तृत भूमि और भवन प्राप्त होंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति प्राप्त होगी।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (27:08:1983 से 14:10:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि आप गंभीर रोगों से ग्रस्त हैं, तो उनसे राहत की आशा कर सकते हैं। आपको अपने उत्तम कार्य के लिए अपने व्यवसाय और समाज दोनों में प्रशंसा मिलेगी। आप शांतिपूर्ण घरेलूजीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आपके रोजगार और व्यापार में प्रगति होगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (14:10:1983 से 10:12:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको धन हानि हो सकती है और आपमें उचित बोध क्षमता का अभाव हो सकताहै। आपको अपनी हर योजना में असफलता, भारी कष्ट, निराशा का सामना करना पड़ सकता है, आप दिखने में दुर्बल लग सकते हैं और लकवा के शिकार हो सकते हैं। शत्रु आपको खुली चुनौती दे सकते हैं और आपको कष्ट पहुंचा सकते हैं।

केतु अर्न्तदशा (10:12:1983 से 08:05:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको विद्युत या अग्नि या हथियारों से कटने का खतरा हो सकता है। आप नौकरी में स्थानान्तरण या व्यापारिक यात्रा या तलाक या जीवनसाथी की मृत्यु के कारण जीवनसाथी से अलग हो सकते हैं। आपको अपने जीवनसाथी को इस दशा के दौरान उसके माता–पिता के घर या किसी लम्बी यात्रा पर भेजने की सलाह दी जाती है। इसके पीछे तर्क यह है कि जीवनसाथी से अलग होना आपकी नियति में है और आप उपर दी गई सलाह मानकर प्रभाव को मंद कर सकते हैं, अन्यथा तलाक या मृत्यु के रूप में यह गंभीर परिणाम के रूप में सामने आ सकता है। आपकी आय में बाधा आ सकती है और धनकी हानि हो सकती है। आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। यदि केतु बली है, तो समय–समय पर आपको कुछ शुभ परिणाम मिल सकते हैं, लेकिन इस अन्तर्दशा के पूर्ण होने से पहले जो भी आपने प्राप्त किया है, वह सब समाप्त हो जायेगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (10:12:1983 से 19:12:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आय में वृद्धि होगी। लेकिन साथ ही व्यय आपके नियंत्रण से बाहर हो सकते हैं। आपको अपने वर्तमान निवास स्थान से दूर रहना पड़ सकता है। शत्रु आपको नीचा दिखाने के लिए अवसरों की तलाश कर सकते हैं। आपके हाथ–पैरों में जलन हो सकती है, आप बुखार और दर्द से पीड़ित हो सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (19:12:1983 से 13:01:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आर्थिक रूप से यह दशा उत्तम होगी। आपको धन का अभाव महसूस नहीं होगा।लेकिन यह आवश्यक नहीं है, कि जो धन आप खर्च कर रहे हैं, वह आपका हो, इस बात की परवाहकिये बिना कि धन किसी और का है, आप विलासितपूर्ण ढंग से खर्च कर सकते हैं। इस दशा के कुछ अन्तिम दिनों में आप बेचैनीपूर्ण स्थिति से घिर सकते हैं। आप शारीरिक सुखों की तरफ अधिक झुक सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (13:01:1984 से 20:01:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको खुशियां और सुख प्राप्त होंगे। आप जुए, सट्टे और हेरा–फेरी से इस दशा के आरम्भ में धन प्राप्त करेंगे। दशा के मध्य में हानि, दुख और व्यय में वृद्धि हो सकती है। दशा के अन्त में आप गाल, दांत, कान और आँख के रोगों या मूत्र संबंधित परेशानियों से ग्रस्त हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (20:01:1984 से 02:02:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके प्रियजन निराश हो सकते हैं। आपको धन की हानि हो सकती है। आपको जल और जलीय पदार्थों से खतरा हो सकता है। अतः आपको पानी से जुड़ी सारी गतिविधियों जैसे तैराकी,नदी, सागर या तालाब में स्नान आदि से दूर रहना चाहिए। आप अपने वर्तमान निवास स्थान से दक्षिण की तरफ यात्रा कर सकते हैं। आपके नाना को खतरा हो सकता है। आप बुखार, कफ और सर्दी से ग्रसित हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (02:02:1984 से 10:02:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम मंगल की स्थिति पर निर्भर करेंगे। एक उत्तम मंगल अति उत्तम परिणाम देगा। केतु परिणाम देने में विवश हो सकता है। हालाँकि, मंगल के प्रतिनिधित्व वाली वस्तुओंऔर संबंधियों की हानि हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (10:02:1984 से 04:03:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत खराब दशा हो सकती है। आपको एक के बाद एक विपदाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपकी हर बात और काम से उथल–पुथल हो सकती है। अतः आपको अपनेवर्तमान निवास स्थान से दूर जाकर किसी एकांत जगह पर रहना चाहिए।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (04:03:1984 से 24:03:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। एक लम्बे अन्तराल के बाद आपको भारी राहत मिलेगी। आपको ऐसा अहसास होगा कि आप भारी तुफान से गुजर कर नाव से एक कष्टकारी यात्रा करके समुद्र के किनारे पर पहुंच गयेहैं। आप अपने ऋणों को उतारने में सक्षम होंगे। आपको धन की प्राप्ति बिल्कुल अप्रत्यशित तरीके से होगी। रोग से आपको मुक्ति मिलेगी। आनन्ददायक मिलन समारोह होंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (24:03:1984 से 16:04:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके अर्जित धन की हानि हो सकती है। आपको अपनी सम्पत्तियों को एक के बाद एक बेचना पड़ सकता है। आपको बुरे सपने सता सकते हैं। आपको नींद में चलने की बीमारी हो सकती है। रक्त विकार से उत्पन्न रोगों और गठिया से आप ग्रस्त हो सकते हैं। आपको जुए और नशे कीलत लग सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (16:04:1984 से 08:05:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। बुध एक बिचौलिये की तरह काम करेगा। अतः मंगल और केतु के द्वारा उत्पन्न कीगई परेशानियों को बुध हल करने में मदद करेगा। मंगल धन प्रदान करेगा, और केतु उसका नाश करनेकी कोशिश कर सकता है। बुध हस्तक्षेत करके धन का बंटवारा कर देगा और अपना कमीशन ले लेगा। दूसरे शब्दों में, आपको बुखार, बवासीर और सीने तथा पैरों में दर्द की शिकायत हो सकती है।

शुक्र अन्तर्दशा (08:05:1984 से 08:07:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपके दिमाग में बिना विचारे काम करने का एक प्रकार का डर घर कर सकता है। आप विदेशयात्रा पर जा सकते हैं। यह दशा आपके परिवार के लिए उत्तम नहीं हो सकती है। हालांकि, यदि कोई मुकदमा चल रहा है, तो उसका निर्णय अन्तर्दशा के दौरान होने पर आपको उसमें सफलता मिलेगी। आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए– विशेषकर बांयी आँख का। आपको धन और सम्पत्ति की चोरी का खतरा हो सकता है। हालांकि, आपको जीवनसाथी से पूर्ण सुख मिलेगा, धन का लाभ होगा और पदोन्नति होगी।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (08:05:1984 से 18:07:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक आनन्ददायक दशा होगी। आपको सुन्दर लड़कियों का साथ प्राप्त होगा। आप नाम, यश और दवाओं तथा सौन्दर्य प्रसाधन की वस्तुओं से धन अर्जित करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (18:07:1984 से 08:08:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके वर्तमान व्यापार का विस्तार हो सकता है या आप रोजगार में बदलाव कर सकते हैं। आपके परिवार में वैवाहिक समारोह होंगे। आप आनन्द भ्रमण पर जायेंगे। सट्टों से आपको लाभहोगा। विशिष्ट और सरकारी अधिकारियों से आपका विवाद हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (08:08:1984 से 13:09:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। पिछली दशा में आपको प्राप्त सफलता आपको अपने पद या स्थिति को स्थायित्व देने में मदद करेगी। यद्यपि आपकी आय अधिक होगी, आपका व्यय भी बढ़ सकता है। आप पेचिश, पीलिया या मूत्र संबंधी समस्या से ग्रस्त हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (13:09:1984 से 08:10:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। औरतों के साथ आपका जोरदार विवाद हो सकता है और उनसे अपमानित होना पड़ सकता है। जीवनसाथी आप पर विशिष्टता कायम कर सकती हैं और आपको दबा सकती हैं। आपकी अपने वरिष्ठों के साथ शत्रुता हो सकती है। आपको धन का लाभ होगा और आप भूमि खरीदेंगे तथा भवनोंका निर्माण करेंगे। आपका विवाह हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (08:10:1984 से 11:12:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप किसी लम्बी यात्रा पर जाकर वापस आ सकते हैं। साझे के व्यापार में आपकोअसफलता मिल सकती है। आपको धन हानि हो सकती है। ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में आप भारी धनव्यय कर सकते हैं। आपको ल्यूकोडर्मा या कोई अन्य चर्म रोग हो सकता है। पहली जीवनसाथी के जीवित रहते हुए भी आपका दूसरा विवाह हो सकता है या किसी दूसरी स्त्री के साथ आपके संबंध हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (11:12:1984 से 05:02:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने पद और अधिकार के कारण विभिन्न प्रकार के आनन्द प्राप्त होंगे। आपको विवाह हो सकता है और आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है। आप परोपकारी काम करेंगे और धार्मिक कृत्यों को निभायेंगे। आप भूमि खरीदेंगे या भवनों का निर्माण करेंगे। आपको अपने जीवनसाथी, संतान और माता–पिता का पूरा सहयोग मिलेगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (05:02:1985 से 14:04:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। समाज और सरकार में ऊँचे स्थानों पर बैठे लोगों से आपको समर्थन प्राप्त होगा। आप उत्तम और ज्ञानी बड़ी औरतों के सम्पर्क में रहेंगे। विभिन्न स्रोतों से आपको आय प्राप्त होगी। निवेश के लिए यह एक उत्तम समय है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (14:04:1985 से 13:06:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको पेड़ों, फलों और मवेशियों से लाभ होगा। शेयर और भूमि में निवेश करके आप उत्तम लाभ प्राप्त करेंगे। आपको अपने जीवनसाथी, संतान और संबंधियों का आनन्ददायक साथ प्राप्त होगा। वायु और पित्त के कारण आपको रोग हो सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (13:06:1985 से 08:07:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको भारी दुखों और कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। आपके वातावरण में अचानक बदलाव आ सकता है। आप अपना निवास स्थान बदल सकते हैं। आपको परित्यक्त और वर्जितस्त्री के साथ आनन्द प्राप्त करने पर बाध्य होना पड़ सकता है। शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयासकर सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (08:07:1985 से 13:11:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। राजनीति से संबंध रखने वाले लोगों के लिए यह अन्तर्दशा सबसे उत्तम है। यदि आप इस अन्तर्दशा के दौरान चुनाव लड़ते हैं, तो आपको सफलता अवश्य मिलेगी। हालांकि, विरोधियों के साथ झगड़ा होने के कारण आपको चोट लगने की संभावना है। आप दूसरे की जमीन और सम्पत्ति हड़प सकते हैं। आपको आनन्द प्राप्त करनेके बहुत सारे अवसर मिलेंगे। आपको शक्ति और अधिकार प्राप्त होंगे। वाहनों का सुख भी आपको प्राप्त होगा। बाद में आपको एक के बाद एक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको किलों, जंगलों और पर्वतीय क्षेत्रों में घूमने का शौक होगा। पिता और अन्य संबंधियों के साथ आपके संबंध

आत्मीय नहीं हो सकते हैं। आपकी कुण्डली में सूर्य कमजोर है, आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।आपको ऐसा प्रतीत हो सकता है कि हर चीज आपके खिलाफ है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (08:07:1985 से 14:07:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम मंगल की स्थिति पर निर्भर करेंगे। सूर्य निश्चित रूप से शुभपरिणाम देगा। आपको भूमि, घर, सगे भाई बहनों से सुख और आराम तथा उनको सम्पन्नता प्राप्त होगी। नौकरी में आपको पदोन्नति मिलेगी। आपके सगे भाई–बहन आपके लिए परेशानी पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। आपकी संपत्ति का बंटवारा हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (14:07:1985 से 25:07:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको विभिन्न परिणाम प्राप्त होंगे। सूर्य आपके पद को ऊँचाई प्रदान करेगा–विशेषकर यदि आप राजनीति में हैं। चंद्रमा आपके विचारों में स्पष्टता लायेगा और आपको धर्म की तरफ मोड़ेगा। मंगल आपको प्रचूर धन और ऐंद्रिय सुख प्रदान करेगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (25:07:1985 से 02:08:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी सारी कामनायें पूर्ण होंगी। आपको राजनीतिक उपलब्धि मिलेगी और व्यापारिक गतिविधियों का विस्तार होगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (02:08:1985 से 21:08:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पहले 6 दिनों में आपको भारी धन हानि, अनावश्यक डर, रक्त की खराबी के कारण रोग हो सकते हैं, आपको बुरे सपने आ सकते हैं। अगले 6 दिनों में आपके जीवनसाथी और संतान को गंभीर रोग हो सकते हैं और उपचार में आपका भारी धन व्यय हो सकता है। अन्तिम 6 दिनों में आपको विभिन्न स्रोतों से आय और रोगों से मुक्ति मिलेगी।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (21:08:1985 से 07:09:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको विभिन्न स्रोतों से आय और रोगों से राहत प्राप्त होगी। यह आनन्द प्राप्ति और याद करने वाली दशा होगी। आपको अप्रत्याशित स्रोतों से आय प्राप्त होगी। आप धार्मिक कार्यों में भाग लेंगे। आप संबंधियों के यहां और आनन्द भ्रमण पर जायेंगे तथा तीर्थस्थानों की यात्रा करेंगे। निवेशों से आपको उत्तम लाभ मिलेंगे। आपका विवाह हो सकता है और आप अपना निवास स्थान बदल सकते हैं।

शनि प्रत्यंतर्दशा (07:09:1985 से 27:09:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अचानक परिस्थितियां पलट सकती हैं। आप ऊँचाई से नीचे गिर सकते हैं। सरकार से आपको कष्ट हो सकता है। आग या चोरी के कारण हानि हो सकती है। एक के बाद एक

आप विभिन्न रोगों से परेशान हो सकते हैं। आपके खिलाफ कपट पूर्ण योजना बन सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (27:09:1985 से 15:10:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा बहुत खराब हो सकती है। आप लेखन और प्रकाशन से आय प्राप्त करेंगे। आपके नाम और यश में वृद्धि होगी। आपके नये रास्ते बनेंगे। आपके रोजगार में बदलाव हो सकता है या आपको पदोन्नति मिल सकती है। आपको व्यापार में स्थायित्व प्राप्त होगा। निवेश करने के लिए यह एक उत्तम समय है। पराई स्त्रियों से दूर रहें।

केतु प्रत्यंतर्दशा (15:10:1985 से 23:10:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा बहुत खराब हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (23:10:1985 से 13:11:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा है। आपको खोई हुई भूमि और सम्पत्ति प्राप्त होगी। रोगों से राहत मिलेगी। आपके दूसरी औरतों के साथ घनिष्ठ संबंध हो सकते हैं। आप नया वाहन खरीदेंगे। सोने और तांबें से बने आभूषणों या पात्रों से आपको आय प्राप्त होगी। आप उत्तरी–पूर्वी दिशा में यात्रा कर सकते हैं।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (13:11:1985 से 14:06:1986)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको घरेलू वस्तुओं और आभूषणों की प्राप्ति होगी। आप मित्रों और संबंधियों से उत्तम सहयोगप्राप्त करेंगे तथा ऊँचे पदों पर आसीन होंगे। यह अन्र्दशा मध्यम रूप से उत्तम होगी।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (13:11:1985 से 01:12:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका विवाह हो सकता है और आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपकेसहोदरों का भी विवाह हो सकता है। आपके घर पर कई शुभ समारोह आयोजित होंगे। आपको नये परिधान मिलेंगे। आपको संस्कारी और ज्ञानी लोगों से मिलने के अवसर प्राप्त होंगे। आपको जीवनसाथी और संतान से पूरा आराम मिलेगा। माता से आपको लाभ प्राप्त होगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (01:12:1985 से 13:12:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान पैतृक सम्पत्ति और धन की हानि हो सकती है। आप रक्त कीअशुद्धता के कारण होने वाले रोगों, कफ एवं चिंता से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको विद्युत और अन्य गर्म चीजों से खतरा हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (13:12:1985 से 14:01:1986)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको अपने वित्तीय मामलों में बहुत अधिक सावधानी बरतनी चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि आपको बेहतर आर्थिक लाभ प्राप्त होने का समय आ रहा है। लेकिन यादरहे यह आपको आपके संचित धन से वंचित कर सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (14:01:1986 से 11:02:1986)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा बहुत उत्तम होगी। आपको उपदेशकों और सरकारी अधिकारियों से लाभ होगा। आर्थिक समस्याओं को हल करने में आपके मित्र और संबंधी मदद करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (11:02:1986 से 17:03:1986)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने हर कार्य में सफलता मिलेगी। आप भवनों का निर्माण करेंगे या उन्हेंखरीदेंगे। आप रक्त की अशुद्धता के कारण होने वाले रोगों, कफ, चिंता से ग्रस्त हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (17:03:1986 से 16:04:1986)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा उत्तम होगी। आपको भूमि और भवन प्राप्त होंगे। आप अपना अधिकतर समय अपने परिवार के साथ बितायेंगे। आप आनन्द भ्रमण पर जायेंगे। यदि आप नौकरी कर रहेहैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि आप व्यापारी हैं, तो आपको व्यापार में लाभ होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (16:04:1986 से 29:04:1986)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। परिवार की महिलाओं के कारण आपको धन की हानि हो सकती है। श्राद्ध के द्वारापूर्वजों को संतुष्ट ना कर पाने के कारण उनका शाप अपना प्रभाव दिखा सकता है। आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। आप विभिन्न पवित्र स्थानों की यात्रा कर सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (29:04:1986 से 03:06:1986)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा है। आपको अप्रत्याशित स्रोतों से धन का लाभ मिलेगा। आपको विरासत में ननिहाल की सम्पत्ति प्राप्त होगी। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि आप व्यापारी हैं, तो आपको व्यापार में लाभ होगा। शेयर और अन्य सुरक्षा जमा योजनाओं में निवेश करने का यह अति उत्तम समय है। आप सुन्दर युवतियों के साथ आनन्दमय समय व्यतीत करेंगे। हालाँकि, आपके जीवनसाथी से आपके संबंध आत्मीय नहीं हो सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (03:06:1986 से 14:06:1986)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको राजनीतिक उपलब्धि प्राप्त होगी। आप अपने पारिवारिक पृष्ठ भूमि के आधार पर किसी संगठन के नेता चुने जा सकते हैं। अपने भविष्य की योजना बनाकर वास्तविक व्यावहारिक काम को करने का यह उचित समय है।

राहु दशा (14:06:1986 से 13:06:2004)

वर्तमान समय में आपकी राहु की महादशा चल रही है और राहु आपकी कुण्डली में चौथे भाव में स्थित है।राहु की दशा इस भाव में बहुत उत्तम होगी। चूंकि चौथा भाव माता का है, अतः उनका स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का कारण हो सकता है। आपको विदेशों में रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। सभी से आपका झगड़ा हो सकता है। आपका संचित धन समाप्त हो सकता है और आप ऋण ले सकते हैं। धोखाधड़ी की भी संभावना हो सकती है।

वर्तमान समय में आपकी राहु की महादशा चल रही है और राहु आपकी कुण्डली में धनु राशि में स्थित है।राहु की अपनी दशा के दौरान, आपको बिना किसी प्रयास के आकस्मिक और अप्रत्याशित धन का लाभ होगा, आपको अपने सभी प्रयासों में भारी सफलता मिलेगी। वर्तमान समय में आपकी राहु की महादशा चलरही है और राहु आपकी कुण्डली में धनु राशि में स्थित है। राहु की अपनी दशा के दौरान, आपको बिना किसी प्रयास के आकस्मिक और अप्रत्याशित धन का लाभ होगा, आपको अपने सभी प्रयासों में भारी सफलता मिलेगी। आपमें जनता के मामलों में अति उत्साह दिखाने की प्रवृत्ति हो सकती है, जिसको यदि रोका नहीं गया तो आपको धन की ही नहीं, प्रतिष्ठा की भी भारी क्षति हो सकती है। आपका रूझान आध्यात्मिक एवं गूढ़ विषयों में हो सकता है। चूंकि आप शीघ्र धन कमाना चाहेंगे, अतः आप किसी आर्थिक संकट में फंस सकते हैं और धोखाधड़ी के कारण आपको भारी हानि हो सकती है। आर्थिक मामलों में आपको अधीर और आवेगी नहीं होना चाहिए। आपको अनूकूल समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

राहु अन्तर्दशा (14:06:1986 से 24:02:1989)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। आपको भोजन विषाक्तता और जल जनित रोग हो सकते हैं। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपके भाई या पिता या किसी नजदीकी संबंधी का स्वास्थ्य बहुत खराब हो सकता है। लम्बी बीमारी के कारण आपको धन हानि हो सकती है। आपको अपने जन्म स्थान को छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आप इधर–उधर भटक सकते हैं। दूसरी महिलाओं के साथ आपके संबंध बन सकते हैं। आपकोदूसरों के साथ व्यवहार में बहुत सावधान रहना चाहिए– जैसाकि वे लोग आपको धोखा दे सकते हैं।दुष्ट लोग आपको गंभीर रूप से मानसिक पीड़ा पहुँचा सकते हैं। आपके शरीर में चोट लग सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (14:06:1986 से 09:11:1986)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक खराब दशा हो सकती है। ऐसा देखने में आया है कि जन्मकुण्डली में राहु के उत्तमस्थिति में होने के बावजूद इस प्रत्यंतर्दशा में हमेशा विषम परिणाम प्राप्त होते हैं। सामान्य मामलों में आपके शरीर के कुछ भागों में अप्रत्याशित रूप से चोट लग सकती है या कट सकते हैं। आपके परिवार की मानसिक शांति भंग हो सकती है। आपकी इस प्रत्यंतर्दशा का प्रभाव आपके परिवार के लगभग हर सदस्य पर पड़ सकता है। पिछले कई सालों के नजदीकी और मजबूत संबंध भी टूट सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (09:11:1986 से 20:03:1987)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली प्रत्यंतर्दशा के दौरान आपकी जो मानसिक शांति खो गयी थी, वह आपको वापस मिल जायेगी। आपको वाहन की प्राप्ति और धन का लाभ होगा। संबंधियों की संगति प्राप्त होगी, घरपर शुभ समारोह आयोजित होंगे, आपके टूटे हुए संबंध फिर से जुड़ेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (20:03:1987 से 23:08:1987)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। पिछली प्रत्यंतर्दशा के दौरान आपके द्वारा प्राप्त किया गया लाभकारी परिणामों का सुख तुफान के पहले की केवल खामोशी थी। यह दशा आपके धीरज की बहुत बड़ी परीक्षा होगी। हर जगह पर आपके शत्रु फिर से सिर उठा सकते हैं। ऋणदाता आपको और आपके परिवार को परेशान कर सकते हैं। आपको गठिया और नेत्र विकार हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (23:08:1987 से 10:01:1988)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको मिले–जुले परिणाम प्राप्त होंगे। आपके शत्रु थोड़े समय के लिए दूर जा सकते हैं। आपको अपने जीवनसाथी से आर्थिक सहायता मिलेगी।

केतु प्रत्यंतर्दशा (10:01:1988 से 07:03:1988)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप जो कुछ करेंगे, उसमें हानि हो सकती है। आपका निवास स्थान बदल सकता है और आप सुदूर स्थानों की यात्रा कर सकते हैं। पड़ोसियों और मित्रों से प्रायः आपका झगड़ा हो सकता है। शत्रु स्थिति का लाभ लेने की कोशिश कर सकते हैं। हालाँकि, समय–समय पर आपको आनन्द प्राप्त हो सकते हैं और आपका मनोरंजन होगा। यह एक सामान्य दशा होगी।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (07:03:1988 से 19:08:1988)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपका विवाह हो सकता है। परलौकिक चीजों और सरकार से आपको खतरा हो सकता है। आपका वाहन खो सकता है और जीवनसाथी को मृत्युतुल्य कष्ट या उनसे अलगाव हो सकता है। पूरा परिवार किसी ना किसी समस्या से ग्रसित हो सकता है। आपको अति विषम परिणामों जैसे व्यापारऔर वर्तमान स्थिति की हानि आदि का सामना करना पड़ सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (19:08:1988 से 07:10:1988)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। तेज तथा धारदार हथियारों या पत्थर से आपको चोट लग सकती है। आपको सीने और यकृत में परेशानियां हो सकती हैं। आपको धन हानि और वरिष्ठों से कष्ट हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (07:10:1988 से 29:12:1988)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको मिले–जुले परिणाम मिलेंगे। आपको अप्रत्याशित स्रोतों से आय प्राप्त होगी, लेकिन साथ ही आपको धन हानि और अवांछित चिन्तायें हो सकती हैं। आपकी प्रतिष्ठा खो सकती है और मित्रों तथा परिवार के लोगों से झगड़ा हो सकता है। आप गठिया के दर्द से ग्रसित हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (29:12:1988 से 24:02:1989)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप चर्म रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं, लेकिन गुदा में फोड़ा या खुजली हो सकती है। आप रोगों के उपचार में भारी मात्रा में धन खर्च कर सकते हैं, लेकिन आपको राहत नहीं मिल सकती है। रक्त की खराबी के कारण कई रोग हो सकते हैं। सगे भाई–बहनों के कारण धन हानि हो सकती है।आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपको मानसिक हताशा हो सकती है।

गुरू अन्तर्दशा (24:02:1989 से 20:07:1991)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम होगी। आपको भरपूर खुशियां मिलेंगी। धार्मिक कार्यों को करने और विद्वान तथा साधुजनों से मिलने के आपको अवसर प्राप्त होंगे। सूर्य से संबंध होने पर आप शास्त्रों और अन्य प्राचीन तरीकों के अध्ययन में गहन रूचि लेंगे। आपको सुन्दर स्त्रियों के साथ घूमने का भी शौक होगा। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। यदि आपकी कुण्डली में बृहस्पति बली नहीं है, तो भी आपको बहुत विषम परिणाम नहीं मिलेंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (24:02:1989 से 21:06:1989)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा बहुत उत्तम होगी। आपके सगे भाई–बहन समृद्धशाली होंगे। आपको समाज में एक उचित स्थान मिलेगा। आपको व्यापार में लाभ होगा और धन की प्राप्ति होगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (21:06:1989 से 07:11:1989)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। राहु आपको सत्य के मार्ग का अनुसरण कर सम्पन्नता प्राप्त करने की इजाजत नहीं देगा, यह आपको धन और अन्य भौतिक सुख केवल पाप के दलदल में फंसाने के लिए प्रदान करेगा।अतः आपको पापकर्मों की तरफ मुड़ने से अपने आप को रोकना चाहिए। यदि आपने ऐसा किया तो आपको धीमी गति और स्थायी तरीके से सम्पन्नता प्राप्त होगी।

बुध प्रत्यंतर्दशा (07:11:1989 से 11:03:1990)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आप अपना खोया हुआ धन और सम्मान प्राप्त करेंगे। आपके घर पर वैवाहिक समारोह आयोजित होंगे। इस दशा के दौरान किया गया कोई निवेश लाभकारी साबित होगा। शैक्षिणिक क्षेत्र में आपको सफलता मिलेगी, आपको नये परिधान और उत्तम मित्रों की संगति प्राप्त होगी।

केतु प्रत्यंतर्दशा (11:03:1990 से 01:05:1990)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। शत्रु विभिन्न तरीके से परेशानियां पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। आप दुष्ट लोगों से घिरे रह सकते हैं। लेकिन आपको हानि पहुंचाने के उनके सभी प्रयास व्यर्थ हो जायेंगे। हालांकि,आपको हमेशा एक भय बना रह सकता है, कि कुछ घटित होने वाला है। आपको चर्म रोग या गलेमें अकड़न हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (01:05:1990 से 24:09:1990)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि बृहस्पति उच्चस्थ नहीं है, तो यह दशा बहुत उत्तम होगी। शुक्र प्रथम स्तर का शुभ ग्रह होगा और आपको जीवन के सारे सुख प्रदान करेगा। लेकिन आपको महिलाओं से सावधान रहना होगा– जैसाकि वे आपकी मित्र होने का दिखावा कर सकती हैं और जब वे आपसे सब कुछ प्राप्त कर लेंगी, तो वे आपको छोड़ देंगी। इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (24:09:1990 से 07:11:1990)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आय में वृद्धि होगी, लेकिन आपके लिए उसका कोई अर्थ नहीं होगा– जैसाकि आपके खर्चे बढ़ सकते हैं और इस दशा के अन्त में आपके पास कुछ भी शेष नहीं बच सकता है।यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपकी पदोन्नति या प्रगति के अवसरों को आपके गुप्त शत्रु बाधित करसकते हैं। आप जिस क्षेत्र में व्यापार कर रहे हैं, उसी क्षेत्र के व्यापारी आपका प्रतिरोध कर सकते हैं। आपको गठिया का दर्द और सिर में पीड़ा हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (07:11:1990 से 19:01:1991)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यद्यपि मानसिक शांति का अभाव होगा, लेकिन आर्थिक मामलों में सुधार होगा। आप पिछली देनदारियों को एक हद तक निपटाने में सक्षम होंगे। आप जिन महिलाओं को विश्वसनीय औरजिम्मेदार समझतें हैं उनसे आपको किसी प्रकार का खतरा या कष्ट हो सकता है। आपको गुदा में खुजली या बवासीर की समस्या हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (19:01:1991 से 11:03:1991)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक ऐसी दशा होगी, जिसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। इसके परिणाम बहुत भिन्न होंगे। गरीब परिवार में जन्म लेने वाला व्यक्ति भी प्रगति के शिखर पर जा सकता है। आपको कोई अप्रत्याशित सौगात मिलेगी।

राहु प्रत्यंतर्दशा (11:03:1991 से 20:07:1991)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आर्थिक मामलों के लिए यह एक उत्तम दशा होगी। आपके जीवनसाथी आपकी कोई मदद नहीं कर सकते हैं, आप स्वयं ही हर कार्य करेंगे। आपको अपनी योजनाओं को पूरा करने में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। हालाँकि, आप इस प्रकार की बाधाओं को पार कर सफलता प्राप्तकरेंगे। आपको कुछ खतरनाक चर्म रोग हो सकते हैं।

शनि अन्तर्दशा (20:07:1991 से 26:05:1994)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। आपका अपने जीवनसाथी, संतानों और सहोदरों के साथ झगड़ा हो सकता है। आपके भाई आपके शत्रु बन सकते हैं। रक्त विकार, वायु और पित्त रस के कारण आपको रोग हो सकते हैं। आपके शरीर में चोट लग सकती है।यदि घर में नौकर हैं, तो आवश्यकता के समय वे आपको छोड़ कर जा सकते हैं। यदि आप किसी ऊँचेपद पर हैं, या व्यापार कर रहे हैं, जहां मजदूरों की आवश्यकता है, तो उनकी उचित संख्या में कमी होसकती है। आपकी अवनति हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (20:07:1991 से 01:01:1992)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको जीवन में हर संभव विपदाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको कारावास हो सकती है। आपको किसी प्रकार के मनोरंजन में कोई रूचि नहीं हो सकती है। आपमें खिन्नता की भावना जन्म ले सकती है। आप कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं ले सकते हैं। शत्रु भी आपके लिएसमस्यायें पैद कर सकते हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको सावधान रहना चाहिए। आपके शरीर में चोट लग सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (01:01:1992 से 28:05:1992)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आर्थिक मामलों में आपको सफलता मिलेगी। आप नयी सम्पत्तियां प्राप्त कर सकते हैं। हालाँकि, सम्पत्ति के मामलों में विवाद हो सकते हैं। कर्मचारी या अधीनस्थ आपको धोखा दे सकते हैं। निरन्तर धनागमन के बावजूद जरूरत के समय नगद धन की उपलब्धता में संशय हो सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (28:05:1992 से 28:07:1992)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके हर काम में बाधा आ सकती है। शत्रु जारी कामों में व्यवधान डालने की कोशिश करेंगे। सामान्य मामलों में परिवार के लोगों में मतभेद हो सकते हैं, जिससे झगड़े और लड़ाई हो सकती है। आपके सगे भाई बहन अपने कामों को भली भांति नहीं कर सकते हैं। कोट के मामलों में अनावश्यक व्यय हो सकता है। आप गठिया के दर्द से ग्रसित हो सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (28:07:1992 से 17:01:1993)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। शनि और शुक्र आपको प्रचुर धन प्रदान करेंगे, लेकिन राहु उसको उड़ा ले जा सकता है। आप नशे और विभिन्न औरतों के साथ यौन सुखों को प्राप्त करने में रत रहेंगे। आप जो कुछ भी कमायेंगे, उसे औरतों और अन्य सुखों को प्राप्त करने में खर्च कर देंगे। आप बहुत सारे अशुभ स्वप्न देख सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (17:01:1993 से 10:03:1993)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। सूर्य से संबंधित वस्तुओं और व्यक्तियों की आपको हानि हो सकती है। यदि आप राहु से संबंधित वस्तुओं का व्यापार कर रहे हैं, तो आपको उसमें लाभ हो सकता है– जैसाकि शनि और सूर्य परस्पर विवाद में उलझे हैं, जहाँ राहु के सहयोग के कारण शनि सूर्य पर भारी है। राजनीतिज्ञों और नौकरशाहों के लिए यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (10:03:1993 से 05:06:1993)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। जैसाकि राहु और शनि दिमाग के प्रमुख नियंत्रणकर्ता को पीड़ित कर रहे हैं, अतः आपकी वैचारिक प्रक्रिया को आघात लग सकता है। आपके द्वारा इस दशा के दौरान लिया गया कोई भी निर्णय गलत हो सकता है। आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (05:06:1993 से 05:08:1993)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति खराब दशा हो सकती है। आगजनी या चोरी के कारण धन हानि हो सकती है। आपकी संतान को कष्ट हो सकता है। पित्त और वायु के कारण रोग हो सकते हैं। आपको गंभीर मानसिक अवसाद हो सकता है। आप गैरकानूनी कार्यों से आय प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन साथ ही इन कार्यों के कारण कानूनि जटिलतायें भी पैदा हो सकती हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (05:08:1993 से 08:01:1994)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपको दूरस्थ स्थानों पर जाना पड़ सकता है। हालाँकि, आपकी आय उत्तम होगी, लेकिन आप उसे ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में खर्च कर सकते हैं। आपको जीवनसाथी से कोई सुख नहीं मिल सकता है। आपकी कुण्डली में राहु या शनि सातवें भाव में है, इस दशा के दौरान आपके जीवनसाथी को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है या आपका उनसे तलाक हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (08:01:1994 से 26:05:1994)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। आप अपने ज्ञान की तृष्णा को शांत करने के लिए निकल पड़ेंगे। लेखन या प्रकाशन के माध्यम से आप आय अर्जित करेंगे। आप अपने नजदीकी संबंधियों सेमिले–जुलेंगे और विभिन्न तरीकों से मौज–मस्ती करेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको उसमें उचित लाभ प्राप्त होगा।

बुध अन्तर्दशा (26:05:1994 से 13:12:1996)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। आपको संतानों सेसुख और खुशियों प्राप्त होंगी। संबंधियों से आपके उत्तम संबंध बनेंगे। संतान की प्राप्ति हो सकती है। मित्रों के साथ आपके संबंध आनन्दायक और फलदायी होंगे। हालांकि, आपमें हीनता की भावना आ सकतीहै। आपके विचारों में स्पष्टता होगी।

बुध प्रत्यंतर्दशा (26:05:1994 से 05:10:1994)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको संचित धन की हानि हो सकती है। आपको जहर और वायु के कारण रोग, सिरदर्द, नेत्र विकार और उदर में परेशानी हो सकती है। आपको मानसिक वेदना और अपनी सभी योजनाओं में असफलता का सामना करना पड़ सकता है। नजदीकी संबंधियों को कष्ट हो सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (05:10:1994 से 29:11:1994)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि बुध बली भी है, तो भी राहु और केतु आपके जीवन में समस्यायें पैदा कर सकते हैं। आप उस मछली की तरह हो सकते हैं, जिसे पानी से निकालकर किनारे पर रख दिया गया है। आपको दमा और मानसिक अवसाद की शिकायत हो सकती है। विभिन्न तरीकों से आपको हानियां हो सकती हैं।

आपको अपने हर काम में विवादों और बहस का सामना करना पड़ सकता है। पूर्ण रूप से मानसिक विभ्रमऔर संशय के कारण आपके दिमाग में हलचल पैदा हो सकती है। आप जुए में रत हो सकते हैं औरआपको धन हानि हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (29:11:1994 से 03:05:1995)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप स्वादिष्ट भोजन और आभूषणों का आनन्द प्राप्त करेंगे। मित्र और संबंधी आपकी मदद को आगे आयेंगे। आप दैवीय मार्ग को पाने के लिए ईश्वर की उपासना में रत रहेंगे। आपकी आय का एकप्रमुख भाग इस उद्देश्य के लिए खर्च होगा। यदि राहु या बुध या शुक्र कमजोर भी हैं, तो भी आपको बहुत विषम परिणाम प्राप्त नहीं होंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (03:05:1995 से 18:06:1995)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको आर्थिक लाभ प्राप्त होगा। आपका नाम और यश बढ़ेगा। राजनेता एक शुभ समय कीआशा कर सकते हैं। आपके घर के सभी लोगों के लिए यह एक उत्तम समय होगा। आप भूमि या भवनखरीदेंगे। कई छोटी यात्रायें करेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो एक लम्बे संघर्ष के बाद आपको नौकरी में पदोन्नति मिलेगी।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (18:06:1995 से 04:09:1995)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका बौद्धिक विकास होगा। निवेश करने के लिए यह उत्तम दशा होगी– जैसाकि आपका मस्तिष्क सही दिशा में काम करेगा। हालाँकि, आपका अपने मित्रों और संबंधियों के साथ अप्रत्याशित रूप से झगड़ा और विवाद हो सकता है, जिससे आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (04:09:1995 से 28:10:1995)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपकी अपनी व्यावसायिक स्थिति में ही नहीं, अपितु सामाजिक स्थिति में भी कुछ परेशानियां हो सकती हैं। आपको शत्रुओं के कारण कष्ट हो सकता है। आपको रक्त की खराबी के कारणरोग और बुखार हो सकता है। सामान्यतः इस दशा के दौरान आपको मानसिक वेदना और अपनी सभी योजनओं में असफलता का सामना करना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (28:10:1995 से 16:03:1996)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप जिन लोगों पर निर्भर हैं या विपत्ति में जिन्होंने आपकी मदद की है, उनको खातरा हो सकता है। आपको विभिन्न तरीकों से धन हानि हो सकती है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (16:03:1996 से 18:07:1996)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। आप रोग मुक्त रहेंगे और पूर्ण शान्ति का अनुभवकरेंगे। आपको स्वयं द्वारा किये गये कार्यों के लिए व्यवसाय में ही नहीं, अपितु समाज में भी प्रशंसा

मिलेगी। आप दैवीय मार्ग का अनुसरण करेंगे। यदि अन्य ग्रहीय युतियां अनुकूल हैं, तो आप धर्म के मार्ग में दूसरों को प्रशिक्षण देंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (18:07:1996 से 13:12:1996)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक मिली–जुली दशा होगी। आपको विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होगी, लेकिनआपका व्यय भी बढ़ सकता है। चिकित्सकीय उपचार में आपका खर्च अधिक हो सकता है। सम्पत्ति के मामलों में परिवार के सदस्यों के बीच भिन्न मत होंगे। आपके अपने पिता से संबंध मधुर नहीं हो सकते हैं। आपको अपने वर्तमान निवास स्थान को छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

केतु अन्तर्दशा (13:12:1996 से 31:12:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आप सिरदर्द, बुखार और शरीर में कंपकपी से ग्रस्त हो सकते हैं। आग और हथियारों से आपको खतरा हो सकता है। आपके शरीर में जहरीले फोड़े हो सकते हैं। आप और आपका परिवार दुखी हो सकता है। घर और व्यावसायिक क्षेत्र में आपको झगड़ों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी कुण्डली में केतु पीड़ित है, आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकते हैं। यदि आपकीकुण्डली में केतु शुभ है, तो भी इस अन्तर्दशा के दौरान आपको शुभ परिणाम नहीं मिल सकते हैं। हालांकि, ऐसा देखने में आया है, कि यदि राहु की अन्तर्दशा अपनी महादशा में उत्तम नहीं है, तो केतु की अन्तर्दशा उत्तम फल देगी। आपको महामृत्युंजय मंत्र का जाप करना चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (13:12:1996 से 05:01:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके जीवनसाथी और संतान हताश हो सकते हैं। आपके शरीर में पीड़ा हो सकती है। आपको अपने वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो सकती है। आपको हृदय रोग, कलंक, चित्त की अस्थिरता और धन हानि का सामना करना पड़ सकता है। अपने संबंधियों से आपको भारी निराशा मिलसकती है और आपका उनसे अलगाव हो सकता है। आपके लिए महामृत्युंजय मंत्र का जाप लाभकारी होगा।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (05:01:1997 से 09:03:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। आपको महिलाओं की संगति और वाहनों का सुख प्राप्तहोगा। आप पवित्र स्थानों की यात्रा करेंगे। आप भूमि खरीदेंगे या आपको विरासत में भूमि प्राप्त होगी।हालाँकि, बिना किसी कारण के झगड़े हो सकते हैं। आपको शारीरिक कष्ट और मानसिक वेदना का सामना करना पड़ सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (09:03:1997 से 29:03:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप दूसरों की भलाई करने की कोशिश करेंगे, लेकिन आपको मिलने वाला उसका प्रतिफल पूर्ण निराशाजनक हो सकता है। अधीनस्थ आपको नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं। संतान भी आपकी हानि का कारण हो सकती हैं। संबंधी और मित्र आपके शत्रु हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (29:03:1997 से 30:04:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। परिवार की महिलाओं के लिए यह एक बहुत खराब दशा हो सकती है। वैवाहिक संबंध टूट सकते हैं। महिलाओं को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आपका खर्चों पर कोई नियंत्रण नहीं हो सकता है। अपने काम में आपकी कोई रूचि नहीं हो सकती है। परिवार के कुछ बड़े लोगों का आपको वियोग सहना पड़ सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (30:04:1997 से 22:05:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि यह दशा 35 वर्ष की आयु के पहले पड़ती है, तो आपने पूर्व जन्म में जो पाप किये हैं, उनका फल आपको इस जन्म में मिलने वाला है। यदि दशा 35 वर्ष की आयु के बाद पड़ती है, तोआपने 35 वर्ष की आयु से पहले जो पाप कर्म किये हैं, वे प्रमुख भूमिका निभायेंगे। आप विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको धन हानि और परिवार में कोई अशुभ घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (22:05:1997 से 18:07:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के परिणाम मुख्यतः राहु की स्थिति पर निर्भर करेंगे। आपके परिवार में कई शुभ समारोह आयोजित हो सकते हैं। व्यापार में आपको अप्रत्याशित लाभ होगा और चहुंमुखी सम्पन्नता प्राप्त होगी।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (18:07:1997 से 08:09:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। आप विभिन्न धार्मिक स्थानों की यात्रा करेंगे। आप पूजा–पाठ और अन्य धार्मिक कार्यों को करेंगे। सरकार से आपको लाभ मिलेगा। आपका विवाह हो सकता है। आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है और खोई हुई सम्पत्ति प्राप्त होगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (08:09:1997 से 07:11:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपको निर्वासन का सामना करना पड़ सकता है। आप जो भी काम करेंगे, उसका अन्त संकटपूर्ण होगा। आपके नजदीकी मित्र और संबंधी भी आपके कट्टर शत्रु बन सकते हैं। आपके पास नगद धन की कमी हो सकती है, जिससे आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।संक्षेप में, आपको सभी संभावित विपदाओं का एक के बाद एक सामना करना पड़ सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (07:11:1997 से 31:12:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। प्रचंड तूफान के बाद यह एक शांतिपूर्ण दशा होगी। धीरे–धीरे आपके आस–पास की परिस्थितियां और जीवन सामान्य होना शुरू हो जायेगा। हालाँकि, आपको सौदे की वैधता को जांचे बिना किसी सम्पत्ति में निवेश नहीं करना चाहिए। आपकी जीवनसाथी कई मामलों में आपको राहत प्रदान करेंगी।

शुक्र अन्तर्दशा (31:12:1997 से 31:12:2000)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशाके दौरान आपके विवाह की संभावना है। स्त्रियों के द्वारा आपको बहुत आनन्द प्राप्त होगा। आपकोघरेलू सामान और आभूषणों की प्राप्ति होगी। आपको संगीत और नृत्य में रूचि उत्पन्न होगी। आप धन लाभ और जीवनसाथी से आनन्द प्राप्त करेंगे, लेकिन किसी प्रियजन के खोन की संभावना हो सकती है। आपको देवी दुर्गा और लक्ष्मी की आराधना करनी चाहिए।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (31:12:1997 से 02:07:1998)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। यदि कोई सम्पत्ति विवाद अब तक अनसुलझेहैं, तो इस दशा के अन्त तक वे सुलझ जायेंगे। आपको अप्रत्याशित क्षेत्रों से धन लाभ होगा। आपके शरीर में चोट लग सकती है या आपको आग से भय हो सकता है। आपको चोरों से कष्ट हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (02:07:1998 से 26:08:1998)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको गले, नाक या सीने और पेट के रोग हो सकते हैं। आपकी आँखों में संक्रमण हो सकता है। यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको कड़ी स्पर्द्धा का सामना करना पड़ सकता है और शत्रु आपको नुकसान पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं। संबंधियों के कारण आपको धन हानि हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (26:08:1998 से 25:11:1998)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। आपको प्रचूर धन प्राप्त होगा, लेकिन यदि खर्च पर बहुत अधिक नियंत्रण नहीं किया गया तो व्यय आय से अधिक हो सकता है। आपको दूसरी महिलाओं के साथ आनन्दमय समय व्यतीत करने के प्रायः अवसर मिल सकते हैं। आपके लिए ऐसी औरतों से दूर रहनाबेहतर होगा– जैसाकि आपको उनसे धोखा मिल सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (25:11:1998 से 28:01:1999)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको भूमि प्राप्त हो सकती है या आप उसे बेचकर लाभ कमा सकते हैं। आपकोजनता से सम्मान मिलेगा। महिला समुदाय से आपको घृणा हो सकती है– मुख्यतः उन महिलाओं की संदेहास्पद प्रकृति के कारण, जिनके साथ आपके नजदीकी संबंध हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (28:01:1999 से 11:07:1999)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा मिली–जुली होगी। आपको विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होगी, लेकिन ऐसीसारी आय विलास और अवांछित कार्यों में व्यय हो सकती है। आपके जीवनसाथी और माता–पिता से संबंध मधुर नहीं हो सकते हैं। राहु–शुक्र–चंद्रमा की दशा के दौरान शारीरिक और अन्य ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में अति लिप्ता इस दशा के दौरान खतरनाक साबित हो सकती है, अर्थात ऐसे कामों का फल आपको इस दशा में मिलेगा।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (11:07:1999 से 04:12:1999)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका विवाह हो सकता है और आपको संतानों की प्राप्ति हो सकती है। आप भूमि या भवन या दोनों खरीदेंगे। आपके पास प्रचुर मात्रा में भोजन उपलब्ध रहेगा। आपको सभी सुखों का आनन्द प्राप्त होगा। आपको अपने पद और अधिकार के कारण विभिन्न प्रकार के आनन्द प्राप्त होंगे। संबंधीआपकी हर संभव मदद करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (04:12:1999 से 26:05:2000)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यदि व्यय में सावधानी बरती गयी, तो आय व्यय से अधिक होगी। आप धन, बर्तन, आभूषण का संग्रह करेंगे और इस पूरी प्रत्यंतर्दशा में आनन्द प्राप्त करेंगे। आप अपने नजदीकी संबंधियों कोहर संभव सहायता प्रदान करेंगे। हालाँकि, आपके घरेलू मामलों में बाहरी दखल हो सकता है, जिससे आपकी नींद उड़ सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (26:05:2000 से 28:10:2000)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। सभी कार्य सहज रूप से संपन्न होंगे। आपका विवाह हो सकता है और आपको पदोन्नति मिल सकती है। आपका व्यापार समृद्ध होगा। विदेशी स्रोतों से आपको आय प्राप्तहोगी। आपको आँख और नाक के रोग हो सकते हैं। आप रोजगार या व्यापार में बदलाव कर सकते हैं। आप भूमि और भवन खरीदेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (28:10:2000 से 31:12:2000)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको भूमि और संपत्ति, अधिकार और शक्ति प्राप्त हो सकती है। आप अपनी रूचिके बहुआयामी कामों में रत रहेंगे। आपको उपहारों या पदकों के साथ सम्मान मिलेगा। आपका विवाह हो सकता है और/या आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है।

सूर्य अन्तर्दशा (31:12:2000 से 25:11:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। आपको अधिकारियों से धमकी मिल सकती है। शत्रु आपके लिए बहुत परेशानी पैदा कर सकते हैं। आप नेत्र रोग से पीड़ित हो सकते हैं। आपको जहरीले प्रभाव, हथियारों से चोट और उपचार में भारी खर्चों का सामना करना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी और संतान विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको सूर्य मंत्रका जाप और सूर्य नमस्कार (उगते और डूबते सूर्य के सामने साष्टांग दण्डवत) तथा अपने सामर्थ्य के अनुसार वस्तुओं का दान करना चाहिए।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (31:12:2000 से 17:01:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको कफ की शिकायत हो सकती है। स्वास्थ्य की बेहतरी के लिए आपको तेल के सेवन में नियंत्रण रखना चाहिए। सुबह खाली पेट कुछ तुलसी की पत्तियों का सेवन करना चाहिए।

आपको तुलसी के पौधे को पानी देना चाहिए।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (17:01:2001 से 13:02:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका विवाह हो सकता है। आपके धन में बढ़ोत्तरी होगी। आप भूमि और भवन खरीदेंगे या आपको विरासत में मिलेंगे। आपको वाहन का सुख प्राप्त होगा। विभिन्न स्रोतों से आय होगी और आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है। आपके सुशील लोगों से संबंध होंगे। आप एक स्वस्थ जीवन व्यतीत करेंगे या आपको रोगों से राहत मिलेगी।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (13:02:2001 से 04:03:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम मुख्यतः मंगल की स्थिति पर निर्भर करेंगे। यदि मंगल उत्तमस्थिति में है, तो आपको भूमि और घर का लाभ, सहोदरों से आराम और खुशी तथा उनको संपन्नता और व्यवसाय या नौकरी आदि से लाभ प्राप्त होगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (04:03:2001 से 23:04:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा में प्रथमार्द्ध में आपको धन की भारी हानि हो सकती है। आपको अनावश्यक डर और रक्त विकार हो सकता है, आपको बहुत सारे बुरे सपने आ सकते हैं। दूसरे भाग में विषम परिस्थिति में पूर्ण परिवर्तन हो जायेगा और आप उत्तम दशा का आनन्द प्राप्त करेंगे। अप्रत्याशित क्षेत्रों से आपको धन लाभ होगा और मित्रों तथा संबंधियों से मदद मिलेगी।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (23:04:2001 से 06:06:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे। आपका सम्मान बढ़ेगा, खाद्यान्न में बढ़ोत्तरी होगी, संतान का जन्म होगा, आपकी कामनायें पूरी होंगी और आपको उत्तम वस्त्रों और आभूषणों का लाभ मिलेगा। आप मंत्रणाओं में उत्तम स्थिति का आनन्द प्राप्त करेंगे, साधुजनों, बड़ों और संबंधियों की संगति का सुख प्राप्त करेंगे। आपको कान और फेफड़ों के रोग हो सकते हैं।

शनि प्रत्यंतर्दशा (06:06:2001 से 28:07:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके शत्रु परास्त होंगे। आप शुभ समारोहों में भाग लेंगे। हालाँकि, आपकी आय बहुत सीमित होगी। आपको धन हानि और विभिन्न प्रकार के रोग हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (28:07:2001 से 12:09:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको भूमि और संपत्ति, अधिकार और शक्ति प्राप्त हो सकती है। आप अपनी रूचि के बहुआयामी कामों में रत रहेंगे। आपको उपहारों या पदकों के साथ सम्मान मिलेगा। आपका विवाह हो सकता है और/या आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (12:09:2001 से 01:10:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। पिछली कुछ दशाओं में आपने अब तक जिन कुछ हद अनुकूल परिणामों का आनन्दप्राप्त किया है, वे इस दशा में समाप्त हो सकते हैं। आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। ऋणदाता आपको परेशान कर सकते हैं। आय से व्यय अधिक होने के कारण आपको धन उधार लेना पड़ सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (01:10:2001 से 25:11:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको भूमि और सम्पत्ति, अधिकार और शक्ति प्राप्त हो सकती है। आप अपनी रूचि के बहुआयामी कामों में रत रहेंगे। आपको उपहारों या पदकों के साथ सम्मान मिलेगा। आपका विवाहहो सकता है और या आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (25:11:2001 से 26:05:2003)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा मिश्रित परिणामों को दर्शायेगी। एक तरफ आपको अपने जीवनसाथी से कुछ निश्चित समय पर सुख मिलेगा और दूसरी तरफ आप अपने जीवनसाथी के साथ बेतुके मामलों में प्रायः झगड़ा करने को बाध्यहो सकते हैं। प्रेम और नफरत का साथ–साथ अनुभव होगा। आय की प्राप्ति होगी, लेकिन खर्च भी बढ़ सकते हैं। आपको मानसिक शांति का अभाव हो सकता है। अपने लोगों के साथ झगड़े के कारण आपको बहुत दुख का अनुभव हो सकता है। माता का स्वास्थ्य आपको परेशान कर सकता है। आपको मवेशियों और कृषि भूमि की हानि हो सकती है। आपको पानी से बहुत सावधान रहना चाहिए। आपको देवीदुर्गा को सफेद पुष्प अर्पित करने चाहिए।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (25:11:2001 से 10:01:2002)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके घर पर शुभ समारोह आयोजित होंगे। आपके सहोदरों का विवाह हो सकताहै। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति प्राप्त होगी। हालाँकि, यदि आप व्यापारी हैं, और यदि आपके व्यापार का संबंध चंद्रमा या राहु की वस्तुओं से नहीं है, तो आपको लाभ प्राप्त नहीं हो सकता है। आप फेफड़े के रोगों और तपेदिक से ग्रसित हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (10:01:2002 से 11:02:2002)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप रक्त की खराबी के कारण होने वाले विकारों, चिंता, कफ से ग्रसित हो सकतेहैं। आग, विद्युत और अन्य गर्म चीजों से आपको खतरा हो सकता है। आपको चोरों और शत्रुओं के कारण धन हानि हो सकती है। अपने कार्य क्षेत्र में भी आप असफल हो सकते हैं। दंड या आपके द्वारा किये गये गबन के अपराध के कारण आपका स्थानान्तरण या पदावनति हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (11:02:2002 से 04:05:2002)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके राहु के कारक संबंधियों को कष्ट हो सकता है और आपको उनके उपचार में धन व्यय करने को बाध्य होना पड़ सकता है। जलीय उत्पादों से आपको भोजन विषाक्तता की

संभावना है। आप अनजाने में कई बुरे और गलत काम कर सकते हैं और बाद में उनके लिए प्रायश्चित कर सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (04:05:2002 से 16:07:2002)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप धार्मिक सिद्धान्तों का पालन करेंगे और भिक्षा बांटेंगे। आपकी उत्तम वस्त्रों और आभूषणों को पाने में अधिक रूचि होगी। आपको विभिन्न स्रोतों से धन प्राप्त होगा और संतान सम्पन्न होंगी। संतान आपको खुशियों प्रदान करेंगी। आपका रूझान वाहन प्राप्त करने में हो सकता है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (16:07:2002 से 10:10:2002)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको संबंधियों के कारण दुखों और खतरों का सामना करना पड़ सकता है। आप, आपके जीवनसाथी, संतान और आपके माता–पिता एक साथ विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। उपचार में भारी धन व्यय हो सकता है। आप विभिन्न उपचारीय तरीके अपना सकते हैं और धन बर्बाद करसकते हैं। ऐसा करने पर भी राहत न प्राप्त कर पाने के कारण आप पूरी तरह से निराश हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (10:10:2002 से 27:12:2002)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में आपने जिन दुखों और परेशानियों का सामना किया है, उनसे आपको थोड़ी राहत मिलेगी। आपको निरन्तर धन प्राप्त होगा और आप उत्तम परिधान, आभूषण और नये मवेशी प्राप्त करेंगे। कृषि उत्पादों से आपको उत्तम आय प्राप्त होगी। आपके नाम और यश में वृद्धि होगी। नये प्राप्त ज्ञान और शिक्षा के द्वारा आप संपन्न होंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (27:12:2002 से 28:01:2003)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके प्रियजनों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आपको धन हानि हो सकती है। आप विभिन्न धार्मिक कार्यों में रत रहेंगे और भारी मात्रा में धन व्यय करेंगे। आपको जल याजलीय उत्पादों से खतरा हो सकता है। आपको ऐसे व्यापार से दूर रहना चाहिए, जहाँ द्रव रसायन का प्रयोग होता हो।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (28:01:2003 से 29:04:2003)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। इस दशा में आप निवेशों और अपने मौजूदा व्यवसाय या गतिविधियों के विस्तार के बारे में सोच सकते हैं। तीनों ग्रहों या उनमें से किसी एक की दुर्बलता की कोटि चाहे जो कुछ भी हो, आपको कोई अति अशुभ परिणाम नहीं मिलेंगे। दूसरी तरफ आप बहुत आराम महसूस करेंगे और अनुकूल परिणामों का आनन्द प्राप्त करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (29:04:2003 से 26:05:2003)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक विवादपूर्ण दशा हो सकती है। इस दशा के परिणामों का आंकलन करना

बहुत कठिन है– जैसाकि परिणाम इन तीनों ग्रहों के कार्यों पर निर्भर करेंगे। ये तीनों ग्रह भिन्न परिणाम प्रदर्शित करेंगे, अर्थात यदि एक ग्रह बली है, तो वह शुभ परिणाम देगा, यदि कोई कमजोर है, तो यह अतिअशुभ परिणाम प्रदान करेगा। दूसरे शब्दों में आप अति शुभ और अति अशुभ परिणामों का आनन्द एक साथ प्राप्त करेंगे।

मंगल अर्न्तदशा (26:05:2003 से 13:06:2004)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। शत्रुओं, आग, हथियारों आदि के कारण आपको खतरा हो सकता है। सरकारी अधिकारी और चोर आपको मानसिक तनाव दे सकते हैं। आप विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (26:05:2003 से 18:06:2003)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अशुभ दशा हो सकती है। आपका दिमाग विरोधाभासी और शंकालु विचारों से पूर्ण हो सकता है। किसी भी मामले में आप किसी निर्णय पर नहीं पहुंच सकते हैं। सभी मामले अनिर्णीत और अधूरे रह सकते हैं। आपको दुर्घटनाओं में चोट लग सकती है और चर्म रोग हो सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (18:06:2003 से 14:08:2003)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। चूंकि राहु परिणाम प्रदान करने का काम करेगा, अतः आपको बहुत आवश्यक धन का लाभ होगा, लेकिन अनैतिक गतिविधियों के द्वारा। मंगल ऐसे अनैतिक कामों में दखल देने की कोशिश करेगा और आपकी प्रगति को बाधित कर सकता है अर्थात आपके जीवनसाथी या माता–पिता ऐसे कार्यों का विरोध कर सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (14:08:2003 से 04:10:2003)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आय निरन्तर बनी रहेगी और आपको हर काम में सफलता मिलेगी। अजनबी लोग भी आपको धन और अन्य वस्तुयें प्रदान करेंगे। पिछली दशा की तुलना में आपको अधिक संतोष प्राप्त होगा। हालाँकि, बेतुकी बातों पर आपकी बहस करने की प्रवृत्ति आपको मुश्किल में डाल सकतीहै।

शनि प्रत्यंतर्दशा (04:10:2003 से 04:12:2003)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है। आपका रूझान विदेश यात्रा पर जाने का हो सकता है, जहां आपको विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको बुखार, हार्निया और आँखों के रोगों की शिकायत हो सकती है। आपको हर समय ऐसा महसूस हो सकता है, कि आपकी किसी भी समय मृत्यु हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (04:12:2003 से 27:01:2004)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है, जिसकी अवधि 1 मास, 23 दिन, 13 घंटे और 12 मिनट होगी। आपके रोजगार या

व्यापार में धीरे–धीरे प्रगति शुरू हो जायेगी। काफी अप्रत्याशित रूप से कई मिलने वाले लोग आयेंगे। आपऔर आपका परिवार उनकी संगति में एक सुखद समय व्यतीत करेंगे। आपको अप्रत्याशित रूप से कोईउपहार मिल सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (27:01:2004 से 19:02:2004)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा अनिश्चितताओं से पूर्ण हो सकती है। आपको मिले–जुले (अति शुभ औरअति अशुभ) परिणाम प्राप्त होंगे। संबंधी और मित्र आपके घरेलू मामलों में दखल देने की कोशिश कर सकते हैं। आपकी आय से व्यय अधिक हो सकते हैं। आपके सगे भाई बहन सम्पत्ति के मामले में समस्यायेंपैदा करने की कोशिश कर सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (19:02:2004 से 23:04:2004)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत आनन्ददायक दशा होगी। जुए और अन्य सट्टों में आपको सफलतामिलेगी। हालाँकि, ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में आपकी रूचि अधिक होगी और आप ऐसे सुखों पर भारी धन व्यय करेंगे। आप इस प्रत्यंतर्दशा के आरम्भ में जो कुछ प्राप्त करेंगे, वह इस दशा के अन्त में समाप्त हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (23:04:2004 से 12:05:2004)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। राजनीति से जुड़े लोगों, मंत्रियों और अन्य नौकरशाहों के लिए यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। आपको निवेश के मामले में तत्काल निर्णय करना चाहिए। यदि आप ऐसा करेंगे, तो आपको बहुत अधिक लाभ होगा। विद्यार्थियों के लिए भी यह एक बहुत उत्तम दशा होगी।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (12:05:2004 से 13:06:2004)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। चंद्रमा आपको मानसिक शांति प्रदान करेगा, लेकिन राहु उसमें व्यवधान डालने की कोशिश कर सकता है। मित्र और संबंधी एकत्र होंगे और आपकी हर संभव सहायता करेंगे। आपके सगे भाई–बहन भी आपसे सहानुभूति रखेंगे और आपकी मदद करेंगे।

गुरू दशा (13:06:2004 से 13:06:2020)

वर्तमान समय में आपकी बृहस्पति की महादशा चल रही है और बृहस्पति आपकी कुण्डली में पांचवें भाव में स्थित है। बृहस्पति की दशा के दौरान, आपको संतान का सुख मिलेगा। आपके प्रेम प्रसंग फलित होंगे। आप संतानों और प्रेमिका के द्वारा धन प्राप्त करेंगे। एक डॉक्टर, रसायनज्ञ, कम्पाउन्डर के रूप में आप उत्तम आय प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप सरकारी सेवा में हैं, तो आपकी पदोन्नति हो सकती है। पुत्र कीपरीक्षाओं और अन्य क्रियाकलापों में सफलता आपको प्रसन्नता प्रदान करेगी। आपकी कुण्डली में पांचवां भाव मकर या कुम्भ का है और बृहस्पति के वहां पर स्थित होने पर आपको संतान की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

वर्तमान समय में आपकी बृहस्पति की महादशा चल रही है और बृहस्पति आपकी कुण्डली में मकर राशि मेंस्थित है। बृहस्पति की अपनी दशा के दौरान, आप दूसरों के लिए काम करेंगे, आपका अपने नजदीकी

और प्रियजनों से अलगाव हो सकता है, आप गुप्त रोगों से ग्रसित हो सकते हैं, आपको धन की भारी हानिहो सकती है। कम उम्र में बाल सफेद हो जाने से आप काफी उम्रदराज दिख सकते हैं।

गुरू अन्तर्दशा (13:06:2004 से 01:08:2006)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए बहुत उत्तम साबित होगी। आपको उचित कोटि का उत्तम भाग्य, भारीसम्मान और विकसित उत्कृष्ट गुण प्राप्त होंगे। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपको सरकार की तरफ से पहचान मिल सकती है। विद्वान, उपदेशकों और दूसरे धर्मपरायण लोगों से आपको मिलने के अवसर प्राप्त होंगे। आपके उत्साह और शारीरिक जीवनशक्ति में निरन्तर बढ़ोत्तरी होगी। आपके शरीर और दिमाग दोनों में एक विशिष्ट प्रकार की शांति और सौम्यता विद्यमान होगी। आपके परिवार में कई वैवाहिक समारोह आयोजित होंगे। आपको पत्नी सुख और संतानों– विशेषकर पुत्रों– से खुशियां मिलेंगी। आपके सभी कार्य बहुत सहजता के साथ पूर्ण होंगे। आपकी आय में बढ़ोत्तरी होगी और कोष धनसे पूर्ण रहेंगे। यदि बृहस्पति कमजोर भी है, तो भी आप इस अन्तर्दशा के दौरान कुछ लाभकारी परिणामों का आनन्द अवश्य ही उठायेंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (13:06:2004 से 25:09:2004)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस प्रत्यंतर्दशा के परिणाम बृहस्पति की स्थिति पर निर्भर करेंगे। इसके दौरान आपको सुखद परिणाम प्राप्त होंगे। आपके घर में कोई शुभ समारोह आयोजित होगा। आपका विवाह भी होसकता है। यदि आप नौकरी कर रहे हैं। तो आप पदोन्नति की आशा कर सकते हैं और यदि व्यापार कर रहे हैं, तो आपको लाभ प्राप्त होगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (25:09:2004 से 27:01:2005)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस प्रत्यंतर्दशा के दौरान आपकी आय व्यय से कम हो सकती है। आपमें असुरक्षाकी भावना जन्म ले सकती है। आप नशे के आदी हो सकते हैं। परिवार के सदस्यों के साथ प्रायः आपका झगड़ा हो सकता है। अपने परिवार में बुरी छवि होने के बावजूद भी आपको समाज में नाम और यश मिलेगा। संतान का स्वास्थ्य आपकी चिन्ता का कारण हो सकता है। आपको अपने घर के बाहर अधिक खुशी मिलेगी।

बुध प्रत्यंतर्दशा (27:01:2005 से 17:05:2005)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली प्रत्यंर्दशा में किये गये उत्तम कार्यों का परिणाम आपको इस प्रत्यंर्दशा में मिलेगा। आपको अपने उद्देश्यों में आसानी से सफलता मिलेगी। आपको ईश्वर की भरपूर कृपा प्राप्त होगी। आप प्रायः विदेशों की यात्रायें कर सकते हैं और उनसे धन अर्जित कर सकते हैं। आपको पानी से सावधान रहना चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (17:05:2005 से 02:07:2005)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस प्रत्यंतर्दशा के दौरान आपके जीवनसाथी और संतान को कष्ट हो सकता है। आपको बहुधा रोगों और अपने सभी कामों में असफलता का सामना करना पड़ सकता है। आपको

हथियारों या वाहन दुर्घटना के कारण कोई चोट लग सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (02:07:2005 से 08:11:2005)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह प्रत्यंतर्दशा बहुत उत्तम होगी, आपको दशा के शुरू में धन, नाम, सम्मान मिलेगा, लेकिन अचानक सब प्राप्तियां लुप्त हो सकती हैं। आप धार्मिक आराधना में अधिक रूचि लेंगे और इस कारण आप विभिन्न तीर्थों की यात्रायें करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (08:11:2005 से 17:12:2005)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। राजनीतिज्ञों और नौकरी करने वाले लोगों के लिए यह प्रत्यंतर्दशा अति उत्तम है। यदि आप राजनीति में हैं, तो एक महत्वपूर्ण पद प्राप्त करेंगे और यदि नौकरी कर रहें हैं, तो आपकी पदोन्नति होगी। आपकी शक्ति और अधिकार में वृद्धि होगी। आपको सरकारी समर्थन मिलेगा तथा विभिन्न समारोहों और आयोजनों में शामिल होने का आप निमंत्रण पायेंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (17:12:2005 से 20:02:2006)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह प्रत्यंतर्दशा आपके लिए शांतिपूर्ण और आनन्ददायक होगी। आप युवा लड़कियों से सम्पर्क बनायेंगे और उनसे आनन्द प्राप्त करेंगे या घनिष्ठता बढ़ायेंगे, किन्तु आपको इससेपरेशानियां हो सकती हैं। आपके शत्रु पीछे हट सकते हैं या आपके मित्र बन सकते हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको अधिक महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां मिलेंगी।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (20:02:2006 से 07:04:2006)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने मित्रों और संबंधियों के साथ–साथ अपने शत्रुओं से भी धन प्राप्त होगा। आपको भूमि और भवन की प्राप्ति होगी। आपको अपनी आँखों की उचित देखभाल करनी चाहिए। आप तीव्र सिरदर्द, बवासीर और गुदा के आस–पास खुजली से ग्रस्त हो सकते हैं। निवेश के लिए यह सबसे उत्तम समय है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (07:04:2006 से 01:08:2006)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस प्रत्यंतर्दशा में परिणामों की प्रकृति में बहुत बदलाव आ सकते हैं। आपके संबंधीआपकी व्यापारिक प्रगति में बाधायें खड़ी कर सकते हैं। आप अपना निवासस्थान बदल सकते हैं। आपको त्वचा रोग हो सकता है। शत्रु आपको परेशान करने की कोशिश कर सकते हैं। घरेलू मामलों या व्यापार में उनका दखल सहने योग्य नहीं होगा।

शनि अन्तर्दशा (01:08:2006 से 12:02:2009)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। मलिन/चरित्रहीन औरतों के साथ संबंध रखने के कारण आपको विभिन्न प्रकार के यौन रोग हो सकते हैं।आपको नशे की लत लग सकती है। आपके परिवार के सदस्यों के बीच संबंध मधुर नहीं हो सकते हैं।

हालांकि, उत्तम कार्यों के कारण आपको नाम और यश प्राप्त होगा। आपकी आय व्यय से कम होगी। आपके दिमाग में किसी प्रकार का भय व्याप्त हो सकता है। आप संतानों की असुरक्षा की भावना से ग्रस्त हो सकते हैं। आपकी कुण्डली में शनि की अनुकूल या प्रतिकूल चाहे जो भी प्रकृति हो, वह केवल अपने अन्तर्निहित गुण को ही प्रदर्शित करेगा। हालांकि, उसके किसी भी अशुभ प्रभाव को दशा का स्वामी बृहस्पति नियंत्रित करेगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (01:08:2006 से 26:12:2006)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको महिला समुदाय से कष्ट हो सकता है। आपका अपने से उम्र में बड़ी महिला के साथ घनिष्ठ संबंध हो सकते हैं। आप बुखार, वायु या कफ विकार, लकवा, आतों में दर्द आदि से पीड़ित हो सकते हैं। संबंधियों से भी आपको कष्ट हो सकता है। आप भारी मानसिक व्यथा से ग्रस्त होसकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (26:12:2006 से 06:05:2007)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह अति उत्तम दशा है और लगभग 90प्रतिशत लोग इस दशा के प्रभाव में हैं। अपने खोये हुए धन और संपत्ति को प्राप्त करने का यह वास्तविक समय है। निवेश करने और भूमि व भवनखरीदने के लिए यह सबसे उत्तम समय है। यदि आपने इस दशा के दौरान कुछ प्राप्त नहीं किया, तोजीवन भर आप कुछ नहीं प्राप्त कर सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (06:05:2007 से 29:06:2007)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि आपने अपनी मौज–मस्ती और खर्चों पर नियंत्रण नहीं रखा तो पिछली दशा में प्राप्त हर चीज इस दशा के दौरान बर्बाद हो सकती है। आप कई रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (29:06:2007 से 30:11:2007)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह अपने दोषों और कमजोरियों को अहसास करने का समय है। आप उपद्रवी परिस्थितियों से धीरे–धीरे उपर उठेंगे। इस दशा के अन्त में आप अपने नुकसान की भरपाई करेंगे। शनि और शुक्र से संबंधित व्यापार इस दशा के दौरान लाभकारी होगा। आपको औरतों से सावधान रहना चाहिए। वे अपने लाभ के लिए केवल आपकी मित्र बनेंगी।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (30:11:2007 से 15:01:2008)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में की गयी गलती का प्रभाव आपको विषम परिणामों के रूप में इस दशा में देखने को मिल सकता है। आपकी अवनति का कारण एक महिला हो सकती है, जिसके साथ आपके घनिष्ठ संबंध रहे हैं। यदि आप राजनीति से जुड़े हैं, तो आपको आशावान होना होगा। आपको कोईनया गठजोड़ बनाना चाहिए या अपने सहकर्मियों का विरोध करना चाहिए।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (15:01:2008 से 01:04:2008)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके जीवनसाथी, संतान और माता–पिता को खतरा हो सकता है। आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि आपकी सारी योजनायें सफल होंगी। लेकिन अचानक सम्पूर्ण तंत्र और विचार असफल हो सकते हैं और आपको धन का भारी नुकसान हो सकता है। ऐसे में केवल ईश्वर आपकी रक्षा कर सकता है। अतः आपको पूरी तरह से अपने को भगवान की उपासना में समर्पित कर देना चाहिए।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (01:04:2008 से 25:05:2008)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आर्थिक दशा बहुत उत्तम होगी, लेकिन आपको परिवार में एक के बाद एककई आघातों का सामना करना पड़ सकता है। संबंधी आपको बहुत नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं। आप लम्बी यात्रायें करेंगे और धन प्राप्त करेंगे।

राहु प्रत्यंतर्दशा (25:05:2008 से 12:10:2008)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा कुछ हद तक थकाने वाली हो सकती है। कर्जदार आपको परेशान कर सकते हैं। आपके कई लालसापूर्ण विचार हो सकते हैं। आपका सबसे सभी स्तर पर मतभेद हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (12:10:2008 से 12:02:2009)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक लाभप्रद दशा होगी। पहले शुरू की गयी किसी योजना में आपको सफलता मिलेगी। हालाँकि, आपको जीवनसाथी का सुख नहीं मिल सकता है। वह आपकी प्रगति में बाधा बन सकती हैं। आपको अपने दिमाग से निर्णय लेना चाहिए।

बुध अर्न्तदशा (12:02:2009 से 20:05:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। आपको ईश्वरीय कृपा प्राप्त होगी। आप अपने उपक्रमों में आसानी से सफलता प्राप्त करेंगे। प्रतियोगिताओं में अगर भाग ले रहे हैं, तो आप उनमें अपनी सफलता का परचम लहरायेंगे। समग्र रूप से यह अन्तर्दशा आपके जीवनसाथी और संतान के लिए उत्तम होगी। मित्र आपकी मदद के लिए आगे आयेंगे। यदि आप हिन्दु हैं, तो आपको अपने कुटुम्ब के भगवान और अग्नि देवता की पूजा करनी चाहिए। आप उत्तम कार्यों को करने में रूचि लेंगे। आप सम्पन्न होंगे तथा आपको वाहनों का लाभ प्राप्त होगा। आप निरन्तर विदेशों की यात्रा करेंगे। आपको पानी से सावधान रहना चाहिए। आप सिर से संबंधित किसी रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (12:02:2009 से 09:06:2009)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप अपने पेशे या व्यापार में बदलाव कर सकते हैं। आपको जुए की लत लग सकती है और आप अपना धन गवाँ सकते हैं। हालाँकि विभिन्न स्रोतों से आप धन अर्जितकरेंगे और मौज–मस्ती के लिए उसको खर्च कर सकते हैं। अपने जीवनसाथी और संतान के कारण आप चिन्तित हो सकते हैं। आपको गले में विकार, कफ और सर्दी की शिकायत हो सकती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (09:06:2009 से 28:07:2009)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह अनिश्चितताओं से भरी दशा है। आप गैरमैत्रीवत और दुष्ट प्रकृति के लोगों सेधिर सकते हैं। आपको जुए की लत लग सकती है और आप अपना धन गवाँ सकते हैं। आपको एक पीड़ादायक और दुखी जीवन व्यतीत करना पड़ सकता है। आप मिर्गी या उन्माद से ग्रस्त हो सकते हैं। जीवनसाथी और संतान आपकी देखभाल करने से विमुख हो सकते हैं। आपको असीमित पाप कर्म करने परबाध्य होना पड़ सकता है। कोई दुष्ट शक्ति इसके लिए जिम्मेदार हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (28:07:2009 से 12:12:2009)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप पाप से युक्त गतिविधियों से बाहर निकलने की कोशिश कर सकते हैं, आप ईश्वर के मदद की कामना कर सकते हैं और उसकी अराधना में लगे रहेंगे। अन्ततः आप ऊँचे स्तर का ज्ञान प्राप्त करेंगे और अपने पापों से मुक्त होंगे। आप अपने परिवार के साथ स्वादिष्ट भोजन का आनन्द प्राप्त करेंगे। जीवनसाथी और संतान आपका समर्थन करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (12:12:2009 से 23:01:2010)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा सबसे उत्तम मानी जाती है। आपकी सभी महात्वाकांक्षायें पूरी होंगी। आपको बिना अधिक प्रयास के प्रत्येक चीज मिलेगी। आपको रोगों से मुक्ति मिलेगी। आपके जीवनसाथी, संतान, संबंधी और मित्र आपके उत्तम कार्यों की प्रशंसा करेंगे और आपको खुला सहयोग देंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (23:01:2010 से 02:04:2010)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। ये तीनों ग्रह बृहस्पति, बुध और चंद्रमा किसी व्यक्ति केद्वारा सफलता प्राप्त करने के लिए तीन मूल जरूरतों, क्रमशः ज्ञान, बुद्धिमता और दिमाग की शुद्धता को व्यक्त करते हैं। जब दशा इनसे संबंधित होती है, तो कोई भी दुष्ट शक्ति आपको सफलता प्राप्त करने से नहीं रोक सकती है– जैसाकि आप इसकी जानकारी पाकर पहले से तैयारी कर सकेंगे। आप कोई भी काम करने के लिए स्वतंत्र होंगे। आपकी सफलता निश्चित है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (02:04:2010 से 20:05:2010)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको काफी संघर्षों और विवादों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन आप इस जीवन संघर्ष पर विजय प्राप्त कर लेंगे। आपके शत्रु परास्त होंगे। आप निडर होकर काम करेंगे और सफलता को प्राप्त करेंगे। हालाँकि, आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए–जैसाकि विभिन्न कामों में बहुत अधिक व्यस्तता आपके स्वास्थ्य पर अंततः बुरा प्रभाव डाल सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (20:05:2010 से 21:09:2010)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आय उत्तम होगी और आप अपने खोये हुए पद और धन को पुनः प्राप्त करेंगे। आपको समाज के लिए किये गये अपने उत्तम कार्य के लिए प्रशंसा मिलेगी, आप पर ईश्वर की

प्रचुर कृपा रहेगी।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (21:09:2010 से 09:01:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको लगभग अपने हर मामले में सफलता मिलेगी। यदि आपको कोई रोग है, तो आपको उससे पूरी राहत मिलेगी। आपको अपने उत्तम काम के लिए समाज में प्रशंसा प्राप्त होगी। ईश्वर की आप पर भरपूर कृपा होगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (09:01:2011 से 20:05:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको मिश्रित फल प्राप्त होंगे। यद्यपि आपको विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होगी, फिर भी नशे की लत और अन्य सुखों की प्राप्ति में रत रहने के कारण आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। आप लेखन या प्रकाशन का काम कर सकते हैं। आपको विभिन्न रोगों से राहत मिलेगी।

केतु अन्तर्दशा (20:05:2011 से 25:04:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। आपको हथियारों से खतरा हो सकता है। आप शरीर में फोड़ों की समस्या से ग्रसित हो सकते हैं। आपको नौकरोंके साथ गलतफहमी का शिकार होने और मानसिक रूप से व्यथित होने की संभावना है। आपके जीवनसाथी और संतानों को किसी तरह का कष्ट हो सकता है। कुण्डली में मौजूद अन्य प्रभाव के अनुसारआपका स्वास्थ्य खराब या बड़ों व मित्रों से अलगाव हो सकता है। आप दूरस्थ स्थानों की यात्रायें कर सकते हैं और आपको भारी तथा अपरिहार्य खर्चों का सामना करना पड़ सकता है। आपको केतु के अशुभ प्रभाव से बचने के लिए महामृत्युंजय मंत्र का जाप करना चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (20:05:2011 से 09:06:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको भवन और भूमि की प्राप्ति होगी। भूमि और अप्रत्याशित स्रोत से आप धन प्राप्त करेंगे। यदि आप संतानोत्पत्ति में सक्षम हैं, तो आपको भाग्यशाली पुत्र प्राप्त होंगे। आपका रूझान धार्मिक कार्यों में होगा।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (09:06:2011 से 05:08:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको उत्तम जीवनसाथी का सुख नहीं प्राप्त हो सकता है। आप और आपके जीवनसाथी के बीच प्रायः विवाद हो सकते हैं। हालाँकि आपका वैवाहिक संबंध बना रहेगा। आप आर्थिक रूप से एक उत्तम दशा की आशा कर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (05:08:2011 से 22:08:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सरकारी अधिकारियों के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने परिवार के लोग नापसन्द कर सकते हैं और आप नीच लोगों की संगति में पड़ सकते हैं, जोआपको पथभ्रष्ट कर सकते हैं और आपका जीवन बर्बाद कर सकते हैं। आपके परिवार में किसी को

मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है, जिससे आपके परिवार का वातावरण पूरी तरह से बदल सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (22:08:2011 से 19:09:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आपको अपनी प्रगति में कई सारी समस्याओं और बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। संतान के कारण आप चिन्तित हो सकते हैं। यदि आप अविवाहित हैं, तो इस दशा के दौरान आपके विवाह की संभावना है। यदि आपकी माता इस दशामें किसी संतान को जन्म देती हैं, तो आपकी माता को बहुत कष्ट हो सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (19:09:2011 से 09:10:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आध्यात्मिक प्रगति होगी। आपकी आय काफी हद तक संतोषप्रद होगी, लेकिन व्यय का तरीका बहुत निकृष्ट हो सकता है। अतः यदि आपने सावधानी नहीं बरती तो आप सारा अर्जित धन खो सकते हैं। इस प्रत्यंतर्दशा के दौरान आपको गुदा रोग या बवासीर या पीलिया होने की संभावना है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (09:10:2011 से 29:11:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम मुख्यतः राहु की स्थिति पर निर्भर करेंगे। यदि राहु बली है, तो आपकी सभी महत्वाकांक्षायें पूरी होंगी। आपका व्यापार बहुत तेजी से फले–फूलेगा। आपको भूमि, भवन, वाहन और खुशहाल जीवन के लिए सभी आवश्यक चीजें प्राप्त होंगी। यदि राहु कमजोर है, तो परिणाम प्रतिकूल हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (29:11:2011 से 14:01:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह प्रत्यंतर्दशा उत्तम होगी। आपके घर पर शुभ समारोह आयोजित होंगे। यदि आप अविवाहित हैं, तो आपका विवाह हो सकता है। आपको संतान की प्राप्ति होगी। आप परिक्षाओं में सफल होंगे। व्यापार में आपको लाभ मिलेगा। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति प्राप्त होगी। आपको रोगों से छुटकारा मिलेगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (14:01:2012 से 08:03:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपने अपने अधिकार से अधिक सुखों को प्राप्त कर लिया है। अतः आपको अत्यधिक सुखों का आनन्द प्राप्त करने की कीमत चुकानी पड़ सकती है। परिस्थितियां कुछ ऐसी बन सकती हैं, कि आप उनके आगे कुछ ना कर पाने को विवश हो सकते हैं। हर तरफ आपको हानि का सामना करना पड़ सकता है। आपके घर पर हर समय किसी को रोग बना रह सकता है। शत्रु आपको और आपके परिवार को लगातार परेशान कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (08:03:2012 से 25:04:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आखिरकार आपको दैवीय मदद प्राप्त होगी। आपको ऋण और कर्जे से राहत मिलेगी। यह पूर्ण रूप से एक हानिरहित दशा होगी। यदि आपने अपने दिमाग का उचित प्रयोग किया तो आपके कार्य के हर क्षेत्र में प्रगति होगी। जीवनसाथी और संतान का आपको पूरा सहयोग मिलेगा। आपके विवाह और पदोन्नति की संभावना है।

शुक्र अन्तर्दशा (25:04:2012 से 25:12:2014)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशाके दौरान, आप धन संग्रह करेंगे तथा जीवनसाथी, संतान, संबंधियों और मित्रों से सुख एवं खुशियोंप्राप्त करेंगे। आपके मवेशियों की संख्या, अनाज के भंडार और सामान्य संपन्नता में वृद्धि होगी। आप धार्मिक मामलों में गहरी रूचि लेंगे। आप ईश्वर के संबंध में जानने के उत्सुक होंगे तथा इसके लिए धर्मपरायण एवं साधुजनों पर निर्भर रहेंगे। कुछ हद तक आप अपने उद्देश्य में सफल होंगे, अर्थात आप कुछ वास्तविक उपदेशकों के सम्पर्क में आयेंगे, जिनसे आप और अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सफल होंगे। हालांकि, दैवीय उपदेशक के छद्म वेश में छिपे हुए लोगों से आपको धोखा भी हो सकता है। आपके शत्रुओं की संख्या बढ़ सकती है और बिना किसी कारण के प्रायः झगड़े हो सकते हैं। आपको महिलाओं केकारण अपमान का सामना करना पड़ सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (25:04:2012 से 05:10:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। विभिन्न स्रोतों से आपको धन प्राप्त होगा। लेकिन इस आय का एक बड़ा भाग आपमौज–मस्ती और मनोरंजन में व्यय कर सकते हैं। आपको वाहन की प्राप्ति होगी। आप सभी नुकसानों की भरपाई करने और एक आनन्दपूर्ण जीवन जीने में सक्षम होंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (05:10:2012 से 23:11:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। आप ऊँचे राजनीतिक पदों पर आसीन लोगों से लाभ प्राप्त करेंगे और उन लाभों की मदद से आप कोई लाभकारी व्यापार करने में सक्षम होंगे। हालाँकि, आपकोमहिलाओं से बहुत सावधान रहना चाहिए।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (23:11:2012 से 12:02:2013)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आय से व्यय अधिक होगा। आप स्त्रियों के सम्पर्क में आ सकते हैं, जिन्हेंव्यापारिक या आर्थिक सलाह आदि के रूप में आपकी मदद की आवश्यकता हो सकती है। इस मदद के दौरान आपके साथ–साथ उनको भी लाभ होगा। इस दौरान आपके उनसे संबंध बन सकते हैं, जिससे आपके और आपके जीवनसाथी के बीच कलह उत्पन्न हो सकती है। आपको सिर, दांत, नाखून और उदर के रोग हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (12:02:2013 से 10:04:2013)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा गतिविधियों से पूर्ण होगी। आप व्यापार या व्यवसाय या नौकरी जो भी कर रहे होंगे, उसमें बहुत व्यस्त होंगे। इस कारण से आप अपने जीवनसाथी और संतान को समय नहीं दे पायेंगे। हालाँकि, आप उनको खुश करने के लिए प्रत्येक काम करेंगे, लेकिन वह सब बेकार जायेगा। वे

आपकी समस्या को नहीं समझेंगे और आपसे अनावश्यक झगड़ा कर सकते हैं। आपको सम्मान मिलेगा। आपको रक्तचाप, बवासीर या पीलिया की शिकायत हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (10:04:2013 से 03:09:2013)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अज्ञात स्रोतों से अप्रत्याशित धन का लाभ होगा। आप खोई हुई सम्पत्ति प्राप्त कर सकते हैं। अब तक के अनसुलझे संपत्ति विवाद इस दशा के दौरान सुलझ जायेंगे और आप एक आरामदायक और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (03:09:2013 से 11:01:2014)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। भूमि और संपत्ति प्राप्त करने के लिए यह उत्तम समय है। आप अपनी गतिविधियों के क्षेत्र में आसानी से सफलता प्राप्त करेंगे। आपको कोई भी नयी योजना इस दशा के दौरान शुरू नहीं करनी चाहिए। आप केवल अपने मौजूदा व्यापार को विस्तृत या विकसित कर सकते हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपके रोजगार में बदलाव हो सकता है और आपका वेतन बढ़ सकता है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (11:01:2014 से 14:06:2014)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके जीवन में प्रायः बदलाव होंगे। आपको अधिकतम शुभ परिणामों का आनन्द प्राप्त होगा।

बुध प्रत्यंतर्दशा (14:06:2014 से 30:10:2014)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा में आपको अति उत्तम परिणाम मिलेंगे। आपका या आपके भाई/बहन का विवाह हो सकता है। आपके घर में शुभ समारोह सम्पन्न होंगे। आपके संबंधी आपके हर प्रयास में मदद करेंगे। आप शत्रुओं को परास्त करेंगे। आप लेखन, प्रकाशन या ट्यूशन से आय प्राप्त कर सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (30:10:2014 से 25:12:2014)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा आध्यात्मिक पहलू पर अधिक जोर देती है। इस दशा में नास्तिक भी आस्तिक हो जाता है। आप तीर्थस्थानों की यात्रा करेंगे। आप भविष्यवक्ताओं और तांत्रिकों से परामर्श करनेमें धन की बर्बादी कर सकते हैं। आपको अपने मित्रों से सावधान रहना चाहिए– जैसाकि वे आपके कामों का अनुमोदन करके आपको परेशानी में डाल सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (25:12:2014 से 13:10:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशाके दौरान शत्रु पीछे हटेंगे। वे या तो अपनी गलती मानकर क्षमा मांग सकते हैं या हार कर भाग जायेंगे। आपकी शक्ति और अधिकार में बढ़ोत्तरी होगी और आपको सरकारी सम्मान प्राप्त होगा। आपको शाही समारोहों का आमंत्रण प्राप्त होगा। आपमें आत्मविश्वास की भावना का विकास होगा तथा आप

साहसिक कार्यों को करके सफलता प्राप्त करेंगे। आप निरन्तर छोटी यात्रायें करेंगे एवं ज्ञान के कई नये क्षेत्रों को देखने और समझने के आपको अवसर मिलेंगे। आप अपने पहनावे में विशेष रूचि लेंगे, ताकि आप अधिक आकर्षक दिख सकें और अपने आस–पास के लोगों को आकर्षित कर सकें। हालांकि, आप अचानकअवनति का सामना कर सकते हैं और सरकारी अधिकारियों के द्वारा दंडित किये जा सकते हैं। यह भी हो सकता है कि आप कस्बे में जाकर बस जायें और सुख तथा विलास का आनन्द प्राप्त करें। आपकी कुण्डली में सूर्य कमजोर है, आपको सरकार और शत्रुओं के कारण परेशानियां उठानी पड़ सकती है और आप अक्खड़ व असभ्य व्यवहार के कारण भारी धन हानि का सामना कर सकते हैं। अतः आपको सूर्य मंत्र का जाप और सूर्य नमस्कार (उगते और डूबते सूर्य के सामने साष्टांग दण्डवत) करना चाहिए।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (25:12:2014 से 09:01:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा है। आपको सामान्य संपन्नता अवश्य प्राप्त होगी। आप भूमि, भोजन और वाहन प्राप्त करेंगे। परीक्षाओं में बैठने वाले विद्यार्थियों के लिए यह एक उत्तम दशा है। यदि आप बेराजगार हैं, तो आपको रोजगार मिलेगा। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपकी पदोन्नतिहोगी और यदि आप व्यापारी हैं, तो आप लाभ कमायेंगे। आप शत्रुओं को परास्त करेंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (09:01:2015 से 02:02:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपमें ज्ञान, अधिकार और बुद्धि का विकास होगा। यदि आप विवाहित हैं, तो ये आपके लिए उत्तम नहीं हो सकते हैं– जैसाकि आप और आपके जीवनसाथी के बीच ये गुण व्यक्तित्व मतभेद को जन्म दे सकते हैं। बाहरी लोग आपके विचारों और कार्यक्रमों का खुला समर्थन करेंगे, जबकि आपकी जीवनसाथी उनका विरोध कर सकती हैं और आपके व्यावसायिक भविष्य तथा अन्य मामलों में दखल दे सकती हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (02:02:2015 से 19:02:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा आडम्बर और दिखावे की हो सकती है। आपको शक्ति और अधिकार अवश्य प्राप्त होंगे। लेकिन आप उनका गलत प्रयोग करके परेशानी में पड़ सकते हैं। आपको अपने प्रतिद्विन्दियों से बहुत अधिक सावधान रहना चाहिए। अन्यथा अगली दशा के दौरान आपको अपूर्णिय नुकसान हो सकते हैं। इन सबके बावजूद आप सफलता के साथ आगे बढ़ेंगे।

राहु प्रत्यंतर्दशा (19:02:2015 से 04:04:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि आप लोगों पर नजर और उनसे दूरी बनाकर नहीं रखेंगे, तो आपके बहुत नजदीकी लोग आपको धोखा दे सकते हैं। आपको भारी धन हानि हो सकती है। रक्त की अशुद्धता के कारण आपको रोग हो सकते हैं। आपको अपने जीवनसाथी और संतान के कारण दुख हो सकता है। इस दुख के दो कारण हो सकते हैं– पहला उनकी बीमारी और दूसरा आपके साथ सामंजस्य रखने में उनका हठी रवैया।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (04:04:2015 से 13:05:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम बृहस्पति की स्थिति पर निर्भर करेंगे। यदि बृहस्पति शुभ है, तो आपको उसके सभी उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। दूसरे शब्दों में, आपके सम्मान में वृद्धि होगी, पुत्र की प्राप्ति होगी और आपको उत्तम वस्त्रों एवं धन का लाभ होगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (13:05:2015 से 28:06:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको विरोधों का सामना करना पड़ सकता है। विचार, कार्यक्रम और अधिकारों का एक दूसरे के साथ टकराव हो सकता है। आपको किसी नयी योजना को स्थगित कर देना चाहिए– जैसाकि आपका अस्थिर दिमाग उसे बेकार कर सकता है। शत्रु आपको अधिकतम कष्ट पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन बहस्पति की कृपा के कारण आप उनको परास्त करेंगे और सफलतापूर्वक परेशानियों से बाहर निकल आयेंगे।

बुध प्रत्यंतर्दशा (28:06:2015 से 09:08:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके लाभ में वृद्धि होगी। आपको पदकों का सम्मान मिलेगा। आप भूमि, नया वाहन और अन्य सम्पत्तियां खरीदेंगे। आपका विवाह हो सकता है या आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (09:08:2015 से 26:08:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है। आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकताहै। आपके जीवन को खतरा हो सकता है। आपके आस–पास के लोग आपको धोखा दे सकते हैं और आपकी धन हानि के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (26:08:2015 से 13:10:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके जीवन की गति धीमी और स्थिर हो सकती है। आपको ना तो कोई तनाव होगा और ना ही कोई खुशी। आपको कभी–कभी धन का लाभ होगा और आप महिलाओं पर एवं मनोरंजनमें धन व्यय कर सकते हैं। आपका विवाह हो सकता है। आप ईश्वर की पूजा में अपना समय व्यतीत कर सकते हैं।

चन्द्रमा अन्र्तदशा (13:10:2015 से 12:02:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। यह मुख्यतःआपके लिए आनन्द का समय है। आपको विभिन्न महिलाओं के साथ यौन सुख की प्राप्ति होगी या यदि आप शर्मीली प्रकृति के हैं, तो हो सकता है कि आप शारीरिक सुख ना प्राप्त कर सकें, लेकिन आपकारूझान ऐसे कार्यों की तरफ हो सकता है। कुछ मामलों में ऐसा देखने में आया है कि अत्यधिक शर्मीले प्रकृति के लोग, जो स्वयं पहल नहीं कर सकते हैं, विपरीत लिंग के लोग जानबूझकर यौन सुख काआनन्द लेने वाली परिस्थितियां तैयार कर देते हैं।

शत्रु फिलहाल पीछे हट सकते हैं या आपके मित्र बन सकते हैं। यदि आप सरकारी नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति के साथ कोई महत्वपूर्ण पद या विभाग मिल सकता है। आपके ज्ञान में वृद्धि होगी।

विपरीत लिंग के लोगों के प्रति आपके झुकाव के बावजूद आप अपने जीवनसाथी तथा संतान से प्रेम करेंगे एवं उनका ख्याल रखेंगे। आप सदा उनके साथ रहना चाहेंगे। यदि चंद्रमा आपकी कुण्डली में कमजोर भी है, तो भी आप इस अन्तर्दशा के दौरान कुछ लाभकारी परिणामों का आनन्द उठायेंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (13:10:2015 से 23:11:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा आपके लिए शुभ और अति उत्तम होगी। आप धार्मिक परम्पराओं का अनुसरण करेंगे और भिक्षा बाटेंगे। आपकी सोच परिपक्व होगी और गलत सही में अन्तर करने का आपमें गुण विकसित होगा। आपको सरकार से समर्थन मिलेगा। विभिन्न स्रोतों से आपको धन कालाभ होगा और संतान संपन्न होंगी। संतान से सुख मिलेगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (23:11:2015 से 21:12:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अशुद्ध रक्त, कफ, मानसिक वेदना, आग, विद्युत और अन्य गर्म वस्तुओं के कारण होने वाले विकारों से ग्रस्त हो सकते हैं। चोरों और शत्रुओं के कारण आपको धन की हानि हो सकती है। आपका स्थानान्तरण हो सकता है या आपको प्राप्त पद से आपकी अवनति हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (21:12:2015 से 04:03:2016)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। राहु आपसे कई बुरे काम करवाने की कोशिश करेगा, लेकिन बृहस्पति और चंद्रमा उन कामों पर नियंत्रण रखाकर आपको बचायेंगे। हालाँकि, राहु आप पर हावी हो सकता है और सभी संभवविपदायें पैदा करने की कोशिश कर सकता है। आपको चर्म विकार और बवासीर होने की संभावना होसकती है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (04:03:2016 से 08:05:2016)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह आपके लिए अति उत्तम दशा होगी। आप गतिविधियों के प्रत्येक क्षेत्र में सही दिशा में काम करेंगे और किसी प्रकार की कोई बाधा नहीं आयेगी। लेखकों और प्रकाशकों के लिए यह सुनहरा अवसर साबित होगा। इस प्रत्यंतर्दशा के दौरान विद्यार्थियों को विभिन्न परीक्षाओं में सफलता अवश्यमिलेगी। साधुजनों से संबंध आपके विश्वास को बढ़ायेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (08:05:2016 से 24:07:2016)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। बृहस्पति और चंद्रमा आपको धन की प्राप्ति करायेंगे, जबकि शनि उसकी हानि करासकता है। आप और आपके माता–पिता के बीच गलतफहमी पैदा हो सकती है। सफलता के कारण आप लालचवश निवेश करेंगे, जिससे आपको हानियां हो सकती हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (24:07:2016 से 01:10:2016)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके बौद्धिक काम में बढ़ोत्तरी होगी। आपकी आर्थिक दशा में सुधार होगा।

आप नया व्यापार शुरू करेंगे या मौजूदा गतिविधियों में विस्तार होगा। हालाँकि, ईर्ष्या के कारण बाहरी दखल हो सकता है। आपको कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ सकता है। शत्रु हर संभव परेशानी पैदाकरने की कोशिश कर सकते हैं। लेकिन अन्ततः आप सभी पर विजय प्राप्त करेंगे और सफल होंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (01:10:2016 से 29:10:2016)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में शत्रुओं और प्रतिस्पर्धियों के द्वारा निभाई गई भूमिका के नकारात्मकपरिणाम अब सामने आ सकते हैं। आपको तीव्र मानसिक तनाव हो सकता है। प्रियजनों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आपको धन हानि हो सकती है। आपको पानी या जलीय पदार्थों से खतरा हो सकता है। अतः पानी से संबंधित कार्यों जैसे तैराकी, नदी या सागर में स्नान आदि से आपकोबचना चाहिए।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (29:10:2016 से 19:01:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप प्रायः लम्बी यात्रायें कर सकते हैं। आपको विदेश में रोजगार मिल सकता है या विदेशों से आयात–निर्यात का व्यापार कर सकते हैं। आप सोना, रत्नों या जलीय पदार्थों का भी व्यापारकर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (19:01:2017 से 12:02:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको रोगों से मुक्ति मिलेगी। हालाँकि पित्तरस और वायु के कारण आपको कभी–कभी विकार हो सकते हैं। आप दुर्घटना के कारण चोटिल हो सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सरकारी अधिकारियों से आपको सहयोग मिलेगा।

मंगल अन्तर्दशा (12:02:2017 से 19:01:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए बहुत उत्तम साबित होगी। आप ना केवल मित्रों और संबंधियों से धन प्राप्त करेंगे,बल्कि शत्रुओं से भी धन प्राप्त करने में सक्षम होंगे। यदि आप सैन्य सेवा में हैं, तो कुछ मिशनों को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए पदोन्नति प्राप्त करेंगे। यदि किसी और क्षेत्र में नौकरी कर रहे हैं, तो भी आपको पदोन्नति, अधिकार और शक्ति प्राप्त हो सकती है। आप भूमि और भवन या कुछ भौतिक सम्पत्तियांप्राप्त करेंगे। विपरीत लिंग के लोगों के साथ मौज–मस्ती करने के तमाम अवसर आपको मिल सकते हैं। आपको धन लाभ होगा। आपको अपनी आँखों की उचित देखभाल करनी चाहिए– जैसाकि आपकी आँखों में चोट लगने की संभावना है। आपको तीव्र सिरदर्द, बवासीर या गुदा के आस–पास खुजलीआदि की भी शिकायत होने की संभावना है। यह अन्तर्दशा आपके परिवार के बड़ों के लिए कुछ उत्तम नहीं हो सकती है। यदि मंगल पीड़ित है, तो उसके अशुभ प्रभाव को मंद करने के लिए और यदि शुभ है तो लाभकारी परिणामों में वृद्धि करने के लिए आपको भगवान कार्तिकेय की प्रशंसा में मंत्रों का जापकरना चाहिए।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (12:02:2017 से 04:03:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको दूसरों पर अधिकार प्राप्त होगा। आप अपने या अपने परिवार के मामलों

की देखरेख करने की बजाय दूसरों के मामलों की देखभाल करेंगे, जिससे आप अपने परिवार से दूर हो सकते हैं। यद्यपि आपको धन प्राप्त होता रहेगा, फिर भी आपको उसकी कमी बनी रह सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (04:03:2017 से 24:04:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा अति उत्तम होगी। आपको बहुत ऊँचा पद प्राप्त होगा और आप बहुत सारा धन अर्जित करेंगे। यदि दूसरी ग्रहीय स्थिति भी अनुकूल हैं, तो आप दयालु हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (24:04:2017 से 08:06:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पूर्व दशा में जो सुधार हुआ था, इस दशा में उसमें और अनुकूलता आयेगी और आपको शुभ तथा लाभकारी परिणाम प्राप्त होंगे। आपको धन, भूमि और भवन प्राप्त होंगे। आपकी सेवा के लिए कई सारे नौकर होंगे। आपका रोजगार पूरे जोरों पर होगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (08:06:2017 से 01:08:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा में आपको बहुत अधिक सावधानी बरतनी चाहिए। आपको विषम परिणाम मिलेंगे। आपने जो भी नाम, यश और धन पिछली कुछ दशाओं में कमाया था, उस पर प्रभाव पड़ सकता हैऔर आपको अपने शत्रुओं के प्रतिरोध का सामना करना पड़ सकता है। हालाँकि, आप इस परेशानी से बाहर निकल आयेंगे और एक सामान्य जीवन व्यतीत करेंगे।

बुध प्रत्यंतर्दशा (01:08:2017 से 19:09:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको विभिन्न प्रकार के परिणाम प्राप्त होंगे। आपको कोई भीनया उपक्रम शुरू नहीं करना चाहिए– जैसाकि इसमें हानि होने की संभावना है। आपको गले या गर्दन, दिमाग से संबंधित गंभीर रोग हो सकते हैं। आपके दिमाग में कैंसर जैसा विकार पैदा हो सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (19:09:2017 से 09:10:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान रोग गंभीर हो सकते हैं और आपके चिकित्सकीय व्यय बढ़ सकते हैं। हालाँकि, ईश्वर की कृपा से आपको समय पर सहायता प्राप्त होगी और सभी संभव चिकित्सकीयआवश्यकतायें पूरी होंगी। बाकी अन्य कारकों पर निर्भर होगा। व्यापार और अन्य क्रियाकलापों में गिरावट एवं कमी आ सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (09:10:2017 से 04:12:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा में गरीब परिवार में जन्मा व्यक्ति भी अपने स्तर के अनुसार अचानक भाग्यशाली होने की आशा कर सकता है। जुआरियों को उत्तम लाभ प्राप्त हो सकता है। आपके लिए शेयरऔर दूसरे सट्टों में निवेश करने के लिए यह उचित समय है। आपको सामान्य रोगों से राहत मिलेगी।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (04:12:2017 से 21:12:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आनन्द प्राप्त करने के साथ–साथ इस दशा में आपको संचित धन की हानि हो सकती है। आपने पिछली कुछ दशाओं में जो धन कमाया है, वह इस दशा के दौरान मौज–मस्ती में खर्च हो सकता है। आपको ऊँचे सरकारी अधिकारियों से लाभ प्राप्त होगा। चिकित्सा व्यवसाय में प्रगति होगी।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (21:12:2017 से 19:01:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके पिता का स्वास्थ्य आपकी चिन्ता का कारण हो सकता है। आपके पिता या माता को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आप विभिन्न प्रकार की समस्याओं से घिर सकते हैं। आपके ससुराल के लोग आपकी मदद को आगे आ सकते हैं। आपके सगे भाई–बहन आपके लिए परेशानियां पैदाकरने की कोशिश कर सकते हैं और परिवार से अलग हो सकते हैं।

राहु अर्न्तदशा (19:01:2018 से 13:06:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। यह दशा आपके लिए मिश्रित परिणाम देने वाली होगी। जहां एक तरफ आपको अपने संबंधियों के कारण गंभीर मानसिक तनाव का सामना करना पड़ सकता है, वहीं दूसरी तरफ आपके रोजगार, व्यावसायिक भविष्य या व्यापार में भी सुधार होगा। आपको अचानक उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। अतः इस अन्तर्दशा को सबसे घुमावदार कहा जा सकता है। आपकी बहनों और परिवार के अन्य महिला सदस्यों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है।

आप अपना निवास स्थान बदल सकते हैं। आपके जीवनसाथी और संतान के लिए यह दशा उत्तम नहीं है।शत्रु आपसे बदला लेने के लिए अवसर की तलाश में हो सकते हैं। आपकी वस्तुएं चोरी हो सकती हैं। आपके प्रियजन आपसे दूरी बना सकते हैं। संभावित रोग जैसे चर्म रोग और पेट दर्द की शुरूआत हो सकती है या वह गंभीर रूप ले सकती है। यदि राहु बली भी है, तो भी आपको केवल मिश्रित फल प्राप्त होंगे।

राहु प्रत्यंतर्दशा (19:01:2018 से 30:05:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको वाहन और धन की प्राप्ति होगी। आप मित्रों और संबंधियों की संगति में आनन्द प्राप्त करेंगे। आपके घर पर कई शुभ समारोह आयोजित होंगे। आपको संपत्ति की हानि का भय है। आपकी संतान का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (30:05:2018 से 24:09:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि राहु शभ राशि में स्थित है, तो आपको निरन्तर हर जगह संपन्नता प्राप्त होगी। आपको केवल अपने जीवनसाथी के साथ विवादों के कारण परेशानी हो सकती है। आपको उनका सहयोग प्राप्त नहीं हो सकता है, अपितु वो आपके साथ हमेशा लड़ाई करने के लिए तैयार रहेंगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (24:09:2018 से 10:02:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको कई सारे बुरे सपने आ सकते हैं। आप कैंसर या तपेदिक से ग्रसित हो सकते हैं। आपका स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन क्षीण हो सकता है। डाक्टर आपके रोग का ठीक तरह से पता लगा पाने में असमर्थ हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (10:02:2019 से 14:06:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। भारी संघर्ष के बाद आपको बेहतर स्थिति प्राप्त होगी। आपको ऐसा प्रतीत होगा कितूफान गुजर चुका है और अब आप सहारे के साथ तैर सकते हैं। रोजगार से जुड़े लोगों को कठिन समय से गुजरना पड़ सकता है। कर्मचारी और अधीनस्थ लोग परेशानी पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (14:06:2019 से 04:08:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा से यह थोड़ी बेहतर दशा होगी। आपको विदेशों से कुछ शुभ समाचारमिल सकते हैं या आपको वहाँ पर काम करने के लिए प्रस्ताव मिल सकता है। आप ऐसा प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर सकते हैं, क्योंकि इसको स्वीकार करने से कोई समस्या हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (04:08:2019 से 28:12:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली प्रत्यंतर्दशा में प्राप्त उन्नति जारी रहेगी। आपका या आपकी बहन का विवाह हो सकता है। आपके भाई परिवार में कुछ समस्यायें पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। दूसरे शब्दों में आपको सुख और दुख का एक के बाद एक अनुभव हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (28:12:2019 से 10:02:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा अनिश्चितताओं से पूर्ण हो सकती है। आपके आस–पास का वातावरण कुछ ऐसा बन सकता है, मानो वह आपको निगल जायेगा। आपके जीवनसाथी और संतान मानसिक एवं शारीरिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप उनकी उचित देखभाल कर पाने में असमर्थ हो सकते हैं। संबंधी आपके लिए परेशानियां पैदा कर सकते हैं। आपको सम्पत्ति विवाद का सामना करना पड़ सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (10:02:2020 से 23:04:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी स्थिति में सुधार होगा। आपको एक नया रोजगार और बेहतर जीवन शैलीके लिए एक नया वातावरण मिलेगा। आपका अपने माता–पिता से अलगाव हो सकता है। आपके खर्चेबढ़ सकते हैं। अप्रत्याशित क्षेत्रों से आपको समय–समय पर अचानक लाभ प्राप्त हो सकते हैं। आप बुखार, चर्म रोग या रक्त के कैंसर से पीड़ित हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (23:04:2020 से 13:06:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इन तीनों ग्रहों की राशियों और भावों में स्थिति के अनुसार इस दशा के परिणाम होंगे। साथ में साढ़े साती को भी ध्यान में रखना होगा। यदि साढ़े साती नहीं चल रही है, तो आपको बेहतर परिणाम मिलेंगे।

शनि दशा (13:06:2020 से 14:06:2039)

वर्तमान समय में आपकी शनि की महादशा चल रही है और शनि आपकी कुण्डली में दसवें भाव में स्थित है। यह दशा बहुत उत्तम सिद्ध हो सकती है। आप धन, दैवीय ज्ञान, नाम और यश प्राप्त करेंगे। आप कईसम्माननीय पदों को प्राप्त करेंगे एवं एक बहुत ऊँचे पद तक जायेंगे। हालाँकि, आपकी समृद्धि स्थायी नहीं हो सकती है। आपको अपने माता–पिता की परवाह नहीं हो सकती है तथा आप उनसे दूर रह सकतेहैं।

वर्तमान समय में आपकी शनि की महादशा चल रही है और शनि आपकी कुण्डली में मिथुन राशि में स्थितहै। शनि की अपनी दशा के दौरान, आप अपने जीवन में अलग तरीकों से आनन्द प्राप्त करेंगे। आप चोरी और महिलाओं के द्वारा धन प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप सेना में हैं, तो युद्ध में उल्लेखनीय साहस का प्रदर्शन करेंगे। आप सभी के प्रति उदार होंगे एवं परोपकारी काम करेंगे।

शनि अन्तर्दशा (13:06:2020 से 17:06:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा केदौरान आप मानसिक वेदना, परिवार को कष्ट, विभिन्न रोगों, आपके द्वारा पोषित चौपाया जानवरों को जहरीले प्रभाव का खतरों का सामना करना पड़ सकता है, जिससे आपको धन की हानि हो सकती है। आपको महिला समुदाय से कष्ट हो सकता है और आप अपने आपको ऐसी स्थिति में पा सकते हैं, जहां परआप कोई निर्णय करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। आपको वात या कफ, आतों में दर्द, लकवा आदि रोगों का सामना करना पड़ सकता है। संबंधी भी आपके लिए परेशानी पैदा कर सकते हैं। आपको अनावश्यक रूप से यात्रायें करनी पड़ सकती हैं। परिस्थितियां कुछ ऐसी बन सकती हैं, कि आपको निचले स्तर के लोगों के बिना अधिकार के और अप्रत्याशित दुर्वचनों का सामना करना पड़ सकता है और ऐसे लोग आपको चोट भी पहुँचा सकते हैं। हालांकि आपको महिलाओं से सावधान रहना चाहिए, जैसाकि आपकी उनके साथ संबंध बनाने की लालसा आपको अपमान और ब्लैकमेल का शिकार बना सकती है। मवेशियों की संख्या और कृषि से आपकी आय में वृद्धि होगी। आप कई लोगों को रोजगार देंगे और उनसेआय प्राप्त करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (13:06:2020 से 05:12:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में शनि का बल चाहे जिस कोटि का हो, आपको कुछ अवसरीय आर्थिक लाभों के अलावा अन्य कोई शुभ परिणाम प्राप्त नहीं हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपको अधिक मानसिक वेदना और परिवार को कष्ट हो सकते हैं। विपरीत लिंग के लोगों से आपको कष्टहो सकता है। आपको बुखार, वायु विकार या कफ और आंतों में दर्द की शिकायत हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (05:12:2020 से 09:05:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको रोगों से राहत मिल सकती है। आपकी स्थिति और वातावरण में धीरे–धीरे

सुधार होगा। अपने मित्रों से आपको लाभ होगा। जीवनसाथी और संतानों से आपको पूर्ण सुख मिलेगा। आपकी कुछ अतिरिक्त आय होगी। आपकी संतान को पढ़ाई में अनुकूल परिणाम प्राप्त होंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (09:05:2021 से 12:07:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने मित्रों और संबंधियों से ही नहीं, अपितु साहुकारों से भी धन उधार लेने पर बाध्य होना पड़ सकता है। कर्ज चुका पाने में सक्षम नहीं हो सकने के कारण आपको किसी अन्य अन्तर्दशा के दौरान उचित समय पर कर्जदाता न्यायालय में घसीट सकते हैं। यदि साढ़े साती या कंटक शनि की दशा चल रही है, तो आपको अपनी रोजमर्रा की आजीविका के लिए भिक्षा मांगनी पड़ सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (12:07:2021 से 11:01:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। शनि और शुक्र की प्रकृति चाहे जो कुछ भी हो, आपको पिछली कुछ दशाओं से बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे। आप कुछ नयी व्यापारिक गतिविधियां शुरू कर सकते हैं, जिसमें आपको उचितलाभ मिलेगा। आप विदेश सहित दूरस्थ स्थानों की प्रायः यात्रायें कर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (11:01:2022 से 07:03:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक खतरनाक दशा हो सकती है। आपके आस–पास के लोग आपके लिए गंभीर समस्यायें पैदा कर सकते हैं। आपके पिता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। संतान को भी कष्ट हो सकता है। चिकित्सकीय खर्च बढ़ सकते हैं। आप कर्जदार हो सकते हैं। आपको शिव स्त्रोत का नित्य जाप करना चाहिए, ताकि आपको कष्टों से थोड़ी राहत मिल सके।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (07:03:2022 से 07:06:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप बहुत अनुकूल परिणामों की आशा नहीं कर सकते हैं। मित्र आप से ऐसे विमुख हो सकते हैं– जैसे वे आपकी परेशानियों के बारे में जानते ही नहीं हैं। जीवन कीवेदना को सहन करने में असक्षम होने के कारण आप आत्महत्या के बारे में सोच सकते हैं। यह एक पूर्ण मानसिक अवसाद की दशा हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (07:06:2022 से 10:08:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको आग और वाहनों से सावधान रहना चाहिए– जैसाकि आपके जलने या दुर्घटना में चोट लगने की संभावना है। शत्रु आपकी संपत्ति को हड़पने की कोशिश कर सकते हैं। सम्पत्ति विवाद हो सकते हैं और फिलहाल आपको उनमें हार का सामना करना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (10:08:2022 से 21:01:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अवसाद की दशा जारी रह सकती है। आपको कष्टों से कोई राहत नहीं मिल

सकती है। कर्जदाता अपने कर्ज की प्राप्ति के लिए न्यायालय में जा सकते हैं। कोई आपकी मदद करने को आगे नहीं आ सकता है। आप रक्त की खराबी के कारण होने वाले रोगों और त्वचा विकार से ग्रसित हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (21:01:2023 से 17:06:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको थोड़ी राहत मिल सकती है। आप धीरे–धीरे आत्मनिर्भरहोंगे। अप्रत्याशित क्षेत्रों से आपको धन का लाभ होगा। आपके द्वारा लिये गये ऋण का कुछ हिस्सा चुका देने के कारण कर्जदाता शांत रह सकते हैं।

बुध अन्तर्दशा (17:06:2023 से 24:02:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम होगी। आपको अपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि आप व्यापारी हैं, तोपिछली अन्तर्दशा अर्थात शनि–शनि के दौरान आपको गंभीर आघात का सामना करना पड़ा होगा। लेकिन अब समय आपको वह सब वापस करेगा, जो आपने खो दिया था। आप बिना किसी संशय के निवेश करके व्यापार को बढ़ा सकते हैं। आपको पूर्ण खुशी और आनन्द प्राप्त होगा। आप या तो नयी भूमि प्राप्त करेंगे या पैतृक सम्पत्ति और भूमि प्राप्त करेंगे। आपका दिमाग स्थिर रहेगा। मित्रों से आपको लाभ होगा। आपको जीवनसाथी और संतान का पूर्ण सुख मिलेगा। आपको विभिन्न समारोहों में शामिल होने के आमंत्रण मिलेंगे तथा सरकार का सहयोग एवं धन का लाभ मिलेगा। आप अपना खाली समय ज्ञानी लोगों की संगति में व्यतीत करेंगे। आपको विष्णु सहस्त्रनाम (भगवान विष्णु के 1000 नाम) का जप करना चाहिए।

बुध प्रत्यंतर्दशा (17:06:2023 से 03:11:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपको अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए कई अवसर प्राप्त होंगे। आपको रोजगार या व्यापार के प्रस्ताव एक के बाद एक स्वतः मिल सकते हैं। इस समय का आपको पूरा लाभ उठाना चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (03:11:2023 से 30:12:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपकी आर्थिक स्थिति में लगातार सुधार होगा, लेकिन आपके साथ–साथ आपके माता–पिता, जीवनसाथी और संतान को गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपकाव्यय बढ़ सकता है। यदि आपने व्यय में सावधानी नहीं बरती, तो अपनी बढ़ी हुई आय के बावजूद आपको अपनी सभी जरूरतों को पूरा करने में परेशानी हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (30:12:2023 से 11:06:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। विवाहित लोगों के लिए यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है– जैसाकि प्रायः आपका अपने जीवनसाथी से झगड़ा हो सकता है। हालाँकि आय में वृद्धि होगी, लेकिन मानसिक शांति में कमी आयेगी। आप ऐसा सोच सकते हैं, कि विवाह ना करना आपके लिए बेहतर होता। आपके माता–पिता और जीवनसाथी आपके जीवन में बहुत अधिक दखल दे सकते हैं और स्थिति को और खराब कर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (11:06:2024 से 31:07:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप अपनी स्वयं की पहचान बनायेंगे और अधिकार एवं शक्ति का प्रयोग करेंगे। यदि आप बेरोजगार हैं, तो इस दशा के दौरान एक रोजगार प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। आपका व्यापार भी समृद्ध होगा। राजनीति से जुड़े लोगों को जनता के साथ तालमेल में सुधार होगा, लेकिन आपको किसी दुर्घटना और उससे चोट लगने का भय है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (31:07:2024 से 21:10:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक स्थिर दशा होगी। चंद्रमा और बुध आपके अधूरे कामों को मैत्रीपूर्ण ढंग सेपूरा करने और नयी योजनाओं एवं कार्यक्रमों का मूल्यांकन करने में मदद करेंगे, जो आपके लिए लाभदायक साबित होगा। शनि भी योजनाओं के चुनाव और एकत्रीकरण में मदद करेगा। यदि आप किसी स्टील या रसायन के संयत्र में रोजगार करेंगे या इन वस्तुओं का व्यापार करेंगे, तो आपके लिए बेहतर होगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (21:10:2024 से 17:12:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आर्थिक मामलों के लिए यह दशा खराब नहीं हो सकती है। यदि आप नौकरी कररहे हैं, तो आपका वरिष्ठों के साथ विवाद हो सकता है और यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो उसे कार्यान्वित करने में आपको बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। मंगल से संबंधित व्यापार या रोजगारआपके लिए लाभदायक होगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (17:12:2024 से 14:05:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। आपको ऐसा प्रतीत होगा, कि जीवन बहुत सहज रूप से चल रहा है। हालाँकि, बीच–बीच में स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें आ सकती हैं। यदि आप छात्र हैं, तोविभिन्न प्रतियोगी परिक्षाओं में बैठने के लिए शुभ समय है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (14:05:2025 से 22:09:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। जहाँ तक सम्पूर्ण शनि दशा की बात है, तो यह एक पूरी तरह से बदली हुई दशा होगी। आपको एक नयी ऊँचाई प्राप्त होगी। आपके सभी कामों में आपको सफलता मिलेगी। आप जिनसे मदद मांगेंगे, लगभग वे सभी लोग आपकी मदद करेंगे। इस दशा के दौरान आप एक स्थिर जीवन की एकसुदृढ़ नींव रखेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (22:09:2025 से 24:02:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक छली दशा हो सकती है। आपने अब तक जो कुछ भी कमाया है, उसे सांसारिक सुखों की प्राप्ति में बर्बाद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान एक करोड़पति भी भिखारी बन सकता है। मित्र और संबंधी आपको धोखा दे सकते हैं। आपको अपने उद्देश्यों की कोई पूर्व जानकारी

नहीं हो सकती है। जब तक आप उन्हें जानेंगे, तब तक बहुत देर हो चुकी होगी, आप हानि उठाने के अलावा कुछ नहीं कर सकते हैं।

केतु अन्तर्दशा (24:02:2026 से 05:04:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको अर्जित धन की हानि हो सकती है। आपको अपनीसम्पत्ति को एक के बाद एक बेचना पड़ सकता है। रात में बहुत सारे सपने देखने के कारण आपकी नींद खराब हो सकती है और आपको नींद में चलने की आदत हो सकती है। वायु या आग के कारण आपकी सम्पत्ति नष्ट हो सकती है। रक्तविकार के कारण आपको रोग हो सकते हैं और आप गठिया से ग्रसित हो सकते हैं। आपको भगवान श्रीकृष्ण की अराधना करने की सलाह दी जाती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (24:02:2026 से 20:03:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको इस दशा के दौरान मिले–जुले परिणाम प्राप्त होंगे। आपकी आर्थिक स्थिति औसत होगी। कोई असामान्य घटना नहीं होगी। आपकी अधिकतर गतिविधियों सामयिक होंगी। आप पूरी तरह से तनाव रहित होंगे। आप कार्य के प्रति ना तो सुस्त होंगे और ना ही बहुत उत्साही होंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (20:03:2026 से 26:05:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप अपने दैनिक कार्यों में सक्रिय होंगे। अपनी पुरानी गतिविधियां समेकित करने के लिए यह अनुकूल समय है। विदेश सहित किसी दूरस्थ स्थान से आपको शुभ समाचार मिल सकता है।आपको विदेश यात्रा पर जाने या वहाँ पर रोजगार का अवसर मिल सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (26:05:2026 से 15:06:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको विदेशी मूल के लोगों के द्वारा पैदा की गयी विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपका रोजगार समाप्त हो सकता है या उसके खोने का आपको भय होसकता है। राजनीति में आपको असफलता का सामना करना पड़ सकता है। आपके गुप्त शत्रु आपको तबाह करने की कोशिश कर सकते हैं। आपको तीव्र सिरदर्द और बुखार हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (15:06:2026 से 19:07:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। अशुभ प्रभावों से आपको थोड़ी राहत मिलेगी। हालाँकि, किसी ना किसी कारण से आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। वरिष्ठों और अधीनस्थों के साथ आपका विवाद हो सकता है। सुदूर स्थानों की आप यात्रा करेंगे– विशेषकर दक्षिण दिशा में।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (19:07:2026 से 12:08:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस अशुभ दशा को आप कभी भूल नहीं सकते हैं। आप जीवन के अकथित दुखों का सामना कर सकते हैं। यदि आप विवाह के योग्य हैं, तो इस दशा के दौरान विवाह करना आपके लिए

बेहतर होगा। भाइयों और संतानों को हानि हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (12:08:2026 से 11:10:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक बहुत खराब दशा हो सकती है। पिछली दशा में जो परेशानी सामने आने से रह गयी थीं, वे अब आपके सामने आ सकती हैं। मित्रों और संबंधियों के साथ अप्रत्याशित रूप से विवाद हो सकते हैं। आपको कुछ असाध्य रोग हो सकते हैं। यदि आप विवाहित हैं, तो जीवनसाथी से अलगाव हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (11:10:2026 से 04:12:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अस्थायी रूप से यह एक उत्तम दशा होगी। आप पिछली दशा में जो कुछ करने में असक्षम रहे हैं, उसे इस दशा में पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए– जैसाकि इस दशा में कुछ सफलता निश्चित है। यदि आप परीक्षा में बैठ रहे हैं, तो आप अनुकूल परिणामों की आशा कर सकते हैं। मित्र और संबंधी तन, मन और धन तीनों से मदद करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (04:12:2026 से 06:02:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपको मिले–जुले परिणाम मिलेंगे। यदि शनि बली है, तो आपको शुभ परिणाम जैसे सभी कामों में सफलता, सरकार से समर्थन, मुकदमों में सफलता और रोगों से राहत आदि मिलेंगी। यदि केतु बली है, तो आपका अपने जीवनसाथी और संतान से झगड़ा हो सकता है और आपको एकाकी जीवन व्यतीत करना पड़ सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (06:02:2027 से 05:04:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा पुर्नप्राप्ति और पुनर्स्थापना की होगी। आपको इस दशा का लाभ अवश्य उठाना चाहिए। आप लम्बी अवधि की पूंजियों में निवेश करने के लिए सोच सकते हैं। निवेशों से भी आपकोउचित लाभ मिल सकता है। हालाँकि, इस दशा के दौरान आपके और नजदीकी संबंधियों के बीच सम्पत्ति के मामलों में विवाद हो सकते हैं।

शुक्र अन्तर्दशा (05:04:2027 से 05:06:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्य रूप से यह एक शुभ दशा होगी। आपको विभिन्न तरीकों से लाभ मिलेगा। आपको नये अवसरों का लाभ उठाना होगा। आपको अपने जीवनसाथी से आर्थिक सहायता मिलेगी। आप नये घर का निर्माण करेंगे। शुभ परिणामों में सुधार के लिए और अशुभ परिणामों को समाप्त करने के लिए, यदि कोई हो, तो देवी दुर्गा का स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (05:04:2027 से 14:10:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अपेक्षाकृत यह एक लाभकारी दशा होगी। इस दशा के दौरान आप अपनी आर्थिक

स्थिति में सुधार करेंगे। आपको महिलाओं से लाभ मिलेगा और साथ ही उनमें से कुछ आपकी मानसिक शांति को बाधित कर सकती हैं। यदि आप ऐसी स्थिति से निपटने के लिए स्वयं को तैयार रखेंगे, तो आप बिना परेशानियों के उससे बाहर निकल आयेंगे। आपको शारीरिक सुख प्राप्त होंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (14:10:2027 से 11:12:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। धन प्राप्ति के स्रोत बढ़ेंगे। अधिकतर मामलों में आय व्यय से अधिक होगी। हालाँकि, आपकी खर्चीली जीवनशैली के कारण बचत नहीं हो सकती है। आपको सरकारी अधिकारियों से समर्थन मिलेगा या उनके उपर आपका नियंत्रण होगा।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (11:12:2027 से 17:03:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी बहन को मृत्युतुल्य शारीरिक कष्ट हो सकता है। आपकी माता का स्वास्थ्यभी उत्तम नहीं हो सकता है। चिकित्सकीय खर्चे बढ़ सकते हैं। रोगों से किसी प्रकार की राहत न पा सकने के कारण आप और आपका परिवार आध्यात्म का अनुसरण कर सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (17:03:2028 से 23:05:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी माता और बहन का स्वास्थ्य क्षीण हो सकता है। आपको बुखार और शरीरमें दर्द हो सकता है। आपके जीवनसाथी के साथ आपका बेतुकी बातों पर झगड़ा हो सकता है। आपका तलाक या कुछ समय के लिए शारीरिक अलगाव हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (23:05:2028 से 13:11:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपकी आय में वृद्धि होगी, लेकिन आपकी आय चिकित्सकीय उपचार और शारीरिक सुखों की प्राप्ति में व्यय हो सकती है। शुक्र और राहु से संबंधित वस्तुओं में आपको लाभ होगा। आपकी माता या बहन के स्वास्थ्य में इस प्रत्यंतर्दशा के अन्त में सुधार होगा।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (13:11:2028 से 16:04:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। कोई अशुभ घटना नहीं होगी। यह दशा समृद्धि, उद्देश्यों की प्राप्ति और सभी प्रकार के सुख प्रदान करेगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (16:04:2029 से 16:10:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा के दौरान जो आर्थिक सुधार शुरू हुए थे, वे इस दशा के दौरान स्थिरहो जायेंगे। आपको विदेश यात्रा या वहाँ पर रोजगार के अवसर मिल सकते हैं। सभी रोगों से आपकोबहुत राहत मिलेगी। शनि से संबंधित चीजों के व्यापार में आपको उत्तम लाभ प्राप्त होगा।

बुध प्रत्यंतर्दशा (16:10:2029 से 29:03:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, लेकिन आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। महिलाओं के मामले में अधिक संलग्नता आपको अपूर्णिय क्षति करवा सकती है। विपरीत लिंग के लोगों के साथ व्यवहार करते समय आपको सावधान रहना चाहिये– जैसाकि आपको उनसे धोखा मिल सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (29:03:2030 से 05:06:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा के दौरान आपने जो कुछ संचित किया था, इस दशा के दौरान वह सब छिन सकता है या खर्च हो सकता है। आपको व्यापार में हानि हो सकती है। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो वरिष्ठ और अधीनस्थ आपको परेशान कर सकते हैं। शत्रु आपकी सफलता के मार्ग में रोड़ा बन सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (05:06:2030 से 17:05:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपके जीवनसाथी और संतान को कष्ट हो सकता है। आपको पेट और आंतों से संबंधित रोग हो सकते हैं। आपकी व्यावसायिक और व्यापारिक प्रगति में विभिन्न प्रकार की बाधायें आ सकती हैं। आपको धन की हानि हो सकती है और अपने अस्तित्वहीन होने का अहसास हो सकता है। आपके शत्रुओं की संख्या बढ़ सकती है। प्रायः यात्रायें कर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (05:06:2030 से 22:06:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके पिता या परिवार के बड़े पुरुषों का स्वास्थ्य गंभीर हो सकता है। आपको इससमय पैतृक सम्पत्ति विरासत में मिल सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (22:06:2030 से 21:07:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको पैतृक या ननिहाल की सम्पत्ति विरासत में मिल सकती है। सम्पत्ति के मामलों में आपके नजदीकी संबंधियों के साथ प्रायः विवाद हो सकते हैं। रक्त की खराबी के कारण आपकोरोग हो सकते हैं। साथ ही आपके दांतों में समस्या हो सकती है। आपके माता के स्वास्थ्य को अधिक देखभाल की आवश्यकता हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (21:07:2030 से 10:08:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक पूर्ण निराशाजनक दशा होगी। आपके सभी विचार और योजनायें आपस में टकरा सकती हैं और आप अपनी दैनिक गतिविधियों को भी कर पाने में असक्षम हो सकते हैं। आपके हर कार्य में बाधा आ सकती है। आपके अपने पिता और सह–जन्मों के साथ विवाद हो सकते हैं और वे ऐसी स्थिति में पहुंच सकते हैं, कि आगे कोई समझौता नहीं होने की संभावना हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (10:08:2030 से 01:10:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के परिणाम आपकी जन्मकुण्डली में राहु की स्थिति पर निर्भर करेंगे। आपकी आर्थिक और शारीरिक स्थिति का ह्रास हो सकता है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य भी गंभीर रूप से प्रभावित हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (01:10:2030 से 16:11:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी अतिरिक्त आय हो सकती है। अप्रत्याशित स्रोतों से आपको धन प्राप्त होगा। यदि साढ़े साती नहीं चल रही है, तो आपको उत्तम परिणाम मिलेंगे। आप प्राचीन ग्रन्थों के अध्ययनमें गहरी रूचि लेंगे और अन्य ग्रहीय स्थिति के आधार पर आध्यात्मिक क्षेत्र में नाम और यश प्राप्त करेंगे। आपके स्वास्थ्य को अधिक देखभाल की आवश्यकता होगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (16:11:2030 से 10:01:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि सूर्य बली नहीं है, तो यह एक बेहतर दशा होगी। यदि सूर्य बली है, तो परिवार के सदस्यों के बीच विवाद हो सकते हैं। अपके परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यय अधिक हो सकते हैं। पड़ोसी आपके शत्रु बन सकते हैं और परेशानियां पैदा कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (10:01:2031 से 28:02:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको तुफान के बीच से गुजरना पड़ सकता है। इस दशा के प्रारम्भिक कुछ दिनोंमें आपको अपने सभी कार्यों में कई बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। उसके बाद आपको लगेगा कि बाधायें एक के बाद एक दूर हो रही हैं और चीजें सहज होना शुरू हो गयीं हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (28:02:2031 से 21:03:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक पूर्ण निराशाजनक दशा होगी। आपने पिछली दशा के दौरान जो कुछ प्राप्तकिया है, वह सब ठहर जायेगा। संतुलन कायम करने के लिए आपको कठिन संघर्ष करना पड़ सकताहै। शत्रु आपकी अवनति के लिए प्रयास कर सकते हैं। कर्जदार आपको परेशान कर सकते हैं। अपनेकामों में असफलता से निराश होकर आप ईश्वर की शरण में जा सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (21:03:2031 से 17:05:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपनी खोयी हुई स्थिति और मानसिक शांति वापस प्राप्त होगी। महिलाओंसे आपको मदद मिलेगी। हालाँकि, आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपको महिलाओं से धोखा मिल सकता है।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (17:05:2031 से 16:12:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको मृत्युतुल्य कष्ट, धन हानि, वायु विकार तथा आपके

जीवनसाथी एवं माता–पिता को खतरा हो सकता है। कार्य या कामना पूर्ण होने को हो सकती है, मगर अचानक बाधायें आकर अवसरों को नष्ट कर सकती हैं। आपको किसी नये व्यापार का प्रारम्भ नहीं करना चाहिए या अपने वर्तमान व्यवसाय को बदलने का प्रयास नहीं करना चाहिए। आपको इस अन्तर्दशा के दौरान देवी दुर्गा के मंत्रों का जाप करना चाहिए।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (17:05:2031 से 05:07:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके घर पर शुभ समारोह आयोजित होंगे। आपके सहोदरों का विवाह हो सकताहै। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति प्राप्त होगी। हालाँकि यदि आप व्यापारी हैं और यदि आपके व्यापार का संबंध चंद्रमा या राहु की वस्तुओं से नहीं है, तो आपको लाभ प्राप्त नहीं हो सकता है। आप फेफड़े के रोगों और तपेदिक से ग्रस्त हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (05:07:2031 से 07:08:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप रक्त की खराबी के कारण होने वाले विकारों, चिन्ता, कफ से ग्रसित हो सकते हैं। आग विद्युत और अन्य गर्म चीजों से आपको खतरा हो सकता है। आपको चोरों और शत्रुओं के कारण धन हानि हो सकती है। अपने कार्य क्षेत्र में भी आप असफल हो सकते हैं। दंड या आपके द्वारा किये गये गबन के अपराध के कारण आपका स्थानान्तरण या पदावनति हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (07:08:2031 से 02:11:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके राहु के कारक संबंधियों को कष्ट हो सकता है और आपको उनके उपचार में धन व्यय करने को बाध्य होना पड़ सकता है। जलीय उत्पादों से भोजन विषाक्तता की संभावना है। आप अनजाने में कई बुरे और गलत काम कर सकते हैं और बाद में उनके लिए प्रायश्चित कर सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (02:11:2031 से 18:01:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप धार्मिक सिद्धान्तों का पालन करेंगे और भिक्षा बाटेंगे। आपको उत्तम वस्त्रों और आभूषणों को पाने में अधिक रूचि होगी। आपको विभिन्न स्रोतों से धन प्राप्त होगा और संतानें सम्पन्न होंगी। संतान आपको खुशियां प्रदान करेंगी। आपका रूझान वाहन प्राप्त करने में हो सकता है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (18:01:2032 से 19:04:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको संबंधियों के कारण दुखों और खतरों का सामना करना पड़ सकता है। आप, आपके जीवनसाथी, संतान और आपके माता–पिता एक साथ विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। उपचार में भारी धन व्यय हो सकता है। आप विभिन्न उपचारीय तरीके अपना सकते हैं और धन बर्बाद करसकते हैं। ऐसा करने पर भी राहत न प्राप्त कर पाने के कारण आप पूरी तरह से निराश हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (19:04:2032 से 10:07:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में आपने जिन दुखों और परेशानियों का सामना किया है, उनसे आपको थोड़ी राहत मिलेगी। आपको निरन्तर धन प्राप्त होगा और आप उत्तम परिधान, आभूषण और नये मवेशी प्राप्त करेंगे। कृषि उत्पादों से आपको उत्तम आय प्राप्त होगी। आपके नाम और यश में वृद्धि होगी। नये प्राप्त ज्ञान और शिक्षा के द्वारा संपन्न होंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (10:07:2032 से 13:08:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके प्रियजनों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आपको धन हानि हो सकती है। आप विभिन्न धार्मिक कार्यों में रत रहेंगे और भारी मात्रा में धन व्यय करेंगे। आपको जल याजलीय उत्पादों से खतरा हो सकता है। आपको ऐसे व्यापार से दूर रहना चाहिए, जहाँ द्रव रसायन का प्रयोग होता हो।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (13:08:2032 से 17:11:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। इस दशा में आप निवेशों और अपने मौजूदा व्यवसाय या गतिविधियों के विस्तार के बारे में सोच सकते हैं। तीनों ग्रहों या उनमें से किसी एक की दुर्बलता की कोटि चाहे जो कुछ भी हो, आपको कोई अति अशुभ परिणाम नहीं मिलेंगे। दूसरी तरफ आप बहुत आराम महसूस करेंगे और अनुकूल परिणामों का आनन्द प्राप्त करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (17:11:2032 से 16:12:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक विवादपूर्ण दशा हो सकती है। इस दशा के परिणामों का आंकलन करना बहुत कठिन है– जैसाकि परिणाम इन तीनों ग्रहों के कार्यों पर निर्भर करेंगे। ये तीनों ग्रह भिन्न परिणाम प्रदर्शित करेंगे, अर्थात यदि एक ग्रह बली है, तो वह शुभ परिणाम देगा, यदि कोई कमजोर है, तो यह अतिअशुभ परिणाम प्रदान करेगा। दूसरे शब्दों में आप अति शुभ और अति अशुभ परिणामों का आनन्द एक साथ प्राप्त करेंगे।

मंगल अन्तर्दशा (16:12:2032 से 25:01:2034)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको विदेश यात्रा पर जाने का शौक हो सकता है, जहांपर आप विभिन्न समस्याओं का सामना कर सकते हैं। अतः आपको विदेश में स्थानांतरण या रोजगार या किसी व्यापारिक दौरे को स्वीकार नहीं करना चाहिए। आपको बुखार, हार्निया और आँखों के रोग हो सकते हैं। आपको हर समय मृत्यु का भय बना रह सकता है। आग और धातु के साथ काम करते समय आपको सावधान रहना चाहिए। आपको कुछ शारीरिक चोट या अक्षमता हो सकती है। आप भारी धन हानिका सामना भी कर सकते हैं। आपके जीवनसाथी और घर की महिलाओं को कष्ट हो सकता है। आपको अपमान का भी सामना करना पड़ सकता है। आप अपने पद और स्थिति को खो सकते हैं। भगवान श्रीकृष्ण के मंत्रों का जाप आपके लिए लाभकारी साबित होगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (16:12:2032 से 09:01:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस प्रत्यंतर्दशा के दौरान आपको किसी ना किसी पेरशानी का सामना करना पड़

सकता है। आपको कुछ शुभ परिणाम प्राप्त होंगे, लेकिन केवल देने से अधिक लेने के लिए। आप परिवार से अलग हो सकते हैं। आपको अलाभकारी लम्बी यात्राओं पर जाने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (09:01:2033 से 11:03:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप अति शुभ और अशुभ परिणाम प्राप्त करेंगे। एक समय आपको लगेगा कि सफलता आपके दरवाजे पर दस्तक दे रही है, लेकिन आपकी आँखों के सामने कोई अन्य व्यक्ति आकर आपकी सफलता उड़ा ले जा सकता है। आपके और परिवार के उपचार में आपका भारी धन व्यय हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (11:03:2033 से 03:05:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अति उत्तम परिणाम मिलेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको रोजगार के अप्रत्याशित प्रस्ताव मिलेंगे। यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको व्यावसायिक प्रस्ताव मिलेंगे। आपको अपने जीवनसाथी और संतानों का सहयोग मिलेगा। यदि आवश्यक हुआ तो मित्र और संबंधी भी आपकी मदद करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (03:05:2033 से 07:07:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। चूंकि, दोनों ग्रह नैसर्गिक रूप से अशुभ हैं, अतः वे परस्पर लड़ाई करेंगे। एक लाभपहुंचाने की कोशिश करेगा, दूसरा उनको छीनने की कोशिश करेगा। अतः कुछ अनुकूल घटनाओं के होने के दौरान आपको बहुत सावधान रहना चाहिए।

बुध प्रत्यंतर्दशा (07:07:2033 से 02:09:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उदासीन दशा होगी। जीवन केवल सामान्य तरीके से चलेगा। आप कई चीजें करना चाह सकते हैं, लेकिन ऐसा करने में आप सक्षम नहीं हो सकते हैं। आप अपना अधिकतर समय जीवनसाथी और संतान के साथ गुजारेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (02:09:2033 से 25:09:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको कई छोटी यात्राओं पर जाने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है, जिसमें आपका अतिरिक्त धन व्यय हो सकता है। आप अपने परिवार के साथ अधिक समय गुजार पाने में असक्षमहो सकते हैं। संतानों की शिक्षा में व्यवधान हो सकता है। आपके माता–पिता का स्वास्थ्य खराब होसकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (25:09:2033 से 02:12:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका झुकाव शारीरिक सुखों की प्राप्ति की तरफ अधिक हो सकता है। अपने कार्यक्षेत्र में आपको कोई रूचि नहीं हो सकती है। आपका केवल एक उद्देश्य होगा– भरपूर आनन्द।

आपको मदिरा और महिलाओं का नशा हो सकता है। आपको अपने जीवनसाथी में रूचि नहीं हो सकती है,जिससे प्रायः उनके साथ झगड़ा हो सकता है। आपको रतिजन्य रोग हो सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (02:12:2033 से 22:12:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका स्वास्थ्य बहुत खराब हो सकता है, अतः आपका समय डॉक्टरों के चक्कर लगाने में बीतेगा। आपको अपने दैनिक जीवन में रूचि नहीं हो सकती है। आपकी आय व्यय से बहुत कमहो सकती है। शत्रु स्थिति का लाभ लेने की कोशिश कर सकते हैं और आपकी सम्पत्ति को हड़प सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (22:12:2033 से 25:01:2034)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आर्थिक मामलों को संचालित करने के लिए यह एक अनुकूल दशा होगी। आपको धन और अन्य सम्पत्तियों की प्राप्ति होगी। आप जीवन का अति आनन्द प्राप्त करेंगे। हालाँकि, आपकी माताके स्वास्थ्य की अधिक देखभाल की आवश्यकता होगी।

राहु अन्तर्दशा (25:01:2034 से 01:12:2036)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको ऊँचाई से गिरने या किसी कुएं अथवा सुरंग में गिरने के कारण चोट लग सकती है। आप बुखार, फोड़ों, सुजाक, प्लीहा के आकार में भारी वृद्धि, चर्म रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आपको भारी धन हानि हो सकती है। आपका सभी के साथ झगड़ा हो सकता है औरआप शत्रुता को आमंत्रण दे सकते हैं। आप किसी की भी सलाह को नहीं मान सकते हैं, जिससे आप हमेशा गंभीर समस्याओं में फँस सकते हैं। आपका व्यवहार बहुत असहिष्णु हो सकता है। आपको इस पूरी अन्तर्दशा के दौरान महामृत्युंजय मंत्र का जाप करना चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (25:01:2034 से 30:06:2034)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा अति उत्तम साबित होगी। ऐसी स्थिति में आप भूमि, भवन, व्यापार और आर्थिक मामलों से संबंधित सभी महत्वपूर्ण निर्णय ले सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (30:06:2034 से 16:11:2034)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। तुलनात्मक रूप से यह एक बेहतर दशा होगी। इस समय आप कुछ सार्थक काम करने की सोच सकते हैं। आप भूमि, भवन और वाहन खरीदेंगे। आपको उत्तम मित्रों का साथ मिलेगा। आपको विरासत मे पैतृक सम्पत्ति प्राप्त हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (16:11:2034 से 29:04:2035)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको विभिन्न परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपका व्यय इस सीमा तक बढ़ सकता है, कि आपको विभिन्न लोगों से धन उधार मांगना पड़ सकता है।

आप ऐसे उधार लिये गये धन का उपयोग जुए या लॉटरी या अन्य कामुक उद्देश्यों के लिए कर सकते हैं। अन्ततः आप आत्महत्या करने की स्थिति में पहुंच सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (29:04:2035 से 24:09:2035)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप अपनी पुरानी आदतों से चिपके रह सकते हैं और आगे परेशानियों में फंस सकते हैं। ऋणदाता आपको लगातार परेशान कर सकते हैं और आप किसी स्थान पर छुप सकते हैं। यदिबुध बली है, तो आपने जो कुछ भी खोया है, उसे इस प्रत्यंतर्दशा के अन्त में पुनः प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (24:09:2035 से 23:11:2035)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप अपने पैरों पर खड़े होने में सक्षम होंगे। आपको कुछ अन्य समस्याओं जैसे जीवनसाथी और संतानों की बीमारी या किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है, जिससे आपका भारी व्यय हो सकता है। दूसरे शब्दों में, आपको मुश्किलों के बीच मे कुछ लाभ होगा। आपको अधिक व्ययया शारीरिक संबंधों पर नियंत्रण रखना चाहिए।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (23:11:2035 से 15:05:2036)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। अन्ततः आपको आर्थिक संकट से कुछ राहत मिलेगी। कुछ धन प्राप्त करने के आपको अवसर मिलेंगे। आपने जो ऋण ले रखा है, उसे चुकता करने की कोशिश करेंगे। हालाँकि, शारीरिक सुखों को प्राप्त करने की आपकी प्रवृत्ति पूरी तरह से समाप्त नहीं हो सकती है। आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य की अधिक देखभाल की आवश्यकता हो सकती है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (15:05:2036 से 06:07:2036)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपका अपने नजदीकियों से विवाद हो सकता है। आपको बिनाकिसी कारण के अपमान का सामना करना पड़ सकता है। यद्यपि आप किसी को आघात नहीं पहुंचानाचाहेंगे, फिर भी परिस्थितियों के कारण आपको सबसे लड़ाई करनी पड़ सकती है और उनके क्रोध का सामना करना पड़ सकता है। आपको बुखार, पीलिया और चर्म रोग हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (06:07:2036 से 01:10:2036)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप जिन रोगों से ग्रस्त थे, उनसे आपको थोड़ी राहत मिलेगी। हालाँकि, आपके दिमाग की शांति किसी ना किसी कारण से भंग हो सकती है। कानूनी मामलों में आपका व्यय बढ़ सकता है। आपकी सम्पत्ति को दूसरे लोग हड़प सकते हैं या आप उसे अपनी मूर्खता से गवाँ सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (01:10:2036 से 01:12:2036)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको सावधान रहना होगा। आप दुर्घटनाओं और शरीर

कटने या चोट का सामना कर सकते हैं या आपको आग से भय हो सकता है। आप भूमि खरीद सकते हैं या नया व्यापार शुरू कर सकते हैं।

गुरू अन्तर्दशा (01:12:2036 से 14:06:2039)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। यह अन्तर्दशाआपके लिए बहुत उत्तम होगी, जिसका आप एक लम्बे बुरे दौर के बाद अनुभव करेंगे। आपका विश्वास पुनः लौटेगा। आपमें जीने की चाह बढ़ेगी और आपको जीवन का अर्थ पूरी तरह समझ में आयेगा।आप अपने जीवनसाथी, संतान और मित्रों की संगति का पूर्ण आनन्द प्राप्त करेंगे। आपको अपने हरकाम में सफलता मिलेगी और आप विभिन्न शुभ कार्यों को पूरा करेंगे। ईश्वर के अस्तित्व का आपको पूर्णअहसास होगा और आप उसकी अराधना करेंगे। आपको भूमि लाभ होगा। विभिन्न कलाओं में आप गहरी रूचि लेंगे। इस अन्तर्दशा के दौरान आपका व्यवहार सौम्य होगा।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (01:12:2036 से 03:04:2037)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। एक लम्बे संघर्ष के बाद आपको अधिक अनुकूल परिणामों का आनन्द प्राप्त होगा। विदेशों से मिलने वाले समाचार आपको प्रफुल्लित करेंगे। आपको विदेशी वस्तुओं का आनन्द प्राप्त करने कासौभाग्य प्राप्त होगा या आपको विदेश में रोजगार प्राप्त हो सकता है। मित्र और संबंधी आपकी सहायताकरेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (03:04:2037 से 28:08:2037)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा कुछ हद तक उत्तम होगी। आप धन का संग्रह करेंगे, भूमि और भवन खरीदेंगे, नया रोजगार प्राप्त करेंगे या नया व्यापार शुरू करेंगे। हालाँकि, इस दशा के अन्त में आपको स्वयंया दुष्ट लोगों के कारण बदनामी का सामना करना पड़ सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (28:08:2037 से 06:01:2038)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बेहतर दशा होगी। निवेश और व्यापार करने के लिए यह शुभ समय है। आपको अवश्य लाभ मिलेगा। हालाँकि, यदि आप व्यापार करने की स्थिति में नहीं हैं, तो आप किसी रोजगार में जायेंगे और नाम तथा यश प्राप्त करेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (06:01:2038 से 01:03:2038)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक शान्तिपूर्ण दशा होगी। अधिक हलचल नहीं होगी। जीवन साधारण तरीकेसे गुजरेगा।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (01:03:2038 से 02:08:2038)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको वास्तविक आनन्द प्राप्त होगा। आपको विभिन्न स्रोतों सेआय प्राप्त होगी। आप एक समय पर कई कार्य करेंगे और नाम, यश और धन प्राप्त करेंगे। आपके

माता–पिता से भी आपको सुख मिलेगा। अपने जीवनसाथी और संतान से आपको पूरा आराम मिलेगा।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (02:08:2038 से 17:09:2038)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह एक अति उत्तम दशा होगी। धन के लिए वे आसानी से दूसरों को धोखा दे सकते हैं। यदि आप राजनीति से जुड़े हैं, तो आप चुनौतीपूर्ण कार्य की आशा कर सकते हैं। आपको विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होगी।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (17:09:2038 से 03:12:2038)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि आपने अपने दिमाग को ठंडा रखा, तो इस प्रत्यंतर्दशा के दौरान पूर्ण आनन्द प्राप्त करेंगे। चूंकि चंद्रमा दिमाग का नियंत्रणकर्ता है, विचलित दिमाग के लोगों को भी बहुत राहत मिलेगी– जैसाकि बृहस्पति उनकी देखभाल करेगा। आप तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं और अपने जीवनसाथीतथा संतान का सुख प्राप्त करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (03:12:2038 से 26:01:2039)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। बृहस्पति और मंगल की युति इसमें प्रमुख भूमिका निभायेगी। अतः आप एक बहुत उत्तम स्थिति में होंगे और जीवन के सारो सुखों का आनन्द प्राप्त करेंगे। आपका विवाह हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (26:01:2039 से 14:06:2039)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप ईश्वर की उपासना की तरफ पूरी तरह से मुड़ जायेंगे और वेद मंत्रों का जाप करेंगे। आप लेखन या प्रकाशन आदि से कमायेंगे।

बुध दशा (14:06:2039 से 13:06:2056)

वर्तमान समय में आपकी बुध की महादशा चल रही है और बुध आपकी कुण्डली में तीसरे भाव में स्थित है।बुध की इस भाव में स्थिति व्यापार के लिए उत्तम है। किशोरावस्था या मध्यायु में बुध की दशा में आप व्यापार में निपुणता प्राप्त करेंगे और उससे भारी धन कमायेंगे। आपका दिमाग धन में लगा रहेगा। आप हरचीज को पैसों से तौलेंगे। हालाँकि, अंततः आप इस भौतिक संसार का परित्याग कर सकते हैं। बुध की दशा सहोदरों के लिए बहुत उत्तम होगी। आपका निर्णय असंगत, असत्य और उतावलापूर्ण हो सकता है। आपको अनुबंध के कामों से परेशानी हो सकती है। आपकी भारी धन की तृष्णा आपको पागलपन की हद तक ले जा सकती है। एक शक्तिशाली बुध 24वें वर्ष में उत्तम भाग्य प्रदान करता है, मध्यम बुध 30वें वर्ष मेंउत्तम भाग्य प्रदान करेगा तथा अशुभ बुध 36वें वर्ष में उत्तम भाग्य प्रदान करेगा, यदि तब नहीं तो 39वें वर्षमें उत्तम भाग्य प्रदान करेगा।

वर्तमान समय में आपकी बुध की महादशा चल रही है और बुध आपकी कुण्डली में वृश्चिक राशि में स्थित है। बुध की अपनी दशा के दौरान, आप उत्तम कार्यों में रत रहेंगे। आपके खर्चे कम और ख़ुशियां सीमित होंगी। आपको अपने प्रियजनों और करीबीयों से दूर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। संबंधी आपको विभिन्न मामलों में प्रायः परेशान कर सकते हैं।

बुध अन्तर्दशा (14:06:2039 से 10:11:2041)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम होगी। आपके विभिन्न विद्वान लोगों से संबंध बनेंगे और आप ऐसे संबंधों से धनप्राप्त करेंगे। आप अपने ज्ञान और विद्वता के द्वारा बहुत यश प्राप्त करेंगे। आप उत्तम और शुभ सद्कृत्यों को करने में संलग्न रहेंगे तथा आपका दिमाग तीक्ष्ण और पक्षपात रहित होगा। आपको परिवार केबड़े लोगों से मदद मिलेगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध कमजोर है, तो आपको किसी क्षेत्र में काम करने में रूचि और उत्साह नहीं हो सकता है और आप एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (14:06:2039 से 16:10:2039)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप प्रायः व्यापार या रोजगार में बदलाव कर सकते हैं। आप प्रयोगिक धारणा को अपना सकते हैं। आपको अपने जीवनसाथी और संतान के कारण चिन्ता हो सकती है। आपको प्रत्येक चीज के बारे में एक प्रकार का भय व्याप्त हो सकता है। आपको गले का रोग और बुद्धि का ह्रास हो सकता है। आपको समय–समय पर धन का लाभ हो सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (16:10:2039 से 07:12:2039)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा बहुत उत्तम नहीं हो सकती है। कर्जदार आपको परेशान कर सकते हैं। आपको मुकदमों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी घरेलू वस्तुओं की चोरी हो सकती है। केतु से शासित संबंधी आपको प्रायः परेशान कर सकते हैं। आपको अपने वर्तमान निवास स्थान से दूर जाना पड़ सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (07:12:2039 से 01:05:2040)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अपेक्षाकृत यह एक बेहतर दशा होगी। आपको महिलाओं से लाभ होगा। आप किसी विदेश या दूरस्थ स्थान की यात्रा कर सकते हैं। आपका विवाह हो सकता है और आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है। अपने जीवनसाथी और संतान से आपको पूर्ण सुख मिलेगा। माता–पिता आपका सहयोग करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (01:05:2040 से 14:06:2040)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक स्थिर दशा होगी। आपके अधिकार और ताकत में बढ़ोत्तरी होगी। यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको लाभ मिलेगा। हालाँकि, आपको अपने आस–पास के लोगों से सावधान रहना चाहिए– जैसाकि वे आपको जहर देने या आपके व्यापार अथवा रोजगार को बर्बाद करने की कोशिश कर सकते हैं। आपके पिता के स्वास्थ्य का अधिक ध्यान रखने की आवश्यकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (14:06:2040 से 27:08:2040)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपकी बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होगी। आप विभिन्न दैवीय

शास्त्रों का अध्ययन करेंगे और उनमें निपुणता प्राप्त करने की कोशिश करेंगे। यदि जन्मकुण्डली में बुध और चंद्रमा दोनों बली हैं, तो आपको इस क्षेत्र में अवश्य ही सफलता मिलेगी। अन्यथा, यह दशा धीमी गतिसे आगे बढ़ेगी। अधिक शोरगुल नहीं होगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (27:08:2040 से 17:10:2040)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा मुख्यतः चल और अचल संपत्तियों से संबंधित है। आप ऐसी संपत्तियों को खरीद सकते हैं। आप घरों और दूसरे भवनों का निर्माण कर सकते हैं। भवन निर्माता इस दशा के दौरान उत्तम लाभ की आशा कर सकते हैं। भूमि और भवन या स्टील और तांबे के प्रयोग वाले व्यापार में निवेश के लिए यह सबसे उत्तम समय है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (17:10:2040 से 26:02:2041)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक धोखाधड़ी से पूर्ण दशा होगी। लोग आपसे कई वादें करेंगे, लेकिन कोई वादा पूरा नहीं होगा। किसी अनुबंध का उल्लंघन होने के कारण आपको धन की हानि हो सकती है। अतः आपके लिए किसी सौदे या अनुबंधन से दूर रहना बेहतर होगा।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (26:02:2041 से 24:06:2041)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह वास्तव में भाग्यशाली समय है। भाग्य आपके साथ रहेगा। यदि आप मिट्टी छुयेंगे, तो वह भी सोना बन जायेगी। आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ कर सकते हैं या एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप विद्यार्थी हैं तो आपको परिक्षाओं में बहुत ही अनुकूल परिणाम प्राप्त होंगे। आपका विवाह हो सकता है। आप अपने जीवनसाथी और संतान की संगति का पूर्ण आनन्द प्राप्त करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (24:06:2041 से 10:11:2041)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यद्यपि आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, लेकिन आपके दैनिक जीवन में विभिन्न समस्यायें हो सकती हैं। सुबह आप काफी खुश होंगे, लेकिन दोपहर के समय आप बहुत निराश हो सकते हैं। इसका कारण यह होगा, कि आप इस दशा के दौरान स्पष्ट रूप से सोचने में असक्षम हो सकते हैं और जल्दबाजी में निर्णय कर सकते हैं।

केतु अन्तर्दशा (10:11:2041 से 07:11:2042)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, अनिश्चितता बनी रहेगी। आपको एक कष्टकारी और दुखी जीवन का सामना करना पड़ सकता है।आप अपने हर काम में विवादों और झगड़ों में फँस सकते हैं। आपका पूरी तरह से भ्रमित और शंकाग्रस्तदिमाग काफी हद तक उथल–पुथल मचा सकता है। आप गैरमैत्रीपूर्ण और बुरे दिमाग वाले लोगों से घिरे रह सकते हैं। आप जुए की लत में पड़कर धन गवाँ सकते हैं, जिससे आपको उन लोगों, जिनसे आपने धन उधार लिया है, के चंगुल से अपने को बचाने के लिए अपनी भूमि, सम्पत्ति और अन्य सामान बेचना पड़ सकता है, फिर भी आप ऋणमुक्त नहीं हो सकते हैं। आप एक गुलाम की तरह जीवन जीने परमजबूर हो सकते हैं। अन्ततः आप मिर्गी या पागलपन का शिकार हो सकते हैं। इस अन्तर्दशा के दौरान किसी अनुकूल परिणाम की आप आशा नहीं कर सकते हैं। केतु के अशुभ प्रभाव से बचने के लिए आपको

भगवान शिव और देवी पार्वती की अराधना करनी चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (10:11:2041 से 01:12:2041)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान केतु मुख्य नियंत्रणकर्ता होगा। आपको अति उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। आपका व्यापार फले फूलेगा। आपके घर पर शुभ समारोह आयोजित होंगे। साधुजनों से आपका सम्पर्क अधिक होगा।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (01:12:2041 से 30:01:2042)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। पिछले कुछ दशाओं की तुलना में यह एक अधिक सुखकारी और परिणामदायक दशा होगी। आपके चेहरे पर मुस्कराहट वापस आयेगी। आपको अप्रत्याशित क्षेत्रों से मदद मिलेगी। आपकाविवाह हो सकता है, आपको एक पुत्री की प्राप्ति हो सकती है। आप चर्म या रतिजन्य रोगों से ग्रस्तहो सकते हैं। आप विदेशों से आय प्राप्त कर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (30:01:2042 से 17:02:2042)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत मुश्किल से भरी दशा है। आपको एक के बाद एक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। शत्रु आपके जीवन में अशांति पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। आपका एक सबसे विश्वासपात्र व्यक्ति आपको धोखा दे सकता है। व्यय आपके नियंत्रण से बाहर हो सकता है। आप बुखार और सिर दर्द से ग्रस्त हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (17:02:2042 से 19:03:2042)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आर्थिक स्थिति संतोषजनक होगी, लेकिन स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपको प्रायः डॉक्टरों और अस्पताल के चक्कर लगाने पड़ सकते हैं, जिससे आपके उपचार में भारी खर्च हो सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (19:03:2042 से 10:04:2042)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने सहोदरों, परिवार के अन्य बड़े लोगों से लाभ होगा। आपके सगे भाईबहन आपके लिए परेशानी पैदा कर सकते हैं और आपका धन एवं अन्य सम्पत्ति हड़प सकते हैं। आपको रक्त संबंधी खराबी से होने वाले रोग और बुखार हो सकता है। अपनी जीवनसाथी और परिवार कीअन्य महिलाओं के साथ प्रायः झगड़े होने के कारण आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (10:04:2042 से 03:06:2042)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप दुष्ट और अनैतिक लोगों से घिरे रह सकते हैं। आप अपने कुछ नजदीकी लोगों पर अंधविश्वास करेंगे, लेकिन वे आपको धोखा दे सकते हैं। आप अपना अधिकतर समय पूजा–पाठ में बितायेंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (03:06:2042 से 21:07:2042)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप अपने लक्ष्य को वास्तव में प्राप्त कर सकते हैं। आप आध्यात्म, शास्त्रों और अन्य पुराने ग्रन्थों को सीखने में पूरी तरह संलग्न रहेंगे। आप आध्यात्म और अन्य प्राचीन विज्ञानों पर आधारित विषयों के लेखन या प्रकाशन से आय प्राप्त करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (21:07:2042 से 16:09:2042)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके परिवार के बड़े लोगों को कष्ट हो सकता है। आपको उनके उपचार में धन व्यय करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (16:09:2042 से 07:11:2042)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आर्थिक स्थिति में बहुत सुधार होगा। आपको धन की कमी महसूस नहीं हो सकती है। आपके परिवार में हर्षोल्लास और आनन्द रहेगा। आप पवित्र स्थानों की यात्रा करेंगे। आपका व्यापार सफल होगा। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो यह दशा आपके लिए अनुकूल है।

शुक्र अन्तर्दशा (07:11:2042 से 07:09:2045)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप आध्यात्मिक मार्ग का अनुसरण करेंगे और अधिकतर समय भगवान की आराधना में रत रहेंगे। आप ऐसे उपदेशकों से सम्पर्क बनाने की कोशिश करेंगे जो आपको ईश्वरीय मार्ग के बारे में अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए आपका मार्गदर्शन कर सके। आपकी आय का एक बड़ा भाग इस कार्य में खर्च हो सकता है। इस दशा के दौरान नास्तिक भी आस्तिक बन जाता है, यद्यपि वह दावा कर सकता है, कि उसेभगवान के अस्तित्व में विश्वास नहीं है। ऐसे नास्तिक लोग छिपकर भगवान की पूजा करते हैं। आप स्वादिष्ट भोजन, उत्तम कपड़ों और आभूषणों का आनन्द प्राप्त करेंगे। मित्र और संबंधी आपकी मदद को आगे आयेंगे। आप किसी धर्मपरायण स्त्री के साथ अतिरिक्त वैवाहिक संबंध बना सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में शुक्र बली नहीं है, तो भी इस अन्तर्दशा के दौरान आपको बहुत विषम परिणाम प्राप्त नहीं होंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (07:11:2042 से 28:04:2043)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपकी अधिकतर अभिलाषायें पूरी होंगी। आपको पेड़ों, फलों, दवाओं और मवेशियों से लाभ होगा। आप धन, नाम और यश प्राप्त करेंगे। अपने प्रियजनों से आपको स्नेहऔर अधिक सम्मान मिलेगा। आपके शत्रु परास्त होंगे। विपरीत लिंग के लोगों के साथ आप आनन्द प्राप्त करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (28:04:2043 से 19:06:2043)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप जिनको अपना सबसे नजदीकी मानते हैं, उनसे सावधान रहना होगा। वे आपकी संपत्ति को हड़पने की कोशिश करेंगे। आपको गले, नाक या छाती के रोग हो सकते हैं। आपको

नेत्र विकार भी हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (19:06:2043 से 13:09:2043)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आशा से अधिक आय होगी। लेकिन व्यय भी उसी प्रकार से होगा। एक तरफ विपरीत लिंग के लोग आपकी हर संभव सहायता करेंगे, लेकिन दूसरी तरफ आप से हर चीज ले भी सकते हैं। आपके नाखूनों में किसी प्रकार की विकृति हो सकती है। आपको पीलिया की शिकायत हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (13:09:2043 से 12:11:2043)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा में आपको शारीरिक सामर्थ्य प्राप्त नहीं हो सकता है। आपको अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए अत्यधिक मेहनत करनी पड़ेगी। आपको विभिन्न तरीकों से भारी धन हानि हो सकतीहै। इस दशा के दौरान केवल दवाओं या द्रव पदार्थों के व्यापार में आप सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (12:11:2043 से 16:04:2044)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपका रूझान आध्यात्मिक प्रगति और शारीरिक सुखों की प्राप्ति की तरफ अधिक होगा। आपको सुन्दर लडकियों की संगति में रहने के अवसर मिलेंगे और आप उन अवसरों का उपयोग शारीरिक सुखों की प्राप्ति के लिए करेंगे। हालाँकि आपको सावधान रहना चाहिए– जैसाकि ऐसी कुछ महिलायें आपको धोखा दे सकती हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (16:04:2044 से 01:09:2044)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप एक पूर्ण परिपक्व व्यक्ति की तरह काम करेंगे। आप गलत और सही का भेद करने मे सक्षम होंगे। आप अपनी गलतियों को सुधारने की कोशिश करेंगे और एक साफ सुथरा जीवन व्यतीत करेंगे। आपकी कुछ महिला साथी आपको ब्लैकमेल कर सकती हैं।

शनि प्रत्यंतर्दशा (01:09:2044 से 12:02:2045)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको सरकार और अन्य स्रोतों से आवश्यक सहयोग मिलेगा। इस दशा के दौरानआप अपने भविष्य की सही दिशा का निर्णय कर सकते हैं। इस दशा के दौरान लिया गया कोई भी निर्णय आपके जीवन पर स्थायी प्रभाव डालेगा।

बुध प्रत्यंतर्दशा (12:02:2045 से 09:07:2045)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। बुध के सभी उत्तम परिणाम आपको इस दशा के दौरान मिलसकते हैं। आपको एक स्थिर भविष्य बनाने का अथक प्रयास करना चाहिए। यदि आपने उचित प्रकार से योजना बनाई, तो आपका भविष्य उत्तम होगा। मित्र और संबंधी आपको खुला सहयोग देने के लिए

हाथ बढ़ायेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (09:07:2045 से 07:09:2045)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके शत्रु आपकी प्रगति के आरम्भ में कुछ बाधायें पैदा कर सकते हैं। हालाँकि, आप अपने शत्रुओं का नाश करने और बाधाओं से पार पाने में सक्षम होंगे। आपको किसी विदेशी जगह से कोई शुभ समाचार मिल सकता है। आपके बाबा या किसी बुजुर्ग व्यक्ति का स्वास्थ्य आपकी योजनाओं औरउपक्रमों में देरी करा सकता है।

सूर्य अन्तर्दशा (07:09:2045 से 14:07:2046)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपके घर पर संपन्नता में निरन्तर वृद्धि होगी। आपको सोना, मूंगा, वाहन और उत्तम घर प्राप्त होगा। आप स्वादिष्ट भोजन और पेय पदार्थों का आनन्द प्राप्त करेंगे। सरकार से आपको समर्थन मिलेगा तथा आपकी क्षमताओं को पहचान मिलेगी। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य कमजोर है, तो शुभ परिणामों में कमी हो सकती है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (07:09:2045 से 22:09:2045)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप एक उत्तम दशा का आनन्द प्राप्त करेंगे। दिमाग और शरीर एक दूसरे की मदद करेंगे, अर्थात आपके निर्णय सही दिशा में होंगे। आप जीवन में सामान्य प्रगति करेंगे। आपका विवाह हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (22:09:2045 से 18:10:2045)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। दिमाग, शरीर और आत्मा एक दूसरे का सहयोग करेंगे और आपका जीवन संपन्न होगा। आपको विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होगी। घर पर आप विभिन्न शुभ समारोहों में व्यस्त होंगे। आपके सहोदरों का विवाह हो सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (18:10:2045 से 05:11:2045)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी प्रगति में कुछ बाधा आ सकती है। यह एक मंदी दशा होगी। आप अपनी योजना के अनुसार कोई काम नहीं कर सकते हैं। बाहरी लोगों का दखल आपकी अस्थिरता का प्रमुख कारण होगा। आपको अपने मामलों में उनके दखल को नजरअंदाज करने की कोशिश करनी चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (05:11:2045 से 22:12:2045)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणाम प्राप्त होंगे। आपको व्यावसायिक उपलब्धि मिलेगीऔर व्यापार में सुधार होगा। संबंधी और मित्रों को आपकी प्रगति से ईर्ष्या हो सकती है और वे आपके लिए समस्यायें खड़ी कर सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (22:12:2045 से 01:02:2046)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने सभी कामों में सफलता मिलेगी। राजनीति से जुड़े होने पर यह आपके लिए उत्तम दशा हो सकती है। आपको गलत तरीकों से धन प्राप्त हो सकता है। आपको नाम, अधिकार और शक्ति प्राप्त होगी। चुनाव लड़ने के लिए यह एक उत्तम समय होगा। हालाँकि, आपको अपनेस्वास्थ्य का ख्याल रखना चाहिए। आपको रक्त चाप या हृदय की कोई छोटी समस्या हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (01:02:2046 से 22:03:2046)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा विरोधों से भरी हो सकती है। जितना आप समस्याओं से दूर भागेंगे, उतना ही और फंसते जायेंगे। कई लोग जो आपके शुभचिन्तक होने का नाटक करेंगे, वहीं आपको अस्थिरकरने की कोशिश करेंगे। आप सिर दर्द और बुखार से पीड़ित हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (22:03:2046 से 05:05:2046)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक प्रगति होगी। आपको विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होगी। यह एक व्यस्त दशा होगी। आपको विभिन्न सामाजिक समारोहों और आयोजनों में भाग लेने का आमंत्रण मिलेगा। अपने जीवनसाथी के साथ आपके मधुर संबंध नहीं हो सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (05:05:2046 से 23:05:2046)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक कष्टकारी दशा हो सकती है। आपके अपने संबंधी आपको परेशान कर सकते हैं। वेआपके खिलाफ हो सकते हैं और आपकी मानसिक शांति भंग कर सकते हैं। आपको व्यापार में भारी नुकसान हो सकता है। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको अपने विशिष्टों के क्रोध का सामना करना पड़ सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (23:05:2046 से 14:07:2046)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक पुनर्प्राप्ति की दशा होगी। विदेशों से आपको शुभ समाचार मिलेंगे। आप व्यापार या रोजगार के संबंध में दूरस्थ स्थानों की यात्रा करेंगे। आपको इन यात्राओं से आय होगी। विपरीत लिंग के लोगों के साथ मौज–मस्ती करना आपको परेशानियों में डाल सकता है।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (14:07:2046 से 13:12:2047)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा मेंआपको शारीरिक व्याधियां हो सकती हैं। आप सिरदर्द, आँखों में फोड़े, कुष्ठ रोग, दाद, गर्दन में दर्द आदिसे ग्रस्त हो सकते हैं। आपकी गर्दन या सिर में चोट लग सकती है। आपकी माता का स्वास्थ्य खराबहो सकता है। आपके सगे भाई–बहन आपके शत्रु हो सकते हैं। आपको अपने सहोदरों की जिम्मेदारीउठानी पड़ सकती है– विशेषकर यदि आपकी बहनें हैं, तो उनकी। इस अन्तर्दशा के दौरान आपकी या आपके भाई/बहन की शादी हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (14:07:2046 से 26:08:2046)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको आभूषणों, कपड़ों और मवेशियों के व्यापार से लाभ होगा। समाज में आपकेविद्यमान स्थान के अनुसार आपका नाम और यश बढ़ेगा। आपके माता–पिता तीर्थयात्रा पर जा सकतेहैं। आपको ननिहाल की संपत्ति विरासत में मिल सकती है। अन्यथा ऐसी सम्पत्ति पर विवाद हो सकतेहैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (26:08:2046 से 25:09:2046)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके सामने कई सारे जटिल मामले आ सकते हैं। आपको पैतृक सम्पत्ति और धन की हानि हो सकती है। आप रक्त की खराबी, चिन्ता और निराशा से होने वाले रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (25:09:2046 से 12:12:2046)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अकथित दुखों का सामना करना पड़ सकता है। आपका स्वास्थ्य इतना खराब हो सकता है, कि आपको दिन प्रतिदिन के काम करने में परेशानी हो सकती है। आपके जीवनसाथी और संतान का स्वास्थ्य भी खराब हो सकता है। उपचार में आपका व्यय बढ़ सकता है और आपको मित्रों तथा संबंधियों से कर्ज लेने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (12:12:2046 से 19:02:2047)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक पूर्ण रूप से आरामदायक दशा होगी। आप अधिकतर जटिल मामलों से राहत महसूस कर सकते हैं। आपके परिवार के लोगों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। हालाँकि, आपको स्वास्थ्यसंबंधी कुछ छोटी–मोटी समस्यायें हो सकती हैं। आपको काफी अप्रत्याशित तरीके से धन प्राप्त होगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (19:02:2047 से 12:05:2047)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम मुख्यतः आपकी जन्मकुण्डली में शनि की स्थिति और गोचर पर निर्भर करेंगे। जन्मकुण्डली में शनि की उत्तम स्थिति आपको अति उत्तम परिणाम देगी। यदि इस दौरानसाढ़े साती, अष्टम् शनि या कंटक शनि भी लागू हैं, तो आपको केवल मिश्रित परिणाम प्राप्त होंगे।

बुध प्रत्यंतर्दशा (12:05:2047 से 24:07:2047)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान प्राप्त होने वाले परिणामों का पता लगाने के लिए चंद्रमा और बुध की स्थिति का उचित अवलोकन करना होगा। यदि दोनों उत्तम स्थिति में हैं, तो आपको अति उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। अन्यथा आपको सभी संभावित विपदाओं का सामना करना पड़ सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (24:07:2047 से 23:08:2047)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आय में बढ़ोत्तरी होगी, लेकिन आप मानसिक निराशा से ग्रस्त हो सकते हैं। आप उस निराशा के कारण का पता लगा पाने की स्थिति में नहीं हो सकते हैं, क्योंकि दिमाग का नियंत्रणकर्ता चंद्रमा पूरी तरह से केतु के नियंत्रण में होगा। आपके परिवार के लोगों को कोई परेशानी नहींहो सकती है, जबकि आपके परिवार के सदस्य आपके कारण परेशान हो सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (23:08:2047 से 17:11:2047)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप जिस मानसिक हताशा से गुजर रहे थे, उससे आपको राहत मिलेगी। इस समय आप निवेश, अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए भूमि और भवन की खरीददारी या किसी ऊँचे पद की प्राप्ति की कामना कर सकते हैं। आपको अपने जीवनसाथी से पूर्ण सहयोग मिलेगा।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (17:11:2047 से 13:12:2047)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह शक्ति और अधिकार की दशा है। आपको समाज में नाम और यश प्राप्त होगा। आप अपनी समय सूची के अनुसार अपनी योजनाओं को पूरा करने की स्थिति में होंगे। माता–पिता आपके विचारों का समर्थन करेंगे। हालाँकि, आपको बुखार और सिरदर्द की शिकायत हो सकती है।

मंगल अन्तर्दशा (13:12:2047 से 10:12:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको व्यवसाय और समाज में कई प्रकार की समस्यायें हो सकती हैं। शत्रुओं से भी आपको कष्ट हो सकता है। आपको आग या बिजली से काम करते समय सावधानी बरतनी चाहिए– जैसाकि आपके जलने की संभावना है। आपको नेत्र और वायु विकार भी हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (13:12:2047 से 03:01:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको औसत दर्जे के उत्तम परिणाम मिल सकते हैं। आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य की ओर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। आपका अपने जीवनसाथी से अलगाव हो सकता है। संतान भी अधिक परेशानियां पैदा कर सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (03:01:2048 से 27:02:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। समग्र रूप से यह एक संशय से पूर्ण दशा होगी। आप किसी मामले में कोई ठोस निर्णय नहीं कर पायेंगे। यदि आपने कोई निर्णय लिया, तो अन्त में आपको उसमें परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने प्रियजनों के बारे में कोई समाचार मिल सकता है। आपके अपने जीवनसाथी के साथ संबंध आत्मीय नहीं हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (27:02:2048 से 15:04:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछले कुछ दशाओं के दौरान आपने जिन दुखों का सामना किया है, उनसे

आपको राहत मिलेगी। आप अपने अधूरे पड़े कामों को पूरा करेंगे। आपका या आपकी बहन का विवाह हो सकता है। हालाँकि, ऋणदाता आपको निरन्तर परेशान कर सकते हैं।

शनि प्रत्यंतर्दशा (15:04:2048 से 12:06:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा के दौरन आपको प्राप्त होने वाले कुछ उत्तम परिणाम ब्याज सहित वापस हो सकते हैं। शत्रु आप और आपके परिवार को अस्थिर करने में प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं। आपरोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। इन समस्याओं से राहत पाने का केवल एक ही रास्ता है, कि आप ईश्वर में भरोसा रखें और रोज उसकी आराधना करें।

बुध प्रत्यंतर्दशा (12:06:2048 से 02:08:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। ईश्वर की कृपा से आप धीरे–धीरे उन समस्याओं से बाहर निकल आयेंगे, जिनसे आप अब तक जूझ रहे थे। आप केवल भूमि और भवन या भवन निर्माण के व्यापार अथवा एक ज्योतिषी यापुस्तक विक्रेता के रूप में सफल हो सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (02:08:2048 से 23:08:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको व्यापार में हानि और रोजगार में बदनामी या विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपको चिन्तित कर सकता है। संतान आपकी बातें अनसुनी कर सकते हैं। शत्रु भी आपको परेशान कर सकते हैं। आपका अपने सहोदरों या अन्य नजदीकी संबंधियों के साथ सम्पत्ति के मामलों पर विवाद हो सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (23:08:2048 से 23:10:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सभी कानूनी मामलों में सफलता मिलेगी। शत्रु परास्त होंगे। आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य में सुधार होगा। संतान सबक सीखेंगी और आपकी आज्ञा का पालन करेंगी। आपको विरासत में ननिहाल की संपत्ति मिल सकती है। फिलहाल सहोदर लोग शांत रहेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (23:10:2048 से 10:11:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा भी संघर्षों और समस्याओं से पूर्ण होगी। इन लगातार बढ़ने वाली समस्याओं को हल कर पाने में असक्षम होने के कारण आप नशे या दूसरे प्रकार के ऐंद्रिय सुखों का सहाराले सकते हैं। आपको धन उधार लेने पर मजबूर होना पड़ सकता है। आप अपने परिवार को नजरअन्दाज कर सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (10:11:2048 से 10:12:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अपेक्षाकृत यह एक बेहतर दशा होगी। महिलाओं से आपको मदद मिलेगी। बेतुके मामलों में पिता से आपका विरोध आपको उनसे मिलने वाले लाभ से वंचित कर सकता है। आपके सगे

भाई बहन आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपको हानि पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं।

राहु अन्तर्दशा (10:12:2048 से 29:06:2051)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। आपको उन लोगोंसे खतरा हो सकता है, जिन पर आप आश्रित होंगे या जिसने आपकी बुरे दौर में मदद की हो। आपको संचित धन की हानि हो सकती है। आपका पद और सम्मान दाँव पर लग सकता है। आप जहर और गैस, सिरदर्द, नेत्रों में फोड़ा या पेट में कष्ट से ग्रसित हो सकते हैं। सामान्यतः आप इस अन्तर्दशा केदौरान मानसिक वेदना के शिकार हो सकते हैं और आपको सभी योजनाओं में असफलता मिल सकती है। यदि राहु आपकी कुण्डली में शुभ भी है, तो भी वह शुभ परिणाम देने में शिथिलता बरतेगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (10:12:2048 से 29:04:2049)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। पिछली दशा की तुलना में आपको विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होगी। लेकिन ऐसी आय लापरवाही के कारण खर्च हो सकती है। अतः इस प्रत्यंतर्दशा के अन्त में आप कर्जदार हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (29:04:2049 से 31:08:2049)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके ज्ञान में बढ़ोत्तरी होगी। आप शास्त्रों के अध्ययन और धार्मिक उपासना में रूचि लेंगे। आप साधुजनों की संगति में रहेंगे। आपके घर पर शुभ समारोह आयोजित होंगे, जहाँ पर आपके संबंधी एकत्र होंगे और आपका सहयोग करेंगे। आपकी संतान का विवाह हो सकता है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (31:08:2049 से 25:01:2050)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक खराब और अशुभ दशा हो सकती है। अप्रत्याशित घटनायें आपको पागल कर सकती हैं। आपको समझ में नहीं आयेगा कि आप कहां जायें, जिससे आप घर से दूर जा सकते हैं या किसी स्थान पर छुप सकते हैं। आपकी विवाहित पुत्रियों को कष्ट हो सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (25:01:2050 से 06:06:2050)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको भिन्न परिणाम प्राप्त होंगे। पहले कुछ दिनों में आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकते हैं। दशा के मध्य में आपको उत्तम परिणाम मिलेंगे। दशा के अन्त में आप और आपके जीवनसाथी तथा संतान को सभी संभव विपदाओं, रोगों और उसके फलस्वरूप कष्टों का सामना करना पड़ सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (06:06:2050 से 30:07:2050)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा बहुत खराब नहीं हो सकती है। आपको समय–समय पर धन लाभ होगा और घर पर शुभ समारोह आयोजित होंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आप पीलिया, चर्म रोगों या बुखार से ग्रस्त हो सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (30:07:2050 से 02:01:2051)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। इन तीनों में से एक ग्रह आपके हर काम में आपको उत्तम सहयोग देगा। विदेश से आपको कुछ शुभ समाचार मिलेंगे। महिलाओं से आपको मदद मिलेगी। आपको विभिन्न महिलाओं से आनन्द प्राप्ति के अवसर मिलेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (02:01:2051 से 17:02:2051)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अनिश्चितता पूर्ण दशा हो सकती है। आपको अपने अस्तित्व के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ सकता है। धन की कमी प्रमुख समस्या हो सकती है। मोहक निवेशों में भी आपको पूर्ण हानि हो सकती है। आप एक के बाद एक रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (17:02:2051 से 06:05:2051)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आर्थिक स्थिति में थोड़ा सुधार होगा। आप तनावग्रस्त हो सकते हैं। ऋणदाता आपको परेशान कर सकते हैं। आपके जीवनसाथी का व्यवहार स्थिति को और खराब कर सकताहै। आपके माता–पिता आपकी उपेक्षा कर सकते हैं। संतान और अधिक सुविधाओं की मांग कर सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (06:05:2051 से 29:06:2051)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। वाहन से यात्रा करते समय आपको सावधान रहना चाहिए। आप दुर्घटनाओं का सामना कर सकते हैं, जिससे आपको शारीरिक चोट लग सकती है। यदि आप राहु से संबंधित वस्तुओं काव्यापार करेंगे, तो आपको व्यापार में सफलता मिलेगी।

गुरू अन्तर्दशा (29:06:2051 से 04:10:2053)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप रोग मुक्त रहेंगे और आपको पूर्ण मानसिक और शारीरिक शांति मिलेगी। आपको अपने व्यवसाय के साथ–साथ समाज में उत्तम कार्य करने के लिए प्रशंसा प्राप्त होगी। आप निडर होंगे। हालांकि, आप अपने हर काम में दुविधाग्रस्त रह सकते हैं। चूंकि, इस दशा में आपको दैवीय कृपा प्राप्त होगी, अतः आप संशयग्रस्त हो सकते हैं, कि कहीं अनजाने में आपने पाप तो नहीं कर दिया। अतः आपकोरोज पूजा करनी चाहिए, ताकि आपका दिमाग स्थिर हो सके। आपके सन्यासी होने की संभावना हो सकती है। आपको शांतिपूर्ण घरेलू जीवन का आनन्द प्राप्त होगा, रोजगार में प्रगति होगी और व्यापार समृद्ध होगा। भूमि और सम्पत्ति में निवेश के लिए यह दशा बहुत उत्तम होगी।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (29:06:2051 से 17:10:2051)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपके पिता के स्वास्थ्य में सुधार होगा। यदि आप अविवाहित हैं, तो आप विवाह की आशा कर सकते हैं। आपको संतान की प्राप्ति भी हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (17:10:2051 से 25:02:2052)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी और आपके जीवनसाथी तथा संतान की कुछ स्वास्थ्य समस्याओं को छोड़कर यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। यदि आपके पिता बीमार हैं, तो उनके स्वास्थ्य में सुधार होगा। यदि आप अविवाहित हैं, तो इस दशा के दौरान आप विवाह की आशा कर सकते हैं। आपको संतान की भीप्राप्ति हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (25:02:2052 से 22:06:2052)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। यदि आप व्यापारी हैं या अध्यापन, लेखा और प्रकाशन के रोजगार से जुड़े हैं, तो आपके लिए यह विशेष लाभदायक दशा है। आपको शीघ्र सफलता मिलजायेगी। यदि बुध सभी मामलों में अशुभ है, तो ही आपको विषम परिणाम मिल सकते हैं। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। यदि आपने कोई ऋण लिया है, तो आप उसे वापस करने मेंसक्षम होंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (22:06:2052 से 09:08:2052)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। आप भूमि खरीद सकते हैं और नये निवेश करेंगे। मुकदमों में आपको सफलता मिलेगी। आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। अतिरिक्त आय के रास्ते खुलेंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (09:08:2052 से 26:12:2052)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक स्वर्णिम दशा होगी। आपको बिना अधिक प्रयास के प्रत्येक चीज मिल जायेगी। आपको सुन्दर स्त्रियों की संगति में आनन्द प्राप्त करने के अवसर मिलेंगे। हालाँकि, अपने बड़ों याउपदेशकों की पत्नियों के साथ गलत काम करने के कारण आपको उनके शाप का सामना करना पड़ सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (26:12:2052 से 05:02:2053)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि आप राजनीति से जुड़े हैं, तो यह दशा उत्तम होगी। आप इस दशा में चुनावलड़ सकते हैं और राजनीतिक दायरों में ऊँचा पद प्राप्त कर सकते हैं। आपको अनैतिक तरीकों से भारी धन प्राप्त होगा। लेकिन ध्यान रहे, निर्दोष और गरीब लोगों को कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए, अन्यथा शनि की प्रत्यंतर्दशा के दौरान उनके शाप के कारण आपको अपने कर्मों का फल भुगतना पड़ेगा।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (05:02:2053 से 15:04:2053)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली कुछ दशाओं में प्राप्त सफलता को आप और मजबूती तथा ऊँचाई प्रदान करेंगे। यह आपके लिए आनन्द का समय है। आप अपने कर्तव्यों की अनदेखी करके ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में रत रहेंगे। आपके लिए उन सुखों से दूर रहना बेहतर होगा। आपके जीवनसाथी और संतान के साथ प्रायः आपके झगड़े हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (15:04:2053 से 02:06:2053)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक कठिन दशा होगी। अधिक से अधिक धन कमाने का लालच आपको हताशा की तरफ ले जा सकता है। मित्र आपको धोखा दे सकते हैं। आपके सगे भाई बहनों के उपचार में भारी व्यय होने के कारण आपको दूसरों से धन मांगना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (02:06:2053 से 04:10:2053)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक कष्टकारी दशा हो सकती है। आपके उदासीन रवैये के कारण जीवनसाथी भी आपके लिए चिंता का कारण बन सकती है। तलाक की संभावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता है। हालाँकि, संतान की तरफ से आपको सकारात्मक सहयोग और सुख मिल सकता है।

शनि अन्तर्दशा (04:10:2053 से 13:06:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको सभी योजनाओं में असफलता और भारी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आप निराशा, कफ और लकवा के शिकार हो सकते हैं। आपको धन हानि हो सकती है। आपमें उचित सोच काअभाव हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि शुभ भी है, तो भी आपको शुभ परिणाम नहीं मिल सकते हैं। इस अशुभ प्रभाव से बचने के लिए आपको भगवान शिव और देवी पार्वती की अराधना करनी चाहिए।

शनि प्रत्यंतर्दशा (04:10:2053 से 09:03:2054)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। पिछली दशा से यह थोड़ी बेहतर दशा होगी। आप शनि की वस्तुओं से अतिरिक्त आय की आशा कर सकते हैं। आप लोहे और स्टील के व्यापार में प्रगति कर सकते हैं। यदि आपका संबंधप्रकाशन या लेखन से है, तो यह दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (09:03:2054 से 26:07:2054)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में आपने जो कुछ खोया था, उसे इस दशा में प्राप्त करेंगे। अप्रत्याशित मदद सेआपको सफलता मिलेगी। संबंधी आपके कट्टर शत्रु बन सकते हैं। सम्पत्ति के मामलों में आप और आपके नजदीकी संबंधियों के बीच विवाद हो सकता है। संतान पढ़ाई में उत्तम परिणाम नहीं ला सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (26:07:2054 से 21:09:2054)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। एक के बाद एक कई अप्रत्याशित घटनाओं के कारण आपके व्यय में बढ़ोत्तरी होगी।उदाहरण के लिए कई वैवाहिक समारोहों या जन्मोत्सवों के कारण आपको अपनी आय से अधिक व्यय करना पड़ेगा। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (21:09:2054 से 04:03:2055)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आप कुछ हद तक आर्थिक संकट से बाहर

निकलने में सक्षम होंगे। आप अपने घर का निर्माण कर सकते हैं। आपको विदेश यात्रा या वहाँ पर रोजगार मिलने के भी अवसर पैदा हो सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (04:03:2055 से 22:04:2055)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा को आप कभी भूल नहीं सकते हैं। हर तरफ आप केवल समस्याओं से घिरे हो सकते हैं। बढ़े हुए खर्चों और विभिन्न रोगों से आपको कोई राहत नहीं मिल सकती है। आपका किसी काम को करने में मन नहीं लग सकता है। जीवन आपको बोझ लग सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (22:04:2055 से 13:07:2055)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। अपने खराब स्वास्थ्य के कारण आप प्रायः डॉक्टरों के चक्कर लगा सकते हैं। आपकी आय में गिरावट आ सकती है। आर्थिक संकट के दौरान आपके माता–पिता आपका सहयोग नहीं कर सकते हैं। आप पूर्णतः अपने मित्रों पर निर्भर रहेंगे, जो समय आने पर आपको धोखा दे सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (13:07:2055 से 08:09:2055)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। चोरी या मुकदमे के कारण आपको सम्पत्ति की हानि हो सकती है। अनुमान लगानेकी प्रवृत्ति के कारण आपको धन हानि हो सकती है। आपको नशे और अन्य ऐंद्रिय सुखों की लत लग सकती है। ऋणदाता आपको परेशान कर सकते हैं। आगजनी के कारण सम्पत्ति के नष्ट होने की संभावना है। संतान भी आपकी अधिक चिन्ता का कारण बन सकती हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (08:09:2055 से 03:02:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको अकथित दुखों का सामना करना पड़ सकता है। आपके नजदीकी मित्र भी आपकी मदद करने से इन्कार कर सकते हैं। श्री रूद्रम् मंत्र का जाप आपको भारी राहत पहुंचायेगा।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (03:02:2056 से 13:06:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अन्ततः ईश्वर आपको क्षमा कर देगा। पिछले नुकसानों की आप धीरे–धीरे भरपाई करेंगे। अधिक धन कमाने के एक के बाद एक अवसर आपको काफी अप्रत्याशित रूप से प्राप्त होंगे। आप भूमि और भवन में निवेश करेंगे।

केतु दशा (13:06:2056 से 14:06:2063)

वर्तमान समय में आपकी केतु की महादशा चल रही है और केतु आपकी कुण्डली में दसवें भाव में स्थित है। सामान्यतः केतु की दशा तब तक उत्तम नहीं हो सकती है, जब तक यह अपने उच्चस्थ भाव में ना हो,जहां पर परिणाम बहुत लाभकारी होंगे। आपके पिता के लिए यह अशुभ हो सकती है। आप त्वचा, कफऔर गुदा की बीमारियों से पीड़ित हो सकते हैं। सवारी के दौरान जानवर की पीठ से गिरने या वाहन

चलाते समय दुर्घटनाग्रस्त होने से आप चोटिल हो सकते हैं। आपको अनुमानित निवेशों से सर्वथा दूर रहनाचाहिए। आप योजनाओं में असफलता के परिणामस्वरूप हताश हो सकते हैं। भगवान शंकर और नारायण की साथ–साथ पूजा आपको जीवन में संभावित विपदाओं से राहत दिलाएगी।

वर्तमान समय में आपकी केतु की महादशा चल रही है और केतु आपकी कुण्डली में मिथुन राशि में स्थित है। केतु की दशा सामान्यतः उत्तम होगी। इस दशा के दौरान आपके महान कार्य होंगे। आपको जीवनसाथी और संतान का सुख मिलेगा। सार्वजनिक कार्यों में आपकी गहरी रूचि होगी और आपको नाम तथा यश मिलेगा। हालाँकि भावनाओं और उदारता के साथ आपकी भौतिक प्रगति में बहुत अधिक रूचि होगी। आप जो भी धन कमायेंगे, उसका एक हिस्सा जरूरतमंदों और दुर्भाग्यशाली लोगों में बांट देंगे। आपएक महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करेंगे। आप पवित्र संस्थानों की स्थापना करेंगे। हालाँकि आपको सावधान रहना चाहिए, क्योंकि अब तक अर्जित प्रतिष्ठा केतु की दशा समाप्त होने पर ईर्ष्या और कलंक के कारण खत्म हो सकती है।

केतु अन्तर्दशा (13:06:2056 से 10:11:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको अपनी योजनाओं में असफलता और भारी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आप निराश हो सकते हैं तथा कफ एवं लकवा के शिकार हो सकते हैं। आपको धन हानि हो सकती है। आप उचित सोच से वंचित हो सकते हैं। यदि आपकी जन्मकुण्डली में शनि शुभ है, तो आपको शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। इस अशुभ दशा पर विजय पाने के लिए आपको भगवान शिव और देवी पार्वती की अराधना करनी चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (13:06:2056 से 22:06:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा अति उत्तम होगी। आप धार्मिक मामलों में गहरी रूचि लेंगे। आपके घरेलू मामलों में प्रायः संबंधियों का दखल हो सकता है। आपको दूरस्थ स्थानों और विदेशों से भी शुभ समाचार मिल सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (22:06:2056 से 17:07:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपका रूझान शारीरिक सुखों की प्राप्ति की तरफ अधिक हो सकता है। ऐसे अवसर पैदा हो सकते हैं कि आपके संबंध महिलाओं के साथ बन सकते हैं और आप नशे के आदी हो सकते हैं। आपके अपने जीवनसाथी से अत्मीय संबंध नहीं हो सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (17:07:2056 से 24:07:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान, आप दुष्ट प्रकृति के लोगों से घिरे रह सकते हैं। अधीनस्थ औरवरिष्ठ लोग आपके लिए अधिक समस्यायें पैदा कर सकते हैं। आपका वर्तमान पद से स्थानान्तरण हो सकता है। आपको गले, आँख और पेट के रोग हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (24:07:2056 से 06:08:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके परिवार की महिलायें परेशानी का सामना कर सकती हैं। आपका चिकित्सा खर्च बढ़ सकता है। दंडस्वरूप आपका स्थानान्तरण हो सकता है। आपकी किसी एक बहन के पति को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता या बहन का तलाक हो सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (06:08:2056 से 14:08:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा आपके लिए कष्टपूर्ण हो सकती है। आप परिस्थितियों के साथ सामंजस्यस्थापित करने की भरपूर कोशिश कर सकते हैं, लेकिन हो सकता है कि भाग्य आपका साथ ना दे। आप भारी मानसिक वेदना से गुजर सकते हैं। शत्रु आपको कष्ट पहुंचा सकते हैं। आपको वाहन नहीं चलाना चाहिए– जैसाकि आपको चोट लगने की संभावना है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (14:08:2056 से 06:09:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है। आप अपने जीवन में अपने कठिन परिश्रम से प्रगति करने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आपको उसका उचित फल नहीं मिल सकता है। अन्ततः आप निराश हो सकते हैं और गैरकानूनी तथा असामाजिक कामों में संलग्न हो सकते हैं। आपको अभियोगका सामना करना पड़ सकता है। आप बवासीर या भगन्दर रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (06:09:2056 से 26:09:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अस्थिर और प्रतिकूल दशाओं के कई महीनों के अन्तराल के बाद आप एक बेहतर दशा का सुख प्राप्त करेंगे। अप्रत्याशित क्षेत्रों से आपको आय हो सकती है। आपका विवाह हो सकता है या आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (26:09:2056 से 19:10:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपको एक के बाद एक कई अशुभ घटनाओं का सामना करनापड़ सकता है। आपके आस–पास के लोग आपके लिए अधिकतम परेशानियां पैदा कर सकते हैं। आपको अपमान और कलंक का सामना करना पड़ सकता है। इस मानसिक वेदना को सहन कर पाने में असक्षम होने के कारण आप मादक पदार्थों का सेवन कर सकते हैं। आपको गुदा, चर्म रोग और बुखार कीसमस्या हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (19:10:2056 से 10:11:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप इस दशा में त्रासदी पूर्ण समय से छुटकारा पा जायेंगे और एक बार पुनः जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। मित्र और संबंधी आपकी मदद करेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति मिल सकती है। जीवनसाथी और अन्य महिलाओं से आपको लाभ होगा।

शुक्र अन्तर्दशा (10:11:2056 से 10:01:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा

के दौरान, परिस्थितियां ऐसी बन सकती हैं, कि आपको अपने मोहल्ले में रहने वाले किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की अप्रसन्नता का सामना करना पड़ सकता है और आप साधुजनों एवं उपदेशकों के शाप से प्रभावित हो सकते हैं। जीवनसाथी की बेतुकी बातों पर झगड़ा करने के कारण आप जीवनसाथी के सुख से वंचित हो सकते हैं। हालांकि, आंतरिक यौन संबंधों के बनने के कारण वैवाहिक संबंध नहीं टूटेगा और वे आपको बार–बार आपस में बांधने में मदद करेंगी। संबंधी भी आपसे अलग नहीं होंगे। वे आपके घरेलू मामलों में दखल दे सकते हैं और आपके जीवन को कष्टमय तथा वेदनापूर्ण बना सकते हैं। आपको पुत्री की प्राप्ति होसकती है। अन्तर्दशा के मध्य में कुछ शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। यदि शुक्र बली है, तो अशुभ प्रभावों से थोड़ी राहत मिल सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (10:11:2056 से 20:01:2057)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है। आपको पुत्रियों की प्राप्ति हो सकती है। आप अतिरिक्त सांसारिक सुखों में संलग्न हो सकते हैं। आपको रतिजन्य रोग हो सकते हैं। आप दक्षिण दिशा की तरफ यात्रा पर जा सकते हैं, जहाँ आपको कष्ट हो सकते हैं। आपके जीवन में कोईअज्ञात व्यक्ति समस्या पैदा कर सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (20:01:2057 से 10:02:2057)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपमें भूख का अभाव हो सकता है। आप बुखार, पेट में दर्द, आँखों में परेशानी से ग्रस्त हो सकते हैं। परिवार की महिला सदस्यों से आपको कष्ट हो सकता है। आपके घर पर रिश्तेदारों केआने से परिवार में समस्यायें पैदा हो सकती हैं। आपके खिलाफ कुछ न्यायालिक मामले हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (10:02:2057 से 18:03:2057)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको आनन्द प्राप्त होगा। आपके घर पर कई शुभ समारोह आयोजित होंगे। आप कई छोटी यात्राओं पर जायेंगे। आपको महिलाओं से लाभ मिलेगा। आपकी माता कास्वास्थ्य नाजुक हो सकता है। कर्मचारियों से आपको समर्थन मिलेगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (18:03:2057 से 11:04:2057)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अशुद्ध रक्त से संबंधित रोग हो सकते हैं। आपका किसी अन्य स्त्री, जिसके साथ आपके घनिष्ठ संबंध हैं, के साथ आपका दूसरा विवाह हो सकता है। उस स्त्री से आपके लिएछुटकारा पाना बहुत मुश्किल होगा। यह संबंध कुछ समय तक जारी रह सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (11:04:2057 से 14:06:2057)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके द्वारा पिछली दशा में किये गये अनैतिक कार्यों का परिणाम इस दशा में सामने आयेगा। आपकी मानसिक शान्ति पूर्ण रूप से भंग हो सकती है। आपके दिमाग में आत्महत्या का विचार भी आ सकता है। आपको चर्म रोग हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (14:06:2057 से 10:08:2057)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। बृहस्पति के आशीर्वाद से आप परेशानियों से छुटकारा पाने में सक्षम होंगे। आपको धीरे–धीरे मानसिक शान्ति मिलेगी और आप आराम महसूस करेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपकी पदोन्नति हो सकती है। यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आप एक उत्तम व्यापार की आशा कर सकते हैं।

शनि प्रत्यंतर्दशा (10:08:2057 से 16:10:2057)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आय में वृद्धि होगी, लेकिन आपको समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। शत्रु आपको नुकसान पहुंचाने की पूरी कोशिश करेंगे। आपको अपने ससुराल वालों के कारण कष्ट हो सकता है। आप न्यायालयिक मामलों में फंस सकते हैं। आप मामले को आगामी दशा तक टालने की कोशिश करें।

बुध प्रत्यंतर्दशा (16:10:2057 से 16:12:2057)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। पिछली दशा के दौरान जिन कष्टों का आपने सामना किया था, आप उनसे राहत पासकते हैं। आप कुछ सदाचारी लोगों के सम्पर्क में आयेंगे, जो आपको सही मार्ग दिखायेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (16:12:2057 से 10:01:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपमें धार्मिक भावनायें जागृत होंगी। आप स्वयं को ईश्वर की उपासना में पूर्ण रूप से समर्पित कर देंगे। ज्ञान के नये क्षेत्रों का उद्भव होगा। आपकी बहन का विवाह होसकता है।

सूर्य अन्तर्दशा (10:01:2058 से 17:05:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपमें अपने परिवार और संबंधियों के लिए अरूचि उत्पन्न हो सकती है। आपका उपदेशकों के साथबहुधा विवाद हो सकता है। सरकारी अधिकारियों से आपको परेशानी हो सकती है। आप बुखार, जलनेया कफ की समस्या से ग्रसित हो सकते हैं। आपके परिवार में किसी का स्वास्थ्य बहुत खराब हो सकता है। यह आपका कोई भाई/बहन या उपदेशक या पिता हो सकता है। हालांकि, विभिन्न स्रोतों से आपको आय हो सकती है। विदेश यात्रा से भी आपको लाभ होने के संकेत हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (10:01:2058 से 16:01:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपका झुकाव पैतृक मामलों की तरफ हो सकता है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। आपके और आपके पिता के भाई बहनों के साथ आपका संपत्तिविवाद हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (16:01:2058 से 27:01:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि आप अविवाहित हैं, तो आपका विवाह हो सकता है। आपके धन में वृद्धि, भूमिऔर भवन का क्रय/विरासत में प्राप्ति, वाहन की प्राप्ति और उनसे सुख, विभिन्न स्रोतों से आय और संतान का जन्म हो सकता है। आपका संबंध उत्तम लोगों से बना रहेगा। आप एक स्वस्थ्य जीवन व्यतीत करेंगे अथवा रोगों से मुक्ति मिल सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (27:01:2058 से 03:02:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके काम से वरिष्ठ लोग प्रसन्न नहीं हो सकते हैं। आपको दण्ड के रूप में स्थानान्तरण का सामना करना पड़ सकता है या आप पर कोई छोटा जुर्माना लगाया जा सकता है। यदि आप व्यापारी हैं, तो आप अपने व्यापार क्षेत्र में अपनी पकड़ खो सकते हैं। आपको छोटी दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (03:02:2058 से 22:02:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। शत्रु आपको विचलित करने की कोशिश कर सकते हैं। आप उदर, कान या नेत्र रोग से ग्रस्त हो सकते हैं। आपके पिता से आपके संबंध उत्तम नंही हो सकते हैं। आपकी पैतृक संपत्ति खोसकती हैं। आपके परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (22:02:2058 से 11:03:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप उन सब चीजों को पुनः प्राप्त करेंगे, जिन्हें आपने पिछली कुछ दशाओं में खो दिया था। निवेश करने के लिए यह आपके लिए काफी अनुकूल समय है। आप भूमि या भवन और वाहन खरीद सकते हैं। हालाँकि, आपको अपनी संतान के स्वास्थ्य की अधिक देखभाल करनी पड़ सकती है। यदि आपकी कुण्डली में बृहस्पति अशुभ है, तो संतान हानि की संभावना हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (11:03:2058 से 01:04:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक कष्टकारी दशा हो सकती है। आपके परिवार में प्रायः कलह हो सकते हैं।आपको ऐसा महसूस हो सकता है कि परिवार की मदद के लिए किये गये सारे प्रयास व्यर्थ हैं। दूसरे आपके विचारों को नहीं समझ सकते हैं, अपितु वे आपको ही घर में होने वाली परेशानियों के लिए जिम्मेदारठहरा सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (01:04:2058 से 19:04:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपका अधिक रूझान ज्ञान प्राप्ति की तरफ हो सकता है। आपको शास्त्रों के अध्ययन में रूचि हो सकती है। आप लेखन या प्रकाशन के द्वारा आय प्राप्त कर सकते हैं। आपज्योतिष विद्या के द्वारा भी धन कमा सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (19:04:2058 से 26:04:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। आपके शत्रु परास्त होंगे। सरकार से आपको लाभ मिलेगा। आप अपने वर्तमान निवास स्थान से दक्षिण की तरफ तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं। आप घर पर कई धार्मिक समारोहों का आयोजन करेंगे। आपको सावधान रहना चाहिए– जैसाकि आपके घर पर चोरी की संभावना हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (26:04:2058 से 17:05:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यदि आप चिकित्सा से जुड़े हैं, तो यह दशा आपके लिए उत्तम होगी। आपका व्यापार समृद्धशाली होगा। विभिन्न परिक्षाओं में आप अनुकूल परिणामों की प्राप्ति की आशा कर सकते हैं। आपका अपने जीवनसाथी से वियोग हो सकता है।

चन्द्रमा अर्न्तदशा (17:05:2058 से 16:12:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको धन आसानी से प्राप्त होगा, लेकिन यह जिस प्रकार से आयेगा, उसी प्रकार से खर्च हो सकता है। संतानों के कारण आप चिन्तित रह सकते हैं। नवजात पुत्र के कारण आपको अधिक परेशानी हो सकती है। आपके जीवनसाथी और नौकर को आपसे कुछ सहानुभूति होगी। यदि आप अविवाहित हैं, तोआपका विवाह हो सकता है। यदि आपकी माता इस दशा के दौरान किसी संतान को जन्म देती हैं, तो प्रसव समय आपकी माता को बहुत कष्ट हो सकता है। संक्षेप में, आप सुख और दुख समान अनुपात में अनुभव करेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति औसत स्तर की हो सकती है। यदि चंद्रमा बली है, तो आपको अधिक लाभकारी परिणाम प्राप्त होंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (17:05:2058 से 04:06:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपकी माता को सबसे अधिक कष्ट हो सकता है। आपको उनके उपचार में अधिक धन व्यय करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। यदि आप विवाहित हैं, तो आपकी माता और जीवनसाथी के बीच प्रायः झगड़े हो सकते हैं। ऐसी हालात में आप इस बात का निर्णय कर पाने में असक्षम हो सकते हैं, कि दोनों मे से किसका समर्थन करें। इस अशांत वातावरण के कारण आप अपने परिवार से दूर जाने की कोशिश कर सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (04:06:2058 से 17:06:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति पर निर्भर करेंगे। आपको भूमि, भवन और दूसरे प्रकार की सम्पत्तियों का लाभ होगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (17:06:2058 से 18:07:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह सम्पूर्ण दशा संशय और विवादों से भरी हो सकती है। आप किसी भी मामले में कोई निर्णय कर पाने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। आपके आस–पास की हर चीज आपको आपके खिलाफ महसूस हो सकती है। आपमें आत्महत्या करने की प्रवृत्ति विकसित हो सकती है। आपकी बहन का स्वास्थ्य खराब हो सकता है या यदि वह विवाहित है, तो वापस घर आकर आपके साथ रह सकती

है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (18:07:2058 से 16:08:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। केतु की सम्पूर्ण महादशा में यह सबसे उत्तम दशा होगी। आपको ऐसा प्रतीत होगाकि आपके चारों तरफ मौजूद हर चीज आपको आपके अनुकूल होते महसूस होगी। बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से और अधिक धन कमाने के कई अवसर आपको मिलेंगे। आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपको अपने बड़े भाइयों और परिवार के बड़े लोगों से आपके बिना कहे ही समर्थन प्राप्त होगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (16:08:2058 से 19:09:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। चूंकि आपने पिछली दशा के दौरान बहुत अधिक आनन्द प्राप्त किया है, अतः शनि इस दशा में आपके और सुखों पर रोक लगा सकता है। पिछली दशा के दौरान लाभकारी परिणामों का आनन्द प्राप्त करते समय हो सकता है, कि आपने कुछ पाप किये हों। अतः शनि बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से आर्थिक और घरेलू दोनों मामलों में परिस्थितियों को उलट कर आपको दंड प्रदान कर सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (19:09:2058 से 19:10:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। बुध इस दशा में आपकी मदद को आगे आयेगा। शनि के द्वारा आपको दिये गये दण्ड को बुध क्षमा कर देगा। आपको मुकदमों और अन्य न्यायालीय मामलों में सफलता मिलेगी। ननिहाल से आपको सम्पत्ति प्राप्त हो सकती है। यदि आपकी माता किसी रोग से ग्रस्त हैं, तो उनके स्वास्थ्य में सुधार होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (19:10:2058 से 31:10:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम आपकी कुण्डली में केतु की स्थिति पर निर्भर करेंगे। यदि केतु शुभ है, तो आप बहुत उत्तम परिणामों का आनन्द प्राप्त करेंगे। आपके घर पर वैवाहिक समारोह हो सकते हैं। आप धार्मिक परम्पराओं का निरन्तर पालन करेंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (31:10:2058 से 06:12:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा ऐंद्रिय सुखों से पूर्ण हो सकती है। आप अपना धन नशा करने और अन्यवैषयिक सुखों को प्राप्त करने में बर्बाद कर सकते हैं। महिलायें आपकी प्रगति में बहुत बाधायें पैदा करसकती हैं। आपका अपने जीवनसाथी से अलगाव हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (06:12:2058 से 16:12:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको जंगली जानवरों से खतरा हो सकता है। आपके वरिष्ठ अधिकारी आपके काम से अप्रसन्न हो सकते हैं। अधीनस्थ भी समस्यायें पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। आपको कुछ

असाध्य रोग जैसे कैंसर या एड्स होने का खतरा हो सकता है।

मंगल अर्न्तदशा (16:12:2058 से 14:05:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपके परिवार के किसी सदस्य का स्वास्थ्य बहुत खराब हो सकता है। साँप काटने या आग सेजलन आदि की भी संभावना है। शत्रु आपको नुकसान पहुँचाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन वे सफल नहीं होंगे। हालांकि, आप तनावग्रस्त रह सकते हैं। आपकी बहुमूल्य वस्तुओं की चोरी हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (16:12:2058 से 25:12:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आप भूमि और भवन या स्टील से आय प्राप्त कर सकते हैं। आपको व्यापार या व्यवसाय या रोजगार के संबंध में लम्बी यात्रायें करनी पड़ सकती हैं। आपको वाहनों में यात्रा करते समय सावधान रहना चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (25:12:2058 से 16:01:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा शंकाओं और अशांति से भरी हो सकती है। आपकी सभी योजनायें बहुतत्रासदिक ढंग से समाप्त हो सकती हैं। आपको अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए भी धन का अभाव हो सकता है। सट्टों और नशे की लत के कारण आपकी आर्थिक स्थिति और भी दयनीय हो सकती है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (16:01:2059 से 05:02:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको थोड़ा बेहतर दशा का सुख प्राप्त होगा। अपने वरिष्ठों के साथ पूर्व में पैदा हुए मतभेद मैत्रीपूर्ण ढंग से सुलझ जायेंगे। अधीनस्थ भी आपके साथ उचित तरीके से व्यवहार करेंगे और आपकी आज्ञा मानेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (05:02:2059 से 01:03:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा आपकी अब तक की सबसे खराब दशा हो सकती है। आपके नये शत्रु बन सकते हैं और नयी समस्यायें पैदा हो सकती हैं। जितना आप परेशानियों को सलुझाने का प्रयत्न करेंगे,उतना ही वे बढ़ती जायेंगी। आपको मुंह और पेट के रोग हो सकते हैं। चिकित्सकीय उपचार में खर्चोंको आप पूरा कर पाने में असफल हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (01:03:2059 से 22:03:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको रोगों से थोड़ी राहत मिलेगी। आपकी अतिरिक्त आय भी हो सकती है। सट्टों से आपको मध्यम लाभ होगा। सम्पत्ति के मामले में आपके अपने सगे भाई/बहनों के साथ प्रायः विवाद हो सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (22:03:2059 से 31:03:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान परिवार में झगड़े हो सकते हैं। आपके परिवार के सदस्यों के बीच परस्पर समझ का अभाव हो सकता है। हर एक सदस्य एक दूसरे को नीचा दिखाने और उसका शोषण करने की कोशिश कर सकता है। आपकी संतान का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके जीवनसाथी को खतरा हो सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (31:03:2059 से 24:04:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपको बुखार, सिरदर्द और रतिजन्य रोग हो सकते हैं। उपचार के लिए धन प्राप्त नहीं हो सकता है। सट्टों और नशे की लत के कारण आपकी आर्थिक स्थिति और भी दयनीय हो सकती है। कर्जदाता प्रायः आपसे अपने धन की वापसी की मांग कर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (24:04:2059 से 02:05:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा में एक के बाद एक समस्यायें आ सकती हैं। आपको अपने घर से दूर जाना पड़ सकता है। आप शीघ्रता से धन कमाने के उद्देश्य से आपके पास जितनी भी जमा पूंजी है, उसेकुछ सम्पत्तियों को खरीदने में लगा सकते हैं। लेकिन आपको उसमें हानि हो सकती है और आप इधर–उधर भटक सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (02:05:2059 से 14:05:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। आपके जीवनसाथी और ससुराल वालों के साथ प्रायः होने वाले आपके विवादों के कारण आपको कुछ मुकदमों का सामना करना पड़ सकता है। आप फिलहाल या तो अपने जीवनसाथी से अलग हो सकते हैं या उन्हें तलाक दे सकते हैं। आपकी संतानको कष्ट हो सकता है। आपके प्रेम प्रसंग असफल हो सकते हैं।

राहु अन्तर्दशा (14:05:2059 से 01:06:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको कोई ऐसा काम करना पड़ सकता है, जिसे आप करना पसन्द नहीं करेंगे। आपको किसी मामले में प्रायः सरकार की तरफ से चेतावनी या धमकी मिल सकती है। आपकी शत्रुओं और धूर्त लोगों से अनावश्यक बहस हो सकती है और आप न सिर्फ स्वयं के लिए, अपितु अपने परिवार के सदस्यों के लिए परेशानियों को निमंत्रण दे सकते हैं। आपके शरीर के किसी भाग को चोरों या शत्रुओं के कारण चोट पहुँचसकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (14:05:2059 से 11:07:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको किसी एकांत जगह पर रहने को विवश होना पड़ सकता है। आपने किसी

नये स्थान पर बसने के समय जिन चीजों को इस्तेमाल करने के उद्देश्य से अपने पास एकत्र करके रखा था, उन्हें आपको औने–पौने दामों पर बेचना पड़ सकता है। लेकिन आपको नये स्थान पर भी अकथित दुखों का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप छात्र हैं, तो आपको आशा के अनुरूप परिणाम प्राप्त नहींहो सकते हैं। आपकी शिक्षा बाधित हो सकती है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (11:07:2059 से 31:08:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप पूर्ण रूप से कुछ विशिष्ट देवी–देवताओं की उपासना में संलग्न रहेंगे। आप स्वयं के द्वारा किये गये गलत कार्यों का प्रायश्चित करेंगे। आपको साधुजनों से मिलने के कई अवसर मिलेंगे और आप उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (31:08:2059 से 31:10:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। शत्रु आपके लिए समस्यायें पैदा कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपको गंभीर आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। ऋणदाता प्रायः आपसे अपने धन की वापसी की मांग कर सकते हैं। आप विनिमयों में संलग्न रह सकते हैं और परेशानियों में फंस सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (31:10:2059 से 24:12:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप गलत और कपटपूर्ण कार्यों से धन प्राप्त कर सकते हैं। आप अपना धन नशा करने और अन्य शारीरिक सुखों को प्राप्त करने में बर्बाद कर सकते हैं। आप प्रायः अपने मित्रों से कर्ज ले सकते हैं और उसको वापस करने में असक्षम हो सकते हैं, फलस्वरूप आप इधर–उधर छुप सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (24:12:2059 से 15:01:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपका अपने परिवार के सदस्यों के साथ विवाद हो सकता है।आपके परिवार के सभी सदस्य आपके खिलाफ हो सकते हैं। हालाँकि, आप ऐसे विरोधों से सफलतापूर्वकबाहर निकल आयेंगे। संतान आपके लिए अधिक परेशानियां पैदा कर सकते हैं। आपको अपने माता–पिता का भी सहयोग नहीं मिल सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (15:01:2060 से 19:03:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। एक लम्बे अन्तराल के बाद आपको समस्याओं से राहत मिलेगी। आप अपने परिवार की कुछ महिला सदस्यों की मदद से अपने पैरों पर खड़े हो पाने में सक्षम होंगे। आपको नौकरी में पदोन्नति मिल सकती है। मुकदमों में आपको सफलता मिलेगी।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (19:03:2060 से 08:04:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यदि आप व्यापार या राजनीति से जुड़े हैं, तो यह दशा बहुत खराब हो सकती है।

प्रतिस्पर्द्धा और ईर्ष्या आपके जीवन को बहुत दुखदायी बना सकती हैं। आपको सरकार से दंड मिल सकताहै।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (08:04:2060 से 10:05:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके ससुराल के लोग आपके लिए समस्यायें पैदा कर सकते हैं। आपका अपनी माता के साथ उत्तम संबंध नहीं हो सकते हैं। आपकी माता का स्वास्थ्य भी खराब हो सकता है। इस दशाके दौरान आर्थिक मामलों में लिये गये आपके सभी निर्णय गलत हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (10:05:2060 से 01:06:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको कोई भी शुभ परिणाम प्राप्त होने की संभावना ना के बराबर है। आपको नया रोग और मानसिक कुंठा हो सकती है, जीवनसाथी और संतान से परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

गुरू अन्तर्दशा (01:06:2060 से 08:05:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशाके दौरान, आपकी संतानों की पढ़ाई और व्यवसाय में सफलता आपको संतुष्ट बनायेगी। आपका धार्मिक कार्यों के प्रति रूझान होगा। धर्मपरायण तथा साधुजनों के सम्पर्क में आने के लिए आपको बहुत सारे अवसर प्राप्त होंगे तथा आप उनसे लाभ प्राप्त करेंगे। आप सरकार से समर्थन की आशा कर सकते हैं। आपको भूमि और भवन का सुख प्राप्त होगा। भूमि और सट्टों जैसे लॉटरी, शेयर आदि से आपको आय प्राप्त होगी। यदि आप संतानोत्पत्ति में सक्षम हैं तथा संतान की आशा कर रहे हैं, तो आपको भाग्यशाली पुत्र की प्राप्ति होगी।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (01:06:2060 से 17:07:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप शास्त्रों और अन्य प्राचीन विज्ञानों को सीखने में रूचि लेंगे। आप ईश्वर की उपासना में रत रहेंगे। आपको ऐसा विश्वास होगा कि केवल वही आपको जीवन के कष्टों से बचा सकता है। आप भिक्षा बांटेंगे और साधुजनों का सत्कार करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (17:07:2060 से 09:09:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक संतोष की दशा होगी। अपने कठिन परिश्रम और भगवान में आस्था के साथ आप अधिक धन कमाने के नये रास्तों और उपायों को खोजेंगे। अपनी आय का बचा हुआ भाग आप गरीबों को देंगे। ऐसे लोगों से भी आपको आशीर्वाद मिलेगा।

बुध प्रत्यंतर्दशा (09:09:2060 से 27:10:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अत्यंत उत्तम दशा है। आपको चहुंमुखी संपन्नता प्राप्त होगी। आपके सभीउमक्रम सफल होंगे। रोगों से आपको मुक्ति मिलेगी। आप अपने परिवार के साथ आनन्द भ्रमण और

तीर्थयात्राओं पर जायेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (27:10:2060 से 16:11:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दौरान आपका धार्मिक कार्यों की तरफ अधिक झुकाव होगा। आप अपना अधिकतर समय भगवान की आराधना में बितायेंगे। आप अपने मोहल्ले में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति होंगे। हालाँकि, शत्रु आपके लिए परेशानियां पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। महिलायें भी आपके लिए समस्यायें खड़ी कर सकती हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (16:11:2060 से 12:01:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपना अधिकतर समय शारीरिक सुखों की प्राप्ति में लगा सकते हैं। यद्यपि आपकी आय में वृद्धि होगी, फिर भी मुख्यतः अपनी उच्च जीवनशैली के कारण आपको हमेशा धन की कमीमहसूस हो सकती है। यदि आप अपनी जीवनशैली पर नियंत्रण नहीं रखेंगे, तो आपको आर्थिक संकट का सामना करना पड़ सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (12:01:2061 से 29:01:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य की स्थिति पर निर्भर करेंगे। आपकी आय में वृद्धि होगी और आपको सरकार से समर्थन मिलेगा। आपके पिता के स्वास्थ्य को अधिक देखभाल की आवश्यकता हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (29:01:2061 से 26:02:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। प्रायः आपके अपने माता–पिता और जीवनसाथी के साथ होने वाले झगड़े आपको घरेलू जीवन से दूर ले जा सकते हैं। आपको अपने सभी निवेशों में भारी नुकसान हो सकता है। आपको रक्त की अशुद्धता के कारण रोग हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (26:02:2061 से 18:03:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणाम प्राप्त होंगे। आपको सरकार से समर्थनमिलेगा और आप एक ऊँचा पद प्राप्त करेंगे। आपके जीवनसाथी को खतरा हो सकता है या आपमें अलगाव हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (18:03:2061 से 08:05:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक थोड़ी बेहतर दशा होगी। आप साधुजनों की संगति करेंगे और ईश्वर की आराधना में अपना समय व्यतीत करेंगे। आपको विरासत में पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी। आपकी संतान पढ़ाईमें उत्तम होगी और आपको खुशियां प्रदान करेंगी।

शनि अन्तर्दशा (08:05:2061 से 17:06:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा केदौरान, आपको अप्रत्याशित दुखों का सामना करना पड़ सकता है। आपका विरोधियों के साथ अनावश्यकविवाद हो सकता है और आपके शरीर पर चोट लग सकती है। शत्रुओं से संघर्ष के कारण उत्पन्न क्रोध के कारण बाद में उससे होने वाली दुर्घटना से भी आपको चोट लग सकती है। नौकर भी आपके लिए समस्यायें पैदा कर सकते हैं। उनकी सेवाओं की घोर आवश्यकताओं के समय में वे आपको और आपके परिवार को छोड़कर जा सकते हैं। आपकी आय बाधित हो सकती है। विदेशियों से व्यवहार करते समय भी आपको गंभीर परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपके स्तर और स्थिति में उतार–चढ़ाव हो सकता है। आपको कफ और शरीर के अंगों में कमजोरी, जैसे लकवा आदि की समस्या हो सकती है। पूरे शरीर में तीव्र पीड़ा हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (08:05:2061 से 11:07:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक कष्टकारी दशा हो सकती है। किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा करते समय आपकी वस्तुएं चोरी हो सकती हैं या खो सकती हैं। शत्रु आपसे प्रतिशोध लेने की ताक में रह सकते हैं। आपको समाज में अपमान का सामना करना पड़ सकता है। केतु की वस्तुओं का नाश हो सकता है। आपकी योजनायें असफल हो सकती हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (11:07:2061 से 07:09:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। आपकी आय में वृद्धि होगी। आपको खोई हुई स्थिति पुनः प्राप्त हो सकती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (07:09:2061 से 30:09:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा तनाव, विरोधों और झगड़ों से पूर्ण हो सकती है। आपको ऐसे किसी अपराध के लिए दोषी करार दिया जा सकता है, जो आपने किया ही नही है। आप किसी सामाजिक कार्य की शुरूआत कर सकते हैं, लेकिन आपको उसमें बदनामी मिल सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (30:09:2061 से 07:12:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बेहतर दशा होगी। आप शारीरिक सुखों की प्राप्ति में तल्लीन हो सकते हैंतथा आपको रतिजन्य रोग या ब्लैडर में सूजन हो सकती है। महिलायें आपका शोषण कर सकती हैं औरआपसे धन की वसूली कर सकती हैं। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। चिकित्सकीय इलाज में आपका व्यय बढ़ सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (07:12:2061 से 27:12:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक कठिनाईयों से पूर्ण दशा हो सकती है। आपको दुर्घटना या किसी ऊँचे स्थान से गिरने के कारण शारीरिक चोट लगने का भय है। आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (27:12:2061 से 30:01:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी सारी योजनायें असफल हो सकती हैं। आपके नजदीकी मित्र आपको धोखा दे सकते हैं। यदि कोई योजना पूरी होने वाली होगी तो वह भी अदृश्य परिस्थितियों जैसे साझीदार की मृत्यु या प्राकृतिक आपदाओं आदि के कारण ध्वस्त हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (30:01:2062 से 22:02:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक कष्टकारी दशा हो सकती है। आपको आलौकिक आत्माओं के कारण विभिन्न खतरनाक रोग हो सकते हैं। उनका उपचार नवीन दवाइयों से संभव नहीं हो सकता है। आपका जीवनसाथी आपको छोड़ सकता है। आप अपनी संतान को कष्ट दे सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (22:02:2062 से 24:04:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक कष्टकारी दशा हो सकती है। आपको अपने रोगों का इलाज कराने के लिए डॉक्टरों के चक्कर काटने पड़ सकते हैं, लेकिन आपको राहत प्राप्त होने की संभावना बहुत कम है। आप कई तांत्रिकों के पास उपचार के लिए जा सकते हैं। आपको इसके लिए धन उधार लेना पड़ सकता है। ऋणदाता आपको परेशान कर सकते हैं। आपको कुछ असाध्य चर्म रोग हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (24:04:2062 से 17:06:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा में आपको अपनी सभी परेशानियों से राहत मिलेगी। अप्रत्याशित स्रोतों सेआपको अतिरिक्त आय प्राप्त होगी। आपको अपने जीवनसाथी और संतान का सहयोग मिलेगा। आप उच्च स्तर के ज्ञान को पाने का प्रयास करेंगे।

बुध अर्न्तदशा (17:06:2062 से 14:06:2063)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम होगी। आपको योग्य संतानों की प्राप्ति हो सकती है। आपको उनसे सुख और खुशियां मिलेंगी। आपको भूमि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा उत्तम मित्रों की संगति का आनन्द प्राप्त होगा। आपकी आय भी बढ़ेगी। आपका दिमाग स्थिर होगा और विभिन्न प्रकार से आप आनन्द प्राप्त करेंगे। हालांकि, आपको मवेशियों और कृषि के नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। अतः आपको कोई भी मवेशी जानवर या कृषि भूमि नहीं रखनी चाहिए। इस अन्तर्दशा के समाप्त होने तक आपको उससे दूर रहना चाहिए। आप भवन रख सकते हैं और उनको किराये पर देकर बिना किसी परेशानी के उनसे उत्तम आय प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपके वरिष्ठ अधिकारी आपके उत्तम काम की प्रशंसा करेंगे और आपको समय से पहले पदोन्नति मिल सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (17:06:2062 से 07:08:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको पूरी तरह से बदली हुई अनुकूल परिस्थितियां मिलेंगी। आप अपनेकठिन परिश्रम से धन कमायेंगे। आपको सट्टे से कुछ लाभ या भवन संपत्ति से आय प्राप्त होगी। मित्र और संबंधी आपका सहयोग करेंगे। आप कोई नया उपक्रम शुरू कर सकते हैं, जिसमें आपको लाभ

होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (07:08:2062 से 28:08:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके उमक्रमों में आपको अपने विश्वसनीय लोगों के द्वारा अपनाये गये कपटपूर्ण तरीकों के कारण कोई आघात लग सकता है। किसी समय आपको गंभीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ सकता है। हालाँकि, आपको समय पर अपने माता–पिता या ससुराल वालों का सहयोग प्राप्त होगा।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (28:08:2062 से 27:10:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। अपने उपक्रमों में स्थायित्व की आशा करने का यह वास्तविक समय है। आपका व्यापार या रोजगार फले–फूलेगा। आपके घर पर कई शुभ समारोह होंगे। आपका विवाह भी हो सकता है।इस दशा में शुरू की गयी आपकी कोई योजना अगली महादशा, जो कि शुक्र की होगी, में पूर्ण रूप से फलित होगी।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (27:10:2062 से 15:11:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा सहजतापूर्ण होगी। आप अपनी स्थिति में सुधार करेंगे। आपको आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी अधिक समस्यायें नहीं हो सकती हैं। आपको सरकारी अधिकारियों से सहयोग मिल सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (15:11:2062 से 15:12:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप पूर्व में किये गये उपक्रमों के सफलतापूर्वक पूरा होने की आशा कर सकते हैं।यदि आप छात्र हैं, तो परिक्षाओं में अनुकूल परिणामों की आशा कर सकते हैं। यह दशा वास्तविक आनन्द की होगी। इस दशा के अधिकतर समय के दौरान आपको शांति प्राप्त होगी। आपको ननिहाल की संपत्ति भी प्राप्त हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (15:12:2062 से 05:01:2063)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति पर निर्भर करेंगे। यदि मंगल शुभ है, तो आप विदेश यात्रा पर जायेंगे और धन, नाम तथा यश कमायेंगे। अन्यथा, आपको भिन्न तरीकों से परेशानी उठानी पड़ सकती है। यात्रा के दौरान आपको सावधान रहना चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (05:01:2063 से 28:02:2063)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको बहुत सारा धन प्राप्त होगा और आप विभिन्न तरीकों से आनन्द प्राप्त करेंगे। हालांकि,आपको गुदा में खुजली जैसे रोग हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (28:02:2063 से 17:04:2063)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह बहुत उत्तम दशा होगी– विशेषकर यदि आप व्यापारी हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो पदोन्नति की आशा कर सकते हैं। आप विभिन्न प्रतियोगी परिक्षाओं में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। हालाँकि, आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। आपकी कुण्डली में बृहस्पति नीचस्थ है, आपके पिता को मृत्युतुल्य कष्ट भी हो सकता है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (17:04:2063 से 14:06:2063)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपको मिले जुले परिणाम प्राप्त होंगे। आपके दैनिक जीवन में प्रायः उतार–चढ़ाव हो सकते हैं। शत्रुओं से बहुत विवाद आपकी मानसिक शांति को भंग कर सकता है। संबंधी आपके घर पर आकर समस्यायें पैदा कर सकते हैं।

शुक्र दशा (14:06:2063 से 14:06:2083)

वर्तमान समय में आपकी शुक्र की महादशा चल रही है और शुक्र आपकी कुण्डली में पांचवें भाव में स्थित है। आपको भारी धन का स्वामित्व प्राप्त होगा। आप कई लोगों की परवरिश करेंगे।

वर्तमान समय में आपकी शुक्र की महादशा चल रही है और शुक्र आपकी कुण्डली में मकर राशि में स्थित है। शुक्र की अपनी दशा के दौरान, आप शत्रुओं का विनाश करेंगे। आपकी सहनशीलता बढ़ेगी। शारीरिक दुर्बलता तथा कफ के कारण आपको रोग हो सकते हैं। इस पूरी दशा के दौरान आप पारिवारिक मामलों केकारण चिंतित हो सकते हैं।

शुक्र अन्तर्दशा (14:06:2063 से 13:10:2066)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा केदौरान, आपको अपने जीवनसाथी से भूरपूर सहयोग और खुशियों के साथ–साथ दूसरी स्त्रियों से भी सुखऔर आनन्द मिलेगा। पिछली अन्तर्दशा की तुलना में आप साफ कपड़े पहनने में विशेष रूचि लेंगे। आपको विभिन्न लोगों से भी वस्त्र और आभूषण उपहार के रूप में मिल सकते हैं। आप विभिन्न लोगों के सहयोग से धन अर्जित कर सकते हैं। दवाओं से आप आय प्राप्त करेंगे। सामान्यतः आपको विभिन्न स्रोतों से धन प्राप्त होगा। लेकिन आय का एक बड़ा हिस्सा मौज मस्ती और मनोरंजन में खर्च हो सकता है। आप वाहन भी प्राप्त कर सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (14:06:2063 से 03:01:2064)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। अधिकतर लोग इस दशा की प्रतीक्षा करते हैं। आपको बहुत शुभ परिणाम मिलेंगे। यदि शुक्र नीचस्थ है, तो भी आपको अति उत्तम परिणामों का आनन्द प्राप्त होगा। आपको एक पुत्री की प्राप्ति हो सकती है या आपका विवाह हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (03:01:2064 से 04:03:2064)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको शक्ति और अधिकार प्राप्त होगा। अधीनस्थ पूरी तरह से आपके नियंत्रण में होंगे। आपको विरासत में पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी। आपका स्थानान्तरण या पदोन्नति हो सकती है या

आपके रोजगार में बदलाव हो सकता है। आपको रक्त की खराबी के कारण रोग हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (04:03:2064 से 13:06:2064)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप अपना अधिकतर समय ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में बितायेंगे। यद्यपि आपकी आयविभिन्न स्रोतों से बढ़ेगी, लेकिन आप उसे ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में खर्च कर सकते हैं। आपकी शारीरिक सुखों की प्राप्ति की लालसा आपको महिलाओं से संबंध बनाने के लिए उत्साहित करेगी और आपऐसी महिलाओं पर धन व्यय करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (13:06:2064 से 23:08:2064)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके वर्तमान व्यापार या रोजगार में बदलाव हो सकता है। आपके कठिन परिश्रम और कार्य के प्रति गंभीरता के कारण आपका मालिक आपकी योग्यता को पहचान कर आपको रोजगार में वांछित पदोन्नति प्रदान करेगा। आपकी शक्ति और आपके अधिकार में वृद्धि होगी। विपरीत लिंग के लोगों के साथ संबंध होने के कारण आपको बदनामी का सामना करना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (23:08:2064 से 22:02:2065)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको सरकार और अपने मालिक से कष्ट हो सकता है। अधीनस्थ अधिक परेशानियां पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। आपका अपने जीवनसाथी के साथ प्रायः झगड़ा हो सकताहै, जिससे आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। आप अपने परिवार पर धन व्यय करने के बजाय उसे ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में खर्च कर सकते हैं, जो झगड़े का मूल कारण हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (22:02:2065 से 03:08:2065)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आप विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त करेंगे। आपका व्यवहार अधिक परिपक्वतापूर्ण होगा। यद्यपि आप अपने दोषों से परिचित होंगे, फिर भी उन्हें पूरी तरह से दूर करने में असमर्थ हो सकते हैं। आपका अधिक प्रतिष्ठित पद पर स्थानान्तरण हो सकता है या आपको पदोन्नति मिल सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (03:08:2065 से 12:02:2066)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आर्थिक मामलों के संबंध में यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपको अपने सभी कामों में सहज ही सफलता प्राप्त होगी। आप किसी महिला मित्र के सहयोग से नया उपक्रम शुरू करेंगे और उससे उत्तम आय प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवनसाथी के अलावा किसी अन्य महिला के साथ शारीरिक संबंध स्थापित कर सकते हैं या आप किसी अन्य स्त्री से पहले जीवनसाथी के रहते हुए विवाह कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (12:02:2066 से 03:08:2066)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपने जिन उपक्रमों को पहले से शुरू कर रखा है, उनमें सुधार होगा। मित्र और संबंधी आपकी मदद करेंगे। इस पूरी दशा के दौरान आप व्यस्त रहेंगे। आपका विवाह हो सकता है या आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (03:08:2066 से 13:10:2066)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह कुछ कष्टकारी दशा हो सकती है। आपको व्यापार और सट्टों में हानि हो सकती है। आप अपने नुकसान की भरपाई करने के लिए पुनः सट्टेबाजी में रत हो सकते हैं, जिससे आपको फिर से हानि हो सकती है। आप आत्महत्या करने का विचार कर सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (13:10:2066 से 13:10:2067)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा केदौरान, संबंधियों के कारण आपको भारी धन हानि हो सकती है। संबंधियों पर अंधविश्वास आपकी परेशानी का कारण हो सकता है। आपको उनके कपट का ज्ञान तब होगा, जब आप लगभग हर चीज खो चुके होंगे। अतः आपको इस पूरी अन्तर्दशा के दौरान उन पर भरोसा करते समय बहुत अधिक सावधान रहना चाहिए। वे आपकी हर वस्तु को, जो उनको मिलेगी, हड़प सकते हैं। आप गले, नाक या सीने और उदर के रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आपकी आँखों में संक्रमण हो सकता है। बड़े और विशिष्ट लोग आपकी कार्य शैली को नापसन्द कर सकते हैं। सहकर्मी आपसे ईर्ष्या कर सकते हैं। आपके नये शत्रु बन सकते हैं। यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको विभिन्न क्षेत्रों में कड़ी स्पर्धा का सामना करना पड़ सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (13:10:2066 से 01:11:2066)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको अधिक शक्ति और अधिकार प्राप्त होंगे। क्लबों, मनोरंजन के स्थानों या समितियों में कुछ प्रतिष्ठित पद पर आसीन होकर आप सम्मान प्राप्त करेंगे। आप इन संस्थाओं के द्वारा जनसमुदाय पर नियंत्रण स्थापित करेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पुरस्कार मिल सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (01:11:2066 से 01:12:2066)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। दूरस्थ स्थानों से आपको शुभ समाचार मिलेंगे। आपका अधिक प्रतिष्ठित पद पर स्थानान्तरण हो सकता है या आपको पदोन्नति मिल सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। जिन महिलाओं के साथ आपके विवाहेत्तर संबंध थे, उनसे आपका अनावश्यक झगड़ा हो सकता है, जिससे आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (01:12:2066 से 22:12:2066)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। बाहरी लोगों के साथ सौदा करते समय आपको सावधान रहना चाहिए– जैसाकि वेआपको झूठे मामलों में फंसा सकते हैं। आप जहाँ पर नौकरी कर रहे हैं, वहाँ पर भी आपको सोच समझकर बोलना चाहिए। आपको स्वयं कोई वाहन नहीं चलाना चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (22:12:2066 से 15:02:2067)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। शत्रु आपके दैनिक कार्यों में बाधा उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे। कोई आपको नहीं समझेगा। आपने जिस काम को किया ही नहीं है, उसके लिए आपको दोषी ठहराया जा सकता है। आपके जीवनसाथी के साथ आपके संबंध मधुर नहीं हो सकते हैं। विपरीत लिंग के लोगों के साथ व्यवहार करते समय आपको सावधान रहना चाहिए।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (15:02:2067 से 05:04:2067)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अन्ततः आप अधिकतर समस्याओं से राहत पायेंगे। आपको आय अर्जित करने के कई अवसर मिलेंगे। आप एक उचित मात्रा में अपना बैंक कोष कायम करने में सक्षम होंगे। रोगों से भी आपको राहत मिलेगी। आपका विवाह हो सकता है या आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (05:04:2067 से 02:06:2067)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। यदि आप उनसे दूर रह रहे हैं,तो आपको अपने पिता के पास जाकर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। इस दशा के दौरान आपके पिता को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। खर्चों को नियंत्रित करना कठिन हो सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (02:06:2067 से 23:07:2067)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। राजनीति से जुड़े लोग और व्यापारी अधिक अनुकूल परिणामों की आशा कर सकते हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति मिल सकती है। आपको महिलाओं से आर्थिक मदद और सहयोग मिलेगा। आप साझेदारी में कोई व्यापार कर सकते हैंऔर उसमें आपको हानि हो सकती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (23:07:2067 से 14:08:2067)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यद्यपि रोजमर्रा के खर्चों को निपटाने के लिए आपको गंभीर आर्थिक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा, फिर भी कर्जदाता पिछली दशाओं के दौरान आपको अपना उधार दिया हुआ धनवापस लेने के लिए लगातार परेशान कर सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (14:08:2067 से 13:10:2067)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी। आपके अधिकतर कार्य सफल होंगे। आपकोसरकार से आर्थिक मदद और सहयोग मिलेगा। आपकी बहन या पुत्री का विवाह हो सकता है। आपके शत्रु परास्त होंगे।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (13:10:2067 से 14:06:2069)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा

के दौरान, आप सिर, दाँत, नाखून, उदर या लिवर के रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। नाखूनों में किसी प्रकार की विकृति हो सकती है। कीटाणुओं के संक्रमण या किसी दुर्घटना के कारण आपके नाखूनों को हानि पहुँच सकती है या उनके संक्रमण के कारण पेट में कीड़े पड़ सकते हैं। आपको पीलिया भी हो सकता है।आपको कुत्ता, बन्दर या कोई जंगली जानवर जैसे बाघ, बिल्ली आदि के काटने का भय हो सकता है। आपके व्यय आय से अधिक हो सकते हैं। आपको प्रचूर धन प्राप्त होगा, लेकिन व्यय हो जायेगा और आपऋणी हो सकते हैं। वाहनों और महिलाओं के द्वारा आपको धन प्राप्त हो सकता है। आप स्त्रियों के सम्पर्क में आ सकते हैं, जिन्हें व्यापारिक या आर्थिक सलाह आदि के रूप में आपकी मदद की आवश्यकता हो सकती है। इस मदद के दौरान आपके साथ–साथ उनको भी लाभ होगा। इस दौरान आपके उनसे संबंध भी बन सकते हैं। परिणामस्वरूप आप और आपके जीवनसाथी या परिवार के सदस्यों के बीच में कलह हो सकती है। आपमें ईश्वर के प्रति गहरी भक्ति भावना विकसित होगी और आप भगवान की आराधना करेंगे। आप कई धार्मिक कार्यों जैसे हवन, यज्ञ और अन्य सात्विक कार्य करेंगे। यदि आप युद्ध मेंसंलग्न हैं, तो आपको सफलता मिलेगी और शत्रु को परास्त कर आप लाभ प्राप्त करेंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (13:10:2067 से 03:12:2067)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक आनन्ददायक दशा होगी। आपके अपने जीवनसाथी और माता–पिता से संबंध मधुर होंगे। आप तीर्थयात्रायें करेंगे और साधुजनों का आशीष प्राप्त करेंगे। आपके घर पर कई शुभ समारोह आयोजित होंगे। आप भूमि और आभूषण खरीदेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (03:12:2067 से 08:01:2068)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अप्रत्याशित स्रोतों से आपको अतिरिक्त आय प्राप्त होगी। आय बढ़ने के साथ आपके व्यय भी बढ़ सकते हैं। आपके अपने जीवनसाथी के साथ संबंध मधुर नहीं हो सकते हैं। संतान आपके हठी रवैये के कारण परेशान हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (08:01:2068 से 08:04:2068)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप भागीदारी में एक नये व्यापार को शुरू कर सकते हैं। आपका साझीदार आपको धोखा दे सकता है या ब्लैकमेल कर सकता है। अन्ततः आप भारी मात्रा में धन गवाँ सकते हैं। दूसरी तरफ आप अपने रोजगार या शौक के क्षेत्र में नाम व यश प्राप्त करेंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (08:04:2068 से 28:06:2068)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। विभिन्न स्रोतों से आपको भारी मात्रा में धन प्राप्त होगा। यह प्रत्यक्ष रूप से आपका या किसी और के अधिकार में हो सकता है। आप फिलहाल उस धन काउपयोग करने में सक्षम होंगे। आपका विवाह हो सकता है या आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (28:06:2068 से 03:10:2068)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। संतान के लिए यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (03:10:2068 से 28:12:2068)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप नया व्यापार शुरू कर सकते हैं। आप लेखन, प्रकाशन या पुस्तकें बेचकर आय प्राप्त कर सकते हैं। आप ईश्वर की पूजा में गहन रूप से रत रहेंगे। यह आपके ज्ञान और बुद्धि को बढ़ायेगा। संबंधी आपके घर पर आयेंगे और व्यवधान पैदा कर सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (28:12:2068 से 02:02:2069)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक कष्टकारी दशा हो सकती है। संबंधी आपके शत्रुओं से हाथ मिला सकते हैं और आपको अधिकतम हानि पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं। आप आर्थिक संकटों में घिर सकते हैं। आप अपने मित्रों से धन उधार ले सकते हैं और उसे वापस करने में असक्षम हो सकते हैं। ऐसे मित्र आपकेशत्रु बन सकते हैं। आपको उदर, सीने और पैरों के रोग हो सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (02:02:2069 से 14:05:2069)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अति उत्तम दशा होगी। आप सुन्दर लड़कियों की संगति का सुख प्राप्त करेंगे। महिला मित्रों से आपको धन प्राप्त होगा और भूमि एवं भवन खरीदेंगे या शेयर व्यापार करके उचित लाभ प्राप्त करेंगे। रोगों से आपको राहत मिलेगी।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (14:05:2069 से 14:06:2069)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि आप राजनीति से जुड़े हैं, तो यह एक कठिन समय हो सकता है। आपके शत्रु आपका भारी नुकसान कर सकते हैं। आपकी संपत्ति का नाश हो सकता है।

मंगल अन्तर्दशा (14:06:2069 से 14:08:2070)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप सोने और उससे बने आभूषण तथा तांबे की वस्तुओं में गहरी रूचि ले सकते हैं। आप स्वर्ण,ताम्र या लौह भस्म से बनी औषधियों का सेवन कर सकते हैं या उनका वितरण कर सकते हैं या आपधातुओं से संबंधित कोई शोध कार्य कर सकते हैं। लेकिन आपको सफलता अगली आने वाली राहु की अन्तर्दशा में मिलेगी। आप भूमि और सम्पत्तियां प्राप्त कर सकते हैं या उनको बेच कर लाभ अर्जित कर सकते हैं। चंद्रमा के अन्तर्दशा के दौरान आपको उन स्त्रियों से कोई गलतफहमी हो सकती है, जिनके साथ आपको अतिरिक्त लगाव है। आपको स्त्री समुदाय से एक प्रकार की नफरत हो सकती है– विशेषकरऐसी महिलाओं के प्रति संशय के अहसास के कारण। आपको सम्मान प्राप्त होगा तथा विभिन्न स्रोतों से आप आनन्द प्राप्त करेंगे। आप दूसरों की गलतियां ढूंढ सकते हैं, जिसके कारण प्रायः आपका उनसे तनाव हो सकता है। आप गतिविधियों के प्रत्येक क्षेत्र में दक्षता हासिल करना चाहेंगे और निराश हो सकते हैं। आप रक्त चाप, बवासीर या कफ और दिमाग से संबंधित रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। रक्त की अशुद्धता के कारण भी समस्यायें हो सकती हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (14:06:2069 से 09:07:2069)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। वरिष्ठ अधिकारी आपका व्यावसायिक भविष्य बर्बाद करने को तत्पर रह सकते हैं।

सहकर्मी आपको नीचा दिखाने का हर संभव प्रयास कर सकते हैं। आपको किसी व्यक्ति की मदद नहीं मिलेगी। हालाँकि, ईश्वर की कृपा से आप बिना किसी नुकसान के इन सबसे बाहर निकलने में सक्षम होंगे।

राहु प्रत्यंतर्दशा (09:07:2069 से 10:09:2069)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप एक के बाद एक विभिन्न रोगों, जैसे बुखार, पेचिश, चर्म रोगों आदि से ग्रस्त हो सकते हैं। हालाँकि, आप दैनिक और चिकित्कीय खर्चों को पूरा करने के लिए आवश्यक धन संग्रह करने में सक्षम होंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (10:09:2069 से 06:11:2069)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको रोगों और कर्जों से राहत मिलेगी। आपको अतिरिक्त धन कमाने के अवसरप्राप्त होंगे। आपको बिना धन की लालसा के धन प्राप्त होगा। लेखन, प्रकाशन या ज्योतिषीय परामर्शआदि के द्वारा आपको आय प्राप्त होगी। आपको पूर्ण मानसिक शांति मिलेगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (06:11:2069 से 13:01:2070)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपकी परिस्थितियों में पूर्ण बदलाव आयेगा। आप इस अचानक विषम बदलाव का कारण स्वयं भी नहीं जान सकते हैं। यदि आप महत्वपूर्ण और अधिकार प्राप्त पद पर आसीन हैं, तो आप उसे भी खो सकते हैं। आप ईर्ष्यालु सहकर्मियों और वरिष्ठों के कारण शिखर से रसातल पर आ सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (13:01:2070 से 14:03:2070)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। शत्रु अपने कदम पीछे खींचने पर बाध्य हो जायेंगे। आपको अस्थिर करने में जिन शत्रुओं ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी, उनसे आप बदला लेने में सक्षम होंगे। आप भारी शक्ति के साथ अधिकार और शक्ति की पुनर्स्थापना करेंगे। आपका व्यापार समृद्ध होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (14:03:2070 से 08:04:2070)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक मंद दशा होगी। आपको अधिकतर समस्यायें नहीं हो सकती हैं। लेकिन जीवन साधारण होगा। आप नयी भूमि और भवन खरीदेंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (08:04:2070 से 18:06:2070)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप शारीरिक सुखों की प्राप्ति में रत रहेंगे। आपके जीवनसाथी आपको छोड़ सकती हैं। कुछ मामलों में ऐसा देखने में आया है, कि आप और आपके जीवनसाथी साथ होते हुए भी अन्य लोगों के साथ मौज–मस्ती कर सकते हैं। दोनों एक दूसरे के काम में दखल नहीं देंगे। दूसरे शब्दों में आप दोनों अपनी स्वतंत्रता का आनन्द प्राप्त करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (18:06:2070 से 09:07:2070)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके शरीर में चोट लग सकती है या शरीर का कोई भाग जल सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (09:07:2070 से 14:08:2070)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको रोगों और कष्टों से राहत मिलेगी। आप दवाओं और द्रवों से लाभ प्राप्त करेंगे। डॉक्टरों के लिए यह अति उत्तम दशा है। पानी देकर भी वे अपने मरीजों का उपचार करने में सक्षम होंगे। आप जीवन का पूर्ण आनन्द प्राप्त करेंगे। जीवनसाथी और संतान भी आपका पूरा सहयोग करेंगे।

राहु अर्न्तदशा (14:08:2070 से 14:08:2073)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको अप्रत्याशित धन का लाभ हो सकता है। आपको अपनी खोई हुई सम्पत्ति वापस प्राप्त करने के अवसर मिलेंगे। संतान की अध्ययन और रोजगार में सफलता आपको प्रसन्नता प्रदान करेगी। आपको सबसे सम्मान मिलेगा। शत्रुओं को आप परास्त करेंगे। यदि अब तक कोई अनिर्णित सम्पत्ति विवाद है, तो इस अन्तर्दशा के अन्त तक वह सुलझ जायेगा। हालांकि, आपको उस सम्पत्ति का सुख अगली अन्तर्दशा जो कि बृहस्पति की होगी, उसके दौरान मिलेगा। आपको चोट लगने का तथा आग से खतरा हो सकता है। चोर आपके लिए परेशानी का कारण बन सकते हैं। यह खतरा आपको आर्थिक सौदों में हो सकता है।आपको किसी प्रकार की असुरक्षा और दंड का भय हो सकता है। हालांकि, परिणाम बहुत विषम नहीं होंगे। आपको राहु मंत्र का जाप और गरीबों को खाना खिलान चाहिए। साथ ही, आपको सांपों को अण्डा और दूध अर्पित करना चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (14:08:2070 से 25:01:2071)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपका दूसरा विवाह हो सकता है, चाहे आपकी प्रथम जीवनसाथी जीवित हो या नहीं या आपके विधवा स्त्रियों के साथ शारीरिक संबंध हो सकते हैं। आपको धन हानि हो सकती है। ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में आप भारी धन व्यय कर सकते हैं। आपको कानून से दंडित होने का भय हो सकता है। आपकी माता या आपके पिता को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आप लम्बी यात्रायें कर सकते हैं। आपके भोजन का समय अनियमित हो सकता है। आपको चर्म रोग, ल्यूकोडर्मा, रतिजन्य रोग हो सकतेहैं। साझीदारी के व्यापार में आप असफल हो सकते हैं। जीवनसाथी और संतानों के साथ प्रायः आपका झगड़ा हो सकता है। आपको सट्टे में हानियां हो सकती हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में आपको उपलब्धि प्राप्त होगी।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (25:01:2071 से 20:06:2071)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप किसी संस्था के मुखिया बनेंगे। अपने अर्जित ज्ञान या लेखन या प्रकारशन केद्वारा आप धन का लाभ प्राप्त करेंगे। आपके शत्रु परास्त होंगे। आपको सुन्दर लड़कियों की संगति का अवसर प्राप्त होगा। आपको नशीले पदार्थों के सेवन के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। महिलाओं के सहयोग से आपको आय होगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (20:06:2071 से 10:12:2071)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आध्यात्मिक क्षेत्र में आपको उपलब्धि प्राप्त होगी। आप दवा या किसी अन्य प्राचीन विधा द्वारा नाम, यश और धन प्राप्त करेंगे। आप अपने प्रशंसनीय कार्य के लिए कोई पुरस्कार भी प्राप्त करसकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (10:12:2071 से 14:05:2072)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आय में वृद्धि होगी, लेकिन आप दूसरों पर उसे व्यय कर सकते हैं। आप सामाजिक होंगे। लोग आपकी प्रशंसा करेंगे और नियमित रूप से आपसे मिलने आयेंगे। आपकी आध्यात्मिक प्रगति होगी। लेखन या प्रकाशन या दवाओं के द्वारा आप आय अर्जित करेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (14:05:2072 से 17:07:2072)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। साझे के व्यापार में असफलता मिल सकती है। महिला साथी भी आपको धोखा दे सकती हैं। आपने जिन लोगों की पहले मदद की थी, वे भी आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपको मानसिक रूप से बहुत व्यथित कर सकते हैं। आप अपनी आध्यात्मिक शक्ति का उपयोग अपने शत्रुओं का विनाश करने में करेंगे और उसमें सफल होंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (17:07:2072 से 16:01:2073)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यद्यपि आपके जीवनसाथी और अन्य महिला साथियों के बीच प्रायः विवाद हो सकतेहैं, फिर भी आप शारीरिक सुखों का अधिकतम आनन्द प्राप्त करेंगे। इस दशा के दौरान आपको अधिक कष्ट नही होंगे। हालाँकि आपको अपने जीवन में किसी चीज की कमी महसूस हो सकती है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (16:01:2073 से 11:03:2073)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। शत्रु अपनी भूमिका निभा सकते हैं। वे आपकी अवनति के लिए अपनी भरपूर कोशिशकर सकते हैं। वे आपको हराने के लिए अपनी योजना बना सकते हैं। हालाँकि, ईश्वर की कृपा से आप बिना किसी नुकसान के उन योजनाओं से बच कर निकल आयेंगे। आर्थिक मामलों के लिए यह एक बेहतर दशा होगी।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (11:03:2073 से 11:06:2073)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको जनता से सम्मान मिलेगा, लेकिन आपके गुप्त शत्रु आपके खिलाफ षडयंत्रकर सकते हैं। आप जरूरतमंदों की मदद करेंगे और उनका आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (11:06:2073 से 14:08:2073)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यद्यपि इस दशा के दौरान आपको बहुत विषम परिणाम प्राप्त नहीं होंगे, फिर भी आपकी किसी काम में रूचि नहीं हो सकती है। आपको प्रतीत होगा कि अपने अधीनस्थों और समाज में अधिकतम योगदान देने के लिए आपके द्वारा किये गये सारे गंभीर प्रयास व्यर्थ हैं। आप बाहरी दुनिया से अपने को पृथक महसूस कर सकते हैं।

गुरू अर्न्तदशा (14:08:2073 से 13:04:2076)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। आपको भिक्षादेने और धार्मिक कार्यों को करने के कई सारे अवसर मिलेंगे। आप स्वयं या पुजारियों से पूजा और हवन करेंगे या करवायेंगे। भोजन की प्रचूरता होगी। आपको भूमि, सम्पत्ति और आभूषण तथा संतान की प्राप्ति होगी। आप खुशियों और सुखों के सागर में गोते लगायेंगे। अपने पद और अधिकर से आप विभिन्न प्रकार के आनन्द प्राप्त करेंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (14:08:2073 से 21:12:2073)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपको नाम, यश और धन प्राप्त होगा। संसार आपके उत्तम कार्यों को पहचानेगा और आपको उसका उचित पारितोषिक मिलेगा। शक्ति, पद और धन के मामले में आप एक राजा के समान हो सकते हैं।

शनि प्रत्यंतर्दशा (21:12:2073 से 24:05:2074)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपनी वर्तमान गतिविधियों का विस्तार करेंगे, नये घर का निर्माण करेंगे और भूमि, आभूषण तथा वस्त्र खरीदेंगे। आपके जीवनसाथी और संतान अपना भरपूर आनन्द प्राप्त करेंगे। आपकाविवाहेत्तर संबंध हो सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (24:05:2074 से 09:10:2074)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपनी स्थिति से और लाभ उठायेंगे। यदि आप व्यापारी हैं, तो आप भारी लाभप्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको समय से पहले पदोन्नतिमिल सकती है। आपका विवाह हो सकता है। संतान से आपको शुभ समाचार मिल सकते हैं। आपके अपने जीवनसाथी से पूर्ण घनिष्ठ संबंध होंगे। आप महिला मित्रों से घिरे रहेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (09:10:2074 से 05:12:2074)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा में आपका अधिक झुकाव आध्यात्म की तरफ होगा। आप इसमें निपुणता प्राप्त करना चाहेंगे। आपके घर में कई धार्मिक कार्य होंगे। आपको शारीरिक और अन्य ऐंद्रिय सुखों से विरक्ति हो जायेगी। ईश्वर भक्ति में आपको शान्ति प्राप्त होगी।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (05:12:2074 से 16:05:2075)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपको आसानी से अपने सभी कार्यों में

सफलता मिलेगी। सरकार से आपको पूरा सहयोग मिलेगा। आवश्यकता पड़ने पर आपको आर्थिक मदद प्राप्त होगी। आप कोई नया व्यापार शुरू करेंगे या कोई पार्ट टाइम रोजगार कर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (16:05:2075 से 04:07:2075)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप विदेशों की यात्रायें करेंगे और नाम, यश तथा धन प्राप्त करेंगे। आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है या संतानों से आपको शुभ समाचार प्राप्त होंगे। आप एक बड़े भागीदारी व्यापार कोशुरू करेंगे और उचित लाभ प्राप्त करेंगे। शत्रुओं को आप सबक सीखायेंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (04:07:2075 से 23:09:2075)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक आनन्ददायक दशा होगी। महिला मित्र आपको खुशी और हर संभव मददप्रदान करेंगी। हालाँकि, आपको जीवनसाथी और संतान से परेशानियां हो सकती हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (23:09:2075 से 19:11:2075)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी योजनायें सफल होंगी। किसी भी नये उपक्रम को शुरू करने, वाहन या भूमि खरीदने के लिए यह एक अति उत्तम समय है। आप एक विशाल घर का निर्माण कर सकते हैं। हालाँकि, इस दशा के दौरान निर्मित घर में आप नहीं रह सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (19:11:2075 से 13:04:2076)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने परिवार के साथ कई पवित्र स्थानों की यात्रायें करेंगे और साधुजनों का आशीष प्राप्त करेंगे। आपको आय अर्जित करने और धन प्राप्त करने में कोई समस्या नहीं हो सकती है। आपका व्यापार फले–फूलेगा। आप जरूरतमंदों को भिक्षा देंगे।

शनि अन्तर्दशा (13:04:2076 से 14:06:2079)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा केदौरान, आपको समाज और सरकार में ऊँचे पदों वाले लोगों का सहयोग मिलेगा। आप विख्यात होंगे। आप समाज के नेतृत्वकर्ता या किसी ऊँचे राजनीतिक पद पर आसीन हो सकते हैं। आपको कुलीन बड़ी महिलाओं के साथ सम्पर्क बनाने के अवसर मिलेंगे। आपकी आय व्यय से अधिक होगी, लेकिन आपको खर्च में सावधानी बरतनी चाहिए। आप धन, वस्तुओं और आभूषणों का संग्रह करेंगे तथा इस पूरी अन्तर्दशा के दौरान आनन्द प्राप्त करेंगे। आपके संबंधी भी संपन्न होंगे। गांवों, कस्बों और शहर पर आपका अधिकार होगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (13:04:2076 से 14:10:2076)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। आप अपने समाज में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति होंगे।लोग आपको सम्मान देंगे और आपके शब्दों को कानून की तरह मानेंगे।

बुध प्रत्यंतर्दशा (14:10:2076 से 27:03:2077)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यदि दवायें या रसायन या तरल उत्पादों के निर्माण का व्यापार कर रहें हैं, तो आपका व्यापार बहुत समृद्ध होगा। विदेशियों से भी आपकी व्यापारिक संधि हो सकती है। आप विदेशों की प्रायः यात्रायें करेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (27:03:2077 से 02:06:2077)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको व्यापार में हानि हो सकती है। मित्र और वे लोग जिन पर आप सबसे अधिक भरोसा करते हैं, वे आपको धोखा दे सकते हैं। आपके लिए धन का उत्तम प्रकार से उपयोग करने में तब तक बहुत देर हो चुकी होगी– जैसाकि वे लोग पहले ही आपका धन हड़प कर चुके होंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (02:06:2077 से 12:12:2077)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने मित्रों के समूह से दुष्ट लोगों को बाहर निकाल फेकेंगे और संवेदनशीललोगों का एक नया पूर्ण भिन्न समूह बनायेंगे। आपको इसमें सफलता मिलेगी। आप भारी मात्रा में धन संग्रह करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (12:12:2077 से 08:02:2078)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक विवादों और मानसिक चिंता से पूर्ण दशा हो सकती है। आपके जीवनसाथी को गंभीर रोग हो सकता है, जिससे आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है और आप अपने समृद्धि की ओर बढ़ते व्यापार पर ध्यान दे पाने में असमर्थ हो सकते हैं। आपको धोखाधड़ी के कारण कोई हानि हो सकती है। संतान से आपका अलगाव हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (08:02:2078 से 15:05:2078)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके जीवनसाथी को रोगों से राहत मिलेगी। लेकिन आपकी माता को कोई असाध्य रोग हो सकता है और उनका उपचार में भारी धन व्यय हो सकता है। आपकी दैनिक कार्यों को करने में भी कोई रूचि और उत्साह नहीं हो सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (15:05:2078 से 21:07:2078)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आग या प्राकृतिक आपदा के कारण आपको कोई हानि हो सकती है। आपको व्यापार में भी भारी हानि हो सकती है। आपके लिए इस समय किसी अन्य योजना में निवेश नहीं करना बेहतर होगा। आपके जीवनसाथी को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है या आपका उनसे अलगाव हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (21:07:2078 से 11:01:2079)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके जीवनसाथी को मृत्युतुल्य कष्ट या रोग हो सकता है। आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। परिवार के लोग बाधायें उत्पन्न करने की कोशिश कर सकते हैं। आपको अपनी कुछ सम्पत्ति बेचने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। शत्रु आपका भारी नुकसान कर सकते हैं। अन्ततः आपको खतरनाक रोग हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (11:01:2079 से 14:06:2079)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली कुछ दशाओं से आप जिन दुखों का सामना कर रहे थे, उनसे आपको पूर्णराहत मिलेगी। व्यापार में आपको अचानक लाभ होगा। आप व्यापार में अपना अधिक समय लगायेंगे और खोये हुए अवसरों को प्राप्त करने की कोशिश करेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको उत्तम पदोन्नति मिल सकती है या किसी अधिक प्रतिष्ठित पद पर आपका स्थानान्तरण हो सकता है।

बुध अर्न्तदशा (14:06:2079 से 14:04:2082)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप नाम, यश और धन प्राप्त करेंगे। आप अपने प्रियजनों और संतानों से स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। आपके शत्रु परास्त होंगे। पेड़ों, फलों और मवेशियों से आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं। सरकार या भूमि से धन प्राप्त होगा। इस अन्तर्दशा के दौरान आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी। आपको जहरीले जानवरों को काटने से कोई रोग हो सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (14:06:2079 से 07:11:2079)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। जीवन के हर क्षेत्र में चहुंमुखी संपन्नता होगी। मित्र और संबंधी आपके घर पर एकत्र होंगे और आप उनकी संगति में सुन्दर समय व्यतीत करेंगे। विदेशों से भी लोग आपसे मिलने को आयेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (07:11:2079 से 07:01:2080)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यद्यपि आपको व्यापार या रोजगार या व्यवसाय में लाभ प्राप्त होगा, फिर भी आपकोअपने पास ईर्ष्यालु लोगों के कारण प्रायः बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने जीवनसाथी और ससुराल वालों से भरपूर सहयोग प्राप्त होगा।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (07:01:2080 से 27:06:2080)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक अति आनन्ददायक दशा होगी। आप सुन्दर लड़कियों की संगति का सुख प्राप्त करेंगे। होटल, फैशनदार कपड़ों या पुस्तकों या ज्योतिष से संबंधित व्यापार में आपको संपन्नता प्राप्त होगी। अध्ययन या रोजगार में अपने विशिष्ट कामों से संतान आपको प्रसन्नता प्रदान करेंगी।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (27:06:2080 से 18:08:2080)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा उत्तम होगी। आपकी आय निरन्तर बनी रहेगी। आपको पूर्ण आनन्द प्राप्त

होगा।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (18:08:2080 से 13:11:2080)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा में शुक्र महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। बुध और चंद्रमा कोई परिणाम नहीं देंगे। अतः शुक्र की स्थिति एक निर्णायक कारक होगी।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (13:11:2080 से 12:01:2081)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप भूमि और भवन से आय प्राप्त करेंगे। डाक्टरों और दवा तथा रसायन विक्रेताओं के लिए यह उत्तम दशा है। आपको सुशील जीवनसाथी की संगति का सुख प्राप्त होगा। हालाँकि, उनके स्वास्थ्य की अधिक देखभाल की आवश्यकता होगी। संतान से आपको वांछित परिणाम प्राप्तनहीं हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (12:01:2081 से 16:06:2081)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप रतिजन्य या चर्म रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आप लम्बे समय तक अस्पताल में भर्ती हो सकते हैं। आपका भारी व्यय हो सकता है। वातावरण में पूरी तरह बदलाव हो सकता है। आप और आपकी संतान या परिवार के अन्य सदस्यों के बीच में प्रायः विवाद हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (16:06:2081 से 01:11:2081)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अधिक बेहतर परिणाम मिलेंगे। आप सभी प्रकार की अवस्थाओं को हल करने में सक्षम होंगे। शत्रु परास्त होंगे। आपके परिवार के लोग आपको अस्थिर करने में सक्षम नहीं होंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (01:11:2081 से 14:04:2082)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक संघर्षपूर्ण दशा हो सकती है। आपको विषमताओं के खिलाफ खुलकर संघर्षकरना पड़ सकता है। आपके सगे भाई–बहन परेशानियां पैदा कर सकते हैं। आपकी सम्पत्ति का बंटवारा हो सकता है। मुकदमों की संभावना से भी इन्कार नहीं किया जा सकता है। आपको सिरदर्द या बुखार हो सकता है।

केतु अन्तर्दशा (14:04:2082 से 14:06:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको कई दुखों का सामना करना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी और संतान भी पीड़ित हो सकते हैं। ईश्वर भी आपसे मुख मोड़ सकते हैं। आपको परित्यक्त और वर्जित स्त्रियों के साथ आनन्द प्राप्त करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। संबंधियों और शत्रुओं सेआपके बहुधा झगड़े हो सकते हैं। हालांकि, शत्रु आपको किसी तरह की हानि नहीं पहुँचा पायेंगे। आपकेशरीर के किसी अवयव को हानि नहीं पहुँच सकती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (14:04:2082 से 09:05:2082)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप अपने जीवन में अति उत्तम समय का पहले ही आनन्द ले चुके हैं। यदि यह दशा मध्यायु के समय आती है, तो यह समय ऐसे आनन्द से बाहर निकलने और अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने का है। यदि यह दशा बुढ़ापे के समय आती है, तो आप धीरे–धीरे सन्यास ले सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (09:05:2082 से 19:07:2082)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप ईश्वर भक्ति में अपना समय व्यतीत करेंगे। आपका जीवन संतोषपूर्ण होगा। आप एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं। जीवन के बोझ को सहन कर पाने में असक्षम होने के कारण आप अपने घर से भाग सकते हैं और किसी सुदूर स्थान पर रह सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (19:07:2082 से 09:08:2082)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। शत्रुओं से आपको कष्ट हो सकता है। आपने जो काम नहीं किया है, उसके लिए भी आपके आचरण पर संदेह किया जा सकता है और आपका अपमान हो सकता है। हालाँकि, आप इससे शांति से बाहर निकल आयेंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (09:08:2082 से 13:09:2082)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी माता और जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपका अधिकतरसमय उन लोगों की देखभाल में व्यतीत हो सकता है। संतान आपकी कोई मदद नहीं कर सकतीहै। अपितु वे आपकी सम्पत्ति हड़प सकते हैं और आपसे दूर रह सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (13:09:2082 से 08:10:2082)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप भूमि और भवनों से लाभ प्राप्त करेंगे। आप एक नये घर का निर्माण करेंगे। आपको कृषि में लाभ होगा। आपको वाहन नहीं चलाना चाहिए। यदि आप घर से बाहर ना निकले तो आपके लिए यह बेहतर होगा– जैसाकि आपको दुर्घटना के कारण चोट लगने की संभावना है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (08:10:2082 से 11:12:2082)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपको बहुत अधिक सावधान रहना चाहिए। आपको भारी नुकसान हो सकते हैं। आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। आप पर कानूनी अभियोग लग सकता है। कानूनी मामलों में निर्णय आपके खिलाफ हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (11:12:2082 से 06:02:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अपेक्षाकृत यह एक बेहतर दशा होगी। आपको आर्थिक संकट और रोगों से थोड़ी राहत मिलेगी। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य भी बेहतर होगा। संतान से आपको सहयोग मिलेगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (06:02:2083 से 14:04:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। हर तरफ से आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। विभिन्न तरीकों से आपको भारी हानि हो सकती है। आपकी वस्तुयें चोरी हो सकती हैं या सरकार उनको जब्त कर सकतीहै। आपका अपने जीवनसाथी से वियोग हो सकता है। आपको किसी व्यक्ति से मदद मिलने की कोई आशा नहीं हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (14:04:2083 से 14:06:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप एक शांत जीवन व्यतीत करेंगे। आपको ऐंद्रिय सुखों में कोई रूचि नहीं होगी। आप ईश्वर आराधना में अपना समय व्यतीत करेंगे। आप अपनी क्षमता के अनुसार समाज को अपनी मदद देने की कोशिश करेंगे और उस सबसे आपको संतुष्टि प्राप्त होगी। आय के नये स्रोत खुलेंगे।

सूर्य दशा (14:06:2083 से 14:06:2089)

वर्तमान समय में आपकी सूर्य की महादशा चल रही है और सूर्य आपकी कुण्डली में चौथे भाव में स्थित है।चौथे भाव में सूर्य की दशा के दौरान, आपको शक्ति और अधिकार प्राप्त होंगे। आपका सम्पत्ति के मामलों में अपने संबंधियों से झगड़ा हो सकता है। आपको विदेश में रहना पड़ सकता है। आपको शत्रुओं के कारण अपमानित होना पड़ सकता है, जिससे आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। आप अपने पिता के संचित धन को खर्च कर सकते हैं। हृदय की समस्यायें हो सकती हैं। विपरीत लिंगी व्यक्तियों में आपकी रूचि हो सकती है। किसी प्रकार के शारीरिक चोट या अपंगता हो सकती है। यदि 22वें वर्ष की आयु में सूर्य की दशा भी चल रही है, तो आपकी अधिकतर अभिलाषायें इस उम्र में पूरी होंगी। आपको एकउत्तम नौकरी प्राप्त होगी या व्यापार में आप भारी सफलता प्राप्त करेंगे। अपने भविष्य के बारे में सही निर्णय लेने का यह उचित समय है।

वर्तमान समय में आपकी सूर्य की महादशा चल रही है और सूर्य आपकी कुण्डली में धनु राशि में स्थित है।सूर्य की अपनी दशा के दौरान, आपको जीवनसाथी और संतानों से सुख, सरकार से समर्थन और धार्मिकव सन्तजनों से आशीष मिलेगा। आपको प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन में गहरी रूचि होगी। आपको सभीसे सम्मान मिलेगा। आपका हठी होना, आपकी सबसे बड़ी कमी होगी, फिर भी आप युक्तिपूर्ण तरीके सेकाम करेंगे। यह दशा चंहुमुखी समृद्धि प्रदान करेगी। यदि आप व्यापार शुरू करना चाहते हैं, तो इस दशा के दौरान कर सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (14:06:2083 से 01:10:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। आपको सरकार से सम्मान प्राप्त होगा और आप अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र में नाम और यश प्राप्त करेंगे। आपको किसी सुदूर और अलग स्थान पर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आप उत्तम मात्रा में धन अर्जित करेंगे। आप सरकार या शासित वर्ग से समर्थन/आय प्राप्त कर सकते हैं। आपकी कुण्डली में सूर्य कमजोर है, आप सिरदर्द और उदर पीड़ा, कान में दर्द, गुर्दे की समस्या, बुखार और कफ से पीड़ित हो सकते हैं। अपने पिता से आपके संबंध आत्मीय नहीं हो सकते हैं। आपके संबंधी आपको बहुत परेशान कर सकते हैं। आपकी आय कम और व्यय अधिक हो सकता है। आप राजसी दिखावा करने में भारी व्यय करसकते हैं और जिसके परिणामस्वरूप आप कर्जदार हो सकते हैं। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य उच्चस्थ

या केन्द्र या त्रिकोण या ग्यारहवें भाव में स्थित है, सूर्य की इस अन्तर्दशा में आप जो भी काम करेंगे, उसमेंभारी लाभ प्राप्त होगा, सरकार से आपको समर्थन मिलेगा, आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी और आपका विवाह भी हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (14:06:2083 से 19:06:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। सूर्य की प्रत्यंतर्दशा के दौरान आपको शत्रुओं और अपने आस–पास की घटनाओं का अनावश्यक भय हो सकता है। आप उन लोगों के साथ परिणाम रहित चर्चाओं में रत हो सकते हैं, जिन्हें चर्चित विषय का कोई ज्ञान नहीं होगा और इससे आप किसी प्रकार के भय को आमंत्रण दे सकते हैंया अपने भविष्य के बारे में किसी ज्योतिषी से परामर्श ले सकते हैं या अपने भविष्य के बारे में कुछ भविष्यवाणियों का अध्ययन कर सकते हैं, जिससे आप चिन्तित हो सकते हैं और आगे हो सकने वाली घटनाओं के बारे में डरना शुरू कर सकते हैं। उसके बाद इस दशा के समाप्त हो जाने के बाद आपको प्रतीत होगा कि ऐसा कुछ था ही नहीं, जिसके लिए आप डर रहे थे। इस दशा के दौरान आपको भगवान शिव के मंत्रों का जाप करना चाहिए। आर्थिक चिंतायें भी आपकी मानसिक शांति को भंग कर सकती हैं। पहले तीन दिनों के दौरान आपके मित्र भी आपकी मदद करने से इन्कार कर सकते हैं। इसके बाद आपकोअनजाने और बिना ध्यान दिये ही आर्थिक मदद प्राप्त होगी। जीवनसाथी का स्वास्थ्य या उनसे झगड़ा आपको मानसिक कष्ट दे सकता है। अन्ततः आपको तीव्र सिरदर्द हो सकता है, जिसमें दवाइयां बेअसर साबित हो सकती हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (19:06:2083 से 28:06:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान अपनी योजनाओं की असफलता के कारण आप भारी मानसिकपीड़ा का सामना कर सकते हैं और आपकी सम्पत्ति की चोरी हो सकती है। आपको स्वर्ण आभूषणबेचने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है या आपकी अथवा आपके जीवनसाथी की गलती के कारण वे चोरी हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (28:06:2083 से 05:07:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि मंगल कमजोर है, तो आपको हथियारों से भय हो सकता है, आपको किसी समय सिर के भाग में चोट लग सकती है। शत्रुओं से आपको परेशानियां हो सकती हैं, और सभी प्रकार की विपत्तियों का आप सामना कर सकते हैं। आपको शांतिपूर्वक किसी अज्ञात स्थान पर चले जाना चाहिए– विशेषतया किसी तीर्थ स्थान पर, ताकि आपके कष्ट कुछ कम हो सकें। आपको आग का प्रयोग करते समय सावधान रहना चाहिए। यदि आप वाहन चला रहे हैं, तो आपको बहुत खुला वाहन नहीं चलानाचाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (05:07:2083 से 21:07:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपके सीना और जिगर गंभीर रूप से प्रभावित हो सकते हैं। आपको कफ की शिकायत हो सकती है। आपको पीलिया हो सकती है। बेहतर स्वास्थ्य के लिए आपको तेल का सेवन नहीं करना चाहिए, सुबह खाली पेट कुछ तुलसी के पत्ते चबाने चाहिए। आपको तुलसी के पौधे को भी पानी देना चाहिए। आपको तेजधार के हथियार या पत्थर से कोई चोट लग सकती है। विभिन्नतरीकों से आपको धन हानि हो सकती है और सरकार से आपको कष्ट हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (21:07:2083 से 05:08:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। शत्रु परास्त होंगे। आपको सामान्य समृद्धि अवश्य प्राप्त होगी। आपको भोजन, वस्त्रों और वाहन का लाभ मिलेगा। यदि आप विद्यार्थी हैं और किसी परीक्षा में बैठ रहे हैं, तो आपको सफलता मिलेगी। यदि आप बेरोजगार हैं, तो आपको कोई रोजगार प्राप्त करने के लिए कोशिश करना चाहिए– जैसाकि आप उसे पाने में सफल होंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (05:08:2083 से 22:08:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको धन, मवेशियों, वाहनों आदि का लाभ होगा। शत्रुओं का नाश होगा। रोगों सेराहत मिलेगी।

बुध प्रत्यंतर्दशा (22:08:2083 से 07:09:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान मुख्यतः आप और ज्ञान प्राप्त करने में संलग्न रहेंगे। आप पुस्तक खरीदेंगे,पुस्तकालयों में जायेंगे और विभिन्न स्रोतों से अध्ययन सामग्री एकत्र करेंगे। संबंधी आपसे मिलने आयेंगे। आपको धन का लाभ होगा, लेकिन उसका एक बड़ा भाग पुस्तकों और अध्ययन सामग्री के क्रय तथा संबंधियों के मनोरंजन में व्यय होगा। आप गरीबों से सहानुभूति रखेंगे और उन्हें भिक्षा देंगे। आप धार्मिक स्थानों की यात्रा करेंगे। जन्मकुण्डली के सम्पूर्ण बल के अनुसार आपको सरकार से सम्मान प्राप्त हो सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (07:09:2083 से 13:09:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। सामान्यतः यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है। आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। दुष्ट लोग आपको धन हानि करा सकते हैं। चूंकि, आप दूसरों की परवाह अधिक करेंगे, अतः आप उनके सुखों के लिए धन व्यय करेंगे और अन्ततः आपकी आर्थिक स्थिति में गिरावट आ सकती है। अपने लोगों से प्रायः आपका झगड़ा और शत्रुओं से आपका विवाद हो सकता है, जिससे आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (13:09:2083 से 01:10:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक सामान्य दशा होगी। जीवन की गति धीमी मगर स्थिर होगी। आपको ना तो तनाव होगा और ना ही खुशी होगी। आपको धन का अवसरीय लाभ होगा और महिलाओं तथा मनोंरंजन पर आप धन व्यय करेंगे। आपका विवाह हो सकता है।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (01:10:2083 से 01:04:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा लग्न से केन्द्रीय अथवा त्रिकोण भाव में है, चंद्रमा की यह अन्तर्दशा अति उत्तम होगी। आपका विवाह हो सकता है, धन की वृद्धि होगी, आप क्रय या विरासत के माध्यम से भूमि और

भवन प्राप्त करेंगे, आपको विभिन्न स्रोतों से आय तथा वाहन और सुख प्राप्त होंगे। आपको संतान की प्राप्तिहोगी। आपका सदाचारी लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, या यदि पहले से आप किसी रोग से पीड़ित हैं, तो आपको उससे मुक्ति मिलेगी। आपका अपने शत्रुओं और विरोधियों से समझौता होगा और अनुकूल समय आने पर आप उन्हें परास्त करेंगे। आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा सूर्य से चौथे, सातवें, नौवें, दसवें या ग्यारहवें भाव में है, इस अन्तर्दशा के दौरान आपको शुभ परिणाम मिलेंगे। शुभ परिणामों की कोटि अवरोही क्रम में होगी– अर्थात यदि सूर्य से चंद्रमा ग्यारहवें भाव में है, तो आपको अधिकतम शुभ परिणाम मिलेंगे और नौवें भाव में होने पर शुभ परिणाम कम हो जायेंगे। सामान्यतः सभी प्रकार के सुखों काआनन्द प्राप्त करेंगे। इस अन्तर्दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है या संतान की प्राप्ति होगी। आपको भूमि, स्थायी पद, उत्तम वस्त्रों, वाहनों की प्राप्ति होगी।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (01:10:2083 से 16:10:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि चंद्रमा बली है, तो आपका अपनी पसन्द की लड़की से विवाह हो सकता है। आपको संतान की प्राप्ति होगी, विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होगी। आपको माता की सम्पत्ति विरासत में मिल सकती है। यदि वह आपको पहले ही मिल चुकी है, तो आप उससे अति उत्तम लाभ कमायेंगे। बहनोंके लिए दशा उत्तम नहीं हो सकती है। आपके घर पर शुभ समारोह आयोजित होंगे और घरेलू वातावरण मैत्रीपूर्ण रहेगा। मिलने जुलने वाले लोग अप्रत्याशित खर्चे करवा सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (16:10:2083 से 27:10:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक मिली–जुली दशा हो सकती है। बेतुके मामलों में जीवनसाथी के साथ आपका विवाद हो सकता है। कभी–कभी उसके लिए साड़ी या आभूषण खरीदने के मामले में, जिसे आप मना कर सकते हैं और तब घर लड़ाई का मैदान बन सकता है। अप्रत्याशित स्रोतों से आपको धन प्राप्त होसकता है। आपको बुखार, बवासीर और उष्ण रोग हो सकते हैं। वरिष्ठों से कष्ट हो सकता है। अधीनस्थों के साथ झगड़ा हो सकता है। सट्टे से आपकी आय हो सकती है। आपकी माता और जीवनसाथी के बीच झगड़ा हो सकता है और आप भ्रम की स्थिति में हो सकते हैं कि किसका पक्ष लें औरकिसका ना लें।

राहु प्रत्यंतर्दशा (27:10:2083 से 23:11:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत खराब दशा हो सकती है। शत्रु हमेशा सांप की तरह आपको डंसनेको तैयार रहेंगे। व्यवसाय में आपको किसी ऐसे काम के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जिसे आपने किया ही नहीं है और आपको अपमान का सामना करना पड़ सकता है। सबसे अधिक सत्यनिष्ठ और सम्मानित होने के बावजूद आपको बदनामी का सामना करना पड़ सकता है। इसके लिए कुछ महिलायें जिम्मेदार हो सकती हैं। वे बिना किसी प्रमाण के अफवाह फैला सकती हैं। आपके परिवार के लोगों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अधिकार और शक्ति प्राप्त लोगों के साथ आपका प्रायः विवाद हो सकता है। नगद धन का अभाव आपकी मानसिक शांति को भंग कर सकता है। मित्र भी आपकी मदद नहींकर सकते हैं। आपको अपनी कुछ घरेलू वस्तुयें बेचनी पड़ सकती हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (23:11:2083 से 18:12:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा उत्तम होगी। आपके व्यवसाय में प्रगति होगी और व्यापार में लाभ

बढ़ेगा। आपका ग्रंथों के अध्ययन की तरफ झुकाव होगा। आप लेखन और प्रकाशन से अतिरिक्त आय प्राप्तकरेंगे। आपका घरेलू वातावरण पूरी तरह से सौहार्दपूर्ण होगा। आपके माता–पिता के स्वास्थ्य में सुधारहोगा। यदि शनि और मंगल की दृष्टि सूर्य या चंद्रमा पर है, तो आप दुर्घटनाओं के शिकार हो सकतेहैं या आपको बुखार, सर्दी और पेट की समस्यायें हो सकती हैं। इन तीनों ग्रहों में से किसी ग्रह पर शुक्र की दृष्टि होने पर आप शारीरिक सुखों को प्राप्त करने में रत रहेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (18:12:2083 से 16:01:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके माता–पिता के बीच विवाद हो सकता है। यदि आप इस दशा के समय बहुत युवा हैं, तो ऐसा विवाद आपकी पढ़ाई को बाधित कर सकता है और घर की परिस्थितियों के कारण आप अपनी पढ़ाई छोड़ सकते हैं। यदि साथ में साढ़े साती भी चल रही है, तो आपको हर क्षेत्र में कष्ट कासामना करना पड़ सकता है। आप शांति के लिए नशे का सहारा ले सकते हैं। आपके सगे भाई–बहनों को खतरा हो सकता है। आपका अपने पिता से झगड़ा हो सकता है और आप घर से भाग सकते हैं। परिस्थितियां ऐसी बन सकती हैं कि आप दूसरों के लिए हर चीज का त्याग कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (16:01:2084 से 11:02:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आप ईश्वर की पूजा में अधिक समय बितायेंगे। लोगों की नजर में आप एक उत्तम गुणों वाले व्यक्ति होंगे और वे आपकी सलाह को एक उपदेशक की तरह स्वीकार करेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति मिल सकती है। आपभूमि और भवन खरीदेंगे एवं कृषि, मवेशियों तथा वाहनों से लाभ प्राप्त करेंगे। यदि आप बेरोजगार हैं, तो इस दशा के दौरान आपको एक उचित रोजगार मिलेगा। साझेदारी में व्यापार करने के लिए आपको अवसर प्राप्त होंगे, जिन्हें आपको मना कर देना चाहिए, अन्यथा आप धोखे के कारण धन गवाँ सकते हैं। संतान की पढ़ाई में सुधार होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (11:02:2084 से 21:02:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको समय–समय पर धन लाभ होगा। इस धन को आप धार्मिक कामों में खर्च करेंगे। जो भी आपके दरवाजे पर आयेगा, उसे कुछ ना कुछ भिक्षा देंगे। आपका रूझान आध्यात्मवाद और गूढ़वाद तथा दार्शनिक उपदेशों की तरफ होगा। आपको नेत्र रोग हो सकते हैं। महिलाओं से आपको कष्ट हो सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (21:02:2084 से 23:03:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है। आपके पेट में तीव्र दर्द या पेट में विकार के कारण रोग हो सकते हैं। शत्रुओं और चोरों के कारण हानि हो सकती है। आपको समय पर भोजन नहीं प्राप्त हो सकता है। आपकी पुत्रियों का स्वास्थ्य बहुत खराब हो सकता है और उपचार में भारीधन व्यय हो सकता है। उनकी शिक्षा में रूकावट आ सकती है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (23:03:2084 से 01:04:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपको अपने हर काम में सफलता मिलेगी।अतः आपको निवेश के बारे में निर्णय लेकर इस दशा का अवश्य लाभ उठाना चाहिए। भवन निर्माणऔर व्यापार का विस्तार या नये व्यापार की शुरूआत जैसी कोई नयी योजना इस दशा के दौरान सफल होगी। आपको सुशील जीवनसाथी, नये वस्त्रों और उत्तम भोजन का सुख मिलेगा।

मंगल अन्तर्दशा (01:04:2084 से 07:08:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। आपकी कुण्डलीमें मंगल उच्चस्थ या अपने भाव या लग्न से ग्यारहवें भाव या केन्द्रीय भाव में है, इस दौरान कई शुभ परिणामों को प्राप्त करेंगे– अर्थात आपको भूमि और भवनों का लाभ, अपने सहोदरों से सुख और खुशियां, रत्नों और स्वर्ण से लाभ या प्राप्ति, व्यवसाय या नौकरी में लाभ, झगड़ों में विजय आदि प्राप्त होंगे।कुछ विद्वान ज्योतिषियों के अनुसार, यदि आपकी जन्मकुण्डली में मंगल उत्तम स्थिति में है या उस पर मित्र या शुभ ग्रह की दृष्टि है, तो भी सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के दौरान आपको शुभ परिणाम मिलने की संभावना कम हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (01:04:2084 से 08:04:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। शत्रुओं और सरकारी अधिकारियों से आपको कष्ट हो सकते हैं। आपको खून की उल्टियां हो सकती हैं। विभिन्न तरीकों से आपको धन हानि हो सकती है। जीवनसाथी को कष्ट हो सकताहै। आप मलेरिया या दिमाग में झिल्लियों में सूजन से ग्रस्त हो सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (08:04:2084 से 28:04:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सम्पत्ति और धन की हानि हो सकती है। अपने भाइयों के साथ सम्पत्ति मामलों में विवाद हो सकता है। आपके सगे भाई–बहन आपको हानि पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं। आप पुलिस के मामलों में फंस सकते हैं और आपको कारावास हो सकता है। संबंधी और मित्र आपके शत्रुबन सकते हैं। आपको विभिन्न रोग विशेषकर चर्म रोग और बुखार हो सकते हैं। आप असमय भोजन कर सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (28:04:2084 से 15:05:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप दूरस्थ स्थानों का भ्रमण कर सकते हैं। अति बुद्धिमान और स्थिर होने के बावजूद आपकी बौद्धिक क्षमता का ह्रास हो सकता है और आप एक मूर्ख व्यक्ति की तरह व्यवहार कर सकते हैं।

शनि प्रत्यंतर्दशा (15:05:2084 से 04:06:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। खराब रक्त के कारण रोग हो सकते हैं। आपको कैंसर गर्दन के उपरी भागों में ट्यूमर और तपेदिक की शिकायत हो सकती है। आपकी वस्तुएं चोरी हो सकती हैं। हालाँकि, कुछ दिनों केबाद वे वापस मिल जायेंगी। आपको धन हानि हो सकती है। आपके जीवनसाथी की मूर्खता और हठ आपको बहुत व्यथित कर सकते हैं और अन्त में आप गंभीर मानसिक अवसाद से ग्रस्त हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (04:06:2084 से 22:06:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको बुखार हो सकता है। संबंधियों तथा मित्रों के साथ बेतुकी बातों पर विवाद हो सकते हैं। व्यय आय से अधिक हो सकते हैं। फिर भी आप अप्रत्याशित स्रोतों से धन और सम्पन्नता कीआशा कर सकते हैं। आपको लेखन और सरकार से आय प्राप्त होगी।

केतु प्रत्यंतर्दशा (22:06:2084 से 30:06:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको तीव्र सिरदर्द और विभिन्न रोगों, मृत्यु और शासकों का भय हो सकता है। आप बहुत थकान महसूस कर सकते हैं। आपकी एक–एक पाई चिकित्सकीय उपचार में व्यय हो सकती है। यदि आपको रोगों से मुक्ति मिलती है, तो कर्जदाता आपके पास अपना धन मांगने आ सकते हैं। आर्थिक संकट से बाहर निकलने के लिए आप और धन उधार लेकर सट्टों और जुए में रत हो सकते हैं। अन्ततः भाग्य से हार कर आप या तो अपना घर छोड़ कर जा सकते हैं या अपनी सारी सम्पत्ति को बेच सकती हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (30:06:2084 से 21:07:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको शत्रुओं और सरकार के कारण कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। आपको उल्टी, पीलियां, अपचन की शिकायत हो सकती है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (21:07:2084 से 27:07:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। चूंकि महादशा का स्वामी प्रत्यंतर्दशा का स्वामी भी है, अतः मंगल शुभ या अशुभ परिणाम देने में अप्रभावी होगा और सूर्य इस प्रत्यंतर्दशा में सबसे शक्तिशाली ग्रह होगा। चाहे सूर्य और मंगल किसी अशुभ राशि या अशुभ भाव में स्थित हो या नहीं हों, आपको भूमि प्राप्त होगी, आप आभूषण और उत्तम वस्त्र खरीदेंगे। आपको स्वादिष्ट भोजन का आनन्द प्राप्त होगा।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (27:07:2084 से 07:08:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपको सम्मान और प्रचुर मात्रा में स्वादिष्टभोजन मिलेगा। आपको तीन विभिन्न स्रोतों से धन प्राप्त होगा। आपको अपने जीवनसाथी और संतान की संगति का आनन्द प्राप्त होगा। यदि आप अविवाहित हैं, तो आपका विवाह हो सकता है।

राहु अर्न्तदशा (07:08:2084 से 02:07:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के पहले दो मास में आपको भारी धन हानि, अनावश्यक भय, रक्त की अशुद्धता, सर्पदंश या सांपो से भय या सर्पों का स्वप्न, शरीर में फोड़े, जीवनसाथी और संतान के कारण दुख (जीवनसाथी और संतान की बीमारी या उनका आपके प्रति नकारात्मक रवैया या जीवनसाथी से अलगाव/तलाक या उसके द्वारा अनैतिक जीवनशैली अपनाये जाने के कारण) का सामना करना पड़ सकता है। उसके बाद आप उत्तम परिणामों काआनन्द प्राप्त करेंगे। अतः आपके लिए बेहतर यही होगा कि आप इस अवधि के दौरान कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको बाद में पछताना पड़े। आप दूरस्थ स्थानों की यात्रा पर जा सकते हैं, ताकि ऐसी

स्थिति से आप बच सकें। आपको भगवान शंकर के मंत्रों का जाप और उनकी आराधना करनी चाहिए। कुछ ज्योतिषियों के अनुसार, यदि आपकी जन्मकुण्डली में राहु किसी उत्तम भाव में स्थित है, तो भी सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के दौरान यह कोई शुभ परिणाम नहीं दे सकता है। (हालांकि, इस तथ्य पर सहमत नहीं हुआ जा सकता है, क्योंकि कई लोगों को अति उत्तम परिणाम प्राप्त होते देखा गया है।) आपको तीव्र सिर दर्द और आँखों में फोड़ा हो सकता है। आपका धन चोरी हो सकता है या आपको धन की हानि हो सकती है। आपको जहर से खतरा हो सकता है। आपमें शारीरिक सुख प्राप्त करने की कामना विकसित हो सकती है और आपके नये शत्रु बन सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (07:08:2084 से 25:09:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको अपने जन्मस्थान को छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आप उद्देश्यहीन होकर भटक सकते हैं। आपको भारी दुखों का सामना करना पड़ सकता है और आप खतरनाक रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको देश के कानून के हाथों सजा मिल सकती है। दुर्घटनाओं केकारण आपको चोट लग सकती है। आपके सारे शरीर में खुजली हो सकती है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (25:09:2084 से 08:11:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी भगवान में आस्था समाप्त हो सकती है। आपकी सीखने में कोई रूचि नहींहो सकती है। आप पाप कर्मों में रत हो सकते हैं। हर किसी से आपका झगड़ा हो सकता है। आपका एक पुत्र दुर्घटनाग्रस्त हो सकता है। आप बहुत दुखी हो सकते हैं।

शनि प्रत्यंतर्दशा (08:11:2084 से 31:12:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप धार्मिक आधार पर उपवास रख सकते हैं। आग या हवा के कारण आपका घरनष्ट हो सकता है। आपके हाथों और पैरों में तीव्र पीड़ा हो सकती है। आपके मेरूदण्ड में विकृति आ सकती है। आप घोड़े या किसी अन्य जानवर पर सवारी करते समय गिर सकते हैं या आप वाहन दुर्घटनाके शिकार हो सकते हैं। आपके आँख में रोग हो सकता है, जिसे डॉक्टर को तत्काल दिखाने की आवश्यकता हो सकती है। आपको कारावास हो सकता है या आपका बोझिल जीवन कारावास जैसा हो सकता है। (यहां पर कारावास का मतलब व्यक्ति की गतिविधियों पर पाबन्दी से है।) इसका कारण आपकीबीमारी हो सकती है, जहाँ बड़े लोग और डॉक्टर आपको घर से बाहर जाने के लिए मना कर सकतेहैं। आप अस्पताल में भर्ती हो सकते हैं, जहाँ पर आपके चलने फिरने की आजादी पर रोक लग सकती है। बहुत अधिक दुर्लभ मामले में ही आपको कानून कारावास की सजा दे सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (31:12:2084 से 15:02:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको धन की हानि हो सकती है और आग या चूहों के कारण कपड़े बर्बाद हो सकते हैं। आपके चारों तरफ होने वाली घटनाओं के कारण आपकी बौद्धिक क्षमता का ह्रास हो सकता है। आप अपनेबड़ों और उपदेशकों को नाराज कर सकते हैं, जिससे आपको उनके शाप का सामना करना पड़ सकता है। इस शाम का विषम प्रभाव राहु की महादशा में राहु–बुध–सूर्य की प्रत्यंतर्दशा के आरम्भ से दिखना शुरू हो सकता है। यदि आप ऐसे शाप से बचना चाहते हैं, तो आपको श्राद्ध का आयोजन करना चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (15:02:2085 से 06:03:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप विदेश में रह सकते हैं। आपका धन चालाक और धूर्त लोग हड़प सकते हैं। आपको खाली पेट सोना पड़ सकता है। आपको सरकार के द्वारा पकड़े जाने का भय हो सकता है। चोर भी आपको परेशान कर सकते हैं। आपको मृत्यु का भय हो सकता है। ठगों से आपका झगड़ा हो सकता है। आपको बहुत कष्ट हो सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (06:03:2085 से 30:04:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा मिली–जुली होगी। आपकी माता और जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपकी चिन्ता का कारण हो सकता है। उनके उपचार में भारी धन व्यय हो सकता है। आप स्वयं महिला आत्माओं, जिन्हें योगिनी, डाकिनी या शाकिनी कहते हैं, के शिकार हो सकते हैं। आपके जीवनसाथी या नजदीकी संबंधियों को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आप सादा भोजन कर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (30:04:2085 से 16:05:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके मित्र और संतानें आपको कष्ट पहुंचा सकती हैं। आप बुखार और वायु विकार से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको बीमार हालत में भी काम करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आपके पिता का स्वास्थ्य क्षीण हो सकता है। यदि आप राजनीति में हैं, तो आपको अपने कार्य क्षेत्र के राजनीतिक विरोधियों का भारी प्रतिरोध झेलना पड़ सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (16:05:2085 से 13:06:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक निराशाजनक दशा हो सकती है। आप कई गलत और अप्रशंसनीय काम कर सकते हैं और शीघ्र ही आपको उसकी सजा भुगतनी पड़ सकती है। आपको केवल अपने वरिष्ठों और अधीनस्थों से ही नहीं बल्कि जनता के द्वारा भी अपमान का सामना करना पड़ सकता है। आपको विभिन्न प्रकार के खतरों का सामना करना पड़ सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (13:06:2085 से 02:07:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके जीवन की एक अति कटु दशा हो सकती है। आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकते हैं। दुर्घटना के कारण आपके हाथ पैरों में चोट लग सकती है। रक्त की अशुद्धि के कारण आपको रोग हो सकते हैं। आपको गुर्दे की परेशानी हो सकती है। आप गलत काम कर सकते हैं। समय पर आपको भोजन प्राप्त नहीं हो सकता है। आपको किसी प्रकार के झगड़े से पूर्णतया दूर रहना चाहिए–जैसाकि आपको चोट लगने की संभावना है। आपका आत्म–सम्मान खो सकता है।

गुरू अन्तर्दशा (02:07:2085 से 20:04:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। बृहस्पति आपकी कुण्डली में केन्द्र या त्रिकोण भाव में या उच्चस्थ या मित्र भाव में है, आप उत्तम बृहस्पति के सभी शुभ परिणामों का आनन्द प्राप्त करेंगे, जैसे सम्मान में बढ़ोत्तरी, अन्न के भंडार में वृद्धि, संतान का जन्म, कामनाओं की पूर्ति, उत्तम कपड़ों और आभूषणों की प्राप्ति, सरकार से भारी धन की प्राप्ति आदि। मंत्रणाओं

में आपको उत्तम पद प्राप्त होगा। आप संतानों से भी धन प्राप्त करेंगे। आप सद्कृत्यों और उत्तम परम्परागत अनुपालनों को पूरा करेंगे। आपकी कुण्डली में बृहस्पति सूर्य से छठे या आठवें भाव में है या नीचस्थ है, आप सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के दौरान सरकार के कारण परेशानियों, संतानके कारण दुखों, विभिन्न रोगों जैसे फोड़े और मधुमेह आदि का सामना कर सकते हैं। आपको धन कीहानि हो सकती है और व्यय बढ़ सकता है, योजनायें असफल हो सकती हैं, मानसिक पीड़ा हो सकती है तथा आप अपने पद को खो सकते हैं। इससे बचने का सबसे उत्तम उपाय भगवान नारायण (भगवान विष्णु–हिन्दु धर्म के त्रिमूर्ति में से एक) की उपासना है। बृहस्पति सूर्य की महादशा में अपनी अन्तर्दशा के दौरान बहुत अशुभ परिणाम नहीं देगा। विभिन्न स्रोतों से धनागमन, ईश्वर की आराधना, साधुजनों, बड़े संबंधियों से आनन्द, कान और फेफड़ों के विकार, शत्रुओं का नाश होगा।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (02:07:2085 से 10:08:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपको अपनी खोई हुई स्थिति और सम्मान मिलेगा। पिछले कुछ सालों की तुलना में एक औसत श्रेष्ठता का समय होगा, मानो पूर्व में कुछ प्रतिकूल घटा ही ना हो। अतः आपको अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए सभी प्रयास करने चाहिए। इस दशा के दौरान किया गया कोई भी प्रयास फलदायी होगा। शिक्षा के प्रारम्भ, परिक्षायें देने औरनया व्यापार शुरू करने या वर्तमान व्यापार का विस्तार करने के लिए यह अति उत्तम समय है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (10:08:2085 से 25:09:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको चौपाया जानवरों का लाभ होगा और आप वाहन खरीदेंगे। आपको अपने जीवनसाथी और संतान से सुख मिलेगा। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति मिल सकती है। सट्टों से आपको लाभ मिलेगा। आपको उत्तम भोजन और वरिष्ठों का समर्थन मिलेगा। बेहतरी के लिएआपकी वर्तमान स्थिति में बदलाव होगा।

बुध प्रत्यंतर्दशा (25:09:2085 से 06:11:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप प्राचीन शास्त्रों को सीखने में अधिक रूचि लेंगे और इसमे निपुणता प्राप्त करेंगे। आपको हथियारों और रत्नों का लाभ होगा। आप स्वादिष्ट भोजन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आपको पदोन्नति मिल सकती है। यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको उसमें उचित मात्रा में लाभ मिलेगा। आपको इस दशा के दौरान भूमि नहीं खरीदनी चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (06:11:2085 से 23:11:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका अपने संबंधियों से झगड़ा और विवाद हो सकता है और चोरों तथा शत्रु सेआपको कष्ट हो सकते हैं। आप हर किसी से सहायता मांगेंगे, लेकिन सब व्यर्थ हो सकता है। आपको हथियारों से चोट लग सकती है। आपको ऐसा प्रतीत हो सकता है, कि आपकी किसी भी समय मृत्यु हो सकती है या आपको अपने आस–पास की हर चीज से डर लग सकता है। आपको भोजन में कोई रूचि नहीं हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (23:11:2085 से 10:01:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको धन, आभूषणों और वस्त्रों का लाभ होगा। आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी। यदि आप अविवाहित हैं, तो आपका विवाह हो सकता है। आप सुन्दर लड़कियों की संगति का आनन्द प्राप्तकरेंगे। यदि इन तीनों में से कोई ग्रह किसी अशुभ भाव में स्थित है या नीचस्थ है, तो आपको उन महिलाओं के कारण कष्ट हो सकता है, जिनसे आपके शारीरिक संबंध थे। आपकी सारी वस्तुओं को वे हड़प सकती हैं। आप ढेर सारे मीठे भोजन का आनन्द प्राप्त करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (10:01:2086 से 25:01:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको विरासत में भूमि और भवन मिलने की संभावना है। सरकार से आपको सम्मान मिलेगा। हालाँकि, आप दशा का आनन्द नहीं प्राप्त कर सकते हैं– जैसाकि आपके दिमाग में किसीना किसी कारण से तनाव हो सकता है। आपके छोटे भाई आपके खिलाफ हो सकते हैं या आपकी चिंता का कारण हो सकते हैं। आपकी उपलब्धि के कारण ईर्ष्यालु सहकर्मी आपके लिए समस्यायें पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। आपको किसी नयी सम्पत्ति को क्रय करने में कोई धन निवेश नहीं करनाचाहिए।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (25:01:2086 से 18:02:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सोना, आभूषणों और रत्नों का लाभ मिलेगा। आप दूध से बनी कई वस्तुओंका आनन्द प्राप्त करेंगे। आप उदर विकार और पैरों तथा पिण्डलियों के रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। मिर्गी होने की संभावना हो सकती है। ऐसे में आपको रोशनी करके रात में सोना चाहिए। आपको बासीभोजन नहीं खाना चाहिए।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (18:02:2086 से 07:03:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको कई रोग जैसे उदर विकार, पेचिश, मिर्गी, मलेरिया, गर्दन में दर्द और अपचन आदि हो सकते हैं। आपको आग और आग के उपकरणों का प्रयोग करते समय बहुत सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान लगने वाली किसी भी चोट का उपचार कठिन हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (07:03:2086 से 20:04:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको मिले–जुले परिणाम प्राप्त होंगे। एक तरफ आपका रूझान आध्यात्म की तरफ होगा और कई लोग आपको एक गुरु की तरह सम्मान देंगे, दूसरी तरफ कुछ निहित स्वार्थी लोग आपके नाम और यश का नाश करने की कोशिश कर सकते हैं। आपके लिए उनके साथ किसी भी प्रकार के विवाद को नजरअंदाज करना बेहतर होगा।

शनि अन्तर्दशा (20:04:2086 से 02:04:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में शनि केन्द्र अथवा त्रिकोण भाव में स्थित है, शनि की इस अन्तर्दशा में आप अपने शत्रुओं का नाश करेंगे और शुभ समारोहों में भाग लेंगे। हालांकि, आपकी आय सीमित होगी और सुख कम हो

सकते हैं। दूसरे शब्दों में, सूर्य और शनि के परस्पर शत्रु होने के कारण अन्तर्दशा के बहुत अशुभ होने की धारणा के बिल्कुल विपरीत, केन्द्र अथवा त्रिकोण भाव में स्थित शनि की अन्तर्दशा बहुत महत्वपूर्ण नहीं हो सकती है अर्थात जीवन सामान्य तरीके से चलेगा। आपकी जन्मकुण्डली में शनि सूर्य से दूसरे या सातवें भाव में स्थित है, आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। इन अशुभ प्रभावों से बचने के लिए आपको एक काली गाय या भैंस या बकरी दान करनी चाहिए और महामृत्युंजय मंत्र का जाप करना चाहिए। आपको आय में बाधाओं, संतान से अलगाव, जीवनसाथी के खराब स्वास्थ्य, अनावश्यक खर्चों, परिवार से अलग रहने की बाध्यता, परिवार के किसी बड़े सदस्य का वियोग, भूमि की हानि जैसे अशुभ परिणामों का सामना करना पड़ सकता है। शनि की अन्तर्दशा के आरम्भ में आपको, आपके मित्रों और संबंधियों को अशुभताओं का सामना करना पड़ सकता है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (20:04:2086 से 14:06:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप विदेशी स्थान पर रह सकते हैं– विशेषकर जो जंगलों से घिरे हों। यदि कंटक शनि की दशा भी इसी दशा के दौरान चल रही है, तो आपको अपने सामान को बहुत ही कम दामोंपर बेचना पड़ सकता है और बेहतरी या रोजगार के लिए किसी सुदूर स्थान पर जाना पड़ सकता है, जहाँ आपको कई पेरशानियों का सामना करना पड़ सकता है। वहाँ से भी अपनी वहाँ पर खरीदी गयीं वस्तुओं को बहुत कम दामों पर बेच कर वापस आने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है, जिससे आपको धनकी पूर्णतया हानि हो सकती है। यदि आपने ध्यान दिया तो आप इस स्थिति से बच निकलने में सक्षम होंगे। आपको जलीय जीवों से खतरा हो सकता है। आपको अस्वस्थकर भोजन करने पर बाध्य होना पड़ सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (14:06:2086 से 02:08:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको धन की कमी का सामना करना पड़ सकता है। आपको अजनबी लोगों से धन उधार लेने पर बाध्य होना पड़ सकता है। आप सट्टों और जुए में रत हो सकते हैं और जिससे आपको धन की हानि हो सकती है। हानि को सहन कर पाने में असक्षम होने के कारण आप अपनी अचलसम्पत्ति को भी बेच सकते हैं। आपकी व्यावसायिक स्थिति पलट सकती है। आप बुरे लोगों की संगतिमें पड़ सकते हैं। आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। अति गरीबी की स्थिति आ सकती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (02:08:2086 से 22:08:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपकी अपनी गलती के कारण धन हानि हो सकती है। आप अपने नजदीकी मित्रोंऔर संबंधियों को अपना शत्रु बनाने के जिम्मेदार स्वयं हो सकते हैं। वे आपसे बदला लेने के लिए अवसर की प्रतीक्ष कर सकते हैं। शनि–केतु–सूर्य की दशा लागू होने के दौरान ऐसे प्रतिशोध को अंजाम दिया जा सकता है। आपको गरीबी की स्थिति से गुजरना पड़ सकता है। यदि आपको भोजन प्राप्त भी होता है, तो आप उसे पचा पाने में सक्षम नहीं हो सकते हैं– जैसाकि लोग उसे आपको प्रेम और सहानुभूतिके बिना दे सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (22:08:2086 से 19:10:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप सट्टों और जुए में रत हो सकते हैं और धन संग्रह करेंगे, जिसे आप शारीरिक सुखों की प्राप्ति के लिए सुन्दर महिलाओं पर व्यय कर सकते हैं। आप कृषि से भी आय प्राप्त

कर सकते हैं। आपको एक पुत्री की प्राप्ति हो सकती है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। यदि यह दशा संतान के जन्म के समय पड़ती है, तो आपके जीवनसाथी को खतरा हो सकता है। उनकी शल्य चिकित्सा हो सकती है और उनका शरीर कमजोर हो सकता है। उनके जीवन को कोई खतरा नहीं होगा।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (19:10:2086 से 05:11:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको सरकार से अधिकार, शक्ति और पहचान मिलेगी। हालाँकि, आपके जीवनसाथी से आपके संबंध मधुर नहीं हो सकते हैं। आपकी वस्तुयें चोरी हो सकती हैं। आपको बुखार या मलेरिया हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (05:11:2086 से 04:12:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। अपनी पिछली दशाओं की तुलना में आप अपनी बुद्धिमता का प्रयोग अधिक बेहतर तरीके से करने में सक्षम होंगे। आपको धन का लाभ होगा और सुन्दर लड़कियों के साथ आप मौज–मस्ती करेंगे। आपको प्रचुर मात्रा में स्वादिष्ट भोजन प्राप्त होगा। इस दशा में आप कुछ महिनों के अन्तराल के बाद चैन की सांस लेने में सक्षम होंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (04:12:2086 से 24:12:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको हथियारों से खतरा, आग और जलने से भय, शत्रुओं से कष्ट हो सकता है। आपको रक्त की खराबी के कारण रोग हो सकते हैं, जिन्हें चिकित्सकीय उपचार की अति आवश्यकताहो सकती है और आपका अप्रत्याशित व्यय बढ़ सकता है। आपको इस और अगली दशाओं से पार पाने के लिए कुछ तरीकों को अपनाना पड़ेगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (24:12:2086 से 14:02:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको भूमि, धन और मवेशियों की हानि हो सकती है। आपको वाहनों से दुर्घटना हो सकती है और आपके पैर में चोट लग सकती है। आपको बिना किसी उद्देश्य के लम्बी यात्राओं पर जाना पड़ सकता है। आप चर्म रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। सामान्यतः इस समय आपको सोरयसिस हो सकता है। यदि शीघ्र ही उसका पता लगाकर उपचार किया गया, तो उपचार संभव है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (14:02:2087 से 02:04:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। महिलाओं के द्वारा हानि हो सकती है। मुख्यतः आपकी जीवनसाथी ऐसी हानियों के लिए जिम्मेदार होंगी। किसी एक नजदीकी संबंधी के लिए यह दशा बहुत खराब हो सकती है। आपको किसी काम में रूचि नहीं हो सकती है। आप अवसाद से ग्रसित हो सकते हैं। हालाँकि, आपको अवसरीय आराम और धन प्राप्त होंगे।

बुध अन्तर्दशा (02:04:2087 से 06:02:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा और उसमें बुध की ही प्रत्यंतर दशा के दौरान आपको मानसिक स्थिरता प्राप्त होगी और आपकी बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होगी। आपमें गलत और सही का फर्क करने की क्षमता होगी, अतः आपके द्वारा लिये गये आर्थिक निर्णय सही होंगे। मौजूदा व्यापार या रोजगार में लाभ होगा। इस दशा के दौरान व्यापार का विस्तार और रोजगार या किसी अन्य क्षेत्र में सुधार सभी कुछ संभव होगा। आप सोना, रत्न और आभूषण खरीदेंगे। आपका जीवन बहुत सहज होगा।

बुध प्रत्यंतर्दशा (02:04:2087 से 16:05:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका दिमाग शांत होगा और आपकी बौद्धिक क्षमता बढ़ेगी। आपमें गलत और सही में भेद करने की क्षमता होगी, जिससे आर्थिक निवेश के मामले में भी आपका निर्णय सही होगा। आपको अपने वर्तमान व्यापार या व्यवसाय में लाभ होगा, आप व्यापार का विस्तार करेंगे और व्यवसाय या जिस क्षेत्र में आप लाभ प्राप्त करना चाहते हैं, उसमें सुधार होगा। आप रत्न और आभूषण खरीदेंगे। आपका जीवन बहुतसहज होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (16:05:2087 से 03:06:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। शत्रु परेशानियां पैदा करने की कोशिश करेंगे। वरिष्ठ और अधीनस्थ आपके जीवन को कष्टकारी बना सकते हैं। आप रक्त की खराबी के कारण होने वाले रोगों, उदर विकार और सिर दर्द आदिसे ग्रसित हो सकते हैं। विभिन्न तरीकों से आपको धन हानि हो सकती है। आपको हथियारों की हानिहो सकती है। आपको अपमान और कलंक का सामना करना पड़ सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (03:06:2087 से 24:07:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको दक्षिण दिशा से लाभ मिल सकता है। अतः यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तोआपको अपने वर्तमान व्यापार के स्थान से दक्षिण की दिशा में व्यापार करने की तरफ ध्यान लगाना चाहिए। यदि आप ऐसा करेंगे तो आपको भारी लाभ होगा और महिला मित्रों से सुख मिलेंगे। यद्यपि आपको अपने जीवनसाथी से पूर्ण सुख मिलेगा, फिर भी उसके स्वास्थ्य की तरफ बहुत ध्यान देने की आवश्यकता हो सकती है– जैसाकि उनके गर्भाशय में खराबी हो सकती है। कोई संक्रमण और उसके कारण रक्त स्राव की संभावना हो सकती है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (24:07:2087 से 09:08:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यद्यपि आप कोई खतरा या रोग नहीं हो सकता है, फिर भी आपको ऐसा प्रतीत हो सकता हैकि आप ठीक नहीं हैं। सभी मामलों में आपका रवैया आलस्यपूर्ण हो सकता है। आपका शरीर कमजोर हो सकता है। आपको तीव्र सिर दर्द, नेत्र रोग और उल्टी की शिकायत हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (09:08:2087 से 04:09:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपको अप्रत्याशित क्षेत्रों से पर्याप्त धन मिलेगा। आपका विवाह हो सकता है या आपको एक पुत्री की प्राप्ति हो सकती है। बुजुर्ग लोग संतान

और पौत्र–पौत्रियों की संगति में अपना समय गुजारेंगे। आपको वस्त्रों और उत्तम भोजन का सुख प्राप्त होगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (04:09:2087 से 22:09:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। एक तरफ प्रचुर धन कमायेंगे और नया ज्ञान प्राप्त करने में रूचि लेंगे, दूसरी तरफआपको अपचन और गंभीर कब्ज की शिकायत हो सकती है और आपको अपनी कई योजनाओं को स्थगित करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है, जिससे आप झुंझला सकते हैं। आपको चोरों से खतरा होसकता है। आपके सिर या पैर में अचानक चोट लग सकती है। आपको आग के साथ काम करते समयसावधान रहना चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (22:09:2087 से 07:11:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सरकार और शत्रुओं के कारण कष्ट हो सकता है। आपकी किसी काम में रूचि नहीं हो सकती है। आप पूर्ण निराशाजनक जीवन गुजार सकते हैं। आपमें आत्महत्या करने की प्रवृत्ति आ सकती है। आपका भोजन अस्वस्थकर और असमय हो सकता है। भविष्य के बारे में अनावश्यक चिंताओं केकारण आप मानसिक अवसाद से ग्रस्त हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (07:11:2087 से 19:12:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी, जिसका आपको लाभ उठाना चाहिए। आप कठिनपरिश्रम करेंगे और परिणाम प्राप्त करेंगे। आप जो भी करेंगे, उसमें आपको भारी सफलता मिलेगी। अन्य ग्रहीय युतियों के आधार पर आप सबसे ऊँचे पद पर पहुंचेंगे, ऊँचा ज्ञान प्राप्त करेंगे और आपकी बुद्धि का विकास होगा। मित्र और संबंधी आपकी मदद करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (19:12:2087 से 06:02:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आप रोगों और चोटों का सामना कर सकते हैं। आपके सिर और हाथ में प्रायः चोट लग सकती है। आपको लकवा, शारीरिक कमजोरी और बुखार हो सकता है। आपको अपने आस–पास की हर चीज से डर लग सकता है। आपको धन हानि हो सकती है।

केतु अन्तर्दशा (06:02:2088 से 13:06:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आप विभिन्न कारणों से भारी दुखों का सामना कर सकते हैं, आपको विभिन्न रोग और धन की हानि हो सकती हैं। सरकारी अधिकारी और संबंधी आपके कष्ट के कारण हो सकते हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से केतु तीसरे, छठे, दसवें या ग्यारहवें भाव में है, आपको संतानों से खुशियों और आराम कामनाओं की पूर्ति, धन लाभ, उत्तम परिधान और गहने प्राप्त होंगे, आपके नाम और यश में वृद्धि होगी। आपकी कुण्डली में लग्न या सूर्य से केतु दूसरे या सातवें भाव में है या इन भावों का स्वामी है, आपको गंभीर रोग और सभी प्रकार की मानसिक पीड़ायें हो सकती हैं। आप आत्महत्याकरने की सोच सकते हैं। आपको केतु मंत्र का जाप करना चाहिए और एक बकरी दान में देनी चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (06:02:2088 से 14:02:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। संबंधियों तथा मित्रों के कारण आपको धन हानि हो सकती है। आपके शरीर में चोटलग सकती है। आप विदेशों में निवास कर सकते हैं। आपकी योजनायें असफल हो सकती हैं। परिवारके सदस्यों की बीमारियां आपकी मानसिक शांति को पूरी तरह भंग कर सकती हैं। आप डॉक्टरों के चक्कर काट सकते हैं। आप जानवरों पर से गिर सकते हैं या आप वाहन दुर्घटनाओं का शिकार हो सकतेहैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (14:02:2088 से 06:03:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपकी आय स्थिर हो सकती है। आपको मवेशियों का लाभ हो सकता है या आप उनसे लाभ प्राप्त कर सकते हैं। हालाँकि, चिकित्सकीय उपचार में व्यय अधिक हो सकता है। आप नेत्र रोग, शारीरिक विकार और कफ की शिकायतों से ग्रस्त हो सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (06:03:2088 से 12:03:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। संबंधी तथा मित्र आपके जीवन को कष्टकारी बना सकते हैं। जितना आप उनसे दूरजाने की कोशिश करेंगे, उतना ही वे आपके पास आयेंगे। आपमें ऐसी भावना जन्म ले सकती है, कि आपकी मृत्यु किसी समय हो सकती है। आपकी योजनायें असफल हो सकती हैं। यदि यह दशा शिक्षा ग्रहण करने के दौरान आती है, तो आप अपनी पढ़ाई में ध्यान लगा पाने सक्षम नहीं हो सकते हैं और आपअसफल भी हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (12:03:2088 से 23:03:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने कठिन परिश्रम से उचित मात्रा में धन अर्जित करेंगे और जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आपको एक पुत्री की प्राप्ति हो सकती है। यदि आप पहले से दादा बन चुके हैं, तो आपको एक और पौत्री प्राप्त हो सकती है। आपकी कुण्डली में केतु कमजोर है, आपको जीवन में कई विपदाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके भाग्य में उत्तम भोजन नहीं हो सकता है। माता, जीवनसाथी और संतान की बीमारी के कारण आपको धन हानि हो सकती है। आपका एक अलाभकारी स्थानान्तरण हो सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (23:03:2088 से 30:03:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको केवल अपने विरोधियों से ही नहीं, अपितु आग से औरवाहनों की सवारी करते समय भी बहुत अधिक सावधान रहना चाहिए। आपको लकवा हो सकता है। आपको नशे की लत लग सकती है और आप मांसाहारी हो सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (30:03:2088 से 19:04:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके शत्रु आपको परेशान कर सकते हैं और महिलायें आपका शोषण कर सकती

हैं। अन्य लोग आपको लगभग एक दास की तरह बांध कर सकते हैं। यदि आप उनके चंगुल से मुक्त होने की भी कोशिश करेंगे, तो भी किसी ना किसी कारण से आपको ऐसे दुष्ट लोगों के साथ रहने के लिएमजबूर होन पड़ सकता है। आपको भोजन का अभाव हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (19:04:2088 से 06:05:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। विशिष्टों और अधीनस्थों, संबंधियों तथा मित्रों के साथ आपके अनावश्यक विवाद याझगड़े हो सकते हैं। आपको धन की भारी हानि हो सकती है। वस्त्र और सम्पत्ति का नाश हो सकता है। आपकी बौद्धिक क्षमता का ह्रास हो सकता है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (06:05:2088 से 26:05:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक निराशाजनक दशा हो सकती है। आप उन लोगों से किसी मदद की आशाकर सकते हैं, जिन्होंने आवश्यकता के समय आपकी मदद की थी। लेकिन वे आपसे क्षमा मांग कर आपसे मुंह फेर सकते हैं, जिससे आप अपने जीवनयापन और संबंधों को स्थापित करने के बारे में भविष्य की योजनाओं के बारे में निर्णय लेंगे।

बुध प्रत्यंतर्दशा (26:05:2088 से 13:06:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा तनावपूर्ण हो सकती है। स्वास्थ्य और शिक्षा की तरफ मुख्य जोर होगा। यदि महत्वपूर्ण परिक्षाओं के देने के समय यह दशा आती है, तो परिणाम काफी असंतोषजनक हो सकते हैं। आपको प्रायः बुखार और तीव्र शारीरिक पीड़ा हो सकती है।

शुक्र अन्तर्दशा (13:06:2088 से 14:06:2089)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र अपने या उच्चस्थ या केन्द्र या त्रिकोण या अपने मित्र के भाव में स्थित है, शुक्र की इस अन्तर्दशा में आप अपनी प्रियतम स्त्रियों के साथ आनन्द प्राप्त करेंगे, आपको धन का लाभ, विदेश यात्राके अवसर, कुछ क्षेत्रों में सिद्धि प्राप्त होगी। आपका दृष्टिकोण आध्यात्मिक हो सकता है, आपकी वीरताऔर जीवनशक्ति में वृद्धि होगी, आप किसी काम को शुरू करने के उत्साहित रहेंगे, आपको बड़े समारोहों में शामिल होने के निमंत्रण प्राप्त होंगे। आप उत्तम परिधान और आभूषण प्राप्त करेंगे। दूसरे शब्दोंमें यह दशा आपके लिए अति उत्तम होगी। अन्तर्दशा के तीन भागों में से पहले भाग में आपको वाहनोंकी प्राप्ति होगी, दूसरे भाग में आप सभी प्रकार की खुशियां और सुख प्राप्त करेंगे तथा तीसरे भाग मेंआप अपने परिश्रम से अर्जित नाम और यश खो सकते हैं, मित्रों और संबंधियों के साथ आपका विवाद होसकता है, आप गले की बीमारी, लकवा, शारीरिक पीड़ा का शिकार हो सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (13:06:2088 से 13:08:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। सूर्य की पूरी दशा में यह एक स्वर्णिम दशा होगी। आपको अपने सभी कामों में सफलता मिलेगी। आप भवनों का निर्माण और सुन्दर लड़कियों की संगति का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप नये कपड़े, आभूषण तथा फर्नीचर खरीदेंगे। यदि आप अविवाहित हैं, तो आपका विवाह हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (13:08:2088 से 31:08:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। परिस्थितियों में अचानक बदलाव आ सकता है। पिछली दशा के दौरान आपको मिलने वाली सारी खुशियां समाप्त हो सकती हैं। जीवन सुख और दुख का मिश्रण है। कभी सुख के बाद दुख आता है, और कभी दुख के बाद सुख। इस दशा के दौरान सुख के बाद दुख आ सकता है। आपको सरकारी अधिकारियों, शत्रुओं और अधीनस्थों से भय हो सकता है। आप पैर और सिर के रोगों, बुखार, रतिजन्य रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (31:08:2088 से 01:10:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। आप एक विस्तृत भूमि और सम्पत्ति के स्वामी होंगे। आप नये वस्त्रों और आभूषण खरीदेंगे। अपने जीवनसाथी और संतान की संगति का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप विभिन्न तीर्थों की यात्रा करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (01:10:2088 से 22:10:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने सभी कामों में असफलता का सामना करना पड़ सकता है। मित्रों और संबंधियों तथा बाहरी लोगों के साथ झगड़े और लड़ाई के कारण आपको चोट लग सकती है। आपकामानसिक संतुलन बिगड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (22:10:2088 से 16:12:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। पिछली दशा में किये गये गलत कामों का दंड आपको इस दशा में मिलेगा। आपकोमुकदमों का सामना करना पड़ सकता है और वकीलों की फीस तथा किराये भाड़े में आपका बहुत धन व्यय हो सकता है। शत्रुओं के जीवनसाथी से झगड़े के कारण आपके सम्मान को भी खतरा हो सकताहै।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (16:12:2088 से 03:02:2089)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। भारी तूफान के बाद यह एक शांतिपूर्ण दशा होगी। आपको एक सीख प्राप्त होगी।आप पुनः किसी प्रकार के अधिक शोरगुल और अस्थिरता के एक आरामदायक जीवन गुजारने की तरफ अग्रसर होंगे। पिछली दशा में आपने जो कुछ भी खोया है, उसे पुनः प्राप्त करेंगे। आपको चौपाया जानवरों और वाहनों की प्राप्ति होगी। पुनः शांति की स्थापना होगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (03:02:2089 से 02:04:2089)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक औसत दशा होगी। जीवन सामान्य होगा। आपको अवसरीय लाभ और हानि होगी। आपका स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा। आपको या आपकी बहन को एक पुत्री की प्राप्ति हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (02:04:2089 से 23:05:2089)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आप नये क्षेत्रों में ज्ञान प्राप्त करने में रूचि लेंगे। सभी मामलों में आप सामान्य रूप से संपन्न होंगे। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी औरयदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको उचित लाभ होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (23:05:2089 से 14:06:2089)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक भटकावा की दशा हो सकती है। आपको कई पथभ्रष्ट करने वाले लोग मिल सकते हैं और आप उनके चंगुल में केवल धन गंवांने के लिए फंस सकते हैं। आप विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको कृषि और अन्न लाभ होगा।

विंशोत्तरी दशा (अन्य विभाजन विधि) का फल

(नोट : इस दशा से उत्तम परिणाम प्राप्त करने के लिए बी. वी. रमन के अयनांश को प्रयोग में लेना उचित है।)

राहु दशा (14:06:1986 से 13:06:2004)

वर्तमान में आप राहु ग्रह की दशा से गुजर रहे हैं, जो कि आपके चौथे भाव में स्थित है एवं दशा–स्वामी अस्त अथवा ग्रसित नहीं है। यह एक अनुकूल योग है। आप बहुत सक्रिय होंगे एवं अपने प्रयासों को विवेकपूर्ण तरीके से निर्देशित करते हुए अपने वांछित लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। यदि आप शैक्षणिक या बौद्धिककार्यों में संलग्न हैं तो आप उत्तम प्रगति करेंगे। यदि आपके व्यवसाय का कृषि, खान या खनिजों, यातायात, भूमि–भवन आदि के क्षेत्र से किसी प्रकार का कोई संबंध है तो आप निस्संदेह रूप से अत्यंत उत्तम उन्नति करने की उम्मीद कर सकते हैं।

वर्तमान में आप एक ग्रह की दशा से गुजर रहे हैं, जा धनु राशि में स्थित है। इस राशि से तीन स्थानों– दूसरे, चौथे और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक शुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह काफी लाभदायक योग है। इस दशा की अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकते हैं। आप एक से अधिक स्रोतों से प्रत्यक्ष लाभ एवं अप्रत्यक्ष समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपके सामाजिक स्तर व मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

धनु भुक्ति(14:06:1986 से 13:12:1987)

वर्तमान समय में आप धनु राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– दूसरे, चौथे और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह बहुतउत्तम योग है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकतेहैं। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपके सामाजिकस्तर व मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

मकर भुक्ति(13:12:1987 से 14:06:1989)

वर्तमान समय में आप मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– तीसरे, छठें और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह काफी उत्तम योग है। इस दशा/भुक्ति की अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकते हैं। आप वरिष्ठों एवं अधिकारियों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु परास्तहोंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में उत्तम प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपकी मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वर्तमान समय में आप मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– दूसरे, चौथे और

ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह बहुतउत्तम योग है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकतेहैं। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपके सामाजिकस्तर व मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वर्तमान समय में आप मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से, आपका लग्नेश, जो कि कार्यात्मक रूप से अत्यंत शुभ ग्रह माना जाता है, इससे ग्यारहवें में स्थित है। यह एक बहुत शुभ फलदायक योग है। इस दशा/भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद करसकते हैं। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में बहुत अधिक प्रगति करेंगे, आपकी आय में सार्थक वृद्धि होगी। आपकेमानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं, जो कि आपके लग्न से पांचवीं भाव–राशि है। यदि आपकी कुण्डली में प्रतिकूल योग उपस्थित नहीं हैं तो अधिक संभावना है कि आप किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा कर सकते हैं– संभवतः अपने व्यवसाय के संबंध में। आप एक पुरुष हैं तो ऐसा भुक्ति अवधि के 1/8 भाग के अंतिम भाग में हो सकता है। (अर्थात लग्न कक्ष–अंतरा में)।

कुम्भ भुक्ति(14:06:1989 से 13:12:1990)

वर्तमान समय में आप कुम्भ राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– तीसरे, छठें और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह काफी उत्तम योग है। इस दशा/भुक्ति की अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकते हैं। आप वरिष्ठों एवं अधिकारियों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु परास्तहोंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में उत्तम प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपकी मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप राहु की दशा से गुजर रहे हैं, जो कि धनु राशि में स्थित है। इस दशा–अवधि में अब आपकुम्भ राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। धनु राशि का स्वामी कुम्भ राशि से सातवें में स्थित है (अथवा धनु राशि से गणना करने पर सप्तमेश कुम्भ राशि में स्थित है)। कुम्भ राशि का स्वामी धनु राशि सेसातवें में स्थित है {अथवा कुम्भ राशि से गणना करने पर सप्तमेश धनु राशि में स्थित है।}यह एक बहुत अनुकूल योग है। यदि आप अविवाहित हैं, किन्तु आपका झुकाव है तो संभवतः इस अवधि के दौरान आपकाविवाह हो सकता है। यह (ग्रह का नाम) ग्रह (जो कि आपके लग्न से सप्तमेश है) अथवा शुक्र (जो कि विवाह का नैसर्गिक कारक ग्रह है) की कक्ष–अंतरा के दौरान हो सकता है। या फिर, आप किसी भिन्नसमुदाय/धर्म/देश के व्यक्ति के साथ साझेदारी/सहभागिता में व्यवसाय कर सकते हैं।

वर्तमान में आप राहु की दशा से गुजर रहे हैं, जो कि धनु राशि में स्थित है। इस दशा–अवधि में अब आपकुम्भ राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। धनु राशि का स्वामी कुम्भ राशि से सातवें में स्थित है (अथवा धनु राशि से गणना करने पर सप्तमेश कुम्भ राशि में स्थित है)। कुम्भ राशि का स्वामी धनु राशि सेसातवें में स्थित है {अथवा कुम्भ राशि से गणना करने पर सप्तमेश धनु राशि में स्थित है।}यह एक बहुत अनुकूल योग है। यदि आप अविवाहित हैं, किन्तु आपका झुकाव है तो संभवतः इस अवधि के दौरान आपकाविवाह हो सकता है। यह (ग्रह का नाम) ग्रह (जो कि आपके लग्न से सप्तमेश है) अथवा शुक्र (जो कि विवाह का नैसर्गिक कारक ग्रह है) की कक्ष–अंतरा के दौरान हो सकता है। या फिर, आप किसी

भिन्न समुदाय/धर्म/देश के व्यक्ति के साथ साझेदारी/सहभागिता में व्यवसाय कर सकते हैं।

मीन भुक्ति(13:12:1990 से 13:06:1992)

वर्तमान समय में आप मीन राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– दूसरे, चौथे और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह बहुतउत्तम योग है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकतेहैं। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपके सामाजिकस्तर व मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

मेष भुक्ति(13:06:1992 से 13:12:1993)

वर्तमान में आप मेष राशि की भुक्ति–समय से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से अष्टमेश इस राशि में स्थित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इस भुक्ति–समय के दौरान आप अपना पद और सामाजिक स्तर बनाए रखने के लिए कुछ कठिनाईयों का सामना कर सकते हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो आपका एक असुविधाजनक स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है एवं आपकी नौकरी खोने का भय भी हो सकता है। यदि आप व्यापार कर रहे हैं तो परिस्थितियां काफी बिगड़ सकती हैं एवं आपकी आय कम हो सकती है।

वर्तमान समय में आप मेष राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इस राशि में एवं इसकी दो त्रिकोणीय राशियों में से एक राशि में भी स्थित है, जबकि इन तीनों राशियों में कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह उपस्थित नहीं है। यह एक बहुत प्रतिकूल योग है एवं राशि–भुक्ति अवधि आपके लिए बहुत समस्यात्मक हो सकती है। चीजें कदापि सहजता से नहीं हो सकती हैं एवं आपको अप्रत्याशित कठिनाईयों एवं गंभीर प्रकार के उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। आप स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से ग्रसित हो सकते हैं एवं आपके पारिवारिक जीवन से सुख–शांति पूर्णतः लुप्त हो सकती हैं। आपको अनदेखे परिस्थितिजन्य घटनाओं अथवा आपदाग्रस्त कारणों से हानि होने की संभावनाएं हैं। आपकीसंतानें भी आपके लिए चिन्ता का विषय बन सकती हैं।

वर्तमान समय में आप मेष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– तीसरे, छठें और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह काफी उत्तम योग है। इस दशा/भुक्ति की अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकते हैं। आप वरिष्ठों एवं अधिकारियों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु परास्तहोंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में उत्तम प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपकी मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप राहु की दशा से गुजर रहे हैं, जो कि धनु राशि में स्थित है। इस दशा–अवधि में, अब आपमेष राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। धनु राशि का स्वामी मेष राशि से पाचवें में स्थित है {(अथवा धनु राशि से गणना करने पर पंचमेश मेष राशि में स्थित है)।} धनु राशि का स्वामी धनु राशि से पांचवें में स्थित है {अथवा मेष राशि से गणना करने पर पंचमेश धनु राशि में स्थित है।}यह एक बहुत अनुकूल योग है। यदि आप विवाहित हैं एवं संतान की कामना कर रहे हैं तो संभवतः इस अवधि के

दौरान आपको एक सुन्दर संतान की प्राप्ति हो सकती है। यह (ग्रह का नाम) ग्रह (जो कि आपके लग्न सेपंचमेश है) अथवा गुरु (जो कि संतान जन्म का नैसर्गिक कारक ग्रह है) की कक्ष–अंतरा के दौरान हो सकता है।

वृष भुक्ति(13:12:1993 से 14:06:1995)

वर्तमान समय में आप वृष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से, आठवें में एक नैसर्गिक अशुभ ग्रहस्थित है– भाव विभाजक के काफी नजदीक। इसके अतिरिक्त वक्री (या नीचस्थ या अस्त या ग्रसित) होने के कारण सुव्यवस्थित नहीं है। यह एक बहुत ही प्रतिकूल योग है। जब तक कि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इस विशेष भुक्ति–अवधि के दौरान आप व्यवसाय में आघात और/या किसी भारी निराशा का सामना कर सकते हैं। आपका स्थानान्तरण अथवा रोजगार में परिवर्तन होसकता है। ऐसा आकस्मिक और अप्रत्याशित रूप से हो सकता है एवं आपको बिना पयाप्त तैयारी के हीआगे बढ़ना पड़ सकता है।

मिथुन भुक्ति(14:06:1995 से 13:12:1996)

वर्तमान में आप मिथुन राशि की भुक्ति–समय से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से पंचमेश इस राशि में स्थित है। यह एक अनुकूल योग है। इस भुक्ति–समय के दौरान, संभवतः आपके व्यवसाय के क्षेत्र में काफी सुधार हो सकता है। आप एक नया रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं। आपकी आय में वृद्धि और रहन–सहन के स्तर में सुधार होने के साथ, आप संतुष्टि की भावना अर्जित करेंगे।

वर्तमान में आप एक ग्रह की दशा से गुजर रहे हैं जा धनु राशि में स्थित है। इस राशि के लिए, सामान्य बाधा राशि मिथुन राशि है। जैसा कि, यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इसग्रह की दशा–अवधि के दौरान, जब मिथुन राशि की राशि–भुक्ति चल रही हो, तो आप अनेक कष्टकारीसमस्याओं का सामना कर सकते हैं एवं स्वयं को कुछ–कुछ हानिकारक अथवा प्रतिबंधात्मक प्रभावों में महसूस कर सकते हैं। आपके प्रयासों को वांछित मात्रा में प्रतिफल प्राप्त नहीं हो सकता है एवं आपकी अभिलाषित इच्छाएं अधूरी रह सकती हैं। अतः आपको बहुत सावधान व सचेत रहना चाहिए, स्वयं को अति आशावादी होने से रोकना चाहिए, अपने खर्चों पर नियंत्रण करने के लिए कठिन अभ्यास करना चाहिए एवं अपनी वाणी अथवा व्यवहार से किसी को भी अपना विरोधी नहीं बनाना चाहिए। हालांकि आपकोनिरूत्साहित महसूस नहीं करना चाहिए एवं धैर्यपूर्वक दुख के काले बादलों को छंटने देने का इंतजारकरना चाहिए।

वर्तमान समय में आप मिथुन राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से, राहु सातवें में स्थित है।राहु उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में स्थित नहीं है। यह अपने नक्षत्र में भी स्थित नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, इस दशा के दौरान आप कुछ एक कारणों से दुखी होसकते हैं। आप कुछ क्षेत्रों से किसी विरोध का सामना कर सकते हैं अथवा आपका पारिवारिक जीवन बहुत शांतिपूर्ण नहीं हो सकता है। भुक्ति–समय स्थानान्तरण, रोजगार–परिवर्तन, निवास स्थान के परिवर्तन,निकट संबंधियों से विच्छेद आदि करवाने में भी सक्षम है।

वर्तमान में आप मिथुन राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं, जिसमें पंचमेश स्थित है। यदि आपकी कुण्डली में प्रतिकूल योग उपस्थित नहीं हैं तो आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में निस्संदेह रूप से कुछ सुधार की उम्मीद

कर सकते हैं। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। संभवतः यह शनि ग्रह की कक्ष–अन्तरा के दौरान हो सकता है, जो कि आपकी कुण्डली में पंचमेश है।

कर्क भुक्ति(13:12:1996 से 14:06:1998)

वर्तमान समय में आप कर्क राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– तीसरे, छठें और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह काफी उत्तम योग है। इस दशा/भुक्ति की अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकते हैं। आप वरिष्ठों एवं अधिकारियों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु परास्तहोंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में उत्तम प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपकी मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप कर्क राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं, जो कि आपके लग्न से ग्यारहवीं भाव–राशि है। यदिआपकी कुण्डली में प्रतिकूल योग उपस्थित नहीं हैं तो अधिक संभावना है कि आप किसी निकट स्थान की यात्रा कर सकते हैं– संभवतः अपने व्यवसाय के संबंध में। आपका स्थानान्तरण अथवा रोजगार–परिवर्तन हो सकता है। या फिर आप किसी निकट स्थान पर अपना निवास परिवर्तित कर सकते हैं, जो कि अपेक्षाकृत बेहतर स्थान पर होगा। आप एक पुरुष हैं तो ऐसा भुक्ति अवधि के 1/8 भाग के अंतिम भाग में हो सकता है। (अर्थात लग्न कक्ष–अंतरा में)।

सिहं भुक्ति(14:06:1998 से 13:12:1999)

वर्तमान समय में आप सिहं राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इसकी दोनों त्रिकोणीय राशियों में स्थित है, जबकि कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह भुक्ति–राशि या इसकी दोनों त्रिकोणीय राशियों में से किसी में भी उपस्थित नहीं है। यह एक बहुत प्रतिकूल योग है एवं राशि–भुक्ति अवधि आपके लिए काफी समस्यात्मक हो सकती है। चीजें कदापि सहजता से नहीं हो सकती हैं एवं आपको अप्रत्याशित कठिनाईयों एवं गंभीर प्रकार के उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। आप स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से ग्रसित हो सकते हैं एवं आपके पारिवारिक जीवन से सुख–शांति पूर्णतः लुप्त हो सकती हैं। आपको अनदेखे परिस्थितिजन्य घटनाओं अथवा आपदाग्रस्त कारणों से हानि होने की संभावनाएं हैं। आपकी संतानें भी आपके लिए चिन्ता का विषय बन सकती हैं।

वर्तमान समय में आप सिहं राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से, शुक्र छठें में स्थित है। शुक्र उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में स्थित नहीं है। यह अपने नक्षत्र में भी स्थित नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, इस दशा के दौरान आप कुछ एक कारणों से दुखी होसकते हैं। आप कुछ क्षेत्रों से किसी विरोध का सामना कर सकते हैं अथवा आपका पारिवारिक जीवन बहुत शांतिपूर्ण नहीं हो सकता है। भुक्ति–समय स्थानान्तरण, रोजगार–परिवर्तन, निवास स्थान के परिवर्तन,निकट संबंधियों से विच्छेद आदि करवाने में भी सक्षम है।

वर्तमान समय में आप सिहं राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– दूसरे, चौथे और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह बहुतउत्तम योग है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकतेहैं। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे।

आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपके सामाजिकस्तर व मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

कन्या भुक्ति(13:12:1999 से 14:06:2001)

वर्तमान में आप कन्या राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। चन्द्रमा जो कि इस राशि से एकादशेश है– इस राशि में स्थित है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकूल प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इस भुक्ति–अवधि के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होने की संभावना अत्यधिक है। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ और समर्थन प्राप्त करेंगे एवं सामान्यतः लोग आपको किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता या तलाश होने पर सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके मित्रों व परिचितों के दायरे में आपकी लोकप्रियता में भी वृद्धि होगी।

तुला भुक्ति(14:06:2001 से 13:12:2002)

वर्तमान समय में आप तुला राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– दूसरे, चौथे और ग्यारहवें– में से दो स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह बहुत उत्तम योग है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकते हैं। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपके सामाजिक स्तर व मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वृश्चिक भुक्ति(13:12:2002 से 13:06:2004)

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की भुक्ति–समय से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से दशमेश इस राशि में स्थितहै। यह एक अनुकूल योग है। इस भुक्ति–समय के दौरान, संभवतः आपके व्यवसाय के क्षेत्र में काफीसुधार हो सकता है। आप एक नया रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं। आपकी आय में वृद्धि और रहन–सहन के स्तर में सुधार होने के साथ, आप संतुष्टि की भावना अर्जित करेंगे।

वर्तमान में आप एक ग्रह की दशा से गुजर रहे हैं जो धनु राशि में स्थित है। इस राशि के लिए, विशेष बाधा राशि वृश्चिक राशि है। जैसा कि, यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इस ग्रह की दशा–अवधि के दौरान, जब वृश्चिक राशि की राशि–भुक्ति चल रही हो, तो आप कुछ विकट समस्याओं का सामना कर सकते हैं एवं अपने खुद के मामलों को सुलझाने में भारी कठिनाई महसूस कर सकते हैं। आपके आस–पास के लोग एवं चीजें आपको बिगड़ी हुई महसूस हो सकती हैं एवं आप हैरान होसकते हैं। आपको अत्यधिक सावधान व सजग रहना चाहिए, अपनी अपेक्षाओं में उदार होना चाहिए, सभीप्रकार के अनावश्यक व व्यर्थ के खर्चों को बन्द कर देना चाहिए एवं सुरक्षित पक्ष में रहने के लिए, आपको किसी को भी अपना विरोधी नहीं बनाना चाहिए। आपको कोई जोखिमपूर्ण कदम नहीं उठाना चाहिएएवं कोई भी बड़ा निर्णय लेने से पहले कई बार सोचना चाहिए। किसी प्रकार का छोटा अथवा शीघ्रताका मार्ग आपको परेशानी में डाल सकता है एवं छलपूर्ण/गुप्त कार्यवाई आपके लिए गंभीर प्रकार कीजटिलताएं पैदा कर सकती

हैं।

वर्तमान समय में आप वृश्चिक राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से, शनि आठवें में स्थित है। शनि उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में स्थित नहीं है। यह अपने नक्षत्र में भी स्थित नहीं है। यदि आपकीकुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, इस दशा के दौरान आप कुछ एक कारणों से दुखी हो सकते हैं। आप कुछ क्षेत्रों से किसी विरोध का सामना कर सकते हैं अथवा आपका पारिवारिक जीवन बहुत शांतिपूर्ण नहीं हो सकता है। भुक्ति–समय स्थानान्तरण, रोजगार–परिवर्तन, निवास स्थान के परिवर्तन, निकट संबंधियों से विच्छेद आदि करवाने में भी सक्षम है।

वर्तमान समय में आप वृश्चिक राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से, आठवें में एक नैसर्गिक अशुभग्रह स्थित है– भाव विभाजक के काफी नजदीक। इसके अतिरिक्त वक्री (या नीचस्थ या अस्त या ग्रसित) होने के कारण सुव्यवस्थित नहीं है। यह एक बहुत ही प्रतिकूल योग है। जब तक कि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इस विशेष भुक्ति–अवधि के दौरान आप व्यवसाय में आघात और/या किसी भारी निराशा का सामना कर सकते हैं। आपका स्थानान्तरण अथवा रोजगार में परिवर्तन हो सकता है। ऐसा आकस्मिक और अप्रत्याशित रूप से हो सकता है एवं आपको बिना पयाप्त तैयारी के ही आगे बढ़ना पड़ सकता है।

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं, जिसमें दशमेश स्थित है। यदि आपकी कुण्डली मेंप्रतिकूल योग उपस्थित नहीं हैं तो आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में निस्संदेह रूप से कुछ सुधार की उम्मीद कर सकते हैं। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। संभवतः यह बुध ग्रह की कक्ष–अन्तरा के दौरान हो सकता है, जो कि आपकी कुण्डली में दशमेश है।

गुरू दशा (13:06:2004 से 13:06:2020)

वर्तमान में आप गुरू ग्रह की दशा से गुजर रहे हैं, जो कि आपके पांचवें भाव में स्थित है एवं दशा–स्वामी अस्त अथवा ग्रसित नहीं है। यह एक अनुकूल योग है। आप बहुत भाग्यशाली होंगे एवं एक से अधिक स्रोतों से प्रत्यक्ष समर्थन व अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त करेंगे। यदि आप शैक्षणिक या बौद्धिक कार्यों में संलग्न हैं तोआप उत्तम प्रगति करेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो आप अच्छी प्रगति कर सकते हैं अथवा एक लाभप्रद पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं। आनुमानित व मनोरंजन के क्षेत्र आपको अत्यधिक आकर्षित कर सकते हैं। आपकी संतानें अपने उज्ज्वल शैक्षणिक कार्यों और पाठ्येतर गतिविधियों से आपके लिए अत्यंत प्रसन्नता का स्रोत बनेंगी।

वर्तमान में आप एक ग्रह की दशा से गुजर रहे हैं, जो मकर राशि में स्थित है। इस राशि से तीन स्थानों–तीसरे, छठें और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है।समग्र रूप से यह काफी उत्तम योग है। इस दशा की अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकते हैं। आप एक से अधिक स्रोतों से प्रत्यक्ष लाभ एवं अप्रत्यक्ष समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपके सामाजिक स्तर व मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप एक ग्रह की दशा से गुजर रहे हैं, जा मकर राशि में स्थित है। इस राशि से तीन स्थानों–दूसरे, चौथे और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक शुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है।

समग्र रूप से यह काफी लाभदायक योग है। इस दशा की अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तनहोने की उम्मीद कर सकते हैं। आप एक से अधिक स्रोतों से प्रत्यक्ष लाभ एवं अप्रत्यक्ष समर्थन प्राप्तकरेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपके सामाजिक स्तर व मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप एक ग्रह की दशा से गुजर रहे हैं, जा मकर राशि में स्थित है। इस राशि से, आपका लग्नेश– जो कि कार्यात्मक रूप से एक अत्यंत शुभ ग्रह माना जाता है– ग्यारहवें भाव में स्थित है। यह एक बहुत लाभदायक योग है। इस दशा की अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकते हैं। आप एक से अधिक स्रोतों से प्रत्यक्ष लाभ एवं अप्रत्यक्ष समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में बहुत उत्तम प्रगति करेंगे, आपकी आय एवं सामाजिक स्तर में काफी सुधार होगा। आपकी मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

मकर भुक्ति(13:06:2004 से 13:10:2005)

वर्तमान समय में आप मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– तीसरे, छठें और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह काफी उत्तम योग है। इस दशा/भुक्ति की अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकते हैं। आप वरिष्ठों एवं अधिकारियों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु परास्तहोंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में उत्तम प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपकी मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वर्तमान समय में आप मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– दूसरे, चौथे और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह बहुतउत्तम योग है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकतेहैं। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपके सामाजिकस्तर व मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वर्तमान समय में आप मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से, आपका लग्नेश, जो कि कार्यात्मक रूप से अत्यंत शुभ ग्रह माना जाता है, इससे ग्यारहवें में स्थित है। यह एक बहुत शुभ फलदायक योग है। इस दशा/भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद करसकते हैं। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में बहुत अधिक प्रगति करेंगे, आपकी आय में सार्थक वृद्धि होगी। आपकेमानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं, जो कि आपके लग्न से पांचवीं भाव–राशि है। यदि आपकी कुण्डली में प्रतिकूल योग उपस्थित नहीं हैं तो अधिक संभावना है कि आप किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा कर सकते हैं– संभवतः अपने व्यवसाय के संबंध में। आप एक पुरुष हैं तो ऐसा भुक्ति अवधि के 1/8 भाग के अंतिम भाग में हो सकता है। (अर्थात लग्न कक्ष–अंतरा में)।

कुम्भ भुक्ति(13:10:2005 से 12:02:2007)

वर्तमान में आप एक ग्रह की दशा से गुजर रहे हैं जो मकर राशि में स्थित है। इस राशि के लिए, विशेष बाधा राशि कुम्भ राशि है। जैसा कि, यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इस ग्रह की दशा–अवधि के दौरान, जब कुम्भ राशि की राशि–भुक्ति चल रही हो, तो आप कुछ विकट समस्याओं का सामना कर सकते हैं एवं अपने खुद के मामलों को सुलझाने में भारी कठिनाई महसूस कर सकते हैं। आपके आस–पास के लोग एवं चीजें आपको बिगड़ी हुई महसूस हो सकती हैं एवं आप हैरान होसकते हैं। आपको अत्यधिक सावधान व सजग रहना चाहिए, अपनी अपेक्षाओं में उदार होना चाहिए, सभीप्रकार के अनावश्यक व व्यर्थ के खर्चों को बन्द कर देना चाहिए एवं सुरक्षित पक्ष में रहने के लिए, आपको किसी को भी अपना विरोधी नहीं बनाना चाहिए। आपको कोई जोखिमपूर्ण कदम नहीं उठाना चाहिएएवं कोई भी बड़ा निर्णय लेने से पहले कई बार सोचना चाहिए। किसी प्रकार का छोटा अथवा शीघ्रताका मार्ग आपको परेशानी में डाल सकता है एवं छलपूर्ण/गुप्त कार्यवाई आपके लिए गंभीर प्रकार कीजटिलताएं पैदा कर सकती हैं।

वर्तमान समय में आप कुम्भ राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– तीसरे, छठें और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह काफी उत्तम योग है। इस दशा/भुक्ति की अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकते हैं। आप वरिष्ठों एवं अधिकारियों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु परास्तहोंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में उत्तम प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपकी मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

आप एक पुरुष हैं। वर्तमान में आप गुरू की दशा से गुजर रहे हैं, जो कि मकर राशि में स्थित है। मकर राशि का स्वामी इससे पाचवें में स्थित है {(अथवा मकर राशि से गणना करने पर पंचमेश मकर राशि में स्थित है)।} इस दशा–अवधि में अब आप कुम्भ राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। कुम्भ राशि का स्वामी इससे पांचवें में स्थित है {अथवा कुम्भ राशि से गणना करने पर पंचमेश कुम्भ राशि में स्थित है।}यहएक बहुत अनुकूल योग है। यदि आप विवाहित हैं एवं संतान की कामना कर रहे हैं तो संभवतः इसअवधि के दौरान आपको एक सुन्दर संतान की प्राप्ति हो सकती है। यह (ग्रह का नाम) ग्रह (जो कि आपके लग्न से पंचमेश है) अथवा गुरु (जो कि संतान जन्म का नैसर्गिक कारक ग्रह है) की कक्ष–अंतरा केदौरान हो सकता है।

मीन भुक्ति(12:02:2007 से 13:06:2008)

वर्तमान समय में आप मीन राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– दूसरे, चौथे और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह बहुतउत्तम योग है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकतेहैं। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपके सामाजिकस्तर व मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

मेष भुक्ति(13:06:2008 से 13:10:2009)

वर्तमान में आप मेष राशि की भुक्ति–समय से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से अष्टमेश इस राशि में स्थित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इस

भुक्ति–समय के दौरान आप अपना पद और सामाजिक स्तर बनाए रखने के लिए कुछ कठिनाईयों का सामना कर सकते हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो आपका एक असुविधाजनक स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है एवं आपकी नौकरी खोने का भय भी हो सकता है। यदि आप व्यापार कर रहे हैं तो परिस्थितियां काफी बिगड़ सकती हैं एवं आपकी आय कम हो सकती है।

वर्तमान समय में आप मेष राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इस राशि में एवं इसकी दो त्रिकोणीय राशियों में से एक राशि में भी स्थित है, जबकि इन तीनों राशियों में कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह उपस्थित नहीं है। यह एक बहुत प्रतिकूल योग है एवं राशि–भुक्ति अवधि आपके लिए बहुत समस्यात्मक हो सकती है। चीजें कदापि सहजता से नहीं हो सकती हैं एवं आपको अप्रत्याशित कठिनाईयों एवं गंभीर प्रकार के उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। आप स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से ग्रसित हो सकते हैं एवं आपके पारिवारिक जीवन से सुख–शांति पूर्णतः लुप्त हो सकती हैं। आपको अनदेखे परिस्थितिजन्य घटनाओं अथवा आपदाग्रस्त कारणों से हानि होने की संभावनाएं हैं। आपकीसंतानें भी आपके लिए चिन्ता का विषय बन सकती हैं।

वर्तमान समय में आप मेष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– तीसरे, छठें और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह काफी उत्तम योग है। इस दशा/भुक्ति की अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकते हैं। आप वरिष्ठों एवं अधिकारियों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु परास्तहोंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में उत्तम प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपकी मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वृष भुक्ति(13:10:2009 से 12:02:2011)

वर्तमान समय में आप वृष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से, आठवें में एक नैसर्गिक अशुभ ग्रहस्थित है– भाव विभाजक के काफी नजदीक। इसके अतिरिक्त वक्री (या नीचस्थ या अस्त या ग्रसित) होने के कारण सुव्यवस्थित नहीं है। यह एक बहुत ही प्रतिकूल योग है। जब तक कि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इस विशेष भुक्ति–अवधि के दौरान आप व्यवसाय में आघात और/या किसी भारी निराशा का सामना कर सकते हैं। आपका स्थानान्तरण अथवा रोजगार में परिवर्तन होसकता है। ऐसा आकस्मिक और अप्रत्याशित रूप से हो सकता है एवं आपको बिना पयाप्त तैयारी के हीआगे बढ़ना पड़ सकता है।

मिथुन भुक्ति(12:02:2011 से 13:06:2012)

वर्तमान में आप मिथुन राशि की भुक्ति–समय से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से पंचमेश इस राशि में स्थित है। यह एक अनुकूल योग है। इस भुक्ति–समय के दौरान, संभवतः आपके व्यवसाय के क्षेत्र में काफी सुधार हो सकता है। आप एक नया रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं। आपकी आय में वृद्धि और रहन–सहन के स्तर में सुधार होने के साथ, आप संतुष्टि की भावना अर्जित करेंगे।

वर्तमान समय में आप मिथुन राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से, राहु सातवें में स्थित है।राहु उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में स्थित नहीं है। यह अपने नक्षत्र में भी स्थित नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, इस दशा के दौरान आप कुछ एक कारणों से दुखी

हो सकते हैं। आप कुछ क्षेत्रों से किसी विरोध का सामना कर सकते हैं अथवा आपका पारिवारिक जीवन बहुत शांतिपूर्ण नहीं हो सकता है। भुक्ति–समय स्थानान्तरण, रोजगार–परिवर्तन, निवास स्थान के परिवर्तन,निकट संबंधियों से विच्छेद आदि करवाने में भी सक्षम है।

वर्तमान में आप मिथुन राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं, जिसमें पंचमेश स्थित है। यदि आपकी कुण्डली में प्रतिकूल योग उपस्थित नहीं हैं तो आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में निस्संदेह रूप से कुछ सुधार की उम्मीद कर सकते हैं। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। संभवतः यह शनि ग्रह की कक्ष–अन्तरा के दौरान हो सकता है, जो कि आपकी कुण्डली में पंचमेश है।

कर्क भुक्ति(13:06:2012 से 13:10:2013)

वर्तमान समय में आप कर्क राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– तीसरे, छठें और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह काफी उत्तम योग है। इस दशा/भुक्ति की अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकते हैं। आप वरिष्ठों एवं अधिकारियों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु परास्तहोंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में उत्तम प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपकी मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप कर्क राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं, जो कि आपके लग्न से ग्यारहवीं भाव–राशि है। यदिआपकी कुण्डली में प्रतिकूल योग उपस्थित नहीं हैं तो अधिक संभावना है कि आप किसी निकट स्थान की यात्रा कर सकते हैं– संभवतः अपने व्यवसाय के संबंध में। आपका स्थानान्तरण अथवा रोजगार–परिवर्तन हो सकता है। या फिर आप किसी निकट स्थान पर अपना निवास परिवर्तित कर सकते हैं, जो कि अपेक्षाकृत बेहतर स्थान पर होगा। आप एक पुरुष हैं तो ऐसा भुक्ति अवधि के 1/8 भाग के अंतिम भाग में हो सकता है। (अर्थात लग्न कक्ष–अंतरा में)।

सिहं भुक्ति(13:10:2013 से 12:02:2015)

वर्तमान समय में आप सिहं राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इसकी दोनों त्रिकोणीय राशियों में स्थित है, जबकि कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह भुक्ति–राशि या इसकी दोनों त्रिकोणीय राशियों में से किसी में भी उपस्थित नहीं है। यह एक बहुत प्रतिकूल योग है एवं राशि–भुक्ति अवधि आपके लिए काफी समस्यात्मक हो सकती है। चीजें कदापि सहजता से नहीं हो सकती हैं एवं आपको अप्रत्याशित कठिनाईयों एवं गंभीर प्रकार के उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। आप स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से ग्रसित हो सकते हैं एवं आपके पारिवारिक जीवन से सुख–शांति पूर्णतः लुप्त हो सकती हैं। आपको अनदेखे परिस्थितिजन्य घटनाओं अथवा आपदाग्रस्त कारणों से हानि होने की संभावनाएं हैं। आपकी संतानें भी आपके लिए चिन्ता का विषय बन सकती हैं।

वर्तमान समय में आप सिहं राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से, शुक्र छठें में स्थित है। शुक्र उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में स्थित नहीं है। यह अपने नक्षत्र में भी स्थित नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, इस दशा के दौरान आप कुछ एक कारणों से दुखी होसकते हैं। आप कुछ क्षेत्रों से किसी विरोध का सामना कर सकते हैं अथवा आपका पारिवारिक जीवन बहुत शांतिपूर्ण नहीं हो सकता है। भुक्ति–समय स्थानान्तरण, रोजगार–परिवर्तन, निवास स्थान के

परिवर्तन, निकट संबंधियों से विच्छेद आदि करवाने में भी सक्षम है।

वर्तमान समय में आप सिहं राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– दूसरे, चौथे और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह बहुतउत्तम योग है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकतेहैं। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपके सामाजिकस्तर व मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

आप एक पुरुष हैं। वर्तमान में आप गुरू की दशा से गुजर रहे हैं, जो कि मकर राशि में स्थित है। मकर राशि का स्वामी इससे पाचवें में स्थित है {(अथवा मकर राशि से गणना करने पर पंचमेश मकर राशि में स्थित है)।} इस दशा–अवधि में अब आप सिहं राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। सिहं राशि का स्वामी इससे पांचवें में स्थित है {अथवा सिहं राशि से गणना करने पर पंचमेश सिहं राशि में स्थित है।}यह एक बहुत अनुकूल योग है। यदि आप विवाहित हैं एवं संतान की कामना कर रहे हैं तो संभवतः इस अवधिके दौरान आपको एक सुन्दर संतान की प्राप्ति हो सकती है। यह (ग्रह का नाम) ग्रह (जो कि आपकेलग्न से पंचमेश है) अथवा गुरु (जो कि संतान जन्म का नैसर्गिक कारक ग्रह है) की कक्ष–अंतरा के दौरान हो सकता है।

कन्या भुक्ति(12:02:2015 से 13:06:2016)

वर्तमान में आप गुरू की दशा से गुजर रहे हैं, जो कि मकर राशि में स्थित है। इस दशा–अवधि में अब आप कन्या राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। मकर राशि का स्वामी कन्या राशि से सातवें में स्थित है(अथवा मकर राशि से गणना करने पर सप्तमेश कन्या राशि में स्थित है)। कन्या राशि का स्वामी मकर राशि से सातवें में स्थित है {अथवा कन्या राशि से गणना करने पर सप्तमेश मकर राशि में स्थित है।}यह एक बहुत अनुकूल योग है। यदि आप अविवाहित हैं, किन्तु आपका झुकाव है तो संभवतः इस अवधि के दौरान आपका विवाह हो सकता है। यह (ग्रह का नाम) ग्रह (जो कि आपके लग्न से सप्तमेश है) अथवा शुक्र (जो कि विवाह का नैसर्गिक कारक ग्रह है) की कक्ष–अंतरा के दौरान हो सकता है। या फिर, आप किसी भिन्न समुदाय/धर्म/देश के व्यक्ति के साथ साझेदारी/सहभागिता में व्यवसाय कर सकते हैं।

वर्तमान में आप गुरू की दशा से गुजर रहे हैं, जो कि मकर राशि में स्थित है। इस दशा–अवधि में अब आप कन्या राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। मकर राशि का स्वामी कन्या राशि से सातवें में स्थित है(अथवा मकर राशि से गणना करने पर सप्तमेश कन्या राशि में स्थित है)। कन्या राशि का स्वामी मकर राशि से सातवें में स्थित है {अथवा कन्या राशि से गणना करने पर सप्तमेश मकर राशि में स्थित है।}यह एक बहुत अनुकूल योग है। यदि आप अविवाहित हैं, किन्तु आपका झुकाव है तो संभवतः इस अवधि के दौरान आपका विवाह हो सकता है। यह (ग्रह का नाम) ग्रह (जो कि आपके लग्न से सप्तमेश है) अथवा शुक्र (जो कि विवाह का नैसर्गिक कारक ग्रह है) की कक्ष–अंतरा के दौरान हो सकता है। या फिर, आप किसी भिन्न समुदाय/धर्म/देश के व्यक्ति के साथ साझेदारी/सहभागिता में व्यवसाय कर सकते हैं।

वर्तमान में आप कन्या राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। चन्द्रमा जो कि इस राशि से एकादशेश है– इस राशि में स्थित है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकूल प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इस भुक्ति–अवधि के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होने की संभावना अत्यधिक है। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ और समर्थन प्राप्त करेंगे एवं सामान्यतः लोग आपको किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता या तलाश होने पर सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके मित्रों व

परिचितों के दायरे में आपकी लोकप्रियता में भी वृद्धि होगी।

तुला भुक्ति(13:06:2016 से 13:10:2017)

वर्तमान समय में आप तुला राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– दूसरे, चौथे और ग्यारहवें– में से दो स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह बहुत उत्तम योग है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकते हैं। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपके सामाजिक स्तर व मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वृश्चिक भुक्ति(13:10:2017 से 12:02:2019)

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की भुक्ति–समय से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से दशमेश इस राशि में स्थितहै। यह एक अनुकूल योग है। इस भुक्ति–समय के दौरान, संभवतः आपके व्यवसाय के क्षेत्र में काफीसुधार हो सकता है। आप एक नया रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं। आपकी आय में वृद्धि और रहन–सहन के स्तर में सुधार होने के साथ, आप संतुष्टि की भावना अर्जित करेंगे।

वर्तमान में आप एक ग्रह की दशा से गुजर रहे हैं जा मकर राशि में स्थित है। इस राशि के लिए, सामान्यबाधा राशि वृश्चिक राशि है। जैसा कि, यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इस ग्रह की दशा–अवधि के दौरान, जब वृश्चिक राशि की राशि–भुक्ति चल रही हो, तो आप अनेक कष्टकारी समस्याओं का सामना कर सकते हैं एवं स्वयं को कुछ–कुछ हानिकारक अथवा प्रतिबंधात्मक प्रभावों में महसूस कर सकते हैं। आपके प्रयासों को वांछित मात्रा में प्रतिफल प्राप्त नहीं हो सकता है एवं आपकी अभिलाषित इच्छाएं अधूरी रह सकती हैं। अतः आपको बहुत सावधान व सचेत रहना चाहिए, स्वयं को अति आशावादी होने से रोकना चाहिए, अपने खर्चों पर नियंत्रण करने के लिए कठिन अभ्यास करना चाहिए एवं अपनी वाणी अथवा व्यवहार से किसी को भी अपना विरोधी नहीं बनाना चाहिए। हालांकि आपकोनिरूत्साहित महसूस नहीं करना चाहिए एवं धैर्यपूर्वक दुख के काले बादलों को छंटने देने का इंतजारकरना चाहिए।

वर्तमान समय में आप वृश्चिक राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से, शनि आठवें में स्थित है। शनि उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में स्थित नहीं है। यह अपने नक्षत्र में भी स्थित नहीं है। यदि आपकीकुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, इस दशा के दौरान आप कुछ एक कारणों से दुखी हो सकते हैं। आप कुछ क्षेत्रों से किसी विरोध का सामना कर सकते हैं अथवा आपका पारिवारिक जीवन बहुत शांतिपूर्ण नहीं हो सकता है। भुक्ति–समय स्थानान्तरण, रोजगार–परिवर्तन, निवास स्थान के परिवर्तन, निकट संबंधियों से विच्छेद आदि करवाने में भी सक्षम है।

वर्तमान समय में आप वृश्चिक राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से, आठवें में एक नैसर्गिक अशुभग्रह स्थित है– भाव विभाजक के काफी नजदीक। इसके अतिरिक्त वक्री (या नीचस्थ या अस्त या ग्रसित) होने के कारण सुव्यवस्थित नहीं है। यह एक बहुत ही प्रतिकूल योग है। जब तक कि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इस विशेष भुक्ति–अवधि के दौरान आप व्यवसाय में आघात और/या किसी भारी निराशा का सामना कर सकते हैं। आपका स्थानान्तरण अथवा रोजगार में

परिवर्तन हो सकता है। ऐसा आकस्मिक और अप्रत्याशित रूप से हो सकता है एवं आपको बिना पयाप्त तैयारी के ही आगे बढ़ना पड़ सकता है।

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं, जिसमें दशमेश स्थित है। यदि आपकी कुण्डली मेंप्रतिकूल योग उपस्थित नहीं हैं तो आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में निस्संदेह रूप से कुछ सुधार की उम्मीद कर सकते हैं। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। संभवतः यह बुध ग्रह की कक्ष–अन्तरा के दौरान हो सकता है, जो कि आपकी कुण्डली में दशमेश है।

धनु भुक्ति(12:02:2019 से 13:06:2020)

वर्तमान समय में आप धनु राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इस राशि में एवं इसकी दो त्रिकोणीय राशियों में से एक राशि में भी स्थित है, जबकि इन तीनों राशियों में कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह उपस्थित नहीं है। यह एक बहुत प्रतिकूल योग है एवं राशि–भुक्ति अवधि आपके लिए बहुत समस्यात्मक हो सकती है। चीजें कदापि सहजता से नहीं हो सकती हैं एवं आपको अप्रत्याशित कठिनाईयों एवं गंभीर प्रकार के उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। आप स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से ग्रसित हो सकते हैं एवं आपके पारिवारिक जीवन से सुख–शांति पूर्णतः लुप्त हो सकती हैं। आपको अनदेखे परिस्थितिजन्य घटनाओं अथवा आपदाग्रस्त कारणों से हानि होने की संभावनाएं हैं। आपकीसंतानें भी आपके लिए चिन्ता का विषय बन सकती हैं।

वर्तमान समय में आप धनु राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– दूसरे, चौथे और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह बहुतउत्तम योग है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकतेहैं। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपके सामाजिकस्तर व मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

शनि दशा (13:06:2020 से 14:06:2039)

वर्तमान में आप शनि ग्रह की दशा से गुजर रहे हैं, जो कि आपके दसवें भाव में स्थित है। किन्तु दशा–स्वामी या तो अस्त है अथवा ग्रसित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी जन्मकुण्डली मेंप्रतिकारी योग उपस्थित नहीं हैं तो आपका अपने वरिष्ठों के साथ कुछ गहरे मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं।ऐसी प्रबल संभावना है कि आप उनके क्रोध का शिकार हो सकते हैं। अधिकारियों से किसी प्रकार की पूर्ण रूप से अन्यायिक अस्वीकृति अथवा इन्कार के कारण आप बहुत निराश हो सकते हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो आपके कार्यस्थल की स्थिति और बदतर हो सकती हैं एवं आप अपने कुछ सहकर्मियोंके इच्छित असहयोग का सामना कर सकते हैं, जो कि निरंतर नए तरीके अपनाकर आपकी छविको धूमिल करने का प्रयास कर सकते हैं।

वर्तमान में आप एक ग्रह की दशा से गुजर रहे हैं, जो कि मिथुन राशि में स्थित है। इस राशि से, राहु सातवें में स्थित है। राहु उच्चस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है। यह अपने नक्षत्र में भी स्थित नहीं है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इस दशा के दौरान आप कुछ एक

कारणों से दुखी हो सकते हैं। संभवतः आपको कुछ क्षेत्रों से कुछ विरोध का सामना करना पड़ सकता है एवं आपका पारिवारिक जीवन भी बहुत शांतिपूर्ण नहीं हो सकता है। यह दशा स्थानान्तरण, रोजगार में परिवर्तन, आवास स्थान में परिवर्तन, निकट संबंधियों से विच्छेद आदि जैसी घटनाओं को लाने में भी सक्षम है।

वर्तमान में आप एक ग्रह की दशा से गुजर रहे हैं, जो मिथुन राशि में स्थित है। इस राशि से तीन स्थानों–तीसरे, छठें और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है।समग्र रूप से यह काफी उत्तम योग है। इस दशा की अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकते हैं। आप एक से अधिक स्रोतों से प्रत्यक्ष लाभ एवं अप्रत्यक्ष समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपके सामाजिक स्तर व मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

मिथुन भुक्ति(13:06:2020 से 13:01:2022)

वर्तमान में आप मिथुन राशि की भुक्ति–समय से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से पंचमेश इस राशि में स्थित है। यह एक अनुकूल योग है। इस भुक्ति–समय के दौरान, संभवतः आपके व्यवसाय के क्षेत्र में काफी सुधार हो सकता है। आप एक नया रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं। आपकी आय में वृद्धि और रहन–सहन के स्तर में सुधार होने के साथ, आप संतुष्टि की भावना अर्जित करेंगे।

वर्तमान समय में आप मिथुन राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से, राहु सातवें में स्थित है।राहु उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में स्थित नहीं है। यह अपने नक्षत्र में भी स्थित नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, इस दशा के दौरान आप कुछ एक कारणों से दुखी होसकते हैं। आप कुछ क्षेत्रों से किसी विरोध का सामना कर सकते हैं अथवा आपका पारिवारिक जीवन बहुत शांतिपूर्ण नहीं हो सकता है। भुक्ति–समय स्थानान्तरण, रोजगार–परिवर्तन, निवास स्थान के परिवर्तन,निकट संबंधियों से विच्छेद आदि करवाने में भी सक्षम है।

वर्तमान में आप मिथुन राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं, जिसमें पंचमेश स्थित है। यदि आपकी कुण्डली में प्रतिकूल योग उपस्थित नहीं हैं तो आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में निस्संदेह रूप से कुछ सुधार की उम्मीद कर सकते हैं। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। संभवतः यह शनि ग्रह की कक्ष–अन्तरा के दौरान हो सकता है, जो कि आपकी कुण्डली में पंचमेश है।

कर्क भुक्ति(13:01:2022 से 14:08:2023)

वर्तमान समय में आप कर्क राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– तीसरे, छठें और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह काफी उत्तम योग है। इस दशा/भुक्ति की अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकते हैं। आप वरिष्ठों एवं अधिकारियों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु परास्तहोंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में उत्तम प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपकी मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप कर्क राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं, जो कि आपके लग्न से ग्यारहवीं भाव–राशि है।

यदि आपकी कुण्डली में प्रतिकूल योग उपस्थित नहीं हैं तो अधिक संभावना है कि आप किसी निकट स्थानकी यात्रा कर सकते हैं– संभवतः अपने व्यवसाय के संबंध में। आपका स्थानान्तरण अथवा रोजगार–परिवर्तन हो सकता है। या फिर आप किसी निकट स्थान पर अपना निवास परिवर्तित कर सकते हैं, जो कि अपेक्षाकृत बेहतर स्थान पर होगा। आप एक पुरुष हैं तो ऐसा भुक्ति अवधि के 1/8 भाग के अंतिम भाग में हो सकता है। (अर्थात लग्न कक्ष–अंतरा में)।

सिहं भुक्ति(14:08:2023 से 15:03:2025)

वर्तमान समय में आप सिहं राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इसकी दोनों त्रिकोणीय राशियों में स्थित है, जबकि कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह भुक्ति–राशि या इसकी दोनों त्रिकोणीय राशियों में से किसी में भी उपस्थित नहीं है। यह एक बहुत प्रतिकूल योग है एवं राशि–भुक्ति अवधि आपके लिए काफी समस्यात्मक हो सकती है। चीजें कदापि सहजता से नहीं हो सकती हैं एवं आपको अप्रत्याशित कठिनाईयों एवं गंभीर प्रकार के उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। आप स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से ग्रसित हो सकते हैं एवं आपके पारिवारिक जीवन से सुख–शांति पूर्णतः लुप्त हो सकती हैं। आपको अनदेखे परिस्थितिजन्य घटनाओं अथवा आपदाग्रस्त कारणों से हानि होने की संभावनाएं हैं। आपकी संतानें भी आपके लिए चिन्ता का विषय बन सकती हैं।

वर्तमान समय में आप सिहं राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से, शुक्र छठें में स्थित है। शुक्र उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में स्थित नहीं है। यह अपने नक्षत्र में भी स्थित नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, इस दशा के दौरान आप कुछ एक कारणों से दुखी होसकते हैं। आप कुछ क्षेत्रों से किसी विरोध का सामना कर सकते हैं अथवा आपका पारिवारिक जीवन बहुत शांतिपूर्ण नहीं हो सकता है। भुक्ति–समय स्थानान्तरण, रोजगार–परिवर्तन, निवास स्थान के परिवर्तन,निकट संबंधियों से विच्छेद आदि करवाने में भी सक्षम है।

वर्तमान समय में आप सिहं राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– दूसरे, चौथे और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह बहुतउत्तम योग है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकतेहैं। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपके सामाजिकस्तर व मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप शनि की दशा से गुजर रहे हैं, जो कि मिथुन राशि में स्थित है। इस दशा–अवधि में अब आप सिहं राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। मिथुन राशि का स्वामी सिहं राशि से सातवें में स्थित है (अथवा मिथुन राशि से गणना करने पर सप्तमेश सिहं राशि में स्थित है)। सिहं राशि का स्वामी मिथुन राशि से सातवें में स्थित है {अथवा सिहं राशि से गणना करने पर सप्तमेश मिथुन राशि में स्थित है।}यह एक बहुत अनुकूल योग है। यदि आप अविवाहित हैं, किन्तु आपका झुकाव है तो संभवतः इस अवधि के दौरान आपका विवाह हो सकता है। यह (ग्रह का नाम) ग्रह (जो कि आपके लग्न से सप्तमेश है) अथवा शुक्र (जो कि विवाह का नैसर्गिक कारक ग्रह है) की कक्ष–अंतरा के दौरान हो सकता है। या फिर, आप किसी भिन्न समुदाय/धर्म/देश के व्यक्ति के साथ साझेदारी/सहभागिता में व्यवसाय कर सकते हैं।

वर्तमान में आप शनि की दशा से गुजर रहे हैं, जो कि मिथुन राशि में स्थित है। इस दशा–अवधि में अब आप सिहं राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। मिथुन राशि का स्वामी सिहं राशि से सातवें में स्थित है (अथवा मिथुन राशि से गणना करने पर सप्तमेश सिहं राशि में स्थित है)। सिहं राशि का स्वामी मिथुन

राशि से सातवें में स्थित है {अथवा सिहं राशि से गणना करने पर सप्तमेश मिथुन राशि में स्थित है।}यह एक बहुत अनुकूल योग है। यदि आप अविवाहित हैं, किन्तु आपका झुकाव है तो संभवतः इस अवधि के दौरान आपका विवाह हो सकता है। यह (ग्रह का नाम) ग्रह (जो कि आपके लग्न से सप्तमेश है) अथवा शुक्र (जो कि विवाह का नैसर्गिक कारक ग्रह है) की कक्ष–अंतरा के दौरान हो सकता है। या फिर, आप किसी भिन्न समुदाय/धर्म/देश के व्यक्ति के साथ साझेदारी/सहभागिता में व्यवसाय कर सकते हैं।

कन्या भुक्ति(15:03:2025 से 13:10:2026)

वर्तमान में आप कन्या राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। चन्द्रमा जो कि इस राशि से एकादशेश है– इस राशि में स्थित है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकूल प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इस भुक्ति–अवधि के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होने की संभावना अत्यधिक है। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ और समर्थन प्राप्त करेंगे एवं सामान्यतः लोग आपको किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता या तलाश होने पर सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके मित्रों व परिचितों के दायरे में आपकी लोकप्रियता में भी वृद्धि होगी।

तुला भुक्ति(13:10:2026 से 14:05:2028)

वर्तमान समय में आप तुला राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– दूसरे, चौथे और ग्यारहवें– में से दो स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह बहुत उत्तम योग है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकते हैं। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपके सामाजिक स्तर व मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वृश्चिक भुक्ति(14:05:2028 से 13:12:2029)

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की भुक्ति–समय से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से दशमेश इस राशि में स्थितहै। यह एक अनुकूल योग है। इस भुक्ति–समय के दौरान, संभवतः आपके व्यवसाय के क्षेत्र में काफीसुधार हो सकता है। आप एक नया रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं। आपकी आय में वृद्धि और रहन–सहन के स्तर में सुधार होने के साथ, आप संतुष्टि की भावना अर्जित करेंगे।

वर्तमान समय में आप वृश्चिक राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से, शनि आठवें में स्थित है। शनि उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में स्थित नहीं है। यह अपने नक्षत्र में भी स्थित नहीं है। यदि आपकीकुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, इस दशा के दौरान आप कुछ एक कारणों से दुखी हो सकते हैं। आप कुछ क्षेत्रों से किसी विरोध का सामना कर सकते हैं अथवा आपका पारिवारिक जीवन बहुत शांतिपूर्ण नहीं हो सकता है। भुक्ति–समय स्थानान्तरण, रोजगार–परिवर्तन, निवास स्थान के परिवर्तन, निकट संबंधियों से विच्छेद आदि करवाने में भी सक्षम है।

वर्तमान समय में आप वृश्चिक राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से, आठवें में एक नैसर्गिक अशुभग्रह स्थित है– भाव विभाजक के काफी नजदीक। इसके अतिरिक्त वक्री (या नीचस्थ या अस्त या

ग्रसित) होने के कारण सुव्यवस्थित नहीं है। यह एक बहुत ही प्रतिकूल योग है। जब तक कि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इस विशेष भुक्ति–अवधि के दौरान आप व्यवसाय में आघात और/या किसी भारी निराशा का सामना कर सकते हैं। आपका स्थानान्तरण अथवा रोजगार में परिवर्तन हो सकता है। ऐसा आकस्मिक और अप्रत्याशित रूप से हो सकता है एवं आपको बिना पयाप्त तैयारी के ही आगे बढ़ना पड़ सकता है।

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं, जिसमें दशमेश स्थित है। यदि आपकी कुण्डली मेंप्रतिकूल योग उपस्थित नहीं हैं तो आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में निस्संदेह रूप से कुछ सुधार की उम्मीद कर सकते हैं। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। संभवतः यह बुध ग्रह की कक्ष–अन्तरा के दौरान हो सकता है, जो कि आपकी कुण्डली में दशमेश है।

धनु भुक्ति(13:12:2029 से 14:07:2031)

वर्तमान में आप एक ग्रह की दशा से गुजर रहे हैं जो मिथुन राशि में स्थित है। इस राशि के लिए, सामान्यबाधा राशि धनु राशि है– जो कि विशेष बाधा राशि भी है। जैसा कि, यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इस ग्रह की दशा–अवधि के दौरान, जब धनु राशि की राशि–भुक्तिचल रही हो, तो आप कुछ विकट समस्याओं का सामना कर सकते हैं एवं अपने खुद के मामलोंको सुलझाने में भारी कठिनाई महसूस कर सकते हैं। आपके आस–पास के लोग एवं चीजें आपको बिगड़ी हुई महसूस हो सकती हैं एवं आप हैरान हो सकते हैं। आपको अत्यधिक सावधान व सजग रहना चाहिए, अपनी अपेक्षाओं में उदार होना चाहिए, सभी प्रकार के अनावश्यक व व्यर्थ के खर्चों को बन्द कर देना चाहिए एवं सुरक्षित पक्ष में रहने के लिए, आपको किसी को भी विरोधी नहीं बनाना चाहिए। आपको कोई जोखिमपूर्ण कदम नहीं उठाना चाहिए एवं कोई भी बड़ा निर्णय लेने से पहले कई बार सोचना चाहिए।किसी प्रकार का छोटा अथवा शीघ्रता का मार्ग आपको परेशानी में डाल सकता है एवं छलपूर्ण/गुप्तकार्यवाई आपके लिए गंभीर प्रकार की जटिलताएं पैदा कर सकती हैं।

वर्तमान समय में आप धनु राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इस राशि में एवं इसकी दो त्रिकोणीय राशियों में से एक राशि में भी स्थित है, जबकि इन तीनों राशियों में कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह उपस्थित नहीं है। यह एक बहुत प्रतिकूल योग है एवं राशि–भुक्ति अवधि आपके लिए बहुत समस्यात्मक हो सकती है। चीजें कदापि सहजता से नहीं हो सकती हैं एवं आपको अप्रत्याशित कठिनाईयों एवं गंभीर प्रकार के उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। आप स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से ग्रसित हो सकते हैं एवं आपके पारिवारिक जीवन से सुख–शांति पूर्णतः लुप्त हो सकती हैं। आपको अनदेखे परिस्थितिजन्य घटनाओं अथवा आपदाग्रस्त कारणों से हानि होने की संभावनाएं हैं। आपकीसंतानें भी आपके लिए चिन्ता का विषय बन सकती हैं।

वर्तमान समय में आप धनु राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– दूसरे, चौथे और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह बहुतउत्तम योग है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकतेहैं। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपके सामाजिकस्तर व मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

मकर भुक्ति(14:07:2031 से 12:02:2033)

वर्तमान समय में आप मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– तीसरे, छठें और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह काफी उत्तम योग है। इस दशा/भुक्ति की अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकते हैं। आप वरिष्ठों एवं अधिकारियों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु परास्तहोंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में उत्तम प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपकी मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वर्तमान समय में आप मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– दूसरे, चौथे और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह बहुतउत्तम योग है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकतेहैं। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपके सामाजिकस्तर व मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वर्तमान समय में आप मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से, आपका लग्नेश, जो कि कार्यात्मक रूप से अत्यंत शुभ ग्रह माना जाता है, इससे ग्यारहवें में स्थित है। यह एक बहुत शुभ फलदायक योग है। इस दशा/भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद करसकते हैं। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में बहुत अधिक प्रगति करेंगे, आपकी आय में सार्थक वृद्धि होगी। आपकेमानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं, जो कि आपके लग्न से पांचवीं भाव–राशि है। यदि आपकी कुण्डली में प्रतिकूल योग उपस्थित नहीं हैं तो अधिक संभावना है कि आप किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा कर सकते हैं– संभवतः अपने व्यवसाय के संबंध में। आप एक पुरुष हैं तो ऐसा भुक्ति अवधि के 1/8 भाग के अंतिम भाग में हो सकता है। (अर्थात लग्न कक्ष–अंतरा में)।

वर्तमान में आप शनि की दशा से गुजर रहे हैं, जो कि मिथुन राशि में स्थित है। इस दशा–अवधि में, अब आप मकर राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। मिथुन राशि का स्वामी मकर राशि से पाचवें में स्थित है{(अथवा मिथुन राशि से गणना करने पर पंचमेश मकर राशि में स्थित है)।} मिथुन राशि का स्वामी मिथुनराशि से पांचवें में स्थित है {अथवा मकर राशि से गणना करने पर पंचमेश मिथुन राशि में स्थित है।}यह एक बहुत अनुकूल योग है। यदि आप विवाहित हैं एवं संतान की कामना कर रहे हैं तो संभवतः इस अवधि के दौरान आपको एक सुन्दर संतान की प्राप्ति हो सकती है। यह (ग्रह का नाम) ग्रह (जो कि आपके लग्न से पंचमेश है) अथवा गुरु (जो कि संतान जन्म का नैसर्गिक कारक ग्रह है) की कक्ष–अंतरा केदौरान हो सकता है।

कुम्भ भुक्ति(12:02:2033 से 13:09:2034)

वर्तमान समय में आप कुम्भ राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– तीसरे, छठें और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह काफी उत्तम योग है। इस दशा/भुक्ति की अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकते हैं। आप वरिष्ठों एवं अधिकारियों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु

परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में उत्तम प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपकीमानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

मीन भुक्ति(13:09:2034 से 13:04:2036)

वर्तमान समय में आप मीन राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– दूसरे, चौथे और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह बहुतउत्तम योग है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकतेहैं। आप एक से अधिक स्रोतों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपके सामाजिकस्तर व मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

मेष भुक्ति(13:04:2036 से 13:11:2037)

वर्तमान में आप मेष राशि की भुक्ति–समय से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से अष्टमेश इस राशि में स्थित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इस भुक्ति–समय के दौरान आप अपना पद और सामाजिक स्तर बनाए रखने के लिए कुछ कठिनाईयों का सामना कर सकते हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो आपका एक असुविधाजनक स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है एवं आपकी नौकरी खोने का भय भी हो सकता है। यदि आप व्यापार कर रहे हैं तो परिस्थितियां काफी बिगड़ सकती हैं एवं आपकी आय कम हो सकती है।

वर्तमान समय में आप मेष राशि की राशि–भुक्ति से गुजर रहे हैं। कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इस राशि में एवं इसकी दो त्रिकोणीय राशियों में से एक राशि में भी स्थित है, जबकि इन तीनों राशियों में कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह उपस्थित नहीं है। यह एक बहुत प्रतिकूल योग है एवं राशि–भुक्ति अवधि आपके लिए बहुत समस्यात्मक हो सकती है। चीजें कदापि सहजता से नहीं हो सकती हैं एवं आपको अप्रत्याशित कठिनाईयों एवं गंभीर प्रकार के उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। आप स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से ग्रसित हो सकते हैं एवं आपके पारिवारिक जीवन से सुख–शांति पूर्णतः लुप्त हो सकती हैं। आपको अनदेखे परिस्थितिजन्य घटनाओं अथवा आपदाग्रस्त कारणों से हानि होने की संभावनाएं हैं। आपकीसंतानें भी आपके लिए चिन्ता का विषय बन सकती हैं।

वर्तमान समय में आप मेष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से तीन स्थानों– तीसरे, छठें और ग्यारहवें– में से एक स्थान कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा अधिकृत है। समग्र रूप से यह काफी उत्तम योग है। इस दशा/भुक्ति की अवधि के दौरान आप कुछ लाभदायक परिवर्तन होने की उम्मीद कर सकते हैं। आप वरिष्ठों एवं अधिकारियों से लाभ एवं समर्थन प्राप्त करेंगे एवं आपके शत्रु परास्तहोंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में उत्तम प्रगति करेंगे, आपकी आय में काफी वृद्धि होगी, आपकी मानसिक संतुष्टि में भी काफी वृद्धि होगी।

वृष भुक्ति(13:11:2037 से 14:06:2039)

वर्तमान समय में आप वृष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। इस राशि से, आठवें में एक नैसर्गिक अशुभ

ग्रह स्थित है– भाव विभाजक के काफी नजदीक। इसके अतिरिक्त वक्री (या नीचस्थ या अस्त या ग्रसित) होने के कारण सुव्यवस्थित नहीं है। यह एक बहुत ही प्रतिकूल योग है। जब तक कि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इस विशेष भुक्ति–अवधि के दौरान आप व्यवसाय में आघात और/या किसी भारी निराशा का सामना कर सकते हैं। आपका स्थानान्तरण अथवा रोजगार में परिवर्तन होसकता है। ऐसा आकस्मिक और अप्रत्याशित रूप से हो सकता है एवं आपको बिना पयाप्त तैयारी के हीआगे बढ़ना पड़ सकता है।

अष्टोत्तरी दशा से भविष्यफल

मंगल(हस्ता) दशा

(18:12:1973 -- 22:01:1975)

यह अष्टोत्तरी दशा अधिक घटनापूर्ण नहीं है। यद्यपि हम बहुत अधिक स्थितियों की गणना कर रहे हैं।

मंगल(चित्रा) दशा

(22:01:1975 -- 22:01:1977)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट आठवें भाव में स्थित है जो कि प्रतिकूल त्रिक–भाव है। अतः इस दशाके दौरान आपको कुछ अगोचर कारणों अथवा अप्रत्याशित स्रोतों से कुछ गंभीर प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने कार्यस्थल पर भी कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है तथा आप अपने वरिष्ठों या सरकारी अधिकारियों के कारण कठिनाई में पड़ सकते हैं। आपको धैर्यपूर्वक व सावधानी से कार्य करना चाहिए एवं मुश्किलों के काले बादल छंट जाने देना चाहिए। आपको दशा के प्रारम्भ में और दशा के अन्त में अत्यधिक सावधान रहना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट बारहवीं पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान व्यवसाय से प्राप्त होने वाली आपकी आय में गिरावट आ सकती है और आपके दायरे के कुछ ईर्ष्यालु व्यक्ति आपकी छवि धूमिल करने के लिए गुप्त रूप से आपके विरूद्ध कार्य कर सकते हैं एवं आपकी प्रतिष्ठा व सम्मान को ध्वस्त करने का प्रयत्न कर सकते हैं। आपका व्यय आपकी आय से अधिक हो सकता है तथा आपके धन के अवरूद्ध होने अथवा हानि होने की भी संभावना है। अतः आपको सट्टा, शेयर आदि जैसे काल्पनिक निवेशों एवं कर्ज देने से पूर्णतः बचना चाहिए। अपने व्यवसाय के संबंध में आपको कुछ यात्राएं करनी पड़ सकती हैं, जो कि अधिक फलदायक नहीं हो सकता है। आपको अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान रखना चाहिए। आपको पर्याप्त नींद और आराम की भी आवश्यकता होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ऐसी राशि में है जो कि आठवीं पद राशि के समान है, किन्तु राशि–स्वामी शक्तिशाली व सुव्यवस्थित है। अतः यह दशा–अवधि आपके लिए काफी आनन्दपूर्ण व्यतीत होगी। आपको अपने ससुराल पक्ष से एवं व्यावसायिक साझेदारों से लाभ प्राप्त होगा। आपके मित्र मददगारहोंगे एवं आपके शत्रु परास्त होंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा एवं निवेश के उद्देश्य से अथवा किसी सम्पति का एक भाग प्राप्त करने के लिए आपको किसी वित्तीय संस्थान से बड़ी मात्रा में ऋण प्राप्त हो सकता है। किन्तु आपके पिता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दूसरी पद–राशि में है तथा राशि–स्वामी सुव्यवस्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपकी सम्पत्तियों और अधिकार में वृद्धि होगी। आप कोई नया रोजगार या पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं। आपका अपने परिवार के प्रति और अधिक निकटतम लगाव होगा एवं खुशहाल व आनन्ददायक जीवन व्यतीत करेंगे। आप अनेक स्रोतों से लाभ प्राप्त करेंगे और कुछ आरामदायक वस्तुएं प्राप्त करेंगे, जो कि आपकी जीवनशैली को उन्नत बनाएंगे। आपके परिवार में कोई शुभ समारोह आयोजित हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवीं पद–राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत महात्वाकांक्षी, उर्जावान व सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप रोजगार की तलाश में हैं तो आपको एक प्रतिष्ठित पद प्राप्त होगा। आपके सभी प्रयत्न पूर्णतः सफल होंगे। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में सदैव वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत

होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, इस दशा में, एक ही ग्रह ग्रह–स्वामी और नक्षत्र–स्वामी दोनों है। अतः दशा अवधिनिश्चित रूप से घटनाओं से पूर्ण होगी। लगभग दशा के प्रारम्भ में, दशा की मध्यावधि में एवं दशा केअन्त में भी कुछ महत्वपूर्ण अनुकूल परिवर्तन हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में यह एक विशेष दशा है, जब अष्टमेश दशा का स्वामी है। अतः दशा के दौरान आपको कुछ प्रतिकूल घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है। ऐसी संभावना है कि आप किसी छोटी दुर्घटना का शिकार, किसी आपदा से परेशान, किसी गंभीर विवाद या झगड़े में फंसने से परेशान हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो आपको अपना पद बनाए रखने के लिए कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपके स्थानान्तरण या रोजगार में परिवर्तन की भी संभावना है। इसके अतिरिक्त आपके पिता का स्वास्थ्य व सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 22:05:1975, 31:12:1975, 14:04:1976, 14:04:1976, 31:12:1976, 03:01:1977, 13:01:1977

मंगल(स्वाति) दशा
(22:01:1977 -- 22:01:1979)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट चौथे भाव में स्थित है जो कि आपके लग्न से एक त्रिकोण–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर वित्तिय और विदेश मामलों के संबंध में। आप अपने गुणों, अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के कारण उचित पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु यदि आप व्यापारी हैं तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधता ला सकते हैं अथवा साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं। आप लाभ और आनन्द के लिए लम्बी यात्राएं भी कर सकते हैं।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 30:08:1977, 03:09:1977, 13:09:1977, 19:01:1978, 30:08:1978, 13:12:1978, 13:12:1978

मंगल(विशाखा) दशा
(22:01:1979 -- 22:01:1981)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवें भाव में स्थित है जो कि आपके लग्न से एक त्रिकोण–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर संतान और वित्तिय मामलों के संबंध में। आप अपनी अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के कारण उचित पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो आप एक लाभप्रद पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु यदि आप व्यापारी हैं तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधता ला सकते हैं अथवा साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट प्रथम पद–राशि में है। अतः आप बहुत भाग्यशाली होंगे। आप बहुत उर्जावान व सक्रिय होंगे। इस दशा के दौरान आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने

उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। आप अपनी विशेष उपलब्धियों के कारण अपने परिवार के लिए गौरव और आनन्दका स्रोत होंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आपके परिवार में कोई शुभ समारोह आयोजित हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट के नक्षत्र का स्वामी पांचवें भाव में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यावसायिक संभावनाओं में काफी सुधार होगा। आप कोई नया रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप औपचारिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं और किसी परीक्षा में बैठ रहे हैं तो आप किसी व्यवहारपरक क्षेत्र में एक प्रभावशाली शैक्षिक योग्यता के साथ सफलता प्राप्त करेंगे। आपका नाम और यश दूर–दूर तक फैलेगा।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 04:06:1979, 08:06:1979, 18:06:1979, 24:10:1979, 04:06:1980, 17:09:1980, 17:09:1980

बुध(अनुराधा) दशा
(22:01:1981 -- 23:09:1986)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवें भाव में स्थित है जो कि आपके लग्न से एक त्रिकोण–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर संतान और वित्तिय मामलों के संबंध में। आप अपनी अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के कारण उचित पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो आप एक लाभप्रद पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु यदि आप व्यापारी हैं तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधता ला सकते हैं अथवा साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट प्रथम पद–राशि में है। अतः आप बहुत भाग्यशाली होंगे। आप बहुत उर्जावान व सक्रिय होंगे। इस दशा के दौरान आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। आप अपनी विशेष उपलब्धियों के कारण अपने परिवार के लिए गौरव और आनन्दका स्रोत होंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आपके परिवार में कोई शुभ समारोह आयोजित हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट के नक्षत्र का स्वामी दसवें भाव में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यावसायिक संभावनाओं में काफी सुधार होगा। आप कोई नया रोजगार अथवा अधिक जिम्मेदारी वाला पद प्राप्त कर सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान और प्रतिष्ठा सभी में वृद्धि होगी।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 03:01:1982, 13:01:1982, 11:02:1982, 09:02:1983, 03:11:1984, 27:08:1985, 27:08:1985

बुध(ज्येष्ठा) दशा
(23:09:1986 -- 23:05:1992)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ग्यारहवें भाव (लाभ) में है, जो कि बहुत अनुकूल है क्योंकि यह आय और लाभ का भाव है, इसलिए आपके व्यवसाय से प्राप्त होने वाली आपकी आय में और अन्य स्रोतों से प्राप्त होने वाले लाभ में निरंतर वृद्धि होती रहेगी और आप अपने मित्रों व शुभ चिन्तकों से प्रत्यक्ष लाभ व

अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त करेंगे। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान आप प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। आपकी कुछ महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी एवं आपकी कुछ हार्दिक इच्छाएं पूरी होंगी। आप मनोरंजन एवं लाभ के लिए लम्बी यात्राएं भी कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी अच्छी स्थिति में है तो आप किसी सांस्कृतिक या शैक्षिक उद्देश्य से किसी दूरस्थ स्थान अथवा विदेश तक की यात्रा कर सकते हैं। हालांकि आपकी माता का स्वास्थ्य व सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, इस दशा में, एक ही ग्रह ग्रह–स्वामी और नक्षत्र–स्वामी दोनों है। अतः दशा अवधिनिश्चित रूप से घटनाओं से पूर्ण होगी। लगभग दशा के प्रारम्भ में, दशा की मध्यावधि में एवं दशा केअन्त में भी कुछ महत्वपूर्ण अनुकूल परिवर्तन हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में यह एक विशेष दशा है, जब दशमेश दशा का स्वामी है। इस दशा के दौरान आप बहुत सक्रिय होंगे एवं अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सुधार करेंगे। यदि आप नौकरी में हैं तो आप एक लाभप्रद और प्रतिष्ठित पद प्राप्त करनें में सक्षम होंगे। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान और प्रतिष्ठा सभी में वृद्धि होगी।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 18:12:1987, 10:10:1988, 10:10:1988, 18:10:1990, 28:10:1990, 26:11:1990, 24:11:1991

बुध(मूला) दशा

(23:05:1992 -- 22:01:1998)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवें भाव में स्थित है जो कि आपके लग्न से एक त्रिकोण–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर संतान और वित्तिय मामलों के संबंध में। आप अपनी अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के कारण उचित पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो आप एक लाभप्रद पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु यदि आप व्यापारी हैं तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधता ला सकते हैं अथवा साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट प्रथम पद–राशि में है। अतः आप बहुत भाग्यशाली होंगे। आप बहुत उर्जावान व सक्रिय होंगे। इस दशा के दौरान आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। आप अपनी विशेष उपलब्धियों के कारण अपने परिवार के लिए गौरव और आनन्दका स्रोत होंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आपके परिवार में कोई शुभ समारोह आयोजित हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट के नक्षत्र का स्वामी दसवें भाव में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यावसायिक संभावनाओं में काफी सुधार होगा। आप कोई नया रोजगार अथवा अधिक जिम्मेदारी वाला पद प्राप्त कर सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान और प्रतिष्ठा सभी में वृद्धि होगी।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 22:05:1993, 01:06:1993, 30:06:1993, 28:06:1994, 22:03:1996, 13:01:1997, 13:01:1997

शनि(पूर्वाषाढ़) दशा

(22:01:1998 -- 23:07:2000)

यह अष्टोत्तरी दशा अधिक घटनापूर्ण नहीं है। यद्यपि हम बहुत अधिक स्थितियों की गणना कर रहे हैं।

शनि(उत्तराषाढ़) दशा

(23:07:2000 -- 22:01:2003)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट छठवें भाव में स्थित है जो कि प्रतिकूल त्रिक–भाव है। अतः इस दशा के दौरान परिस्थितिजन्य घटनाओं के कारण आपको कुछ गंभीर प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जो कि आपके नियंत्रण से बाहर होगा। आपको अपने कार्यस्थल पर भी कुछ समस्याओं कासामना करना पड़ सकता है तथा आप अपने वरिष्ठों या सरकारी अधिकारियों के कारण कठिनाई में पड़ सकते हैं। आपके शत्रु आपके लिए परेशानियां पैदा कर सकते हैं और आप निरंतर तनाव झेल सकते हैं। आपका व्यय आपकी आय से अधिक हो सकता है एवं आपको समय–समय पर अपनी जरूरतें पूरा करने के लिए ऋण लेना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट चौथी पद–राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप औपचारिकशिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो आप परीक्षा में सफलता की सुर्खियों में होंगे एवं प्रभावशाली शैक्षिक योग्यता प्राप्त करेंगे। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। यदि आपके व्यवसाय का कोई संबंध शैक्षिक या प्रशिक्षण संस्थान, फैशन डिजाइनिंग या आंतरिक सजावट से है तो आप अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं और धन संचय कर सकते हैं। किन्तु आपके पिता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित रख सकता है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 22:11:2000, 26:11:2000, 09:12:2000, 18:05:2001, 21:02:2002, 02:07:2002, 02:07:2002

शनि(अभिजीत) दशा

(22:01:2003 -- 24:07:2005)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट छठवें भाव में स्थित है जो कि प्रतिकूल त्रिक–भाव है। अतः इस दशा के दौरान परिस्थितिजन्य घटनाओं के कारण आपको कुछ गंभीर प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जो कि आपके नियंत्रण से बाहर होगा। आपको अपने कार्यस्थल पर भी कुछ समस्याओं कासामना करना पड़ सकता है तथा आप अपने वरिष्ठों या सरकारी अधिकारियों के कारण कठिनाई में पड़ सकते हैं। आपके शत्रु आपके लिए परेशानियां पैदा कर सकते हैं और आप निरंतर तनाव झेल सकते हैं। आपका व्यय आपकी आय से अधिक हो सकता है एवं आपको समय–समय पर अपनी जरूरतें पूरा करने के लिए ऋण लेना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट चौथी पद–राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप औपचारिकशिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो आप परीक्षा में सफलता की सुर्खियों में होंगे एवं प्रभावशाली शैक्षिक योग्यता प्राप्त करेंगे। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। यदि आपके व्यवसाय का कोई संबंध शैक्षिक या प्रशिक्षण संस्थान, फैशन डिजाइनिंग या आंतरिक सजावट से है तो आप अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं और धन संचय कर सकते हैं। किन्तु आपके पिता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित रख सकता है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 23:05:2003, 28:05:2003, 09:06:2003, 17:11:2003, 22:08:2004, 31:12:2004, 31:12:2004

शनि(श्रवण) दशा

(24:07:2005 -- 22:01:2008)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट तीसरे भाव में है जो कि कई मामलों में अनुकूल है। इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सिलसिले में कुछ छोटी यात्राएं कर सकते हैं। यदि आप रोजगार में परिवर्तन अथवा स्थानान्तरण अथवा नए घर में स्थानान्तरित होते के बारे में सोच रहे हैं तो यह अवधि आपके लिए अनुकूल है। यदि आप नौकरी में हैं तो आप बहुत अच्छा कार्य करेंगे तथा इससे भी अधिक जिम्मेदारी वाले किसी पद पर आसीन हो सकते हैं। यदि आप लेखक, सम्पादक या अनुवादक हैं तो आप सर्वाधिक प्रगति करेंगे। किन्तु यदि आप मुद्रण, प्रकाशन, विज्ञापन आदि से संबंधित व्यवसाय में हैं तो आप बहुत सम्पन्न होंगे। फिर भी, आपकी माता का स्वास्थ्य और सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ग्यारहवीं पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान व्यवसाय से प्राप्त होने वाली आपकी आय, अन्य स्रोतो से प्राप्त होने वाले लाभ तथा मित्रों के दायरे सभी में वृद्धि होगी। आपआनन्दपूर्ण मुद्रा में रहेंगे तथा अपने रिश्तेदारों व मित्रों के साथ अपने जीवन का सुखपूर्वक आनन्द प्राप्तकरेंगे। आपकी कुछ महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी एवं आपकी कुछ हार्दिक इच्छाएं पूरी होंगी। आप मनोरंजन एवं लाभ के लिए लम्बी यात्रा भी कर सकते हैं और आपके परिवार में कोई शुभ समारोह आयोजित हो सकता है। किन्तु आपकी माता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवीं पद–राशि में है तथा राशि–स्वामी सुव्यवस्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यवसाय से आय और आपके शेयर, सट्टा आदि जैसे निवेशों में भी वृद्धि होगी। आप कोई नया रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं। आपकी ख्याति में सदैव वृद्धि होगी एवं आपके मित्र आपकी आवश्यकता या जरूरत के अनुसार किसी भी प्रकार की सहायता या सहारा देने के लिए तत्पर रहेंगे। आप आनन्द और मौजमस्ती के शौकीन होंगे एवं प्रसन्नचित्त व आनन्दित मुद्रा में रहेंगे। आप काल्पनिक प्रवृति के हो सकते हैं एवं विवेकपूर्ण निवेशों से अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। मनोरंजन के क्षेत्र आपको आकर्षित कर सकते हैं। आप आनन्द और लाभ के लिए लम्बी यात्रा भी कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट सातवीं पद–राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो शादी के बन्धन में बंध सकते हैं। यदि आप साझेदारी या सहभागिता करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। यदि आपके व्यवसाय का कोई संबंध विदेशी व्यापार या विदेशों से संबंध रखने वाली कम्पनियों से है तो आप ऐसे स्रोतों से भारी लाभ प्राप्त कर सकते हैं एवं धन एकत्र कर सकते हैं।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 03:06:2006, 08:06:2006, 20:06:2006, 27:11:2006, 02:09:2007, 11:01:2008, 11:01:2008

गुरू(धनिष्ठा) दशा

(22:01:2008 -- 24:05:2014)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवें भाव में स्थित है जो कि आपके लग्न से एक त्रिकोण–भाव है।

अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर संतान और वित्तिय मामलों के संबंध में। आप अपनी अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के कारण उचित पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो आप एक लाभप्रद पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु यदि आप व्यापारी हैं तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधता ला सकते हैं अथवा साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट प्रथम पद–राशि में है। अतः आप बहुत भाग्यशाली होंगे। आप बहुत उर्जावान व सक्रिय होंगे। इस दशा के दौरान आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। आप अपनी विशेष उपलब्धियों के कारण अपने परिवार के लिए गौरव और आनन्दका स्रोत होंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आपके परिवार में कोई शुभ समारोह आयोजित हो सकता है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 20:03:2009, 31:03:2009, 02:05:2009, 12:06:2010, 19:05:2012, 16:04:2013, 16:04:2013

गुरू(शतभिषा) दशा

(24:05:2014 -- 22:09:2020)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट आपके लग्न में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलोंमें भाग्यशाली होंगे– विशेषकर परिवार और वित्तिय मामलों के संबंध में। आप बहुत उर्जावान और सक्रिय होंगे तथा अपनी अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के लिए सुविख्यात होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आपकी रूचि है तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधीकरण का कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं और/या साझेदारी या सहयोगसे लाभान्वित भी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट नौवें पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सबंध में एक लम्बी यात्रा पर जा सकते हैं। या तो आपका किसी दूरस्थ स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है या आप ऐसे किसी स्थान पर नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप अपना कोई नया उपक्रम प्रारम्भ करने की सोच रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है। आप किसी धनी और प्रभावशाली व्यक्ति से बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से कुछ समर्थन और लाभ प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट तीसरी पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सबंध में किसी यात्रा पर जा सकते हैं। या तो आपका किसी निकट स्थान पर तबादला हो सकता है या आप ऐसे किसी स्थान पर नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप अपना कोई नया उपक्रम प्रारम्भकरने की सोच रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है। आपके सगे और चचेरे अनुज, पड़ोसी एवं सहकर्मी तक आपके लिए सहयोगी व मददगार होंगे। किन्तु आपकी माता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 26:06:2014, 23:05:2015, 23:05:2015, 26:08:2017, 06:09:2017, 08:10:2017, 18:11:2018

गुरू(पूर्वाभाद्र) दशा

(22:09:2020 -- 22:01:2027)

यह अष्टोत्तरी दशा अधिक घटनापूर्ण नहीं है। यद्यपि हम बहुत अधिक स्थितियों की गणना कर रहे हैं।

राहु(उत्तरभाद्र) दशा

(22:01:2027 -- 22:01:2030)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट छठवें भाव में स्थित है जो कि प्रतिकूल त्रिक–भाव है। अतः इस दशा के दौरान परिस्थितिजन्य घटनाओं के कारण आपको कुछ गंभीर प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जो कि आपके नियंत्रण से बाहर होगा। आपको अपने कार्यस्थल पर भी कुछ समस्याओं कासामना करना पड़ सकता है तथा आप अपने वरिष्ठों या सरकारी अधिकारियों के कारण कठिनाई में पड़ सकते हैं। आपके शत्रु आपके लिए परेशानियां पैदा कर सकते हैं और आप निरंतर तनाव झेल सकते हैं। आपका व्यय आपकी आय से अधिक हो सकता है एवं आपको समय–समय पर अपनी जरूरतें पूरा करने के लिए ऋण लेना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट चौथी पद–राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप औपचारिकशिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो आप परीक्षा में सफलता की सुर्खियों में होंगे एवं प्रभावशाली शैक्षिक योग्यता प्राप्त करेंगे। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। यदि आपके व्यवसाय का कोई संबंध शैक्षिक या प्रशिक्षण संस्थान, फैशन डिजाइनिंग या आंतरिक सजावट से है तो आप अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं और धन संचय कर सकते हैं। किन्तु आपके पिता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट के नक्षत्र का स्वामी दसवें भाव में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यावसायिक संभावनाओं में काफी सुधार होगा। आप कोई नया रोजगार अथवा अधिक जिम्मेदारी वाला पद प्राप्त कर सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान और प्रतिष्ठा सभी में वृद्धि होगी।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 08:06:2027, 13:06:2027, 28:06:2027, 07:01:2028, 07:12:2028, 13:05:2029, 13:05:2029

राहु(रेवाति) दशा

(22:01:2030 -- 22:01:2033)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ग्यारहवें भाव (लाभ) में है, जो कि बहुत अनुकूल है क्योंकि यह आय और लाभ का भाव है, इसलिए आपके व्यवसाय से प्राप्त होने वाली आपकी आय में और अन्य स्रोतों से प्राप्त होने वाले लाभ में निरंतर वृद्धि होती रहेगी और आप अपने मित्रों व शुभ चिन्तकों से प्रत्यक्ष लाभ व अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त करेंगे। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान आप प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। आपकी कुछ महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी एवं आपकी कुछ हार्दिक इच्छाएं पूरी होंगी। आप मनोरंजन एवं लाभ के लिए लम्बी यात्राएं भी कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी अच्छी स्थिति में है तो आप किसी सांस्कृतिक या शैक्षिक उद्देश्य से किसी दूरस्थ स्थान अथवा विदेश तक की यात्रा कर सकते हैं। हालांकि आपकी माता का स्वास्थ्य व सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 03:08:2030, 07:01:2031, 07:01:2031, 01:02:2032, 06:02:2032, 22:02:2032, 02:09:2032

राहु(अश्विनी) दशा

(22:01:2033 -- 22:01:2036)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट छठवें भाव में स्थित है जो कि प्रतिकूल त्रिक–भाव है। अतः इस दशा के दौरान परिस्थितिजन्य घटनाओं के कारण आपको कुछ गंभीर प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जो कि आपके नियंत्रण से बाहर होगा। आपको अपने कार्यस्थल पर भी कुछ समस्याओं कासामना करना पड़ सकता है तथा आप अपने वरिष्ठों या सरकारी अधिकारियों के कारण कठिनाई में पड़ सकते हैं। आपके शत्रु आपके लिए परेशानियां पैदा कर सकते हैं और आप निरंतर तनाव झेल सकते हैं। आपका व्यय आपकी आय से अधिक हो सकता है एवं आपको समय–समय पर अपनी जरूरतें पूरा करने के लिए ऋण लेना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट चौथी पद–राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप औपचारिकशिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो आप परीक्षा में सफलता की सुर्खियों में होंगे एवं प्रभावशाली शैक्षिक योग्यता प्राप्त करेंगे। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। यदि आपके व्यवसाय का कोई संबंध शैक्षिक या प्रशिक्षण संस्थान, फैशन डिजाइनिंग या आंतरिक सजावट से है तो आप अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं और धन संचय कर सकते हैं। किन्तु आपके पिता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट के नक्षत्र का स्वामी दसवें भाव में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यावसायिक संभावनाओं में काफी सुधार होगा। आप कोई नया रोजगार अथवा अधिक जिम्मेदारी वाला पद प्राप्त कर सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान और प्रतिष्ठा सभी में वृद्धि होगी।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 17:06:2033, 22:06:2033, 07:07:2033, 16:01:2034, 16:12:2034, 22:05:2035, 22:05:2035

राहु(भरणी) दशा

(22:01:2036 -- 22:01:2039)

यह अष्टोत्तरी दशा अधिक घटनापूर्ण नहीं है। यद्यपि हम बहुत अधिक स्थितियों की गणना कर रहे हैं।

शुक्र(कृतिका) दशा

(22:01:2039 -- 22:01:2046)

यह अष्टोत्तरी दशा अधिक घटनापूर्ण नहीं है। यद्यपि हम बहुत अधिक स्थितियों की गणना कर रहे हैं।

शुक्र(रोहिणी) दशा

(22:01:2046 -- 22:01:2053)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दसवें भाव में स्थित है, जो कि आपके लग्न से केन्द्र–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अत्यंत उर्जावान व सक्रिय होंगे और अनेक मामलों में आधारभूत सुधार होगा। यदि आप औपचारिक रूप से अध्ययनरत हैं तो आप अत्यंत अधिक उन्नति करेंगे, परीक्षाओं में सफलता अर्जित करेंगे और गौरवपूर्ण योग्यता प्राप्त करेंगे। आप अपने गुणों, अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्ध्यिों के कारण उचित पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यवसाय में काफी सुधार करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन हो सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान नईं उचाईयों को छुएगा। किन्तु जैसाकि आप अपना अत्यधिक ध्यान अपने व्यवसाय की ओर लगाएंगे तो आपका घरेलु जीवन कुछ–कुछ उपेक्षित हो सकता

है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट की सूर्य के साथ 150 डिग्री की दृष्टि में है, अतः इस दशा के दौरान आपको अत्यधिक सावधान व सचेत रहना चाहिए– विशेषकर किसी व्यस्त गली से वाहन चलाकर गुजरते समय अथवा पार करते समय। अन्यथा यातायात नियमों का ध्यान दिए बिना वाहन चलाने के कारण किसीछोटी दुर्घटना का शिकार होने की संभावना है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 18:10:2047, 19:10:2048, 19:10:2048, 18:04:2051, 30:04:2051, 05:06:2051, 27:08:2052

शुक्र(मृगशिरा) दशा

(22:01:2053 -- 22:01:2060)

यह अष्टोत्तरी दशा अधिक घटनापूर्ण नहीं है। यद्यपि हम बहुत अधिक स्थितियों की गणना कर रहे हैं।

सूर्य(अरिद्रा) दशा

(22:01:2060 -- 24:07:2061)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट बारहवें भाव में स्थित है जो कि प्रतिकूल त्रिक–भाव है। अतः इस दशाके दौरान आपको अप्रत्याशित स्रोतों से उपजे आकस्मिक कारणों से कुछ गंभीर प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने कार्यस्थल पर भी कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है तथा आप अपने वरिष्ठों या सरकारी अधिकारियों के कारण कठिनाई में पड़ सकते हैं। कुछ ईर्ष्यालु लोग आपके खिलाफ साजिश कर सकते हैं जिसकी वजह से आप निरंतर तनाव झेल सकते हैं। आपका व्यय आपकी आय से अधिक हो सकता है एवं आपको बार–बार ऋण लेना पड़ सकता है। आपकोसट्टा आदि में निवेश करने अथवा ऋण देने से बचना चाहिए, क्योंकि आपके धन के अवरूद्ध होने अथवा घाटा होने की संभावना है। यदि आप अपने रोजगार को बदलने या स्थानान्तरण की सोच रहे हैं तोयह आपके लिए अनुकूल समय है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 09:04:2060, 27:06:2060, 27:06:2060, 08:01:2061, 11:01:2061, 19:01:2061, 25:04:2061

सूर्य(पुनर्वसु) दशा

(24:07:2061 -- 22:01:2063)

यह अष्टोत्तरी दशा अधिक घटनापूर्ण नहीं है। यद्यपि हम बहुत अधिक स्थितियों की गणना कर रहे हैं।

सूर्य(पुष्य) दशा

(22:01:2063 -- 23:07:2064)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट छठवें भाव में स्थित है जो कि प्रतिकूल त्रिक–भाव है। अतः इस दशा के दौरान परिस्थितिजन्य घटनाओं के कारण आपको कुछ गंभीर प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जो कि आपके नियंत्रण से बाहर होगा। आपको अपने कार्यस्थल पर भी कुछ समस्याओं कासामना करना पड़ सकता है तथा आप अपने वरिष्ठों या सरकारी अधिकारियों के कारण कठिनाई में पड़ सकते हैं। आपके शत्रु आपके लिए परेशानियां पैदा कर सकते हैं और आप निरंतर तनाव झेल सकते हैं। आपका व्यय आपकी आय से अधिक हो सकता है एवं आपको समय–समय पर अपनी जरूरतें पूरा करने

के लिए ऋण लेना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट चौथी पद–राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप औपचारिकशिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो आप परीक्षा में सफलता की सुर्खियों में होंगे एवं प्रभावशाली शैक्षिक योग्यता प्राप्त करेंगे। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। यदि आपके व्यवसाय का कोई संबंध शैक्षिक या प्रशिक्षण संस्थान, फैशन डिजाइनिंग या आंतरिक सजावट से है तो आप अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं और धन संचय कर सकते हैं। किन्तु आपके पिता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट के नक्षत्र का स्वामी दसवें भाव में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यावसायिक संभावनाओं में काफी सुधार होगा। आप कोई नया रोजगार अथवा अधिक जिम्मेदारी वाला पद प्राप्त कर सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान और प्रतिष्ठा सभी में वृद्धि होगी।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 05:04:2063, 08:04:2063, 15:04:2063, 20:07:2063, 04:01:2064, 22:03:2064, 22:03:2064

सूर्य(अश्लेषा) दशा

(23:07:2064 -- 22:01:2066)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ग्यारहवें भाव (लाभ) में है, जो कि बहुत अनुकूल है क्योंकि यह आय और लाभ का भाव है, इसलिए आपके व्यवसाय से प्राप्त होने वाली आपकी आय में और अन्य स्रोतों से प्राप्त होने वाले लाभ में निरंतर वृद्धि होती रहेगी और आप अपने मित्रों व शुभ चिन्तकों से प्रत्यक्ष लाभ व अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त करेंगे। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान आप प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। आपकी कुछ महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी एवं आपकी कुछ हार्दिक इच्छाएं पूरी होंगी। आप मनोरंजन एवं लाभ के लिए लम्बी यात्राएं भी कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी अच्छी स्थिति में है तो आप किसी सांस्कृतिक या शैक्षिक उद्देश्य से किसी दूरस्थ स्थान अथवा विदेश तक की यात्रा कर सकते हैं। हालांकि आपकी माता का स्वास्थ्य व सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 01:11:2064, 19:01:2065, 19:01:2065, 02:08:2065, 05:08:2065, 12:08:2065, 16:11:2065

चन्द्रमा(मघा) दशा

(22:01:2066 -- 22:01:2071)

यह अष्टोत्तरी दशा अधिक घटनापूर्ण नहीं है। यद्यपि हम बहुत अधिक स्थितियों की गणना कर रहे हैं।

चन्द्रमा(पुर्वफाल्गुनी) दशा

(22:01:2071 -- 22:01:2076)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दसवें भाव में स्थित है, जो कि आपके लग्न से केन्द्र–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अत्यंत उर्जावान व सक्रिय होंगे और अनेक मामलों में आधारभूत सुधार होगा। यदि आप औपचारिक रूप से अध्ययनरत हैं तो आप अत्यंत अधिक उन्नति करेंगे, परीक्षाओं में सफलता अर्जित करेंगे और गौरवपूर्ण योग्यता प्राप्त करेंगे। आप अपने गुणों, अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय

उपलब्धियों के कारण उचित पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यवसाय में काफी सुधार करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन हो सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान नईं उचांईयों को छुएगा। किन्तु जैसाकि आप अपना अत्यधिक ध्यान अपने व्यवसाय की ओर लगाएंगे तो आपका घरेलु जीवन कुछ–कुछ उपेक्षित हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट की सूर्य के साथ 150 डिग्री की दृष्टि में है, अतः इस दशा के दौरान आपको अत्यधिक सावधान व सचेत रहना चाहिए– विशेषकर किसी व्यस्त गली से वाहन चलाकर गुजरते समय अथवा पार करते समय। अन्यथा यातायात नियमों का ध्यान दिए बिना वाहन चलाने के कारण किसीछोटी दुर्घटना का शिकार होने की संभावना है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट के नक्षत्र का स्वामी पांचवें भाव में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यावसायिक संभावनाओं में काफी सुधार होगा। आप कोई नया रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप औपचारिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं और किसी परीक्षा में बैठ रहे हैं तो आप किसी व्यवहारपरक क्षेत्र में एक प्रभावशाली शैक्षिक योग्यता के साथ सफलता प्राप्त करेंगे। आपका नाम और यश दूर–दूर तक फैलेगा।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 19:04:2072, 06:01:2073, 06:01:2073, 19:10:2074, 28:10:2074, 22:11:2074, 09:10:2075

योगिनी दशा से भविष्यफल

संकटा (राहु){हस्ता} दशा

(18:12:1973 -- 09:05:1978)

योगिनी दशा चक्र की अन्तिम समयावधि प्रायः प्रतिकूल प्रतिफल उत्पन्न करती है। दशा चक्र के अन्त की पहली, दूसरी व तीसरी तिथि क्रमशः 09:05:1978ए 09:05:2014 और 09:05:2050 हैं। अतःइन तीनों तिथियों से तीन महीने आगे–पीछे तक की अवधि में आपको सावधान रहना चाहिए। इन तिथियों के पूर्वगामी कुछ महीनों के दौरान मिलने वाले परिणाम आपकी कुण्डली में स्थित राहु की अवस्था/स्थिति पर निर्भर करेगा एवं इन तिथियों के ठिक बाद के कुछ महीनों के आरम्भ के दौरान मिलने वाले परिणाम आपकी कुण्डली में स्थित चंद्रमा की अवस्था/स्थिति पर निर्भर करेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु चौथे भाव में उपस्थित है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की इसके साथयुति है अथवा इस पर दृष्टि है, जबकि किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह की ना तो इसके साथ युति हैऔर ना ही इस पर दृष्टि है। यह एक प्रतिकूल योग है। अतः आपको अत्यधिक सावधान व सचेतरहना चाहिए। आपकी फसलों या उत्पादों को हानि हो सकती है और आपकी आय में गिरावटशुः हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है। यदि आप एक पुरुष हैं, विवाहित है और एक संतान है तो आपको अपनी संतान पर चिकित्सीय उपचारके :प में एक बड़ी रकम खर्च करनी पड़ सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में राहु पंचमेश के नक्षत्र में स्थित है, (या पंचमेश राहु के नक्षत्र में स्थित है)। यह आपके पेशे का कारक है। साथ ही यह एक चर राशि या उभय राशि में भी स्थित है और पंचमेश भी समान :प से व्यवस्थित है। अतः यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। योगिनी राहु दशा कीअवधि निश्चित :प से आपके लिए अनेक लाभ एवं कुछ अनुकूल परिवर्तन लाएगी। आपको उचित सम्मान प्राप्त होगा एवं आपके पद व वेतन में शीघ्रता से वृद्धि होगी। आप अनेक स्थानों परलम्बे समय तक रह सकते हैं एवं अनेक दूरस्थ स्थानों की यात्राएं भी कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु, केतु के नक्षत्र में स्थित है। यह अधिक अनुकूल योग नहीं है। आपकोसावधान व सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि संभवतः आपको किसी गंभीर दुर्घटना अथवा अशुभ घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है। योगिनी राहु दशा के दूसरे वर्ष के प्रारम्भ में एवं आठवें वर्ष के अन्त के दौरान आपको अत्यधिक सावधान रहना चाहिए।

मंगला (चन्द्रमा){चित्रा} दशा

(09:05:1978 -- 09:05:1979)

यह योगिनी दशा अधिक घटनापूर्ण नहीं है। यद्यपि हम बहुत अधिक स्थितियों की गणना कर रहे हैं।

पिंगला (सुर्य){स्वाति} दशा

(09:05:1979 -- 09:05:1981)

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य चौथे भाव में उपस्थित है। अतः योगिनी सूर्य दशा की अवधि के दौरानआप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। यदि आप अध्ययन कर रहे हैं तो अच्छी प्रगति करेंगे। यदि आप रोजगार की तलाश में हैं तो आपको आसानी से कोई रोजगार मिल जाएगा, जो कि सरकारी क्षेत्र में हो सकता है। आप अपनी विश्वसनीयता और सम्मान स्थापित करने का प्रयास करेंगे और आदतन अपने प्रयत्नों को अपना वांछित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए दिशा प्रदान करेंगे। जैसाकि आप अपने व्यावसायिक उपलब्धियों को और अधिक मूल्यवान व महत्वपूर्ण बनाना चाहेंगे, इसलिए आपका घरेलू जीवन आपकी इच्छित उपेक्षा के कारण उचित :प से आवश्यक देखभाल व स्नेह ना मिलने से निरंतर पीड़ित रह सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है, जबकि किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल नहीं है। अतः योगिनी सूर्य दशा कीअवधि आपके लिए काफी आनन्ददायक साबित होगी। यदि आपके पेशे का संबंध आम जनता सेहै तो आपकी उनके साथ अच्छी घनिष्ठता होगी और आपकी लोकप्रियता में धीरे–धीरे वृद्धि होगी।

धन्या (बृहस्पति){विशाखा} दशा

(09:05:1981 -- 08:05:1984)

वर्तमान में आपकी योगिनी वृहस्पति दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में वृहस्पति पांचवें भाव में उपस्थित है। अतः आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप एक विद्वान, ज्ञानी, विवेकशील औरधार्मिक प्रवृत्ति के उच्च आदर्शों व सिद्धान्तों वाले व्यक्ति होंगे। लोग आपको सद्‌गुणों की प्रतिमूर्ति समझेंगे। अपने पेशे के क्षेत्र में आप एक प्रतिष्ठित पद प्राप्त करेंगे। सामाजिक :प से भी आपको बहुत सम्मान प्राप्त होगा। जैसाकि गुरु की ग्यारहवें भाव पर दृष्टि है, इसलिए आपके व्यवसाय से होने वाली आय में वास्तविक वृद्धि होगी। आप योग्य संतान प्राप्त करने के मामले में अत्यंत भाग्यशाली होंगे और आपके पुत्रों की संख्या अधिक होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी वृहस्पति दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकताहै।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल 150 डिग्री दृष्टि में शामिल है और यह दृष्टि पास की है। अतः योगिनी बृहस्पति दशा की अवधि आपके लिए अधिक कष्टकारी हो सकती है और इस दशा के दौरान आपको अपने व्यावसायिक जीवन में एक बुरे दौर से गुजरना पड़ सकता है। आपके घर–परिवार में कुछ विचलित करने वाली घटनाएं हो सकती हैं और आप संघर्ष व लड़ाइ–झगड़े कर सकते हैं। आपको सावधान रहना चाहिए और अपने वरिष्ठों/अधिकारियों से मतभेद उत्पन्न करने से बचना चाहिए तथा अन्य लोगों के साथ भी किसी प्रकार के विवाद में उलझने से बचना चाहिए। इस दशा के आठवें माह के आस–पास से चीजें

स्वतः ही साफ नजर आने लगेंगी और आपको स्वयं को प्रभावशाली :प में व्यक्त करने के लिए औरअच्छे अवसर मिलने प्रारम्भ हो जाएंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है, जबकि किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल नहीं है। अतः योगिनी बृहस्पति दशाकी अवधि आपके लिए काफी आनन्ददायक साबित होगी। यदि आपके पेशे का संबंध आम जनता से है तो आपकी उनके साथ अच्छी घनिष्ठता होगी और आपकी लोकप्रियता में धीरे–धीरे वृद्धि होगी।

भ्रमरी (मंगल){अनुराधा} दशा

(08:05:1984 -- 08:05:1988)

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल अष्टमेश है और यह स्वय आठवें भाव में स्थित है। अतः आप वित्तियमामलों में अत्यंत भाग्यशाली होंगे। संभवतः आपको पैतृक तथा बीमा स्रोतो से भी उत्तम लाभ की प्राप्ति हो सकती है। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा करेंगे, आपकी आय में वृद्धि होगी और आप विविधता लाने के लिए किसी नए क्षेत्र को अपना सकते हैं। आपके छोटे भाई–बहन भी अच्छा कार्य करेंगे और आपकी सक्रियता से सहायता करेंगे। हालांकि आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पंचमेश के निकट है एवं इससे काफी आगे है (इससे अलग है)। अतः आपका स्थानान्तरण किसी असुविधाजनक स्थान पर हो सकता है अथवा आप अपना रोजगार तक खो सकते हैं। रोजगार के परिवर्तन की स्थिति में आपको बहुत सावधान रहना चाहिए और अपनी अपेक्षाओं में उदार भी होना चाहिए, अन्यथा योगिनी मंगल दशा के प्रारम्भ में किसी समय आप हाथ आए सुनहरे अवसर को खो सकते हैं– जिसके लिए आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं।अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं और/या अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल वर्ग दृष्टि में शामिलहै और यह दृष्टि पास की है। अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि आपके लिए कष्टकारी होसकती है और आपको अनेक संघर्ष व लड़ाई–झगड़ों का सामना करना पड़ सकता है। आपके घर–परिवार में भी कुछ विचलित करने वाली घटनाएं हो सकती हैं और आप संघर्ष व झगड़ा कर सकते हैं। आपको बहुत सावधान रहना चाहिए एवं अपने किराएदार अथवा मकान–मालिक से किसीप्रकार की समस्या में पड़ने से बचना चाहिए। इस दशा के प्रारम्भ के तीसरे माह के अन्त में एवं चौथे माह के प्रारम्भ में आपको किसी भी प्रकार के सम्पत्ति संबंधी विवाद में फंसने से भी बचनाचाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल

नहीं है, जबकि यह एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि आपके लिए कुछ–कुछ कष्टकारी साबित हो सकती है। सामान्यतः महिलाओं को (परिवार व संबंधियों सहित) आप से अधिक लगाव नहीं हो सकता है। यदि आपके पेशे का संबंध आम जनता से है तो आपको उनसे कुछ असहयोग का सामना करना पड़ सकता है और आपकी लोकप्रियता धीरे–धीरे कम हो सकती है। किन्तु यह बुरा दौर मात्र अस्थाई :प से होगा, जो कि शीघ्र ही स्वतः समाप्त हो जाएगा।

भद्रिका (बुध){ज्येष्ठा} दशा

(08:05:1988 -- 09:05:1993)

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध तीसरे भाव में उपस्थित है, अतः आप अनेक निकट स्थानों की यात्राएं करेंगे। यदि आपके पेशे का कुछ संबंध अखबार, पत्रिका, सम्पादन, संचार, कुरियर सेवा या यातायात से है तो आप असाधारण प्रगति करेंगे। इस दशा के दौरान आपके आय और व्यय दोनों में व्यापक उतार–चढ़ाव आ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध के योग–स्फूट नक्षत्र का स्वामी तीसरे भाव में उपस्थित है। अतः आपका स्थानान्तरण या रोजगार में परिवर्तन हो सकता है। आपको किसी निकट स्थान पर जाना पड़ सकता है और निवास स्थान भी उसी के आस–पास कहीं स्थानान्तरित हो सकता है। जैसाकिसंबंधित ग्रह एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है, इसलिए यह परिवर्तन आपको उदार अतिरिक्त सुविधाओं के साथ–साथ उत्तम लाभ भी प्रदान करेगा। परिणामस्वःप आपके रहन–सहन के स्तर में काफी सुधार होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी बुध दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकताहै।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी बुध दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अन्यथा दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय कासंबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

उल्का (शनि){मूला} दशा

(09:05:1993 -- 09:05:1999)

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि की योगिनी दशा चल रही है और इसके योग–स्फूट का स्वामी केतु है। जैसाकि ये दोनों ही घोर अशुभ ग्रह हैं और परस्पर विरोधी हैं। इसलिए आपको इस दशा की अवधि के दौरान कुछ कष्ट हो सकते हैं। लगभग इसकी 1 वर्ष, 6 माह की अन्तिम अवधि में

स्थिति और बिगड़ सकती है। जैसाकि ये दोनों ग्रह आय के प्रवाह को दबा सकते हैं, इसलिए इसदशा के दौरान वित्तिय आघात अथवा धन के अवःद्ध होने की प्रबल संभावना है, जबकि इस दशा की अन्तिम अवधि के दौरान आपकी आय के सामान्य स्रोत शोषित हो सकते हैं अथवा अस्थाईःप से उनमें व्यवधान उत्पन्न हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि की योगिनी दशा चल रही है और इसके योग–स्फूट का स्वामी केतु है। जैसाकि ये दोनों ही घोर अशुभ ग्रह हैं और परस्पर विरोधी हैं। इसलिए आपको इस दशा की अवधि के दौरान कुछ कष्ट हो सकते हैं। लगभग इसकी 1 वर्ष, 6 माह की अन्तिम अवधि में स्थितिऔर बिगड़ सकती है। जैसाकि ये दोनों ग्रह आय के प्रवाह को दबा सकते हैं, इसलिए इस दशा के दौरान वित्तिय आघात अथवा धन के अवःद्ध होने की प्रबल संभावना है, जबकि इस दशा की अन्तिम अवधि के दौरान आपकी आय के सामान्य स्रोत शोषित हो सकते हैं अथवा अस्थाई :प से उनमें व्यवधान उत्पन्न हो सकता है। जैसाकि आपकी कुण्डली में शनि वक्री है, इसलिए इस दशा के प्रारम्भ के चतुर्थांश में कभी आपके घर लौटते समय किसी प्रकार की दुर्घटना का शिकार होने की संभावना है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि दसवें भाव में उपस्थित है, अतः सावधानी और सतर्कता आपका नारा होना चाहिए तथा आपको सदैव सजग रहना चाहिए, ताकि आप कोई गलत कदम ना उठाएं या संशयपूर्ण तरीका ना अपनाएं। संभवतः आपका आगामी समय काफी कठिन हो सकता है और भ्रम आपको बर्बाद कर सकते हैं। साथ ही आपको शेयर, सट्टा आदि जैसे आनुमानित निवेशों से बचनाचाहिए तथा सभी प्रकार के जोखिमपूर्ण व्यवसायों से सावधान रहना चाहिए। यदि आप किसी नए रोजगार से जुड़ने जा रहे हैं तो आपको इससे पहले भली–भांति विचार कर लेना चाहिए, क्योंकि आपकी कल्पना से पूर्व ही आपको इससे निकाले जाने की संभावना है। यदि आप व्यापार में हैं तो आपको वित्तिय आघात लग सकता है, जो कि काफी आकस्मिक और अप्रत्याशित :प से उत्पन्न हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के योग–स्फूट नक्षत्र के स्वामी की एक ग्रह के साथ युति है, जो किपंचमेश है। यदि आप नौकरी में हैं तो आपको संभवतः एक नए रोजगार अथवा पदोन्नति की प्राप्ति हो सकती है। यदि आप व्यापार में हैं तो आप उल्लेखनीय प्रगति की उम्मीद कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है, जबकि किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल नहीं है। अतः योगिनी शनि दशा कीअवधि आपके लिए काफी आनन्ददायक साबित होगी। यदि आपके पेशे का संबंध आम जनता सेहै तो आपकी उनके साथ अच्छी घनिष्ठता होगी और आपकी लोकप्रियता में विशेष :प से वृद्धि होगी।

सिद्धा (शुक्र){पूर्वाषाढ़} दशा
(09:05:1999 -- 09:05:2006)

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र पांचवें भाव में उपस्थित है। अतः आपका आगामी समय बहुत आनन्दपूर्ण होगा। यदि आप अविवाहित हैं तो आपको किसी से प्रेम हो सकता है। किन्तु यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना कर रहे हैं तो एक पौराणिक शक्ति आपको एक दैवीय उपहार

प्रदान करने वाली है– संभवतः एक सुन्दर कन्या। यदि आप एक रोजगार की तलाश में हैं तो आपशीघ्र ही एक लाभप्रद नौकरी पाने में सक्षम हो सकते हैं। यदि आप व्यापार में हैं तो आपकी आय में वास्तविक :प से वृद्धि होगी। आनुमानिक निवेशों और मनोरंजन के क्षेत्रों में भी आपका :झानहो सकता है और यदि आपके पेशे का कोई संबंध इन क्षेत्रों से है तो आपकी बहुत सार्थक प्रगति होगी।

संकटा (राहु){उत्तराषाढ़} दशा

(09:05:2006 -- 09:05:2014)

योगिनी दशा चक्र की अन्तिम समयावधि प्रायः प्रतिकूल प्रतिफल उत्पन्न करती है। दशा चक्र के अन्त की पहली, दूसरी व तीसरी तिथि क्रमशः 09:05:1978ए 09:05:2014 और 09:05:2050 हैं। अतःइन तीनों तिथियों से तीन महीने आगे–पीछे तक की अवधि में आपको सावधान रहना चाहिए। इन तिथियों के पूर्वगामी कुछ महीनों के दौरान मिलने वाले परिणाम आपकी कुण्डली में स्थित राहु की अवस्था/स्थिति पर निर्भर करेगा एवं इन तिथियों के ठिक बाद के कुछ महीनों के आरम्भ के दौरान मिलने वाले परिणाम आपकी कुण्डली में स्थित चंद्रमा की अवस्था/स्थिति पर निर्भर करेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु चौथे भाव में उपस्थित है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की इसके साथयुति है अथवा इस पर दृष्टि है, जबकि किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह की ना तो इसके साथ युति हैऔर ना ही इस पर दृष्टि है। यह एक प्रतिकूल योग है। अतः आपको अत्यधिक सावधान व सचेतरहना चाहिए। आपकी फसलों या उत्पादों को हानि हो सकती है और आपकी आय में गिरावटशु: हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है। यदि आप एक पुरुष हैं, विवाहित है और एक संतान है तो आपको अपनी संतान पर चिकित्सीय उपचारके :प में एक बड़ी रकम खर्च करनी पड़ सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में राहु पंचमेश के नक्षत्र में स्थित है, (या पंचमेश राहु के नक्षत्र में स्थित है)। यह आपके पेशे का कारक है। साथ ही यह एक चर राशि या उभय राशि में भी स्थित है और पंचमेश भी समान :प से व्यवस्थित है। अतः यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। योगिनी राहु दशा कीअवधि निश्चित :प से आपके लिए अनेक लाभ एवं कुछ अनुकूल परिवर्तन लाएगी। आपको उचित सम्मान प्राप्त होगा एवं आपके पद व वेतन में शीघ्रता से वृद्धि होगी। आप अनेक स्थानों परलम्बे समय तक रह सकते हैं एवं अनेक दूरस्थ स्थानों की यात्राएं भी कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु, केतु के नक्षत्र में स्थित है। यह अधिक अनुकूल योग नहीं है। आपकोसावधान व सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि संभवतः आपको किसी गंभीर दुर्घटना अथवा अशुभ घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है। योगिनी राहु दशा के दूसरे वर्ष के प्रारम्भ में एवं आठवें वर्ष के अन्त के दौरान आपको अत्यधिक सावधान रहना चाहिए।

मंगला (चन्द्रमा){श्रवण} दशा

(09:05:2014 -- 09:05:2015)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है।

अतः योगिनी चंद्र दशा की अवधि बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान आप अत्यंत उन्नति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक या एक से अधिक शुभ समारोहों का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं।अतः योगिनी चंद्र दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं व अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल वर्ग दृष्टि में शामिलहै और यह दृष्टि पास की है। अतः योगिनी चंद्र दशा की अवधि आपके लिए कष्टकारी हो सकती है और इस दशा के दौरान आपको संघर्ष व लड़ाई–झगड़ों का सामना करना पड़ सकता है। आपके घर–परिवार में कुछ विचलित करने वाली घटनाएं हो सकती हैं एवं आप बहुत तनावपूर्णहो सकते हैं। योगिनी चंद्र दशा की अवधि के प्रारम्भ के तीसरे माह के अन्त में और चौथे माह के प्रारम्भ में, आपको सावधान रहना चाहिए, आपको अपने किराएदार या मकान–मालिक के साथ किसी समस्या से बचना चाहिए एवं किसी प्रकार के सम्पत्ति विवाद में उलझने से बचना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी चंद्र दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

पिंगला (सुर्य){धनिष्ठा} दशा

(09:05:2015 -- 09:05:2017)

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य चौथे भाव में उपस्थित है। अतः योगिनी सूर्य दशा की अवधि के दौरानआप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। यदि आप अध्ययन कर रहे हैं तो अच्छी प्रगति करेंगे। यदि आप रोजगार की तलाश में हैं तो आपको आसानी से कोई रोजगार मिल जाएगा, जो कि सरकारी क्षेत्र में हो सकता है। आप अपनी विश्वसनीयता और सम्मान स्थापित करने का प्रयास करेंगे और आदतन अपने प्रयत्नों को अपना वांछित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए दिशा प्रदान करेंगे। जैसाकि आप अपने व्यावसायिक उपलब्धियों को और अधिक मूल्यवान व महत्वपूर्ण बनाना चाहेंगे, इसलिए आपका घरेलू जीवन आपकी इच्छित उपेक्षा के कारण उचित :प से आवश्यक देखभाल व स्नेह ना मिलने से निरंतर पीड़ित रह सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं।अतः योगिनी सूर्य दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं व अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता

है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल नहींहै, जबकि यह एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी सूर्यदशा की अवधि आपके लिए कुछ–कुछ कष्टकारी साबित हो सकती है। महिलाओं को आप से सामान्यतः अधिक लगाव नहीं हो सकता है। यदि आपके पेशे का संबंध आम जनता से है तो आपको उनसे सहयोग प्राप्त नहीं हो सकता है और आपकी लोकप्रियता धीरे–धीरे कम हो सकती है। किन्तु यह मात्र एक अस्थाई दौर है, जो कि शीघ्र ही गुजर जाएगा।

धन्या (बृहस्पति){शतभिषा} दशा
(09:05:2017 -- 08:05:2020)

वर्तमान में आपकी योगिनी वृहस्पति दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में वृहस्पति पांचवें भाव में उपस्थित है। अतः आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप एक विद्वान, ज्ञानी, विवेकशील औरधार्मिक प्रवृत्ति के उच्च आदर्शों व सिद्धान्तों वाले व्यक्ति होंगे। लोग आपको सद्गुणों की प्रतिमूर्ति समझेंगे। अपने पेशे के क्षेत्र में आप एक प्रतिष्ठित पद प्राप्त करेंगे। सामाजिक :प से भी आपको बहुत सम्मान प्राप्त होगा। जैसाकि गुरु की ग्यारहवें भाव पर दृष्टि है, इसलिए आपके व्यवसाय से होने वाली आय में वास्तविक वृद्धि होगी। आप योग्य संतान प्राप्त करने के मामले में अत्यंत भाग्यशाली होंगे और आपके पुत्रों की संख्या अधिक होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी वृहस्पति दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकताहै।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं।अतः योगिनी वृहस्पति दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं और/या अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी बृहस्पति दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

भ्रमरी (मंगल){पूर्वाभाद्र} दशा
(08:05:2020 -- 08:05:2024)

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल अष्टमेश है और यह स्वय आठवें भाव में स्थित है। अतः आप वित्तियमामलों में अत्यंत भाग्यशाली होंगे। संभवतः आपको पैतृक तथा बीमा स्रोतो से भी उत्तम लाभ की प्राप्ति हो सकती है। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा करेंगे, आपकी आय में वृद्धि होगी और आप विविधता लाने के लिए किसी नए क्षेत्र को अपना सकते हैं। आपके छोटे भाई–बहन भी अच्छा कार्य करेंगे और आपकी सक्रियता से सहायता करेंगे। हालांकि आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकताहै।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी मंगल दशा केदौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय कासंबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

भद्रिका (बुध){उत्तरभाद्र} दशा

(08:05:2024 -- 09:05:2029)

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध तीसरे भाव में उपस्थित है, अतः आप अनेक निकट स्थानों की यात्राएं करेंगे। यदि आपके पेशे का कुछ संबंध अखबार, पत्रिका, सम्पादन, संचार, कुरियर सेवा या यातायात से है तो आप असाधारण प्रगति करेंगे। इस दशा के दौरान आपके आय और व्यय दोनों में व्यापक उतार–चढ़ाव आ सकता है।

उल्का (शनि){रेवति} दशा

(09:05:2029 -- 09:05:2035)

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि दसवें भाव में उपस्थित है, अतः सावधानी और सतर्कता आपका नारा होना चाहिए तथा आपको सदैव सजग रहना चाहिए, ताकि आप कोई गलत कदम ना उठाएं या संशयपूर्ण तरीका ना अपनाएं। संभवतः आपका आगामी समय काफी कठिन हो सकता है और भ्रम आपको बर्बाद कर सकते हैं। साथ ही आपको शेयर, सट्टा आदि जैसे आनुमानित निवेशों से बचनाचाहिए तथा सभी प्रकार के जोखिमपूर्ण व्यवसायों से सावधान रहना चाहिए। यदि आप किसी नए रोजगार से जुड़ने जा रहे हैं तो आपको इससे पहले भली–भांति विचार कर लेना चाहिए, क्योंकि आपकी कल्पना से पूर्व ही आपको इससे निकाले जाने की संभावना है। यदि आप व्यापार में हैं तो आपको वित्तिय आघात लग सकता है, जो कि काफी आकस्मिक और अप्रत्याशित :प से उत्पन्न हो सकता

है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के योग–स्फूट नक्षत्र के स्वामी की एक ग्रह के साथ युति है, जो किदशमेश है। यदि आप नौकरी में हैं तो आपको संभवतः एक नए रोजगार अथवा पदोन्नति की प्राप्ति हो सकती है। यदि आप व्यापार में हैं तो आप उल्लेखनीय प्रगति की करेंगे। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में काफी वृद्धि होगी और आपका नाम व यश दूर–दूर तक फैलेगा।

सिद्धा (शुक्र){अश्विनी} दशा

(09:05:2035 -- 09:05:2042)

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र पांचवें भाव में उपस्थित है। अतः आपका आगामी समय बहुत आनन्दपूर्ण होगा। यदि आप अविवाहित हैं तो आपको किसी से प्रेम हो सकता है। किन्तु यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना कर रहे हैं तो एक पौराणिक शक्ति आपको एक दैवीय उपहार प्रदान करने वाली है– संभवतः एक सुन्दर कन्या। यदि आप एक रोजगार की तलाश में हैं तो आपशीघ्र ही एक लाभप्रद नौकरी पाने में सक्षम हो सकते हैं। यदि आप व्यापार में हैं तो आपकी आय में वास्तविक :प से वृद्धि होगी। आनुमानिक निवेशों और मनोरंजन के क्षेत्रों में भी आपका :झानहो सकता है और यदि आपके पेशे का कोई संबंध इन क्षेत्रों से है तो आपकी बहुत सार्थक प्रगति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी शुक्र दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकताहै।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं।अतः योगिनी शुक्र दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं या अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी शुक्र दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

संकटा (राहु){भरणी} दशा

(09:05:2042 -- 09:05:2050)

योगिनी दशा चक्र की अन्तिम समयावधि प्रायः प्रतिकूल प्रतिफल उत्पन्न करती है। दशा चक्र के

अन्त की पहली, दूसरी व तीसरी तिथि क्रमशः 09:05:1978ए 09:05:2014 और 09:05:2050 हैं। अतःइन तीनों तिथियों से तीन महीने आगे–पीछे तक की अवधि में आपको सावधान रहना चाहिए। इन तिथियों के पूर्वगामी कुछ महीनों के दौरान मिलने वाले परिणाम आपकी कुण्डली में स्थित राहु की अवस्था/स्थिति पर निर्भर करेगा एवं इन तिथियों के ठिक बाद के कुछ महीनों के आरम्भ के दौरान मिलने वाले परिणाम आपकी कुण्डली में स्थित चंद्रमा की अवस्था/स्थिति पर निर्भर करेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु चौथे भाव में उपस्थित है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की इसके साथयुति है अथवा इस पर दृष्टि है, जबकि किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह की ना तो इसके साथ युति हैऔर ना ही इस पर दृष्टि है। यह एक प्रतिकूल योग है। अतः आपको अत्यधिक सावधान व सचेतरहना चाहिए। आपकी फसलों या उत्पादों को हानि हो सकती है और आपकी आय में गिरावटशुः हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है। यदि आप एक पुरुष हैं, विवाहित है और एक संतान है तो आपको अपनी संतान पर चिकित्सीय उपचारके :प में एक बड़ी रकम खर्च करनी पड़ सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में राहु पंचमेश के नक्षत्र में स्थित है, (या पंचमेश राहु के नक्षत्र में स्थित है)। यह आपके पेशे का कारक है। साथ ही यह एक चर राशि या उभय राशि में भी स्थित है और पंचमेश भी समान :प से व्यवस्थित है। अतः यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। योगिनी राहु दशा कीअवधि निश्चित :प से आपके लिए अनेक लाभ एवं कुछ अनुकूल परिवर्तन लाएगी। आपको उचित सम्मान प्राप्त होगा एवं आपके पद व वेतन में शीघ्रता से वृद्धि होगी। आप अनेक स्थानों परलम्बे समय तक रह सकते हैं एवं अनेक दूरस्थ स्थानों की यात्राएं भी कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु, केतु के नक्षत्र में स्थित है। यह अधिक अनुकूल योग नहीं है। आपकोसावधान व सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि संभवतः आपको किसी गंभीर दुर्घटना अथवा अशुभ घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है। योगिनी राहु दशा के दूसरे वर्ष के प्रारम्भ में एवं आठवें वर्ष के अन्त के दौरान आपको अत्यधिक सावधान रहना चाहिए।

मंगला (चन्द्रमा){कृतिका} दशा
(09:05:2050 -- 09:05:2051)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं।अतः योगिनी चंद्र दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं व अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल नहींहै, जबकि यह एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी चंद्रदशा की अवधि आपके लिए कुछ–कुछ कष्टकारी साबित हो सकती है। महिलाओं को आप से सामान्यतः अधिक लगाव नहीं हो सकता है। यदि आपके पेशे का संबंध आम जनता से है तो आपको उनसे सहयोग प्राप्त नहीं हो सकता है और आपकी लोकप्रियता धीरे–धीरे कम हो सकती है। किन्तु यह मात्र एक अस्थाई दौर है और गुजर जाएगा।

पिंगला (सुर्य){रोहिणी} दशा

(09:05:2051 -- 09:05:2053)

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य चौथे भाव में उपस्थित है। अतः योगिनी सूर्य दशा की अवधि के दौरानआप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। यदि आप अध्ययन कर रहे हैं तो अच्छी प्रगति करेंगे। यदि आप रोजगार की तलाश में हैं तो आपको आसानी से कोई रोजगार मिल जाएगा, जो कि सरकारी क्षेत्र में हो सकता है। आप अपनी विश्वसनीयता और सम्मान स्थापित करने का प्रयास करेंगे और आदतन अपने प्रयत्नों को अपना वांछित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए दिशा प्रदान करेंगे। जैसाकि आप अपने व्यावसायिक उपलब्धियों को और अधिक मूल्यवान व महत्वपूर्ण बनाना चाहेंगे, इसलिए आपका घरेलू जीवन आपकी इच्छित उपेक्षा के कारण उचित :प से आवश्यक देखभाल व स्नेह ना मिलने से निरंतर पीड़ित रह सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी सूर्य दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अपने सभी मामलों में अत्यंत उन्नति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक या एक से अधिक शुभ समारोहों का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं।अतः योगिनी सूर्य दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं व अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल वर्ग दृष्टि में शामिलहै और यह दृष्टि पास की है। अतः योगिनी सूर्य दशा की अवधि आपके लिए काफी कष्टकारी हो सकती है। इस दशा के दौरान आपको संघर्ष व लड़ाई–झगड़ा करना पड़ सकता है।आपके घर–परिवार में कुछ विचलित करने वाली घटनाएं हो सकती हैं एवं आप बहुत अप्रसन्न हो सकते हैं। आपको बहुत सावधान व सतर्क रहना चाहिए एवं अपने किराएदार अथवा मकान–मालिक से किसी प्रकार की समस्या में पड़ने से बचना चाहिए। योगिनी सूर्य दशा की प्रारम्भके तीसरे माह के अन्त में एवं चौथे माह के प्रारम्भ के दौरान आपको किसी भी प्रकार के सम्पत्ति संबंधी विवाद में फंसने से भी बचना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल 150 डिग्री दृष्टि में शामिल है और यह दृष्टि पास की है। अतः योगिनी सूर्य दशा की अवधि आपके लिए अधिक कष्टकारी हो सकती है और इस दशा के दौरान आपको अपने व्यावसायिक जीवन में एक बुरे दौर से गुजरना पड़ सकता है। आपके घर–परिवार में कुछ विचलित करने वाली घटनाएं हो सकती हैं और आप संघर्ष व लड़ाइ–झगड़े कर सकते हैं। आपको सावधान रहना चाहिए और अपने वरिष्ठों/अधिकारियों से मतभेद उत्पन्न करने से बचना चाहिए तथा दूसरों के साथ भी किसी प्रकारके सम्पत्ति संबंधी विवाद होने की संभावना से बचना चाहिए। योगिनी सूर्य दशा के प्रारम्भ में, आठवें माह के आस–पास से चीजें स्वतः ही साफ नजर आने लगेंगी और आपको स्वयं को प्रभावशाली :प में व्यक्त करने के लिए और अच्छे अवसर मिलने प्रारम्भ हो

जाएंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी सूर्य दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

धन्या (बृहस्पति){मृगशिरा} दशा

(09:05:2053 -- 08:05:2056)

वर्तमान में आपकी योगिनी वृहस्पति दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में वृहस्पति पांचवें भाव में उपस्थित है। अतः आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप एक विद्वान, ज्ञानी, विवेकशील औरधार्मिक प्रवृत्ति के उच्च आदर्शों व सिद्धान्तों वाले व्यक्ति होंगे। लोग आपको सद्गुणों की प्रतिमूर्ति समझेंगे। अपने पेशे के क्षेत्र में आप एक प्रतिष्ठित पद प्राप्त करेंगे। सामाजिक :प से भी आपको बहुत सम्मान प्राप्त होगा। जैसाकि गुरु की ग्यारहवें भाव पर दृष्टि है, इसलिए आपके व्यवसाय से होने वाली आय में वास्तविक वृद्धि होगी। आप योग्य संतान प्राप्त करने के मामले में अत्यंत भाग्यशाली होंगे और आपके पुत्रों की संख्या अधिक होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है, जबकि किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल नहीं है। अतः योगिनी बृहस्पति दशाकी अवधि आपके लिए काफी आनन्ददायक साबित होगी। यदि आपके पेशे का संबंध आम जनता से है तो आपकी उनके साथ अच्छी घनिष्ठता होगी और आपकी लोकप्रियता में धीरे–धीरे वृद्धि होगी।

भ्रमरी (मंगल){अरिद्रा} दशा

(08:05:2056 -- 08:05:2060)

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल अष्टमेश है और यह स्वय आठवें भाव में स्थित है। अतः आप वित्तियमामलों में अत्यंत भाग्यशाली होंगे। संभवतः आपको पैतृक तथा बीमा स्रोतो से भी उत्तम लाभ की प्राप्ति हो सकती है। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा करेंगे, आपकी आय में वृद्धि होगी और आप विविधता लाने के लिए किसी नए क्षेत्र को अपना सकते हैं। आपके छोटे भाई–बहन भी अच्छा कार्य करेंगे और आपकी सक्रियता से सहायता करेंगे। हालांकि आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता

है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं।अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं और/या अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल वर्ग दृष्टि में शामिलहै और यह दृष्टि पास की है। अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि आपके लिए कष्टकारी होसकती है और आपको अनेक संघर्ष व लड़ाई–झगड़ों का सामना करना पड़ सकता है। आपके घर–परिवार में भी कुछ विचलित करने वाली घटनाएं हो सकती हैं और आप संघर्ष व झगड़ा कर सकते हैं। आपको बहुत सावधान रहना चाहिए एवं अपने किराएदार अथवा मकान–मालिक से किसीप्रकार की समस्या में पड़ने से बचना चाहिए। इस दशा के प्रारम्भ के तीसरे माह के अन्त में एवं चौथे माह के प्रारम्भ में आपको किसी भी प्रकार के सम्पत्ति संबंधी विवाद में फंसने से भी बचनाचाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल 150 डिग्री दृष्टि में शामिल है और यह दृष्टि पास की है। अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि आपके लिए अधिक कष्टकारी हो सकती है और इस दशा के दौरान आपको अपने व्यावसायिक जीवन में एक बुरे दौर से गुजरना पड़ सकता है। आपके घर–परिवार में कुछ विचलित करने वाली घटनाएं हो सकती हैं और आप संघर्ष व लड़ाइ–झगड़े कर सकते हैं। आपको सावधान रहना चाहिए और अपने वरिष्ठों/अधिकारियों से मतभेद उत्पन्न करने से बचना चाहिए तथा अन्य लोगों के साथ भी किसी प्रकार के विवाद में उलझने से बचना चाहिए। इस दशा के आठवें माह के आस–पास से चीजें स्वतः ही साफ नजर आने लगेंगी और आपको स्वयं को प्रभावशाली :प में व्यक्त करने के लिए औरअच्छे अवसर मिलने प्रारम्भ हो जाएंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी मंगल दशा केदौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय कासंबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

भद्रिका (बुध){पुनर्वसु} दशा

(08:05:2060 -- 09:05:2065)

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध तीसरे भाव में उपस्थित है, अतः आप अनेक निकट स्थानों की यात्राएं करेंगे। यदि आपके पेशे का कुछ संबंध अखबार, पत्रिका, सम्पादन, संचार, कुरियर सेवा या यातायात से है तो आप असाधारण प्रगति करेंगे। इस दशा के दौरान आपके आय और व्यय दोनों में व्यापक उतार–चढ़ाव आ सकता

है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है, जबकि किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल नहीं है। अतः योगिनी बुध दशा की अवधि आपके लिए काफी आनन्ददायक साबित होगी। यदि आपके पेशे का संबंध आम जनता से हैतो आपकी उनके साथ अच्छी घनिष्ठता होगी और आपकी लोकप्रियता में धीरे–धीरे वृद्धि होगी।

उल्का (शनि){पुष्य} दशा

(09:05:2065 -- 09:05:2071)

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि दसवें भाव में उपस्थित है, अतः सावधानी और सतर्कता आपका नारा होना चाहिए तथा आपको सदैव सजग रहना चाहिए, ताकि आप कोई गलत कदम ना उठाएं या संशयपूर्ण तरीका ना अपनाएं। संभवतः आपका आगामी समय काफी कठिन हो सकता है और भ्रम आपको बर्बाद कर सकते हैं। साथ ही आपको शेयर, सट्टा आदि जैसे आनुमानित निवेशों से बचनाचाहिए तथा सभी प्रकार के जोखिमपूर्ण व्यवसायों से सावधान रहना चाहिए। यदि आप किसी नए रोजगार से जुड़ने जा रहे हैं तो आपको इससे पहले भली–भांति विचार कर लेना चाहिए, क्योंकि आपकी कल्पना से पूर्व ही आपको इससे निकाले जाने की संभावना है। यदि आप व्यापार में हैं तो आपको वित्तिय आघात लग सकता है, जो कि काफी आकस्मिक और अप्रत्याशित :प से उत्पन्न हो सकता है।

सिद्धा (शुक्र){अश्लेषा} दशा

(09:05:2071 -- 09:05:2078)

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र पांचवें भाव में उपस्थित है। अतः आपका आगामी समय बहुत आनन्दपूर्ण होगा। यदि आप अविवाहित हैं तो आपको किसी से प्रेम हो सकता है। किन्तु यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना कर रहे हैं तो एक पौराणिक शक्ति आपको एक दैवीय उपहार प्रदान करने वाली है– संभवतः एक सुन्दर कन्या। यदि आप एक रोजगार की तलाश में हैं तो आपशीघ्र ही एक लाभप्रद नौकरी पाने में सक्षम हो सकते हैं। यदि आप व्यापार में हैं तो आपकी आय में वास्तविक :प से वृद्धि होगी। आनुमानिक निवेशों और मनोरंजन के क्षेत्रों में भी आपका :झानहो सकता है और यदि आपके पेशे का कोई संबंध इन क्षेत्रों से है तो आपकी बहुत सार्थक प्रगति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है, जबकि किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल नहीं है। अतः योगिनी शुक्र दशा कीअवधि आपके लिए काफी आनन्ददायक साबित होगी। यदि आपके पेशे का संबंध आम जनता सेहै तो आपकी उनके साथ अच्छी घनिष्ठता होगी और आपकी लोकप्रियता में विशेष :प से वृद्धि होगी।

काल–चक्र दशा का विश्लेषण

कर्क दशा

(18:12:1973 – 23:07:1976)

काल चक्र दशा के अनुसार, आपकी पूर्व दशा की राशि कन्या थी और वर्तमान दशा की राशि कर्क है। अतःवर्तमान चल रही दशा काल चक्र दशा के अनुसार मंडूकी गति दशा है। इस दशा–अवधि के दौरान, आपको बहुत सावधान और सतर्क रहना चाहिए। यद्यपि, आप जानबूझकर कोई गलती या अनियमितता नहींकर सकते हैं, तो भी आप नियमों और विनियमों में कुछ प्रमुख परिवर्तन के कारण कष्ट के उत्तरदायी हो सकते हैं। या फिर, पदों में कुछ परिवर्तन हो सकता है, पदभार संभालने वाला नया मालिक आपके प्रतिअनुकूल भाव नहीं रख सकता है– बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के। पूर्व या उत्तर दिशा में किसी स्थान पर स्थानान्तरण या रोजगार परिवर्तन आपके लिए लाभदायक होगा। आपके भाई या निकट संबंधी या किसी करीबी मित्र के स्वास्थ्य की स्थिति आपको चिन्तित कर सकती है।

वर्तमान में आप कर्क राशि की काल चक्र दशा से गुजर रहे हैं। दशा–राशि का स्वामी एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। इस अवधि के दौरान अनुभव किये जाने वाले समग्र अनुकूल एवं अन्यथा परिणाम मुख्य रूप से (1)राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह/गहों– यदि कोई है, (2) राशि पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रह– यदि कोई है, (3) राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह/ग्रहों– यदि कोई है, तथा (4) राशि पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रह– यदि कोई है, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे। ये गौण रूप से (1) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, (2) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों– यदि कोई है, (3) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, और (3) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे।

(ग्रहों की स्थिति अधिक महत्वपूर्ण होती है, और ग्रहीय दृष्टि की अपेक्षा यह लगभग दुगुनी शक्तिशाली मानी जाती है। इसी तरह, दशा–राशि पर ग्रहों का प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण होता है और दशा–राशि के स्वामी पर ग्रहों के प्रभाव की अपेक्षा लगभग दुगुना प्रभावशाली माना जाता है।)

मुख्य प्रभाव :

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 2 और

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 1 और

गौण प्रभाव :

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – .1

और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 1 और

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 1 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0

सांकेतिक ढंग से उपरोक्त आकंड़ों पर विचार करके, अपेक्षित समग्र अनुकूल और अन्यथाा परिणामों को सटीकता की एक शुद्ध मात्रा में अनुमानित किया जा सकता है। इस बात का ध्यान दिया जाना चाहिए, किशुभ और अशुभ प्रभाव निश्चित रूप से एक दूसरे को बेअसर नहीं करते हैं– हालाँकि, वे काफी हद तकएक दूसरे को संशोधित करते हैं।

आगे जो करने के लिए उपर उल्लेख किया गया था, कर्क राशि की काल चक्र दशा के लिए शुभ प्रभावों का अंक है– 31 (अधिकतम 100 अंक के पैमाने पर), अशुभ प्रभावों का अंक है – 20 (अधिकतम 100 अंकके पैमाने पर)।

वर्तमान समय में, आप कर्क राशि की काल–चक्र दशा से गुजर रहे हैं। जैसाकि यह एक चर राशि है, इसदशा–अवधि के दौरान अनेक परिवर्तन होने की संभावना है। आप आनन्द और लाभ के लिए अनेक यात्रायें भी करेंगे। इस दशा के राशि–भुक्तियों के नौ समान–अवधियों में से सबसे पहला भाग– कर्क राशिकी भुक्ति– आपके लिए कई अवसर लाएगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, काल–चक्र दशा अंश राशि वृषभ है। इस राशि के अंश राशि होने से कुछ अत्यंत अनुकूल संकेत हैं। आपके बहुत धनवान होने की प्रबल संभावना है। आप एक व्यवसायी हो सकते हैं, या फिर, एक बड़े व्यवसाय में बहुत वरिष्ठ पर पर आसीन हो सकते हैं। इस दशा–अवधि (यदि यह आपकी कुण्डली में संचालित है तो) के दौरान, और काल चक्र दशा के अनुसार अन्य किसी दशा–अवधि के दौरानभी, जब वृषभ राशि की भुक्ति–अवधि संचालित हो, तो आप धनार्जन करेंगे, आपके संग्रहण और संपत्ति में वृद्धि होगी तथा आपका सामाजिक स्तर उंचा उठेगा।

कुम्भ भुक्ति

(18:12:1973 – 23:03:1974)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

मीन भुक्ति

(23:03:1974 – 23:07:1976)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

सिहं दशा

(23:07:1976 – 23:07:1981)

वर्तमान में आप सिहं राशि की काल चक्र दशा से गुजर रहे हैं। दशा–राशि का स्वामी एक नैसर्गिक अशुभग्रह है। इस अवधि के दौरान अनुभव किये जाने वाले समग्र अनुकूल एवं अन्यथा परिणाम मुख्य रूप से (1) राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह/गहों– यदि कोई है, (2) राशि पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रह– यदिकोई है, (3) राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह/ग्रहों– यदि कोई है, तथा (4) राशि पर दृष्टि डाल रहेऐसे ग्रह– यदि कोई है, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे। ये गौण रूप से (1) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, (2) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों– यदि कोई है, (3) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, और (3) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे।

(ग्रहों की स्थिति अधिक महत्वपूर्ण होती है, और ग्रहीय दृष्टि की अपेक्षा यह लगभग दुगुनी शक्तिशाली मानी जाती है। इसी तरह, दशा–राशि पर ग्रहों का प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण होता है और दशा–राशि के स्वामी पर ग्रहों के प्रभाव की अपेक्षा लगभग दुगुना प्रभावशाली माना जाता है।)

मुख्य प्रभाव :

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0, और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 1 और

गौण प्रभाव :

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 1 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 2

सांकेतिक ढंग से उपरोक्त आकंड़ों पर विचार करके, अपेक्षित समग्र अनुकूल और अन्यथाा परिणामों को सटीकता की एक शुद्ध मात्रा में अनुमानित किया जा सकता है। इस बात का ध्यान दिया जाना चाहिए, किशुभ और अशुभ प्रभाव निश्चित रूप से एक दूसरे को बेअसर नहीं करते हैं– हालाँकि, वे काफी हद तकएक दूसरे को संशोधित करते

हैं।

आगे जो करने के लिए उपर उल्लेख किया गया था, सिहं राशि की काल चक्र दशा के लिए शुभ प्रभावों का अंक है– 0 (अधिकतम 100 अंक के पैमाने पर), अशुभ प्रभावों का अंक है – 30 (अधिकतम 100 अंक के पैमाने पर)।

वर्तमान समय में, आप सिहं राशि की काल–चक्र दशा से गुजर रहे हैं। जैसाकि यह एक स्थिर राशि है, इस दशा–अवधि के दौरान अनेक परिवर्तन होने की संभावना नहीं है। जब तक कि कोई परिस्थितिजन्य बाध्यता नहीं हो आप कोई यात्रा नहीं कर सकते हैं। हालाँकि, इस दशा के राशि–भुक्तियों के नौ समान–अवधियों में से पाँचवां भाग– सिहं राशि की भुक्ति– आपके लिए कुछ अवसर लाएगा।

मेष भुक्ति

(23:07:1976 – 11:02:1977)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

वृष भुक्ति

(11:02:1977 – 02:09:1977)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

मिथुन भुक्ति

(02:09:1977 – 23:03:1978)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

कर्क भुक्ति

(23:03:1978 – 12:10:1978)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

सिहं भुक्ति

(12:10:1978 – 03:05:1979)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

कन्या भुक्ति
(03:05:1979 – 22:11:1979)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

तुला भुक्ति
(22:11:1979 – 12:06:1980)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

वृश्चिक भुक्ति
(12:06:1980 – 01:01:1981)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

धनु भुक्ति
(01:01:1981 – 23:07:1981)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

मिथुन दशा
(23:07:1981 – 23:07:1990)

काल चक्र दशा के अनुसार, आपकी पूर्व दशा की राशि सिंह थी और वर्तमान दशा की राशि मिथुन है। अतः वर्तमान चल रही दशा काल चक्र दशा के अनुसार 'मंडूकी गति दशा' है। इस दशा–अवधि के दौरान,आपको बहुत सावधान और सतर्क रहना चाहिए। यद्यपि, आप जानबूझकर कोई गलती या अनियमितता नहीं कर सकते हैं, तो भी आप नियमों और विनियमों में कुछ प्रमुख परिवर्तन के कारण कष्ट के उत्तरदायी हो सकते हैं। या फिर, पदों में कुछ परिवर्तन हो सकता है, पदभार संभालने वाला नया मालिक आपके प्रति अनुकूल भाव नहीं रख सकता है– बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के। दक्षिण–पश्चिम दिशामें किसी स्थान पर स्थानान्तरण या रोजगार परिवर्तन आपके लिए लाभदायक होगा। हालाँकि, पूर्व

दिशा से आपको बचना चाहिए– क्योंकि इसका आपके लिए अनुकूल होने की संभावना कम ही है।

वर्तमान में आप मिथुन राशि की काल चक्र दशा से गुजर रहे हैं। दशा–राशि का स्वामी एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। इस अवधि के दौरान अनुभव किये जाने वाले समग्र अनुकूल एवं अन्यथा परिणाम मुख्य रूप से (1)राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह/गहों– यदि कोई है, (2) राशि पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रह– यदि कोई है, (3) राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह/ग्रहों– यदि कोई है, तथा (4) राशि पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रह– यदि कोई है, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे। ये गौण रूप से (1) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, (2) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों– यदि कोई है, (3) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, और (3) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे।

(ग्रहों की स्थिति अधिक महत्वपूर्ण होती है, और ग्रहीय दृष्टि की अपेक्षा यह लगभग दुगुनी शक्तिशाली मानी जाती है। इसी तरह, दशा–राशि पर ग्रहों का प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण होता है और दशा–राशि के स्वामी पर ग्रहों के प्रभाव की अपेक्षा लगभग दुगुना प्रभावशाली माना जाता है।)

मुख्य प्रभाव :

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 2 और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 2 और

गौण प्रभाव :

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 1

सांकेतिक ढंग से उपरोक्त आकंड़ों पर विचार करके, अपेक्षित समग्र अनुकूल और अन्यथाा परिणामों को सटीकता की एक शुद्ध मात्रा में अनुमानित किया जा सकता है। इस बात का ध्यान दिया जाना चाहिए, किशुभ और अशुभ प्रभाव निश्चित रूप से एक दूसरे को बेअसर नहीं करते हैं– हालाँकि, वे काफी हद तकएक दूसरे को संशोधित करते हैं।

आगे जो करने के लिए उपर उल्लेख किया गया था, मिथुन राशि की काल चक्र दशा के लिए शुभ प्रभावों

का अंक है– 0 (अधिकतम 100 अंक के पैमाने पर), अशुभ प्रभावों का अंक है – 65 (अधिकतम 100 अंक के पैमाने पर)।

आपकी जन्मकुण्डली में, मकर राशि काल चक्र दशा 'देह–राशि' है और मिथुन राशि काल चक्र दशा 'जीव–राशि' है। ये दोनों ही राशियां बहुत महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान में, आप मिथुन राशि की काल चक्र दशा से गुजर रहे हैं– जो कि आपकी जीव राशि है। इस अवधि के दौरान, आपको अनेक लाभदायक परिर्वतन प्राप्त होंगे और कई गुना प्रगति व उन्नति प्राप्त करने के लिए कुछ सुनहरे अवसर प्राप्त होंगे। यह तब औरअधिक होगा जब मकर राशि की भुक्ति– जो कि आपकी देह–राशि है– इसमें संचालित हो।

वर्तमान समय में, आप मिथुन राशि की काल–चक्र दशा से गुजर रहे हैं– जो कि दो या दो से अधिक नैसर्गिक शुभ/अशुभ ग्रहों की स्थिति या दृष्टि से प्रभावित हैं– जबकि इनमें से एक ग्रह या तो उच्चस्थ हैया अपने भाव में स्थित है। यह संकेत अनुकूल नहीं हैं। इस दशा–अवधि के दौरान, आपको अनेक प्रकारकी कठिनाईयों और असुविधाओं का सामना करना पड़ सकता है। हालाँकि, निश्चित रूप से पूरी दशा–अवधि के दौरान पीड़ित रहना आपकी नियति में नहीं लिखा हुआ है,– यद्यपि आप इसकी भुक्ति–अवधियों में से एक या एक से अधिक के दौरान कठिनाइयों का सामना कर सकते हैं– यदि वह/वेनैसर्गिक अशुभ ग्रहों के प्रभाव में आता है/आते हैं तो।

हम आगे यह परीक्षण करने जा रहे हैं कि क्या इस दशा–अवधि के दौरान इस तरह की प्रतिकूल भुक्ति–अवधि है/अवधियां हैं या नहीं। यदि ऐसी अवधि है/ अवधियां हैं, तो हमें उसके अनुसार अपना निष्कर्ष प्रस्तावित करना होगा। इसके अतिरिक्त, हम भुक्ति अवधि/ अवधियों के दौरान प्रतिकूल अंतरा–अवधि/अवधियों की संभावना का संकेत भी करेंगे।

वर्तमान समय में, आप मिथुन राशि की काल–चक्र दशा से गुजर रहे हैं। वृश्चिक राशि इससे छठवीं हैं। मिथुन राशि की दशा–अवधि के दौरान, जब वृश्चिक राशि की भुक्ति–अवधि संचालित हो, तब आप विशिष्टप्रकार की कुछ कठिनाइयों का सामना कर सकते हैं। आपका अपने वरिष्ठों या नियुक्तिकर्ता से मतभेद हो सकते हैं तथा आपका पद तक खोने का भय भी हो सकता है। या फिर, वे आपको निकालने केकुछ बहाने ढूंढने का प्रयास कर सकते हैं– किसी कारण से जिसकी वजह उन्हें भली–भांति ज्ञात होगी।इस भुक्ति–अवधि के दौरान, या तो धनु राशि की और/या तुला राशि की अन्तर–अवधि के दौरान अधिक संभव हो सकता है– जैसाकि ये दोनों राशियां भुक्ति–राशि से परस्पर 2/12 संबंध में हैं। हालाँकि,यदि आप अपनी स्वयं की इच्छा या रूचि के अनुसार परिवर्तन के लिए किसी अवसर की तलाश कर रहे हैं, तो आपको इन दोनों अवधियों में से किसी एक में एक अवसर प्राप्त होने की संभावना है– यदिआप उचित समय पर प्रयास करते हैं तो।

वर्तमान समय में, आप मिथुन राशि की काल–चक्र दशा से गुजर रहे हैं। जैसाकि यह एक उभय राशि है, इस दशा–अवधि के दौरान अनेक परिवर्तन होने की संभावना है। आप अधिकांशतः यात्रायें भी करेंगे। इस दशा के राशि–भुक्तियों के नौ समान–अवधियों में से सबसे अंतिम भाग– मिथुन राशि की भुक्ति– आपके लिए कुछ आकर्षक अवसर लाएगा।

तुला भुक्ति

(23:07:1981 – 23:07:1982)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

वृश्चिक भुक्ति

(23:07:1982 – 23:07:1983)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

धनु भुक्ति

(23:07:1983 – 23:07:1984)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

मकर भुक्ति

(23:07:1984 – 23:07:1985)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

कुम्भ भुक्ति

(23:07:1985 – 23:07:1986)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

मीन भुक्ति

(23:07:1986 – 23:07:1987)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

मेष भुक्ति

(23:07:1987 – 23:07:1988)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

वृष भुक्ति

(23:07:1988 – 23:07:1989)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

मिथुन भुक्ति

(23:07:1989 – 23:07:1990)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

मकर दशा

(23:07:1990 – 23:07:1994)

वर्तमान में आप मकर राशि की काल चक्र दशा से गुजर रहे हैं। दशा–राशि का स्वामी एक नैसर्गिक अशुभग्रह है। इस अवधि के दौरान अनुभव किये जाने वाले समग्र अनुकूल एवं अन्यथा परिणाम मुख्य रूप से (1) राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह/गहों– यदि कोई है, (2) राशि पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रह– यदिकोई है, (3) राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह/ग्रहों– यदि कोई है, तथा (4) राशि पर दृष्टि डाल रहेऐसे ग्रह– यदि कोई है, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे। ये गौण रूप से (1) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, (2) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों– यदि कोई है, (3) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, और (3) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे।

(ग्रहों की स्थिति अधिक महत्वपूर्ण होती है, और ग्रहीय दृष्टि की अपेक्षा यह लगभग दुगुनी शक्तिशाली मानी जाती है। इसी तरह, दशा–राशि पर ग्रहों का प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण होता है और दशा–राशि के स्वामी पर ग्रहों के प्रभाव की अपेक्षा लगभग दुगुना प्रभावशाली माना जाता है।)

मुख्य प्रभाव :

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 2, और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0

और

गौण प्रभाव :

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 1 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 2

सांकेतिक ढंग से उपरोक्त आकंड़ों पर विचार करके, अपेक्षित समग्र अनुकूल और अन्यथाा परिणामों को सटीकता की एक शुद्ध मात्रा में अनुमानित किया जा सकता है। इस बात का ध्यान दिया जाना चाहिए, किशुभ और अशुभ प्रभाव निश्चित रूप से एक दूसरे को बेअसर नहीं करते हैं– हालाँकि, वे काफी हद तकएक दूसरे को संशोधित करते हैं।

आगे जो करने के लिए उपर उल्लेख किया गया था, मकर राशि की काल चक्र दशा के लिए शुभ प्रभावों का अंक है– 50 (अधिकतम 100 अंक के पैमाने पर), अशुभ प्रभावों का अंक है – 20 (अधिकतम 100 अंकके पैमाने पर)।

उपर जो उल्लेख किया गया है उससे आगे, जैसाकि एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह– जो किवक्री हैं, भुक्ति–राशि में स्थित हैं (जो आपकी दशा–राशि से छठवां है), आपको बहुत सावधान रहना चाहिए जैसाकि आप एक नाजुक स्थिति का सामना कर सकते हैं। जो भी हो, आपको चिन्तित नहीं होना चाहिए– जैसाकि आपको एक नए आकर्षक अवसर प्राप्त होने की संभावना है, तथा आपकी पद एवं प्रतिष्ठामें काफी सुधार होगा।

वर्तमान समय में, आप मकर राशि की काल–चक्र दशा से गुजर रहे हैं। जैसाकि यह एक चर राशि है, इसदशा–अवधि के दौरान अनेक परिवर्तन होने की संभावना है। आप आनन्द और लाभ के लिए अनेक यात्रायें भी करेंगे। इस दशा के राशि–भुक्तियों के नौ समान–अवधियों में से सबसे पहला भाग– मकर राशि की भुक्ति– आपके लिए कई अवसर लाएगा।

मकर भुक्ति

(23:07:1990 – 01:01:1991)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

कुम्भ भुक्ति

(01:01:1991 – 12:06:1991)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

मीन भुक्ति

(12:06:1991 – 22:11:1991)

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप मीन दशा म मकर भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश भुक्ति–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि से गणना करने पर दशमेश दशा–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त करसकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

मेष भुक्ति

(22:11:1991 – 02:05:1992)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में आप मेष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। सूर्य और शुक्र दो ग्रहों में से एक ग्रह दशा–राशि से क्रेन्द्र में स्थित है तथा दूसरा दशा–राशि से त्रिकोण में स्थित है। आपका आगामी समय बहुत आनन्ददायक होगा, आप पर्याप्तता एवं प्रचूरता से सम्पन्न होंगे तथा आपका पारिवारिक जीवन बहुत आनन्दमय व खुशहाल होगा। इस अवधि के दौरान, आप कुछ विशेष उपलब्धियां प्राप्त करेंगे एवं एक नई मूल्यवान सम्पत्ति अर्जित करेंगे।

वृष भुक्ति

(02:05:1992 – 12:10:1992)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह भुक्ति–राशि से बारहवें में स्थित है/हैं और एक या अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह भुक्ति–राशि से दूसरे में स्थित है– जबकि दूसरे या बारहवें, इन दोनों में से किसी में भी कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह स्थित नहीं है। इस प्रकार यह भुक्ति ऐसी राशि की है, जो पाप–कर्तरी योग के अन्तर्गतहै। यह संकेत अनुकूल नहीं हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका आगामी समय काफी कठिनाईपूर्ण हो सकता है। आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकताहै और अनेक बाधाओं व अवरोधों का सामना कर सकते हैं– जिसकी वजह से, आप इस भुक्ति–अवधि के दौरान अपने किये गये प्रयासों के अनुरूप परिणाम प्राप्त करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं।

मिथुन भुक्ति

(12:10:1992 – 23:03:1993)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में आप मिथुन राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसाकि दो घोरनैसर्गिक अशुभ ग्रह– शनि और केतू– दशा–राशि में स्थित हैं, आपका समय काफी समस्याप्रद हो सकता है। आपके कार्यस्थल पर कुछ विचलित करने वाली घटनायें हो सकती हैं, आपकी आय में कमी होसकती है एवं आपके परिवारिक सदस्यों के बीच में होने वाले निरन्तर झगड़े आपको दुखी एवं चिन्तित कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस अवधि के दौरानआपके शारीरिक स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

कर्क भुक्ति

(23:03:1993 – 02:09:1993)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

सिहं भुक्ति

(02:09:1993 – 11:02:1994)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

कन्या भुक्ति

(11:02:1994 – 23:07:1994)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप कन्या भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह भुक्ति–राशि में स्थित है और कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इससे आठवें में स्थित है– जबकि भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से तीसरे में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह समग्र योग अनुकूल नहीं है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ बड़ी कठिनाईयों का सामना कर सकते हैं और अनेक असुविधाओं से ग्रसित हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डलीमें कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस दशा–अवधि के दौरान, आपको व्यवसाय में अस्थाई आघात लग सकता है, और किसी निकट स्थान पर स्थानान्तरण या परिवर्तन हो सकता है।

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप कन्या दशा म मकर भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश भुक्ति–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि से गणना करने पर दशमेश दशा–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त करसकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में आप कन्या राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। सूर्य और शुक्र दो ग्रहों में से एक ग्रह दशा–राशि से क्रेन्द्र में स्थित है तथा दूसरा दशा–राशि से त्रिकोण में स्थित है।

आपका आगामी समय बहुत आनन्ददायक होगा, आप पर्याप्तता एवं प्रचूरता से सम्पन्न होंगे तथा आपका पारिवारिक जीवन बहुत आनन्दमय व खुशहाल होगा। इस अवधि के दौरान, आप कुछ विशेष उपलब्धियां प्राप्त करेंगे एवं एक नई मूल्यवान सम्पत्ति अर्जित करेंगे।

कुम्भ दशा

(23:07:1994 – 23:07:1998)

वर्तमान में आप कुम्भ राशि की काल चक्र दशा से गुजर रहे हैं। दशा–राशि का स्वामी एक नैसर्गिक अशुभग्रह है। इस अवधि के दौरान अनुभव किये जाने वाले समग्र अनुकूल एवं अन्यथा परिणाम मुख्य रूप से (1) राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह/गहों– यदि कोई है, (2) राशि पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रह– यदिकोई है, (3) राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह/ग्रहों– यदि कोई है, तथा (4) राशि पर दृष्टि डाल रहेऐसे ग्रह– यदि कोई है, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे। ये गौण रूप से (1) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, (2) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों– यदि कोई है, (3) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, और (3) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे।

(ग्रहों की स्थिति अधिक महत्वपूर्ण होती है, और ग्रहीय दृष्टि की अपेक्षा यह लगभग दुगुनी शक्तिशाली मानी जाती है। इसी तरह, दशा–राशि पर ग्रहों का प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण होता है और दशा–राशि के स्वामी पर ग्रहों के प्रभाव की अपेक्षा लगभग दुगुना प्रभावशाली माना जाता है।)

मुख्य प्रभाव :

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0, और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

गौण प्रभाव :

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 1 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या –

सांकेतिक ढंग से उपरोक्त आकंड़ों पर विचार करके, अपेक्षित समग्र अनुकूल और अन्यथाा परिणामों को सटीकता की एक शुद्ध मात्रा में अनुमानित किया जा सकता है। इस बात का ध्यान दिया जाना चाहिए, किशुभ और अशुभ प्रभाव निश्चित रूप से एक दूसरे को बेअसर नहीं करते हैं– हालाँकि, वे काफी हद तकएक दूसरे को संशोधित करते हैं।

आगे जो करने के लिए उपर उल्लेख किया गया था, कुम्भ राशि की काल चक्र दशा के लिए शुभ प्रभावों का अंक है– 0 (अधिकतम 100 अंक के पैमाने पर), अशुभ प्रभावों का अंक है – 20 (अधिकतम 100 अंक के पैमाने पर)।

वर्तमान समय में, आप कुम्भ राशि की काल–चक्र दशा से गुजर रहे हैं। जैसाकि यह एक स्थिर राशि है, इस दशा–अवधि के दौरान अनेक परिवर्तन होने की संभावना नहीं है। जब तक कि कोई परिस्थितिजन्य बाध्यता नहीं हो आप कोई यात्रा नहीं कर सकते हैं। हालाँकि, इस दशा के राशि–भुक्तियों के नौ समान–अवधियों में से पाँचवां भाग– कुम्भ राशि की भुक्ति– आपके लिए कुछ अवसर लाएगा।

तुला भुक्ति

(23:07:1994 – 01:01:1995)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप तुला भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में एक याएक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह भुक्ति–राशि से बारहवें में स्थित है/हैं और एक या अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह भुक्ति–राशि से दूसरे में स्थित है– जबकि दूसरे या बारहवें, इन दोनों में से किसी में भी कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह स्थित नहीं है। इस प्रकार यह भुक्ति ऐसी राशि की है, जो शुभ–कर्तरी योग के अन्तर्गत है। यह संकेत अत्यंत अनुकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका आगामी समय बहुत आनन्दमय हो सकता है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे, आपकी कुछ अभिलाषित इच्छायें पूरी होंगी तथा कुछ महात्वाकांक्षायें फलीभूत होंगी।

तुला राशि की अन्तर–अवधि में– ना केवल इस भुक्ति में, बल्कि अन्य भुक्तियों में भी– आप विश्वासपूर्वक एक उत्तम समय की आशा कर सकते हैं तथा अपने वरिष्ठों/नियुक्ति कर्ता से या अधिकारियों से समर्थन एवं लाभ प्राप्त कर सकते हैं अथवा किसी अन्य स्रोत से अप्रत्याशित रूप से एक आकस्मिक उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति

(01:01:1995 – 12:06:1995)

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप वृश्चिक दशा में कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि का स्वामी भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार

होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप वृश्चिक दशा म कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि के स्वामी की भुक्ति–राशि के स्वामी के साथ युति है। दशा–राशि का स्वामी भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है अथवा भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इसभुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

धनु भुक्ति

(12:06:1995 – 22:11:1995)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप धनु भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दोया अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह भुक्ति–राशि में स्थित हैं तथा दूसरे, चौथे और ग्यारहवें में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की कुल संख्या भी दो या अधिक है– जबकि भुक्ति–राशि में या इससे दूसरे अथवा चौथे अथवा ग्यारहवें में कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह समग्र योग बिल्कुल भी उत्तम नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो यह भुक्ति–अवधि आपके लिए काफी समस्याप्रद और कठिनाईपूर्ण हो सकती है। आपके कार्यस्थल का विकास आपको निरन्तर तनाव में रख सकता है एवं आप बहुत चिन्तित महसूस करना प्रारम्भ कर सकते हैं।

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप धनु भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में एक याएक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह भुक्ति–राशि से बारहवें में स्थित है/हैं और एक या अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह भुक्ति–राशि से दूसरे में स्थित है– जबकि दूसरे या बारहवें, इन दोनों में से किसी में भी कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह स्थित नहीं है। इस प्रकार यह भुक्ति ऐसी राशि की है, जो शुभ–कर्तरी योग के अन्तर्गत है। यह संकेत अत्यंत अनुकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका आगामी समय बहुत आनन्दमय हो सकता है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे, आपकी कुछ अभिलाषित इच्छायें पूरी होंगी तथा कुछ महात्वाकांक्षायें फलीभूत होंगी।

धनु राशि की अन्तर–अवधि में– ना केवल इस भुक्ति में, बल्कि अन्य भुक्तियों में भी– आप विश्वासपूर्वक एक उत्तम समय की आशा कर सकते हैं तथा अपने वरिष्ठों/नियुक्ति कर्ता से या अधिकारियों से समर्थन एवं लाभ प्राप्त कर सकते हैं अथवा किसी अन्य स्रोत से अप्रत्याशित रूप से एक आकस्मिक उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

मकर भुक्ति

(22:11:1995 – 02:05:1996)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में आप मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसाकि दो मुख्य नैसर्गिक शुभ ग्रह– बृहस्पति और शुक्र– दशा–राशि में स्थित हैं, आपका समय आनन्ददायक होगा।

आप पर्याप्तता एवं प्रचूरता से सम्पन्न होंगे तथा आपका पारिवारिक जीवन बहुत आनन्दमय व खुशहाल होगा। इस अवधि के दौरान, आप कुछ विशेष उपलब्धियां प्राप्त करेंगे एवं एक नई मूल्यवान सम्पत्ति अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त, आपके परिवार में एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

कुम्भ भुक्ति

(02:05:1996 – 12:10:1996)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

मीन भुक्ति

(12:10:1996 – 23:03:1997)

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप मीन दशा म कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि का स्वामी दशा–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहाहै– जबकि भुक्ति–राशि का स्वामी भुक्ति–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

मेष भुक्ति

(23:03:1997 – 02:09:1997)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में आप मेष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। सूर्य और शुक्र दो ग्रहों में से एक ग्रह दशा–राशि से क्रेन्द्र में स्थित है तथा दूसरा दशा–राशि से त्रिकोण में स्थित है। आपका आगामी समय बहुत आनन्ददायक होगा, आप पर्याप्तता एवं प्रचूरता से सम्पन्न होंगे तथा आपका पारिवारिक जीवन बहुत आनन्दमय व खुशहाल होगा। इस अवधि के दौरान, आप कुछ विशेष उपलब्धियां प्राप्त करेंगे एवं एक नई मूल्यवान सम्पत्ति अर्जित करेंगे।

वृष भुक्ति

(02:09:1997 – 11:02:1998)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह भुक्ति–राशि से बारहवें में स्थित है/हैं और एक या अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह भुक्ति–राशि से दूसरे में स्थित है– जबकि दूसरे या बारहवें, इन दोनों में से किसी में भी कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह स्थित नहीं है। इस प्रकार यह भुक्ति ऐसी राशि की है, जो पाप–कर्तरी योग के अन्तर्गतहै। यह संकेत अनुकूल नहीं हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका आगामी समय काफी कठिनाईपूर्ण हो सकता है। आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो

सकता है और अनेक बाधाओं व अवरोधों का सामना कर सकते हैं– जिसकी वजह से, आप इस भुक्ति–अवधि के दौरान अपने किये गये प्रयासों के अनुरूप परिणाम प्राप्त करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं।

मिथुन भुक्ति

(11:02:1998 – 23:07:1998)

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप मिथुन दशा में कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि का स्वामी भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप मिथुन दशा म कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि के स्वामी की भुक्ति–राशि के स्वामी के साथ युति है। दशा–राशि का स्वामी भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है अथवा भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इसभुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में आप मिथुन राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसाकि दो घोरनैसर्गिक अशुभ ग्रह– शनि और केतू– दशा–राशि में स्थित हैं, आपका समय काफी समस्याप्रद हो सकता है। आपके कार्यस्थल पर कुछ विचलित करने वाली घटनायें हो सकती हैं, आपकी आय में कमी होसकती है एवं आपके परिवारिक सदस्यों के बीच में होने वाले निरन्तर झगड़े आपको दुखी एवं चिन्तित कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस अवधि के दौरानआपके शारीरिक स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

मीन दशा

(23:07:1998 – 23:07:2008)

वर्तमान में आप मीन राशि की काल चक्र दशा से गुजर रहे हैं। दशा–राशि का स्वामी एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। इस अवधि के दौरान अनुभव किये जाने वाले समग्र अनुकूल एवं अन्यथा परिणाम मुख्य रूप से (1)राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह/गहों– यदि कोई है, (2) राशि पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रह– यदि कोई है, (3) राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह/ग्रहों– यदि कोई है, तथा (4) राशि पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रह– यदि कोई है, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे। ये गौण रूप से (1) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, (2) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों– यदि कोई है, (3) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, और (3) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर

करेंगे।

(ग्रहों की स्थिति अधिक महत्वपूर्ण होती है, और ग्रहीय दृष्टि की अपेक्षा यह लगभग दुगुनी शक्तिशाली मानी जाती है। इसी तरह, दशा–राशि पर ग्रहों का प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण होता है और दशा–राशि के स्वामी पर ग्रहों के प्रभाव की अपेक्षा लगभग दुगुना प्रभावशाली माना जाता है।)

मुख्य प्रभाव :

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 1 और

गौण प्रभाव :

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 1 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0

सांकेतिक ढंग से उपरोक्त आकंड़ों पर विचार करके, अपेक्षित समग्र अनुकूल और अन्यथाा परिणामों को सटीकता की एक शुद्ध मात्रा में अनुमानित किया जा सकता है। इस बात का ध्यान दिया जाना चाहिए, किशुभ और अशुभ प्रभाव निश्चित रूप से एक दूसरे को बेअसर नहीं करते हैं– हालाँकि, वे काफी हद तकएक दूसरे को संशोधित करते हैं।

आगे जो करने के लिए उपर उल्लेख किया गया था, मीन राशि की काल चक्र दशा के लिए शुभ प्रभावों का अंक है– 12 (अधिकतम 100 अंक के पैमाने पर), अशुभ प्रभावों का अंक है – 10 (अधिकतम 100 अंकके पैमाने पर)।

वर्तमान समय में, आप मीन राशि की काल–चक्र दशा से गुजर रहे हैं। जैसाकि यह एक उभय राशि है, इस दशा–अवधि के दौरान अनेक परिवर्तन होने की संभावना है। आप अधिकांशतः यात्रायें भी करेंगे। इस दशा के राशि–भुक्तियों के नौ समान–अवधियों में से सबसे अंतिम भाग– मीन राशि की भुक्ति– आपके लिए कुछ आकर्षक अवसर लाएगा।

वर्तमान में आप मीन राशि की काल–चक्र दशा से गुजर रहे हैं। जैसाकि दशा–राशि पर दशमेश या

पंचमेश या अमात्य–कारक ग्रह (सप्त–कारक योजना के अनुसार) की दृष्टि है, आप अपने पेशे से संबंधित मामलों के संदर्भ में बहुत भाग्यशाली होंगे। यदि आपकी आयु प्रासंगिक है, तो आप एक लाभप्रद पदोन्नति या रोजगार का एक आकर्षक परिवर्तन कर सकते हैं। यदि आप व्यवसाय में हैं, तो आप बहुत सुधार करेंगे। आपकी विश्वसनीयता एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

कर्क भुक्ति

(23:07:1998 – 02:09:1999)

वर्तमान समय में, आप कर्क राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसाकि दशा/भुक्ति–राशि पर दशमेश या पंचमेश या अमात्य–कारक ग्रह (सप्त–कारक योजना के अनुसार) की दृष्टि पड़ रही है, व्यवसाय से संबंधित मामलों में आप बहुत भाग्यशाली होंगे। यदि आपकी आयु उपयुक्त है, तो आप एक लाभप्रद पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं अथवा रोजगार में कोई आकर्षक परिवर्तन हो सकता है। यदि आप व्यवसाय में हैं, तो अत्यधिक सुधार होगा। आपकी विश्वसनीयता एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

सिहं भुक्ति

(02:09:1999 – 12:10:2000)

वर्तमान समय में, आप सिहं राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसाकि दशा/भुक्ति–राशि पर दशमेश या पंचमेश या अमात्य–कारक ग्रह (सप्त–कारक योजना के अनुसार) की दृष्टि पड़ रही है, व्यवसाय से संबंधित मामलों में आप बहुत भाग्यशाली होंगे। यदि आपकी आयु उपयुक्त है, तो आप एक लाभप्रद पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं अथवा रोजगार में कोई आकर्षक परिवर्तन हो सकता है। यदि आप व्यवसाय में हैं, तो अत्यधिक सुधार होगा। आपकी विश्वसनीयता एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप सिहं दशा में मीन भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि का स्वामी भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप सिहं दशा म मीन भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि के स्वामी की भुक्ति–राशि के स्वामी के साथ युति है। दशा–राशि का स्वामी भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है अथवा भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इसभुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप सिहं दशा म मीन भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि का स्वामी दशा–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहाहै– जबकि भुक्ति–राशि का स्वामी भुक्ति–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है।

यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

कन्या भुक्ति

(12:10:2000 – 22:11:2001)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप कन्या भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह भुक्ति–राशि में स्थित है और कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इससे आठवें में स्थित है– जबकि भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से तीसरे में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह समग्र योग अनुकूल नहीं है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ बड़ी कठिनाईयों का सामना कर सकते हैं और अनेक असुविधाओं से ग्रसित हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डलीमें कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस दशा–अवधि के दौरान, आपको व्यवसाय में अस्थाई आघात लग सकता है, और किसी निकट स्थान पर स्थानान्तरण या परिवर्तन हो सकता है।

वर्तमान समय में, आप कन्या राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसाकि दशा/भुक्ति–राशि पर दशमेश या पंचमेश या अमात्य–कारक ग्रह (सप्त–कारक योजना के अनुसार) की दृष्टि पड़ रही है, व्यवसाय से संबंधित मामलों में आप बहुत भाग्यशाली होंगे। यदि आपकी आयु उपयुक्त है, तो आप एक लाभप्रद पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं अथवा रोजगार में कोई आकर्षक परिवर्तन हो सकता है। यदि आप व्यवसाय में हैं, तो अत्यधिक सुधार होगा। आपकी विश्वसनीयता एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में आप कन्या राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। सूर्य और शुक्र दो ग्रहों में से एक ग्रह दशा–राशि से क्रेन्द्र में स्थित है तथा दूसरा दशा–राशि से त्रिकोण में स्थित है। आपका आगामी समय बहुत आनन्ददायक होगा, आप पर्याप्तता एवं प्रचूरता से सम्पन्न होंगे तथा आपका पारिवारिक जीवन बहुत आनन्दमय व खुशहाल होगा। इस अवधि के दौरान, आप कुछ विशेष उपलब्धियां प्राप्त करेंगे एवं एक नई मूल्यवान सम्पत्ति अर्जित करेंगे।

तुला भुक्ति

(22:11:2001 – 01:01:2003)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप तुला भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में एक याएक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह भुक्ति–राशि से बारहवें में स्थित है/हैं और एक या अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह भुक्ति–राशि से दूसरे में स्थित है– जबकि दूसरे या बारहवें, इन दोनों में से किसी में भी कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह स्थित नहीं है। इस प्रकार यह भुक्ति ऐसी राशि की है, जो शुभ–कर्तरी योग के अन्तर्गत है। यह संकेत अत्यंत अनुकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका आगामी समय बहुत आनन्दमय हो सकता है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे, आपकी कुछ अभिलाषित इच्छायें पूरी होंगी तथा कुछ महात्वाकांक्षायें फलीभूत होंगी।

तुला राशि की अन्तर–अवधि में– ना केवल इस भुक्ति में, बल्कि अन्य भुक्तियों में भी– आप विश्वासपूर्वक एक उत्तम समय की आशा कर सकते हैं तथा अपने वरिष्ठों/नियुक्ति कर्ता से या अधिकारियों से समर्थन

एवं लाभ प्राप्त कर सकते हैं अथवा किसी अन्य स्रोत से अप्रत्याशित रूप से एक आकस्मिक उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति

(01:01:2003 – 11:02:2004)

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप वृश्चिक दशा में मीन भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर पंचमेश भुक्ति–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि से गणना करने पर पंचमेश दशा–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त करसकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

धनु भुक्ति

(11:02:2004 – 23:03:2005)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप धनु भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दोया अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह भुक्ति–राशि में स्थित हैं तथा दूसरे, चौथे और ग्यारहवें में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की कुल संख्या भी दो या अधिक है– जबकि भुक्ति–राशि में या इससे दूसरे अथवा चौथे अथवा ग्यारहवें में कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह समग्र योग बिल्कुल भी उत्तम नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो यह भुक्ति–अवधि आपके लिए काफी समस्याप्रद और कठिनाईपूर्ण हो सकती है। आपके कार्यस्थल का विकास आपको निरन्तर तनाव में रख सकता है एवं आप बहुत चिन्तित महसूस करना प्रारम्भ कर सकते हैं।

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप धनु भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में एक याएक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह भुक्ति–राशि से बारहवें में स्थित है/हैं और एक या अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह भुक्ति–राशि से दूसरे में स्थित है– जबकि दूसरे या बारहवें, इन दोनों में से किसी में भी कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह स्थित नहीं है। इस प्रकार यह भुक्ति ऐसी राशि की है, जो शुभ–कर्तरी योग के अन्तर्गत है। यह संकेत अत्यंत अनुकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका आगामी समय बहुत आनन्दमय हो सकता है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे, आपकी कुछ अभिलाषित इच्छायें पूरी होंगी तथा कुछ महात्वाकांक्षायें फलीभूत होंगी।

धनु राशि की अन्तर–अवधि में– ना केवल इस भुक्ति में, बल्कि अन्य भुक्तियों में भी– आप विश्वासपूर्वक एक उत्तम समय की आशा कर सकते हैं तथा अपने वरिष्ठों/नियुक्ति कर्ता से या अधिकारियों से समर्थन एवं लाभ प्राप्त कर सकते हैं अथवा किसी अन्य स्रोत से अप्रत्याशित रूप से एक आकस्मिक उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वर्तमान समय में, आप धनु राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसाकि दशा/भुक्ति–राशि पर दशमेश या पंचमेश या अमात्य–कारक ग्रह (सप्त–कारक योजना के अनुसार) की दृष्टि पड़ रही है, व्यवसाय से

संबंधित मामलों में आप बहुत भाग्यशाली होंगे। यदि आपकी आयु उपयुक्त है, तो आप एक लाभप्रद पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं अथवा रोजगार में कोई आकर्षक परिवर्तन हो सकता है। यदि आप व्यवसाय में हैं, तो अत्यधिक सुधार होगा। आपकी विश्वसनीयता एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

मकर भुक्ति

(23:03:2005 – 03:05:2006)

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप मकर दशा म मीन भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश भुक्ति–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि से गणना करने पर दशमेश दशा–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त करसकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में आप मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसाकि दो मुख्य नैसर्गिक शुभ ग्रह– बृहस्पति और शुक्र– दशा–राशि में स्थित हैं, आपका समय आनन्ददायक होगा। आप पर्याप्तता एवं प्रचूरता से सम्पन्न होंगे तथा आपका पारिवारिक जीवन बहुत आनन्दमय व खुशहाल होगा। इस अवधि के दौरान, आप कुछ विशेष उपलब्धियां प्राप्त करेंगे एवं एक नई मूल्यवान सम्पत्ति अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त, आपके परिवार में एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

कुम्भ भुक्ति

(03:05:2006 – 12:06:2007)

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप कुम्भ दशा म मीन भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि का स्वामी दशा–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहाहै– जबकि भुक्ति–राशि का स्वामी भुक्ति–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

मीन भुक्ति

(12:06:2007 – 23:07:2008)

वर्तमान समय में, आप मीन राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसाकि दशा/भुक्ति–राशि पर दशमेश या पंचमेश या अमात्य–कारक ग्रह (सप्त–कारक योजना के अनुसार) की दृष्टि पड़ रही है, व्यवसाय से संबंधित मामलों में आप बहुत भाग्यशाली होंगे। यदि आपकी आयु उपयुक्त है, तो आप एक लाभप्रद पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं अथवा रोजगार में कोई आकर्षक परिवर्तन हो सकता है। यदि आप व्यवसाय में हैं, तो अत्यधिक सुधार होगा। आपकी विश्वसनीयता एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

वृश्चिक दशा

(23:07:2008 – 23:07:2015)

काल चक्र दशा के अनुसार, आपका जन्म–नक्षत्र 'सव्य' श्रेणी से संबंध रखता है। जैसाकि आपकी वर्तमान में चल रही दशा की राशि आपकी पूर्व में चल रही दशा की राशि से तिहरा उछाल लिया था, काल चक्र दशा के अनुसार वर्तमान में चल रही दशा सिंहावलोकन गति दशा के पारिभाषिक पद के अन्तर्गत चलती है। इस दशा की अवधि के दौरान, आप विभिन्न स्रोतों से कठिनाइयों का सामना कर सकते हैं। आप बुखारसे पीड़ित हो सकते हैं तथा तेज गति से चलते वाहन से गिरने के कारण दुर्घटना का सामना करने का भी खतरा है। इसके अतिरिक्त, आपको पानी या आग या विष या हथियार से कुछ भय हो सकता है। आपको कुछ हानियां भी हो सकती हैं तथा आपको अपना निवास स्थान छोड़ना पड़ सकता है। साथ ही, मित्रों से उपहास और निकट संबंधों में स्नेह की कमी आपको मानसिक पीड़ा पहुंचा सकती है।

काल चक्र दशा के अनुसार, आपकी पूर्व दशा की राशि मीन थी और वर्तमान दशा की राशि वृश्चिक है औरकाल चक्र दशा के अनुसार वर्तमान में चल रही दशा 'सिंहावलोकन गति दशा' का एक मामला है। इसदशा–अवधि के दौरान, आपको बहुत सावधान और सतर्क रहना चाहिए। आपके मजबूत इरादे और भरपूर प्रयासों के बावजूद, आप अपने उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। इस अवधि के दौरान यदि आप कोई लम्बी यात्रा करते हैं, तो आपका कार्य सफल नहीं हो सकता है और यदि आप उत्तरदिशा में स्थित किसी स्थान की यात्रा करते हैं, तो अनेक बाधाओं एवं अवरोधों का सामना कर सकते हैं। आप किसी चूक और/या आरोप के लिए जिम्मेदार ठहराये जा सकते हैं। कुछ प्रभावकारी लोग आपकेविरूद्ध हो सकते हैं और परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है और आप बुखार या अन्य किसी रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की काल चक्र दशा से गुजर रहे हैं। दशा–राशि का स्वामी एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है। इस अवधि के दौरान अनुभव किये जाने वाले समग्र अनुकूल एवं अन्यथा परिणाम मुख्य रूप से (1) राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह/गहों– यदि कोई है, (2) राशि पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रह– यदिकोई है, (3) राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह/ग्रहों– यदि कोई है, तथा (4) राशि पर दृष्टि डाल रहेऐसे ग्रह– यदि कोई है, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे। ये गौण रूप से (1) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, (2) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों– यदि कोई है, (3) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, और (3) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे।

(ग्रहों की स्थिति अधिक महत्वपूर्ण होती है, और ग्रहीय दृष्टि की अपेक्षा यह लगभग दुगुनी शक्तिशाली मानी जाती है। इसी तरह, दशा–राशि पर ग्रहों का प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण होता है और दशा–राशि के स्वामी पर ग्रहों के प्रभाव की अपेक्षा लगभग दुगुना प्रभावशाली माना जाता है।)

मुख्य प्रभाव :

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 1, और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0

और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 1 और

गौण प्रभाव :

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0

सांकेतिक ढंग से उपरोक्त आकंड़ों पर विचार करके, अपेक्षित समग्र अनुकूल और अन्यथाा परिणामों को सटीकता की एक शुद्ध मात्रा में अनुमानित किया जा सकता है। इस बात का ध्यान दिया जाना चाहिए, किशुभ और अशुभ प्रभाव निश्चित रूप से एक दूसरे को बेअसर नहीं करते हैं– हालाँकि, वे काफी हद तकएक दूसरे को संशोधित करते हैं।

आगे जो करने के लिए उपर उल्लेख किया गया था, वृश्चिक राशि की काल चक्र दशा के लिए शुभ प्रभावोंका अंक है– 25 (अधिकतम 100 अंक के पैमाने पर), अशुभ प्रभावों का अंक है – 10 (अधिकतम 100अंक के पैमाने पर)।

उपर जो उल्लेख किया गया है उससे आगे, जैसाकि एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह– जो किवक्री हैं, भुक्ति–राशि में स्थित हैं (जो आपकी दशा–राशि से छठवां है), आपको बहुत सावधान रहना चाहिए जैसाकि आप एक नाजुक स्थिति का सामना कर सकते हैं। जो भी हो, आपको चिन्तित नहीं होना चाहिए– जैसाकि आपको एक नए आकर्षक अवसर प्राप्त होने की संभावना है, तथा आपकी पद एवं प्रतिष्ठामें काफी सुधार होगा।

वर्तमान समय में, आप वृश्चिक राशि की काल–चक्र दशा से गुजर रहे हैं। जैसाकि यह एक स्थिर राशि है,इस दशा–अवधि के दौरान अनेक परिवर्तन होने की संभावना नहीं है। जब तक कि कोई परिस्थितिजन्य बाध्यता नहीं हो आप कोई यात्रा नहीं कर सकते हैं। हालाँकि, इस दशा के राशि–भुक्तियों के नौ समान–अवधियों में से पाँचवां भाग– वृश्चिक राशि की भुक्ति– आपके लिए कुछ अवसर लाएगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, दसवें भाव की राशि, पाँचवें भाव की राशि, दशेमश द्वारा अधिग्रहित राशि, पंचमेश द्वारा अधिग्रहित राशि और अमात्य–कारक ग्रह (सप्त–कारक योजना के अनुसार) द्वारा अधिग्रहित राशि क्रमशः मिथुन, मकर, वृश्चिक, मिथुन, और मकर हैं। काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप वृश्चिक राशि की दशा से गुजर रहें हैं– जो कि उपरोक्त राशि में से किसी एक से मेल खाती है। इस दशा–अवधि के दौरान, आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में बहुत सुधार करेंगे, और कुछ आकर्षक अवसर एवं लाभदायक परिवर्तन प्राप्त होंगे। इस दशा–अवधि के दौरान, जब इनमें से किसी भी राशि की भुक्ति–अवधिसंचालित होगी और ऐसी किसी भी भुक्ति–अवधि के दौरान, जब इनमें से किसी भी राशि की अन्तर संचालित होगी, तब ऐसा होने की संभावना अधिक

होगी।

हालाँकि, यदि दशमेश और पंचमेश 'अंतर–संबंध' में शामिल पाये जायेंगे, तो ऐसी संभावनाएं उजागर होंगी – दशा–राशि और भुक्ति–राशि (और अन्तर–राशि) से गणना करने पर। यदि ऐसा है तो हम इसकी आगेजांच करेंगे।

कर्क भुक्ति

(23:07:2008 – 03:05:2009)

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप कर्क दशा म वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि का स्वामी भुक्ति–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

सिहं भुक्ति

(03:05:2009 – 11:02:2010)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

कन्या भुक्ति

(11:02:2010 – 22:11:2010)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप कन्या दशा में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, बुध दशा–राशि में स्थित है तथा चंद्रमा भुक्ति–राशि में स्थित है (या चंद्रमा दशा–राशि में स्थित है और बुध भुक्ति–राशि में स्थित है)। यह समग्र योग अनेक मामलों में अनुकूल है। इस संयुक्त दशा अवधि के दौरान, आप काफी अधीर महसूस करना प्रारम्भ कर सकते हैं। आप दूरस्थ स्थानों की एक से अधिक बार यात्रायें कर सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थित में सुधार होगा, एवं आपकी लोकप्रियता में भी काफी वृद्धि होगी। पत्राचार, संचार आदि आपका अत्यधिक समय ले सकते हैं एवं आपके कुछ लेख किसी प्रतिष्ठित पत्रिका/समाचारपत्र में प्रकाशित हो सकते हैं। सभी अन्तर अवधियों में से वृश्चिक और/या वृश्चिक राशि की अन्तर अत्यधिक आनन्ददायक साबित हो सकती है।

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप कन्या भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह भुक्ति–राशि में स्थित है और कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इससे आठवें में स्थित है– जबकि भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से तीसरे में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह समग्र योग अनुकूल नहीं है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान आप कुछ बड़ी कठिनाईयों का सामना कर सकते हैं और अनेक असुविधाओं से ग्रसित हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डलीमें कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस दशा–अवधि के दौरान, आपको व्यवसाय में

अस्थाई आघात लग सकता है, और किसी निकट स्थान पर स्थानान्तरण या परिवर्तन हो सकता है।

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप कन्या दशा में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर पंचमेश भुक्ति–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि से गणना करने पर पंचमेश दशा–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त करसकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में आप कन्या राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। सूर्य और शुक्र दो ग्रहों में से एक ग्रह दशा–राशि से क्रेन्द्र में स्थित है तथा दूसरा दशा–राशि से त्रिकोण में स्थित है। आपका आगामी समय बहुत आनन्ददायक होगा, आप पर्याप्तता एवं प्रचूरता से सम्पन्न होंगे तथा आपका पारिवारिक जीवन बहुत आनन्दमय व खुशहाल होगा। इस अवधि के दौरान, आप कुछ विशेष उपलब्धियां प्राप्त करेंगे एवं एक नई मूल्यवान सम्पत्ति अर्जित करेंगे।

तुला भुक्ति

(22:11:2010 – 02:09:2011)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप तुला भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में एक याएक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह भुक्ति–राशि से बारहवें में स्थित है/हैं और एक या अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह भुक्ति–राशि से दूसरे में स्थित है– जबकि दूसरे या बारहवें, इन दोनों में से किसी में भी कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह स्थित नहीं है। इस प्रकार यह भुक्ति ऐसी राशि की है, जो शुभ–कर्तरी योग के अन्तर्गत है। यह संकेत अत्यंत अनुकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका आगामी समय बहुत आनन्दमय हो सकता है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे, आपकी कुछ अभिलाषित इच्छायें पूरी होंगी तथा कुछ महात्वाकांक्षायें फलीभूत होंगी।

तुला राशि की अन्तर–अवधि में– ना केवल इस भुक्ति में, बल्कि अन्य भुक्तियों में भी– आप विश्वासपूर्वक एक उत्तम समय की आशा कर सकते हैं तथा अपने वरिष्ठों/नियुक्ति कर्ता से या अधिकारियों से समर्थन एवं लाभ प्राप्त कर सकते हैं अथवा किसी अन्य स्रोत से अप्रत्याशित रूप से एक आकस्मिक उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति

(02:09:2011 – 12:06:2012)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

धनु भुक्ति

(12:06:2012 – 23:03:2013)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप धनु भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दोया अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह भुक्ति–राशि में स्थित हैं तथा दूसरे, चौथे और ग्यारहवें में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की कुल संख्या भी दो या अधिक है– जबकि भुक्ति–राशि में या इससे दूसरे अथवा चौथे अथवा ग्यारहवें में कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह समग्र योग बिल्कुल भी उत्तम नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो यह भुक्ति–अवधि आपके लिए काफी समस्याप्रद और कठिनाईपूर्ण हो सकती है। आपके कार्यस्थल का विकास आपको निरन्तर तनाव में रख सकता है एवं आप बहुत चिन्तित महसूस करना प्रारम्भ कर सकते हैं।

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप धनु भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में एक याएक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह भुक्ति–राशि से बारहवें में स्थित है/हैं और एक या अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह भुक्ति–राशि से दूसरे में स्थित है– जबकि दूसरे या बारहवें, इन दोनों में से किसी में भी कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह स्थित नहीं है। इस प्रकार यह भुक्ति ऐसी राशि की है, जो शुभ–कर्तरी योग के अन्तर्गत है। यह संकेत अत्यंत अनुकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका आगामी समय बहुत आनन्दमय हो सकता है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे, आपकी कुछ अभिलाषित इच्छायें पूरी होंगी तथा कुछ महात्वाकांक्षायें फलीभूत होंगी।

धनु राशि की अन्तर–अवधि में– ना केवल इस भुक्ति में, बल्कि अन्य भुक्तियों में भी– आप विश्वासपूर्वक एक उत्तम समय की आशा कर सकते हैं तथा अपने वरिष्ठों/नियुक्ति कर्ता से या अधिकारियों से समर्थन एवं लाभ प्राप्त कर सकते हैं अथवा किसी अन्य स्रोत से अप्रत्याशित रूप से एक आकस्मिक उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

मकर भुक्ति

(23:03:2013 – 01:01:2014)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप मकर दशा में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, कम से कम एक नैसर्गिक शुभ ग्रह इन दोनों राशियों में स्थित हैं। इसके अतिरिक्त, इन दोनों राशियों से अलग–अलग गणना करने पर, तीसरे, छठें और ग्यारहवें में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों कीसंख्या दो या अधिक है। यह समग्र योग अनुकूल है। इस संयुक्त अवधि के दौरान आप अत्यंत सक्रिय और उर्जावान रहेंगे। आप एक या अधिक प्रतियोगिताओं और/या प्रतियोगी परिक्षाओं में सफल होंगे, उन्नति के सुनहरे अवसर प्राप्त करेंगे तथा स्थानों पर जायेंगे। यदि आपकी कुण्डली में प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो यह समयावधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी एवं काफी यादगार भी होगी। इस अवधि के दौरान आपको एक बहुत मूल्यवान सम्पत्ति प्राप्त हो सकती है।

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप मकर दशा में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि का स्वामी भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप मकर दशा म वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि के स्वामी की भुक्ति–राशि के स्वामी के साथ युति है। दशा–राशि का

स्वामी भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है अथवा भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इसभुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में आप मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसाकि दो मुख्य नैसर्गिक शुभ ग्रह– बृहस्पति और शुक्र– दशा–राशि में स्थित हैं, आपका समय आनन्ददायक होगा। आप पर्याप्तता एवं प्रचूरता से सम्पन्न होंगे तथा आपका पारिवारिक जीवन बहुत आनन्दमय व खुशहाल होगा। इस अवधि के दौरान, आप कुछ विशेष उपलब्धियां प्राप्त करेंगे एवं एक नई मूल्यवान सम्पत्ति अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त, आपके परिवार में एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

कुम्भ भुक्ति

(01:01:2014 – 12:10:2014)

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप कुम्भ दशा में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि का स्वामी भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप कुम्भ दशा म वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि के स्वामी की भुक्ति–राशि के स्वामी के साथ युति है। दशा–राशि का स्वामी भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है अथवा भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इसभुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

मीन भुक्ति

(12:10:2014 – 23:07:2015)

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप मीन दशा में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर पंचमेश भुक्ति–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि से गणना करने पर पंचमेश दशा–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त करसकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

तुला दशा

(23:07:2015 – 23:07:2031)

वर्तमान में आप तुला राशि की काल चक्र दशा से गुजर रहे हैं। दशा–राशि का स्वामी एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। इस अवधि के दौरान अनुभव किये जाने वाले समग्र अनुकूल एवं अन्यथा परिणाम मुख्य रूप से (1)राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह/गहों– यदि कोई है, (2) राशि पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रह– यदि कोई है, (3) राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह/ग्रहों– यदि कोई है, तथा (4) राशि पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रह– यदि कोई है, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे। ये गौण रूप से (1) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, (2) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों– यदि कोई है, (3) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, और (3) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे।

(ग्रहों की स्थिति अधिक महत्वपूर्ण होती है, और ग्रहीय दृष्टि की अपेक्षा यह लगभग दुगुनी शक्तिशाली मानी जाती है। इसी तरह, दशा–राशि पर ग्रहों का प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण होता है और दशा–राशि के स्वामी पर ग्रहों के प्रभाव की अपेक्षा लगभग दुगुना प्रभावशाली माना जाता है।)

मुख्य प्रभाव :

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 1 और

गौण प्रभाव :

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 1 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0

सांकेतिक ढंग से उपरोक्त आकंड़ों पर विचार करके, अपेक्षित समग्र अनुकूल और अन्यथाा परिणामों को सटीकता की एक शुद्ध मात्रा में अनुमानित किया जा सकता है। इस बात का ध्यान दिया जाना चाहिए, किशुभ और अशुभ प्रभाव निश्चित रूप से एक दूसरे को बेअसर नहीं करते हैं– हालाँकि, वे काफी हद तकएक दूसरे को संशोधित करते

हैं।

आगे जो करने के लिए उपर उल्लेख किया गया था, तुला राशि की काल चक्र दशा के लिए शुभ प्रभावों का अंक है– 12 (अधिकतम 100 अंक के पैमाने पर), अशुभ प्रभावों का अंक है – 10 (अधिकतम 100 अंकके पैमाने पर)।

वर्तमान समय में, आप तुला राशि की काल–चक्र दशा से गुजर रहे हैं। जैसाकि यह एक चर राशि है, इसदशा–अवधि के दौरान अनेक परिवर्तन होने की संभावना है। आप आनन्द और लाभ के लिए अनेक यात्रायें भी करेंगे। इस दशा के राशि–भुक्तियों के नौ समान–अवधियों में से सबसे पहला भाग– तुला राशिकी भुक्ति– आपके लिए कई अवसर लाएगा।

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप तुला दशा से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में एक याएक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह दशा–राशि से बारहवें में स्थित है और एक या अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह दशा–राशि से दूसरे में स्थित है– जबकि दूसरे या बारहवें, इन दोनों में से किसी में भी कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह स्थित नहीं है। इस प्रकार यह दशा ऐसी राशि की है, जो शुभ–कर्तरी योग के अन्तर्गत है। यहसंकेत अत्यंत अनुकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका आगामी समय बहुत आनन्दमय हो सकता है। इस दशा–अवधि के दौरान, आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे, आपकी कुछ अभिलाषित इच्छायें पूरी होंगी तथा कुछ महात्वाकांक्षायें फलीभूत होंगी।

तुला भुक्ति

(23:07:2015 – 03:05:2017)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप तुला भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में एक याएक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह भुक्ति–राशि से बारहवें में स्थित है/हैं और एक या अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह भुक्ति–राशि से दूसरे में स्थित है– जबकि दूसरे या बारहवें, इन दोनों में से किसी में भी कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह स्थित नहीं है। इस प्रकार यह भुक्ति ऐसी राशि की है, जो शुभ–कर्तरी योग के अन्तर्गत है। यह संकेत अत्यंत अनुकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका आगामी समय बहुत आनन्दमय हो सकता है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे, आपकी कुछ अभिलाषित इच्छायें पूरी होंगी तथा कुछ महात्वाकांक्षायें फलीभूत होंगी।

तुला राशि की अन्तर–अवधि में– ना केवल इस भुक्ति में, बल्कि अन्य भुक्तियों में भी– आप विश्वासपूर्वक एक उत्तम समय की आशा कर सकते हैं तथा अपने वरिष्ठों/नियुक्ति कर्ता से या अधिकारियों से समर्थन एवं लाभ प्राप्त कर सकते हैं अथवा किसी अन्य स्रोत से अप्रत्याशित रूप से एक आकस्मिक उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति

(03:05:2017 – 11:02:2019)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

धनु भुक्ति

(11:02:2019 – 22:11:2020)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप धनु भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दोया अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह भुक्ति–राशि में स्थित हैं तथा दूसरे, चौथे और ग्यारहवें में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की कुल संख्या भी दो या अधिक है– जबकि भुक्ति–राशि में या इससे दूसरे अथवा चौथे अथवा ग्यारहवें में कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह समग्र योग बिल्कुल भी उत्तम नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो यह भुक्ति–अवधि आपके लिए काफी समस्याप्रद और कठिनाईपूर्ण हो सकती है। आपके कार्यस्थल का विकास आपको निरन्तर तनाव में रख सकता है एवं आप बहुत चिन्तित महसूस करना प्रारम्भ कर सकते हैं।

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप धनु भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में एक याएक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह भुक्ति–राशि से बारहवें में स्थित है/हैं और एक या अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह भुक्ति–राशि से दूसरे में स्थित है– जबकि दूसरे या बारहवें, इन दोनों में से किसी में भी कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह स्थित नहीं है। इस प्रकार यह भुक्ति ऐसी राशि की है, जो शुभ–कर्तरी योग के अन्तर्गत है। यह संकेत अत्यंत अनुकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका आगामी समय बहुत आनन्दमय हो सकता है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे, आपकी कुछ अभिलाषित इच्छायें पूरी होंगी तथा कुछ महात्वाकांक्षायें फलीभूत होंगी।

धनु राशि की अन्तर–अवधि में– ना केवल इस भुक्ति में, बल्कि अन्य भुक्तियों में भी– आप विश्वासपूर्वक एक उत्तम समय की आशा कर सकते हैं तथा अपने वरिष्ठों/नियुक्ति कर्ता से या अधिकारियों से समर्थन एवं लाभ प्राप्त कर सकते हैं अथवा किसी अन्य स्रोत से अप्रत्याशित रूप से एक आकस्मिक उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप धनु दशा म तुला भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकीजन्मकुण्डली में, दशा–राशि का स्वामी दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि का स्वामी भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

मकर भुक्ति

(22:11:2020 – 02:09:2022)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में आप मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसाकि दो मुख्य नैसर्गिक शुभ ग्रह– बृहस्पति और शुक्र– दशा–राशि में स्थित हैं, आपका समय आनन्ददायक होगा। आप पर्याप्तता एवं प्रचूरता से सम्पन्न होंगे तथा आपका पारिवारिक जीवन बहुत आनन्दमय व खुशहाल होगा। इस अवधि के दौरान, आप कुछ विशेष उपलब्धियां प्राप्त करेंगे एवं एक नई मूल्यवान सम्पत्ति अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त, आपके परिवार में एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

कुम्भ भुक्ति

(02:09:2022 – 12:06:2024)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

मीन भुक्ति

(12:06:2024 – 23:03:2026)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

मेष भुक्ति

(23:03:2026 – 01:01:2028)

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप मेष दशा में तुला भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकीजन्मकुण्डली में, दशा–राशि का स्वामी भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहाहै– जबकि भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यहयोग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप मेष दशा म तुला भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकीजन्मकुण्डली में, दशा–राशि के स्वामी की भुक्ति–राशि के स्वामी के साथ युति है। दशा–राशि का स्वामी भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है अथवा भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इसभुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में आप मेष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। सूर्य और शुक्र दो ग्रहों में से एक ग्रह दशा–राशि से क्रेन्द्र में स्थित है तथा दूसरा दशा–राशि से त्रिकोण में स्थित है। आपका आगामी समय बहुत आनन्ददायक होगा, आप पर्याप्तता एवं प्रचूरता से सम्पन्न होंगे तथा आपका पारिवारिक जीवन बहुत आनन्दमय व खुशहाल होगा। इस अवधि के दौरान, आप कुछ विशेष उपलब्धियां प्राप्त करेंगे एवं एक नई मूल्यवान सम्पत्ति अर्जित करेंगे।

वृष भुक्ति

(01:01:2028 – 12:10:2029)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में एक या

एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह भुक्ति–राशि से बारहवें में स्थित है/हैं और एक या अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह भुक्ति–राशि से दूसरे में स्थित है– जबकि दूसरे या बारहवें, इन दोनों में से किसी में भी कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह स्थित नहीं है। इस प्रकार यह भुक्ति ऐसी राशि की है, जो पाप–कर्तरी योग के अन्तर्गतहै। यह संकेत अनुकूल नहीं हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका आगामी समय काफी कठिनाईपूर्ण हो सकता है। आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकताहै और अनेक बाधाओं व अवरोधों का सामना कर सकते हैं– जिसकी वजह से, आप इस भुक्ति–अवधि के दौरान अपने किये गये प्रयासों के अनुरूप परिणाम प्राप्त करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं।

मिथुन भुक्ति

(12:10:2029 – 23:07:2031)

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप मिथुन दशा में तुला भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि से गणना करने पर दशमेश दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त करसकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में आप मिथुन राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसाकि दो घोरनैसर्गिक अशुभ ग्रह– शनि और केतू– दशा–राशि में स्थित हैं, आपका समय काफी समस्याप्रद हो सकता है। आपके कार्यस्थल पर कुछ विचलित करने वाली घटनायें हो सकती हैं, आपकी आय में कमी होसकती है एवं आपके परिवारिक सदस्यों के बीच में होने वाले निरन्तर झगड़े आपको दुखी एवं चिन्तित कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस अवधि के दौरानआपके शारीरिक स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

कन्या दशा

(23:07:2031 – 23:07:2040)

वर्तमान में आप कन्या राशि की काल चक्र दशा से गुजर रहे हैं। दशा–राशि का स्वामी एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। इस अवधि के दौरान अनुभव किये जाने वाले समग्र अनुकूल एवं अन्यथा परिणाम मुख्य रूप से (1)राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह/गहों– यदि कोई है, (2) राशि पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रह– यदि कोई है, (3) राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह/ग्रहों– यदि कोई है, तथा (4) राशि पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रह– यदि कोई है, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे। ये गौण रूप से (1) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, (2) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों– यदि कोई है, (3) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, और (3) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे।

(ग्रहों की स्थिति अधिक महत्वपूर्ण होती है, और ग्रहीय दृष्टि की अपेक्षा यह लगभग दुगुनी शक्तिशाली मानी जाती है। इसी तरह, दशा–राशि पर ग्रहों का प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण होता है और दशा–राशि के

स्वामी पर ग्रहों के प्रभाव की अपेक्षा लगभग दुगुना प्रभावशाली माना जाता है।)

मुख्य प्रभाव :

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 1 और

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 1 और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

गौण प्रभाव :

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 1

सांकेतिक ढंग से उपरोक्त आकंड़ों पर विचार करके, अपेक्षित समग्र अनुकूल और अन्यथाा परिणामों को सटीकता की एक शुद्ध मात्रा में अनुमानित किया जा सकता है। इस बात का ध्यान दिया जाना चाहिए, किशुभ और अशुभ प्रभाव निश्चित रूप से एक दूसरे को बेअसर नहीं करते हैं– हालाँकि, वे काफी हद तकएक दूसरे को संशोधित करते हैं।

आगे जो करने के लिए उपर उल्लेख किया गया था, कन्या राशि की काल चक्र दशा के लिए शुभ प्रभावों का अंक है– 12 (अधिकतम 100 अंक के पैमाने पर), अशुभ प्रभावों का अंक है – 25 (अधिकतम 100 अंकके पैमाने पर)।

वर्तमान समय में, आप कन्या राशि की काल–चक्र दशा से गुजर रहे हैं– जो कि दो या दो से अधिक नैसर्गिक शुभ/अशुभ ग्रहों की स्थिति या दृष्टि से प्रभावित हैं– जबकि इनमें से एक ग्रह या तो उच्चस्थ हैया अपने भाव में स्थित है। यह संकेत अनुकूल नहीं हैं। इस दशा–अवधि के दौरान, आपको अनेक प्रकारकी कठिनाईयों और असुविधाओं का सामना करना पड़ सकता है। हालाँकि, निश्चित रूप से पूरी दशा–अवधि के दौरान पीड़ित रहना आपकी नियति में नहीं लिखा हुआ है,– यद्यपि आप इसकी भुक्ति–अवधियों में से एक या एक से अधिक के दौरान कठिनाइयों का सामना कर सकते हैं– यदि वह/वेनैसर्गिक अशुभ ग्रहों के प्रभाव में आता है/आते हैं तो।

हम आगे यह परीक्षण करने जा रहे हैं कि क्या इस दशा–अवधि के दौरान इस तरह की प्रतिकूल भुक्ति–अवधि है/अवधियां हैं या नहीं। यदि ऐसी अवधि है/ अवधियां हैं, तो हमें उसके अनुसार अपना

निष्कर्ष प्रस्तावित करना होगा। इसके अतिरिक्त, हम भुक्ति अवधि/ अवधियों के दौरान प्रतिकूल अंतरा–अवधि/अवधियों की संभावना का संकेत भी करेंगे।

वर्तमान समय में, आप कन्या राशि की काल–चक्र दशा से गुजर रहे हैं। कुम्भ राशि इससे छठवीं हैं। कन्या राशि की दशा–अवधि के दौरान, जब कुम्भ राशि की भुक्ति–अवधि संचालित हो, तब आप विशिष्ट प्रकार की कुछ कठिनाइयों का सामना कर सकते हैं। आपका अपने वरिष्ठों या नियुक्तिकर्ता से मतभेद हो सकते हैं तथा आपका पद तक खोने का भय भी हो सकता है। या फिर, वे आपको निकालने के कुछ बहाने ढूंढने का प्रयास कर सकते हैं– किसी कारण से जिसकी वजह उन्हें भली–भांति ज्ञात होगी। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, या तो मीन राशि की और/या मकर राशि की अन्तर–अवधि के दौरान अधिक संभव हो सकता है– जैसाकि ये दोनों राशियां भुक्ति–राशि से परस्पर 2/12 संबंध में हैं। हालाँकि, यदि आप अपनी स्वयं की इच्छा या रूचि के अनुसार परिवर्तन के लिए किसी अवसर की तलाश कर रहे हैं, तो आपको इन दोनों अवधियों में से किसी एक में एक अवसर प्राप्त होने की संभावना है– यदि आप उचित समय पर प्रयास करते हैं तो।

वर्तमान समय में, आप कन्या राशि की काल–चक्र दशा से गुजर रहे हैं। जैसाकि यह एक उभय राशि है, इस दशा–अवधि के दौरान अनेक परिवर्तन होने की संभावना है। आप अधिकांशतः यात्रायें भी करेंगे। इस दशा के राशि–भुक्तियों के नौ समान–अवधियों में से सबसे अंतिम भाग– कन्या राशि की भुक्ति– आपके लिए कुछ आकर्षक अवसर लाएगा।

वर्तमान में आप कन्या राशि की काल–चक्र दशा से गुजर रहे हैं। जैसाकि दशा–राशि पर दशमेश या पंचमेश या अमात्य–कारक ग्रह (सप्त–कारक योजना के अनुसार) की दृष्टि है, आप अपने पेशे से संबंधित मामलों के संदर्भ में बहुत भाग्यशाली होंगे। यदि आपकी आयु प्रासंगिक है, तो आप एक लाभप्रद पदोन्नति या रोजगार का एक आकर्षक परिवर्तन कर सकते हैं। यदि आप व्यवसाय में हैं, तो आप बहुत सुधार करेंगे। आपकी विश्वसनीयता एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप कन्या दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह दशा–राशि में स्थित है और कम से कम एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इससे आठवें में स्थित है– जबकि दशा–राशि का स्वामी दशा–राशि से तीसरे में स्थित है या इस पर दृष्टिडाल रहा है। यह समग्र योग अनुकूल नहीं है। इस दशा–अविध के दौरान आपको कुछ बड़ी कठिनाइयों का अनुभव होने वाला है और अनेक असुविधाओं के कारण पीड़ा हो सकती है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो इस अवधि के दौरान, आपको व्यवसाय में एक अस्थाई आघात लग सकता है और किसी कम दूरी वाले स्थान पर स्थानान्तरण या परिवर्तन हो सकता है।

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में आप कन्या राशि की दशा से गुजर रहे हैं। सूर्य और शुक्र दोग्रहों में से एक ग्रह दशा–राशि से क्रेन्द्र में स्थित है तथा दूसरा दशा–राशि से त्रिकोण में स्थित है। आपका आगामी समय बहुत आनन्ददायक होगा, आप पर्याप्तता एवं प्रचूरता से सम्पन्न होंगे तथा आपका पारिवारिक जीवन बहुत आनन्दमय व खुशहाल होगा। इस अवधि के दौरान, आप कुछ विशेष उपलब्धियां प्राप्त करेंगे एवं एक नई मूल्यवान सम्पत्ति अर्जित करेंगे।

मकर भुक्ति

(23:07:2031 – 23:07:2032)

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप मकर दशा म कन्या भुक्ति से गुजर रहे हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश भुक्ति–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि से गणना करने पर दशमेश दशा–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त करसकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में आप मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसाकि दो मुख्य नैसर्गिक शुभ ग्रह– बृहस्पति और शुक्र– दशा–राशि में स्थित हैं, आपका समय आनन्ददायक होगा। आप पर्याप्तता एवं प्रचूरता से सम्पन्न होंगे तथा आपका पारिवारिक जीवन बहुत आनन्दमय व खुशहाल होगा। इस अवधि के दौरान, आप कुछ विशेष उपलब्धियां प्राप्त करेंगे एवं एक नई मूल्यवान सम्पत्ति अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त, आपके परिवार में एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

कुम्भ भुक्ति

(23:07:2032 – 23:07:2033)

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप कुम्भ दशा में कन्या भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि का स्वामी भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप कुम्भ दशा म कन्या भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि के स्वामी की भुक्ति–राशि के स्वामी के साथ युति है। दशा–राशि का स्वामी भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है अथवा भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इसभुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप कुम्भ दशा म कन्या भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर पंचमेश दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि से गणना करने पर पंचमेश भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त करसकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

मीन भुक्ति

(23:07:2033 – 23:07:2034)

वर्तमान समय में, आप मीन राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसाकि दशा/भुक्ति–राशि पर दशमेश या पंचमेश या अमात्य–कारक ग्रह (सप्त–कारक योजना के अनुसार) की दृष्टि पड़ रही है, व्यवसाय से संबंधित मामलों में आप बहुत भाग्यशाली होंगे। यदि आपकी आयु उपयुक्त है, तो आप एक लाभप्रद पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं अथवा रोजगार में कोई आकर्षक परिवर्तन हो सकता है। यदि आप व्यवसाय में हैं, तो अत्यधिक सुधार होगा। आपकी विश्वसनीयता एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

मेष भुक्ति

(23:07:2034 – 23:07:2035)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में आप मेष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। सूर्य और शुक्र दो ग्रहों में से एक ग्रह दशा–राशि से क्रेन्द्र में स्थित है तथा दूसरा दशा–राशि से त्रिकोण में स्थित है। आपका आगामी समय बहुत आनन्ददायक होगा, आप पर्याप्तता एवं प्रचूरता से सम्पन्न होंगे तथा आपका पारिवारिक जीवन बहुत आनन्दमय व खुशहाल होगा। इस अवधि के दौरान, आप कुछ विशेष उपलब्धियां प्राप्त करेंगे एवं एक नई मूल्यवान सम्पत्ति अर्जित करेंगे।

वृष भुक्ति

(23:07:2035 – 23:07:2036)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में, आप वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह भुक्ति–राशि से बारहवें में स्थित है/हैं और एक या अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह भुक्ति–राशि से दूसरे में स्थित है– जबकि दूसरे या बारहवें, इन दोनों में से किसी में भी कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह स्थित नहीं है। इस प्रकार यह भुक्ति ऐसी राशि की है, जो पाप–कर्तरी योग के अन्तर्गतहै। यह संकेत अनुकूल नहीं हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका आगामी समय काफी कठिनाईपूर्ण हो सकता है। आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकताहै और अनेक बाधाओं व अवरोधों का सामना कर सकते हैं– जिसकी वजह से, आप इस भुक्ति–अवधि के दौरान अपने किये गये प्रयासों के अनुरूप परिणाम प्राप्त करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं।

वर्तमान समय में, आप वृष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसाकि दशा/भुक्ति–राशि पर दशमेश या पंचमेश या अमात्य–कारक ग्रह (सप्त–कारक योजना के अनुसार) की दृष्टि पड़ रही है, व्यवसाय से संबंधित मामलों में आप बहुत भाग्यशाली होंगे। यदि आपकी आयु उपयुक्त है, तो आप एक लाभप्रद पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं अथवा रोजगार में कोई आकर्षक परिवर्तन हो सकता है। यदि आप व्यवसाय में हैं, तो अत्यधिक सुधार होगा। आपकी विश्वसनीयता एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

मिथुन भुक्ति

(23:07:2036 – 23:07:2037)

काल चक्र दशा के अनुसार, वर्तमान समय में आप मिथुन राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसाकि दो घोरनैसर्गिक अशुभ ग्रह– शनि और केतू– दशा–राशि में स्थित हैं, आपका समय काफी समस्याप्रद हो सकता है। आपके कार्यस्थल पर कुछ विचलित करने वाली घटनायें हो सकती हैं, आपकी आय में कमी होसकती है एवं आपके परिवारिक सदस्यों के बीच में होने वाले निरन्तर झगड़े आपको दुखी एवं चिन्तित

कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस अवधि के दौरानआपके शारीरिक स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

कर्क भुक्ति

(23:07:2037 – 23:07:2038)

वर्तमान समय में, आप कर्क राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसाकि दशा/भुक्ति–राशि पर दशमेश या पंचमेश या अमात्य–कारक ग्रह (सप्त–कारक योजना के अनुसार) की दृष्टि पड़ रही है, व्यवसाय से संबंधित मामलों में आप बहुत भाग्यशाली होंगे। यदि आपकी आयु उपयुक्त है, तो आप एक लाभप्रद पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं अथवा रोजगार में कोई आकर्षक परिवर्तन हो सकता है। यदि आप व्यवसाय में हैं, तो अत्यधिक सुधार होगा। आपकी विश्वसनीयता एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप कर्क दशा म कन्या भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर पंचमेश दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि से गणना करने पर पंचमेश भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त करसकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

सिहं भुक्ति

(23:07:2038 – 23:07:2039)

वर्तमान समय में, आप सिहं राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसाकि दशा/भुक्ति–राशि पर दशमेश या पंचमेश या अमात्य–कारक ग्रह (सप्त–कारक योजना के अनुसार) की दृष्टि पड़ रही है, व्यवसाय से संबंधित मामलों में आप बहुत भाग्यशाली होंगे। यदि आपकी आयु उपयुक्त है, तो आप एक लाभप्रद पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं अथवा रोजगार में कोई आकर्षक परिवर्तन हो सकता है। यदि आप व्यवसाय में हैं, तो अत्यधिक सुधार होगा। आपकी विश्वसनीयता एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप सिहं दशा में कन्या भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि का स्वामी भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप सिहं दशा म कन्या भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि के स्वामी की भुक्ति–राशि के स्वामी के साथ युति है। दशा–राशि का स्वामी भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है अथवा भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इसभुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा

एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप सिहं दशा में कन्या भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर पंचमेश भुक्ति–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि से गणना करने पर पंचमेश दशा–राशि से पाँचवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त करसकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

काल चक्र दशा–पद्धति के अनुसार, वर्तमान समय में आप सिहं दशा म कन्या भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर पंचमेश दशा–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि से गणना करने पर पंचमेश भुक्ति–राशि से दसवें में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। यह योग अत्यंत अनुकूल है। दशा के इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके पेशे के क्षेत्र में काफी सुधार होगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया आकर्षक रोजगार प्राप्त करसकते हैं। यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो आपकी आय में तेजी आयेगी। आपकी विश्वसनीयत एवं सम्मान में भी वृद्धि होगी।

कन्या भुक्ति
(23:07:2039 – 23:07:2040)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

कर्क दशा
(23:07:2040 – 23:07:2061)

काल चक्र दशा के अनुसार, आपकी पूर्व दशा की राशि कन्या थी और वर्तमान दशा की राशि कर्क है। अतःवर्तमान चल रही दशा काल चक्र दशा के अनुसार मंडूकी गति दशा है। इस दशा–अवधि के दौरान, आपको बहुत सावधान और सतर्क रहना चाहिए। यद्यपि, आप जानबूझकर कोई गलती या अनियमितता नहींकर सकते हैं, तो भी आप नियमों और विनियमों में कुछ प्रमुख परिवर्तन के कारण कष्ट के उत्तरदायी हो सकते हैं। या फिर, पदों में कुछ परिवर्तन हो सकता है, पदभार संभालने वाला नया मालिक आपके प्रतिअनुकूल भाव नहीं रख सकता है– बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के। पूर्व या उत्तर दिशा में किसी स्थान पर स्थानान्तरण या रोजगार परिवर्तन आपके लिए लाभदायक होगा। आपके भाई या निकट संबंधी या किसी करीबी मित्र के स्वास्थ्य की स्थिति आपको चिन्तित कर सकती है।

वर्तमान में आप कर्क राशि की काल चक्र दशा से गुजर रहे हैं। दशा–राशि का स्वामी एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। इस अवधि के दौरान अनुभव किये जाने वाले समग्र अनुकूल एवं अन्यथा परिणाम मुख्य रूप से (1)राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह/गहों– यदि कोई है, (2) राशि पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रह– यदि कोई है, (3) राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह/ग्रहों– यदि कोई है, तथा (4) राशि पर दृष्टि डाल रहे

ऐसे ग्रह– यदि कोई है, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे। ये गौण रूप से (1) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, (2) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों– यदि कोई है, (3) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, और (3) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे।

(ग्रहों की स्थिति अधिक महत्वपूर्ण होती है, और ग्रहीय दृष्टि की अपेक्षा यह लगभग दुगुनी शक्तिशाली मानी जाती है। इसी तरह, दशा–राशि पर ग्रहों का प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण होता है और दशा–राशि के स्वामी पर ग्रहों के प्रभाव की अपेक्षा लगभग दुगुना प्रभावशाली माना जाता है।)

मुख्य प्रभाव :

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 2 और

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 1 और

गौण प्रभाव :

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – .1 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 1 और

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 1 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0

सांकेतिक ढंग से उपरोक्त आकंड़ों पर विचार करके, अपेक्षित समग्र अनुकूल और अन्यथाा परिणामों को सटीकता की एक शुद्ध मात्रा में अनुमानित किया जा सकता है। इस बात का ध्यान दिया जाना चाहिए, किशुभ और अशुभ प्रभाव निश्चित रूप से एक दूसरे को बेअसर नहीं करते हैं– हालाँकि, वे काफी हद तकएक दूसरे को संशोधित करते हैं।

आगे जो करने के लिए उपर उल्लेख किया गया था, कर्क राशि की काल चक्र दशा के लिए शुभ प्रभावों का अंक है– 31 (अधिकतम 100 अंक के पैमाने पर), अशुभ प्रभावों का अंक है – 20 (अधिकतम 100 अंकके पैमाने पर)।

उपर जो उल्लेख किया गया है उससे आगे, जैसाकि एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह– जो किवक्री हैं, भुक्ति–राशि में स्थित हैं (जो आपकी दशा–राशि से छठवां है), आपको बहुत सावधान रहना चाहिए जैसाकि आप एक नाजुक स्थिति का सामना कर सकते हैं। जो भी हो, आपको चिन्तित नहीं होना

चाहिए– जैसाकि आपको एक नए आकर्षक अवसर प्राप्त होने की संभावना है, तथा आपकी पद एवं प्रतिष्ठामें काफी सुधार होगा।

वर्तमान समय में, आप कर्क राशि की काल–चक्र दशा से गुजर रहे हैं। जैसाकि यह एक चर राशि है, इसदशा–अवधि के दौरान अनेक परिवर्तन होने की संभावना है। आप आनन्द और लाभ के लिए अनेक यात्रायें भी करेंगे। इस दशा के राशि–भुक्तियों के नौ समान–अवधियों में से सबसे पहला भाग– कर्क राशिकी भुक्ति– आपके लिए कई अवसर लाएगा।

कर्क भुक्ति

(23:07:2040 – 22:11:2042)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

सिहं भुक्ति

(22:11:2042 – 23:03:2045)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

कन्या भुक्ति

(23:03:2045 – 23:07:2047)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

तुला भुक्ति

(23:07:2047 – 22:11:2049)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

वृश्चिक भुक्ति

(22:11:2049 – 23:03:2052)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

धनु भुक्ति

(23:03:2052 – 23:07:2054)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

मकर भुक्ति

(23:07:2054 – 22:11:2056)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

कुम्भ भुक्ति

(22:11:2056 – 23:03:2059)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

मीन भुक्ति

(23:03:2059 – 23:07:2061)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

सिहं दशा

(23:07:2061 – 23:07:2066)

वर्तमान में आप सिहं राशि की काल चक्र दशा से गुजर रहे हैं। दशा–राशि का स्वामी एक नैसर्गिक अशुभग्रह है। इस अवधि के दौरान अनुभव किये जाने वाले समग्र अनुकूल एवं अन्यथा परिणाम मुख्य रूप से (1) राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह/गहों– यदि कोई है, (2) राशि पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रह– यदिकोई है, (3) राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह/ग्रहों– यदि कोई है, तथा (4) राशि पर दृष्टि डाल रहेऐसे ग्रह– यदि कोई है, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे। ये गौण रूप से (1) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, (2) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों– यदि कोई है, (3) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, और (3) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे।

(ग्रहों की स्थिति अधिक महत्वपूर्ण होती है, और ग्रहीय दृष्टि की अपेक्षा यह लगभग दुगुनी शक्तिशाली

मानी जाती है। इसी तरह, दशा–राशि पर ग्रहों का प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण होता है और दशा–राशि के स्वामी पर ग्रहों के प्रभाव की अपेक्षा लगभग दुगुना प्रभावशाली माना जाता है।)

मुख्य प्रभाव :

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0, और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 1 और

गौण प्रभाव :

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 1 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 2

सांकेतिक ढंग से उपरोक्त आकंड़ों पर विचार करके, अपेक्षित समग्र अनुकूल और अन्यथाा परिणामों को सटीकता की एक शुद्ध मात्रा में अनुमानित किया जा सकता है। इस बात का ध्यान दिया जाना चाहिए, किशुभ और अशुभ प्रभाव निश्चित रूप से एक दूसरे को बेअसर नहीं करते हैं– हालाँकि, वे काफी हद तकएक दूसरे को संशोधित करते हैं।

आगे जो करने के लिए उपर उल्लेख किया गया था, सिहं राशि की काल चक्र दशा के लिए शुभ प्रभावों का अंक है– 0 (अधिकतम 100 अंक के पैमाने पर), अशुभ प्रभावों का अंक है – 30 (अधिकतम 100 अंक के पैमाने पर)।

वर्तमान समय में, आप सिहं राशि की काल–चक्र दशा से गुजर रहे हैं। जैसाकि यह एक स्थिर राशि है, इस दशा–अवधि के दौरान अनेक परिवर्तन होने की संभावना नहीं है। जब तक कि कोई परिस्थितिजन्य बाध्यता नहीं हो आप कोई यात्रा नहीं कर सकते हैं। हालाँकि, इस दशा के राशि–भुक्तियों के नौ समान–अवधियों में से पाँचवां भाग– सिहं राशि की भुक्ति– आपके लिए कुछ अवसर लाएगा।

मेष भुक्ति

(23:07:2061 – 11:02:2062)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

वृष भुक्ति

(11:02:2062 – 02:09:2062)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

मिथुन भुक्ति

(02:09:2062 – 23:03:2063)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

कर्क भुक्ति

(23:03:2063 – 12:10:2063)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

सिहं भुक्ति

(12:10:2063 – 02:05:2064)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

कन्या भुक्ति

(02:05:2064 – 22:11:2064)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

तुला भुक्ति

(22:11:2064 – 12:06:2065)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

वृश्चिक भुक्ति

(12:06:2065 – 01:01:2066)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

धनु भुक्ति

(01:01:2066 – 23:07:2066)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

मिथुन दशा

(23:07:2066 – 23:07:2075)

काल चक्र दशा के अनुसार, आपकी पूर्व दशा की राशि सिंह थी और वर्तमान दशा की राशि मिथुन है। अतः वर्तमान चल रही दशा काल चक्र दशा के अनुसार 'मंडूकी गति दशा' है। इस दशा–अवधि के दौरान,आपको बहुत सावधान और सतर्क रहना चाहिए। यद्यपि, आप जानबूझकर कोई गलती या अनियमितता नहीं कर सकते हैं, तो भी आप नियमों और विनियमों में कुछ प्रमुख परिवर्तन के कारण कष्ट के उत्तरदायी हो सकते हैं। या फिर, पदों में कुछ परिवर्तन हो सकता है, पदभार संभालने वाला नया मालिक आपके प्रति अनुकूल भाव नहीं रख सकता है– बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के। दक्षिण–पश्चिम दिशामें किसी स्थान पर स्थानान्तरण या रोजगार परिवर्तन आपके लिए लाभदायक होगा। हालाँकि, पूर्व दिशा से आपको बचना चाहिए– क्योंकि इसका आपके लिए अनुकूल होने की संभावना कम ही है।

वर्तमान में आप मिथुन राशि की काल चक्र दशा से गुजर रहे हैं। दशा–राशि का स्वामी एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। इस अवधि के दौरान अनुभव किये जाने वाले समग्र अनुकूल एवं अन्यथा परिणाम मुख्य रूप से (1)राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह/गहों– यदि कोई है, (2) राशि पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रह– यदि कोई है, (3) राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह/ग्रहों– यदि कोई है, तथा (4) राशि पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रह– यदि कोई है, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे। ये गौण रूप से (1) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, (2) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों– यदि कोई है, (3) राशिपति के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रह (ग्रहों)– यदि कोई है, और (3) राशिपति पर दृष्टि डाल रहे ऐसे ग्रहों, के संबंधित प्रभावों पर निर्भर करेंगे।

(ग्रहों की स्थिति अधिक महत्वपूर्ण होती है, और ग्रहीय दृष्टि की अपेक्षा यह लगभग दुगुनी शक्तिशाली मानी जाती है। इसी तरह, दशा–राशि पर ग्रहों का प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण होता है और दशा–राशि के स्वामी पर ग्रहों के प्रभाव की अपेक्षा लगभग दुगुना प्रभावशाली माना जाता है।)

मुख्य प्रभाव :

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि में स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 2 और

दशा–राशि पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 2 और

गौण प्रभाव :

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक शुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी के साथ स्थित नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 0 और

दशा–राशि के स्वामी पर दृष्टि डाल रहे नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की संख्या – 1

सांकेतिक ढंग से उपरोक्त आकंड़ों पर विचार करके, अपेक्षित समग्र अनुकूल और अन्यथाा परिणामों को सटीकता की एक शुद्ध मात्रा में अनुमानित किया जा सकता है। इस बात का ध्यान दिया जाना चाहिए, किशुभ और अशुभ प्रभाव निश्चित रूप से एक दूसरे को बेअसर नहीं करते हैं– हालाँकि, वे काफी हद तकएक दूसरे को संशोधित करते हैं।

आगे जो करने के लिए उपर उल्लेख किया गया था, मिथुन राशि की काल चक्र दशा के लिए शुभ प्रभावों का अंक है– 0 (अधिकतम 100 अंक के पैमाने पर), अशुभ प्रभावों का अंक है – 65 (अधिकतम 100 अंक के पैमाने पर)।

आपकी जन्मकुण्डली में, मकर राशि काल चक्र दशा 'देह–राशि' है और मिथुन राशि काल चक्र दशा 'जीव–राशि' है। ये दोनों ही राशियां बहुत महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान में, आप मिथुन राशि की काल चक्र दशा से गुजर रहे हैं– जो कि आपकी जीव राशि है। इस अवधि के दौरान, आपको अनेक लाभदायक परिर्वतन प्राप्त होंगे और कई गुना प्रगति व उन्नति प्राप्त करने के लिए कुछ सुनहरे अवसर प्राप्त होंगे। यह तब औरअधिक होगा जब मकर राशि की भुक्ति– जो कि आपकी देह–राशि है– इसमें संचालित हो।

वर्तमान समय में, आप मिथुन राशि की काल–चक्र दशा से गुजर रहे हैं– जो कि दो या दो से अधिक नैसर्गिक शुभ/अशुभ ग्रहों की स्थिति या दृष्टि से प्रभावित हैं– जबकि इनमें से एक ग्रह या तो उच्चस्थ हैया अपने भाव में स्थित है। यह संकेत अनुकूल नहीं हैं। इस दशा–अवधि के दौरान, आपको अनेक प्रकारकी कठिनाईयों और असुविधाओं का सामना करना पड़ सकता है। हालाँकि, निश्चित रूप से पूरी

दशा–अवधि के दौरान पीड़ित रहना आपकी नियति में नहीं लिखा हुआ है,– यद्यपि आप इसकी भुक्ति–अवधियों में से एक या एक से अधिक के दौरान कठिनाइयों का सामना कर सकते हैं– यदि वह/वेनैसर्गिक अशुभ ग्रहों के प्रभाव में आता है/आते हैं तो।

हम आगे यह परीक्षण करने जा रहे हैं कि क्या इस दशा–अवधि के दौरान इस तरह की प्रतिकूल भुक्ति–अवधि है/अवधियां हैं या नहीं। यदि ऐसी अवधि है/ अवधियां हैं, तो हमें उसके अनुसार अपना निष्कर्ष प्रस्तावित करना होगा। इसके अतिरिक्त, हम भुक्ति अवधि/ अवधियों के दौरान प्रतिकूल अंतरा–अवधि/अवधियों की संभावना का संकेत भी करेंगे।

वर्तमान समय में, आप मिथुन राशि की काल–चक्र दशा से गुजर रहे हैं। वृश्चिक राशि इससे छठवीं हैं। मिथुन राशि की दशा–अवधि के दौरान, जब वृश्चिक राशि की भुक्ति–अवधि संचालित हो, तब आप विशिष्टप्रकार की कुछ कठिनाइयों का सामना कर सकते हैं। आपका अपने वरिष्ठों या नियुक्तिकर्ता से मतभेद हो सकते हैं तथा आपका पद तक खोने का भय भी हो सकता है। या फिर, वे आपको निकालने केकुछ बहाने ढूंढने का प्रयास कर सकते हैं– किसी कारण से जिसकी वजह उन्हें भली–भांति ज्ञात होगी।इस भुक्ति–अवधि के दौरान, या तो धनु राशि की और/या तुला राशि की अन्तर–अवधि के दौरान अधिक संभव हो सकता है– जैसाकि ये दोनों राशियां भुक्ति–राशि से परस्पर 2/12 संबंध में हैं। हालाँकि,यदि आप अपनी स्वयं की इच्छा या रूचि के अनुसार परिवर्तन के लिए किसी अवसर की तलाश कर रहे हैं, तो आपको इन दोनों अवधियों में से किसी एक में एक अवसर प्राप्त होने की संभावना है– यदिआप उचित समय पर प्रयास करते हैं तो।

वर्तमान समय में, आप मिथुन राशि की काल–चक्र दशा से गुजर रहे हैं। जैसाकि यह एक उभय राशि है, इस दशा–अवधि के दौरान अनेक परिवर्तन होने की संभावना है। आप अधिकांशतः यात्रायें भी करेंगे। इस दशा के राशि–भुक्तियों के नौ समान–अवधियों में से सबसे अंतिम भाग– मिथुन राशि की भुक्ति– आपके लिए कुछ आकर्षक अवसर लाएगा।

तुला भुक्ति

(23:07:2066 – 23:07:2067)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

वृश्चिक भुक्ति

(23:07:2067 – 23:07:2068)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

धनु भुक्ति

(23:07:2068 – 23:07:2069)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

मकर भुक्ति

(23:07:2069 – 23:07:2070)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

कुम्भ भुक्ति

(23:07:2070 – 23:07:2071)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

मीन भुक्ति

(23:07:2071 – 23:07:2072)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

मेष भुक्ति

(23:07:2072 – 23:07:2073)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

वृष भुक्ति

(23:07:2073 – 23:07:2074)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)

मिथुन भुक्ति

(23:07:2074 – 23:07:2075)

(हांलाकि, हम कुण्डली में कम से कम 200 स्थितियों की जाँच कर रहे हैं, परन्तु हमें इस दशा अथवा भुक्तिमें कोई निश्चित परिणाम नही प्राप्त हुआ है।)